दैवज्ञश्रीवैद्यनाथविरचित:

जातकपारिजात:

'प्रज्ञावर्द्धिनी' संस्कृत-हिन्दी टीकाद्वय
श्लोकानुक्रमणिका च संवलित:

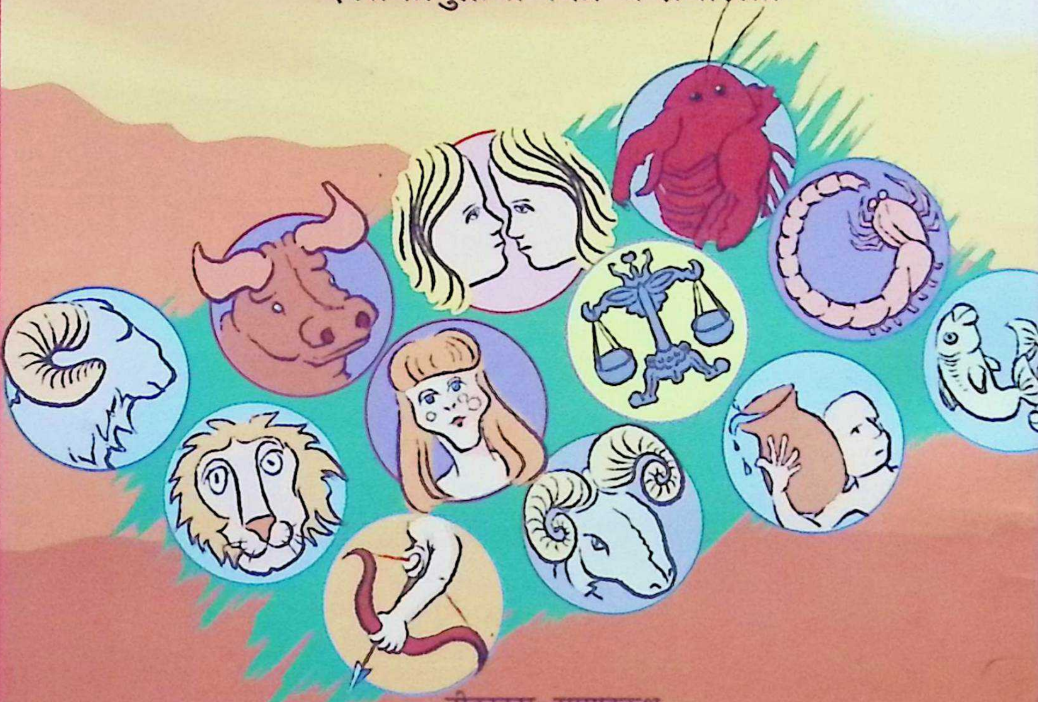

टीकाकार: सम्पादकश्च
डॉ. सत्येन्द्र मिश्र:

(द्वितीयो भाग:)

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

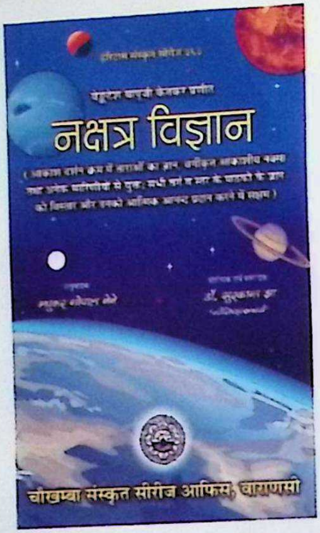

नक्षत्र विज्ञान

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

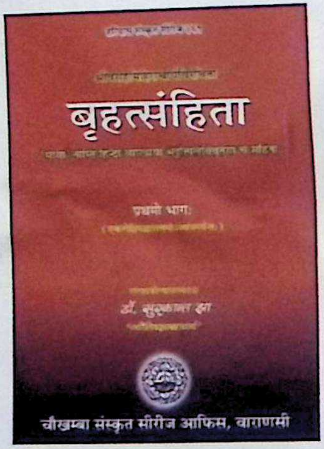

बृहत्संहिता

प्रथमो भागः

डॉ. सुरकान्त झा

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

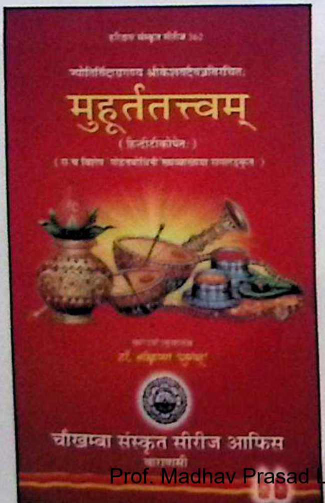

मुहूर्ततत्त्वम्

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

वाराणसी

चौखम्बा संस्कृत सीरीज
१३२

***

दैवज्ञश्रीवैद्यनाथविरचितः

जातकपारिजातः

'प्रज्ञावर्द्धिनी' संस्कृत-हिन्दी टीकाद्वय
श्लोकानुक्रमणिका च संवलितः

टीकाकारः सम्पादकश्च
डा. सत्येन्द्र मिश्रः
ज्यौतिषाचार्यः (लब्धस्वर्णपदकः), पी-एच. डी.
ज्यौतिष विभागः
काशी हिन्दू विश्वविद्यालयः

(द्वितीयो भागः)

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

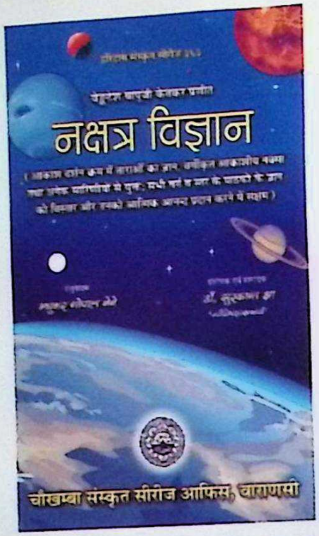

नक्षत्र विज्ञान

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

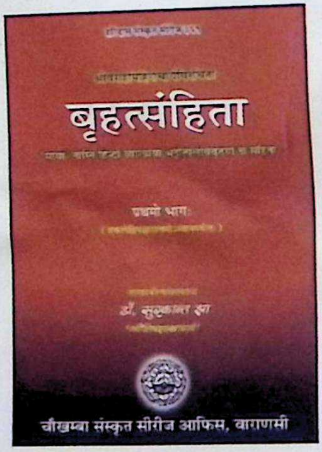

बृहत्संहिता

प्रथमो भागः

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

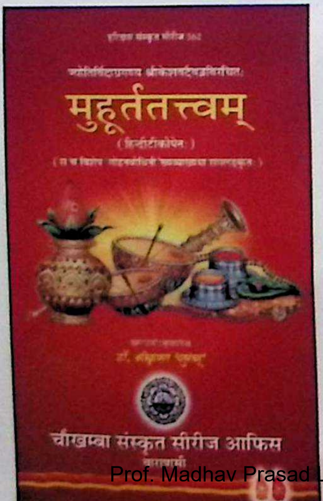

मुहूर्ततत्त्वम्

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

वाराणसी

चौखम्बा संस्कृत सीरीज
१३२

***

दैवज्ञश्रीवैद्यनाथविरचितः

जातकपारिजातः

'प्रज्ञावर्द्धिनी' संस्कृत-हिन्दी टीकाद्वय
श्लोकानुक्रमणिका च संवलितः

टीकाकारः सम्पादकश्च
डा. सत्येन्द्र मिश्रः
ज्यौतिषाचार्यः (लब्धस्वर्णपदकः), पी-एच. डी.
ज्यौतिष विभागः
काशी हिन्दू विश्वविद्यालयः

(द्वितीयो भागः)

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
संस्करण : **द्वितीय, वि०सं० २०७५, सन् २०१८**

ISBN : 978-81-7080-305-8 (द्वितीय भाग)
978-81-7080-306-5 (सेट)

© चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस
के० ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन
गोलघर (मैदागिन) के पास
पो० बा० नं० १००८, वाराणसी—२२१००१ (भारत)
फोन : (आफिस) (०५४२) २३३३४५८
(आवास) (०५४२) २३३५०२०, २३३४०३२
Fax : 0542 - 2333458
e-mail : cssoffice@satyam.net.in

अपरं च प्राप्तिस्थानम्
चौखम्बा कृष्णदास अकादमी
के० ३७/११८, गोपाल मन्दिर लेन
गोलघर (मैदागिन) के पास
पो० बा० नं० १११८, वाराणसी-२२१००१ (भारत)
फोन : (०५४२) २३३५०२०

CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES
132

***

JĀTAKAPĀRIJĀTA

OF
DAIVAJÑA ŚRĪVAIDYANĀTHA

With
'PRAJÑĀVARDHINĪ' Sanskrit-Hindi
Commentaries & Śloka Index

Edited & Translated by
Dr. SATYENDRA MISHRA
Jyotiṣācārya (Gold-medalist), Ph.D.
Department of Jyotiṣa
Banaras Hindu University, Varanasi

Part-2

CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE
VARANASI

Publisher : Chowkhamba Sanskrit Series Office, Varanasi.
Printer : Chowkhamba Press, Varanasi.

ISBN : 978-81-7080-305-8 (Part-2)
978-81-7080-306-5 (Set)

©CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

Publishers and Oriental and Foreign Book-sellers
K . 37/99, Gopal Mandir Lane
At the North Gate of Gopal Mandir
Near Golghar (Maidagin)
Post Box No. 1008, Varanasi- 221001 (India)
Phone Office : (0542) 2333458
Resi: : (0542) 2334032, 2335020
Fax : 0542-2333458
e-mail : cssoffice@satyam.net.in

Also can be had from :
CHOWKHAMBA KRISHNADAS ACADEMY
Oriental Publishers & Distributors
K. 37/118, Gopal Mandir Lane
Post Box No. 1118, Varanasi- 221001
(INDIA)
Phone : (0542) 2335020

विषय-सूची

१०. अष्टकवर्गाध्यायः

विषय	पृष्ठ
सूर्य का शुभाष्टक चक्र	५२६
सूर्य का अशुभाष्टक चक्र	५२७
सूर्य का अष्टक वर्ग	५२७
चन्द्र का शुभाष्टक चक्र	५२८
चन्द्र का अशुभाष्टक चक्र	५२८
चन्द्र का अष्टक वर्ग	५२८
भौम का शुभाष्टक चक्र	५२९
भौम का अशुभाष्टक चक्र	५२९
भौम का अष्टक वर्ग	५३०
बुध का शुभाष्टक चक्र	५३०
बुध का अशुभाष्टक चक्र	५३०
बुध का अष्टक वर्ग	५३१
गुरु का शुभाष्टक चक्र	५३१
गुरु का अशुभाष्टक चक्र	५३१
गुरु का अष्टक वर्ग	५३२
शुक्र का शुभाष्टक चक्र	५३२
शुक्र का अशुभाष्टक चक्र	५३२
शुक्र का अष्टक वर्ग	५३३
शनि का शुभाष्टक चक्र	५३३
शनि का अशुभाष्टक चक्र	५३३
शनि का अष्टक वर्ग	५३४
लग्न का शुभाष्टक चक्र	५३४
लग्न का अशुभाष्टक चक्र	५३४
लग्न का अष्टक वर्ग	५३५
शुभ संयोगाष्टक वर्गाङ्ग चक्र	५३५
संयोगाष्टक वर्ग का फल	५३६
रवि फल	५३९

चन्द्र फल ५४०
भौम फल ५४१
बुध फल ५४२
गुरु फल ५४२
शुक्र फल ५४४
शनि फल ५४४
प्रस्ताराष्टक वर्ग ५४५
त्रिकोण शोधन ५४८
एकाधिपत्य शोधन ५५०
मन्द वैनाशिक नक्षत्र ५५८
समुदायाष्टक वर्ग ५५९
खण्डत्रय में भेद ५६२
खण्डत्रय में ग्रहयोग से फल ५६२
लग्नगत बिन्दु का फल ५६३
रोग ज्ञान ५६५

११. प्रथम-द्वितीय भावफलाध्यायः

भाव फल विचार ५६९
तनु भावफल ५७४
अतुल भाग्य सुख योग ५७७
द्वितीय भावफल ५८६
नेत्रविचार ५९०
मुख विचार ५९२
वाग् विचार ५९४
विद्या विचार ५९७
कुटुम्ब विचार ५९८
भोजन विचार ५९९

१२. तृतीय-चतुर्थ भावफलाध्यायः

तृतीय भाव फल विचार ६०२
भ्राता भगिनी संख्या विचार ६०७
भ्रातृ प्रेम योग ६१०

भ्रातृरिष्ट योग ६११
पराक्रम विचार ६१३
कण्ठ रोग विचार ६१५
कर्णभूषण विचार ६१६
वस्त्र विचार ६१७
धैर्य विचार ६१८
बल विचार ६१८
भोजन विचार ६१८
चतुर्थ भाव फल ६२०
विद्या विचार ६२०
मातृ विचार ६२१
पितृ विचार ६२२
सुख विचार ६२६
चिन्ता विचार ६२७
सुगन्धि विचार ६२७
वस्त्रविचार ६२८
पशुविचार ६२८
बन्धु विचार ६२९
मनोवृत्ति विचार ६२९
वाहन विचार ६२९
राज्य विचार ६३१
राज योग ६३६
भाग्य विचार ६३७
क्षेत्र विचार ६३८
गृह विचार ६४०

१३. पंचम-षष्ठ भावफलाध्यायः

पंचम भावफल ६४२
देवता विचार ६४२
राज्य विचार ६४३
जन्म विचार ६४४
पुत्र विचार ६४५

पौत्र विचार ६४७
त्याज्य स्त्री ६५१
दत्तक पुत्र योग ६५४
सन्तति संख्या ज्ञान ६५६
मातृ पितृ सुख विचार ६६०
बुद्धि विचार ६६६
पुण्य विचार ६६७
षष्ठ भावफल ६६८

१४. सप्तम-अष्टम-नवम भावफलाध्यायः

सप्तम भावफल ६७४
पत्नी संख्या ज्ञान ६८३
विवाह का समय ६८४
स्तन विचार ६९०
गम्यस्त्री विचार ६९०
संगम स्थान विचार ६९१
भग चुम्बन योग ६९२
अष्टम भावफल ६९४
मृत्यु विचार ६९७
नवम भाव विचार ७०३
नवम भावगत गुरु पर दृष्टि का फल ७०५
नवम भावगत द्विग्रह फल ७०६
नवम भावगत त्रिग्रह योग फल ७०९
नवम भावगत चार ग्रहयुति फल ७१३
नवमेश से फल विचार ७१४

१५. दशम-एकादश-द्वादश भाव फलाध्यायः

दशमभाव से विचारणीय विषय ७१९
कर्म विचार ७१९
प्रव्रज्या योग ७२५
जीविका विचार ७३७
आज्ञा विचार ७४४

लाभ भाव विचार ७४७
व्यय भाव से विचारणीय ७५०
व्यय विचार ७५०
दान विचार ७५२
शयन विचार ७५३
मरणोपरान्त गति विचार ७५४

१६. स्त्रीजातकाध्याय:

स्त्री जातक विचार ७५६
त्रिंशांश फल ७६१
पुनर्भूलक्षण ७६४
पति विचार ७७७

१७. कालचक्र दशाध्याय:

कालचक्र ७८२
देह जीव ज्ञान ७८५
देव जीव विचार ७९४
देव जीव फल विचार ७९५
मरण स्थान ७९७
देह जीव फल ७९८
लग्नस्थ राशिदशा फल ८००
चक्रदशा फल में वैशिष्ट्य ८०५
कालचक्र गति ८०८
सिंहावलोकनदशाफल ८०९
छिद्रदशा ८०९
मण्डूक गति फल ८१०
कालचक्र दशा स्वरूप ८११
चक्रदशा वर्षमान ८१४
अन्तर्दशा विचार ८१५

१८. दशाफलाध्याय:

दशाफल ८१९

विंशोत्तरी महादशा ८१९
दशापति के शुभाशुभत्व ८२०
निर्याणदशा ८३४
गुलिकदशा ८३५
शूलदशा ८३५
महादशा के विशिष्टफल ८३६
अन्तर्दशा के विशेषफल ८३६
अन्तर्दशा फल ८४२
अन्तर्दशा साधन ८४३
सूर्यदशा में अन्तर्दशा फल ८४३
सूर्यदशा में विशेष फल ८४४
चन्द्रदशा फल ८४५
चन्द्रदशा में अन्तर्दशा फल ८४६
चन्द्रदशा में विशेष फल ८४७
भौम दशा फल ८४८
भौम दशा में अन्तर्दशा फल ८४८
भौम दशा में विशेष फल ८४९
राहुदशा फल ८५०
राहुदशा में अन्तर्दशा फल ८५१
राहुदशा में विशेष फल ८५३
बृहस्पति महादशा फल ८५४
बृहस्पति महादशा में अन्तर्दशा ८५४
गुरुमहादशा में विशेष फल ८५५
शनिदशा फल ८५६
शनि दशा में अन्तर्दशा फल ८५६
शनि दशा का विशेष फल ८५७
बुध महादशा फल ८५८
बुधमहादशा में अन्तर्दशा फल ८५९
बुध महादशा में विशेष फल ८६०
केतु दशा फल ८६१
केतु दशा में अन्तर्दशाफल ८६१

केतु दशा में विशेष फल ८६२
शुक्र महादशा फल ८६३
शुक्र महादशा में अर्न्तदशा फल ८६३
शुक्रदशा में विशेष फल ८६४
दशाफल में विशेषता ८६६
उपसंहार ८६९

परिशिष्टम्

कालचक्र सव्यवाक्य राशिबोधक चक्र ८७१
कालचक्र अपसव्यवाक्य राशिबोधक चक्र ८७२
कालचक्र सव्यनक्षत्र ८७३
कालचक्र अपसव्यनक्षत्र ८७४
स्पष्टचन्द्रानुसार सव्यचक्र दशाज्ञान ८७५
स्पष्टचन्द्रानुसार अपसव्यचक्र दशाज्ञान ८७६
कालचक्र सव्यदशाक्रम सारिणी ८७७
कालचक्र अपसव्यदशाक्रम सारिणी ९०१
सूर्यादिग्रह दशा अन्तर्दशा प्रत्यन्तर्दशा सारिणी ९२५
श्लोकानुक्रमणिका ९४३
प्रष्टव्य विषया: १००७

✿✿✿

अष्टकवर्गाध्यायः—१०

चक्रं विलिख्य सह लग्नदिवाकराद्यैः सूर्यादिलग्नभवनान्तवियच्चराणाम्।
वाक्याष्टकोपगतवर्णनियोजिताश्चेद्भिन्नाष्टवर्गजनिताखिलबिन्दवः स्युः ॥ १ ॥
देवो धवो धीगवंशस्तमो रमा धूलिः क्रमादुष्णकरादिबिन्दवः।
सालोलसंख्या- समुदायबिन्दवः सर्वाष्टवर्गः समुदायसंज्ञकः ॥ २ ॥

संस्कृत — इदानीमष्टकवर्गाध्यायो व्याख्यायते। लग्नसहिताखिलखेटेभ्यो गोचरेण प्रतिराशिं विचरत एकैकस्य ग्रहस्य सदसत्फल निरूपणायाष्टक वर्गा विविच्यन्ते। अष्टकवर्गेषु सर्वेभ्यो ग्रहेभ्यो एकैकस्य शुभस्थानानि पठितानि। यानि च न पठितानि तानि अशुभानि। अत्राष्टकवर्गविचारे शुभस्थानानि (०) बिन्दूपलक्षितानि अशुभानि च (।) रेखोपलक्षितानि सन्ति वृहत्पराशरे तु शुभस्थानानि रेखोपलक्षितानि अशुभानि च बिन्दूपलक्षितानि। यथा वृहत्तपराशरे अष्टकवर्गे—

"करणं बिन्दुवत् प्रोक्तं स्थानं रेखा तथोच्यते
सदसत्फलदं ज्ञेयं स्थानं च करणं वुधैः।"

तानि शुभचिन्हानि प्रत्येकस्य ग्रहस्य कियन्ति कियन्तीति उच्यन्ते श्लोकद्वयेन। लग्न दिवाकराद्यैः=लग्नसहिता ससग्रहा अष्टौ भवन्ति, तैः सह=सहितं, चक्रं विलिख्य=जन्मलग्नचक्रे यथास्थानं लग्नसहितं ग्रहं विलिख्य तस्मिन् सूर्यादिलग्न भवनान्तवियच्चराणां, वाक्याष्टकोपगता=प्रत्येक ग्रहवशादुत्पन्नाः ये वर्णाः (शुभचिन्हा) ते नियोजिताः=संकलिताश्चेद्भवेयुस्तदा भिन्नाष्टवर्गजनिताखिलबिन्दवः स्युः। संकलिता ते बिन्दवः पृथक् पृथक् प्रत्येकस्य ग्रहस्योच्यन्ते देवोधवो इत्यादिना। अंकानां ज्ञानाय वृद्धकारिकोक्त सूत्रं व्यवह्रियन्ते—

यथा क ट प य वर्ग भवैरिह पिण्डान्त्यैरक्षरैरङ्काः।
नमे च शून्ये ज्ञेये तथा स्वरे केवले कथितम्॥

अर्थात् कादि नव, टादि नव, पादि पञ्च, यादि अष्टौ। पिण्डान्त्यैरक्षरैरङ्काः=संयुक्ताक्षारस्यान्तिमवर्णो यस्तस्य योऽङ्कः स ज्ञेयः। न कारे ञ कारे तथा केवले स्वरे शून्यं ज्ञेयम्। यथा सरण्या स्पष्टम्—

अ=०	क=१	ट=१	प=१	य=१
इ=०	ख=२	ठ=२	फ=२	र=२
उ=०	ग=३	ड=३	ब=३	ल=३
ऋ=०	घ=४	ढ=४	भ=४	व=४
लृ=०	ङ=५	ण=५	म=५	श=५
ए=०	च=६	त=६	× ×	ष=६
ऐ=०	छ=७	थ=७	× ×	स=७
ओ=०	ज=८	द=८	× ×	ह=८
औ=०	झ=९	ध=९	× ×	× ×
× ×	ञ=०	न=०	× ×	× ×

"अंकाना वामतो गतिः" इति रीत्या सर्वेषां वर्णानां संख्या विन्यसेत्। यथा सूर्यस्य देव=द=८, व=४ वामगतिना स्थापनेन जाता=४८, एवमेव चन्द्रस्य धवः=४९, कुजस्य धीगः=३९, बुधस्य वशः=५४, गुरो तमः=५६, शुक्रस्य रमाः=५२, शनेः धूलिः=३९। एते सूर्यादिसप्तखेटानां सङ्कलिताः शुभचिह्ना पृथक् पृथगुक्तास्तेषामपि संयोगेन समुदायबिन्दवः सालोल=(३३७)=सप्तत्रिंश-दधिक शतत्रयमिता संख्याः भवन्ति। प्रतीत्यर्थं तद्गणितं, ४८+४९+३९+५४+५६+५२+३९+=३३७ 'समुदायबिन्दवः'। को नाम समुदायस्तदुच्यते सर्वाष्टवर्गः समुदायसंज्ञ इति। अत्र प्रसंगात् वराहमिहिरोक्ता प्रत्येकस्य ग्रहस्याष्टकवर्गा कथ्यन्ते (वृहज्जा ९/१-७)

सूर्यस्य- स्वादर्कः प्रथमायबन्धुनिधनाद्व्याज्ञातपोद्यूनगो
वक्रात् स्वादिव तद्वदेव रविजात् शुक्रात् स्मरान्त्यारिषु।
जीवात् धर्मसुतायशत्रुषु दशत्र्यायारिगः शीतगोः
एष्वेवान्त्यतपः सुतेषु च बुधात् लग्नात् सबन्ध्वन्त्यगः॥

चन्द्रस्य- लग्नात् षट्त्रिदशायगः सधनधीधर्मेषु चाराच्छशी
स्वात् सास्तादिषु, सांष्टसप्तसु रवेः, षट्त्र्यायधीस्थो यमात्।
धीत्र्यायाष्टमकण्टकेषु शशिजात् जीवाद् व्ययायाष्टगः,
केन्द्रस्थश्च सितात्तु धर्मसुखधीत्र्यायास्पदानङ्गगः॥

भौमस्य- वक्रस्तूपचयेष्विनात् सतनयेष्वाद्याधिकेषूदयात्,
चन्द्राद् दिग्विफलेषु केन्द्रनिधनप्राप्त्यर्थगः स्वाच्छुभः।

धर्मायाष्टमकेन्द्रगोऽर्कतनयात् ज्ञात् षट्त्रिधीलाभगः,
शुक्रात् षड्व्ययलाभमृत्युषु गुरोः कर्मान्त्यलाभारिषु॥

बुधस्य- द्व्याद्यायाष्टतपः सुखेषु भृगुजात् सत्र्यात्मजेष्विन्दुजः,
साज्ञास्तेषु यमारयोः व्ययरिपुप्राप्त्यष्टगो वाक्पतेः।
धर्मायारिसुतव्ययेषु सवितुः स्वात् साद्यकर्मत्रिगः
षट्स्वायाष्टसुखास्पदेषु हिमगोः साद्येषु लग्नाच्छुभः॥

गुरोः- दिक्स्वाद्याष्टमदायबन्धुषु कुजात् स्वात् सत्रिकेष्वङ्गिराः,
सूर्यात् सत्रिनवेषु धीस्वनवदिग्लाभारिगो भार्गवात्।
जायायार्थनवात्मजेषु हिमगोः मन्दात् त्रिषड्धीव्यये,
दिग्धीषट्स्वसुखायपूर्व नवगो ज्ञात् सस्मरश्चोदयात्॥

शुक्रस्य- लग्नादासुतलाभरन्ध्रनवगः सान्त्यः शशाङ्कात्सितः,
स्वात् साज्ञेषु सुखत्रिधीनवदशच्छिद्राप्तिगः सूर्यजात्।
रन्ध्रायव्ययगो रवेर्नवदशप्राप्त्यष्टधीस्थो गुरोः,
ज्ञाद् धीत्र्यायनवारिगस्त्रिनवषट्पुत्राय सान्त्यः कुजात्॥

शनेः- मन्दः स्वात् त्रिसुतायशत्रुषु शुभः साज्ञान्त्यगो भूमिजात्,
केन्द्रायाष्टधनेष्विनादुपचयेष्वाद्ये सुखे चोदयात्।
धर्मायारिदशान्त्यमृत्युषु बुधात् चन्द्रात् त्रिषड्लाभगः,
षष्ठायान्त्यगतः सितात्, सुरगुरोः प्राप्त्यन्त्यधीशत्रुषु॥

लग्नस्य-(वृ० पा० अष्टक वर्ग ६८-७०)

आर्किक्ष शुक्रगुर्वाराः सौम्यदेवेज्यभागर्वाः।
हित्वा सौम्यगुरु शेषाः सूर्येज्यभृगुसूर्यजाः॥
तथा जीवभृगु बुद्धौ, सर्वे शुक्रं बिना क्षते।
जीव एकस्तथा द्यूने मृतौ सौम्यभृगु तथा॥
धर्मे गुरु सितावेव खे भवे शुक्रमन्तरा।
सूर्यचन्द्रौ तथा रिष्फे स्थानं लग्नस्य कीर्त्तितम्॥

एतेषां स्पष्टार्थाः अग्रे (हिन्दी टीकायां) चक्रसारिण्यादि लिखिता सन्ति॥ १-२॥

हिन्दी — लग्न सहित सूर्यादि सातो ग्रहों के चक्र लिखकर दूसरे श्लोक (देवो-धवो) के अनुसार बिन्दुओं (शुभचिन्हों) के स्थापन से भिन्नाष्टकवर्ग सम्बन्धि बिन्दु होते हैं।

सूर्यादि सातों ग्रहों के बिन्दु (शुभचिन्ह) क्रमशः ४८, ४९, ३९, ५४, ५६,

५२, ३९ होते हैं। इन सबकी संख्या (सबको जोड़ने पर) ३३७ होती है। इस सर्वाष्टक (सभी के योग) को समुदाय भी कहते हैं।

उदाहरणार्थ—आगे सूर्यादि ग्रहों के लग्नसहित अष्टकवर्ग के शुभाशुभ अंक और चक्र दिये जा रहे हैं। इसी जन्माङ्ग के आधार पर यहाँ लग्न सहित सभी ग्रहों के अष्टक वर्ग भी प्रस्तुत हैं [वृहत्पराशरहोराशास्त्र में बिन्दु को अशुभ और रेखा को शुभ माना गया है।]

जन्माङ्ग

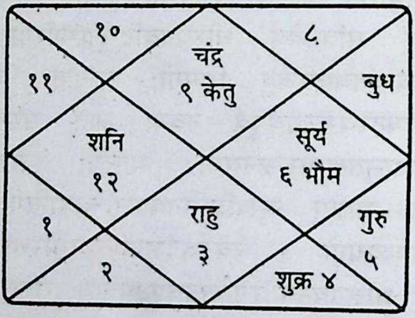

ग्रन्थान्तर से एकादि बिन्दु का फल—

क्लेशोऽर्थहानिर्व्यसनं समत्वं शश्वत्सुखं नित्यधनागमश्च।
सम्पत्प्रवृद्धिर्विपुलामलश्रीरेकादिबिन्दोः फलमामनन्तिः॥

क्लेश १, धन की हानि २, दुःख ३, समान (न अच्छा न बुरा) ४, नित्य सुख ५, धन का आगम ६, सम्पत्ति की वृद्धि ७ और निष्कलुषलक्ष्मी ८। ये एकादि बिन्दु के फल होते हैं।

सूर्य का शुभाष्टक चक्र—

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न
शुभ अङ्क	१	३	१	३	५	६	१	३
	२	६	२	५	६	७	२	४
	४	१०	४	६	९	१२	४	६
	७	११	७	९	११	×	७	१०
	८	×	८	१०	×	×	८	११
	९	×	९	११	×	×	९	१२
	१०	×	१०	१२	×	×	१०	×
	११	×	११	×	×	×	११	×

यहाँ पर सूर्य के अष्टवर्ग कुण्डली में मेषराशि में चार बिन्दु हैं अतः गोचरवश मेषराशि में आने पर सूर्य इस कुण्डलीवाले के लिए मध्यम फलदायक होंगे, एवं वृष में भी मध्यम, मिथुन में नित्य धन का आगम इत्यादि बिन्दुवश फल समझना चाहिए, इसी तरह सब ग्रहों की अष्टवर्ग में कुण्डली देख कर फल का विचार करें।

सूर्य का अशुभाष्टक चक्र—

ग्रह	रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न
अशुभ अङ्क	३	१	३	१	१	१	३	१
	५	२	५	२	२	२	५	२
	६	४	६	४	३	३	६	५
	१२	५	१२	७	४	४	१२	७
	०	७	०	८	७	५	०	८
	०	८	०	०	८	८	०	९
	०	९	०	०	१०	९	०	०
	०	१२	०	०	१२	१०	०	०
	०	०	०	०	०	११	०	०

सूर्य का अष्टकवर्ग —

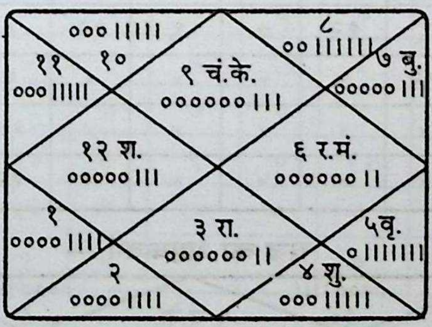
०००।।।।।
१०
११
०००।।।।।
९ चं.के.
००००००।।।
८
००।।।।।।
७ बु.
०००००।।।
१२ श.
०००००।।।
६ र.मं.
००००००।।
१
००००।।।
३ रा.
००००००।।
५वृ.
०।।।।।।।
२
००००।।।।
४ शु.
०००।।।।।

चन्द्र का शुभाष्टक चक्र—

ग्रह	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य
शुभ अङ्क	१	२३	१	१	३	३	३	२
	३	३	३	४	४	५	६	६
	६	५	४	७	५	६	१०	७
	७	६	५	८	७	११	११	८
	१०	९	७	१०	९	×	×	१०
	११	१०	८	११	१०	×	×	११
	×	११	१०	१२	११	०	×	०
	×	×	११	×	×	×	×	०

चन्द्र का अशुभाष्टक चक्र—

ग्रह	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य
अशुभ अङ्क	२	१	२	२	१	१	१	१
	४	४	६	३	२	२	२	२
	५	७	९	५	६	४	४	४
	८	८	१२	६	८	७	५	५
	९	१२	०	९	१२	८	७	६
	१२	×	×	×	×	९	८	१२
	×	×	×	×	×	१०	९	×
	×	×	×	×	×	१२	१२	×

चन्द्र का अष्टकवर्ग —

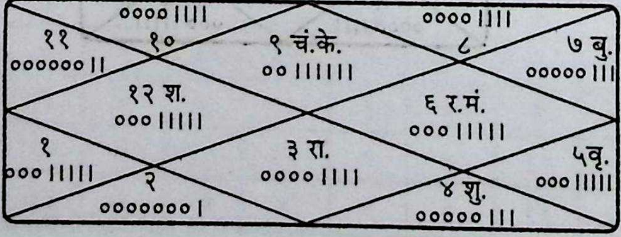
oooo||||
११
oooooo||
१०
९ चं.के.
oo||||||
oooo||||
८
७ बु.
ooooo|||
१२ श.
ooo|||||
६ र.मं.
ooo|||||
१
ooo|||||
२
ooooooo|
३ रा.
oooo||||
४ शु.
ooooo|||
५वृ.
ooo|||||

भौम का शुभाष्टक चक्र—

ग्रह	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र
	१	३	६	६	१	१	३	३
	२	५	१०	८	४	३	५	६
	४	६	११	११	७	६	६	११
शुभ	७	११	१२	१२	८	१०	१०	०
अङ्क	८	०	०	०	९	११	११	०
	१०	०	०	०	१०	०	०	०
	११	०	०	०	११	०	०	०
	०	०	०	०	×	०	०	०

भौम का अशुभाष्टक चक्र—

ग्रह	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र
	३	१	१	१	२	२	१	१
	५	२	२	२	३	४	२	२
	६	४	३	३	५	५	४	४
अशुभ	९	७	४	४	६	७	७	५
अङ्क	१२	८	५	५	१२	८	८	७
	०	९	७	७	०	९	९	८
	०	१०	८	९	०	१२	१२	०
	०	१२	९	१०	०	०	०	१०
	०	०	०	०	०	०	०	१२

भौम का अष्टकवर्ग —

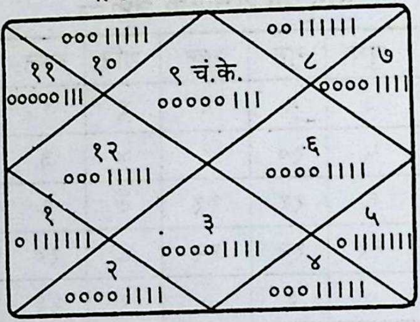
०००।।।।।
१०
११
०००००।।।
९ चं.के.
०००००।।।
००।।।।।।
८
७
००००।।।।
१२
०००।।।।।
६
००००।।।।
१
०।।।।।।
३
००००।।।।
५
०।।।।।।।
२
००००।।।।
४
०००।।।।।

बुध का शुभाष्टक चक्र—

ग्रह	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र	भौम
शुभ अङ्क	१	३	१	१	१	५	२	१
	३	८	२	२	२	६	४	२
	५	११	३	४	४	९	६	४
	६	१२	४	७	६	११	८	७
	९	०	५	८	८	१२	१०	८
	१०	०	८	९	१०	०	११	९
	११	०	९	१०	११	०	०	१०
	१२	०	११	११	०	०	०	११

बुध का अशुभाष्टक चक्र—

ग्रह	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र	भौम
अशुभ स्थान	२	१	६	३	३	१	१	३
	४	२	७	५	५	२	३	५
	७	३	१०	६	७	३	५	६
	८	४	१२	१२	९	४	७	१२
	०	५	०	०	१२	७	९	०
	०	७	०	०	०	८	१२	०
	०	९	०	०	०	१०	०	०
	०	१०	०	०	०	०	०	०

बुध का अष्टकवर्ग —

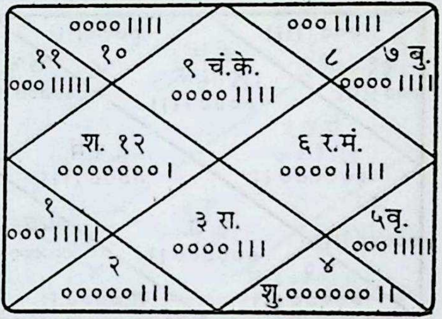
००००।।।।
१०
९ चं.के.
००००।।।।
०००।।।।।
८
७ बु.
००००।।।।
११
०००।।।।।
श. १२
०००००००।
६ र.मं.
००००।।।।
१
०००।।।।।
३ रा.
००००।।।
५वृ.
०००।।।।।
२
०००००।।।
४
शु.००००००।।

गुरु का शुभाष्टक चक्र—

ग्रह	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध
शुभ स्थान	१	२	३	१	१	२	१	१
	२	५	५	२	२	५	२	२
	३	६	६	४	३	७	४	४
	४	९	१२	५	४	९	७	५
	७	१०	०	६	७	११	८	६
	८	११	०	७	८	०	१०	९
	१०	०	०	९	९	०	११	१०
	११	०	०	१०	१०	०	०	११
	०	०	०	११	११	०	०	०

गुरु का अशुभाष्टक चक्र—

ग्रह	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध
अशुभ स्थान	५	१	१	३	५	१	७	३
	६	३	२	८	६	३	५	७
	९	४	४	१२	१०	४	६	८
	१२	७	७	०	०	६	९	१२
	०	८	८	०	०	८	१२	०
	०	१२	९	०	०	१०	०	०
	०	०	१०	०	०	१२	०	०
	०	०	११	०	०	०	०	०

गुरु का अष्टकवर्ग —

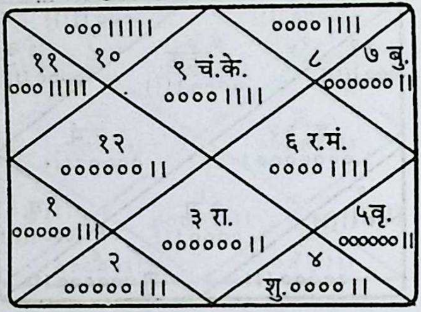
०००।।।।।
१०
११
०००।।।।।
९ चं.के.
००००।।।।
००००।।।।
८
७ बु.
००००००।।
१२
००००००।।
६ र.मं.
००००।।।।
१
०००००।।।
३ रा.
००००००।।
५वृ.
००००००।।
२
०००००।।।
४
शु.००००।।

शुक्र का शुभाष्टक चक्र—

ग्रह	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध
शुभ स्थान	१	३	१	८	१	३	३	५
	२	४	२	११	२	५	५	८
	३	५	३	१२	३	६	६	९
	४	८	४	०	४	९	९	१०
	५	९	५	०	५	११	११	११
	८	१०	८	०	८	१२	०	०
	९	११	९	०	९	०	०	०
	१०	०	११	०	११	०	०	०
	११	०	०	०	१२	०	०	०

शुक्र का अशुभाष्टक चक्र—

ग्रह	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु
अशुभ स्थान	६	१	६	१	६	१	१	१
	७	२	७	२	७	२	२	२
	१२	६	१०	३	१०	४	४	३
	०	७	१२	४	०	७	७	४
	०	१२	०	५	०	८	८	६
	०	०	०	६	०	१०	१०	७
	०	०	०	७	०	०	१२	१२
	०	०	०	९	०	०	०	०
	०	०	०	१०	०	०	०	०

शुक्र का अष्टकवर्ग —

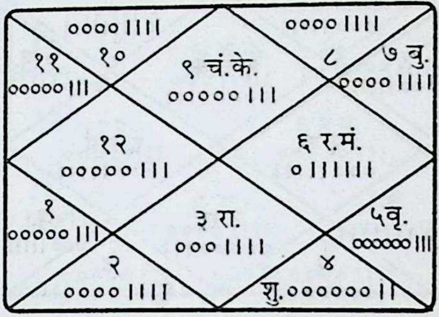
००००।।।।
११
१०
९ चं.के.
०००००।।।
००००।।।।
८
७ बु.
००००।।।।
०००००।।।
१२
०००००।।।
६ र.मं.
०।।।।।।
१
०००००।।।
३ रा.
०००।।।।
५वृ.
०००००।।।
२
००००।।।।
४
शु.००००००।।

शनि का शुभाष्टक चक्र—

ग्रह	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र
शुभ स्थान	३	१	१	३	३	६	५	६
	५	३	२	६	५	८	६	११
	६	४	४	११	६	९	११	१२
	११		७	०	१०	१०	१२	०
	०	१०	८	०	११	११	०	०
	०	११	१०	०	१२	१२	०	०
	०	०	११	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०

शनि का अशुभाष्टक चक्र—

ग्रह	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र
अशुभ स्थान	१	२	३	१	१	१	१	१
	२	५	५	२	२	२	२	२
	४	७	६	४	४	३	३	३
	७	८	९	५	७	४	४	४
	८	९	१२	७	८	५	७	५
	९	१२	०	८	९	७	८	७
	१०	०	०	९	०	०	९	८
	१२	०	०	१०	०	०	१०	९
	०	०	०	१२	०	०	०	१०

शनि का अष्टकवर्ग —

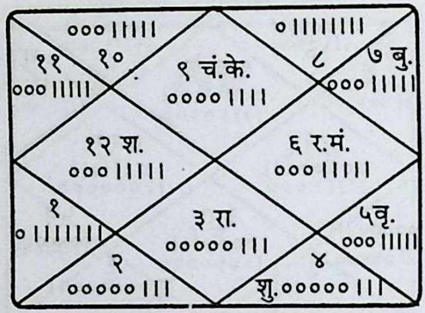
०००।।।।।
१०
११
०००।।।।।
९ चं.के.
००००।।।।
०।।।।।।।
८
७ बु.
०००।।।।।
१२ श.
०००।।।।।
६ र.मं.
०००।।।।।
१
०।।।।।।।
३ रा.
०००००।।।
५वृ.
०००।।।।।
२
०००००।।।
४
शु.०००००।।।

लग्न का शुभाष्टक चक्र—

ग्रह	लग्न	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ स्थान	३	३	३	१	१	१	१	१
	६	४	६	३	२	२	२	२
	१०	६	१०	६	४	४	३	४
	११	१०	११	१०	६	५	४	६
	०	११	०	११	८	६	५	१०
	०	१२	०	०	१०	७	८	११
	०	०	०	०	११	९	९	०
	०	०	०	०	०	१०	११	०
	०	०	०	०	०	११	०	०

लग्न का अशुभाष्टक चक्र—

ग्रह	लग्न	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
अशुभ स्थान	१	१	१	२	३	३	६	३
	२	२	२	४	५	८	७	५
	४	५	४	५	७	११	१०	७
	५	७	५	७	९	१२	१२	८
	७	८	७	८	१२	०	०	९
	८	९	८	९	०	०	०	१२
	९	०	९	१२	०	०	०	०
	१०	०	१२	०	०	०	०	०

(वृहत्पराशर होरा अष्टक वर्ग ६३-७०)

लग्नाष्टकवर्ग —

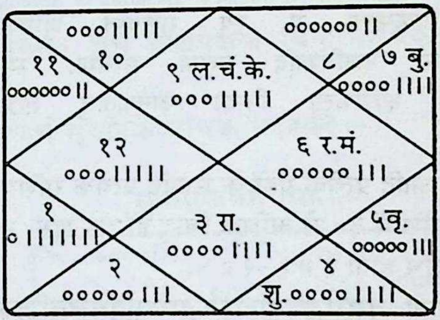
०००।।।।।
००००००।।
११
१०
९ ल.चं.के.
०००।।।।।
८
७ बु.
००००।।।।
००००००।।
१२
०००।।।।।
६ र.मं.
०००००।।।
१
०।।।।।।।
३ रा.
००००।।।।
५वृ.
०००००।।।
२
०००००।।।
४
शु.००००।।।।

शुभ संयोगाष्टकवर्गाङ्कचक्र—

	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	योग
मेष	४	३	१	३	५	५	१	१	२३
वृष	४	७	४	५	५	४	५	५	३९
मिथुन	६	४	४	४	६	३	५	४	३६
कर्क	३	५	३	६	४	६	५	४	३६
सिंह	१	३	१	४	६	६	३	५	२९
कन्या	६	३	४	५	४	१	३	६	३१
तुला	५	५	४	६	६	४	३	४	३७
वृश्चिक	२	४	२	३	४	४	१	६	२६
धनु	६	२	५	४	४	५	४	३	३३
मकर	३	४	३	४	३	४	३	३	२७
कुम्भ	४	६	५	३	३	५	३	६	३५
मीन	५	३	३	७	६	५	३	३	३५

संयोगाष्टकवर्ग का फल—

त्रिंशाधिकफला ये स्यु राशयस्ते शुभावहाः।
त्रिंशान्तं पञ्चविंशादि राशयो मध्यमाः स्मृताः॥
अतः क्षीणफला निन्द्या अनुपातात्तु तत्क्रमः॥

(वृ. पारा. समुदाया.)

लग्नयुत सूर्य आदि प्रत्येक ग्रहों के मेषादि प्रत्येक राशियों के शुभ अष्टवर्गाङ्कों का योग करें, जिस राशि में ३० से अधिक बिन्दु हों वह शुभ, २५ से ३० तक मध्यम और २५ से कम अशुभ होता है॥ १-२॥

मेषादियद्गृहगता वसुसङ्ख्ययातास्तद्भावपुष्टिबलवृद्धिकरा भवन्ति।
षट्पञ्चसप्तसहितानि शुभप्रदानि त्रिद्व्येकबिन्दुयुतभानि न शोभनानि॥ ३॥
मिश्रं फलं भवति सागरबिन्दुयोगे रोगापवादभयदा यदि शून्यभावाः।
एकादिबिन्दुयुतभानुमुखग्रहाणां भिन्नाष्टवर्गजनि सर्वफलं प्रवच्मि॥ ४॥
करोति नानाविधरोगदुःखभयाटनादीनि च सैकबिन्दुः।
द्विको मनस्तापनृपालचोरकृतापवादाशननाशनानि॥ ५॥
त्रिकस्त्वसञ्चारकृशावलम्बकलेवरव्याकुलमानसानि।
सुखासुखार्थव्ययवित्तलाभफलप्रदः सागरबिन्दुकः स्यात्॥ ६॥
सद्वस्त्रलाभसुतलालनसाधुसङ्गविद्याधनानि कुरुते च सपञ्चबिन्दुः।
षड्बिन्दुकस्तु नवमोहनरूपशीलसङ्ग्रामजिद्धनयशोबलवाहनानि॥ ७॥
ससप्तबिन्दुस्तुरगादियानसेनाधनप्राभवशोभनानि।
बिन्द्वष्टकः सप्तगुणाभिरामराजप्रतापं प्रकटीकरोति॥ ८॥

संस्कृत — अत्र अष्टकवर्गे बिन्दुसंख्यावशात् भावग्रहफलान्युच्यन्ते। **मेषादीति।** यस्य खेटस्य अष्टकवर्गो विचार्य्यते तस्य खेटस्य यस्मिन् भावे सर्वेभ्य एव ग्रहेभ्य शुभत्वं ''वसुसंख्यक (८) बिन्दवो स्यात्'' तद्भावस्य तद्ग्रहवशात् पुष्टिर्भवति। अर्थात् चारवशात् तद्भावे समागते ग्रहे एवं तद्दशायां च तद्भावजन्यफलस्य वृद्धिर्भवति। षट-पंच सप्त बिन्दु सहितानि शुभफलदानि, सागर (४) बिन्दु सहितानि मिश्रफलदानि, ये शून्यभावा अर्थात् नैकोऽपि बिन्दु अपितु अष्टौ रेखा एव स्यात्तदा ते भावाः रोगापवाद भयदा च भवन्ति। अत्र एकादि बिन्दुयुतानां सूर्यादिग्रहाणां भिन्नाष्टवर्गजनि=तात्कालिकाष्टवर्गात् उद्भूतं सर्वफलं=शुभाशुभफलं प्रवच्मि=कथयामि इति ग्रन्थकारोक्तिः। अन्यत्स्पष्टर्था सरलार्था च।

अत्र बिन्दुपरत्वेन शुभाशुभफलज्ञानार्थं बिन्दूनावगमप्रकारोच्यते। यत्र तत्र स्थाने (भावे) स्थिते यः कश्चिद् ग्रहो यावद्भ्यो ग्रहेभ्यः शुभः तावन्तः

तस्यग्रहस्याष्टकवर्गे तत्र तत्र बिन्दवो स्थाप्याः। यावद्भ्यो ग्रहेभ्य अशुभः तावत्यो रेखा स्थाप्याः। बिन्दूनां रेखाणाञ्चान्तरे कृते यदवशिष्येत् तदनुसारं शुभाशुभं फलं ज्ञेयम्। शुभे रेखापेक्षया बिन्दुभिरधिकैः, अशुभे रेखापेक्षया बिन्द्वल्पञ्च भवति।

—उदाहरणार्थं सूर्याष्टकवर्गचक्रं प्रदर्श्यते—

सूर्याष्टकवर्ग चक्र—

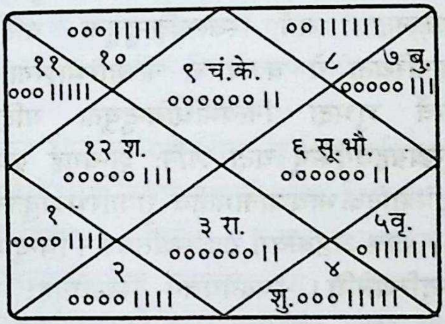

अत्र वृहजातकोक्त "स्वादर्के प्रथमायबन्धु." वशात् मेषे बिन्दु चतुष्कञ्चान्तरेण किमपिनावशिष्टमित्यत्र नापि शुभं नाप्यशुभञ्चेतिवृषेऽपि तथैव। मिथुने षष्ठ बिन्दवः रेखा युगलञ्च तत्रान्तरेण बिन्दु चतुष्कमवशिष्येत् अतः गोचरवशात सूर्यो यदा मिथुनस्थे भवेत्तदा सूर्यो अष्टमभाग चतुष्केन शुभो भवेत्। अनेन विधिना कर्कसिंहकन्यादि ज्ञेयाः ॥ ३-८ ॥

हिन्दी — मेषादि बारह राशि में जिसराशि में ८ बिन्दु पड़ें तो वह राशिस्थित भाव पुष्टि-बल-वृद्धि कारक होता है। जिस भाव में ५ बिन्दु ७ बिन्दु हों वे भी शुभफल देने वाले होते हैं। जो राशि ३ बिन्दु या २ बिन्दु से युक्त हों वे शुभ फलदायक नहीं होते हैं।

जो ४ बिन्दु से युक्त हों वे मिश्र फल देते हैं, जो बिन्दु से रहित हों वे रोग-अपवाद-भय को देते हैं। अब एक आदि बिन्दु से युक्त सूर्यादि ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्ग से होने वाले सम्पूर्ण फल को कहता हूँ।

१ बिन्दु नाना प्रकार का रोग-दुःख-भय और भ्रमण कारक, २ बिन्दु से मन में ताप—राजा और चोर से दुःख, अपवाद तथा भोजन में कष्ट, ३ बिन्दु से अच्छे प्रकार से चलने में बाधा, कृश शरीर तथा मन व्याकुल, ४ बिन्दु से सुख-दुःख, धन आदि का आय व्यय अर्थात् अच्छा बुरा दोनों ही समान रूप से होते हैं।

५ बिन्दु उत्तमवस्त्र का लाभ-पुत्र का लालन पालन-साधु सङ्ग और विद्या व

धनलाभ, ६ बिन्दु सुन्दर तथा मोहित करने वाला रूप-शील, युद्ध में विजय-धन-यश-बल तथा वाहन देते हैं।

७ बिन्दु घोड़ा आदि की सवारी-सेना-धन-विभव-शोभा आदि का वृद्धिकारक तथा ८ बिन्दु सत्तगुण से युक्त राजप्रताप को प्रकाशित करते हैं॥ ३-८॥

शरादिबिन्दुस्थितराशियातः स्वकीयवर्गे शुभदस्तु नित्यम्।
अतोऽन्यथा चेदफलप्रदाता गोचारतः शून्यफले प्रमादी॥ ९॥
स्वोच्चमित्रादिवर्गस्थाः केन्द्रादिबलसंयुताः।
अनिष्टफलदाः सर्वे स्वल्पबिन्दुयुता यदि॥ १०॥
दुष्टस्थानस्थिता ये च ये च नीचारिभांशगाः।
ते सर्वे शुभदा नित्यमधिबिन्दुयुता यदि॥ ११॥
दिनेशमुख्यग्रहवर्गकेषु यदा शनिः शून्यगृहं प्रयातः।
करोति पित्रादिकभावजानामतीव रोगारिभयाकुलानि॥ १२॥

संस्कृत — अत्र अष्टकवर्गे ग्रहस्थितिवशेन बिन्दुपरत्वेन च फलान्युच्यन्ते। **शरादिबिन्दुस्थितेति**। स्वकीयवर्गे स्थितोग्रहः शरादिविन्दुस्थितिराशियातः=शर आदि (पंच-षट्-सप्त-अष्टौ वा) बिन्दवः यत्र राशौ स्थितः स्यात्तदा असौ ग्रहस्तद्भावे नित्यम्=चारवशात् (राशि संचरणे) गच्छेत्तदा शुभप्रदो भवेत्। अतोन्यथा चेत्=अर्थाद्यदि शराल्प (पंचाल्प) बिन्दुयुतराशौ स्ववर्ग हीनो ग्रहो स्थितस्तदा अफलप्रदाता=निष्फलो भवति। शून्यफले=बिन्दु विहीने राशौ चारवशात् समागते ग्रहे तदा प्रमादी=विभ्रमशीलो नरः भवति। स्वोच्चमित्रादिवर्गस्था केन्द्रादिभिर्बलैः संयुता ग्रहाः यदि अष्टकवर्गे स्वल्पबिन्दुयुताः=अर्द्धाल्पबिन्दुयुक्ताः स्युस्तदा सर्व एव अनिष्टफलदायकाः भवन्ति। ये ग्रहा दुष्टस्थानस्थिताः=षडष्टादि (६-८-१२) अशुभभावगताः, नीचारिभांशगताश्च यदि अधिबिन्दुयुताः=अर्द्धाधिकबिन्दुसहितास्तदा ते सर्वे नित्यं शुभदा एव। अर्थात् नाधिकबिन्दुकाः कदाचिद्दोषावहा भवन्तीति तात्पर्यः। दिनेशमुख्यग्रहवर्गकेषु=सूर्यादिषड्ग्रहाणां वर्गगतः शनिः यदा अष्टकवर्गे शून्यगृहं=बिन्दुरहितं भावं (राशौ) चारवशाद्यदाप्रयाति तदा पित्रादिकभावजानां=पितृमातृप्रभृतीनां अतीव रोगारिभयाकुलानि करोति॥ ९-१२॥

हिन्दी — ५-६-७ आदि बिन्दु जिसराशि में हों उसराशि में अपने वर्ग का होकर जो ग्रह रहे वह सदा शुभप्रद होता है। इससे यदि अन्यथा हो तो गोचरवश उस राशि में आने पर वह दुष्टफल देता है। शून्य बिन्दुवाला ग्रह प्रमादकारी (भ्रमकारक) फल देता है।

अपनी उच्चराशि में मित्रादिराशि या वर्ग में स्थित केन्द्रादि बल से भी संयुक्त ग्रह यदि थोड़े बिन्दु से युक्त हों तो वे भी अनिष्ट फल देते हैं।

ग्रह यदि दुष्टस्थान में नीच या शत्रु के राश्यंश में हों परन्तु अधिक बिन्दु से युक्त हों तो वे सदा शुभप्रद होते हैं।

सूर्य-चन्द्र-भौम-बुध-गुरु-शुक्र-शनि के अष्टकवर्ग में जिसभाव में बिन्दु नहीं हो उसराशि में गोचरवश शनि के जाने पर पित्रादिक के लिए कष्टकर होता है। अर्थात् शनि जब सूर्याष्टक के बिन्दुविहीन भावराशि में गोचरवश जाये तो पिता के लिए, बुधाष्टक में मित्र के लिए, गुर्वष्टक में पुत्र के लिए, शुक्राष्टक में स्त्री के लिए और लग्न के अष्टक वर्ग में स्वयं के लिए कष्टकर होता है॥ ९-१२॥

रविफल —

लग्नं गते दिनकरे रिपुनीचभागे जातः कृशानुयुगबिन्दुयुते च रोगी।
बाणादिबिन्दुसहितोदयगे दिनेशे स्वोच्चेऽथवा निजगृहे नृपतिश्चिरायुः॥ १३॥
केन्द्रत्रिकोणोपगते दिनेशे षट्पञ्चसप्ताष्टकबिन्दुवर्गे।
रुद्रामलानीलचलाब्दकेषु जातस्य वा तज्जनकस्य मृत्युः॥ १४॥
शोध्यावशिष्टद्वयबिन्दुयाते केन्द्रस्थिते सेन्दुशनीन्दुसूनौ।
भानौ दशाब्दात्परतः समृद्धां तातस्य राज्यश्रियमाहुरार्याः॥ १५॥

संस्कृत — अत्र स्थितिवशात् सूर्याष्टकवर्गफलम्। **लग्नं गतेति।** दिनकरे लग्नेगते स्यात् यदा शत्रुराशेः नीचराशेर्नवांशगतो वा बिन्दुत्रयेण-द्वयेन वा युतो भवेत्तदा जातो रोगी भवति। गोचरवशेन यदा दिनकरो लग्नराशिं प्राप्नोति तदा तदेति, अर्थात् रोगी भवति।

दिनेशो बाणादि (पञ्चषट्सप्ताष्ट) बिन्दुसहितो उदये (लग्ने) स्थितः स्वोच्चे (मेषे) गतः, अथवा निजगृहे (सिंहे) गतो भवेत्तदा जातश्चिरायुः (दीर्घायु) नृःपतिः स्यादिति। केन्द्र (१।४।७।१०) त्रिकोणे (९।५) उपगतो रविर्यदि षट्पञ्चसप्ताष्टक (६।५।७।८) बिन्दुसहितो भवेत्तदा क्रमेण रुद्रा-मलानीलचलाब्दकेषु जातस्य वा जातस्य पितुः मृत्युर्भवति। अर्थात् षड्-बिन्दुयुतो रविः केन्द्रत्रिकोणगो भवेत्तदा रूद्रा (२२)ब्दे, पञ्चबिन्दुयुतः स्यात्तदा मला (३५)ब्दे, सप्तबिन्दुयुतः स्यात्तदा नील (३०) अब्दे, अष्टबिन्दुयुतश्चेत्तदा चला (३६)ब्दे जातस्य वा तज्जनकस्य मरणं भवेदिति। गोचरवशात्तद्राशिगत सूर्यवशात् मासं ज्ञेयम्। भानौ सेन्दुशनीन्दुसूनौ=चन्द्रशनिबुधैः सहिते सूर्ये केन्द्र-स्थिते तस्मिन् शोध्यावशिष्टद्वयबिन्दुयाते=त्रिकोणैकाधिपत्यशोधनावशिष्टेन-बिन्दुद्वयेन युक्ते च दशाब्दात्=दशवर्षात् परतः तातस्य=जातकस्य पितुः, समृद्धां राजश्रियमार्या आहुः॥ १३-१५॥

हिन्दी — यदि सूर्य शत्रुराशि या नीचराशि के नवांश में स्थित होकर लग्न गत हो और तीन या चार बिन्दु से युक्त हो तो जातक रोगी, अपनी उच्चराशि में या अपने गृह का होकर लग्नस्थ सूर्य यदि पाँच आदि (५-६-७-८) बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक दीर्घायु राजा होता है।

सूर्य केन्द्र स्थान (१-४-७-१०) या त्रिकोण (५-७) में स्थित होकर छै-पाँच-सात या आठ बिन्दुओं से युक्त हो तो जातक की या उसके पिता की २२-३५-३० या ३६ वर्षों में मृत्यु होती है। अर्थात् ६ बिन्दु हो तो २२ वें वर्ष में ५ बिन्दु हो तो ३५वें वर्ष में, ७ बिन्दु हो तो ३०वें वर्ष में और ८ बिन्दु हो तो ३६वें वर्ष में मृत्यु होती है।

जातक के जन्मकाल में सूर्य यदि-चन्द्र-बुध और शनि के साथ केन्द्रस्थान में हो तो त्रिकोण शोधन और एकाधिपत्यशोधन के बाद २ बिन्दु ही सूर्य से युत रहे तो दश वर्ष का जब जातक हो जाता है तब उसके पिता को सम्यक् प्रकार से ऋद्धि सिद्धि से युक्त राजलक्ष्मी मिलती हैं, ऐसा श्रेष्ठ विद्वान् लोग कहे हैं ॥ १५ ॥

चन्द्रफल —

शून्यागारं तरणिशशिनोरष्टवर्गे तदीयो
मासो राशिः सकलशुभदे कर्मणि त्याज्य आहुः।
यक्ष्मालस्यं शशिनि तनुगे सैकलोकाक्षिबिन्दौ
सप्तत्रिंशच्छरदि मरणं द्वित्रिखेटान्विते च ॥ १६ ॥
केन्द्रत्रिकोणायगते शशाङ्के नीचारिगे वृद्धिकलाविहीने।
बिन्दुद्विके वा यदि सत्रिबिन्दौ तद्भावनाशं कथयन्ति तज्ज्ञाः ॥ १७ ॥
वेदादिबिन्दुयुतकोणचतुष्टये वा लाभे विधौ बलयुते यदि भाववृद्धिः।
बिन्द्वष्टके शशिनि केन्द्रगते तु जाता विद्यायशोधनबलप्रबला नरेन्द्राः ॥ १८ ॥

संस्कृत — अधुना स्थितिवशेन चन्द्राष्टकवर्गफलमाह। **शून्यागारमिति।** तरणिशशिनोः=सूर्याचन्द्रमसो अष्टकवर्गे शून्यागारं=शून्यभावराशिं (नैकोऽपिबिन्दुः) विज्ञाय तदीयो मासो राशिः=सूर्यस्य तद्राशिमासः अशभुः तद्वत् चन्द्रस्य तद्राशिश्च सकल शुभकर्मणि त्याज्यः इत्याहुः दैवज्ञाः। अर्थात् सूर्यस्याष्टकवर्गे यो राशिः बिन्दु (शुभचिह्न) रहितो भवति तस्मिन् राशौ (सौरमासे) चारवशादागते सूर्ये शुभकार्यं न कुर्यात्। एवं चन्द्राष्टकवर्गे यो राशिः बिन्दुरहितोः स्यात् तस्मिन् राशौ स्थिते चन्द्रे शुभं कर्म न कर्त्तुमितिभावः। तनुगे=लग्नगे शशिनि=चन्द्रे, सैकलोकाक्षिबिन्दौ=एकेन् त्रयेण द्वाभ्यां वा बिन्दुभ्यां युक्ते सति यक्ष्मालस्यं=क्षयरोगयुतं जातकं वाच्यम्। एवं भूते चन्द्रे द्वाभ्यां त्रिभिः वा खेटैरन्विते सति तदा सप्तत्रिंशच्छरदि=३७ वर्षे जातस्य मरणं भवति।

नीचराशिगतः, शत्रुराशिगतः, वृद्धि कलाविहिनो वा (कृष्णपक्षीयः) शशाङ्कः केन्द्रत्रिकोणाय (१।४।७।१०।५।९।११ अन्यतमभावं) गतो भवेत्, तथा च बिन्दुद्वय वा बिन्दुत्रययुतो यदि स्यात्तदा तद्भावस्य नाशं तज्ज्ञाः=ज्योतिर्विदाः कथयन्ति।

बलयुते विधौ=स्थानादिवीर्यसहिते चन्द्रे यदि वेदादिबिन्दुयुत=चतुः-पञ्च-षट्-सप्ताष्ट-बिन्दुयुते, कोणे (५।९) चतुष्टये (१।४।७।१०) वा लाभे (११) अवस्थिते सति यदि जन्मसमये भवेत् तदा भाववृद्धिः (उक्तलक्षण-लक्षितस्य भावस्य वृद्धिः) भवति।

अष्टबिन्दुकस्य विशेषफलम्। बिन्द्वष्टके शशिनि केन्द्रगते=अष्टबिन्दु-युक्तश्चन्द्रो यदि केन्द्रगते स्यात्तदा जातास्तु विद्यायशोधनबलप्रबला नरेन्द्रा (राजा) भवन्ति॥ १६-१८॥

हिन्दी — सूर्याष्टकवर्ग में जिसराशि में बिन्दु न हो उसराशि का मास (सौरमास) और चन्द्र के अष्टकवर्ग में बिन्दु से रहित राशि का सभी शुभकर्मों में त्याग करना चाहिए। यदि १, ३ या २ बिन्दुयुत लग्न में चन्द्र हो तो यक्ष्माजनित रोग होता है। यदि वहीं चन्द्रमा २ या ३ ग्रहों के साथ हो तो ३०वें वर्ष में मृत्यु होती है।

यदि त्रिकोण या केन्द्र में चन्द्र नीचराशिस्थ, शत्रुराशिस्थ या वृद्धिकला से विहीन हो, २ बिन्दु या ३ बिन्दु से युक्त हो तो वह उस भाव का नाश करता है, ऐसा दैवज्ञों ने कहा है।

यदि कोण (त्रिकोण) या चतुष्टय (केन्द्र) में या लाभ में चार या चार से अधिक बिन्दु से युक्त बलवान चन्द्र हो तो (जिसमें हो) उसभाव की वृद्धि करता है। आठ बिन्दु से युक्त चन्द्रमा यदि केन्द्र (१-४-७-१०) में हो तो वह जातक विद्या-यश-धन-बल से युक्त प्रबल प्रतापी राजा होता है॥ १६-१८॥

भौमफल —

स्वोच्चस्वके गुरुसुखोदयमानयाते बिन्द्वष्टके च यदि कोटिधनप्रभुः स्यात्।
चापाजसिंहमृगकीटविलग्नसंस्थे भौमे चतुष्टयफलोपगते च राजा॥ १९॥
बिन्द्वष्टके धरणिजेऽतिलघुक्षितीशो मानेऽथवा तनुगते च महीपतिः स्यात्।
जातोऽवनीशकुलजो यदि देशनाथः स्वोच्चस्वराशिसहिते नृपचक्रवर्ती॥ २०॥

संस्कृत — अत्र श्लोकद्वयेन भौमाष्टकवर्गफलमाह—**स्वोच्चेति**। कोटिधनप्रभु=कोट्याधीशः (श्रेष्ठिवरः), लघुक्षितीशः=सामन्तः (मण्डलेश्वर)। अन्यत् स्पष्टार्थाः श्लोकाः सरलार्थाः॥ १९-२०॥

हिन्दी — यदि भौमाष्टक वर्ग में भौम अपनी उच्चराशि या अपने गृह में ८ बिन्दु से युत होकर नवम-चतुर्थ-लग्न या दशम में रहे तो वह जातक करोड़पति होता

है। यदि भौम-धनु-मेष-सिंह-मकर या कर्क राशि का होकर लग्न में हो और ४ बिन्दु से युत हो तो वह जातक राजा होता है।

यदि भौम ८ बिन्दुयुत दशम या लग्न में रहे तो वह जातक छोटा राजा होता है, उच्च या स्वराशि में हो तो ऐसे योग में उत्पन्न जातक यदि राजकुल का हो तो वह देश का सम्राट अथवा चक्रवर्ती राजा होता है॥ १९-२०॥

बुधफल —

केन्द्रत्रिकोणे वसुबिन्दुके ज्ञे जातीयविद्याधिकभोगशाली।
स्वोच्चादिकैकद्वितयत्रिबिन्दौ तद्भाववृद्धिर्नच भावहानिः॥ २१॥
बिन्द्वाधिक्यं यत्तदागारमासे विद्यारम्भः सर्वविद्याकरः स्यात्।
गोचारेण ज्ञस्य शून्यालयस्थे मन्दे बन्धुज्ञातिसम्पद्विनाशः॥ २२॥

संस्कृत — अत्र बुधाष्टकवर्गफलमुच्यते—**केन्द्रेति**। वसुबिन्दुके ज्ञे= अष्टविन्दुयुते बुधे केन्द्र (१।४।७।१०) त्रिकोणे (५।९) स्थिते तदा जातो जातीयविद्याधिकभोगशाली=वंशानुगतविद्यायुतो बहुसुखभोगयुतश्च भवति। स्वोच्चादिके=स्वकीयोच्चे, मूलत्रिकोणे, स्वराशौ वा गते बुधे एकद्वितयत्रि-बिन्दुसहिते सति तदा तद्भाववृद्धिः (भावस्यवृद्धिः) भवति न च तथा लक्षणे भावहानिः। अर्थात् स्वनीचे शत्रुराश्यादौ वा गते बुधे एकद्वित्रिबिन्दुयुते तद्भावहानिर्भवतीति।

अष्टकवर्गे बुधस्य यदागारं यद्भवनं बिन्द्वाधिक्यं भवेत् तदागारमासे= तद्राशिसम्बन्धि यो मासो (सौरमासः) भवेत्तस्मिन्मासे विद्यारम्भो भवेत्तदा जातः सर्वासां विद्यानामाकरः धारकः भवति। बुधस्य यो राशिर्बिन्दुविरहितो स्यात्त-स्मिन् शून्यालये गोचारेण मन्दे (शनैश्चर) समागते जातस्य बन्धु ज्ञाति सम्पदानाञ्च विनाशो भवति॥ २१-२२॥

हिन्दी — यदि बुध ८ बिन्दुओं से युक्त केन्द्र या त्रिकोण में रहे तो वह जातक जातीय विद्या और अधिक भोग साधन से युक्त होता है। यदि अपने उच्चादि में एक दो तीन बिन्दु से युक्त हो तो उसभाव की वृद्धि होती है, हानि नहीं होती।

बिन्दु अधिक हो तो उस राशिमास में विद्यारम्भ करने पर वह सर्व विद्या का अधिकारी होता है, बुध के शून्यबिन्दु राशि में जब गोचर से शनि आवे तो भाई-परिवार-धन का नाश होता है॥ २१-२२॥

गुरुफल —

जीवाष्टवर्गाधिकबिन्दुराशौ लग्ने निषेकं कुरुते सुतार्थी।
तद्राशिदिग्भागगृहस्थितानि गोवित्तयानानि बहूनि च स्युः॥ २३॥

जीवाष्टवर्गलघुबिन्दुगृहोपयाते भानौ कृताखिलशुभानि विनाशितानि।
पञ्चादिबिन्दुकरिपुव्ययरन्ध्रगेज्ये जातश्चिरायुरतिवित्तजितारिकः स्यात्॥ २४॥
स्वोच्चेऽथवा निजगृहे वसुबिन्दुयुक्ते केन्द्रस्थिते सुरगुरौ गुरुभावगे वा।
नीचारिभावमपहाय विमूढराशौ जातः स्वकीययशसा पृथिवीपतिः स्यात्॥ २५॥
यदा महीदेवकुलप्रजाता तदीययोगे नरपालतुल्याः।
कृतानि पुण्यप्रभवप्रसिद्धबुद्धिप्रतापानि गुणाभिरामाः॥ २६॥
ससप्तबिन्दौ सह लक्ष्मणेन जीवे बहुस्त्रीधनपुत्रवन्तः।
षड्बिन्दुके वाहनवित्तवन्तः सपञ्चबिन्दौ जयशीलवन्तः॥ २७॥

संस्कृत — अत्र श्लोक पंचकेन गुरोरष्टकवर्गफलमाह। **जीवाष्टेति।** जीवस्य अष्टकवर्गे अर्धाधिक (५-६-७-८) बिन्दु युतराशौ गोचरवशादागते जीवे सुतार्थी नरः तस्मिन्नाशौ लग्ने च निषेकं (गर्भाधानं) कुरुते। अर्थात् गुरोरष्टक वर्गे अधिकाधिक बिन्दुयुत राशौ चारवशात् गुरोर्गमनं भवेत्तदा निषेकेन जातस्य पुत्रोदयसम्भवो भवति। तस्य (अधिकाधिकबिन्दुयुत) राशेर्योः दिग्भागस्तस्मिन् (मे. सि. ध. पूर्वेत्यादि) भागे स्थापनेन बहूनि गोवित्तयानानि च स्युः। यथा मेषस्तदा पूर्वे, वृषस्तदा याम्ये, मिथुनः स्यात्तदा पश्चिमदिशिभागे फलं ज्ञेयम्। अग्रेस्पष्टार्थाः॥ २३-२७॥

हिन्दी — बृहस्पति के अष्टकवर्ग में जिसराशि में अधिक बिन्दु हों उस राशि में बृहस्पति के गोचरवश आने पर उसराशि लग्न में पुत्रकामना वाले को गर्भाधान करने पर पुत्र की प्राप्ति होती है, तथा उसराशि की दिशा में पशु-वाहनादि-व्यापारादि के स्थापन से कार्य में वृद्धि होती है।

बृहस्पति के अष्टकवर्ग में जिसराशि में कम बिन्दु हों उसमें जब सूर्य जाता है तो जातक जो भी शुभ कार्य करता है उसका नाश होता है। यदि ५ या ५ से अधिक बिन्दु छठे-आठवें, बारहवें भाव में हों और गुरु उसभाव में बैठा हो तो जातक चिरायु, अत्यन्त धनवान् और शत्रु विजयी होता है।

अपने गृह या उच्चराशि का गुरु केन्द्र या नवमभाव में हो और ८ बिन्दुओं से युक्त हो तथा अपने नीचनवांश या शत्रुनवांश में या अस्तंगत नहीं हो तो जातक अपने यश से राजा होता है।

यदि उपर्युक्त योग उच्चकुलोत्पन्न जातक की कुण्डली में हो तो वह राजा के सदृश होता है। अपने किए हुए पुण्य प्रभाव से प्रसिद्धबुद्धि, प्रतापी और श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न होता है।

यदि गुरु अपने अष्टक वर्ग में ७ बिन्दु और चन्द्रमा से युक्त हो तो वह जातक

बहुत स्त्री, पुत्र, धनवाला, यदि ६ बिन्दु हो तो बहुत वाहन और धनवाला, यदि ५ बिन्दु हों तो जयी अर्थात् शास्त्रार्थ में विजयी होता है॥ २३-२७॥

शुक्रफल —

साष्टबिन्दुफलकोणकेन्द्रगे भार्गवे तु बलवाहनाधिपः।
आयुरन्तमविनाशभोगवान् वित्तरत्नविभुरद्रिबिन्दुके॥ २८॥
नीचास्तरिष्फनिधनोपगते तु काव्ये पूर्वोदितक्षितिपयोगविनाशनं स्यात्।
शुक्रोऽल्पबिन्दुयुतमन्दिरदिग्विभागे स्त्रीवश्यहेतुशयनीयगृहं प्रशस्तम्॥ २९॥

संस्कृत — अत्र श्लोकयुगलेन शुक्राष्टकवर्गफलमाह—**साष्टेति।** आयुरन्तमविनाशभोगवान्=आयुपर्यन्तं अविछिन्न सुख-भोग युतम्। स्त्रीवश्यहेतु =स्त्रियाः प्रीति कामनया। अन्यत् स्पष्टार्थाः॥ २८-२९॥

हिन्दी — यदि अपने अष्टकवर्ग में ८ बिन्दु शुक्र को प्राप्त हों और वह केन्द्र (१, ४, ७, १०) या त्रिकोण (५,९) में हो तो जातक बहुत बल और वाहन का अधिपति होता है। बल का यहाँ तात्पर्य वैभव से है। यदि ७ बिन्दु हों तो वह आयु भर भोगयुक्त और धन रत्न का स्वामी होता है।

यदि शुक्र नीचराशि में, अस्त, द्वादश, अष्टम या षष्ठ स्थान में हो तो पहले का कहा हुआ जो राजयोग है उसका विनाश होता है (राजयोग भङ्ग हो)। शुक्र थोड़े बिन्दु से युत जिसराशि (गृह) में हो उसराशि की दिशा में स्त्री की प्रीति के लिए प्रशस्त शयनयोग्य गृह का निर्माण कराना चाहिए॥ २८-२९॥

शनिफल —

कोणस्य शून्यतरराशिगते तु मन्दे, जातस्य मृत्युफलमाशुधनक्षयो वा।
एकद्विलोकयुगबिन्दुयुते च केन्द्रे मुक्ते स्वतुङ्गभवने रविजेऽल्पमायुः॥ ३०॥
षट्पञ्चबिन्दुसहिते तनुगे बलाढ्ये जन्मादिदुःखबहुलं धननाशमेति।
मन्दे शरादिफलनीचसपत्नभावे जातश्चिरायुरतिशोभनवर्गकेन्दौ॥ ३१॥
मूढारिनीचगृहगे शरवेदबिन्दौ दास्युष्ट्रवित्तसहितास्तनये तनुस्थे।
सौरेऽष्टबिन्दुगणिते परमन्त्रतन्त्रग्रामाधिपास्तु गिरिबिन्दुगृहे धनाढ्यः॥ ३२॥

संस्कृत — इदानीं श्लोकत्रयेण शनिफलम्। कोणस्य शून्यतर राशिगते तु मन्दे=शनेः अष्टकवर्गे यदा पंचम-नवमस्थानं बिन्दुशून्यं भवेत्तदा पंचम-वा नवमस्थ राशौ गते मन्दे मृत्युफलमाशुधनक्षयो वा भवेत्। अग्रे स्पष्टार्था सरलार्थाः॥ ३०-३२॥

हिन्दी — शनि अष्टकवर्ग में जब त्रिकोणस्थान बिन्दु विहीन हो तो उस राशि में शनि जब जाता है तो मृत्यु होती है या शीघ्र धननाश होता है। यदि १, २ या ३, ४ बिन्दु केन्द्र में हों और शनि वहाँ रहे तो जातक अल्पायु होता है। इस सामान्य

नियम का एक अपवाद है कि केन्द्र में यदि अपनी उच्चराशि में शनि हो और १, २, ३ या ४ बिन्दु हो तो जातक अल्पायु नहीं होता है।

यदि ६ या ५ बिन्दु से युक्त शनि अष्टकवर्ग के लग्न में रहें और बलवान शनि हो तो वह जातक जन्म से ही बहुत दुःखी रहता है और उसका धननाश होता है।

शनि नीचराशि में या शत्रुराशि में ५ या अधिक बिन्दु सहित रहे और चन्द्रमा भी शुभवर्ग में हो तो जातक दीर्घायु होता है। अपने शत्रुराशि में नीचराशि में या अस्तंगत होकर लग्न या पंचमभाव में ५ या ४ बिन्दु से युक्त शनि हो तो जातक को बहुत दास-दासी, ऊँट (पशु) और धन प्राप्त होते हैं।

शनि के अष्टकवर्ग में शनि को ८ बिन्दु प्राप्त हों और वह लग्न में या पंचम में हो तो जातक मंत्र-तंत्र का ज्ञाता तथा ग्राम का स्वामी होता है। यदि ७ बिन्दु से युक्त रहे तो धनाढ्य होता है॥ ३०-३२॥

प्रस्ताराष्टकवर्ग —

आलिख्य चक्रं नवूपर्वरेखा याम्योत्तरस्था दश च त्रिरेखाः।
प्रस्तारकं षण्णवतिप्रकोष्ठं पङ्क्त्यष्टकं चाष्टकवर्गजं स्यात्॥ ३३॥
होराशशीबोधनशुक्रसूर्यभौमामरेन्द्रार्चितभानुपुत्राः ।
याम्यादिपङ्क्त्यष्टकराशिनाथा क्रमेण तद्बिन्दुफलप्रदाः स्युः॥ ३४॥
सबिन्दुगः सर्वफलप्रदः स्यादबिन्दुको यद्यफलप्रदः स्यात्।
अरातिनीचास्तगतो नभोगः सबिन्दुकोऽपि प्रविलोपकर्ता॥ ३५॥

संस्कृत — इदानीं प्रस्ताराष्टक विधिः विविच्यते। **आलिख्येति।** लग्नसहित सप्तग्रहाणामष्टसंख्यत्वादष्टकोष्टक निर्माणार्थं याम्योत्तरा "नव"

सूर्य प्रस्ताराष्टक चक्र —

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मक्कर	कुम्भ	मीन
शनि ०० ३।४५	०		०			०	०	०	०	०		०
गुरु ३।४५ ७।३०	०		०						०	०		
भौम ७।३० ११।१५	०	०	०	०		०	०		०			०
सूर्य ११।१५ १५। ०	०	०	०	०		०	०		०			०
शुक्र १५। ० १८।४५			०						०			
बुध १८।४५ २२।३०			०	०	०	०			०			०
चन्द्र २२।३० १६।१५		०				०	०					
लग्न २६।१५ ३०। ०		०				०	०	०			०	०

रेखास्तथा मेषादि राशीनां द्वादशकोष्ठकाय उर्ध्वाधरा (पूर्वापरा) त्रयोदश रेखा कार्या, एवं भूते षण्णवति (९६) कोष्ठकचक्रं भवति। यथा —

अस्मिन् षण्णवतिकोष्ठात्मके चक्रे होरा (लग्न) शशी-बोधन (बुधः)-शुक्र-सूर्य-भौम-अमरेन्द्रार्चित (गुरुः)-भानुपुत्राः (शनिः) उर्ध्वक्रमेण पंक्त्यष्टकराशिनाथाः स्युः।

प्रतिराशिमष्टधा विभज्य अष्टानां खण्डनामेकैकस्य शून्यादयः कक्षाक्रमगताः (भूमेः पिण्डः शशाङ्कज्ञ-कवि-रवि-कुज-इज्य-अर्कि) सलग्ना ग्रहा अधिपतयो भवन्ति। राशेरष्टमो भागो ३°।४५' पादोनांशचतुष्टयमितः। तेन प्रतिराशिं ३°।४५' पर्यन्तंशनिः। ततः ७°।३०' गुरुः ततः ११°।१५' भौमः ततः १५°।०' सूर्यः ततः १८°।४५' शुक्रः ततः २२°।३०' बुधः ततः २६°।१५' चन्द्रमाः। ततः ३०°।०' पर्यन्तं लग्नं नाथत्वेन (फलदत्वेन) परिगण्यते। एते नाथाः तत्र तत्र यथासम्भवोपगतबिन्दुफलदाश्च भवन्ति। निर्दिष्टभागे सबिन्दुको ग्रहस्तदुक्तफलदो, बिन्दुरहितो विफलश्चेति सिद्धम्। सबिन्दुकोऽपि ग्रहो यदि शत्रुराशौ, नीचराशौ, सूर्यसहितो वा भवेत्तदा स विफलो एव भवति। उपरोक्त चक्रे सर्वग्रहजनितबिन्दवोऽर्द्धाधिकाः (५-६....बिन्दवः) शुभायापेक्षिता भवन्ति। अर्धाल्पे न शुभमिति। यथा फलदीपिकायाम्—(२३।१६-१९-२०)

बिन्दौ स्थिते तत्फलसिद्धिकालविनिर्णयायप्रहितेऽष्टवर्गे।
भान्यष्टधा तत्र विभज्य कक्षाक्रमेण तेषां फलमाहुरन्ये॥
राश्यष्टभागप्रथमांशकाले शनिर्द्वितीये तु गुरुः फलाय।
कक्षाक्रमेणैवमिहान्त्यभागकाले विलग्नं फलदं प्रदिष्टम्॥
सर्वग्रहाणां प्रहितेऽष्टवर्गे तत्कालराशिस्थित बिन्दुयोगे।
अष्टाक्षि २८ संख्याधिक बिन्दवश्चेच्छुभं तद्वनेव्यसनं क्रमेण॥ इति॥

॥३३-३५॥

हिन्दी — पूर्व-पश्चिम १३ और उत्तर-दक्षिण क्रमशः ९ रेखा खींच कर ९६ कोष्ठकों का चक्र बनता है। उनमें क्रमशः ऊपर से नीचे शनि, गुरु, मङ्गल, सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्र और लग्न के भाग होते हैं।

एक राशि के ३० अंशों को ८ से भाग देने पर एक हिस्सा ३ अंश ४५ कला का होता है। इन को इन ८ भागों में बाँटने पर—

(१) ०° से ३°-४५' तक शनि,
(२) ३°-४५' से ७°-३०' तक गुरु,
(३) ७°-३०' से ११°-१५' तक मङ्गल,
(४) ११°-१५' से १५° तक सूर्य,

(५) १५° से १८°-४५' तक शुक्र,
(६) १८°-४५' से २२°-३०' तक बुध,
(७) २२°-३०' से २६°-१५' तक चन्द्र और
(८) २६°-१५' से ३०° तक लग्न के भाग होते हैं। ये अपने अपने भागों में शुभ बिन्दु फल को देते हैं। इस प्रकार एकराशि को सातों ग्रहों व लग्न के लिए आठ भागों में बाँट देते हैं।

बिन्दु सहित ग्रह शुभफल को देने वाला होता है, यह सबप्रकार के फलों को देता है इसलिये यह श्रेष्ठ माना जाता है। बिना बिन्दु का ग्रह फल नहीं देता। शत्रुगृही, नीचराशि व अस्तग्रह यदि बिन्दुसहित हो तब भी शुभफल का नाश करने वाला अर्थात् दुःख देनेवाला होता है।

उपर संस्कृत टीका में लिखित प्रस्ताराष्टक चक्र के निर्माण हेतु ''स्वादर्क प्रथमाय बन्धुसहित'' के अनुसार बिन्दु नहीं बिठाकर इस चक्रानुसार ग्रह ही बिठाने से प्रस्तार चक्र के राशियों में ग्रहों का बिन्दुदाता होना स्पष्ट हो जाता है।

सूर्य प्रस्ताराष्टक चक्र —

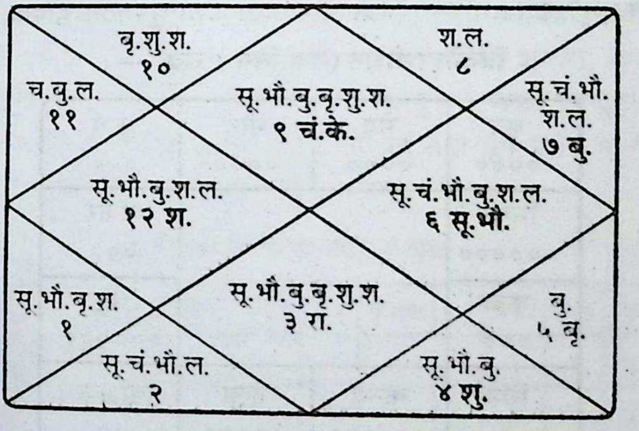
वृ.शु.श.
१०
श.ल.
८
च.बु.ल.
११
सू.भौ.बु.बृ.शु.श.
९ चं.के.
सू.चं.भौ.
श.ल.
७ बु.
सू.भौ.बु.श.ल.
१२ श.
सू.चं.भौ.बु.श.ल.
६ सू.भौ.
सू.भौ.बृ.श.
१
सू.भौ.बु.बृ.शु.श.
३ रा.
बु.
५ बृ.
सू.चं.भौ.ल.
२
सू.भौ.बु.
४ शु.

सूर्य जब मेष में जायेगा तो उसे मात्र उसमें ४ बिन्दु मिले हैं और बिन्दुदाता ग्रह हैं शनि-गुरु-भौम और सूर्य। अतः सूर्य जब मेष राशि में जायेगा तो जातक के लिए ०।० से ०।३।४५ तक शुभ रहेगा क्योंकि बिन्दुदाता शनि इसका स्वामी है (संस्कृत टीका के चक्र को देखें)। पुनः बृहस्पति-भौम-सूर्य का अंश भाग भी शुभकर होगा। इसी प्रकार सूर्य वृषराशि में भौम-सूर्य के अंश भाग में शुभकर रहेगा। अन्यगशियों में भी इसीप्रकार से शुभफल का विचार बिन्दुदाता ग्रहों के अंशभाग से होता है॥ ३३-३५॥

त्रिकोणशोधन —

पञ्च प्राचीरालिखेद्बाणसंख्यास्तिर्यग्रेखा वर्जितान्तश्चतुष्काः।
प्रागादीशा द्वादश व्योमवासा ज्योतिश्चक्रस्वामिनस्तूबराद्याः॥ ३६॥
अजहरितुरगाङ्गैरुक्षकन्यामृगस्थैर्युगघटघटरूपैः कर्किकीटावसानैः।
दिनकरमुखवर्गे तत्त्रिकोणोपयाता लघुतरसमशून्या बिन्दवः शोधिताः स्युः॥ ३७॥
त्रिकोणभावेषु यदल्पबिन्दवस्तदीयबिन्दू भवतस्तु तावुभौ।
न बिन्दुको यस्तु न शोधितेतरौ समानसंख्या यदि सर्वमुत्सृजेत्॥ ३८॥

संस्कृत — अत्राष्टक वर्गे त्रिकोण शोधन विधिः त्रिभिः श्लोकैर्विविच्यते। **पञ्चेति**। द्वादश भाव राशिषु प्रथम-पंचम-नवमाः तत्तद भावात्त्रिकोणा कथ्यन्ते। तेषां शोधनं त्रिकोणशोधनं उच्यते। त्रिकोणशोधनाय चक्रनिर्माणे-पञ्च प्राचीः=पंच रेखा पूर्वापरा=बाणसंख्या तिर्यग्रेखा=पंच याम्योत्तरा रेखा, वर्जितान्तश्चतुष्काः=मध्ये (षोडशकोष्ठके) चतुष्खण्ड वर्जितास्तदा द्वादश कोष्ठकं चक्रमुत्पद्यते। तस्मिन् चक्रे प्रागादितः ईशान्युपगताः द्वादश व्योमवासा =द्वादशभागगत नक्षत्र समूहा, तूबराद्या (मेषमुखा)=मेषादि ज्योतिषश्चक्र (भावराशि) स्वामिनः (राशयः) ज्ञेयाः। यथा चक्रे द्रष्टव्यम्—

त्रिकोणशोधन (ज्योतिष) चक्र —

वृष ००००	मेष ००००	मीन ००००	कुंभ ०००
मिथुन ००००००			मकर ०००
कर्क ०००			धनु ००००००
सिंह ०	कन्या ००००००	तुला ०००००	वृश्चिक ००

अस्मिन् चक्रे एकस्मात्पञ्चमं पञ्चमं त्रिकोणमतः अजहरितुरगाङ्गैः=मेष-सिंह-धनुर्धरैः, उक्षकन्यामृगस्थैः=वृष-कन्या-मकरैः, युगधटघटरूपैः=मिथुन-तुला-कुम्भैः, कर्किकीटावसानैः=कर्क-वृश्चिक-मीनैः राशिभिः, दिनकरमुखवर्गे=सूर्यादिग्रहाणामष्टकवर्गे, तत्त्रिकोणोपयाताः=यो ग्रहो यत्र स्थानस्थितौ भवति तस्मात्स्थानाद्ये राशयस्त्रिकोणगता, लघुतरसमशून्याः=प्रत्येक त्रिकोणगत-बिन्दुभ्यः सर्वाल्पबिन्दुकः शोधिता बिन्दवः भवन्ति। अर्थात् प्रत्येकस्य

ग्रहस्याष्टकवर्गे कथितेषु चतुर्ष्वपि त्रिकोणेषु (प्रत्येकराशित्रये) यः सर्वाल्पबिन्दुकः स राशित्रयस्थबिन्दुभ्यः शोध्यः। शेषमिता बिन्दवस्त्रिकोणशोधनजाता भवन्ति। अत्र त्रिकोणशोधने विशेषम्—प्रत्येक त्रिकोणे सर्वाल्प बिन्दुकं त्रिषु शोधितं सत्सर्वाल्पबिन्दुको बिन्दुरहितो भवति तस्मादितरौ (५/९) शेषबिन्दुकौ भवतः। त्रिकोणे (भावत्रये) कश्चिदेको यदि शून्यबिन्दुयुक्तो भवेत्तदा तत्रेतरावपि शून्यमिते सर्वाल्पशोधनेऽविकृत एव न तदानीं शोधनं कार्यमिति तात्पर्यः। यदि स्थानत्रये तुल्य बिन्दवः स्युस्तदा सर्वं संशोधयेत् तदानीं स्थानत्रयेऽपि शून्यमेव स्थितिर्भवति। यथा वृहत्पाराशरे (अ. वर्गे ४, ५)

त्रिकोणेषु च यन्न्यूनं तत्तुल्यं त्रिषुशोधयेत्।
एकस्मिन् भवने शून्ये तत् त्रिकोणं न शोधयेत्॥
समत्वं सर्वगेहेषु सर्वं संशोधयेत्तदा॥ इति।

अत्रोदाहरणो सूर्याष्टकवर्गे (पूर्वं विलोक्यं श्लो. ३-८ टीका) मेषे बिन्दु चतुष्कं, सिंहे बिन्दु एकं, धनुषि बिन्दु षष्ठं वर्त्तन्ते। अत्र स्थानत्रये सर्वाल्पं बिन्दु सिंहस्थितो ''एकम्'' त्रिषु शोधिते जाते मेषे त्रयं, सिंहे शून्यम्, धनुषि बिन्दु पंचकमवशिष्टम्। वृषे बिन्दु चतुष्कं, कन्यायां बिन्दु षष्ठं, मकरे बिन्दु त्रयं विद्यते, अत्र सर्वाल्पं (मकरस्य बिन्दुत्रयं) त्रिषु शोधितं तदा वृषे एकं, कन्यायां त्रयं, मकरे च शून्यमवशिष्टम्। एवमेव अग्रे बोध्यम्।

सूर्याष्टक त्रिकोण शोधन चक्र —

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
४	४	६	३	१	६	५	२	६	३	३	५	बिन्दव
३	१	३	१	०	३	२	०	५	०	०	३	त्रिकोण शुद्ध

अत्र त्रिकोण शोधनेन (सूर्याष्टक वर्गे) द्वादशराशौ बिन्दु संख्या अग्रे सरण्यां द्रष्टव्यम्॥ ३६-३८॥

हिन्दी — पाँच रेखा पूर्वापर और पाँच रेखा याम्योत्तर खींचने पर सोलह कोष्ठक बनते हैं उनमें बीच के चार कोष्ठक का परित्याग कर देने पर बारह कोष्ठकों का चक्र बनता है। इसमें उपर के मध्य से मेषादि का प्रारम्भ कर द्वादश राशियों को स्थापित करने पर ज्योतिष चक्र बनता है।

यह प्रकार दक्षिणभारत में प्रचलित है। इसमें (मेषादि द्वादशराशि में) जो ग्रह जिसराशि में पड़ा होता है उसमें लिख दिया जाता है परन्तु उत्तरभारत में लग्न से

प्रारम्भ कर द्वादशराशि लिखने की परिपाटी है। दक्षिणभारत में राशियों के स्थान निश्चित हैं और जहाँ कहीं भी लग्न रहता है उसे वहाँ लिख देते हैं।

अष्टकवर्ग के लिये चार त्रिकोण बनते हैं १. मेष-सिंह-धनु, २. वृष-कन्या-मकर, ३. मिथुन-तुला-कुम्भ, ४. कर्क-वृश्चिक-मीन। अर्थात् पूर्वदिशा की तरफ जो राशियाँ हैं उनका एक समूह, दक्षिण में जो हैं उनका एक, पश्चिम में जो हैं उनका एक और उत्तर की तरफ जो राशियाँ हैं उनका एक समूह बनाया जाता है।

त्रिकोण शोधन में एक-एक त्रिकोण एक साथ ग्रहण किया जाता है। त्रिकोण की तीनों राशियों में जिसमें सबसे कम बिन्दु हों वह त्रिकोण की अन्य दो राशियों की बिन्दुओं से घटा लिए जाते हैं। यदि किसी में शून्य पड़ा हो तो अन्य दो राशियों में से शून्य घटाया जाता है। अर्थात् जो पहले संख्या थी वही रहती है कुछ अन्तर नहीं पड़ता। यदि तीनों राशियों में समान संख्या हों तो तीनों में वह संख्या घटाने पर शून्य बच जाता है।

'त्रिकोणेषु च यन्न्यूनं तत्तुल्यं त्रिषु शोधयेत्' पराशर (अष्टक. ४) के इस मतानुसार ही उत्तर भारत में हम त्रिकोण शोधन करते हैं। त्रिकोण भावों में जिसमें कम बिन्दु हों उससे दोनों भावों को न्यून करें, जो बिना बिन्दु का रहे वह अन्य से न शोधें; यदि समान संख्या हों तो सबका त्याग करना चाहिए॥ ३६-३८॥

एकाधिपत्यशोधन—

कण्ठीरवं कटकभं च विना कुजादिकावासराशियुगलोपगबिन्दुसङ्ख्याः।
तत्तुल्यशून्यविषमाग्रसहग्रहाद्यास्त्वेकाधिपत्यपरिशोधितशेषिताः स्युः॥ ३९॥
राशिद्वयं सद्युचरं न शोधयेदेकं द्वयोः शून्यभमप्यशोधयेत्।
फलाधिके खेटयुते परं त्यजेत् तुल्यानभोगद्वितयं परित्यजेत्॥ ४०॥
सखेचराखेचरबिन्दुसाम्ये विशोधयेदग्रहबिन्दुसङ्ख्याम्।
विखेटराशिद्वयबिन्दवो ये न्यूनाधिका न्यूनसमा विधेयाः॥ ४१॥
खेटोपयाते लघुबिन्दराशौ तत्तुल्यमायान्ति तदन्यसंख्याः।
पूर्वं त्रिकोणं परिशोध्य पश्चादेकाधिपत्यस्य ततः प्रकल्प्याः॥ ४२॥

संस्कृत — इदानीं एकाधिपत्यशोधनमाह—**कण्ठीरवमित्यादिभिः।** तत्र सूर्याचन्द्रमसावेकैकराशीशौ अर्थात् सूर्यः सिंहस्य, चन्द्रः कर्कस्य, अन्ये ग्रहा द्विराशिका इति। तेषां कुजादिक ग्रहाणां स्वस्वराशियुगले त्रिकोण-शोधनानन्तरं यद्यत्फलमवशिष्टं तत्तदेकाधिपत्यशोधनेन शुद्धं कुर्यात्। कण्ठीरवं =सिंहं, कटकभं=कर्कं, विना=एतौ विहाय, कुजादिकानां स्वभवनद्वयमुपगता यास्त्रिकोणशोधनावशिष्टबिन्दुसङ्ख्यास्तत्तुल्यशून्याः, विषमाः=वैषम्यमुपगताः, अग्रहाः=ग्रहरहिताः, सग्रहाः=ग्रहसहिताः, बिन्दुसङ्ख्यास्तु एकाधिपत्यपरि-

शोधितशेषिताः स्युः। अर्थात् भौमादेर्ग्रहस्य स्वं स्वं राशिद्वयं तुल्यबिन्दुकं विषमबिन्दुकं, सग्रहं ग्रहरहितं वा सर्वं वक्ष्यमाणविधिना शोधनवशात् शेषितं भवतीतिबोध्यम्।

राशिद्वयं यदि सद्युचरं=ग्रहयुक्तं स्यात् तदा न शोधयेत्, तत्रैकाधिपत्यशोधनं न कुर्यादिति। यदि शून्यभं=त्रिकोणशोधनफलरहितं स्यात् तदा तदप्यशोधयेत्। तत्रापि शोधनं न कार्यमुत यथास्थितमेव भवतीति। **फलाधिके खेटयुते परं त्यजेत्।** एकत्र राशौ फलमधिकं ग्रहोऽपि भवेदन्यतु न्यनफलं ग्रहरहितं स्यात्तदा तन्न्यूनफलमेव परित्यजेत्। **तुल्यानभोगद्वितयं परित्यजेत्।** स्थानद्वयं तुल्यफलकं ग्रहरहितं च भवेत्तदा द्वयमपि परित्यजेदर्थादुभयत्रापि शून्यमेव स्थाप्यम्। **सखेचराखचरबिन्दुसामये**=एको राशिः सग्रहोऽन्यो ग्रहहीन उभयत्र त्रिकोणशोधनफलं तुल्यं च स्यात्तदा अग्रहबिन्दुसंख्यां विशोधयेत। सग्रहराशौ यथास्थितं फलं, ग्रहरहिते राशौ शून्यं स्थाप्यमित्यर्थः। **विखेटराशिद्वयबिन्दवो ये** न्यूनाधिकाः। एको राशिर्न्यूनफलः, अन्योऽधिकफल, उभयत्र ग्रहाभावश्च भवेत्तदा न्यूनसमा विधेयाः=अधिकफलबिन्दुतो न्यूनफलबिन्दवो विशोध्याः। **खेटोपयाते लघुबिन्दुराशौ**=एको राशिर्ग्रहयुक्तो लघुबिन्दुकश्च भवेत्तस्मिन्, तदन्यसंख्याः=अन्यराशिसंख्याः=अन्यो राशिः फलाधिको ग्रहहीनश्च स्यात्तदा तत्संख्याः, तत्तुल्यमायान्ति=लघुबिन्दुसंख्यातुल्यमूनत्वं यान्ति।

यथा वृ. पा. (६८/२-५)—

क्षेत्रद्वये फलानि स्युस्तदैवं शोधयेत् सुधीः।
क्षीणेन सह चान्यस्मिन् शोधयेद् ग्रहवर्जिते॥ २॥
उभयोर्ग्रहसंयुक्तौ न संशोध्यः कदाचनः।
ग्रहयुक्ते फलैर्हीने ग्रहाभावे फलाधिके॥ ३॥
ऊनेन सह चान्यस्मिन् शोधयेत् ग्रहवर्जिते।
फलाधिके ग्रहैर्युक्ते चान्यस्मिन् सर्वमुत्सृजेत्॥ ४॥
उभयोर्ग्रहहीनत्वे समत्वे च फले त्यजेत्।
सग्रहाग्रहयोस्तुल्ये सर्वं संशोध्यमग्रहे॥ ५॥
कुलीरसिंहयो राश्योः पृथक् क्षेत्रं पृथक् फलम्।

तथा फलदीपिकायां मन्त्रेश्वरः (२२/१८-२४)—

त्रिकोणशोधनां कृत्वा पश्चादैकाधिपत्यकम्।
क्षेत्रद्वये फलानि स्युस्तदा संशोधयेत्सुधीः॥
ग्रहयुक्ते फलैर्हीने ग्रहाभावे फलाधिके।

ऊनेन सदृशन्त्वस्मिन् शोधयेद्ग्रहवर्जिते॥
फलाधिके ग्रहैर्युक्ते चान्यस्मिन् सर्वमुत्सृजेत्।
सग्रहाग्रहतुल्यत्वे सर्व संशोध्यमग्रहात्॥
उभाभ्यां ग्रहहीनाभ्यां समत्वे सकलं त्यजेत्।
उभयोर्ग्रहसंयुक्ते न संशोध्यं कदाचन्॥
एकस्मिन् भवने शून्ये न संशोध्यं कदाचन्।
द्वावग्रहौ चेद्यन्यूनं तत्तुल्यं शोधयेद्द्वयोः॥

एकाधिपत्य शोधन चक्र —

राशय	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ग्रहा				शुक्र	बृह.	सू. भौ.	बुध		चन्द्र			शनि
विन्दु	४	४	६	३	१	६	५	२	६	३	३	५
त्रिकोंण शोधित	३	१	३	१	०	३	२	०	५	०	०	३
एकाधिपत्य शोधित	३	०	०	१	०	३	२	०	५	०	०	३

एकाधिपत्यशोधनं त्रिकोणशोधनान्तरं कुर्यादित्याह—**पूर्वमिति**। प्रथमं त्रिकोणं परिशोध्य ततः पश्चात् एकाधिपत्यस्य शोधनाः प्रकल्प्याः॥ ३९-४२॥

हिन्दी — सिंह और कर्क के स्वामी सूर्य और चन्द्रमा हैं। सूर्य-चन्द्र की एक-एक राशि होती है अतः इनका एकाधिपत्य शोधन नहीं होता। बाकी ग्रहों की दो-दो राशियाँ होती हैं। मंगल की मेष-वृश्चिक, बुध की मिथुन-कन्या, शुक्र की वृप-तुला, बृहस्पति की धनु-मीन तथा शनि की मकर-कुंभ। अतः इन्हीं राशियों का शोधन होता है। इन राशियों में ग्रह हों या न हों, एक में शून्य हो अथवा समान बिन्दु हों तब भी इनका शोधन होता है। मेष और वृश्चिक राशियों का ही शोधन होगा क्योंकि मंगल स्वयं इन दोनों का स्वामी है। मिथुन और कन्या का ही शोधन होगा क्योंकि इनका एकाधिपत्य (बुध) है।

एकाधिपत्य की सात विधियाँ हैं—

(१) अगर एकाधिपत्य राशियों में दोनों में ग्रह रहें तब इनका शोधन नहीं होता।

(२) अगर दोनों में अथवा एक में ग्रह हो या न हो, फल शून्य रहे, तो एकाधिमत्य शोधन नहीं होता।

(३) अगर दो राशियों में से एक में ग्रह हो और दूसरे में ग्रह नहीं हो तो दूसरे में जो बिन्दु हों, वे हटा देने चाहिए।

(४) अगर दोनों बिना ग्रह के हों और दोनों में समान बिन्दु हों तो दोनों में से बिन्दु हटा देना चाहिए।

(५) यदि दो राशियों में एक में ग्रह हो और दूसरे में न हो तथा दोनों में समान बिन्दु हों तो जिसराशि में ग्रह नहीं हो उसके बिन्दु हटा देने चाहिए।

(६) यदि दोनों राशियों में ग्रह नहीं हों और बिन्दु संख्या एक में अधिक व एक में कम हो तो जिसराशि में अधिक बिन्दु हों उसकी संख्या थोड़े बिन्दु वाली राशि के बराबर कर देनी चाहिए।

(७) एकाधिपत्य वाली दोनों राशियों में यदि एक में ग्रह हो और बिन्दु भी थोड़े हों तो अग्रह वाली राशि में जो बिन्दु हों उनको सग्रह वाली राशि के समान कर देनी चाहिए।

तुला-वृष में तुला सग्रह, वृष निर्ग्रह। सग्रह का फल अधिक निग्रह का अल्प। अतः सग्रह का फल यथावत् रहा, निर्ग्रह का शोधन कर शून्य कर दिया गया है। मेष-वृश्चिक में एक में शून्य है अतः शोधन नहीं होकर यथावत् फल रखे गए, क्योंकि दोनों में फल रहने पर ही शोधन होता है। धन-मीन ग्रहसहित हैं अतः ''उभयोर्ग्रह संयुक्तौ'' के अनुसार फल यथावत् रहेगा। मकर-कुम्भ के फल में तुल्यता अर्थात् दोनों में फल है तथा दोनों ही ग्रह विहीन हैं अतः ''उभयोर्ग्रहहीनत्वे समत्वे च फलं त्यजेत्'' के अनुसार दोनों में (म. कु.) शून्य फल रहेगा। कर्क-सिंह में शोधन नहीं होगा। अतः उनके फल यथावत् रहेंगे। (स्पष्टार्थ संस्कृत टीका में चक्र देखें)।

पहले त्रिकोण शोधन करके तब एकाधिपत्यशोधन करना चाहिये ॥ ३९-४२ ॥

शोध्यावशिष्टानि गुणीकृतानि
मेषादिमानैर्गुणकं हि भानाम्॥
सूर्यादिकास्ते गुणिताः स्वमानै-
रेषां ग्रहाणां गुणकं वदन्ति॥ ४३ ॥

शैलाशावसुसागराम्बरशरैः शैलाहिगोसायकै-
रीशद्वादशभिश्च राशिगुणकैर्मेषादिभानां क्रमात्॥
बाणैः पञ्चभिरष्टकैः शरनभःशैलेषुभिर्भास्वरा-
देवं व्योमतलाधिवासगुणकैरायुर्विधानोदितैः ॥ ४४ ॥

संस्कृत — शोध्यावशिष्टानोति। अत्र गुणकपिण्डं गुणकाङ्क्षाँश्चाह—त्रिकोणैकाधिपत्यशोधनादवशिष्टफलानि, मेषादिमानैः=मेषादिराशीनां यानि

गुणक मानानि पठितानि तैः, गुणीकृतानि=संगुणितानि तदा तद्गुणसंख्यैक्यं, भानां=राशीनां हि गुणकफलं वदन्ति। इत्थं प्रत्येकस्य ग्रहस्याष्टकवर्गे राशीनां गुणकपिण्ड उत्पद्यते। ग्रहगुणकपिण्डं सूर्यादिका ग्रहास्ते स्वमानैः गुणिताः। सूर्यादयो ग्रहा यत्र यत्र राशौ भवेयुस्तत्तद्राशेरधःस्था ये शोध्यावशेषाङ्कास्ते सूर्यादीनां स्वस्वगुणकसंख्यामानैर्गुणिताः कार्याः तेषां गुणितसंख्यानां योगो ग्रहगुणक पिण्डो भवति।

यथा राशीनां गुणकाङ्काः—मेष=७। वृष=१०। मिथुन=८। कर्क=४। सिंह=१०। कन्या=५। तुला=७। वृश्चिक=८। धनु=९। मकर=५। कुंभ=११। मीन=१२।

ग्रहाणां गुणकाङ्का—सूर्य=५। चन्द्र=५। भौम=८। बुध=५। गुरु=१०। शुक्र=७। शनि=५।

अत्र राशिगुणकोदाहरणम्—पूर्वोदाहृतो चक्रे मेषाधः फलं ३ मेषगुणकाङ्केन ७ गुणितं जातं २१। वृषाधः फलं ० वृषगुणकाङ्केन १० गुणितं जातं ०। अग्रे क्रिया लाघवाय विधि प्रदर्शिता—

राशि —	**एकाधिपत्यशोधितफलं —**		**राशिगुणकाङ्काः —**	**गुणनफलम्**
मेष	३	×	७	२१
वृष	०	×	१०	०
मिथुन	०	×	८	०
कर्क	१	×	४	४
सिंह	०	×	१०	०
कन्या	३	×	५	१५
तुला	२	×	७	१४
वृश्चिक	०	×	८	०
धनु	५	×	९	४५
मकर	०	×	५	०
कुम्भ	०	×	११	०
मीन	३	×	१२	३६

राशिगुणकपिण्डः=१३५

ग्रह गुणक पिण्डः

ग्रह —	एकाधिपत्यशोधितराश्यङ्क —		ग्रहगुणकाङ्कः —	गुणनफलम्
सूर्य (कन्यायां)	३	×	५	१५
चन्द्र (धनुः)	५	×	५	२५
भौम (कन्यायां)	३	×	८	२४
बुध (तुलायां)	२	×	५	१०
बृहस्पति (सिंहे)	०	×	१०	०
शुक्र (कर्के)	१	×	७	७
शनि (मीने)	३	×	५	१५

ग्रहगुणकः=९६

एवमेव सूर्यादि ग्रहाणां पिण्डानयनं विधेयम्॥

फलदीपिकायां (२४/२३-२६)—

शोध्यावशिष्टं संस्थाप्य राशिमानेन वर्द्धयेत्।
ग्रहयुक्तेऽपि तद्राशौ ग्रहमानेन वर्द्धयेत्॥
गोसिंहौ दशगुणितौ वसुभिर्मिथुनालिभे।
वणिङ्मेषौ च मुनिभिः कन्यकामकरे शरैः॥
शेषाः स्वमानगुणिताः कर्किचापघटीझषाः।
एते राशिगुणाः प्रोक्ताः पृथग्ग्रहगुणाः पृथक्॥
जीवारशुक्रसौम्यानां दशवसुसप्तेन्द्रियैः क्रमाद्गुणिता।
बुधसंख्या शेषाणां राशिगुणाद्ग्रहगुणः पृथक्कार्यः॥ ४३-४४॥

हिन्दी — एकाधिपत्य शोधन के बाद जो फल आये उसको राशिगुणक से गुणा करके बारह राशियों के राशिगुणक निकाल लेने चाहियें।

बारहों राशियों में एकाधिपत्य के बाद जो फल आये उनको ग्रहगुणक से अर्थात् सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि से गुणाकरना चाहिये। इन सबका योग ग्रहगुणक कहलाता है।

राशियों के गुणक निम्नलिखित हैं—

मेष ७	कर्क ४	तुला ७	मकर ५
वृष १०	सिंह १०	वृश्चिक ८	कुंभ ११
मिथुन ८	कन्या ५	धन ९	मीन १२

सब राशियों में जो शोधनफल हों उनको तत् तत् राशिगुणक से गुणा करना चाहिये और उनका योग करना चाहिये।

ग्रह गुणक निम्नलिखित हैं—

सूर्य ५	बुध ५	शनि ५
चन्द्र ५	बृहस्पति १०	
मंगल ८	शुक्र ७	

एकाधिपत्य शोधन के बाद जो राशिफल आये उसराशि में जो ग्रह हों उससे गुणन करना चाहिये। यदि दो या अधिक ग्रह हों तो राशिफल को प्रत्येक ग्रह की संख्या से गुणन करें। इस प्रकार सातो ग्रहों से जो योग आवे वह रखना चाहिये॥ ४३-४४॥

तद्राशिखेटगुणकैक्यफलानि हृत्वा त्रिंशद्भिरब्दचयमासदिनादिकाः स्युः।
तद्द्वादशाधिकसमा यदि राशिमानैराहत्य तत्समतयाऽनुहरेत्तदायुः॥ ४५॥

संस्कृत — अत्र ग्रहाणामष्टकवर्गशुद्धायुरानयनम्—**तदिति**। तद्राशिखेटगुणकैक्यफलानि=पूर्वकथित राशिगुणक ग्रहगुणक पिण्डानाञ्चैक्यफलानि (योग पिण्डमानानि) त्रिंशद्भिः (३०) हृत्वा=भक्त्वा, फलम् अब्दचयमासदिनादिकाः=वर्ष-मास-दिन-घटिका-भवेयुः। तत्र वर्षमाने यदि द्वादशाधिके सति राशिमानैर्द्वादशभिराहत्य विभज्य, तत्समतया=शेषमितवर्षैस्तत्तद्ग्रहाणामष्टकवर्गजनितमायु जायते।

पूर्व कथित योगपिण्डः २३१, त्रिंशद्भक्तो जातं वर्षादिकमायुः=२३१÷३०=७ शेष २१, शेष २१×१२=२५२÷३०=८ शेष १२ अर्थात् ७ वर्ष ८ मास १२ दिनानि। एवं सर्वेषां ग्रहाणां पिण्डमानादायुर्भवतीति॥ ४५॥

हिन्दी — राशिगुणकपिण्ड एवं ग्रहगुणकपिण्डों के योग में ३० से भाग देने पर वर्ष-मास-दिन होंगे। वर्ष १२ से अधिक हो तो १२ से भाग देकर शेष वर्ष ग्रहण करना चाहिये, वहीं उस ग्रह की आयु होती है॥ ४५॥

उच्चं गतस्य द्विगुणं तदीयं नीचं गतस्यास्तगतस्य चार्द्धम्।
अतोऽन्तराले त्वनुपात्यमायुरारस्य वक्रे द्विगुणीकृतं स्यात्॥ ४६॥
मूलत्रिकोणनिजमित्रगृहोपगानां तुङ्गादिवर्गशुभयोगनिरीक्षितानाम्।
उक्तप्रकारगणितागममायुरेव पापारिवर्गसहितस्य विपादमायुः॥ ४७॥

संस्कृत — अत्र गणितागतायुषि वैशिष्ट्यम्—**उच्चमिति**। उच्चं=स्वकीयोच्चराशिं गतस्य ग्रहस्य, तदीयं=गणितागतागतं तस्य यदायुस्तद् द्विगुणं। नीचं गतस्य, सूर्य सानिध्यवशातस्तंगतस्य च अर्द्धमायुः क्षीयते। अतोऽन्तराले त्वनुपातेनायुरानीयते। उच्चे द्विगुणं नीचेऽर्द्धमिति राशिषट्के आयुषोऽर्द्धस्य त्रिगुणिमितं ह्रास-वृद्धिं भवतस्तदा नीचादुच्चाद्वाऽभीष्टान्तरे विद्यमाने ग्रहे कियानायुषानुपचयोऽपचयो वा भवेदित्यनुपातेनायुषः स्पष्टीकरणं भवेदिति।

आरस्य=भौमस्य, वक्रे=विलोमे, द्विगुणी कृत्य तदायुः ग्राह्यमिति। स्वमूल त्रिकोणे, स्वमित्रगृहे, स्वोच्चादिवर्गे वा स्थिता ये ग्रहाः भवेयुस्तथा शुभग्रहेण युक्ता निरीक्षिताश्च भवेयुस्तेषामायुषि चयापचयौ न कुर्यादित्यर्थः। तथा च यो ग्रहः पापग्रहस्य शत्रुग्रहस्य वा वर्गगतो नीचगतो वा भवति तस्य विपादमायुः=पादेन (चतुर्थांशेन) रहितं=चतुर्थांशोनं गणितागतायुः भवतीति बोध्यम्॥ ४६-४७॥

हिन्दी — उच्चराशि में ग्रह हो तो अष्टकवर्ग से आनीत आयु दूनी, नीचराशि में हो या अस्त हो तो आधी होती है। इसके बीच में अनुपात द्वारा आयु का निश्चय करना चाहिए। मङ्गल वक्री हो तो उसके आयु को द्विगुणित करना चाहिए।

मूलत्रिकोण, अपनी उच्चराशि, अपने गृह में स्थित ग्रहों की और उच्चादि वर्गस्थ व शुभदृष्ट ग्रहों की उक्तप्रकार से गणित की हुई आयु होती है। पापादि वर्ग में स्थित ग्रह की चतुर्थांशोन $\frac{३}{४}$ आयु होती हैं॥ ४६-४७॥

रविमुख्यनभोगदत्तसंख्याः परमायुः शरदस्तु मानवानाम्।
सविलग्नसमाश्च केचिदाहुर्गुरुमूलात्समुपैति तुल्यमायुः॥ ४८॥

संस्कृत — अत्राष्टकवर्ग सिद्धं परमायुः प्रमाणम्—**रविति**। रविमुख्याः =सूर्यादयो ये नभोगा सप्तग्रहास्तैर्दत्तसङ्ख्याः, शरदः=वर्षाणि, मानवानां परमायुः। अष्टकवर्ग वशात्सूर्यादिसप्तग्रहाणां यदायुः सिद्ध्यति तत्तुल्यं जातकस्य परमायुर्भवति। केचिदाहुः (पराशरादयः)—सविलग्नसमाः=लग्नायुर्वर्षसहिताः सूर्यादिग्रहायुर्वर्षसङ्ख्याः परमायुर्भवतीत्याहुः। तदुक्तं (वृ. पारा. अष्ट. ६८-७०)

लग्नशुभबिन्दुस्थानम्—

१. आर्किज्ञ शुक्रगुर्वाराः, २. सौम्यदेवेज्य भार्गवाः।
३. हित्वा सौम्यगुरू शेषाः, ४. सूर्येज्यभृगुसूर्यजाः॥
५. तथा जीवभृगु बुद्धौ, ६. सर्वेशुक्रं बिना क्षते।
७. जीव एकस्तथा द्यूने, ८. मृतौ सौम्य भृगु तथा॥
९. धर्मे गुरुसितौ सर्वे, १०. खे चाये,
११. शुक्रमन्तरा। १२. सूर्यचन्द्रौ तथा रिःफे स्थानं लग्नस्य कीर्त्तितम्।

द्वादशभावे उक्तानां ग्रहाणां स्थितिवशात् लग्नस्य बिन्दवो (शुभचिह्नानि) भवन्ति। अत उक्तवल्लग्नायुसाधनीयमिति। लग्नायुर्वर्षसहितं सूर्यादिसप्तग्रहायुर्मानं परमायुरुक्तम्। सर्वत्रैव गुरूमूलात्=महन्मूलमानयनप्रकारो अर्थात् विस्तृत गणित प्रकारेण यदायुः सिद्ध्यति तत्तुल्यमायुः जातः समुपैतीति सिद्धम्॥ ४८॥

हिन्दी — सूर्यादि ग्रहों की आयुसंख्या के योगतुल्य मनुष्यों की परमायु होती है। किसी आचार्य का मत है कि उसमें लग्नायु को भी जोड़ देना चाहिये। यहाँ तात्पर्य यह है कि सूक्ष्मगणित द्वारा जो आयु हो वहीं लेना चाहिये॥ ४८॥

केन्द्रादन्यगते चन्द्रे सखेटे चाष्टवर्गजम्।
आयुरेव नभःस्थाने शुभपापयुतेऽथवा॥ ४९॥

संस्कृत — अत्राष्टकवर्गायुर्ग्रहणस्थितिमाह—**केन्द्रादिति**। चन्द्रे केन्द्रा-(१/४/७/१०) दन्यस्थानगते, सखेटे=केनचित्कैश्चिद्वा ग्रहेण ग्रहैर्वा युक्ते च अष्टवर्गवशाज्जातमेवायुर्भवति। अर्थात् जन्मकाले यदा चन्द्रः केन्द्रगतो न भवेत् ग्रहयुक्त स्यात्तदा तस्य जातस्याष्टकवर्गायुरेव। अथवा नभः स्थाने=लग्नाद्दशमे गृहे शुभपापयुते=शुभपापग्रहाभ्यां सहिते अष्टवर्गजमेवायुः बोध्यम्॥ ४९॥

हिन्दी — ग्रहसहित चन्द्रमा केन्द्र से अन्यस्थान में हो, अथवा दशमभाव पापग्रह व शुभग्रह से संयुक्त हो तो वही (अष्टवर्गायु) आयु ग्रहण करना चाहिए॥ ४९॥

रव्यादिखेटस्थितराशियाताः स्वकीयवर्गोपगबिन्दुसंख्याः।
वेधाष्टवर्गप्रभवायुरब्दा भवन्ति सर्वे हरणक्रियाश्च॥ ५०॥

संस्कृत — रव्यादयो खेटाः यत्र यत्र स्थिता भवन्ति तत्तद्राशियातास्तेषां स्वस्वाष्टक वर्ग कुण्डल्यां बिन्दुसंख्याः यास्ताभ्यः सर्वे वेधाष्टवर्गप्रभवायुरब्दाः =भिन्नाष्टवर्गजनितायुर्वर्षाणि हरणादिक्रियाश्चापि पूर्ववद्भवन्ति॥ ५०॥

हिन्दी — सूर्यादि ग्रह जिस-जिस राशि में हों उस-उस राशि में उसके अष्टकवर्ग वाले जितने बिन्दु हों उनसे भिन्नाष्टकवर्गोत्पन्न आयु साधन और आयुह्रास सभी क्रियायें पूर्ववत् होती हैं॥ ५०॥

मन्दवैनाशिक नक्षत्र —

तत्तत्कारकभावबिन्दुगुणितं शोध्यावशिष्टं फलं
विंशत्या सह सप्तभिश्च विहृतं तच्छेषताराशनौ।
तातस्तज्जननी सहोदरजनो बन्धुः सुतः स्त्री स्वयं
तत्तुल्या विलयं प्रयान्ति विपुलश्रीनाशहेतुश्च वा॥ ५१॥

संस्कृत — अत्र अष्टकवर्गवशाच्छनिकर्तृकानिष्टनक्षत्राणि—**तत्तदिति**। शोध्यावशिष्टम्=त्रिकोणैकाधिपत्यशोधनाद्यदवशेषं फलं तत्तत्कारकभावबिन्दु-गुणितं=यस्य यस्य भावस्य विचारः क्रियते तत्तद्भावस्य यो यो ग्रहः कारकस्ततस्तावन्मिते भावे यद्बिन्दुफलं तेन गुणितं जातम्। यथा पितृभावस्य विचारे समुपस्थिते पितृकारकः सूर्यः, अतः सूर्याष्टकवर्गे शोध्यावशेषं यत् फलं तत् सूर्यान्नवमभावगतबिन्दुमानेन गुणितं कार्यमिति। विंशत्या सह सप्तभिश्च

=सप्तविंशति (२७) भिः विहृतं=भक्तं, तच्छेषताराशनौ=शेषमिते नक्षत्रे गतवति शनैश्चरेतातः, तज्जननी, सहोदरजनः, बन्धु, सुतः, स्त्री, स्वयं च, विलयंप्रयान्ति =म्रियन्ते। अर्थात्सूर्यात्तातः=पिता, चन्द्राज्जननी=माता, भौमात्सहोदरः, बुधाद्बन्धु =मित्रम्, गुरोः सुतः, शुक्रात्स्त्री, शनेः जातः स्वयमेव, अथवा ततुल्याः =पितृतुल्यः, मातृतुल्यः, भ्रातृतुल्य स्वजनेत्यादि म्रियते। वा तेषां मरणाभावे विपुलश्रीनाशहेतुर्भवति॥ ५१॥

हिन्दी — जिसका विचार करना हो उसके कारकग्रह की राशि में जो बिन्दु हों उससे उसकारक के शोधनावशेष बिन्दु को गुणकर २७ से भाग लेने पर जो शेष बचे उस संख्यक नक्षत्र में जब शनि आवे तो क्रम से उसके पिता-माता-भाई-बन्धु-पुत्र-स्त्री और स्वयं नाश को प्राप्त होते हैं अथवा विपुल लक्ष्मी का ही नाश होता है॥ ५१॥

समुदायाष्टकवर्ग —

ततः समालिख्य भगोलचक्रं समस्तबिन्दुस्थितराशिकोष्ठम्।
रव्यादिकानामजपूर्वकाणां बिन्दूपगस्थानफलं वदामि॥ ५२॥
आपञ्चविंशति फलान्यफलान्यसत्यमात्रिंशदक्षसहितानि समध्यमानि।
त्रिंशत्पराणि सुखवित्तयशस्कराणि तद्भाववृद्धिफलदानि च सामुदाये॥ ५३॥

संस्कृत — अत्र समुदायाष्टकवर्ग फलमाह—एकविंशतिभिः श्लोकैः। तत पूर्वोक्तप्रकारैः प्रतिराशिं प्रत्येकस्य ग्रहस्याष्टकवर्गं प्रसाध्य शुभाशुभबिन्दु ज्ञानं कृत्वा तत्संकलनमेव पृथक् पृथक् ग्रहस्य समुदायाष्टकवर्गोत्पन्नं शुभमशुभं वा विजानीयादिति। तावदुच्यते—सर्वेषां ग्रहाणां पृथक् पृथक् भगोलचक्रं=अष्टकवर्गविचारणीयकोष्ठकं समालिख्य तदनन्तरं समस्तबिन्दुस्थितराशिकोष्ठं=प्रत्येकस्य ग्रहस्य प्रतिराशिं बिन्दुसंख्यामवगम्य तेषां पृथक-पृथक् फलं विजानीयात्। अत्र रव्यादिकानां=सूर्यादि सप्तग्रहाणां (लग्नसहितम्) अजपूर्वकाणां=मेषादीनां द्वादशराशीनां बिन्दुपगस्थानफलं=सर्वेषां ग्रहाणां द्वादश राशिषु ये बिन्दवस्तेषां फलं वदामि।

सामुदाये=समुदायाष्टकवर्गे आपञ्चविंशतिफलानि=सर्वाष्टकवर्गजाता बिन्दवो यदि (२५) पञ्चविंशतिमिताः तदा तानि अफलानि=अशुभ फलानिति, त्रिंशदक्षसहितानि=पञ्चविंशतिमारभ्य त्रिंशद्यावत्, समध्यमानि=मध्यफलानि, त्रिंशत्पराणि=त्रिंशद्भ्योऽधिका बिन्दवश्चेत्तदा सुखवित्तयशस्कराणि=उत्तमफल-दायकानि भवन्ति। तद्भाववृद्धिफलदानि च=यद्भावसम्बन्धिनस्ते बिन्दव-स्तद्भावस्य वृद्धिकराणि भवन्तीति॥ ५२-५३॥

हिन्दी — फिर भगोल चक्र (सभी ग्रहों के चक्र) को सम्यक प्रकार से

लिखकर, सूर्य आदि ग्रहों का, मेषादि राशियों का, समस्त बिन्दु स्थिति, राशि कोष्ठक बिन्दु से प्राप्त फल को कहता हूँ।

समुदायाष्टवर्ग में एक से २५ तक बिन्दु अफल होते हैं, २५ से ३० पर्यन्त मध्यम होते और ३० के बाद सुख-वित्त-यश करने वाले तथा उसभाव की वृद्धि करने वाले फल होते हैं॥ ५२-५३॥

ये तुङ्गराशिस्वसुहृद्गृहस्था ये कोणकेन्द्रोपचयस्थिताश्च।
ये सौम्यवर्गादिबलोपयातास्ते नाशदा लाघवबिन्दुकाश्चेत्॥ ५४॥

ये चावसानरिपुरन्ध्रतुरङ्गभानां
ये नीचपापरिपुखेचरवर्गयुक्ताः।
ये मान्दिराशिपतिना सह बोधकाश्च
ते सर्वमुख्यफलदास्त्वधिबिन्दुकाश्चेत्॥ ५५॥

संस्कृत — ये ग्रहा स्वतुङ्गराशि स्वमित्रराशि स्थिता, केन्द्रे (१/४/७/१०) कोणे (९/५) वा उपचये (३-६-१०-११) स्थिता, शुभवर्गादिगता बलशालिनश्च भवेयुस्तेऽपि अष्टकवर्गे यदि लाघवबिन्दुकाः=अल्पशुभचिह्नकाः स्युस्तदा ते नाशदाः अशुभफलदायका भवन्ति। ये ग्रहा अवसाने=द्वादशे, रिपौ=षष्ठे, रन्ध्रे=अष्टमे, तुरङ्गे=सप्तमे भावे वा स्थिता भवेयुः, ये च स्वनीच राशौ, पापग्रहशत्रुग्रहस्य च वर्गगतास्तथा च ये गुलिकराशीशेन सह स्थिताः वा तत्सम्बन्धितश्च भवेयुस्तेऽपि यदि अष्टकवर्गे अधिबिन्दुकाः=अधिकशुभचिह्नयुक्ता स्युस्तदा ते सर्वमुख्य फलदाः=निखिलशुभफल सूचका भवन्ति।

अर्थात् अष्टकवर्गे शुभा अशुभाऽपि ग्रहा यद्यधिक बिन्दु युक्ताः स्युस्तदा शुभफलदा, लघुबिन्दुका अशुभफलदा, तत्र न केवलं शुभाशुभग्रहपरत्वेन शुभाशुभ फलं भवतीति ज्ञेयम्॥ ५४-५५॥

हिन्दी — जो ग्रह उच्चराशि-मित्रगृही और केन्द्र-कोण-उपचय में स्थित या शुभवर्ग में होकर बलवान् रहें वे भी थोड़े बिन्दुओं के कारण नाशक होते हैं।

जो ग्रह त्रिक (६-८-१२) स्थान में या सप्तम में या नीचराशि में पापग्रह के वर्ग से युक्त हों, जो गुलिक राशि के स्वामी के साथ हों तो वे अधिक बिन्दु के कारण सब काल में सभी मुख्य फल को देते हैं॥ ५४-५५॥

मानस्थिताल्लाभगृहे बहुत्वे लाभाल्लघुत्वे यदि रिष्फराशौ।
रिष्फोपयातादधिके विलग्ने जातः सुखी वित्तयशोबलाढ्यः॥ ५६॥

संस्कृत — मानस्थिता। मानस्थितात्=दशमभावस्य बिन्दुमानात् लाभगृहे=एकादशे भावे बहुत्वे (दशमापेक्षया लाभे यद्यधिका बिन्दु भवेत्), लाभात्=एकादशभावतः रिष्फराशौ=द्वादशे भावे लघुत्वे=अल्पसंख्यके, तथा च

रिष्फोपयातात्=द्वादशभावस्थितबिन्दुमानात् विलग्ने अधिके तदा जातः सुखी वित्तवान् यशस्वी बली च भवेदिति। यथोक्तं (फलदीपिका २४/३८)—

"मध्यात् फलाधिकं लाभे लाभात् क्षीणतरे व्यये।
यस्य व्ययाधिके लग्ने भोगवानर्थवान् भवेत्" इति॥ ५६॥

हिन्दी — दशमगृह में स्थित बिन्दु से लाभगृह में अधिक बिन्दु हो, लाभगृह से बारहवें में कम हों, बारहवें से अधिक बिन्दु लग्न में हों तो जातक सुखी, यश-धन से युक्त व बली होता है॥ ५६॥

खण्डत्रयं शफरकर्कटकीटकाद्यं तत्तच्चतुष्टयगृहोपगबिन्दुयुक्तम्।
आद्यं च मध्यमवसानमिति प्रयुक्तं केचिद्व्ययादिकमिति प्रवदन्ति लोके॥ ५७॥

संस्कृत — भावानां खण्डत्रयकल्पनया वयसः प्रथमे-मध्ये-अन्त्ये त्र्यंशे शुभाशुभफलमाह—**खण्डत्रयमिति**। शफरकर्कटकीटकाद्यं=मीन-कर्क-वृश्चिकाद्यं खण्डत्रये विभज्य तत्तच्चतुष्टयगृहोपगबिन्दुयुक्तं=तत्तद्राशिचतुष्कस्थिता ये समुदायाष्टकवर्गबिन्दुसंख्यास्तत्संकलनवशात् क्रमेण आद्यं-मध्यं-अवसानं च खण्डं त्रयं प्रयुक्तम्। अर्थात् मीनादि राशिचतुष्के (मी. मे. वृ. मि.) प्रथमखण्डोपगबिन्दुसंख्यां आद्यम्; कर्कादिराशिचतुष्के (क. सि. क. तु.) द्वितीयखण्डोपगबिन्दु मध्यम्। वृश्चिकादि राशिचतुष्के (वृश्चि. ध. म. कु.) तृतीयखण्डोपगबिन्दुसंख्याम् अवसानसंज्ञं प्रकल्प्य तस्माद्वयसः प्रथमादित्र्यंशे शुभाशुभफलं निर्दिशेत्। यस्मिन्भागेऽधिकबिन्दवो भवन्ति तस्मिन् वयसि सुखादिकमधिकन्तथा यस्मिन् भागेऽल्पबिन्दवस्तस्मिन् वयसि दुःखादिकं वाच्यमिति।

तथाहि जातकादेशे (अष्टकवर्ग ४०)

मीनेन्द्वालयवृश्चिकप्रभृतिकं खण्डत्रयं कल्पये—
दाद्येऽक्षाधिकतादिमे तु वयसस्त्र्यंशे विदध्यात्सुखम्।
मध्ये मध्यवयस्यथान्तिमवयस्त्र्यंशेऽन्त्यखण्डे हि सा
हीनाक्षस्तु वयस्त्रिभाग इह योऽत्र व्याधिदुःखोद्भवः॥

व्ययादिकं—द्वादशभावादिकमुक्तप्रकारेण खण्डत्रयं भवतीति केचिदपरे आचार्याः लोके प्रवदन्ति। अर्थात् द्वादश-प्रथम-द्वितीय-तृतीय-प्रथम-खण्डम्, चतुर्थ-पञ्चम्-षष्ठ-सप्तम-द्वितीयखण्डम्, अष्टम्-नवम्-दशम्-एकादशं तृतीयखण्डमिति ज्ञेयम्॥ ५७॥

हिन्दी — तीन खण्ड कल्पित हैं, मीन से ४ राशि का एक खण्ड, कर्क से ४ राशि का दूसरा खण्ड और वृश्चिक से ४ राशि का तीसरा खण्ड। एक-एकखण्ड का

बिन्दु योग से विचार होता है। इन खण्डों को आदि, मध्य, अन्त्य भी कहते हैं। कोई कोई व्ययादि भाव से भी खण्ड का आरम्भ कहते हैं॥ ५७॥

खण्ड त्रय में भेद —

बिन्दुं त्यक्त्वा रिष्फरन्ध्रोपयातं शिष्टं खण्डं केचिदिच्छन्ति सन्तः।
तुल्यस्वल्पाधिक्यबिन्दुक्रमेण मिश्रं दुःखं संपदः स्युर्नराणाम्॥ ५८॥

संस्कृत — बिन्दुमिति। केचिद् सन्तः=विद्वांसः पूर्व-(५७ श्लोके) परिगणितखण्डत्रये रिष्फरन्ध्रोपयातं=द्वादशेऽष्टमे च भावे प्राप्त बिन्दुं त्यक्त्वा शिष्टम्=शेष खण्डं प्रथमं, द्वितीयं, तृतीयं च इच्छन्ति=स्वीकुर्वन्ति। अर्थात् केचिद् व्ययादिकमित्युक्तप्रकारे अष्टमो-द्वादशो भावो यस्मिन् खण्डे निपतति तस्मिन्खण्डे अष्टमोपगता द्वादशोपगताश्च बिन्दवो न ग्राह्या।

फलमाह—प्रथमादि खण्डत्रये यदि तुल्या एव बिन्दवो भवेयुस्तदा संपूर्णे वयसि मिश्रं (सुखदुःखादिकं) फलम्। यस्मिन् खण्डे स्वल्पाः=अत्यल्पा बिन्दवो भवेयुस्तस्मिन् वयसि दुःखं=कष्टादिकं निर्दिशेत्। यस्मिन् खण्डे अधिका बिन्दवो भवेयुस्तस्मिन् वयसि नराणां=जनिमतां सम्पदः=सुखैश्वर्याणि भवेदिति॥ ५८॥

हिन्दी — बारहवें व आठवें भाव में प्राप्त बिन्दु का त्याग करना चाहिए। ऐसा कोई-कोई विद्वान् कहते हैं, तुल्य-स्वल्प-अधिक बिन्दु से क्रमशः मिश्रफल, दुःख तथा धनदायक योग होते हैं। तुल्यबिन्दु में मिश्रफल, अल्पबिन्दु में दुःख, अधिकबिन्दु में धनप्राप्ति॥ ५८॥

खण्ड त्रय में ग्रहयोग से फल —

सौम्याक्रान्तं यदि सुखकरं मिश्रदं मिश्रयोगं
खण्डं पापद्युचरसहितं क्लेशयोगाकरं स्यात्।
बिन्दुस्वल्पे यदि निजमनस्तापवान् पापवादी
बिन्द्वाधिक्ये वयसि विपुलः श्रीसमेतः प्रजातः॥ ५९॥

संस्कृत — पूर्वोक्तखण्डत्रये ग्रहयोगफलमाह—सौम्याक्रान्तं=शुभग्रहयुक्तं खण्डं यदि स्यात्तदा जातस्य खण्डसमे वयसि सुखकरं भवति। मिश्रयोगं=पापेन शुभेन च संयुक्तं खण्डं मिश्रदं=शुभं अशुभं च (खण्डसमे वयसि) फलं करोति। पापद्युचरसहितं=पापग्रहेण युक्तं खण्डम् तत्तुल्ये वयसि जातस्य क्लेशयोगाकरं=अतीव कष्टकारकं भवति।

बिन्दुपरत्वेन खण्डफलम्—यदि खण्डे बिन्दुस्वल्पे=अत्यल्पबिन्दुयुक्ते सति तत्तुल्ये जातकस्य वयस्त्रिभागे जातो निजमनस्तापवान् पापवादी च।

बिन्द्वाधिक्ये वयसि=यत्र खण्डे अधिकबिन्दवः भवेयुस्ततुल्ये वयसि प्रजातो विपुलश्रीसमेतः=अतीवसम्पदादिसंयुक्तो भवतीति बोध्यम्॥५९॥

हिन्दी — जो खण्ड शुभग्रह से आक्रान्त (युक्त) हो वह शुभफल देने वाला, मिश्रित ग्रह से आक्रान्त हो तो मिश्रफल देने वाला तथा पापग्रह से युक्त हो तो क्लेश देने वाला होता है। यदि स्वल्प बिन्दु हो तो मन को ताप पहुँचाने वाला व पापी, अधिक बिन्दु में अधिक विद्वान् तथा अधिक धनवान् होता है॥५९॥

लग्नगत बिन्दु का फल —

यावद्बिन्दुर्लग्नगस्तावदीयसङ्ख्यातीते वत्सरे राजयानम्।
वित्तं पुत्रं चातिविद्यामुपैति जातः सम्पद्योगशाली नरश्चेत्॥६०॥

संस्कृत — कस्मिंश्चिद्विशिष्टयोगे सति लग्नगतबिन्दुसंख्याफलमाह **यावदिति**। लग्नराशौ यावन्तः सर्वाष्टकवर्गजनित बिन्दवो भवेयुस्तत् संख्यातुल्येऽतीते वत्सरे=बिन्दुसंख्यातुल्यगताब्दे जातो नरो राजयानं, वित्तं, पुत्रं अतिविद्यां च उपैति=प्राप्नोति। चेद्यदि स जातः सम्पद्योगशाली नरः स्यात्। अर्थात् तस्य जन्मकाले यदि कश्चित् सुखादिविशिष्टो योगः स्यातदैव, अन्यथा केवलं लग्नगतबिन्दुवशात्फलंवक्तव्यम्॥६०॥

हिन्दी — जितने बिन्दु लग्न में स्थित हों उतने वर्ष जातक के बीतने पर राजयान (सवारी) धन-पुत्र-विशेषविद्या आदि की प्राप्ति होती है यदि वह मनुष्य संपत्ति योग से युक्त हो तो अधिक प्राप्ति होती है॥६०॥

रिःफाधीशे मन्दगेहोदयस्थे होरारन्ध्रस्वामिनौ दुर्बलौ च।
लग्ने यावद्बिन्दुसंख्यास्तदीया जातस्यायुर्वत्सराः सम्भवन्ति॥६१॥

संस्कृत — योगविशिष्टे आयुःप्रमाणमाह। रिःफाधीशो द्वादशेशः यदा मन्दगेहोदयस्थे=मकरकुम्भान्यतरराशिलग्ने स्थिते (मकर वा कुम्भो लग्नं तदा द्वादशेशः शनि भवेत्) होरारन्ध्रस्वामिनौ=लग्नेशाष्टमेशौ च दुर्बलौ स्यातां तदा तस्मिन् योगे लग्ने यावन्तः सर्वाष्टकवर्गजा बिन्दवः स्युस्तत्संख्यातुल्य जातस्यायुर्वत्सराः सम्भवन्ति। अर्थादुक्त योगे लग्ने यावन्तो बिन्दस्तावन्ति वर्षाणि जातस्य जीवनं भवति॥६१॥

हिन्दी — व्ययभाव का स्वामी शनि की राशि में हो और लग्नेश-अष्टमेश निर्बल हों तो लग्न में जितने बिन्दु हों उतने वर्ष तुल्य जातक की आयु होती है॥६१॥

यानाधीशे लग्नगे वाहनस्थे लग्नाधीशे तद्ग्रहोपेतराश्योः।
त्रिंशत्संख्या बिन्दवः सन्त्रयश्चेज्जाता राजश्रीनिधाना नरेशाः॥६२॥

संस्कृत — ग्रहयोगवशाद्बिन्दुफलान्याह। यानाधीशे=चतुर्थभावेशे लग्नगे लग्नाधीशे=लग्नस्वामि वाहनस्थे=चतुर्थभावगते सति तद्ग्रहोपेत-

राश्योः=लग्नचतुर्थ भावयोः यदि सत्रयस्त्रिशत्संख्याः ३३ बिन्दव-श्चेद्भवेयुस्तदा ते जाता नरा राजश्रीनिधानाः=राजैश्वर्यप्रधाना नरेशाः=भूपाला भवन्ति। अर्थात् लग्नेशः-चतुर्थे, चतुर्थेशो लग्ने च भवेत्तथा लग्नचतुर्थभावयोर्योगबिन्दवस्त्रयस्त्रिंश ३३ न्मिताः स्युस्तदा जातो विविधैश्वर्यशाली भवतीति भावः ॥ ६२ ॥

हिन्दी — चतुर्थ का स्वामी लग्न में व लग्नेश चतुर्थ में हो और उन दोनों राशियों में यदि ३३ बिन्दु हों तो जातक राजलक्ष्मी युत राजा होता हैं ॥ ६२ ॥

होराबन्धुप्राप्तिभावत्रयेषु त्रिंशन्मानाधिक्यबिन्दूपगेषु।
जातस्तेजःश्रीबहुत्वं च राज्यं चत्वारिंशद्वत्सरादूर्ध्वमेति॥ ६३॥

संस्कृत — होरा=लग्नम्, बन्धुः=चतुर्थः, प्राप्ति=एकादशः एषु भावत्रयेषु त्रिंशन्मानाधिक्यबिन्दुपगेषु=प्रथम-चतुर्थ-लाभभावानां समुदायाष्टकवर्गबिन्दवो सम्मिलिता यदि त्रिंशदधिकाः स्युस्तदा जातो नरः चत्वारिंशद्वत्सरादूर्ध्वं तेजः, श्रीबहुत्वं राज्यं च एति=प्राप्नोति। अस्मिन्योगे चत्वारिंशद्वर्षात्परं जातस्य भाग्योदयं भवती ॥ ६३ ॥

हिन्दी — लग्न-चतुर्थ-एकादश इन तीन भावों में यदि तीस से अधिक विन्दु हों तो जातक तेजस्वी और बहुत धनी होता है तथा उसको ४० वर्ष के बाद राज्यसुख मिलता है ॥ ६३ ॥

यत्पञ्चविंशतिमुखास्त्रिदशान्तसंख्या बन्धुस्थिता नवमराशिकबिन्दवश्च।
यद्यष्टकेन सह विंशतिवत्सराणामन्ते परे शरदि वा नरवाहनाढ्यः॥ ६४॥

संस्कृत — बन्धुस्थिताः=चतुर्थभावगताः, नवमभावस्थबिन्दवश्च सम्मिलिता पञ्चविंशतिमुखाः=पञ्चविंशतिमारभ्य त्रिदशान्तसंख्याः=त्रिगुणिता दश अन्तसंख्या येषां, त्रिंशदित्यर्थः। अर्थात् चतुर्थनवमभावस्थयोः, समुदायाष्टकबिन्दवो यदि पञ्चविंशतितः त्रिंशदन्तर्गता भवेयुस्तदा अष्टकेन सह विंशतिवत्सराणामर्थादष्टाविंशति वर्षाणामन्ते वा ततः परे शरदि=वर्षे जातो नरः नरवाहनाढ्यो=दास-दासी-वैभवादियुक्तो भवेदिति ॥ ६४ ॥

हिन्दी — यदि चतुर्थ और नवमभाव में २५ से ३० तक बिन्दु संख्या हों तो २८ वर्ष के बाद वह जातक नरवाहन (दास-दासी या पालकी) से युक्त होता ॥ ६४ ॥

देवाचार्ये वाहनस्थे स्वतुङ्गे चत्वारिंशद्‌बिन्दुसङ्ख्यासमेते।
मेषागारे लग्नगे वासरेशे जातो राजा लक्षसंख्याश्वनाथः॥ ६५॥

संस्कृत — देवाचार्यो गुरुः वाहनस्थे=चतुर्थभावमुपगते स्वतुङ्गे=निजोच्चराशौ (कर्क राशौ) विद्यमाने, तत्र चत्वारिंशद्बिन्दुसंख्या (४०) समेते, वासरेशे=सूर्ये मेषागारे लग्नगे=मेषराशिलग्ने स्थिते सति तदा जातो नरो राजा लक्षसंख्याश्वनाथः=लक्षघोटकानां स्वामिश्च भवेत् ॥ ६५ ॥

हिन्दी — अपनी उच्च (कर्क) राशि का बृहस्पति चतुर्थभाव में ४० बिन्दु से युक्त हो, सूर्य मेषराशि का होकर लग्न में हो तो वह जातक राजा हो तथा लक्ष घोड़ों को रखने वाला हो ॥ ६५ ॥

चत्वारिंशद्बिन्दुयुक्ते विलग्ने चापे जीवे भार्गवे मीनराशौ।
स्वोच्चे भौमे कुम्भगे भानुपुत्रे जातः सर्वश्रीधरः सार्वभौमः ॥ ६६ ॥

संस्कृत — विलग्ने=जन्मलग्ने चत्वारिंशद्बिन्दुयुक्ते, जीवे=बृहस्पतौ चापे=धनूराशौ (स्वमूलत्रिकोणे) भार्गवे=शुक्रे मीनराशौ (स्वोच्च राशौ), भौमे =मङ्गले स्वोच्चे=मकरराशौ, भानुपुत्रे=शनैश्चरे कुम्भगे=स्वमूलत्रिकोणे च गतवति तदा जातः सर्वश्रीधरः=विविधसम्पदैश्वर्ययुक्तः सार्वभौमः=चक्रवर्ती राजा च भवति ॥ ६६ ॥

हिन्दी — ४० बिन्दु लग्न में हो, धनु में बृहस्पति, मीन में शुक्र, अपने उच्चस्थान (मकर) में मङ्गल और कुम्भराशि में शनि हो तो जातक सर्वलक्ष्मी से युक्त सार्वभौम (चक्रवर्ती) राजा होता ॥ ६६ ॥

क्रियादिराशित्रितयोपयाता भवन्ति पूर्वादिचतुर्दिशश्च।
फलाधिकं यद्दिशि तत्प्रदेशे धनादिवृद्धिं समुपैति जातः ॥ ६७ ॥

संस्कृत — क्रियो=मेषस्तदादिराशित्रितयमुपगता पूर्वादिचतुर्दिशो भवन्ति। अर्थात् मेष-वृष-मिथुनाः पूर्वे, कर्क-सिंह-कन्या याम्ये, तुला-वृश्चिक-धनुंधराः पश्चिमे, मकर-कुम्भ-मीना उदीच्याम्, प्रयोजनं तु फलाधिकमिति। यद्दिशि फलाधिकं भवेदर्थात् समुदायाष्टकवर्गवशादुक्तचतुर्दिशां मध्ये यद्दिशि सर्वाधिक बिन्दवो भवेयुस्तत्प्रदेशे=तद्दिग्भागे व्यापारेण धनादिवृद्धिं जातो समुपैति=प्राप्नोति ॥ ६७ ॥

हिन्दी — मेषादि तीन तीन राशियों में पूर्वादि चारों दिशाओं में (मेष-वृष-मिथुन में पूर्व, कर्क-सिंह-कन्या में **दक्षिण**, तुला-वृश्चिक-धनु में **पश्चिम**, मकर-कुम्भ-मीन में **उत्तर**) अधिक बिन्दुवाली राशि की दिशा में कार्य-व्यापारादिसे धनवैभवादि की वृद्धि होती है ॥ ६७ ॥

रोगज्ञान —

लग्नादिशन्यन्तगतं तुरङ्गैः सङ्गुण्य ताराहतलब्धयाते।
रव्यादिपापे यदि कोणगे वा रोगादिपीडाविपुलं नराणाम् ॥ ६८ ॥
मन्दादिलग्नान्तफलं च तद्वल्लग्नान्तमारादुदयात्कुजान्तम्।
शुभैक्यसंख्यागततारकायां शुभग्रहे सौख्यफलं वदन्ति ॥ ६९ ॥

संस्कृत — इदानीं रोग ज्ञानमाह। लग्नादिशन्यन्तगतं=लग्नराशिमारभ्य शनिस्थितराशिपर्यन्तं ये सर्वाष्टकवर्गबिन्दवस्तान् तुरङ्गैः=सप्तभिः सङ्गुण्य तारा-

हतलब्धयाते=तारा नक्षत्राणि (२७) भिर्हृते यल्लब्धं तावत्संख्यक नक्षत्रमुपयाते रव्यादिपापे=रविभौमशनिनामन्यतमे वा कोण (५/९) गते ग्रहे सति फलं-विचार्यम्। अर्थात् लग्नं समारभ्य शनिपर्यन्तराशिषु यावन्तो बिन्दवः भवेयुस्तान् सप्तभिः सङ्गुण्य सप्तविंशतिभिर्भजेत्तदा यल्लब्धं तत्संख्यक नक्षत्रे यदि रविभौमो वा शनिः अथवा कोणस्थितः कश्चिद्ग्रहो भवेत्तदा नराणां विपुला=महती रोगादिपीडा स्यादिति। यथा मन्त्रेस्वरेण होरारत्ने (अष्टकवर्ग विचार १५-१६)

लग्नात्प्रभृतिमन्दान्तमेकीकृत्य फलानि वै।
सप्तभिर्गुणयेत्पश्चात् सप्तविंशहृतात्फलम्॥
तत्समानगते वर्षे दुःखं वा रोगमाप्नुयात्
एवं मन्दादिलग्नान्तं भौमराह्वोस्तथा फलम्॥

मन्दं=शनिमारभ्य लग्नान्तं यावद्राशिषु फलं=समुदायाष्टकबिन्दुसंख्या, अथवा आरात्=भौमात् लग्नान्तम् अथवा उदयात्=लग्नात् कुजान्तं फलं तद्वद्र्थात् सप्तभिः सङ्गुण्य सप्तविंशतिभिः भक्तं लब्धसंख्यामिते नक्षत्रे रव्यादिपापे गतवति तद्वत्=रोगादिमहतीपीडा वाच्या। शुभैक्यसंख्यागततारकायां =शुभग्रहाणां यावन्तो बिन्दवस्तेषामैक्यवशादुक्तवद्या तारा, अर्थात् लग्नादितो मन्दान्तगतं वा मन्दादितो लग्नान्तगतं यथा पूर्वं प्रदर्शितं तथैव लग्नादिशुभग्रहान्तं वा शुभग्रहादितो लग्नान्तं यावत् बिन्दवः सप्तभिः सङ्गुण्य सप्तविंशतिभिः भक्तं, लब्धमिते नक्षत्रे गतवति शुभग्रहे सौख्यफलं ज्ञेयमिति।

अत्रापि जातकादेशकारेण (९/४३)—

लग्नादारभ्य सूर्यात्मजगतभवनाक्षान्तमेकत्र युक्त्वा
सुघ्ने तस्मिन् सुखासे गतवति फलतुल्याब्दके रोगशोकाः।
मन्दादालग्नमेवं क्षितिसुतगतभाच्चादिलग्नं विलग्नादाभौमं
चेति कृत्वा विधिमशुभमतिर्वादिशेच्चोदिताब्दे॥ इति॥ ६८-६९॥

हिन्दी — लग्न से शनि तक की बिन्दु संख्या को ७ से गुणकर २७ का भाग देने पर जो लब्धि प्राप्त हो उस नक्षत्र में सूर्यादि पापग्रह या कोणस्थग्रह के जाने पर जातक को अत्यधिक रोगादि व पीड़ा होती है।

उसीप्रकार शनि से लग्न तक या मङ्गल से लग्न तक या लग्न से मङ्गल तक विचार करना चाहिए। शुभभाव से आनीत बिन्दुओं के संख्या तुल्य नक्षत्र में जाने पर ''शुभग्रह'' सौख्य फल देने वाले होते हैं, ऐसा आचार्य कहते हैं॥ ६८-६९॥

शोध्यं राशिद्युचरगुणकैः संगुणय्यै तदैक्यं
हत्वा शैलैरुडुगणहृतं लब्धमब्दादिकं स्यात्॥

मानाधिक्ये विशतमशते तारकायुर्वराङ्गैः
संगुण्याप्तं दिवसनिचयैर्मातुलैः शुद्धमायुः ॥ ७० ॥

संस्कृत — शोध्यं=त्रिकोणैकाधिपत्यशोधनवशाज्जातं फलं राशेर्द्युचरस्य च गुणकैः (४४ श्लोकोक्तैः) सङ्गुण्य (तत्तद्ग्रहस्य पृथक् पृथक्) एतेषामैक्यं कृत्वा तच्छैलेः (७) हत्वा (सङ्गुण्य) उडुगणैः (२७) हृतं=भक्तं लब्धमब्दादिकं=वर्षादिकं भवेत्। तस्मिन् वर्षादौ माना(१००)धिक्ये=शताधिक्ये समागते सति तद्विशतं=शतोनितं जातं, अशते=शताल्पे ग्राह्यं, तदेत्तारकायुः= नक्षत्रायुः उच्यते। अथ तदायुः वराङ्गैः=३२४ भिः (व=४ र=२ ग=३) हत्वा= सङ्गुण्य, दिवसनिचयैः दिनसमूहैः मातुलैः=३६५ (म=५ त=६ ल=३) प्रमितैः भक्तं कुर्यात् तदा लब्धं शुद्धमायुर्भवेत्। एतद्धि शुद्धमायु अर्थात् शुद्धाष्टकवर्गजनितमायुः ज्ञेयमिति।

यथा होरारत्ने (अष्ट० समुदा० १-६)—

अष्टवर्ग समुद्धृत्य ग्रहाणां राशिमण्डले।
प्राग्वत् त्रिकोणं संशोध्य पश्चादेकाधिपत्यताम्॥
एकस्मिन् मण्डलाधिक्यं शोधयेच्चक्रमण्डलम्।
द्वादशैव तु गृह्णीयादेवं सर्वेषु राशिषु॥
पूर्वोक्तंगुणकारैस्तु वर्धयेच्च पृथक् पृथक्।
एकीकृत्य ततः सर्वं सप्तभिर्गुणयेत् पुनः।
सप्तविंशतिहल्लब्धं आयुःपिण्डं प्रदृश्यते।
द्वादशादिगुणाल्लब्धं मासादिघटिकास्ततः।
शतादूर्ध्वं तु तत्पिण्डं मण्डलं शोधयेच्च तम्।
शतमेव तु गृह्णीयाद्दीर्घायुर्योगसम्भवे॥
तद्वधं सकलं कृत्वा वराङ्गेण ३२४ विविर्धितम्।
मातङ्ग ३६५ हतलब्धायुर्मातङ्गाब्दं प्रदृश्यते॥

अत्राष्टकवर्गे शतमेवोत्तमायुगृहीतमित्यवगन्तव्यम्॥ ७० ॥

हिन्दी — शुद्धावशेष बिन्दुसंख्या को राशिगुणक-ग्रहगुणक से गुणा करके पुनः ७ से गुणे फिर २७ का भाग दें। जो फल मिले वह वर्षादि होता है। शताधिक्य होने पर १०० में शोधकर वराङ्ग ३२४, से गुणाकर मातुल ३६५ से भाग देने पर शुद्ध वर्षादि आयु होती है॥ ७० ॥

स्वल्पमध्यबहुमानवत्सरा मण्डलोनयुतकर्मकल्पिताः।
तुल्यकालमुपयान्ति सर्वतः सद्गुणोदयकटाक्षवीक्षणात्॥ ७१ ॥

संस्कृत — साधितमायुः कदा यथात्वमुपयातीत्याह। पूर्वोक्त प्रकारैः साधिताः स्वल्पमध्यबहुमानवत्सराः=अल्पायुर्मध्यायुर्दीर्घायुः वर्षप्रभेदा मण्डलोनयुतकर्मकल्पिताः (मानाधिक्ये "विशत" शतोनितं कर्मकृताः) सद्गुणोदय सद्गुणविशिष्टानां शुभग्रहाणामुदये लग्ने यत् कटाक्षवीक्षणात्= शुभावलोकनं तस्मादर्थात् यदि लग्ने शुभ-बली-उच्चस्थ ग्रहाणां दृष्टिः स्यात्तदा सर्वतो भावेन तुल्यकालमुपयान्ति। लग्ने यदि शुभग्रहाणां दृष्टिर्न भवेत् तदागतमायुः तत्तुल्यं न परिणमति ॥ ७१ ॥

हिन्दी — लग्न में सद्गुण से युक्त ग्रह की पूर्णदृष्टि से स्वल्प-मध्य- दीर्घायु को मण्डल से संस्कृत अर्थात् १०० वर्ष से हीन या युत करने से जो आयु आती है वह दीर्घायु-मध्यायु एवं अल्पायु होती है। यह लग्नपर शुभाशुभ ग्रहदृष्टिवश फलीभूत होती है ॥ ७१ ॥

श्रीवैद्यनाथकृतजातकपारिजाते पाराशरादिफलसाररसोपयाते[1]।
प्रस्तारभिन्नसमुदायकबिन्दुशीलः संकीर्तितस्तु सकलद्युचरप्रसादात् ॥ ७२ ॥

इति नवग्रहकृपया वैद्यनाथविरचिते जातकपारिजाते अष्टक वर्गाध्यायः दशमः ॥ १० ॥

संस्कृत — सरलार्थ युक्तः ॥ ७२ ॥

"प्रज्ञावर्द्धिनी" संस्कृत टीकायां जातक पारिजातस्य
अष्टकवर्गाध्यायः दशमः ॥

हिन्दी — पराशरादि ऋषियों के ग्रन्थफल के साररस से उत्पन्न श्री वैद्यनाथकृतजातकपारिजात में नवग्रहों की कृपा से अष्टवर्ग के प्रस्तारादि भेदों का वर्णन किया गया ॥ ७२ ॥

सत्येन्द्रमिश्रकृत "प्रज्ञावर्द्धिनी" हिन्दीटीका में जातक पारिजात का
अष्टकवर्गाध्याय दशम समाप्त ॥

* * *

---

[1] "हरिशंकरपाठक" की टीका में ७३ श्लोक हैं।

प्रथम-द्वितीय भावफलाध्यायः — ११

भावफलविचार —

होरालंकारमुख्यप्रभवशुभफलादीनि सर्वाणि पुंसां
तत्तद्भावोद्भवानि द्युचरबलवशाद्यानि तानि प्रवच्मि।
ये ये भावाः सितज्ञामरगुरुपतिभिः संयुता वीक्षिता वा
नान्यैर्दृष्टा न युक्ता यदि शुभफलदा मूर्तिभावादिकेषु ॥ १ ॥

संस्कृत — इदानीं ग्रह बलवशात् शुभाशुभफलमाह–होरेति। पुसां द्युचरबलवशात्=ग्रहाणां बलाबलवशतो यानि शुभाशुभफलानि तत्तद्भावोद्भवानि=लग्नादिद्वादशभावजातानि तानि अहं (ग्रन्थकारः) प्रवच्मि=कथयामि। अर्थात् जातकानां यत् किञ्चित् वपु–धन–भ्रातृ–मित्र–पुत्र–शत्रु–स्त्री–मृत्यु–धर्म–राज्य–लाभ–व्यय–सम्बन्धि फलं विचार्यते तत्सकलं तत्तद्भावात् (तनु–धन–सहजादितः) एव जातं तथा तत्र तत्रोपस्थितग्रहबलवशादुद्भूतमेव। ये ये भावाः सितज्ञामरगुरुपतिभिः=शुक्र–बुध–गुरु–स्वस्वामिभिः, संयुताः=सहिताः, वा वीक्षिताः=दृष्टाः अन्यैः=इतरैः ग्रहैः न युता न दृष्टा भवेयुस्तदा ते मूर्तिभावादिकेषु=लग्नादिभावेषु शुभफलदायका भवन्ति। अर्थाद्यस्मिन् भावे बुध–गुरु–शुक्राणामन्यतमस्य तद्भावपतेर्वा स्थितिरथवा दृष्टिर्भवति, तथा तत्र कस्यचिदन्यस्य ग्रहस्य स्थितिर्दृष्टिर्वा यदि न भवति तदा तद्भावजन्यं फलं शुभं भवतीति भावः। यथा पराशरः—

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तस्याभिवृद्धिः।
पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्दिष्टव्या जन्मतः प्रश्नतो वा।

तथा च वराहः (लघुजा. १।१४)

अधिपयुतो दृष्टो वा बुधजीवनिरीक्षितश्च यो राशिः।
स भवति बलवान्न यदा युक्तो दृष्टोऽपि वा शेषैः॥ इति॥ १॥

हिन्दी — ग्रहों के बलानुसार लग्नादि द्वादश भावों से उत्पन्न सभी मनुष्यों के शुभाशुभ फलों को कहता हूँ। लग्नादि में जो जो भाव शुक्र, बुध, बृहस्पति और अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हों और यदि पापग्रह से युत–दृष्ट न हों तो वे शुभफल कारक होते हैं॥ १॥

तन्वादिभावेषु शुभोदयेषु तद्भावनाथोपगतेक्षितेषु।
तदुक्तभावस्य समृद्धिरुक्ता नपापखेटेक्षितसंयुतेषु ॥ २॥

संस्कृत — तन्वादीति। लग्नादयो भावाः शुभराशियुक्ताः स्वस्वपतिना संयुता वीक्षिता वा तथा केनचित्पापग्रहेण युक्ता वीक्षिता वा न भवेयुस्तदा तत्तद्भावे यद्यद्वस्तुनो विचारः क्रियते तस्य-तस्य समृद्धिरुक्ता ॥ २ ॥

हिन्दी — शुभराशि वाले लग्नादि भावों के अधिपति उन उन भावों में स्थित हों और वे भाव यदि पापग्रहों से युत-दृष्ट न हों तो उस उस भाव की वृद्धि होती है ॥ २ ॥

नीचस्थो रिपुराशिस्थः खेटो भावविनाशकः ।
मूलस्वतुङ्गमित्रस्थो भाववृद्धिकरो भवेत् ॥ ३ ॥

संस्कृत — नीचस्थो इति। स्वनीचराशौ शत्रुराशौ वा स्थितो ग्रहो यस्मिन् भावे स्थितः स ग्रहस्तस्य भावस्य विनाशको भवति। एवं स्वमूलत्रिकोणे-स्वराशौ-स्वकीयोच्चे, स्वमित्रभवने वा स्थितः ग्रह यस्मिन्भावस्थितो तस्य भावस्य वृद्धिकारको भवति ॥ ३ ॥

हिन्दी — नीचराशिगत अथवा शत्रुराशिगत ग्रह जिसभाव में रहे वह उस भाव का नाश करता है। अपने मूलत्रिकोण में, अपने उच्चस्थान में, मित्रराशि में स्थित ग्रह जिसभाव में हो वह उसभाव की वृद्धि करता है ॥ ३ ॥

यद्भावनाथो रिपुरिःफरन्ध्रे दुःस्थानपो यद्भवनस्थितस्तु ।
तद्भावनाशं कथयन्ति तज्ज्ञाः शुभेक्षितश्चेत् फलमन्यथा स्यात् ॥ ४ ॥

संस्कृत — यद्भावेति। यस्य भावस्य नाथ=स्वामी, रिपुरिष्फरन्ध्रे=षष्ठ-द्वादशाष्टमे स्थाने (त्रिके) भवति, वा दुःस्थानपः=षडष्टव्ययेशग्रहो यस्मिन् भवने स्थितो भवति, तस्य भावस्य नाशं तज्ज्ञाः=तद्विदः (दैवज्ञाः) कथयन्ति। यदा केनचित् कैश्चिद्वा शुभग्रहेण शुभग्रहैर्वा ईक्षितः=निरीक्षतः स्यात् तदाफले अन्यथाऽर्थात्तद्भावस्य नाशो न अपितु तद्भावस्यवृद्धिर्भवति।

यथा जातकादेशे (१०। ३४)—

षष्ठं द्वादशमष्टमं च मुनयो भावाननिष्टान्विदुः।
तत्राथान्वित वीक्षिता यदधिपा ये वाच भावास्वयम् ॥ ४ ॥

हिन्दी — जिसभाव का अधिपति षष्ठ, द्वादश या अष्टमभाव में स्थित हो, एवं दुःस्थान (६-८-१२) का स्वामी जिसभाव में स्थित हो उसभाव का नाश होता है ऐसा विद्वान लोग कहते हैं। यदि उसे शुभग्रह देखते हों तो अन्यथा फल होता है अर्थात् उसभाव का नाश नहीं होता है ॥ ४ ॥

यद्भावपे केन्द्रगते विलग्नात्त्रिकोणगे वा यदि सौम्यदृष्टे ।
तुङ्गादिवर्गोपगते बलाढ्ये तद्भावपुष्टिं फलमाहुरार्याः ॥ ५ ॥

संस्कृत — यद्भावपे इति। यस्य भावस्य पति विलग्नात्=जन्मलग्नतः,

केन्द्रे (१।४।७।१०) वा त्रिकोणे (५।९) स्थितः स च यदि सौम्येन (शुभग्रहेण) दृष्टो तथा तुङ्गादिवर्गोपगतः=स्वकीयोच्चादिराशौ स्ववर्गे च गते=स्थितः, बलाढ्यः=पूर्वोक्तैर्बलैर्युक्तो वा भवेत्तदात्तद्भावपुष्टिंफलमर्थात्तद्भावस्य वृद्धिरेव आर्या आहुः ॥ ५ ॥

हिन्दी — लग्न से जिसभाव का पति केन्द्र में हो अथवा त्रिकोण में हो, उसे शुभग्रह देखते हों तथा उच्चादि वर्ग में प्राप्त होकर वह बलवान् हो तो श्रेष्ठ विद्वानों के मत से उसभाव की वृद्धि होती है ॥ ५ ॥

तत्तद्भावत्रिकोणे सुखमदनगृहे वाऽऽस्पदे सौम्ययुक्ते
पापानां दृष्टिहीने भवनपसहिते पापखेटैरयुक्ते।
भावानां पुष्टिमाहुः सकलशुभकरं चान्यथा चेत्प्रणाशं
मिश्रं मिश्रग्रहेन्द्रैरखिलमपि तथा मूर्तिभावादिकानाम् ॥ ६ ॥

संस्कृत — तत्तद्भावेति। तत्तद्भावतः=विचारणीयभावतः, त्रिकोणे (५।९), सुखमदनगृहे (४।७), वा आस्पदे (१०) सौम्ययुक्ते=शुभग्रहेण शुभग्रहैर्वा युक्ते, पापानां दृष्टिहीने=पापग्रहैरनवलोकिते भवनपसहिते=स्वराशिपतिना युक्ते, तथा पापखेटैरयुक्ते, ईदृग्लक्षणलक्षितानां भावानां पुष्टिं=वृद्धि आहुः। यस्मिन् भावे ईदृग्लक्षणम् तद्भावजातं सकलशुभकरम्। यदि अन्यथा चेत् तदा तद्भावस्य प्रणाशं करोति। मिश्रग्रहेन्द्रैः=तत्तद्भावात्त्रिकोणे (सुखमदने आस्पदे वा) पापैः शुभैश्च सहिते वा पापैः शुभैश्चावलोकिते सति, मूर्तिभावादिकानां=लग्नादिद्वादशभावानाम् अखिलमपि फलम्=सकलं तत्तद्भावोद्भूतं फलं मिश्रं (शुभमशुभञ्च) बोध्यम् ॥ ६ ॥

हिन्दी — लग्नादि विचारणीय भावों के उस उस भाव से त्रिकोण-चतुर्थ-सप्तम या दशम स्थान में शुभग्रह या उसराशि का पति हो, वहाँ पापग्रहों की दृष्टि या योग न हो तो भावों का समस्तफल शुभ तथा वृद्धिकारक कहना चाहिए। यदि ऐसा योग न हो तो उस-उस भावफल का नाश होता है। यदि वे स्थान मिश्रग्रह से युक्त हों तो मिश्रफल होता है ॥ ६ ॥

नाशस्थानगतो दिवाकरकरच्छन्नस्तु यद्राशिपो
नीचारातिगतोऽथवा यदि शुभैः खेटैरयुक्तेक्षितः ॥
तद्भावस्य विनाशनं मुनिगणाः शंसन्ति खेटैर्युतो
यद्यत्रापि फलप्रदो नहि तदा मूर्त्यादिभानां क्रमात् ॥ ७ ॥

संस्कृत — नाशस्थानगतेति। यद्रशिपः=यस्य भावस्य अधिपः, नाश-स्थानगतः=अष्टमभावगतः, दिवाकरच्छन्नः=अस्तङ्गत अथवा नीचारातिगतः=स्व-नीचराशौ शत्रुगृहे च स्थितः, यदि शुभैः खेटैः=बुधगुरुशुक्रैः, अयुक्तेक्षितः=

युक्तोदृष्टश्च न, तदा तद्भावस्य=यद्भावपतिरीदृग्लक्षणयुतो भवति तदा तस्य भावस्य विनाशनं मुनिगणाः (गर्ग-पराशरादयो) महर्षयः, शंसन्ति=कथयन्ति। अत्रोक्त-संस्थायां यद्राशिपः खेटैरितरग्रहैर्युतेऽपि भवेत्तदा मूर्त्यादि=मूर्तिप्रभृतिभावानां क्रमात् तथा फलप्रदो नहि भवति।

यथा फलदीपिकायां (१५।३)—

नाशस्थानगतौ दिवाकरकरैर्लुसस्तु यद् भावपो,
नीचारातिगृहं गतो यदि भवेत्सौम्यैरयुक्तेक्षितः।
तद्भावस्यविनाशनं वितनुते तादृग्विधोऽन्योस्ति चेत्
तद्भावोऽपि फलप्रदो नहि शुभश्चेन्नाशमुग्र ग्रहः॥७॥

हिन्दी — जिसभाव का स्वामी सूर्य के किरण से अस्त हो, अष्टमस्थान में प्राप्त हो, नीच या शत्रुराशि में हो और यदि शुभग्रह से युक्त न हो तो उसभाव का नाश मुनि लोग कहते हैं अर्थात् वे भाव फलप्रद नहीं होते हैं॥७॥

दुःस्थाने वाऽरिगे मूढे दुर्बले भावनायके।
भावस्य संपदं कर्तुं न शक्ता भावमाश्रिताः॥८॥

संस्कृत — दुःस्थाने इति। भावनायके=विचारणीयभावपतौ, दुःस्थाने=षडष्टव्यय स्थानगते, वा अरिगे=शत्रुगृहे गते, मूढे=सूर्येण सहास्तङ्गते, दुर्बले=बलहीने सति, भावमाश्रिताः=इत्थंभूत्वा तद्भावगता ग्रहा तस्य भावस्य सम्पदं=वृद्धिं, कर्तुं नशक्ताः=न समर्था भवन्ति। भावस्य शुभफलाय भावेशस्य शुभभावगतेन बलिना भवेन चावश्यकमितिभावः॥८॥

हिन्दी — भाव का स्वामी दुःस्थान (६-८-१२) में या शत्रुगृह में हो, अस्त हो या दुर्बल हो तो भावाश्रित ग्रह उसभाव को सम्पन्न करने में समर्थ नहीं होते हैं॥८॥

दुष्टस्थितो वाऽपि यदा नभोगः पापोरिनीचांशकसंयुतो यः।
स्वतुङ्गमित्रांशकराशियुक्तः शुभेक्षितो वा यदि शोभनः स्यात्॥९॥

संस्कृत — दुष्टेति। यः कश्चित् नभोगः=ग्रहः, यदा दुष्टस्थितः=अशुभभावगतः, अपि वा अरिनीचांशकसंयुतः=शत्रुराशिर्वानीचनवांशे स्थितो भवति, स पापः=पापफलदायको तथा स्वतुङ्गे=स्वोच्चे मित्रनवांशे राशौ च युक्तो शुभग्रहेक्षितो वा यदि भवेत्तदा शोभनः स्यात्॥९॥

हिन्दी — जो ग्रह दुष्टस्थान में स्थित हो अथवा शत्रुग्रह या नीचांश से संयुक्त हो वह पापफल देता है परन्तु यदि वह अपने उच्च या मित्र के नवांश या मित्र की राशि में स्थित होकर शुभग्रह से दृष्ट हो तो शुभफल देता है॥९॥

भावेशाक्रान्तराशीशे दुःस्थे भावस्य दुर्बलम्।
स्वोच्चमित्रस्वराशिस्थे भावपुष्टिं वदेद्बुधः ॥ १० ॥

संस्कृत — भावेशेति। भावेशाक्रान्तराशीशे=यस्य फलं विचार्यते तद्भावेशेनाक्रान्तो यो राशिस्तदीशे अर्थात् विचारणीयभावेशाधिष्ठितराशिपतौ दुःस्थे=षडष्टव्ययस्थे तदा भावस्य दुर्बलं=स्वल्पं फलम्। यदा भावेशाक्रान्तराशीशे ग्रहे स्वोच्चे, स्वमित्रराशौ, स्वकीयराशौ वा स्थिते सति तदा भावपुष्टिं बुधो वदेदिति भावः ॥ १० ॥

हिन्दी — विचारणीय भाव का स्वामी जहाँ बैठा हो उसराशि का पति दुष्टस्थान में हो तो वह भावफल को दुर्बल करता है। यदि वह अपने उच्च-मित्रराशि-स्वराशि में स्थित हो तो उसभाव की पुष्टि करता है, ऐसा विद्वान् लोग कहते हैं ॥ १० ॥

यद्भावलाभधनविक्रमराशियाता
यद्भावनाथसुहृदुच्चतदुच्चनाथाः ।
तद्भावपुष्टिबलमम्बरचारिणस्ते
कुर्वन्ति मूढरिपुनीचविवर्जिताश्चेत् ॥ ११ ॥

संस्कृत — यद्भावेति। यस्य भावस्याधिपस्यः मित्रग्रहाः, तदुच्चनाथाः=भात्रपतीनां उच्चराशयस्तत्पतयश्च यत्तद्भावात् लाभ-(११) धन-(२) विक्रम-(३) राशियाता=भावगता भवेयुस्तदा तद्भावस्य पुष्टिबलं तेऽम्बरचारिणो (ग्रहाः) कुर्वन्ति। यदि ते=उक्त ग्रहा मूढरिपुनीचविवर्जिताः=अस्तं गताः, शत्रुराशिगताः, नीचराशिगता वा न भवेयुस्तदेति फलं बोध्यम् ॥ ११ ॥

हिन्दी — भाव से ११। २। ३ स्थान में स्थितग्रह उस भावेश के मित्र या उसके उच्चस्थान के स्वामी हों और यदि वे अस्तङ्गत-शत्रुराशिस्थ या नीचस्थ नहीं हों तो उसभाव को पुष्ट बली बनाते हैं ॥ ११ ॥

भावांशतुल्यः खलु वर्तमानो भावोद्भवं पूर्णफलं विधत्ते।
भावोनके चाप्यधिके च खेटे त्रैराशिकेनात्र फलं विचार्यम् ॥ १२ ॥

संस्कृत — भावांशेति। भावांशतुल्यः=राशि-अंशादिमानेन यावत्प्रमाणको भावस्तत्तुल्येव वर्त्तमानो ग्रहस्तदा तद्भावोद्भवं पूर्णफलं खलु=निश्चयेन, विधत्ते=कुरूते। भावोनके=भावप्रमाणान्न्यूने, अधिके चापि ग्रहे सति तदा त्रैराशिकेनानुपातद्वारा फलं ज्ञेयम्। अर्थात् पूर्णे भावे विद्यमानो ग्रहस्तद्भावजन्यं पूर्णं फलं करोति। पूर्णभावादूने ग्रहे यावदनुपातागतं फलं तत्र न्यूनम् तथा पूर्णभावमानादधिके ग्रहे तत्रापि न्यूनमेव फलं वाच्यम्। परमत्रानुपात विधिना लब्धमितमिति ज्ञेयम्।

यथा केशवः (केशवीयजात. ३)—

शून्यं सन्धिषु भावगतेऽखिलं स्याद्भाव सन्ध्यन्तरे-
णाप्तं सन्धिखगान्तरं क्षयचयं भावाधिकेऽल्पे खभे॥ १२॥

हिन्दी — ग्रह यदि भाव के राशि अंश के बराबर होकर भाव में रहे तो उस भाव को वह पूर्णफल देता है। भाव से अल्प या अधिक यदि ग्रह हो तो त्रैराशिकविधि से फल का साधन करना चाहिये॥ १२॥

तनुभावफल —

शरीरवर्णाकृतिलक्षणानि यशोगुणस्थानसुखासुखानि।
प्रवासतेजोबलदुर्बलानि फलानि लग्नस्य वदन्ति सन्तः॥ १३॥

संस्कृत — इदानीं तनु (प्रथम) भावफलं विवक्षुः, तत्र प्रथम भावे किं किं विचारणीयमित्युच्यते। श्लोकस्तु स्पष्टार्थः॥ १३॥

हिन्दी — प्रथमभाव से शरीर का वर्ण, आकृति, लक्षण, यश, गुण, स्थान, सुख, दुःख, प्रवास, तेज और बल का विचार करना चाहिए, विद्वानों का ऐसा मत है॥ १३॥

नरश्चिरायुर्नृपपूजितः सुखी लग्ने भवेत्सौम्यगृहं यथा तथा।
लग्ने यदा स्वामिनिरीक्षिते धनी कुशाग्रबुद्धिः कुलकीर्तिवर्द्धनः॥ १४॥

संस्कृत — स्पष्टार्थः।

मतान्तरं वृहत्पाराशरे यथा— (२५/१)—

लग्नेशे लग्नगे हृष्ट पुष्टाङ्गश्च पराक्रमी।
मनस्वी चातिचपलो द्विभार्य परगोऽपि वा॥ १४॥

हिन्दी — लग्न में शुभराशि हो तो जातक दीर्घायु, राजपूजित और सुखी होता है। लग्न को यदि लग्नेश देखता हो तो जातक धनी, तीक्ष्णबुद्धि और कुल की कीर्ति में वृद्धि करने वाला होता है॥ १४॥

लग्नांशपाद्वीर्ययुतग्रहाद्वा तनुस्वरूपाकृतिलक्षणानि।
वर्णं वदेच्चान्द्रनवांशनाथाद्विलग्नभात्सर्वशुभाशुभानि॥ १५॥

संस्कृत — **लग्नांशपादिति**। लग्ने=जन्मलग्ने योंऽशको नवांशकस्तस्य यः अधिपतिस्तस्माद् वा तत्काले यो ग्रहो बलीयान् भवति तस्मात् जातस्य तनुस्वरूपाकृतिलक्षणानि बोध्यानि। यस्य ग्रहस्य यत्स्वरूपं, यादृगाकृतिश्च वर्त्तते तथैव तस्य जातस्यापि बोध्यम्।

चान्द्रनवांशनाथात्=चन्द्रो यस्मिन्नवांशे स्थितो भवेत्तन्नवांशाधिपतेः वर्णं जातस्य वर्णं वदेत्। ग्रहस्य यो वर्णः (२। १९) स एव जातकस्येति। विलग्नभात्

सर्वशुभाशुभानि=लग्नादिद्वादशभावराशयः कालपुरुषाङ्गे यत्र यत्रावस्थितो विद्यते (१।८) तत्र तत्राङ्गभागे शुभाशुभग्रहवशात् शुभाशुभानि वाच्यानि॥ १५॥

हिन्दी — आकृति स्वरूपादि लक्षणों को लग्न के नवांशपति से अथवा सर्वाधिक बलवान् ग्रह से विचारना चाहिए। चन्द्र के नवांशस्वामी से शरीर के रंग का तथा समस्त शुभ अशुभ को लग्न से विचारना चाहिए॥ १५॥

त्रिकोणकेन्द्रे यदि लग्ननाथे शुभान्विते शोभनवीक्षिते वा।
शुभग्रहागारगते बलाढ्ये चतुःसमुद्रान्तयशः समेति॥ १६॥

संस्कृत — त्रिकोण केन्द्रेति। शुभग्रहेण युक्ते दृष्टे वा लग्नेशः त्रिकोणे केन्द्रे (५।९।१।४।७।१०) वा गतः तथा शुभग्रहागारगते=शुभग्रहाणां गृहे गते बलाढ्यो भवेत्तदा जातो चतुस्समुद्रान्तं यशः=प्रतिष्ठां समेति=प्राप्नोति॥ १६॥

हिन्दी — लग्नेश त्रिकोण या केन्द्र में हो, शुभग्रह से युक्त हो, या शुभग्रह से दृष्ट हो या बलवान् होकर शुभग्रह की राशि में हो तो समस्त भूमंडल में जातक का यश होता है॥ १३॥

होराधिनाथे रिपुरन्ध्ररिःफे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा।
पापग्रहाणां भवनोपयाते जातोऽप्रकाशो भवतीह मर्त्यः॥ १७॥

संस्कृत — होराधिनाथे इति। होराधिनाथे=जन्मलग्नपतौ, त्रिक (६-८-१२) गते पापयुक्ते-पापदृष्टे वा पापगृहे याते तदा जातोऽप्रकाशो=अप्रसिद्धो अप्रतिष्ठो च भवति॥ १७॥

हिन्दी — यदि लग्नेश ६ - ८ या १२ में हो, पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो या पापग्रह के गृह में हो तो जातक यश-कीर्ति से हीन होता है॥ १७॥

कीर्तिस्थानपतौ विलग्नभवने जातः स्वयं कीर्तिमान्
वित्तस्थे तु विशेषकीर्तिसहितः स्वोच्चादिवर्गान्विते।
दुःस्थे चञ्चलयात्रया हततनुर्जातोऽथवा दुर्जनः
केन्द्रे कोणगते शुभग्रहयुते यात्रासुखं जायते॥ १८॥

संस्कृत — कीर्तिस्थानेति। कीर्तिस्थानपतौ=नवम (केषाञ्चिन्मते दशम) भावाधिपतौ, विलग्नभवने=जन्मलग्ने गते सति तदा जातो नरः स्वयं कीर्तिमान्=यशस्वी भवति, यदि कीर्तिस्थानपतौ, वित्तस्थे=द्वितीयभावगते, स्वकीयोच्चादिवर्गयुते च तदा जातो विशेषकीर्तिसहितः=चिरस्थायीकीर्तियुक्तो भवति। यदि कीर्तिपतौ दुःस्थे=षडष्टव्ययस्थे तदा जातः चञ्चलयात्रया (तीव्र-गतियानादिना) हततनुः=नष्टशरीरः, अथवा दुर्जनः भवति। यदा कीर्तिस्थानपतौ केन्द्रे कोणे वा गते शुभग्रहयुते च जातकस्य यात्रासुखं जायते।

कीर्ति विचारे नवम-दशम भावस्य ग्रहणं मतान्तरे दृश्यते। परमत्र कीर्ति विचार विषये दशमभावस्य ग्रहणे प्रमाण वचनम्—

फलदीपिका (१।१५)—

व्यापारास्पद मानकर्मजय सत्कीर्ति क्रतुं जीवनं।
व्योमाचार गुणप्रवृतिगमनान्याज्ञां च मेषूरणम्॥

तथा च सर्वार्थचिन्तामणौ (८।१)—

दशमात्प्रवृत्तिमाज्ञां कीर्तिवृष्टि प्रवासपूर्तादीनाम्।
मानं कर्म जीवं जानुस्थानं च निर्दिशेद्वासान्॥ १८॥

हिन्दी — कीर्तिभावेश (नवमेश) यदि लग्न में रहे तो जातक स्वयं कीर्तिमान् होता है। उच्चादि वर्ग से युक्त नवमेश यदि धनभाव में हो तो जातक विशेष कीर्तिवाला होता है। यदि दुष्टस्थान में हो तो तीव्रयात्रा से शरीर का नाश होता है, या जातक दुर्जन होता है। यदि नवमेश केन्द्र या कोण में हो और शुभग्रह से युक्त हो तो यात्रा में सुख प्राप्त होता है॥ १८॥

होरास्वामिनि पञ्चमे यदि सुतस्थानेशयुक्तेऽथवा
भाग्ये वा यदि भाग्यपेन सहिते लग्ने यशस्वी पिता।
भ्रातृस्थानपतौ विलग्नगृहगे तत्कारकभ्रातृपा-
वेकस्थौ बलशालिनौ च यदि वा तत्सोदरः कीर्तिमान्॥ १९॥

संस्कृत — **होरा** इति। होरास्वामिनि=जन्मलग्नेशे पञ्चमे स्थिते, अथवा सुतस्थानेशयुक्ते=पञ्चमेशेन सहिते भाग्ये=नवमगते वा भाग्यपेन=नवमेशेन सहिते लग्ने स्थिते सति तदा जातस्य पिता यशस्वी=कीर्तिमान् भवति। भातृस्थानपतौ= तृतीयेशे, विलग्नगृहगे=जन्मलग्नगते, तत्कारकभातृपौ=भातृकारकः (भौमः) भातृ-पश्च (तृतीयेशः) एकस्थौ=एकराशिगतौ बलशालिनौ च चेत्तदा तत्सोदरः=जातस्य सोदरो भ्राता कीर्तिमान् कीर्तियुक्तो भवति।

यथा नृसिंह (जा. सार दीप ४१।५)—

सहजपतौ लग्नगते वाग्वादी लम्पटः स्वजनभेदी।
सेवापरः कुमित्रः क्रूरवचा भवति पुरुषश्च॥ १९॥

हिन्दी — पञ्चमेश से युक्त लग्नेश यदि पञ्चम या नवम में हो, या नवमेश के साथ लग्न में हो तो जातक का पिता यशस्वी होता है। यदि तृतीयभाव का स्वामी लग्न में हो अथवा भ्रातृकारक और तृतीयेश दोनो हीं एकराशि में होकर बलवान् हों तो उसका सहोदर भाई कीर्तिमान होता है॥ १९॥

विद्याधिपे वा यदि चन्द्रसूनो लग्ने सुखे लग्नपसंयुते वा।
बलान्विते पापदृशा विहीने विद्यायशस्वी भवति प्रजातः॥ २०॥

संस्कृत — विद्या इति। विद्याधिपे=विद्याऽधिपतौ=द्वितीयेशे (द्वितीयभावाद् विद्याविचारः ११। ४९ श्लोके) वा चन्द्रसूनौ=बुधे, लग्ने=जन्मलग्ने, वा लग्नपसंयुते=लग्नेशेन सहिते, बलान्विते=बलयुक्ते सुखे=चतुर्थे, पापदृशा=पापग्रहदृष्ट्या विहीने च प्रजातः=जायमानो नरः, विद्यायुक्तो यशस्वी च भवति॥ २०॥

हिन्दी — द्वितीयेश अथवा बुध लग्न में या लग्नेश के साथ चतुर्थभाव में स्थित होकर बलवान हो और पापग्रह की दृष्टि से रहित हो तो जातक विद्यायुक्त व यशस्वी होता है॥ २०॥

धर्मोदयेशौ नवमोदयस्थौ धर्मोदयेशौ तनुधर्मगौ वा॥
सुरेन्द्रवन्द्येक्षितसंयुतौ चेत् समेति जातश्चिरकालभाग्यम्॥ २१॥

संस्कृत — धर्मोदये इति। धर्मोदयेशौ=नवमेशलग्नेशौ नवमोदयस्थौ=नवमेशो नवमे लग्नेशो लग्नेभवेताम् अथवा धर्मोदयेशौ तनुधर्मगौ=धर्मेशो लग्ने, लग्नेशो धर्मे च स्यातां तथाभूतौ चेद्यदि सुरेन्द्रवन्द्येन=गुरुणा ईक्षितौ संयुतौ वा तदा जातो चिरकालभाग्यं समेति अर्थात् यावज्जीवनं भाग्यवान् भवतीति तात्पर्यः॥ २१॥

हिन्दी — नवमेश और लग्नेश क्रमशः नवम व लग्न में रहें (नवमेश ९ में, लग्नेश लग्न में) या लग्नेश और नवमेश क्रम से ९ और लग्न में रहें (नवमेश लग्न में लग्नेश ९ में) दोनों बृहस्पति से देखे जाते हों या युक्त हों तो जातक बहुत समय तक भाग्यवान् रहता है॥ २१॥

अतुलभाग्यसुख योग —

लग्नाधिपस्य व्यये तदुच्चमित्रे सुहृत्तुङ्गखगेक्षिते वा।
तद्राशिगे वा यदि मित्रखेटे तस्य स्थितिर्जन्म वसुंधरायाम्॥ २२॥

संस्कृत — लग्नाधिपेति। लग्नाधिपस्य=जन्मलग्नराशिपतेः व्ययगे=द्वादशे गते तदुच्चमित्रे=लग्नाधिपस्वोच्चे मित्रगृहे वा सति तत्र सुहृत्तुङ्गखगेक्षिते =लग्नेशः मित्रग्रहेण तुङ्गगतग्रहेण चेक्षिते वा तद्राशिगे=लग्ने वा जन्मराशौ मित्रखेटे=लग्नेशस्य मित्रग्रहे सति तदा तस्य जातस्य स्थितिः=जीवनयापनं जन्मवसुन्धरायां=यत्र प्रदेशे (क्षेत्रे) जन्म तत्र भवतीत्यर्थः॥ २२॥

हिन्दी — लग्नेश के स्थान से १२ वें स्थान में उसकी उच्चराशि या मित्र की राशि हो अथवा मित्र या उच्चस्थग्रह से देखा जाता हो या लग्नेश का मित्रग्रह जन्मराशि या लग्न में हो तो उसकी जीविका प्राप्ति जन्मभूमि में ही होती है॥ २२॥

लग्नेशाद्व्ययपे विलग्नपरिपौ नीचेऽथवा दुर्बले
जातो याति विदेशमिष्टदनुजाचार्येण दृष्टे यदि॥

तत्रैव स्थितिरन्त्यपे रविकरछन्ने विलग्नाधिपा-
दल्पग्रामचरो बलिन्यपि धनग्रामाधिवासो भवेत् ॥ २३ ॥

संस्कृत — लग्नेशाद्व्ययपे=लग्नपतिर्यत्र स्थिते तत्स्थानाद्यो द्वादशो भावस्तदीशे, विलग्नपरिपौ=लग्नेशस्य शत्रुग्रहे, नीचे=नीचराशिगते, अथवा दुर्बले बलरहिते सति, यदि दृष्टेदनुजाचार्येण=शुक्रेण दृष्टे सति तदा जातो विदेशं=अन्यदेशं याति। यदा विलग्नाधिपाल्लग्नेशादन्त्यपे=द्वादशेशः रविकरच्छन्ने=सूर्येण सहास्तङ्गते तदा तत्रैव जन्मक्षेत्रे स्थितिर्भवति, तथा स जातः अल्पग्रामचरः=लघुग्रामवासी भवति। विलग्नाधिपादन्त्यपे बलिनि=बलयुक्ते सति तदा जातः धनग्रामाधिवासः= धनधान्य-युक्तग्रामस्य वासी भवति ॥ २३ ॥

हिन्दी — लग्नेश से बारहवें स्थान का स्वामी लग्नेश का शत्रु हो और यदि वह नीचराशि में हो या दुर्बल हो तथा उसे शुक्र देखता हो तो जातक विदेश में निवास करता है। यदि लग्नाधीश से द्वादशस्थान का स्वामी सूर्य के किरणों से अस्त हो तो जातक उसी जगह स्थित रहकर छोटे ग्रामों में निवास करता है। यदि वह (द्वादश का स्वामी) बलवान् हो तो शहरों में उसका निवास होता है ॥ २३ ॥

होरेशाद्व्ययपे विलग्नभवनात् केन्द्रत्रिकोणस्थिते
मित्रस्वोच्च गृहोपगे शुभयुते पार्श्वद्वये मानवः।
चेतोरम्यमहीचरो दिविचराचार्येन्दु शुक्रेक्षिते
दिव्यक्षेत्रमुपैति जन्मधरणी वासस्तदर्थे रिपौ ॥ २४ ॥

संस्कृत — होरेश इति। होरेशाद् व्ययपे=लग्नेशः यत्र स्थितः तस्माद् व्यय स्थानस्य पतिः विलग्नभवनात्=लग्नराशेः केन्द्रत्रिकोणे (१।४। ७।१०।५।९) स्थिते, तथा स्वमित्रराशि स्वराशि स्वकीयोच्चराशिमुपगते पार्श्वद्वये =तस्मादुभयत्र (द्वितीये द्वादशे च) शुभयुते सति तदा जातो मानवः चेतोरम्यमहीचरः =मनोरमभूमिचरो अत्यन्त सुन्दरस्थलवासी भवति ॥ २४ ॥

यदि दिविचराचार्येन्दु शुक्रेक्षिते=बृहस्पति-चन्द्र-शुक्रैः दृष्टे सति तदा दिव्यक्षेत्रं=तीर्थादि धार्मिक स्थानं उपैति=प्राप्नोति। तदर्थे=लग्नधिपात् यः द्वादशेशः तत्रतः अर्थे=द्वितीयेस्थाने रिपौ=शत्रुग्रहे (व्ययेशस्य) विद्यमाने सति तदा जन्मधरणीवासः=यस्मिन् प्रदेशे जातस्य जन्म तस्मिन प्रदेशे निवसति ॥ २५ ॥

हिन्दी — लग्नेश के स्थान से व्ययाधीश केन्द्र या कोण में स्थित हो, मित्रग्रह की राशि में या अपने उच्च में हो, अथवा उसके दोनो तरफ शुभग्रह हों तो जातक रमणीय भूमि में निवास करता है। यदि उसके द्वितीय तथा षष्ठस्थान पर बृहस्पति, चन्द्रमा और शुक्र की दृष्टि हो तो जातक जन्मभूमि में निवास करता है तथा दिव्यस्थान को प्राप्त होता है ॥ २४ ॥

विदेशभाग्यं चरभे विलग्ने चरे तदीशे चरखेटदृष्टे।
स्थिते स्वदेशे बहुभाग्ययुक्तः स्थिर ग्रहैर्भूरिधनान्वितः स्यात्॥ २५॥

संस्कृत — चरभे=मेषकर्कतुलामकर राशौ, विलग्ने तदीशे=लग्नेशे, चरे=चरराशौ स्थिते, चरखेटदृष्टे=चरराशिस्थित ग्रहेण दृष्टे जातस्य, विदेशभाग्यं=विदेशे भाग्योदयं भवेत्। स्थिरेलग्ने स्थिरे लग्नेशे च स्वदेशे बहुभाग्ययुक्तो भवेत्। तस्मिन् स्थिरग्रहैः=स्थिरराशिगतग्रहै(लग्नेशः)र्दृष्टे सति जातो भूरिधनान्वितो बहुधनैश्वर्ययुतो भवति॥ २५॥

हिन्दी — लग्न चरराशि (१-४-७-१०) हो, लग्नेश चरराशि में हो और उसे चरराशिस्थ ग्रह देखते हों तो जातक का भाग्योदय विदेश में होता है। जन्मलग्न स्थिर राशि (२-५-८-११) हो, लग्नेश स्थिरराशि में हो और स्थिर राशिस्थग्रह से दृष्ट हो तो जातक अपने देश में ही बहुत भाग्य तथा धन से युक्त होता हैं॥ २५॥

होराधीशे पापखेटे रिपुस्थे पापक्षेत्रे भानुपुत्रेण युक्ते।
शूद्रप्रायो राहुणा केतुना वा जातश्चाण्डालोऽथवा नीचतुल्यः॥ २६॥

संस्कृत — **होराधीशे** इति। होराधीशे=लग्नेशे, पापखेटे=पापग्रहे, रिपुस्थे=पष्ठभावगते, भानुपुत्रेण=शनिना युक्ते, पापक्षेत्रे=पापग्रहराशौ स्थिते सति तदा जातो शूद्रप्रायो=असंस्कृतोभवति। इदृग्योगे लग्नेशे राहुणा केतुना वा युते सति तदा जातो नरः चाण्डालो अथवा नीचतुल्य=आचारणहीन समो भवतीति॥ २६॥

हिन्दी — यदि पापग्रह लग्नेश होकर शत्रु (६) स्थान में हो और पापग्रह की राशि में शनि के साथ हो तो जातक शूद्र प्रकृति का होता है। यदि राहु या केतु से युक्त पापग्रह लग्नेश हो जाय तो जातक चाण्डाल वा नीच के समान हो जाता है॥ २६॥

लग्नाधिपे शोभनराशियुक्ते बलोपयाते तनुपुष्टिमेति।
लग्नस्थखेटे रिपुनीचभागे दुःस्थानपे देहसुखं न याति॥ २७॥

संस्कृत — सरलार्थः स्पष्टार्थश्च श्लोकः॥ २७॥

हिन्दी — यदि लग्नेश बलवान होकर शुभग्रह की राशि में हो तो उस जातक का शरीर हृष्ट पुष्ट होता है, लग्न में स्थितग्रह शत्रुराशि या नीचराशि के नवांश में हो अथवा वह लग्नस्थ ग्रह दुःस्थान का पति हो तो जातक को देहसुख नही होता है।

जैसे जातकलंकार में (२।२) कहा गया है—

देहाधीशः सपापो व्ययरिपुमृतिगो देह सौख्यं न स्यात्
जन्तोर्निजर्क्षे व्ययरिपुमृतपस्तत्फलस्यैव कर्ता।

मूर्तौ चेत्क्रूर खेटस्तदनु तनुपतिः स्वीयवीर्येण हीनः
नानातङ्काकुलः स्याद् व्रजति हि मनुजो व्यधिमाधिप्रकोपम्॥ २७॥

विलग्नदर्शी तनुपो विलग्नगस्त्रयोऽपि षष्ठाष्टमरिःफराशिपाः ॥
सपत्ननीचोपगताश्च दुर्बला यदि स्वपाके न फलं प्रकुर्युः ॥ २८॥

संस्कृत — विलग्नेति। विलग्नदर्शी=जन्मलग्नद्रष्टा, तनुपो=जन्मलग्नपतिः विलग्नगः=जन्मलग्नगतश्चेति त्रयोऽपि ग्रहाः यदि षष्ठाष्टमरिष्फराशिपाः=षष्ठाष्टमद्वादशभावपतयो भवेयुस्ते यदि सपत्ननीचोपगताः=शत्रुगृहगता नीचराशिगतास्तथा दुर्बला वा भवेयुस्तदा ते त्रयोऽपि ग्रहा स्वपाके=स्वस्वदशायां, फलं=स्वं स्वं फलं न प्रर्कुयुः अर्थात् इत्थम्भूता ग्रहा स्वफलदाने विफला भवन्तीति।

यथा मन्त्रेश्वरः (फलदीपिका १५। २७)—

लग्नेश्वरो यद् भवनेशयुक्तो यद्भावगतस्तस्य फलं ददाति।
भावे तदीशे बलभाजितेन भावेन सौख्यं व्यसनं बलोने॥ २८॥

हिन्दी — लग्न को देखनेवाला, लग्नेश व लग्न में स्थित ये तीनों ग्रह यदि छठे, आठवें और बारहवें भाव के स्वामी हों और शत्रुगृह-नीचस्थ या दुर्बल हों तो वे अपनी दशा में अपने फल को नहीं देते हैं।

इसयोग में लग्न को देखनेवाले तथा लग्न में रहने वाले यदि अधिकग्रह हों तो उनमें बली ग्रह को ही ग्रहण करना चाहिये॥ २८॥

लग्ने जलर्क्षे शुभखेचरेन्द्रैर्युक्ते तनोः स्थौल्यमुदाहरन्ति।
लग्नाधिपे तोयखगे बलाढ्ये सौम्यान्विते तत्तनुपुष्टिमाहुः॥ २९॥

संस्कृत — लग्ने इति। जलर्क्षे=जलचरराशिके (मक. मी. कर्क) लग्ने शुभखेचरेन्द्रैः=बुधगुरुशुक्रभिर्युक्ते जातस्य तनोः=शरीरस्य, स्थौल्यं=पीनत्वम् उदाहरन्ति=कथयन्ति। लग्नाधिपे=जन्मलग्नेशे तोयखगे=जलचर राशिगते, बलाढ्ये =बलैर्युक्ते, सौम्यान्विते=शुभग्रहयुक्ते चेत्तदा तत्तनुपुष्टिं=जातस्य देहपुष्टिं दैवज्ञा आहुरिति॥ २९॥

हिन्दी — यदि लग्न जलचर (४-१०-१२) राशि का हो और शुभग्रहों से युक्त हो तो जातक का शरीर स्थूल होता है। यदि लग्नेश बली होकर जलचरराशि में हो और शुभग्रह से युक्त हो तो उस जातक का शरीर पुष्ट होता है॥ २९॥

लग्नाधिपे नाशगते तु शुष्कराशौ तनोः कष्टमतीव कृच्छ्रम्।
लग्नांशपस्थांशपराशिनाथः शुष्कग्रहः स्यात्तनुशुष्कमाहुः॥ ३०॥

संस्कृत — लग्नाधिपे इति। लग्नेशे नाशगते=अष्टमगते तथा शुष्कराशौ=मेष-धनुः-तुला-सिंह राशि गते सति, तनोः=शरीरस्य, अतीवकृच्छ्रम्=कष्टं

व्याधियुक्तं फलं ज्ञेयम्। लग्नांशपस्थांशपराशिनाथः जन्मलग्ने यो नवांश उदितस्तन्नवांशपतिग्रहः यस्मिन्नवांशे स्थितः तन्नवांशराशिपतिर्ग्रहो यदि शुष्कग्रहः= ''निस्तोयभूतलचरक्रियचापतौलिकण्ठीरवा'' (१-९-७-५) राशिगतग्रहो भवेत्तदा जातस्य तनुशुष्कं=अस्थिमात्रावशेषं दैवज्ञा आहु।

शुष्कग्रहः=शुष्कराशिगतो ग्रहः, शुष्कराशयस्तु निस्तोयभूतलचरा क्रियचाप तौलिकण्ठीरवा (१। १५) इति॥ ३०॥

हिन्दी — यदि अष्टमभाव में शुष्कराशि (१-५-७-९) हो और उसमें लग्नेश हो तो जातक का शरीर अत्यन्त क्लेशयुक्त होता है। लग्नांशपति जहाँ हो उसका नवांशपति या उसराशि का स्वामी शुष्कग्रह हो तो जातक के शरीर का शुष्क होना कहा गया है॥ ३०॥

मध्यस्थे रिपुखेटयोस्तनुपतौ जातोऽरिभीतो भवेत्
केतौ लग्नगतेऽथवा फणिपतौ दुःस्थे विलग्नाधिपे।
तत्पाके तदरीशभुक्तिसमये वैकल्यमङ्गे वदेत्
लग्ने शत्रुपतौ फणिध्वजयुते देहव्रणं देहिनाम्॥ ३१॥

संस्कृत — मध्यस्थे इति। तनुपतौ=लग्नेशे, रिपुखेटयोः=शत्रुग्रहयोः, मध्यस्थे अर्थात् लग्नपतिर्यत्र राशौ भवेत् तस्मादुभयत्र (द्वितीये द्वादशे च) लग्नेशस्य शत्रुग्रहौ भवेतां तदा जातोऽरिभीतः=शत्रुभिः शङ्कितां भवति। केतौ फणिपतौ= राहौ वा लग्नगते, विलग्नाधिपे=लग्नेशे दुःस्थे=षडष्टव्ययस्थे सति, तत्पाके= लग्नेशस्यदशायां तदरीशभुक्तिसमये=लग्नेशात्पष्ठभावेशग्रहास्यान्तर्दशाकाले जातस्याङ्गे, वैकल्यं=कष्टं वदेत्। लग्ने शत्रुपतौ=षष्ठभावेशे, तस्मिन् फणिध्वजयुते =राहुकेत्वोः युक्ते सति तदा देहव्रणं=देहिनां शरीरे व्रणादिरोगो संजायते॥ ३१॥

हिन्दी — यदि लग्नेश अपने दो शत्रुग्रहों के मध्य में हो तो जातक को शत्रु से भय होता है। केतु वा राहु लग्न में हों और लग्नेश दुष्टस्थान में हो तो उसकी दशा में जब उसके षष्ठेश की अन्तर्दशा आवे तो जातक के अङ्ग (शरीर) में विकलता होती है। शत्रु (षष्ठभाव) स्थान का स्वामी लग्न में राहु या केतु से युक्त हो तो मनुष्य के शरीर में व्रण होता है॥ ३१॥

बलैर्विहीने यदि लग्ननाथे केन्द्रत्रिकोणे सति रोगभाक् स्यात्।
लग्नेश्वराधिष्ठितराशिनाथे दुःस्थानगे दुर्बलदेहवान् स्यात्॥ ३२॥

संस्कृत — सरलार्थोयं श्लोकः॥ ३२॥

हिन्दी — बल से हीन लग्नेश यदि केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक का शरीर कुछ रोगी होता हैं। लग्नेश जिसराशि में स्थित हो उसराशि का स्वामो यदि दुष्ट स्थान में हो तो जातक दुर्बल शरीरवाला होता है॥ ३२॥

सक्रूरो देहपो देहसौख्यहाऽन्त्यारिरन्ध्रगः।
सारीशे देहपे दुःस्थे लग्नस्थे वाऽथ रोगवान्॥ ३३॥

संस्कृत — सक्रूरो इति। सक्रूरो=क्रूरेण सहितो देहपः=लग्नपतिः, अन्त्यारिरन्ध्रगः=द्वादशषष्टाष्ठमगतः स्यात्तदा देहसौख्यहा=शरीरसुखनाशकरो, लग्नपतिः सारीशे=षष्ठभावेशेन सहिते, दुःस्थे=षष्ठेअष्टमे व्यये वा स्थिते, अथवा लग्नस्थे सति तदा जातो रोगवान् भवतीति॥ ३३॥

हिन्दी — यदि क्रूरग्रह से युक्त लग्नेश द्वादश, षष्ठ या अष्टमभाव में हो तो देहसौख्य नहीं होता है। लग्नेश षष्ठेश के साथ दुष्टस्थान में या लग्न में हो तो जातक रोगी होता है॥ ३३॥

लग्ने सपापे लग्नेशे बलहीनोऽपि रोगवान्।
लग्नेशे दुर्बले कोपि निर्व्याधिः केन्द्रकोणगे॥ ३४॥

संस्कृत — सरलार्थः॥ ३४॥

हिन्दी — यदि लग्न में पापग्रह हो, लग्नेश बलहीन हो तो जातक रोगवान और क्रोधी हो। यदि दुर्बललग्नेश क्रेन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो जातक व्याधि रहित अर्थात् निरोग होता है॥ ३४॥

देहेशस्थितराशीशे नाशगे दुर्बलो भवेत्।
भावेशाक्रान्तराशीशे दुस्थैर्भावाश्च दुर्बलाः॥ ३५॥

संस्कृत — देहेशेति। देहेशः=लग्नेशः यत्र स्थितो स्यात्तद्राशीशे ग्रहे यदि नाशगे=अष्टमभावगते सति तदा जातो दुर्बलः=बलहीनो भवेत्। भावेशाक्रान्तराशीशैः=तत्तद्भावपतयो यद्यद्राशिगता भवन्ति तत्तद्राशिस्वामिभिर्ग्रहैः, दुःस्थैः=षडष्टव्ययगतैः तदा तत्तद्भावा दुर्बलाः भवन्ति॥ ३५॥

हिन्दी — लग्नेश जिसराशि में स्थित हो उसका स्वामी यदि अष्टमभाव में हो तो जातक दुर्बल होता है। जिस किसी भी भाव का स्वामी जिसराशि में हो उस राशि का स्वामी यदि दुष्टस्थान में रहे तो वह भाव दुर्बल होता है॥ ३५॥

सर्पारयोर्बृहद्बीजो योगे वा सर्पमन्दयोः।
लग्ने कुजे नाभिगुल्फवृषस्थौल्यं समादिशेत्॥ ३६॥

संस्कृत — सर्पारयोरिति। राहुभौम अथवा सर्पमन्दयोः=राहुशनैश्चरयोर्योगे सति तदा जातो बृहद्बीजः=महावृषणः (अण्डकोषः) स्यात्। कुजे=भौमे लग्ने सति नाभिगुल्फव्रणस्थौल्यं=नाभिदेशे गुल्फ(घुटना)प्रदेशे कष्टं तथा वृषणे (कोषे) स्थूलत्वं समादिशेदिति॥ ३६॥

हिन्दी — राहु-मङ्गल के योग में बृहद्बीज (अण्डकोष) होता है, अथवा

राहु और शनि के योग में भी बृहद्बीज होता है। लग्न में मङ्गल हो तो नाभि व घुटनों में रोग तथा अण्डकोशवृद्धि की बिमारी होती है ॥ ३६ ॥

लग्नेशे यदि रिःफगे दिनकरस्थारातिनाथान्विते
जायावान् बहुरोगवान् कृशतनुः संरक्तगौरद्युतिः ।
लग्नर्क्षादरिनाथपेन च युते जातोऽसिताङ्गो यदा
साहौ लग्नपतौ तु वञ्चनविषाद्भीतिं समेति ध्रुवम् ॥ ३७ ॥

संस्कृत — लग्नेशे इति। लग्नेशे यदि रिष्फगे=द्वादशभावगते, दिनकरस्थारातिनाथान्विते=सूर्यः यत्र तिष्ठति, तस्मादरातिनाथेन=षष्ठेशेन सहिते सति जातो जायावान्=स्त्रीभिर्युक्तः, बहुरोगवान्=विविधरोगैर्युक्तः, कृशतनुः=क्षीणाङ्गयुक्तः, संरक्तगौरद्युतिः=रक्तान्वितगौरवर्णः। लग्नेशे लग्नार्क्षादरिनाथपेन=लग्नात् षष्ठभावपतिना च युते जातो नरः, असिताङ्गः=कृष्णवर्णः। यदा लग्नपतौ साहौ=राहुणा सहिते तदा तु जातः वञ्चनविषात्=वञ्चनया विषात्=गरलात्, भीति=भयं, (कपट व्यवहारेण)। ध्रुवं=निश्चयेन, समेति=प्राप्नोति ॥ ३७ ॥

हिन्दी — लग्नेश द्वादशभाव में हो और सूर्य से छठे भाव के स्वामी से युक्त हो तो वह जातक स्त्रीयुक्त, बहुतरोगवाला, कृशाङ्ग व रक्तमिश्रित गौर वर्णवाला होता है। यदि लग्नेश लग्न से शत्रुभाव के पति से युक्त हो तो जातक श्यामवर्ण का होता है। यदि राहु से युत लग्नेश हो तो निश्चय हीं छलकपट और विष का भय होता है।॥ ३७ ॥

लग्ने शुभे शोभनदृष्टियुक्ते बाल्यात् सुखं तन्नहि पापयोगात् ।
दुःखी भवेत्पापबहुत्वयोगे लग्ने तु बाल्यान्मरणान्तमाहुः ॥ ३८ ॥

संस्कृत — लग्ने इति। शुभे=शुभराशि लग्ने, शोभनदृष्टियुक्ते= शुभग्रहेण शुभग्रहैर्वाऽवलोकिते तदा जातः बाल्यात्=बालावस्थात् सुखं प्राप्नोति। यदि लग्ने पापयोगात्=पापग्रहयोगः, तदा तन्नहि=जातः सुखं न प्राप्नोति। लग्ने तु पाप बहुत्वयोगे=बहूनां पापानां योगे सति तदा जातो बाल्यान्मरणकालपर्यन्तम् दुःखी भवेदित्याहुः पूर्वैराचार्याः ॥ ३८ ॥

हिन्दी — लग्न में यदि शुभग्रह हो और उसपर शुभग्रह की दृष्टि भी हो तो बाल अवस्था से ही जातक सुखी होता है। यदि लग्न में पापग्रह का योग और दृष्टि हो तो जातक दुःखी होता है। लग्न में यदि बहुत पापग्रहों का योग हो तो बाल्यावस्था से मरणपर्यन्त वह दुःखी रहता है, ऐसा आचार्यों ने कहा है ॥ ३८ ॥

देवलोकांशके शुक्रे लग्नेशे गोपुरांशके ।
लग्ने शुभग्रहैर्दृष्टे मध्यान्ते सौख्यमाप्नुयात् ॥ ३९ ॥

संस्कृत — देवेति। शुक्रे यत्र तत्र देवलोकांशके (१।४५) गते, लग्नेशे यत्र तत्र गोपुरांशके (१।४६) सति, लग्ने शुभग्रहैर्दृष्टे=बुधगुरूशुक्रैर्दृष्टे सति जातो मध्ये अन्त्ये वयसि च सौख्यमाप्नुयात्=सुखं प्राप्यते ॥ ३९ ॥

हिन्दी — यदि शुक्र देवलोकांश में और लग्नेश गोपुरांश में हो तथा लग्न पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो जातक मध्य और अन्त्य अवस्था में सुखी होता है ॥ ३९ ॥

लग्ने शुभे धने पापे केन्द्रे पापसमन्विते ।
लग्नेश्वरोत्तमांशस्थे चादौ दुःखमतः सुखम् ॥ ४० ॥

संस्कृत — श्लोकः सरलार्थयुक्तः ॥ ४० ॥

हिन्दी — यदि लग्न में शुभग्रह हो, द्वितीय भाव में पापग्रह हो, केन्द्र में भी पापग्रह हो और लग्नेश उत्तमांश (३ स्ववर्ग) में हो तो जातक प्रथम अवस्था में दुःखी और उसके बाद सुखी होता है ॥ ४० ॥

लग्नेशे शुभराशिस्थे शुभग्रहनिरीक्षिते ।
गोपुरांशगते वाऽपि षोडशाब्दात्परं सुखम् ॥ ४१ ॥

संस्कृत — स्पष्टार्थः ॥ ४१ ॥

हिन्दी — लग्न में शुभराशि हो, शुभग्रह उसे देखता हो अथवा लग्नेश गोपुरांश में हो तो जातक को १६ वर्ष के बाद सुख होता है ॥ ४१ ॥

लग्नेशस्थांशनाथे तु केन्द्रकोणोच्चसंयुते ।
लाभे वा बलसंयुक्ते त्रिंशद्वर्षात्परं सुखम् ॥ ४२ ॥

संस्कृत — स्पष्टार्थः ॥ ४२ ॥

हिन्दी — लग्नेश जिस नवांश में हो उसका स्वामी यदि केन्द्र या त्रिकोण में रहे या अपने उच्चराशि का होकर अथवा बली अवस्था में एकादशभाव में रहे तो जातक ३० वर्ष के बाद सुखी होता है ॥ ४२ ॥

लग्ने रव्यादिसंदृष्टे पादशः फलमुच्यते ।
राजसेवी पितृधनो जलपण्यो महाधनः ॥ ४३ ॥
धार्मिकः स्थूलशिश्नः स्याद्विद्याशिल्पयशोऽन्वितः ।
राजपूज्यो व्रतयुतो वेश्यासक्तो धनी सुखी ॥ ४४ ॥
मन्ददृष्टे विलग्ने तु वृद्धस्त्रीको मली खलः ।
केनाप्यदृष्टं लग्नं चेद्राशिग्रहवशाद्वदेत् ॥ ४५ ॥

संस्कृत — **लग्ने** इति। रव्यादि संदृष्टे लग्ने सति तदा पादशः चरणक्रमेण फलमुच्यते।

रवि संदृष्टे लग्ने तदा जातः राजसेवीपितृधनश्च=राज्ञोऽमात्यः पैत्रिक-

धनयुक्तो, **चन्द्रसंदृष्टे** लग्ने जलपण्यो महाधनश्च=जलजन्तूनां (जलोद्भवानां) विक्रेता, बहुधनयुक्तश्च, **भौमेन** दृष्टे धार्मिकः स्थूलशिश्नश्च, **बुधेन** दृष्टे विद्याशिल्प-यशोऽन्वितः, **गुरुणा** दृष्टे राजपूज्यः व्रतयुतश्च, **शुक्रेण** दृष्टे वेश्यासक्तः, धनी, सुखी च, **मन्देन** (शनिना) दृष्टे युतः तु जातो वृद्धस्त्रीकः=वृद्धभार्यावान्, मली=मलिनशरीरः, खलः=पापात्मा च भवति, यदि चेल्लग्नं केनाप्यदृष्टं=केनचिद् ग्रहेणन न दृष्टं भवेत्तदा राशिग्रहवशात्=लग्नराशौ यो ग्रहस्तिष्ठति तद्वशात्तदुक्तं फलं वदेत्। ग्रहाभावे चन्द्राधिष्ठितराशौ ग्रहदृष्टिवशादुक्तं फलं बोध्यम्॥ ४३-४५॥

हिन्दी — लग्न पर यदि सूर्यादि ग्रह की दृष्टि हो तो उसका फल क्रमशः कहते हैं। **सूर्य की दृष्टि** हो तो राजसेवी और पितृधन से धनी, **चन्द्र की दृष्टि** हो तो जलचरों से अथवा जलीय रोजगार से धनी, **मङ्गल की दृष्टि** हो तो धर्मात्मा और स्थूल लिंगवाला हो, **बुध की दृष्टि** हो तो विद्वान शिल्पज्ञ तथा यशस्वी, **बृहस्पति की दृष्टि** हो तो राजा का पूज्य और व्रतयुक्त, **शुक्र की दृष्टि** हो तो वेश्या में आसक्त सुखी और धनी, **शनि की दृष्टि** हो तो वृद्धा स्त्रीवाला-मलिन और खलबुद्धि, यदि कोई भी ग्रह लग्न को न देखता हो तो लग्नस्थ ग्रह के वश अथवा चन्द्रस्थराशि के आधार पर फल कहना चाहिए॥ ४३-४५॥

लग्ने स्वामीक्षिते राजा तत्प्रियो वा धनी सुखी।
सौम्येक्षितेऽखिलं सौम्यं पापदृष्टे त्वशोभनम्॥ ४६॥
सुखी लग्ने द्व्यादिदृष्टे सर्वदृष्टे नृपो भवेत्।
लग्ने त्रयः शुभो राजा दुःखी पापग्रहत्रयम्॥ ४७॥

संस्कृत — लग्ने इति। लग्नेशेन इक्षिते लग्ने जातो राजा वा राजप्रियः धनी सुखी च भवति। लग्ने सौम्येक्षिते तदा अखिलं फलं शुभम्। पापदृष्टे तु अशोभनं फलं वाच्यम्। लग्ने द्विप्रभृतिभिर्ग्रहैर्दृष्टे जातः सुखी, सर्वैर्ग्रहैर्दृष्टे लग्ने तदा जातो नृपो=राजा भवति, लग्ने त्रयः शुभाः (बुधगुरुशुक्राः) चेद्भवेयुस्तदा जातो राजा वा राजतुल्यो भवति। यदि लग्ने पापत्रयं (मं.श.सू.) भवेत्तदा जातो दुःखी भवतीति भावः॥ ४६-४७॥

हिन्दी — लग्न को यदि लग्नेश देखता हो तो जातक राजा या राजा का प्रिय-धनी तथा सुखी होता है। लग्न को शुभग्रह देखता हो तो समस्त फल शुभ तथा पापग्रह देखता हो तो समस्त फल अशुभ होते हैं॥ ४६॥

लग्न को यदि दो ग्रह देखते हों तो जातक सुखी हो, सभी ग्रह देखते हों तो जातक राजा हो। लग्न में यदि तीन शुभग्रह हों तो जातक राजा के समान और यदि तीन पापग्रह हों तो दुःखी होता है॥ ४७॥

लग्नाधिपोऽतिबलवानशुभैरदृष्टः
केन्द्रस्थितः शुभखगैरवलोक्यमानः ।
मृत्युं विधूय विदधाति सुदीर्घमायुः
सार्द्धं गुणैर्बहुभिरूर्जितया च लक्ष्म्या ॥ ४८ ॥

संस्कृत — **लग्नाधिपो** इति। अतिबलवान्=पूर्वोक्तैर्बलैर्युक्तो लग्नाधिपः =लग्नपतिः केन्द्रस्थितः, अशुभैरदृष्टः, शुभखगैः=बुधगुरुशुक्र पूर्ण-चन्द्रैः दृश्यमानो भवेत्तदा मृत्युं=अरिष्ट मारकेशादि सूचितं मरणं विधूय=समाप्य सुदीर्घमायुः =चिरायुष्यं विदधाति=करोति। असौ न केवलं सुदीर्घायुः करोति अपितु दानजप-होमादिगुणैरुर्जितयोपार्जितया लक्ष्म्या श्रिया सार्द्धं सुदीर्घमायुः करोतीति भावार्थः ॥ ४८ ॥

हिन्दी — लग्नेश अत्यन्त बली होकर केन्द्र में रहे और उसे केन्द्रगत शुभग्रह देखते हों परन्तु पापग्रह नहीं देखते हों तो वह जातक अरिष्टों का संहार कर बहुत गुणों से उपार्जित राजलक्ष्मी के साथ दीर्घायु जीवन व्यतीत करता है ॥ ४८ ॥

द्वितीयभावफल—

वित्तं नेत्रं सुखं विद्या वाक्कुटुम्बाशनानि च ।
द्वितीयस्थानजन्यानि क्रमाज्ज्योतिर्विदो विदुः ॥ ४९ ॥

संस्कृत — इदानीं द्वितीयभावेन विचारणीयान्याह। वित्तं धनं, नेत्रं, विद्या, वाक्=वचन कुटुम्बाशनानि च कुटुम्बजनाः, भोजनश्च, द्वितीय-स्थानजन्यानि=द्वितीयभावात् क्रमशः विचारणीयानि इति ज्योतिर्विदो विदुः। एतेषां विषयाणां विचारो-द्वितीयभावात्कर्त्तव्य इत्यर्थः ॥ ४९ ॥

हिन्दी — धन-नेत्र-सुख-विद्या-वचन-कुटुम्ब और भोजन का विचार द्वितीयभाव से करना चाहिए ऐसा दैवज्ञों ने कहा है ॥ ४९ ॥

वित्तायोदयराशयः पतियुता वित्ताधिको जायते
लाभस्थौ धनलाभपौ निजसुहृत्तुङ्गादिगौ चेत्तथा ।
तद्वल्लाभधनाधिपौ तनुगतावन्योन्यमिष्टग्रहौ
लग्नेशे धनलाभराशिपयुते लग्ने बहुद्रव्यवान् ॥ ५० ॥

संस्कृत — अधुना द्वितीयभावफलान्युच्यन्ते। वित्तायोदयराशयः= द्वितीयैकादश प्रथमभावाः यदि पतियुताः=स्वस्वस्वामियुतास्तदा जातो वित्ताधिकः= बहुधनयुतो जायते। धनलाभपौ=द्वितीयैकादशेशौ, लाभस्थौ=एकादशभावगतौ, निजसुहृत्तुङ्गादिगौ=स्वगृह-मित्रगृह स्वकीयोच्चराश्यादिगतौ (आदि शब्दसंकेतेन तत्तद्द्रेष्काणनवांशादयो बोध्याः) भवेतां, चेत् तथा=वित्ताधिको भवति।

लाभधनाधिपौ=लाभेशधनेशौ, तनुगतौ=लग्नगतौ, अन्योन्यं=परस्परम्, इष्टग्रहौ= मित्रग्रहौ भवेतां तदा तद्वद् वित्ताधिको भवति। लग्नेशे धनलाभराशिपयुते= द्वितीयैकादशेशौ सहिते लग्ने गते अर्थात् तनुभावे लग्नेश-द्वितीयेश-लाभेशानां संयोगे जातो बहुद्रव्यवान् भवति॥५०॥

हिन्दी — यदि द्वितीयभाव-लग्न और लाभभाव अपने-अपने स्वामी से युक्त हों तो जातक अत्यन्त धनवान होता है। धनेश और लाभेश स्वराशि-मित्रराशि या उच्चराशि के होकर लाभभाव में रहें तो जातक अधिक धनवान् होता है। लाभेश व धनेश लग्न में हों और दोनों परस्पर मित्र हों तो भी जातक अधिक धनी होता है। लग्नेश-धनेश और लाभेश एक साथ होकर लग्न में स्थित हों तो ऐसे योग में भी जातक बहुत धनवाला होता है॥५०॥

धनोपयातः प्रथमोऽथ दर्शी ग्रहो द्वितीयो धनपस्तृतीयः ।
तत्पाकभुक्तौ धनलाभमेति क्रमेण तत्कारकवर्गमूलात् ॥५१॥

संस्कृत — अथ प्रथमः धनोपयातः=द्वितीयभावगतो ग्रहः, द्वितीय अर्थदर्शी=द्वितीयभावद्रष्टा ग्रहः, तृतीयः धनपः=धनभावस्य स्वामी ग्रहः, इति त्रयो ग्रहा धनप्रदायका भवन्ति। तत्पाकभुक्तौ=एतद् त्रयस्य दशाऽन्तर्दशाकाले तत्कारकवर्गमूलात्=धनकारको ग्रहो यत्र वर्गे स्थितो तद्राशिमूलात् तद्राशि-सञ्चारप्रदेशात्, (१, १०-१२ श्लो०) धनलाभमेति=जातकः धनं प्राप्नोति ॥५१॥

हिन्दी — धनभाव में जो ग्रह हो वह, जो ग्रह द्वितीयभाव को देखता हो वह, जो ग्रह द्वितीयभाव का स्वामी हो वह, इन तीनों ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा में वे अपने-अपने कारक (वर्ण-रत्न-पदार्थ) द्वारा धन का लाभ कराते हैं॥५१॥

धनस्थे यदि लग्नेशे निधिमान् बलसंयुते ।
दुर्बले पापसंयुक्ते वञ्चनादिफलं वदेत् ॥५२॥

संस्कृत — स्पष्टार्थः॥५२॥

हिन्दी — यदि बलवान् लग्नेश धनभाव में हो तो जातक धनवान होता है और यदि निर्बल व पापग्रह से युक्त हो तो ठग-तस्कर आदि से धननाश होता है॥५२॥

धनस्थितः पापदृशा समेतः सपत्ननीचार्ककराभितप्तः ।
तत्पाकभुक्तौ धननाशमाहुः स गोचरे दुष्टबलान्विते वा ॥५३॥

संस्कृत — स्पष्टार्थः॥५३॥

हिन्दी — धनराशि में स्थित ग्रह को पापग्रह देखता हो और वह शत्रुराशि में या नीचराशि में या अस्त हो तो उसकी दशा-अन्तर्दशा में धन का नाश होता है, अथवा गोचर में वह बलवान् दुष्टग्रह से युक्त हो तो भी धन का नाश होता है॥५३॥

कुटुम्बभावे बहुखेटयुक्ते धनप्रदव्योमचरे बलाढ्ये ।
स्वतुङ्गमित्रस्वगृहोपगे वा धनं समेत्यामरणान्तमाहुः ॥ ५४ ॥

संस्कृत — श्लोकं स्पष्टार्थयुक्तम् ॥ ५२-५४ ॥

हिन्दी — धनस्थान बहुत ग्रहों से युक्त हो और धनप्रद (कारक) ग्रह बलवान हों या अपने उच्चस्थान या मित्रगृह में प्राप्त हों तो वह जातक मरणपर्यन्त धनसे परिपूर्ण रहता है ॥ ५४ ॥

वित्ताधीशे सोदरेशेन युक्ते लग्नस्थे च भ्रातृवित्तं समेति ।
मातृस्थानस्वामिना मातृवित्तं यद्भावेशेनान्वितस्तद्धनं स्यात् ॥ ५५ ॥
वित्ताधीशे लग्नगे लग्ननाथे वित्तस्थाने यत्नतो वित्तमेव ।
यद्भावस्थौ लग्नवित्तेश्वरौ चेतन्मूलात्तु द्रव्यवृत्तिर्नराणाम् ॥ ५६ ॥

संस्कृत — वित्ताधीशे=धनभावेशे, सोदरेशेन=तृतीयेशेन युक्ते लग्नस्थे च भवेत्तदा भ्रातृवित्तं=सोदरधनं समेति=प्राप्नोति। धनेशे मातृस्थानस्वामिना=चतुर्थेशेन युक्ते, लग्ने च गते तदा मातृवित्तम्=मातृधनं प्राप्नोति। धनभावेशः यद्भावेशेन समन्वितो भवेत्तद्धनं जातस्य भवति। वित्ताधीशे लग्नगते, लग्नेशे वित्तभावगते तदा जातस्यायत्नतः=अनायासात् वित्तं=धनं प्राप्नोति। लग्नवित्तेश्वरौ=लग्नेशधनेशौ संयुक्तौ यद्भावस्थौ चेत् तन्मूला तु नराणां द्रव्यवृत्तिः=धनप्राप्तिर्भवति। अर्थात् लग्नेशधनेशौ लग्नगतौ तदाऽऽत्ममूलादेव स्वप्रयासेन, तृतीयपतौ चेत्तदाभ्रातृवर्गेण, चतुर्थगतौ चेत्तदा मित्रतो मातृतो वा धनाप्राप्तिर्भवतीति ज्ञेयम् ॥ ५५-५६ ॥

हिन्दी — द्वितीयेश यदि तृतीयेश के साथ लग्न में स्थित हो तो वह जातक भाई का धन प्राप्त करता है। यदि धनेश मातृस्थानेश (सुखेश) के साथ लग्न में रहे तो जातक माता से धन प्राप्त करता है। धनेश जिस भावेश के साथ लग्न में रहे उसीका धन जातक प्राप्त करता है।

धनेश लग्न में हो तथा लग्नेश धनभाव में हो तो अनायास ही धनप्राप्त होता है। लग्नेश और धनेश जिसभाव में हों उसीभाव के मनुष्यों से धनप्राप्त होता है। जैसे तृतीय में भाई से, चतुर्थ में माता से इत्यादि ॥ ५५-५६ ॥

चन्द्रः कुटुम्बभवने शुक्रेण निरीक्षितः प्रदाता च ।
सौम्ये शुभसंदृष्टे स एव धनवान् सदा ज्ञेयः ॥ ५७ ॥

संस्कृत — **चन्द्र** इति। चन्द्रः कुटुम्बभवने=द्वितीयभावे चन्द्रो स्थितः, शुक्रेण निरीक्षितः=शुक्रेण दृष्टो भवेत्तदा जातो नरः प्रदाता=अन्येभ्योऽर्थदाता भवति। अत्र "च" इङ्गितेन कारकेनापि शुक्रः बोध्यम्। कुटुम्बभवने स्थिते सौम्ये=बुधे,

शुभसंदृष्टे=गुरुशुक्रयोः एकेन द्वाभ्यां वा दृष्टे स जातः सदा धनवान् अर्थात् यावज्जीवनं धनी भवेदित्यर्थः ॥ ५७ ॥

हिन्दी — चन्द्र द्वितीयभाव में हो और शुक्र से देखा जाता हो तथा धनकारक ग्रह भी शुक्र से दृष्ट हो तो जातक धनी होता है। यदि धनभावगत बुध शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो वह जातक सदा धनवान रहता है ॥ ५७ ॥

अर्थाधीशो यत्र संस्थो नराणां तस्मिन्काले तत्र वृद्धिर्विशेषात् ।
तद्भागे च द्रव्यलाभं करोति वक्रेऽसौ चेद्दिक्षु सर्वार्थसिद्धिः ॥ ५८ ॥

संस्कृत — **अर्था** इति। अर्थाधीशः=धनेशः, यत्र संस्थो=यस्मिन्भावे, तिष्ठति, तस्मिन् काले (धनेशस्य पाकसमये) तत्र=तद्भावदिशि, विशेषाद् वृद्धिर्भवति। तद्भागे=तद्भावस्य दिग्भागे द्रव्यलाभमपि करोति। असौ धनेशो वक्रगतिश्चेत्तदा दिक्षु=सर्वासु दिक्षु जातस्य सर्वार्थसिद्धिर्भवेदिति। दिक् ज्ञानं चक्रानुसारेण ज्ञेया। यथा लग्नादित्रय पूर्वदिशि चतुर्थादित्रयमुत्तरदिशि, सप्तमादित्रय पश्चिमदिशि, कर्मादित्रय याम्यादिशि।

यथा सारावल्यां (५ । ३६)—

आशाबल समुपेतो नयति स्वदिशं नभश्चरः पुरुषम् ।
नीत्वा वस्त्र विभूषण वाहन सौख्यान्वितं कुरुते ॥ ५८ ॥

हिन्दी — जन्मचक्र में धनेश जहाँ हो उसभावराशि की भूमि में धनेश की दशा-अन्तर्दशा आने पर विशेष वृद्धि होती है। वह राशि जिसदिशा की हो उस दिशा में द्रव्यलाभ होता है। वह ग्रह यदि वक्री हो तो सब दिशाओं में अर्थसिद्धि होती है ॥ ५८ ॥

धनेशे लाभसंयुक्ते लाभेशे धनलाभगे ।
तावुभौ केन्द्रगौ वापि धनवान् ख्यातिमान् भवेत् ॥ ५९ ॥
धनेशे व्ययषष्ठस्थे व्ययेशे वित्तगेऽथवा ।
लाभेशे रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा धननाशनम् ॥ ६० ॥
व्ययभावगते जीवे वित्तेशे बलवर्जिते ।
शुभैरनीक्षिते लग्ने वित्तनाशं वदेद्बुधः ॥ ६१ ॥
लग्नेशे धनराशिस्थे धनेशे लाभराशिगे ।
लाभेशे वा विलग्नस्थे निध्यादिधनमाप्नुयात् ॥ ६२ ॥
लग्नायधनभाग्येशाः परमोच्चांशसंयुताः ।
वैशेषिकांशगा वापि तदा कोटीश्वरो भवेत् ॥ ६३ ॥

दिनेश्वरकरछन्ने धनेशे नीचराशिगे ।
पापषष्ट्यंशसंयुक्ते ऋणग्रस्तो भवेन्नरः ॥ ६४ ॥

संस्कृत — **धनेशे** इति। धनेशवशात्फलविचारं अत्रोक्तम्। श्लोकाः स्पष्टार्थाः सरलार्थाश्च ॥ ५९-६४ ॥

हिन्दी — धनेश लाभस्थान में हो और लाभेश धनस्थान में या लाभस्थान में हो या दोनों (धनेश-लाभेश) क्रेन्द्र में हों तो जातक धनवान और विख्यात होता है।

धनेश व्यय या षष्ठस्थान में हो,-व्ययेश धनस्थान में हो अथवा लाभेश षष्ठ-अष्टम या व्ययस्थान में हो तो तीनों स्थिति में जातक के धन का नाश होता है।

गुरू व्ययभाव में हो, धनेश निर्बल हो और शुभग्रह लग्नस्थान को न देखता हो तो जातक के धन का नाश होता है।

लग्नेश धनस्थान में हो, धनेश लाभस्थान में हो अथवा लाभेश लग्न में हो तो खजाना आदि से जातक को धनप्राप्त होता है।

लग्न-एकादश-द्वितीय-नवमभाव के स्वामी अपने परम उच्चांश में स्थित हों या अपने-अपने वैशेषिकांश (अ० १।४६) में प्राप्त हों तो जातक करोड़पति होता है।

धनेश नीचराशि में हो, अस्त हो और पापषष्ट्यंश में हो तो मनुष्य ऋणग्रस्त होता है ॥ ५९-६४ ॥

नेत्रविचार—

शुक्रेन्दुनयनाधीशैरेकस्थैस्तु निशान्धकः ।
सूर्यशुक्रविलग्नेशैरदृश्यैर्मध्यलोचनः ॥ ६५ ॥

संस्कृत — अधुना नेत्रविचारम्-**शुक्रेन्द्विति**। शुक्रेन्दुनयनाधीशैः=शुक्र-चन्द्र-द्वितीयभावेशैः, एकस्थैः=यत्र कुत्रैकस्थानस्थितैः, तदा जातो निशान्धकः= रात्र्यन्धो भवति (रात्रौ विलोकनाक्षमो)। सूर्यशुक्रविलग्नेशैः=सूर्य-शुक्र-लग्नेशैः त्रिभिर्ग्रहै अदृश्ये स्थिताः="लग्नस्य यावन्तो भागा भोग्यास्तावन्त एव सप्तमभावस्य भुक्तभागाः अस्तंगता भवन्ति" एतदन्तर्गतेषु भावेषु भागा अदृश्या भवन्ति, तेन जातः मध्यलोचनः=साधारणदृष्टियुतो भवति।

यथा जातकालङ्कारे (२।१६)—

शुक्रः सेन्दुस्त्रिकस्थो जनुषि निशिनरः प्राप्नुयादन्धकत्वं।
जन्मान्धः सार्कशुक्रस्तनुभवनपतिः स्यात्तदानीं मनुष्यः ॥ ६५ ॥

हिन्दी — शुक्र-चन्द्र और धनेश यदि तीनों एकत्र हों तो जातक निशांध (रात में न दिखे) होता है। सूर्य-शुक्र और लग्नेश अदृश्यार्ध में हों तो जातक मध्यम दृष्टिवाला होता है ॥ ६५ ॥

विलग्नवित्तास्ततपःसुतेशा रिपुव्ययच्छिद्रगृहोपयाताः ।
विलग्नसम्बन्धकरः सितश्चेद्विलोचनाभावमुपैति जातः ॥ ६६ ॥

संस्कृत — नेत्राभावयोगम्—**विलग्नेति**। लग्नेश-धनेश-सप्तमेश-नवमेश-पञ्चमेशाः, यदि षडष्टव्ययभावगता भवेयुः, तथा सितः=शुक्रः यदि विलग्नसम्बन्धकरः=लग्नगतो वा लग्नदर्शी भवेत्तदा जातो विलोचनाभावं=नेत्राहित्यमन्धत्वमिति, उपैति=प्राप्नोति ॥ ६६ ॥

हिन्दी — लग्नेश-धनेश-सप्तमेश-नवमेश और पञ्चमेश यदि षष्ठ-द्वादश या अष्टमभाव में स्थित हों और शुक्र लग्न से सम्बन्ध करता हो तो जातक नेत्रहीन होता है ॥ ६६ ॥

सितः सुतारीशयुतो विलग्ने नरेशकोपान्नयनप्रमादः ।
धनेशभौमौ यदि लग्नयातौ कर्णस्य रोगं कथयन्ति तज्ज्ञाः ॥ ६७ ॥

संस्कृत — सितः=शुक्रः, सुतारीशयुतः=पञ्चमेश षष्ठेशाधिपतौ सहितः, विलग्ने=जन्मलग्ने गतो भवेत्तदा नरेशकोपात्=राज्ञः क्रोधात्, नयनप्रमादः=नयनयोर्नाशः अस्मिन् योगे ज्ञेयम्। कश्चिद्राजा क्रोधवशाज्जातस्यनेत्रं विनाशयती। कर्णरोगमाह। धनेश भौमौ=द्वितीयभावेशमङ्गलौ यदि लग्नयातौ=जन्मलग्नगतौ तदा जातस्य कर्णस्य रोगं=बधिरत्वादि, तज्ज्ञाः=विद्वासंः कथयन्ति ॥ ६७ ॥

हिन्दी — यदि शुक्रं पञ्चमभावेश एवं षष्ठेश के साथ लग्न में रहे तो राजा के क्रोध से नेत्र में विकार होता है। यदि धनेश और भौम दोनों ही लग्न में रहें तो जातक को कान का रोग होता है ऐसा विद्वान् लोग कहते हैं ॥ ६७ ॥

शन्यारयोगे गुलिकेन युक्ते नेत्रेश्वरे तत्र तु नेत्ररोगः ।
नेत्रे यदा पापबहुत्वयोगे यमेन दृष्टे सति रुग्णनेत्रः ॥ ६८ ॥

संस्कृत — अधुना नेत्ररोगमाह—नेत्रेश्वरे=द्वितीयभावेशे, गुलिकेन युक्ते, तत्र शन्यारयोगे=यत्र गुलिको तत्रैव द्वितीयेश-शनि-भौमाः भवेयुस्तदा जातस्य नेत्ररोगः। नेत्रे=द्वितीयभावे पापबहुत्वयोगे=बहूनां पापग्रहाणां योगे, यदा यमेन=शनिना दृष्टे सति तदा जातो रूग्णनेत्रः=नेत्ररोगी भवति ॥ ६८ ॥

हिन्दी — द्वितीयेश यदि शनि-मङ्गल तथा गुलिक से युक्त हो तो जातक को नेत्ररोग होता है, धनभाव में बहुत पापग्रहों का योग हो और उनको शनि देखता हो तो जातक्र आँख का रोगी होता है ॥ ६८ ॥

नेत्रेश्वरे शुभयुते शुभदृष्टियुतेऽथवा ।
शुभांशकस्थिते वापि शुभदृक् स नरो भवेत् ॥ ६९ ॥

संस्कृत — इदानीं सुनेत्रयोगमाह-**नेत्रेश्वर** इति। नेत्रेश्वरे=द्वितीयेशेः

शुभग्रहेण युते वा दृष्टे अथवा शुभग्रहस्य नवांशस्थितो भवेत् तदा स नरः शुभदृक्=सुनयनो भवेत्।

यथा जातकालंकारे (२।१८)—

नेत्रे पृष्ठे च शुक्रो दिनकरतनयः स्यात्पदे चाधरे चेत्
केतुर्वा सैंहिकेयस्तदनु तनुपति भौमवित्क्षेत्र संस्थः।
आभ्यामालोकितः सम्भवति हि कतिचित् स्थानगो वा तदानीं
नेत्रे रोगी नरः स्यात् प्रवरमतियुतैर्होरिकैरेव ज्ञेयम्॥ ६९॥

हिन्दी — धनेश शुभग्रह से युक्त हो या उसे शुभग्रह देखते हों तो, अथवा वह शुभग्रह के नवांश में हो तो उस जातक की सुन्दर दृष्टि होती है॥ ६९॥

मुख विचार—

जातोऽसौ सुमुखः शुभे धनगते तुङ्गादिवर्गान्विते
तद्भावे यदि सौम्यवर्गसहिते वाक्सिद्धिमेति ध्रुवम्।
आज्यस्पर्शमुपैति वित्तगृहगे भौमे दिनेशेक्षिते
जातः कोद्रवमुख्यभुग् धनगते राहौ च पापेक्षिते॥ ७०॥

संस्कृत — अधुना मुखविचारम्। **जात** इति। शुभे=शुभग्रहे, धनगते=द्वितीयस्थानगते तुङ्गादिवर्गान्विते=स्वकीयोच्चराश्यादिवर्गगते सति, असौ=ईदृग्योगे जातो नरः सुमुखः=सुन्दरमुखो, यदि तद्भावे=द्वितीय भावे सौम्यवर्ग सहिते=शुभग्रहसम्बन्धिवर्गेण सहिते तदा जातः ध्रुवं=निश्चयेन वाक्सिद्धिं= वाक्पटु, एति=प्राप्नोति। अस्मिन्योगे जातस्य वचनं (भविष्यवाणी) सत्यं भवतीत्यर्थः। भौमे=मङ्गले, वित्तगृहगे=द्वितीयभावगते, दिनेशेन=सूर्येण दृष्टे सति तदा जातः आज्यस्पर्शं=धृतस्पर्शं मुखं प्राप्नोति। अर्थादस्मिन्योगे जातो नरः सर्वदा स्वमुखं (खुश्क चर्म) घृतसिक्तं करोति। राहौ धनभावगते तत्र पापग्रहेक्षिते च जातो नरः कोद्रवमुख्यभुक् कुत्सित् खाद्यपदार्थ भोक्ता भवति।

यथा सर्वार्थ चिन्तामणौ (३।१४८)—

मन्दात्मजेन सहिते यदि भूमिपुत्रे वित्तेथवा निधनराशिमुपागते वा।
तेनैव वीक्षितयुते धनभावनाथे त्वाज्यस्पृशादिनियतं प्रवदन्ति तज्ज्ञा॥ ६०॥

हिन्दी — धनस्थान में स्थित शुभग्रह यदि उच्चादि वर्ग में हों तो जातक का मुख सुन्दर होता है। यदि धनभाव में शुभग्रहों का वर्ग हो तो जातक वाक्सिद्धि वाला होता है। धनभाव में मङ्गल को सूर्य देखता हो तो आज्यस्पर्श (शुष्क मुखचर्म) रोग होता है। धनभावगत राहु को यदि पापग्रह देखता हो तो वह जातक अभक्ष्य अन्न खानेवाला होता है॥ ७०॥

लग्नास्तार्थाष्टमस्थेऽर्के भौमे वाऽन्यतरेक्षिते ।
आज्यस्पर्शोऽग्निभीतिर्वा सम्भवन्ति मसूरिकाः ॥ ७१ ॥

संस्कृत — लग्नास्तेति। अर्के=सूर्ये भौमे=मङ्गले, लग्नास्तार्थाष्टमस्थे=लग्न-सप्तम-द्वितीयाष्टमभावगते, वा=अथवा, अन्यतरेक्षिते=उक्तभावगतत्वे अन्योन्यदृष्टे अर्थात् सूर्यो भौमेन, वा भौमः सूर्येणदृष्टे सति तदा आज्यस्पर्शः=घृतस्पर्शमुखः, अर्थात् सूर्यः भौमेन, भौमः सूर्येण वा, तदा आज्यस्पर्शः =घृतस्पर्शमुखः, अग्निभीतिः=अनलदग्धचिह्नयुक्तः, वा मसूरिका=व्रणचिन्हानि जातस्य मुखे सम्भवन्तीति ॥ ७१ ॥

हिन्दी — लग्न-सप्तम-द्वितीय या अष्टम में सूर्य अथवा मङ्गल हों, या दोनों एक दूसरे को देखते हों तो मुँह में घृतस्पर्श रोग या अग्निदग्धचिह्न या मसूरिका (छोटे-छोटे घावों के चिह्न) रोग होता है ॥ ७१ ॥

पापैर्युते मुखस्थाने दुर्मुखः पापवीक्षिते ।
क्रोधाननो नरः पापी तदीशे गुलिकान्विते ॥ ७२ ॥

संस्कृत — पापैरिति। मुखस्थाने=द्वितीयस्थाने, पापैर्युते=पापग्रहैः (बहुवचनाद् द्व्याधिकैः पापैः) युते, तस्मिन् केनचित्पापग्रहेण, वीक्षिते=दृष्टे च सति, तदा जातो नरो दुर्मुखः=कुत्सितमुखयुक्तो भवति। तदीशे=द्वितीयभावेशे गुलिकेन युते तदा जातो नरः, क्रोधाननः=कुपितमुखाकृतिः, पापी=कुकर्मकृच्च भवति ॥ ७२ ॥

हिन्दी — धनस्थान में पापग्रह हो तो जातक कुरूप होता है। धनभावगत पापग्रह को पापग्रह ही देखते हों तो जातक क्रोधान्वित मुखयुक्त होता है और उस स्थान का स्वामी यदि गुलिक से युक्त हो तो जातक पापी होता है ॥ ७२ ॥

प्रफुल्लवदनः श्रीमान् केन्द्रे मुखपतौ यदा ।
स्वोच्चस्वमित्रवर्गस्थे सुमुखः शुभवीक्षितः ॥ ७३ ॥

संस्कृत — स्पष्टार्थः सरलार्थश्च ॥ ७३ ॥

हिन्दी — धनस्थान का स्वामी यदि केन्द्र (१-४-७-१०) में हो तो जातक विकसितमुख (हँसमुख) और सौन्दर्ययुत होता है। धनेश अपने उच्च में या अपने मित्रवर्ग में होकर यदि शुभग्रह से देखा जाता हो तो जातक सुन्दर होता है ॥ ७३ ॥

वाग्भावेशे राहुयुक्ते च दुःस्थे राहुक्रान्तस्थाननाथान्विते च ।
पाके भुक्तौ तस्य दन्तामयः स्यात् जिह्वारोगं तारकासूनुभुक्तौ ॥ ७४ ॥

संस्कृत — वागिति। वाग्भावेशे=द्वितीयभावेशे राहुयुक्ते, च=अथवा दुःस्थे=षडष्टव्ययस्थे राहुक्रान्तस्थाननाथान्विते, च=अथवा राह्वधिष्ठितराशिपतिना

युक्ते सति तस्य=धनेशस्य, पाकें=दशायाम् भुक्तौ=अन्तर्दशायाञ्च, दन्तामयः= दन्तरोगः जायते, तथा तारकासूनोर्बुधस्य भुक्तौ=अन्तर्दशायां जिह्वारोगं (निनावा रोगं) भवेदिति॥ ७४॥

हिन्दी — द्वितीयेश राहु से युक्त होकर यदि दुष्टस्थान में हो या राहु से युक्त राशिस्थान के स्वामी के साथ हो तो उन दोनों की दशा-अर्न्तदशा में जातक को दन्तरोग होता है और बुध की अर्न्तदशा में जीभ में (छाला-फुंसी) रोग होता है॥ ७४॥

राहुद्वितीयगृहपौ सहजेशयुक्तौ
जातः समेति गलरोगमतीव कष्टम्।
दारिद्र्यदौ शशिरवी धनराशियातौ
भौमार्कजौ सकलरोगकरौ भवेताम्॥ ७५॥

संस्कृत — राह्विति। राहुद्वितीयगृहपौ सहजेशेन युक्तौ=अर्थात् राहुः- द्वितीयभावेशः-तृतीयभावेशश्चेति त्रयो ग्रहा एकत्रस्था भवेयुस्तदा जातो गलरोगम्=कण्ठरोगं समेति=प्राप्नोति येन रोगेण अतीव कष्टं=दुखं भवेदिति। शशिरवि=चन्द्रसूर्यो, धनराशियातौ=द्वितीयभावगतौ स्यातां तदा, दारिद्र्यदौ अर्थात् नरो दरिद्रो भवतीत्यर्थः। भौमार्कजौ=मंगलशनौ द्वितीयभावगतौ तदा जातस्य सकलरोगकरौ=विविधरोगकरौ भवेतामिति॥ ७५॥

हिन्दी — राहु-द्वितीयेश और तृतीयेश तीनों एक साथ हों तो जातक गलरोग (कण्ठ) से विशेष कष्ट पाता हैं। शनि और सूर्य दोनों धनभाव में हों तो दरिद्रता देते हैं। मङ्गल और शनि द्वितीय में हों तो सब रोगों को उत्पन्न करनेवाले होते हैं॥ ७५॥

वाग् विचार—

वाग्भावेशे गुरुयुते नाशस्थे मूकता भवेत्।
दोषकृन्नतु सर्वत्र स्वोच्चस्वर्क्षगतो ग्रहः॥ ७६॥

संस्कृत — वागिति। वाग्भावेशे=द्वितीयभावेशे, गुरुयुते=बृहस्पतिना युते, नाशस्थे=अष्टमभावगते तदा जातस्य मूकता=वाणीराहित्यं भवेत्, अर्थात् अस्मिन्योगे जातो नरो मूको भवति। अत्रापवादम्-सर्वत्र=कथितेषु योगेषु यदि तत्तद्योगकारको ग्रहो स्वोच्च स्वर्क्षगतो भवेत्तदा तु दोषकृन्न भवति॥ ७६॥

हिन्दी — वाग्भावेश अर्थात् द्वितीयेश गुरु से युक्त होकर अष्टमस्थान में रहे तो जातक मूक होता है। अपने राशि में या अपनी उच्चराशि में स्थितग्रह कहीं भी दोषकर नहीं होता है॥ ७६॥

वागीशबुधजीवेषु निर्विद्यो नाशगेषु च ।
केन्द्रेषु ते त्रिकोणे वा स्वर्क्षे वा विद्ययाऽन्वितः ॥ ७७ ॥

संस्कृत — वागीशबुधजीवेशु=द्वितीयेश-बुध-गुरुषु, नाशगेषु=अष्टमभावगतेषु, तदा जातो नरः, निर्विद्यः=विद्या रहितो जडो भवति। ते=वागीशबुधजीवाः केन्द्रेषु=१।४।७।१०, वा त्रिकोणे=५।९, वा स्वर्क्षे=स्वस्वराशौ स्युस्तदा जातो विद्ययाऽन्वितः=विद्या युक्तो भवति ॥ ७७ ॥

हिन्दी — द्वितीयेश-बुध और बृहस्पति यदि अष्टमभाव में हों तो जातक विद्या से रहित होता है। यदि ये योगकारक ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में रहें या अपने गृह में रहें तो जातक विद्या से युक्त होता है ॥ ७७ ॥

द्वितीये दुर्बले सौम्ये द्वन्द्वयुद्धहतो भवेत् ।
जीवार्थेशौ दुर्बलौ वा पवनव्याधिमान्नरः ॥ ७८ ॥

संस्कृत — द्वितीये इति। दुर्बले=बलहीने, सौम्ये=बुधे, द्वितीये=द्वितीयभावगते सति तदा जातो नरः, द्वन्द्वयुद्धहतः=मल्लयुद्ध हतो म्रियते इत्यर्थः। अथवा जीवार्थेशौ=गुरुर्द्वितीयभावस्वामिश्च, दुर्बलौ=बलहीनौ भवेतां तदा जातो नरः पवनव्याधिमान्=वातव्याधियुक्तो भवति ॥ ७८ ॥

हिन्दी — द्वितीयभाव में निर्बल शुभग्रह हो तो जातक द्वंद्व (हाथा पाई के) युद्ध में मरता है। बृहस्पति और द्वितीयेश यदि दुर्बल हों तो जातक वातव्याधि से युक्त होता है ॥ ७८ ॥

वाक्स्थानपे देवपुरोहितेन युक्ते यदा नाशगते तु मूकः ।
वाक्स्थानपे सौम्ययुते त्रिकोणे केन्द्रस्थिते वा शुभदे च वाग्मी ॥ ७९ ॥

संस्कृत — वागिति। गुरुणा सहितो धनेशो यदि नाशगते=अष्टमभावगतः तदा जातो मूको भवतीति (७६ श्लो० द्र०)। यदि धनेशः शुभग्रहयुतः त्रिकोणे वा केन्द्रे स्थितः स्यादथवा कस्मिंश्चिच्छुभदे=शुभराशौ स्थिते सति तदा जातो वाग्मी=वाक्पटुः भवति ॥ ७९ ॥

हिन्दी — धनेश और बृहस्पति यदि अष्टमस्थान में हों तो जातक मूक होता है। द्वितीयेश यदि शुभग्रह से युक्त होकर त्रिकोण में हो या केन्द्र में हो या शुभस्थान में हो तो जातक वाचाल होता है ॥ ७९ ॥

वागीशस्थांशके सौम्ये स्वोच्चे वा शुभवीक्षिते ।
पारावतांशके वापि वाग्मी पटुतरो भवेत् ॥ ८० ॥

संस्कृत — वागीशेति। वागीशः=द्वितीयेशः यत्र नवांशे स्थितस्तस्य नवांशस्य स्वामिग्रह अर्थात् द्वितीयेशाधिष्ठितनवांशपति सौम्ये=शुभग्रहे, स्वोच्चे

वा शुभवीक्षिते, वा पारावतांशके गते अर्थात् द्वितीयभावस्वामीः शुभग्रहो भूत्वा स्वकीयोच्चराशौ स्थितः, वा यत्र कुत्र स्थितः परं शुभग्रहेण दृष्टः, वा स्वपारावतांशगतो भवेत् तदा जातो वाग्मी=वचनपटुः, पटुतरः=अतीव विदुषोश्च भवेदिति ॥ ८० ॥

हिन्दी — द्वितीयभाव का स्वामी जिस नवांश में हो उसका स्वामी यदि शुभग्रह हो अपने उच्च में हो या शुभग्रह से दृष्ट हो या परावतांश में हो तो जातक वाचाल और चतुर होता है ॥ ८० ॥

केन्द्रत्रिकोणगे जीवे शुक्रे स्वोच्चं गते यदि ।
वाग्भावपेन्दुपुत्रे वा गणितज्ञो भवेन्नरः ॥ ८१ ॥

संस्कृत — इदानीं विद्याविचारम्। **केन्द्रेति**। जीवे केन्द्रत्रिकोणगे १।४।७।१०।५।९ भावगते, शुक्रे स्वोच्चं=मीनराशिगते, अथवा यदि वाग्भावपेन्दुपुत्रे=द्वितीयेशं भूत्वा बुधे स्वोच्चं=कन्याराशिं गते तदा नरः गणितज्ञः= गणितशास्त्रज्ञात्ता भवेत् ॥ ८१ ॥

हिन्दी — बृहस्पति केन्द्र या त्रिकोण में हो और शुक्र यदि उच्चस्थान में हो अथवा द्वितीयेश बुध उच्च का हो तो वह जातक गणितज्ञ होता है ॥ ८१ ॥

गणितज्ञो भवेज्जातो वाग्भावे भूमिनन्दने ।
ससौम्ये बुधसंदृष्टे केन्द्रे वा सोमनन्दने ॥ ८२ ॥

संस्कृत — **गणितज्ञो** इति। ससौम्ये=केनचिच्छुभग्रहेण सहिते, भूमिनन्दने=भौमे, वाग्भावे=द्वितीय भावे गते बुधेन सन्दृष्टे, वा सोमनन्दने=बुधे केन्द्रे गतवति तदा जातः गणितज्ञो भवेत् ॥ ८२ ॥

हिन्दी — भौम द्वितीयभाव में शुभग्रह के साथ हो और उसे बुध देखता हो अथवा बुध केन्द्र में हो तो जातक गणित का ज्ञाता होता है ॥ ८२ ॥

वाग्भावपे रवौ भौमे गुरुशुक्रनिरीक्षिते ।
पारावतांशके वापि तर्कयुक्तिपरायणः ॥ ८३ ॥

संस्कृत — अधुना तार्किकयोगम्। **वाग्भावपे** इति। सूर्यो वा भौमो यदि वाग्भावपः=द्वितीयेशो भवेत् तत्र गुरूशुक्राभ्याम् निरीक्षिते, अपि वा सूर्य भौमयोरन्यतरे यत्र तत्र स्वपारावतांशगते (१/४६) सति तदा जातः तर्कयुक्तिपरायणः=तर्कशास्त्र-न्यायशास्त्र ज्ञाता भवति ॥ ८३ ॥

हिन्दी — सूर्य या मङ्गल यदि द्वितीयेश होकर गुरु और शुक्र से देखे जाते हों या अपने पारावतांश में हों तो वह जातक तर्कशास्त्र (न्याय) में दक्ष होता है ॥ ८३ ॥

सम्पूर्णबलसंयुक्ते गुरौ तद्भवनेश्वरे ।
दिनेशभृगुसंदृष्टे शाब्दिकोऽयं भवेन्नरः ॥ ८४ ॥

संस्कृत — अधुना वैयाकरणयोगम्। **सम्पूर्णेति**। तद्भवनेश्वरे=द्वितीय भावेशौ गुरौ=बृहस्पतौ (गुरूर्द्वितीयेशस्तदा वृश्चिक-कुम्भ लग्नं स्यादिति) सम्पूर्ण बलयुक्ते=पूर्वोक्त बलान्युक्तानि तैः बलैः संयुक्ते, दिनेशभृगुसन्दृष्टे= सूर्यशुक्राभ्याम-वलोकिते सति तदा नरः शाब्दिकः=शब्दशास्त्राभ्यासी अयं=अस्मिन्योगे जातो नरः वैयाकरणः भवेदिति ॥ ८४ ॥

हिन्दी — सम्पूर्ण बल से संयुक्त गुरु यदि द्वितीयभाव का स्वामी (द्वितीयेश) हो और उसको सूर्य-शुक्र देखते हों तो वह जातक व्याकरणशास्त्र का पण्डित होता है ॥ ८४ ॥

विद्या विचार—

वेदान्तपरिशीली स्यात्केन्द्रकोणे गुरौ यदि ।
बुधेन भृगुणा दृष्टे शनौ पारावतांशके ॥ ८५ ॥

संस्कृत — वेदान्तज्ञयोगम्। **वेदान्तेति**। गुरौ केन्द्रकोणे= १।४।७।१०।५।९ भावगते, यदि बुधेन, भृगुणा=शुक्रेण च दृष्टे, शनौ च पारावतांशके (स्वकीयावर्गषट्के) तदा जातः वेदान्तपरिशीली=वेदान्तशास्त्र-विवेचनशीलो भवतीति ॥ ८५ ॥

हिन्दी — यदि बृहस्पति केन्द्र या त्रिकोण में हो, उसे बुध व शुक्र देखते हों और शनि यदि अपने पारावतांश में हो तो जातक वेदान्ती होता है ॥ ८५ ॥

षट्शास्त्रवल्लभः केन्द्रे जीवे दानवपूजिते ।
सिंहासने गोपुरांशे वाग्भावस्यांशपे बुधे ॥ ८६ ॥

संस्कृत — षट्शास्त्रज्ञयोगम। **षडिति**। जीवे=गुरो, केन्द्रे १।४।७।१० भावगते, दानवपूजिते=शुक्रे, सिंहासने=स्वकीयवर्गपञ्चके, वाग्भावस्यांशपे= द्वितीयभावगतनवांशराशिपौ, बुधे=बुधो द्वितीयभावगत-नवांशपतिर्भूत्वा गोपुरांशे= स्वकीयावर्गचतुष्के सति (१।४५) तदा जातः, षट्शास्त्रवल्लभः=शिक्षा-कल्प-व्याकरण-ज्योतिष-निरूक्त-छन्दःशास्त्राणां विवेचको भवति ॥ ८६ ॥

हिन्दी — यदि बृहस्पति केन्द्र में हो, शुक्र अपने सिंहासनांश में हो और बुध द्वितीयभाव में स्थित नवांश का पति होकर अपने गोपुरांश में रहे तो वह जातक षट्शास्त्री होता है ॥ ८६ ॥

कुटुम्बविचार—

उपजीव्य नरं सर्वे तदीशे गोपुरांशके।
वर्द्धन्ते मुदितास्तस्य भृगौ पारावतांशके ॥ ८७॥

संस्कृत — इदानी कुटुम्बविचारमाह। तदीशे=द्वितीयभावेशः, गोपुरांशे= स्ववर्गचतुष्टये, भृगौ=शुक्रे पारावतांशके=स्ववर्गषट्के सति तदा तस्य जातस्य, सर्वे=आश्रिताः (सम्बन्धिनः) नरमुपजीव्य=तदाश्रिता जीवनं यापयन्तो जनाः मुदिताः=प्रसन्नचित्ताः भूत्वा वर्द्धन्ते=समृद्धिमुपगच्छन्तीति ॥ ८७ ॥

हिन्दी — द्वितीयेश गोपुरांश में हो और शुक्र यदि पारावतांश में हो तो उस जातक के सभी आश्रित उससे पालित होकर बड़ी प्रसन्नता से वृद्धि करते हैं अर्थात् वह जातक अपने आश्रितों का पालक होता है ॥ ८७ ॥

जायाकुटुम्बगृहपौ सितपापयुक्तौ
दुःस्थौ च तत्समकलत्रहरौ भवेताम्।
वित्ताधिपे बलवति स्मरराशिपे वा
तुङ्गादिगे यदि समेति कलत्रमेकम् ॥ ८८ ॥

संस्कृत — **जायेति**। जाया-कुटुम्बगृहपौ=सप्तमेश-द्वितीयेशौ, सित-पापयुक्तो=शुक्रेण पापग्रहेण च युक्तौ, दुःस्थौ=षडष्टव्ययगतौ च भवेत् तदा तत्समकलत्रहरौ=तत्सङ्ख्यामित भार्या नाशकौ भवेताम्। अर्थात् सप्तमेशो वा द्वितीयेशो यदि शुक्रेण वा केनचिदेकेन पापेन युक्तो दुःस्थानगतश्च स्यात् तदैकस्त्रीनाशको भवेत् यदि ग्रहद्वयेन युक्तस्तदा स्त्रीयुगलं नाशयेत् एवं प्रकारेण ग्रहसंख्यापरत्वेन स्त्रीनाशयोगो वाच्यः।

वित्ताधिपे=द्वितीयेशे, वा स्मराशिपे=सप्तमेशे बलवति सति यदि तुङ्गादिगे=स्वकीयोच्च स्वमूलत्रिकोण-स्वराशि स्ववर्गादिके गते तदा जातः एकंकलत्रं=एकाभार्या, समेति=प्राप्नोति। अस्मिन् योगे एकभार्या भवति ॥ ८८ ॥

हिन्दी — सप्तमेश और द्वितीयेश यदि शुक्र एवं पापग्रह (जितने) से युक्त हों तथा दुष्टस्थान में हों तो उसमें जितने पापग्रह हों उतने ही स्त्रियों का नाश होता है। द्वितीयेश या सप्तमेश बलवान् होकर यदि उच्चादि में स्थित हों तो एक स्त्री होती है ॥ ८८ ॥

भुक्तिस्थानपतौ सितेन्दुसहिते लग्नादिकेन्द्रस्थिते
रौप्यं पात्रमुपैति काञ्चनमयं जीवेन्दुशुक्रान्विते।
भुक्तिस्थानपदेहपौ शनियुतौ लौहादिपात्रं वदेद्
भौमे पापनिरीक्षिते धनगते जातः कदन्नादिभुक् ॥ ८९ ॥

संस्कृत — भुक्तिस्थानपताविति। भुक्तिस्थानं=द्वितीयभावः, तत्पतौ=द्वितीयभावेशे सितेन्दुसहिते=शुक्रचन्द्राभ्यां सहिते, लग्नादिकेन्द्रं (१।४।७।१०) स्थिते तदा जातः, रौप्यं=रजतमयं पात्रं=भण्डादिकं उपैति=प्राप्नोति। भुक्तिस्थानपतौ लग्नादिकेन्द्रस्थिते तथा जीवेन्दुशुक्रान्विते=गुरुचन्द्रशुक्रैः सहिते सति तदा काञ्चनमयं=सौवर्ण पात्रं=भाण्डादिकं प्राप्नोति। अथभुक्तिस्थानपदेहपौ=द्वितीयेश लग्नेशौ यदि शनियुतौ स्यातां तदा जातः लौहादिपात्रं प्राप्नोति। भौमे=मङ्गले, पापनिरीक्षते=शनिसूर्यक्षीणचन्द्रावलोकिते, धनगते=द्वितीयभावगते सति तदा जातः कदन्नादिभुक्=कुत्सितान्नकुफलादिभोक्ता भवति॥ ८९॥

हिन्दी — द्वितीयभाव का पति यदि शुक्र और चन्द्र के साथ लग्नादि केन्द्र-स्थान में स्थित हो तो जातक को चाँदी का पात्र मिलता है। द्वितीयेश यदि बृहस्पति और शुक्र से युक्त हो तो जातक को सोने का पात्र प्राप्त होता है। द्वितीयेश और लग्नेश यदि शनि से युक्त रहें तो जातक लोहे का पात्र प्राप्त करता है। पापग्रह से दृष्ट मंङ्गल यदि धनभाव में हो तो जातक कदन्न भोजन करता है॥ ८९॥

भोजन विचार—

बह्वाशनो भुक्तिपतौ सपापे
दावाग्निदण्डायुधकालभागे ।
नीचांशके पापनिरीक्षिते च
शुभैर्न दोषः सहितेक्षिते वा ॥ ९०॥

संस्कृत — **बह्वाशनो** इति। भुक्तिपतौ=द्वितीयेशे, सपापे=पापग्रहेण सहिते, दावाग्नि-दण्डायुध कालानां (षष्ट्यंशे) भागे स्थिते सति तदा जातः, बह्वाशनः=बृहद्भुक् भवति। भुक्तिपतौ (द्वितीयेशे) नीचांशके=स्वकीयनीचराशि-नवांशपतिना निरीक्षिते तदा तथैव फलम् (बह्वाशनः) भवेत्। उक्तयोगेऽपि, शुभैः=शुभग्रहैः, सहितेक्षिते=संयुक्ते वा दृष्टे न दोषः अर्थाद्बह्वाशनो न भवेदिति॥ ९०॥

हिन्दी — द्वितीयभाव का स्वामी यदि पापग्रहों से युक्त होकर दावाग्नि-दण्डायुध-काल के षष्ट्यंश भाग में हो अथवा नीचांश में होकर पापग्रह से देखा जाता हो तो जातक अधिक भोजन खानेवाला होता है॥ ९०॥

भुक्तिस्थाने शुभयुते तदीशे शुभसंयुते ।
शुभग्रहेण संदृष्टे सुखभुक् स नरो भवेत् ॥ ९१॥

संस्कृत — **भुक्तिस्थाने** इति। भुक्तिस्थाने=द्वितीयस्थाने शुभयुते, तदीशे=द्वितीयेशे शुभसंयुते=शुभग्रहेण सहिते एवं भूते केनचिच्छुभग्रहेण सन्दृष्टे तदा स जातो नरः सुखभुक्=सुखेन भोजनकर्त्ताभवति॥ ९१॥

हिन्दी — द्वितीयस्थान में शुभग्रह हो और द्वितीयेश भी शुभग्रह से युक्त हो तथा उसे शुभग्रह देखते हों तो वह जातक सुख से भोजन करनेवाला होता है ॥ ९१ ॥

परान्नभुक् तदीशेऽपि नीचशत्रुसमन्विते ।
नीचखेचरसंदृष्टे तद्दूषणपरायणः ॥ ९२ ॥

संस्कृत — तदीशे=द्वितीयेशे, नीचशत्रुसमन्विते=स्वनीचे वा शत्रुग्रहेण समन्विते तदा अपि=निश्चयेन परान्नभुक्=अन्यान्नभक्षणरतो भवति। द्वितीयेशे यदा नीचखेचरसन्दृष्टे=नीचराशिस्थित ग्रहेणावलोकिते तदा जातः तद्दूषणपरायणः= भुक्तान्नपदार्थदूषणशीलः अर्थात् यद्भक्ष्यते तदेव दूष्यते इति भावार्थः ॥ ९२ ॥

हिन्दी — द्वितीयभाव का स्वामी यदि नीचस्थान में या शत्रुस्थान में हो तो जातक पराया अन्न खानेवाला होता है। द्वितीयेश यदि नीचग्रह से दृष्ट हो तो वह भक्षित अन्न के दूषण (निन्दा) में तत्पर रहता है ॥ ९२ ॥

कालोचिताशनो भुक्तिनाथे लग्नेशवीक्षिते ।
पापग्रहेण संदृष्टे नीचांशादियुते न तु ॥ ९३ ॥

संस्कृत — कालोचितेति। भुक्तिनाथे=द्वितीयभावेशे, लग्नेशवीक्षिते=लग्नपतिना दृष्टे तदा जातो कालोचिताशनः=यस्मिन् काले यदशनमुचितं अर्थात् समयानुकूल भोजनकृद् भवति। तस्मिन्भुक्तिनाथे=द्वितीयेशे पापग्रहेण सन्दृष्टे नीचांशादियुते च तथा तु न अर्थात् जातो नरो कालोचिताशनो न भवति ॥ ९३ ॥

हिन्दी — धनेश यदि लग्नेश से देखा जाता हो और पापग्रह से न देखा जाता हो तो जातक समयानुकूल भोजन करनेवाला होता है। यदि द्वितीयेश पापग्रह से दृष्ट हो और अपनी नीचराशि नवांश से युक्त हो तो जातक असमय में खानेवाला होता है ॥ ९३ ॥

स्वल्पाशी रुचिकामः स्याद् भुक्तिनाथे शुभे गृहे ।
स्वोच्चे शुभेन संदृष्टे मृद्वंशादिसमन्विते ॥ ९४ ॥

संस्कृत — रुचिकामः=रुचिकरः, मृद्वंशादि=मृदुसंज्ञक षष्ठ्यंशे, अग्रे ऽस्पष्टार्थः ॥ ९४ ॥

हिन्दी — यदि द्वितीयेश शुभराशि में हो तो जातक अल्प और रुचिकर खानेवाला होता है। द्वितीयेश अपने उच्चराशि में शुभग्रह से दृष्ट हो और मृदुसंज्ञक षष्ठ्यंश में हो तो जातक खाने में सदा रूचि रखनेवाला होता है ॥ ९४ ॥

भुक्तिस्थानाधिपे मन्दे तदीशे वाऽर्किसंयुते ॥
नीचेऽर्कसूनुना दृष्टे श्राद्धभुक् सततं नरः ॥ ९५ ॥

संस्कृत — भुक्तिस्थानाधिप इति। भुक्तिस्थानाधिपे=द्वितीयभावेशे,

मन्दे=शनैश्चरः स्यात्, अथवा तदीशे=द्वितीयेशे, आर्किसंयुते=शनिना युते, वा तदीशे नीचे=स्वनीचराशौ अर्कसूनुना=शनैश्चरेण दृष्टे=वीक्षिते सति तदा जातो नरः सततं=नित्यं श्राद्धभुक्=श्राद्धान्नभोक्ता (महाब्राह्मण श्राद्धतीर्थ विप्र इव) भवति॥ ९५॥

हिन्दी — द्वितीयभाव का अधिपति शनि हो या द्वितीयेश शनि से युक्त हो अथवा द्वितीयेश नीचराशि में हो और उसपर शनि की दृष्टि हो तो वह जातक निरन्तर श्राद्ध का अन्न खानेवाला (महापात्र) होता है॥ ९५॥

सिंहासनांशे यदि देवपूज्ये शुक्रे यदा गोपुरभागयुक्ते।
पारावतांशे धनपे बलाढ्ये जातस्त्वसंख्याश्रितरक्षकः स्यात्॥ ९६॥

इति नवग्रहकृपया वैद्यनाथविरचिते जातकपरिजाते
प्रथम-द्वितीय भावफलाध्यायः एकादशः॥ ११॥

संस्कृत — **सिंहासनांशे** इति। यदि देवपूज्ये=बृहस्पतौ, सिंहासनांशे=स्वकीयवर्गपञ्चके, शुक्रे यदा गोपुरभागयुक्ते=स्ववर्गचतुष्टये, धनपे=द्वितीयेशे बलाढ्ये सति, पारावतांशे=स्वकीयवर्गषट्के (१/४५-४६) भवेयुस्तदा जातः असङ्ख्याश्रित=अगणित शरणागतानां रक्षकः=प्रतिपालको भवति॥ ९६॥

''प्रज्ञावर्द्धिनी'' संस्कृतटीकायां जातकपारिजातस्य
प्रथम-द्वितीयभावफलाध्यायः एकादशः॥

हिन्दी — यदि बृहस्पति सिंहासनांश में स्थित हो, शुक्र गोपुरांश में हो और बलवान् धनेश पारावतांश में स्थित हो तो जातक असंख्य आश्रितों का पालक और रक्षक होता है॥ ९६॥

सत्येन्द्रमिश्रकृत ''प्रज्ञावर्द्धिनी'' हिन्दीटीका में जातकपारिजात का
प्रथम-द्वितीय भावफलाध्याय एकादश समाप्त॥

तृतीय-चतुर्थ भावफलाध्यायः—१२

तृतीयभावफलविचार—

ज्येष्ठानुजस्थितिपराक्रमसाहसानि
कण्ठस्वरश्रुतिवराभरणांशुकानि ।
धैर्यं च वीर्यबलमूलफलाशनानि
वक्ष्ये तृतीयभवनात् क्रमशोऽखिलानि ॥ १ ॥

संस्कृत — इदानीं तृतीयभावफलान्याह। प्रथमं तृतीयभावे किं किं विचारणीयमित्याह। श्लोकस्तु सरलार्थयुक्तः ॥ १ ॥

हिन्दी — तृतीयभाव से विचारणीय विषय इसप्रकार हैं—ज्येष्ठ और छोटा भाई का विचार, पराक्रम, साहस, कण्ठस्वर, श्रवण, आभूषण, वस्त्र, धैर्य, वीर्य, बल, मूल, फल और भोजन ॥ १ ॥

भ्रातृस्थानं तृतीयं च नवैकादशसप्तमम् ।
तत्तदीशदशायां च भ्रातृलाभो भवेन्नृणाम् ॥ २ ॥

संस्कृत — अधुना भ्रातृविचारमाह। **भ्रातृस्थानमिति**। लग्नात् तृतीयं, नवमं, एकादशं, सप्तमञ्च भ्रातृस्थानं निरुक्तम्। अतः तत्तदीशदशायां=तृतीय-सप्तम-नवमैकादशभावेशानां दशासमये, नृणां= जनिमताम्, भ्रातृलाभः= सोदरोत्पत्तिः जायते। अर्थात् उक्तेषु भावेषु यद्भावेशः जन्मसमये बलीयान् भवेत्तद्दशायां भ्रातृलाभो भवेतामिति बोध्यम् ॥ २ ॥

हिन्दी — तृतीय, नवम, एकादश और सप्तम ये भ्रातृस्थान हैं। इन स्थानों के सबसे बली स्वामी की दशा में जातक को भ्रातृलाभ होता है ॥ २ ॥

भ्रातृस्थानेशतद्राशितद्भावस्थद्युचारिणाम् ।
मध्ये बलसमेतस्य दशा सोदरवृद्धिदा ॥ ३ ॥

संस्कृत — तृतीयेशस्यराशि-तृतीयभावगतग्रहाणां मध्ये बलसमेतस्य= बलीयसो ग्रहस्य दशा सोदरवृद्धिदा भवतीतिभावः ॥ ३ ॥

हिन्दी — भातृस्थान के स्वामी, भ्रातृभावेश जिसराशि में हो उसका स्वामी तथा तृतीय में स्थितग्रह इनमें बलवान् ग्रह की दशा भ्रातृवर्ग की वृद्धि करने वाली होती है ॥ ३ ॥

भौमो बलविहीनश्चेद्दीर्घायुर्भ्रातृगो भवेत् ।
विलग्नगो बली यस्य कारकः स प्रभुः स्मृतः ॥ ४ ॥

संस्कृत — बलहीनो भौमो यदि भ्रातृगः=तृतीयभावगतश्चेत्तदा जातो

नरः दीर्घायु-र्भ्रातृयुक्तो भवेत्। यस्य कारकः=भ्रातृकारको (भौमो) ग्रहः, विलग्नगः= जन्मलग्नगतः बलीस्यात्, स जातो नरः प्रभुः=सर्व समर्थः स्मृतः=कथितः ॥ ४ ॥

हिन्दी — बलहीन मङ्गल यदि तीसरे भाव में हो तो जातक दीर्घायु भाई से युक्त होता है। जातक का भ्रातृभाव कारक ग्रह बलवान् होकर लग्न में रहे तो वह समर्थ होता है ॥ ४ ॥

जन्मकाले गुणी प्राणिकारको यः समृद्धिकृत् ।
क्षयकारी विपर्यासे भावपो विबलोऽधिकः ॥ ५ ॥

संस्कृत — सरलार्थः ॥ ५ ॥

हिन्दी — जन्मसमय में यदि किसी भाव का कारकग्रह बली हो तो वह उसभाव की समृद्धि करने वाला होता है। यदि इसके विपरीत हो तो उसभाव की हानि करता है। भावपति निर्बल हो तो वह उसभाव के लिए अधिक ह्रासकारक होता है ॥ ५ ॥

सोदरेशकुजौ नाशं गतौ चेत्सोदरक्षयः ।
पापर्क्षगौ सपापौ वा भ्रातॄनुत्पाद्य नाशदौ ॥ ६ ॥

संस्कृत — सोदरेशकुजौ=तृतीयेशो भौमश्च, नाशं गतौ=अष्टमस्थानगतौ चेत्तदा जातस्य सोदरक्षयः=भ्रातृक्षयो भवति। सोदरेशकुजौ यदि पापराशिगतौ वा पापग्रह युतौ भवेत् तदा भ्रातृनुत्पाद्य नाशदौ अर्थात् जातस्य भ्रातर सम्भूय म्रियन्त इति ॥ ६ ॥

हिन्दी — तृतीयेश और मङ्गल यदि अष्टमभाव में हों तो भ्रातृवर्ग का नाश होता है। दोनों (तृती० भौ०) पापग्रह की राशि में हों या पापग्रह के साथ हों तो ये भाई को उत्पन्न करके उसका नाश करते हैं ॥ ६ ॥

नीचास्तगौ सोदरनायकाख्यौ नीचांशगौ नीचसमागतौ वा ।
क्रूरादि षष्ठ्यंशगतौ तदानीं भ्रातॄन्समुत्पाद्य विनाशहेतुः ॥ ७ ॥

संस्कृत — नीचास्तगौ=नीच राशिगतौ सूर्यसानिध्यवशात् अस्तगौ, सोदरनायकाख्यौ=सहजेशः सोदरकारकश्चेत्यन्यत्स्पष्टार्थः ॥ ७ ॥

हिन्दी — भ्रातृभावेश और भ्रातृकारक ग्रह यदि नीचराशि में हों, अस्त हों या नीचनवांश में हों या दोनों ही क्रूरषष्ट्यंश में हों तो वे विनाश करने के लिए ही भाई का जन्म करते हैं ॥ ७ ॥

अतिक्रूरसमायुक्ते भावे वा कारकेऽपि वा ।
तद्भावनायके वाऽपि बाल्ये सोदरनाशनम् ॥ ८ ॥

संस्कृत — अतिक्रूरः (अतिपापीयान्), पापग्रहश्चेन्नीचगतोऽस्तंगतो

पापनवांशशत्रुवर्गादिगतो वा भवेत्तदातिक्रूरोऽतीव पापी च भवति। तेन ग्रहेण तृतीयभावे वा भ्रातृकारके वा तृतीयेशे समायुक्ते सति तदा बाल्ये=बाल्यावस्थायामेव सोदरनाशनं भवति। अर्थात् तस्य बाल्यकाले सोदरो म्रियत इत्यर्थः ॥ ८ ॥

हिन्दी — अति क्रूरग्रह से युक्त यदि तृतीयभाव हो या भ्रातृकारक ग्रह हो या तृतीयभाव का स्वामी हो तो जातक के बाल्यावस्था में भाई का नाश होता है ॥ ८ ॥

धनेश्वरे नाशगते बलाढ्ये पापान्विते सोदरकारकाख्ये ।
तन्मातृकारकग्रहसंयुते च सापत्नमातुः सहजा वदन्ति ॥ ९ ॥

संस्कृत — धनेश्वरे=द्वितीयेशे, बलाढ्ये=बलसहिते, नाशगते=अष्टमगते, सोदर-कारकाख्ये=भ्रातृकारके ग्रहे (भौमे) पापान्विते=पापग्रहेण युक्ते, तन्मातृकारक ग्रहसंयुते=तस्य (तृतीयभावस्य) यो मातृकारको (चतुर्थेशः) अर्थात् लग्नात्षष्ठभावेशेन संयुते सति तदा सापत्नमातुः=विमातुः सहजाः=भ्रातरो भवन्ति, ''वैमात्रेयविमातृजो'' भ्रातरो इति वदन्ति ॥ ९ ॥

हिन्दी -- बलवान् द्वितीयभावेश अष्टमस्थान में रहे तथा पापग्रहयुक्त भ्रातृकारकग्रह षष्ठभावेश से युक्त रहे तो उस जातक को सौतेली माता से उत्पन्न भाई होते हैं ॥ ९ ॥

भ्रातृस्थाने यदि शुभयुते सोदराणां चिरायुः
पापाक्रान्ते सहजभवने पापदृष्टे विनाशम् ।
ज्येष्ठं हन्ति द्युमणिरनुजस्थानगः पापदृष्टः
सौरस्तस्यानुजमवनिजो हन्ति सर्वान् कनिष्ठान् ॥ १० ॥

संस्कृत — भ्रातृस्थाने=तृतीयभावे शुभग्रह दृष्ट्या योगेन च सोदराणां चिरायु=दीर्घायु, सहज भवने पापग्रह दृष्ट्या योगेन च विनाशं भवेत्। सूर्यश्चेद्यदि-तृतीयस्थानगः तदा ज्येष्ठभ्रातरं, शनितृतीयस्थानगस्तदानुजं, अवनिजो=भौमो हि सर्वान् पश्चाज्जातान्क-निष्ठान् हन्ति=निघ्नन्ति। तृतीयभावे पापग्रहदृष्टे युते तदेत् फलम् ज्ञेयम्। शुभग्रह दृष्टे युते तत्परिहारोऽपि भवतीति भावः ॥ १० ॥

हिन्दी — तृतीयभाव शुभग्रह से युक्त हो तो जातक के भाई दीर्घायु होते हैं। पापग्रह यदि तृतीयभाव में हों और उसपर पापग्रहों की दृष्टि हो तो भाई का नाश होता है। सूर्य पापग्रह से दृष्ट होकर तृतीयभाव में रहे तो जातक के ज्येष्ठभ्राता का विनाश व शनि हो तो उसके छोटेभाई का नाश होता है और मङ्गल हो तो उसके सब छोटे भाईयों का नाश करता है ॥ १० ॥

त्रिकोणकेन्द्रे यदि पापखेटे तृतीयभावादनुजस्य नाशम् ।
शुभोपयाते सहजाभिवृद्धिः शुभाशुभं मिश्रफलं वदन्ति ॥ ११ ॥

संस्कृत — तृतीयभावात्=भ्रातृभावात त्रिकोणे केन्द्रे वा पापखेटे सति

तदाऽनुजस्य=कनिष्ठ भ्रातुः नाशोभवति। शुभोपयाते=तृतीयभावात् त्रिकोणे केन्द्रे शुभग्रहे सति तदा सहजाभिवृद्धिः=सोदरवृद्धिर्भवति। तत्र शुभेऽशुभेऽपि मिश्रफलं=सोदरहानिः सोदरवृद्धिश्चेति विज्ञाः वदन्ति=कथयन्ति ॥ ११ ॥

हिन्दी — तृतीयभाव से त्रिकोण या केन्द्र में यदि पापग्रह रहें तो छोटेभाई का नाश होता है। यदि शुभग्रह हों तो भाई की वृद्धि होती है तथा यदि शुभ अशुभ दोंनों हों तो मिश्रफल (शुभाशुभ दोनों) होता है ॥ ११ ॥

दुःस्थे चन्द्रे सोदरस्वामियुक्ते
जातस्यान्यस्तन्यपानं वदन्ति ।
मातृभ्रातृस्थानपौ बन्धुयातौ
नास्ति भ्रातृस्थानवृद्धिर्नराणाम् ॥ १२ ॥

संस्कृत — सोदरस्वामियुक्ते=तृतीयेशेन सहिते चन्द्रे, दुःस्थे=त्रिकस्थानगते सति तदा जातस्य अन्यस्तन्यपानं=जननीतरस्तन्यदुग्धपानं दैवज्ञाः वदन्ति। मातृभ्रातृस्थानपौ=चतुर्थेशतृतीयेशौ बन्धुयातौ=चतुर्थ भावगतौ तदा नराणां भ्रातृस्थानवृद्धिः=सहजोद्भवः नास्ति=न भवति ॥ १२ ॥

हिन्दी — चन्द्रमा यदि ६-८-१२ (त्रिक) भाव में तृतीयेश के साथ हो तो जातक को दूसरे का स्तनपान करना पड़ता है। चतुर्थेश और तृतीयेश यदि चतुर्थभाव में हों तो जातक के भ्रातृस्थान की वृद्धि नहीं होती है ॥ १२ ॥

भौमान्वितौ सोदरदौ भवेता-
मन्यैः समेतौ यदि नानुजः स्यात् ।
सौरस्तृतीयेऽनुजनाशकर्ता
विधुन्तुदः सोदरवृद्धिकृत्स्यात् ॥ १३ ॥

संस्कृत — तौ (मातृभ्रातृभावपौ) यदि भौमान्वित=भौमेन युक्तौ तदा सोदरदौ=भ्रातृदातारौ भवतः। तौ यदि अन्यैः ग्रहैः (भौमेतरैः) समेतौ भवेतां तदा अनुजो न स्यात्। सौरस्तृतीये=शनिस्तृतीयभावगतः स्यात्तदाऽनुजनाशकर्त्ता भवेत् विधुन्तुदः=यदि राहुस्तृतीयगतः तदा सोदरवृद्धिकृत् स्यात्=भ्रातृजन्मदो भवति। अर्थात् तृतीयस्थो राहुः भ्रातृविनाशको न, अपितु भ्रातृवृद्धिकारको भवतीति ॥ १३ ॥

हिन्दी — तृतीयेश और चतुर्थेश यदि मङ्गल के साथ रहें तो भाई को देते हैं। अन्यग्रहों से यदि युत हों तो छोटा भाई न हो। तीसरे भाव में शनि हो तो भाई का नाश और राहु हो तो भाई की वृद्धि होती है ॥ १३ ॥

अदृश्यराशौ यदि वा सपापे वधूगृहस्थे सहजाधिनाथे ।
जातानुजस्योपरि नानुजःस्यात्पुंवर्गगे दृश्यगते तथैव ॥ १४ ॥

संस्कृत — सहजाधिनाथे=तृतीयेशे अदृश्यराशौ=प्रथमलग्नाद्राशिषट्कमदृश्यम् भवति, तदन्तर्गत राशौ, यदि वा=अथवा, सपापे=पापग्रहयुक्ते, वधूगृहस्थे=सप्तमभवनगते तदा जातानुजस्योपरि=जायमान कनिष्ठानन्तरं, अनुजः=लघुसोदरभ्राता न भवेदर्थात् जातस्य एकानुजान्तरमन्योऽनुजो न भवेत्। सहजाधिनाथे, दृश्यराशिगते (सप्तमलग्नाद्राशिषट्कांभ्यन्तरे) पुंवर्गगे=पुरुष (विषम) राशिवर्गे गतन्नति तथैव फलमर्थाज्जातानुजस्योपरि नानुजः भवेदिति ॥ १४ ॥

हिन्दी — तृतीयभाव का स्वामी यदि अदृश्यराशि (लग्न से सप्तम) में हो या पापग्रह से युक्त होकर सप्तम में स्थित हो तो छोटा भाई उत्पन्न होने के बाद फिर उससे छोटा भाई नहीं होता है। पुरुषराशि के वर्ग में होकर दृश्यार्ध (सप्तम से लग्न) में तृतीयेश रहे तब भी वही फल होता है ॥ १४ ॥

भ्रातृस्थानपतौ तु पुंभवनगे तस्यानुजो जायते
युग्मर्क्षे यदि भार्गवेण शशिना युक्तेऽथवा वीक्षिते ।
सौम्यर्क्षे शुभखेचरेक्षितयुते केन्द्रत्रिकोणस्थिते
पश्चाज्जातसहोदरश्चिरसुखी दीर्घायुरारोग्यभाक् ॥ १५ ॥

संस्कृत — भ्रातृस्थानपतौ=तृतीयेशौ, पुंभवनगे=पुरुषराशि (विषमराशि) गते सति तस्य=जातस्य अनुजो=कनिष्ठभ्राता जायते। यदि भ्रातृस्थानपतौ, युग्मर्क्षे=समराशि गते, भार्गवेण=शुक्रेण, शशिना=चन्द्रेण च, युक्ते=सहिते अथवा वीक्षिते=अवलोकिते तदा जातस्यानुजो जायते। यदि भ्रातृस्थानेशे सौम्यर्क्षे=शुभराशौ, शुभखेचरेक्षितयुते=शुभग्रहेण दृष्टे वा युते, केन्द्रत्रिकोण (१।४।७।१०।५।९) गते सति तदा जातस्य पश्चाज्जातसहोदरः=लघुभ्राता, चिरसुखी=यावज्जीवनं सुखी दीर्घायुः, आरोग्यभाक्=निरोगी च भवति ॥ १५ ॥

हिन्दी — यदि तृतीयभाव का स्वामी पुरुषराशि में रहे तो जातक को भाई होता है। तृतीयेश यदि समराशि का होकर शुक्र और चन्द्र से युक्त अथवा दृष्ट हो तो अनुज का जन्म होता है। शुभग्रह की राशि में स्थित होकर तृतीयेश शुभग्रह से दृष्ट युत हो या केन्द्र त्रिकोण में स्थित हो तो जातक को सुखी, दीर्घायु तथा आरोग्यवान भाई होता है ॥ १५ ॥

सहोदरस्थानपतौ तनुस्थे सलग्नपे सोदरनायके वा ।
गर्भोऽभयोऽनन्तरमस्य मातुस्तृतीयराशौ स पतौ तथैव ॥ १६ ॥

संस्कृत — सहोदरस्थानपतौ=तृतीयेशौ, तनुस्थे=जन्मलग्नगते, वा सोदरनायके=तृतीयेशे सलग्नपे=लग्नपतिना सहिते, तदा अस्य=जातस्य मातुः, अनन्तरं=एतज्जातानन्तरं गर्भः, अभयः=निर्विघ्नो भवति। तृतीयराशौ=तृतीय (भ्रातृ)

भावे, सपतौ=पतिना सहिते (तृतीयेशे तृतीयगते) तथैव फलमर्थात् जातस्य माता पुनरपि निर्विघ्नं सन्तति प्रसूयते ॥ १६ ॥

हिन्दी — यदि तृतीयेश लग्न में हो, अथवा लग्नेश के साथ तृतीयेश हो तो उस जातक के जन्म के बाद उसकी माता का गर्भ अभय होता है। तृतीयभाव में यदि तृतीयेश हो तो भी वही फल होता है ॥ १६ ॥

भ्राता-भगिनी संख्या विचार—

लाभावसानभवनोपगतग्रहेन्द्रः-
संख्यास्तदग्रजजनाः सहजा भवन्ति ।
लग्नात्तृतीयधनयातवियच्चरेन्द्रैः
संख्याजनाः स्युरनुजाः कथयन्ति तज्ज्ञाः ॥ १७ ॥

संस्कृत — अधुना सोदरसङ्ख्यामाह—**लाभावसानेति**। जन्म लग्नात् लाभावसानभवने=एकादश द्वादशभवने, उपगतग्रहेन्द्र=स्थितग्रहसङ्ख्यातुल्य जातस्याग्रजजनाः=पूर्वजाताः, सहजाः=भ्रातरः (ज्येष्ठ भ्रातरः) भवन्ति। अर्थात् एकादशे द्वादशे भावे यावन्तो ग्रहास्तिष्ठन्ति तावन्तो ज्येष्ठाः सोदरा भवन्ति। एवं लग्नात् तृतीये द्वितीये भावे च स्थिते ग्रह संख्या तुल्या अनुजाः=लघुभ्रातरः भवन्तीति तज्ज्ञाः=विज्ञाः कथयन्ति। अत्र पुरूषग्रहसङ्ख्यातुल्या भ्रातरः, स्त्रीग्रहसङ्ख्यातुल्या भगिन्यश्च ज्ञेया ॥ १७ ॥

हिन्दी — लग्न से एकादश और द्वादश भावों में जितने ग्रह हों उतने ज्येष्ठ भाईयों की संख्या तथा लग्न से तृतीय और द्वितीय भावस्थ ग्रहों से छोटे भाईयों की संख्या दैवज्ञ लोग कहते हैं ॥ १७ ॥

भ्रातृस्थानपकारकेक्षितयुता वीर्याधिका यद्यदा
तद्युक्तग्रहसंख्ययाऽनुजजनिं जातः समेति ध्रुवम् ।
चत्वारो यदि नीचमूढरिपुगा निघ्नन्ति जातानुजान्-
स्ते कुर्वन्ति चिरायुरिष्टबलिनः सर्वानुजानां ग्रहाः ॥ १८ ॥

संस्कृत — भ्रातृस्थानपेन, भ्रातृकारकेण ग्रहेण चेक्षिता युताश्च यद्यदा=यावत्संख्यका वीर्याधिकाः=बलवन्तो ग्रहा भवेयुः, तद्युक्तग्रहसंख्यया= युतेक्षितग्रहसङ्ख्यातुल्याऽनुजजनिं=लघुसहोदराणामुत्पत्तिं जातो जनो ध्रुवं=निश्चयेन समेति=प्राप्नोति। अर्थात् यावन्तो बलवन्तो ग्रहास्तृतीयेशेन तृतीयभावकारकेण च युक्ता दृष्टाश्च भवन्ति तावन्तस्तस्य जातकस्य सोदरा भवन्तीति बोध्यः। भ्रातृकारकः-भ्रातृभावेशः-भ्रातृभावस्थित-भ्रातृभावेशदर्शी इति चत्वारः ग्रहाः यदि नीचमूढरिपुगाः=स्वनीचराशौ, अस्तमयाः, शत्रुगृहगता वा भवेयुस्तदा जातानुजान्

समुत्पन्नसोदरान् निघ्नन्ति=विनाशयन्ति। अर्थात् जातस्य जायमाना अनुजा न जीवन्तीत्यर्थः। यदि ते=चत्वारो ग्रहा इष्टबलिनः=उच्च-मित्रगृहगाः-बलयुक्ताश्च भवेयुस्तदा सर्वानुजानां चिरायुः=दीर्घायुष्यं कुर्वन्ति॥ १८॥

हिन्दी — भ्रातृभावेश और भ्रातृकारकग्रह से दृष्ट या युत विशेषबलवान जितने ग्रह तृतीयभाव में रहें उतने संख्यातुल्य भाई होते हैं। यदि तृतीयेश-भ्रातृकारक-तृतीयभावस्थ-तृतीयभावद्रष्टा ये चारों ग्रह नीचगत-अस्तङ्गत या शत्रु स्थानगत हों तो उत्पन्न भाईयों का संहार करते है। यदि ये चारों ग्रह शुभस्थानगत तथा बली हों तो भाईयों को दीर्घायु करते हैं॥ १८॥

भ्रातृस्थानपमुख्यखेचरगणे द्वौ वीर्यवन्तौ यदा
नाशानाशफलप्रदौ समतया वीर्याधिकाश्चेत्त्रयः।
खेटाः स्वल्पसहोदरक्षयकरा दुःस्थानगाः स्त्रीग्रहा
यद्यल्पानुजवृद्धिदास्तदनुजस्वाम्यंशसंख्यानुजाः ॥ १९॥

संस्कृत — भ्रातृस्थानप=तृतीयेशः मुख्यं=प्रधानम् खेचरगणे (तृतीयेशादि ग्रह चतुष्के) यदा द्वौ वीर्यवन्तो=बलशालिनौ, तदा नाशानाशफलप्रदौ समतया= अर्थात् चतुर्षु ग्रहेषु यदि द्वौ बलिनौ द्वौ बलरहितौ चेत्तदा समतया शुभमशुभश्च कुरूत। चतुर्षु ग्रहेषु यदि त्रयो वीर्याधिकाः स्युस्तदा शुभफलमधिकमशुभफलं किञ्चिदेवेति। यदि स्त्रीग्रहा (चं० शु०) योगकारकाः भूत्वा दुःस्थानगता भवेयु-स्तदाऽल्पानुजवृद्धिदा अर्थात् अल्पा एव अनुजा भवन्ति। तदनुजस्वाम्यंश-सङ्ख्यानुजा=तस्य जातस्यानुजस्वामी (तृतीयेशः) यत्र कुत्र भावे यावन्मिते नवांशे स्यात्तावन्तस्तस्यानुजा भवन्तीति भाव॥ १९॥

हिन्दी — भ्रातृभावेश-भ्रातृभावदर्शी-भ्रातृभावगत और भ्रातृकारक ग्रह इन चारों में यदि दो भी ग्रह पूर्णबली हों तो भाईयों की हानि और लाभ तुल्य करत हैं। उन चारों में यदि तीन बलवान् हों तो भाईयों का नाश कम करते हैं। यदि स्त्रीग्रह दुःस्थान में हों तो भाईयों की वृद्धि अल्प करते हैं। छोटे भाईयों की संख्या तृतीयेश के नवांश संख्यातुल्य होती है॥ १९॥

भूमिजे सहजस्थाने यावतां विद्यते बलम्।
शत्रुनीचग्रहं त्यक्त्वा तावन्तः सहजाः स्मृताः॥ २०॥

संस्कृत — भूमिजे=भौमे, सहजस्थाने=तृतीये, शत्रुनीचग्रहं त्यक्त्वा= स्वशत्रुग्रहं नीचराशिस्थग्रहं च विहाय, यावतां=यत्सङ्ख्यकानां ग्रहाणां, बलं= अष्टकवर्गसम्बन्धि बलं विद्यते तावत्फलं प्राप्यते। (यथा सहजभावगतो भौमो यावन्मितेभ्यो ग्रहेभ्यः शुभफलो भवति परं शत्रुग्रहं नीचगतग्रहं त्यक्त्वेति) तावन्तः= तत्सङ्ख्यकाः, जातस्य सहजाः=सोदराः, स्मृताः=कथिताः॥ २०॥

हिन्दी — भौमाष्टक वर्ग के तृतीयभाव में जितने ग्रहों से शुभफल प्राप्त हों उनमें शत्रु ग्रह और नीचगत ग्रहों को छोड़कर शेषग्रहों के तुल्य सहोदर संख्या होती है ॥ २० ॥

भ्रात्रीदौ स्त्रीग्रहर्क्षस्थौ भ्रातृदौ पुंग्रहर्क्षगौ ।
सोदरेशकुजौ स्यातां भ्रातृभ्रात्रीसुखप्रदौ ॥ २१ ॥

संस्कृत — सोदरेशकुजौ=तृतीयभावेशो भौमश्च यदि स्त्रीग्रहर्क्षस्थौ= स्त्रीग्रहौ ऋक्षस्थौ= वृषतुलाकर्कटराशौ स्थितौ तदा भ्रात्रीदौ= भगिनीप्रदौ। तौ यदि पुंग्रहर्क्षगौ=सूर्यभौमगुरुवस्तेषां राशयः सिंह-मेष-वृश्चिक-धनु-मीन राशौ स्थितौ तदा, भ्रातृ सुखदायिनौ ज्ञेयम्। यदि तौ पुं-स्त्री राशिगतौ भवेतां तदा भ्रातृ भ्रात्री सुखप्रदौ=भ्रातृभगिन्यो सुखप्रदायकौ भवेताम्॥ २१ ॥

हिन्दी — तृतीयेश और भौम यदि स्त्रीग्रह की राशि में रहें तो बहन का सुख देते हैं। यदि दोनों (तृतीयेश-भौम) पुरुषराशि में हों तो भाई का सुख देते। यहीं दोनों ग्रह यदि पुरुष-स्त्री राशि में रहें तो भाई और बहन दोनों का सुख देते हैं ॥ २१ ॥

स्त्रीहोरया वा युवतिग्रहेण युक्ते यदि भ्रातृगृहे विलग्नात् ॥
सहोदरीलाभमुपैति जातः सहोदरं तत्परतोऽन्यथा चेत् ॥ २२ ॥

संस्कृत — विलग्नात्=जन्मलग्नात्, भ्रातृगृहे=तृतीयस्थाने, यदि स्त्रीहोरया =चन्द्रहोरया युक्ते (विषमराशेरपरार्द्धे, समराशेः पूर्वार्द्धे च चन्द्रहोरा) वा युवतिग्रहेण=स्त्रीग्रहेण (चन्द्रेण शुक्रेण वा) सहिते सति तदा जातो नरः सहोदरी-लाभमुपैति=भगिनी सुखं प्राप्नोति। तत्परतो=यदि भ्रातृगृहे पुरूषहोराया युक्ते (विषमे पूर्वार्द्धे समे परार्द्धे) वा पुरूषग्रहेण युक्ते सति तदा जातः सहोदराभुपैति अन्यथा=जन्मानन्तरं सहोदरीलाभः सहोदरलाभो वा इत्यर्थः॥ २२ ॥

हिन्दी — यदि तीसरेभाव में चन्द्रमा की होरा में स्त्रीग्रह (चं. शु.) रहें तो जातक को बहन की प्राप्ति होती है। इससे अन्यथा हो तो (सूर्य की होरा में पुरुष ग्रह में) भाई की उत्पत्ति होती है न हो तो आगे-पीछे के सहोदर जन्म में भी इस संख्या को समझें॥ २२ ॥

कारकः सहजाधीशस्तद्दर्शी तत्र संस्थितः ।
इष्टानिष्टकरास्तेषां स्वदशान्तर्दशासु च ॥ २३ ॥

संस्कृत — अधुना भ्रातृभावे अधिकारिणः। **कारक** इति। कारकः= भ्रातृभावकारकः (१), सहजाधीशः=भ्रातृभावेशः (२), तद्दर्शी=भ्रातृभावद्रष्टा (३), तत्र संस्थितः=भ्रातृभावे वर्त्तमानः (४), इतिचत्वारो स्वदशासु स्वान्तर्दशासु च, तेषां=भ्रातृणां (भगिनीनाश्च) इष्टानिष्टकराः=शुभाशुभफलप्रदाः भवन्ति॥ २३ ॥

हिन्दी — भ्रातृकारक (१) सहजभाव का स्वामी (२), सहजभाव को देखनेवाला (३) और सहजस्थग्रह (४) ये चारों ग्रह अपनी-अपनी दशा-अन्तर्दशा में भ्रातृवर्ग के लिए शुभाशुभ फल करते हैं ॥ २३ ॥

कारकादिचतुःखेटस्फुटयोगांशकानुजाः ।
वर्ज्या नीचारिमूढांशाः स्वोच्चांशा द्विगुणीकृताः ॥ २४ ॥

संस्कृत — कारकादि चतुःखेट=कारकादयो ये चत्वारः (कारकः-सहजाधीशः-तद्दर्शी-तत्रसंस्थितः) खेटास्तेषु स्फुटयोगांशकानुजाः=स्पष्ट-राश्यादीनां योगवशात् यद्राश्यादि लभ्यते तस्मिन् यावन्तो नवांशा भवन्ति तावन्तस्तस्यानुजा जायन्ते। परं तेषु वर्ज्या नीचारिमूढांशाः=यो ग्रहो नीचगतः शत्रुगृहगतः अस्तश्च ते न योज्या। एवं ये ग्रहाः स्वोच्चगतास्तेषामशा द्विगुणीकृताः भवन्तीति भावः।

यथा यवनजातके (हो. रत्न तृ. भा. ४.५)—

यावन्तो नवभागाः स्युः सहजेऽब्ज कुजेक्षिताः
तत्संख्या सहजा ज्ञेया दृष्टा अन्यैस्तु योषितः।
स्वगृहोच्चगतैः खेटैर्द्वित्रिगुण्यं विनिर्दिशेत् ॥ २४ ॥

हिन्दी — उपरोक्त कारकादि (कारक-सहजेश-सहजदर्शी-सहजस्थ) के योग करने पर जितने नवांश हो उतने भाई की संख्या समझें। उसमें जो ग्रह नीच, शत्रुगृही व अस्त हों उनका योग नहीं करना चाहिये और जो ग्रह अपने उच्चांश में हों उनको दूना करना चाहिए ॥ २४ ॥

तृतीयात्सप्तमर्क्षेण भ्रातृभार्याफलं वदेत् ।
लग्नेशकुजसोत्थेशा भ्रात्रानिष्टशुभप्रदाः ॥ २५ ॥

संस्कृत — तृतीयात्सप्तमर्क्षेण=लग्नान्नवमभावेशेन भ्रातुर्भार्यायाः शुभाशुभं फलं वदेत्। लग्नान्नवमस्थानः-नवमपतौ च यदि शुभदृष्टियुते सबले च भवेत्तदा भ्रातृभार्यायाः शुभमन्यथाऽशुभं फलं भवति। लग्नेशः-कुजः, सोत्थेशः=तृतीयेशश्चैते भ्रातुरनिष्टशुभप्रदाः। अर्थात् शुभदृष्टयुक्ताः सबलश्चैते तदा भ्रातुः शुभकराः, अन्यथा अशुभकरा भवन्तीति भावः ॥ २५ ॥

हिन्दी — तृतीय से सप्तमराशि अर्थात् नवमभाव द्वारा भाई की स्त्री का फल विचारना चाहिए और लग्नेश-मङ्गल तथा तृतीयेश से भाई के अशुभ व शुभफल का विचार करना चाहिए ॥ २५ ॥

भ्रातृप्रेमयोग—

अन्योन्यमिष्टविपुलं तु सहोदराणां
लग्नाधिपेन सहिते यदि सोदरेशे

अन्योन्यमिष्टखचरौ यदि तौ बलाढ्यौ
लग्नेऽथवा सहजभे न विभागमाहुः ॥ २६ ॥

संस्कृत — अन्योन्यमिति। सोदरेशे=भ्रातृभावेशे यदि लग्नाधिपेन=जन्मलग्नपतिना सहिते सति तदा सहोदराणां=भ्रातृणां अन्योन्यमिष्टविपुलं=स्नेह स्यात्। यदि तौ=लग्नाधिपसोदरेशौ बलाढ्यौ=सबलौ, अन्योन्यम्=परस्परम्, इष्टखचरौ=मित्रग्रहौ लग्नेस्थिते अथवा सहजभे स्थितौ तदा सहोदराणां विभागं=पार्थक्यं न आहु दैवज्ञाः ॥ २६ ॥

हिन्दी — लग्नेश और तृतीयेश यदि एकस्थान में हों तो भाईयों में विशेष प्रेम होता है। यदि दोनों परस्पर मित्रग्रह हों और बलवान् होकर लग्न या तृतीय में हों तो भाइयों में भेद (बँटवारा) नहीं होता है ॥ २६ ॥

भ्रातृरिष्टयोग—

लग्नेशानुजनायकौ विबलिनावन्योन्यशत्रुग्रहौ
दुश्चिक्यस्थितकारकौ च यदि वा दुःस्थानगौ दुर्बलौ।
तत्पाके सहजप्रमादकलहं तन्नाशमर्थक्षयं
तत् खेटोपगकोपहेतुकलहस्नेहादि सर्वं वदेत् ॥ २७ ॥

संस्कृत — लग्नेश=लग्नपति अनुजनायकौ=तृतीयेशौ, विबलिनौ=बलरहितौ अन्योन्यं=परस्परं शत्रुग्रहौ भवेताम्, यदि वा दुश्चिक्यस्थितकारकौ=तृतीयस्थितो ग्रहः भ्रातृकारकश्च, दुःस्थानगौ=षडष्टव्ययगतौ, दुर्बलौ=बलहीनौ च भवेतां तदा तत्पाके=योगकर्तृकग्रहयोर्दशाकाले सहजप्रमादकलहं=भ्रातृणां वैमनस्यात्कलहं तन्नाशं=भ्रातृनाशं, अर्थक्षयं=धननाशं भवेत्। तत्खेटोपगकोपहेतुकलहस्नेहादि सर्वं=तत्तत् ग्रहजन्य कलहं स्नेहादि च सर्वं वदेदिति ॥ २७ ॥

हिन्दी — लग्नेश और तृतीयेश बलहीन हों तथा परस्पर शत्रु हों अथवा तृतीयभाव में स्थित ग्रह और भ्रातृभावकारक ग्रह यदि दुष्टस्थान में निर्बल हों तो उन ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा में भाइयों में प्रमाद तथा कलह से उनका नाश और धन का क्षय होता है। उन ग्रहों के मित्र-शत्रु सम्बन्ध से कलह और स्नेह कहना चाहिए ॥ २७ ॥

गुरुदृष्टेऽनुजे शुक्रे भ्रातृरक्षणतत्परः।
रविदृष्टे बुधे सोत्थे सुहृन्नाशकरो भवेत् ॥ २८ ॥

संस्कृत — शुक्रे अनुजे=तृतीयभावस्थे गुरुदृष्टे=गुरुणा दृष्टे सति तदा जातो भ्रातृरक्षणे तत्परो भवेत्। बुधे सोत्थे=तृतीयगते रविदृष्टे=रविणा दृष्टे च जातो तदा सुहृन्नाशकारको भवेत् ॥ २८ ॥

हिन्दी — तृतीयभाव में शुक्र हो और उसे गुरु देखता हो तो वह जातक भाई की रक्षा में तत्पर रहता है। तृतीयभावस्थ बुध को यदि सूर्य देखता हो तो मित्र का नाश होता है॥ २८॥

भ्रातृस्थतन्नायककारकाणां नीचारिदुःस्थानसमन्वितानाम् ।
भुक्तौ दशायां धनसत्त्वनाशं पराजयं भ्रातृविनाशमाहुः ॥ २९॥

संस्कृत — भ्रातृस्थः=तृतीयभावस्थः, तन्नायक=तृतीयेशः, कारको=भ्रातृकारक इत्येषां त्रयाणां, नीचे=नीचराशौ अरौ=शत्रुस्थाने दुःस्थाने=षडष्टव्यये=समन्वितानां=स्थितानां भुक्तौ=अन्तरे दशायां च धनसत्वनाशं=ऐश्वर्य-पराक्रमाणां नाशं, पराजयं, भ्रातृविनाशं च दैवज्ञा आहुः॥ २९॥

हिन्दी — भ्रातृभावस्थ, भ्रातृभावेश और भ्रातृकारक ये तीनों ग्रह यदि नीचराशि शत्रुराशि तथा दुःस्थान में हों तो उनकी दशाऽन्तर्दशा में धन-बल का नाश, शत्रु से पराजय और भाईयों का नाश होता है॥ २९॥

लग्नेशस्फुटतो विशोध्य सहजस्थानाधिपस्य स्फुटं
तन्नक्षत्रगते शनौ तु मरणं तत्सोदराणां वदेत् ॥
तस्माद्धि स्फुटतस्तु मानगृहपं भौमं च संशोधिते
राशौ भानुसुते तथैव च चतुर्योगस्फुटांशेऽथवा ॥ ३०॥

संस्कृत — अत्र शनिस्थितिवशात् भ्रात्ररिष्टमाह—**लग्नेशेति**=सहजस्थानाधिपस्य=तृतीय भावाधिपस्य स्फुटं राश्यादि, लग्नेशस्फुटतो विशोध्य अवशेषं कलादिकृत्याष्टशतभक्तेन यन्नक्षत्रं लब्धं स्यात्तन्नक्षत्रगते शनौ तस्य तत्सोदराणां=जातस्य भ्रातृणां मरणं वदेत्। तस्माद्धि स्फुटतः=लग्नेशस्पष्टराश्यादितस्तु मानगृहपं=दशमभावेशं भौमं च संशोधिते=विशोध्य शेषराशौ, भानुसुते=शनैश्चरे याते सति तथैव फलमर्थात्सोदराणां मरणं भवेदिति। अथवा चतुर्योग-स्फुटांशे=चतुर्णां (भ्रातृकारकः-तृतीयेशः-तृतीयदर्शी-तृतीयस्थः) योगस्फुटांशे गते शनौ तथैव फलम् भवति॥ ३०॥

हिन्दी — राश्यादि स्पष्टलग्नेश में स्पष्टतृतीयेश को घटाकर शेष में जो नक्षत्र हो उसनक्षत्र में शनि के आने पर जातक के सहोदर भाईयों का मरण होता है। उसी राश्यादि स्पष्टलग्नेश में दशमेश और मङ्गल को घटाने पर जो शेषराशि बचे उसमें शनि आवे तब अथवा सहजेश-सहजदर्शी-सहजस्थ और सहजकारक इन चारों के योग करने पर जो राशि अंश हो उतने पर शनि के आने पर भ्रातृनाश होता है॥ ३०॥

चतुःस्फुटाक्रान्तदृकाणराशिं गते गुरौ सोदरनाशमाहुः ।
तत्तारकानाथदशाऽनुजानामतीव सम्पत्सुखदायिनी स्यात् ॥ ३१॥

संस्कृत — अधुना गुरूवशात् भ्रात्ररिष्टमाह-**चतुरिति**। चतुर्ण्णां (कारक-सहजेश-तद्दर्शि-तत्संस्थित) स्फुटैक्येनाक्रान्तो यो दृकाणस्तद्दृकाणराशौ गते गुरौ सति तदा सोदरनाशमाहुः। अर्थादुक्तग्रहचतुष्टययोगवशात् यद्राशिद्रेष्काणः स्यात्तद्राशौ गते गुरौ जातस्य भ्रातृनाशं ब्रूयादिति। तत्तारकानाथदशा=तदुक्तयोगतो (१८/३) या तारका=नक्षत्रं प्राप्यते तस्या यो नाथस्तस्य दशा अनुजानां=कनिष्ठ भ्रातृणामतीव सम्पत्सुखदायिनी स्यात्॥ ३१॥

हिन्दी — चारों ग्रहों (पूर्वोक्त) का योग करने से योगराशि के द्रेष्काण राशि में गुरु के जाने पर भ्रातृनाश होता है। उस योगराशि से जो नक्षत्र आवे उसनक्षत्र की दशा छोटे भाइयों के लिये विशेष सुख देनेवाली होती है॥ ३१॥

भूसूनस्फुटतो विशोध्य फणिनं शेषत्रिकोणे गुरौ
जातस्यानुजनाशनं क्षितिसुतं राहुस्फुटाच्छोधयेत्।
तद्राशिस्थनवांशकेऽमरगुरौ तज्ज्येष्ठनाशं वदेत्
जन्माधानपकर्मपस्फुटगृहे जीवेऽनुजो जायते॥ ३२॥

संस्कृत — भूसूनुस्फुटतः=भौमस्पष्टराश्यादितः, फणिनं=राहुं, विशोध्य =संशोध्य, शेषराशेः त्रिकोणे (९।५) गुरौ गते तदा जातस्यानुजनाशनं भवेत्। एवं राहुस्फुटात् क्षितिसुतं=भौमं शोधयेत्, शेषराशौ यन्नवांशकं तस्मिन् नवांशे गतवत्यमरगुरौ=बृहस्पतौ, तज्ज्येष्ठभ्रातृनाशं वदेत्। जन्माधानपकर्मपस्फुटगृहे= जन्मप=यस्मिँल्लग्ने जातको जातस्तत्पति, आधानपः=यस्मिँल्लग्ने जातकस्य गर्भाधानभभूत तत्पतिः, कर्मपः=जन्मकालीनदशमभावपतिः, एषां त्रयाणां स्फुटगृहे= योगराशौ प्राप्ते जीवे=गुरौ, जातस्यानुजः=कनिष्ठो जायते=उत्पद्यते॥ ३२॥

हिन्दी — स्पष्टभौम में राहु को घटाकर शेषराशि से त्रिकोणस्थान में जब बृहस्पति जाता है तो जातक के छोटे भाई का नाश करता है। स्पष्टराहु में भौम को घटाकर शेषराशि के नवांश में जब बृहस्पति हो तो उसके ज्येष्ठभाई का नाश होता है। जन्मपति-आधानपति तथा कर्मपति के योगराशि में जब बृहस्पति हो तो छोटेभाई का जन्म होता है॥ ३२॥

पराक्रम विचार—

विक्रमाधिपतौ स्वोच्चे नाशस्थे पापसंयुते।
चरराशौ चरांशस्थे युद्धात्पूर्वं दृढो भवेत्॥ ३३॥
कारके बलहीने वा क्रूरषष्ट्यंशसंयुते।
शुभदृग्योगसम्बन्धे विजयी विक्रमेश्वरे॥ ३४॥

संस्कृत — विक्रमाधिपतौ=तृतीयभावपतौ, स्वोच्चे=स्वकीयोच्चंराशौ,

नाशस्थे=अष्टमगते, तस्मिन्पापग्रहयुक्ते तथा चरराशौ चरांशस्थे=चरराशिनवांशे च गते तदा जातो युद्धात् पूर्वं संग्रामारम्भात्पूर्वमेव दृढो भवेदितिभावः। कारके=तृतीय-भावकारके ग्रहे बलहीने वा क्रूरषष्ट्यंशसंयुते, विक्रमेश्वरे=तृतीयभावपतौ, शुभ-दृग्योगसम्बन्धे=शुभग्रहाणां दृष्टियोगसमन्विते सति तदा जातः संग्रामे विजयी भवेदिति॥ ३३-३४॥

हिन्दी — तृतीयभाव का स्वामी अपनी उच्चराशि में होकर अष्टमभाव में हो, पापग्रह से युक्त होकर चरराशि के चरवांश में हो तो जातक युद्ध के पहले दृढ हो जाता है।

भ्रातृकारक ग्रह बलहीन हो अथवा क्रूरषष्ट्यंश में हो और तृतीयेश शुभग्रह से युत-दृष्ट हो तो जातक युद्ध में विजयी होता है॥ ३३-३४॥

शौर्याधिपे भानुयुतेऽत्र वीर-
श्चन्द्रान्विते मानसधैर्यजातः।
दुष्टो जडो भौमयुतो प्रकोपी
सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः॥ ३५॥
जीवान्विते धीरगुणाभिरामः समस्तशास्त्रार्थविशारदः स्यात्।
कामातुरः शुक्रसमन्विते तु तन्मूलकोपात् कलहप्रवीणः॥ ३६॥
जडो भवेद्वासरनाथसूनुयुक्तेऽतिभीतो फणिसंयुते स्यात्।
बहिर्गदो हृद्गदजाड्ययुक्तः केत्वन्विते मान्दियुते तथैव॥ ३७॥

संस्कृत — श्लोकाः सरलार्था स्पष्टार्थाश्च॥ ३५-३७॥

हिन्दी — यदि तृतीयेश सूर्य से युत हो तो जातक वीर हो, चन्द्रमा से युक्त हो तो मानसधैर्य (गंभीर प्रवृत्ति) युक्त, मंङ्गल से युत हो तो दुष्ट-जड़ और क्रोधी, बुध से युक्त हो तो सात्त्विक बुद्धिवाला, बृहस्पति से युक्त हो तो धीरगुणयुक्त और सम्पूर्ण शास्त्र का ज्ञाता, शुक्र से युक्त हो तो कामातुर एवं वासना के लिए कलह करनेवाला, शनि से युक्त हो तो जड़बुद्धिवाला, राहु से युक्त हो तो डरपोक, केतु से युक्त हो तो चर्मरोग-हृदयरोग से युक्त और गुलिक (मान्दि) से युक्त हो तो भी यहीं फल होता है॥ ३५-३७॥

लग्ने गुरौ विक्रमनाथयुक्ते चतुष्पदानां प्रवदन्ति भीतिम्।
गवां भयं वा जलराशिलग्ने जलप्रमादं समुपैति जातः॥ ३८॥

संस्कृत — गुरूः तृतीयेशेन युक्ते यदि लग्ने भवेत्तदा चतुष्पदानां=गजाश्वादीनां भीतिं=भयं प्रवदन्ति। वा गवां=गोवृषमहिषादीनां भयं ज्ञेयम्। जलचर-राशिलग्ने जातो नरः जलप्रमादं=जले प्रबुडनादिभयं समुपैति= प्राप्नोति॥ ३८॥

हिन्दी — जन्मलग्न में बृहस्पति यदि तृतीयेश से युक्त हो तो जातक को चतुष्पदों का या गाय-भैंसों का भय होता है। जलचरराशि यदि जन्मलग्न हो तो जातक को जल प्रमाद होता है अर्थात् उसे जल में डूबने का सन्देह रहता है ॥ ३८ ॥

कुजेन युक्ते खचरे बलिष्ठे सत्वं बलं गानसुखं समेति ।
कुजानुजस्थानजराशिनाथास्त्रयो बलिष्ठा रणरङ्गशूराः ॥ ३९ ॥

संस्कृत — बलिष्ठे=वीर्यशाली खचरे, कुजेन युक्ते=भौमेनसहिते सति तदा जातः सत्वं-बलं गानसुखं च समेति=प्राप्नोति। कुजो=भौमः, अनुजस्थ=तृतीयभावगतः ग्रह, अनुजराशिनाथ=तृतीयेश इति त्रयो ग्रहा यदि जन्मकाले बलिष्ठास्तदा जातः रणरङ्गशूरः=युद्धभूमौ शूरो महाबलो भवतीति भावः ॥ ३९ ॥

हिन्दी — मङ्गल से युक्त यदि बलीग्रह हो तो जातक को पराक्रम-बल और गानसुख प्राप्त होता है। मङ्गल-तृतीयेश और सहजराशिस्थ ग्रह ये तीनों यदि बलवान् हों तो जातक रणभूमि में वीर होता है ॥ ३९ ॥

तेषां त्रयाणामपहारकाले पाकेऽथवा मूलफलादिसौख्यम् ।
श्रोत्रद्वयं भूषणसत्कथादिसंपत्करं भ्रातृसुतादिलाभम् ॥ ४० ॥

संस्कृत — तेषां त्रयाणां (कुजानुजराशिनाथादि) ग्रहाणामपहार काले=अन्तर्दशायामथवा पाके=महादशाकाले मूलफलादिसौख्यमवाप्नोति इति अग्रे स्पष्टम् ॥ ४० ॥

हिन्दी — उन तीनों ग्रहों की अर्न्तदशा या महादशा में फलमूल आदि का सुख, दोनों कानों में सत्कथा का श्रवण-भूषणप्राप्ति तथा भ्रातृपुत्र का लाभ होता है ॥ ३९-४० ॥

कण्ठरोग विचार—

सात्त्विको भवति सोदराधिपे सौम्यवर्गसहिते बलान्विते ।
नीचमूढरिपुपापराशिगे पापखेचरयुते तु साहसी ॥ ४१ ॥

संस्कृत — यदा सोदराधिपे=तृतीयाधिपे, सौम्यवर्गसहिते=शुभग्रहस्य वर्गे गते, बलान्विते=बलयुक्ते च तदा जातः सात्त्विकः=सत्वगुणी (क्षमावान्) भवति। सोदराधिपे यदा नीचे-अस्तमये-रिपुराशिगे-पापराशिगे तथा पापखेचर-युते=पापग्रहेण सहिते च तदा जातः साहसी=रजोगुण (उद्यमयुक्तो) युक्तो भवति ॥ ४१ ॥

हिन्दी — बलवान् तृतीयस्थानेश यदि शुभवर्ग में स्थित हो तो जातक सात्विक होता है। यदि तृतीयेश नीच-अस्त-शत्रुराशि में पापग्रह से युक्त हो तो जातक साहसी होता है ॥ ४१ ॥

शौर्याधिपे राहुसमेतराशिनाथान्विते राहुयुते विलग्ने ।
सर्पाद्भयं विक्रमराशिनाथे बुधेन युक्ते गलरोगभाक् स्यात् ॥ ४२ ॥

संस्कृत — शौर्याधिपे इति। शौर्याधिपे=तृतीयेशे राह्वाधिष्ठितराशिपतिना युक्ते विलग्ने राहुयुते। अर्थात् तृतीयेशो लग्नेशेनान्वितो, राहुर्लग्नगतो च भवेत्, अथवा तृतीयेशो राह्वाक्रान्तराशीशेन सहितः स्यादथवा राहुर्लग्नगतः भवेत्तदा सर्पाद्भयं भवति। विक्रमराशिनाथे=तृतीयेशे बुधेन युक्ते तदा जातो नरो गलरोगभाक्= कण्ठरोगयुक्तो स्यादर्थाद्स्मिन्योगे जातस्य कण्ठे वा ग्रीवाप्रदेशे रोगो भवति ॥ ४२ ॥

हिन्दी — राहु जिसराशि में हो उस राशिपति से तृतीयेश युत हो और लग्न में राहु हो तो सर्प का भय होता है। तृतीयेश यदि बुध से युक्त हो तो जातक को कण्ठ प्रदेश में रोग होता है ॥ ४२ ॥

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मान्द्यादियुते विशेषात् ।
भौमान्विते भानुसुते बलाढ्ये तृतीयराशौ यदि कण्डुरोगम् ॥ ४३ ॥
विक्रमेशगुरु लग्नं गतौ गोभीतिसूचकौ ।
राहुणा वा फणिक्रान्तराशिपेन युतौ यदि ॥ ४४ ॥
सबुधो विक्रमपतिर्गलरोगकरो भवेत् ।
सोत्थेऽरिनीचगे पापे सोत्थाभावो विषादिभुक् ॥ ४५ ॥
बुधेन जीवेन युतेक्षिते वा तृतीयराशौ बलसंयुते च ।
तत्केन्द्रगे मन्त्रिणि बोधने वा कण्ठस्वरं चारुतरं समेति ॥ ४६ ॥

संस्कृत — श्लोकाः स्पष्टार्थाः ॥ ४३-४६ ॥

हिन्दी — यदि पापग्रह तीसरे भाव में हो तो गलरोग हो, यदि तृतीयभाव गुलिक आदि उपग्रह से युक्त हो तो विशेष गलरोग हो, तृतीयभाव में यदि बली होकर मङ्गल-शनि रहें तो खुजली रोग हो।

राहु से अथवा राहु जिसराशि में हो उसराशि के स्वामी से युक्त यदि तृतीयेश और बृहस्पति दोनों हीं लग्न में रहें तो बैल-गाय का भय होता है।

बुध के साथ तृतीयभावका स्वामी हो तो गलरोग उत्पन्न हो, तृतीयभाव में शत्रुगृही का या नीचराशि का यदि पापग्रह रहे तो विष आदि के सेवन से भाई का अभाव होता है।

तृतीयभाव बलवान हो अथवा बुध और गुरु से युत या दृष्ट हो या उसके (तीसरे भाव के) केन्द्र में बृहस्पति या बुध रहें तो सुरीला कण्ठस्वर होता है ॥ ४३-४६ ॥

कर्णभूषण विचार—

तृतीये सौम्यसंयुक्ते सौम्यखेचरवीक्षिते ।
तदीशे शुभसंयुक्ते कर्णयोर्भूषणं वदेत् ॥ ४७ ॥

शुक्रे तृतीये यदि मौक्तिकं तु जीवे तुलस्याभरणं वदन्ति ।
सरक्तमानीलमयं दिनेशे चन्द्रे बहु त्वाभरणं बलाढ्ये ॥ ४८ ॥
सौम्ये श्यामं कुजक्षेत्रे विचित्राभरणं वदेत् ।
तत्पतौ स्वोच्चवर्गस्थे दिव्यमाभरणं लभेत् ॥ ४९ ॥

संस्कृत — श्लोकाः स्पष्टार्थाः ॥ ४७-४९ ॥

हिन्दी — यदि तृतीयभाव में शुभग्रह हो और उसे शुभग्रह हीं देखते हों तथा तृतीयेश शुभग्रह से युक्त हो तो कानों में आभूषण का लाभ होता है।

यदि तृतीयभाव में शुक्र हो तो मोती का आभूषण, गुरु हो तो तुलसी का आभरण, सूर्य हो तो लाल-नीला आभूषण, यदि बलवान चन्द्रमा हो तो बहुत आभरण की प्राप्ति, बुध हो तो श्याम वर्ण का, तृतीयभाव में मङ्गल की राशि हो तो चित्र-विचित्र आभरण, तृतीयेश यदि उच्चस्थान में हो तो दिव्य आभूषण प्राप्त होता है॥ ४८-४९ ॥

वस्त्र विचार—

मानस्थे तुरगेऽथवाऽनुजपतौ सौम्यर्क्षगे तद्युते
दिव्यं वस्त्रमपूर्वमेति सहजे सौम्ये सुवस्त्रं लभेत् ।
वीर्याढ्यौ बहुवस्त्रभूषणकरौ शुक्रानुजस्थानपौ
स्यातां धर्मकथारसश्रवणदौ जीवज्ञयुक्तेक्षितौ ॥ ५० ॥

संस्कृत — मानस्थे इति। अनुपतौ=तृतीयेशौ, मानस्थे=दशमभावस्थे, अथवा तुरगे=अश्व सप्तसंख्यावाचक इति सप्तमभावे, सौम्यर्क्षगे तद्युते= शुभराशिगते शुभग्रह युते च जातः अपूर्वम्=अद्भुतं दिव्यं=मनोरमं वस्त्रमेति=वस्त्रं प्राप्नोति। सहजे=तृतीये सौम्ये=शुभग्रहे सति तदापि सुवस्त्रं=मनोरमं वस्त्रं लभेत्, शुक्रोऽनुजस्थानपतिश्चैतौ, वीर्याढ्यौ=बलसहितौ तदा बहुवस्त्रभूषणकरौ। तौ वीर्याढ्यौ शुक्रानुजस्थानपौ, जीवज्ञयुक्तेक्षितौ=गुरुबुधाभ्यां सहितौ दृष्टौ वा स्यातां तदा धर्मकथारसश्रवणदौ भवतः अर्थात् भागवत-रामायणादि धर्मकथाश्रवणेच्छुको जातको भवति॥ ५० ॥

हिन्दी — तृतीयभावेश दशवें या चतुर्थभाव में हो, सौम्यग्रह की राशि में हो या शुभग्रह से युक्त हो तो दिव्य-अपूर्व वस्त्र प्राप्त होता है। तृतीयभाव में यदि बुध हो तो सुन्दर वस्त्र मिले। शुक्र और तृतीयेश बलवान् रहें तो बहुतवस्त्र और आभूषण प्राप्त होते हैं। यदि वे दोनों बृहस्पति तथा बुध से युक्त या दृष्ट हों तो धर्मकथा श्रवण का सुयोग प्राप्त होता है॥ ५० ॥

धैर्य विचार—

धैर्यान्वितो विक्रमेशे सौम्यग्रहनवांशके ।
शुभेक्षिते शुभयुते वैशेषिकसमन्विते ॥ ५१ ॥
धैर्याधिपे पापयुतेक्षिते वा दुःस्थानगे धैर्यविनाशमेति ।
केन्द्रत्रिकोणे शुभखेटयुक्ते शुभेक्षिते वा यदि धैर्यशाली ॥ ५२ ॥

संस्कृत — श्लोकौ स्पष्टार्थौ सरलार्थौ च ॥ ५१-५२ ॥

हिन्दी — यदि तृतीयेश शुभग्रह के नवांश में रहे तो जातक धैर्यवान् होता है। यदि तृतीयेश शुभग्रह से दृष्ट होकर वैशेपिकांश में रहे तो भी धैर्यवान होता है।

तृतीयभावेश पापग्रह से युत या दृष्ट हो या दुष्टस्थान में हो तो धैर्य का अभाव होता है। यदि केन्द्रस्थान या त्रिकोणस्थान में शुभग्रह से युत या दृष्ट तृतीयेश हो तो जातक धैर्यवान् होता है ॥ ५१-५२ ॥

बल विचार—

वीर्याधिपे भूमिसुतेन युक्ते पापर्क्षगे वीर्यविनाशहेतुः ।
केन्द्रत्रिकोणे ससिते बलाढ्ये वीर्याधिको भोगगुणप्रकाशः ॥ ५३ ॥

संस्कृत — वीर्याधिपे=तृतीयेशे, भूमिसुतेन=भौमेन युक्ते, पापर्क्षगे=पापग्रहस्य राशिगते सति तदा वीर्यविनाशहेतुः=बलहानिकारकं भवति, अर्थात् जातो निर्बलो भवतीतिभावः। केन्द्रे वा त्रिकोणे तृतीयेशे ससिते=शुक्रेण समन्विते, बलाढ्ये=बलसहिते च तदा जातो नरो वीर्याधिको=महाबली भोगगुणप्रकाशयुतश्च भवति ॥ ५३ ॥

हिन्दी — तृतीयभाव का अधिपति भौम से युक्त होकर पापग्रह की राशि में हो तो जातक के बल का विनाश होता है, बलबान् होकर तृतीयभाव का स्वामी शुक्र के साथ केन्द्र या कोण में हो तो जातक अधिक बलवान् तथा भोग आदि गुण से प्रसिद्ध होता है ॥ ५३ ॥

भोजन विचार—

शुक्रं निशाकरं त्यक्त्वा लग्नात्सोदरभे शुभे ॥
शुभराश्यंशगे जातः समेति सुखभोजनम् ॥ ५४ ॥

संस्कृत — शुक्रमिति। शुक्रं, निशाकरं=चन्द्रं च त्यक्त्वा लग्नात्सोदरभे=लग्नस्थानात् तृतीयस्थाने शुभे=शुभग्रहे, शुभराश्यंशगे शुभराशिनवांशे च स्थिते तदा जातः सुखभोजनं समेति=प्राप्नोति ॥ ५४ ॥

हिन्दी — लग्न एवं तृतीयस्थानमें चन्द्र और शुक्र को छोड़ अन्य शुभ (बु. वृ.) ग्रह यदि शुभराशि के नवांश में होकर रहें तो जातक सुभोजन से युक्त होता है ॥ ५४ ॥

जीवस्य राशिनवभागदृगाणसंस्थे
वीर्याधिपे यदि सुरार्चितवीक्षिते वा ।
तत्केन्द्रकोणगृहगेऽवनिजे बलाढ्ये
जातस्तु कन्दफलमूलरसप्रियः स्यात् ॥ ५५ ॥

संस्कृत — वीर्याधिपे=तृतीयभावाधिपे, जीवस्यराशि=गुरोः राशौ (धनुर्मीने) नवभागे=नवांशे, दृकाणे वा संस्थिते, यदि सुरार्चितेन=गुरूणा वीक्षिते=दृष्टे, अथवा तत्केन्द्रकोणगृहगे=तृतीयभावेशात् केन्द्रकोणे (१-४-७-१०-९-५) गते, बलाढ्ये=सबले, अवनिजे=भौमे सति तदा जातः कन्दफलमूलरसप्रियः स्यात् ॥ ५५ ॥

हिन्दी — यदि तृतीयेश बृहस्पति की राशि में, नवांश में या द्रेष्काण में हो अथवा बलवान् मङ्गल उसके (तृतीयेश से) केन्द्र कोण में रहे तो जातक कन्दमूल फल के रस का प्रेमी होता है ॥ ५५ ॥

सोदरारातिगः शुक्रः शोकरोगभयप्रदः ।
तत्रैव शुभकारी स्यात्पुरतो यदि भास्करात् ॥ ५६ ॥

संस्कृत — शुक्र, सोदरारातिगः=तृतीये षष्ठे वा गतः तदा जातस्य शोकरोगभयप्रदो भवति। तत्रैव=तृतीये षष्ठे वा यदि भास्करात् पुरतः=सूर्यादग्रे भवेत्तदाच्छुभकारी भवति। अर्थाच्छुक्र यदि तृतीये षष्ठे वा भवेत्तथा सूर्यो द्वितीये पञ्चमे वा भवेत्तदा शुभकारीति ज्ञेयम् ॥ ५६ ॥

हिन्दी — तृतीय तथा षष्ठस्थान में यदि शुक्र हो तो वह शोक-रोग-भय देने वाला होता है। यदि सूर्य के आगे शुक्र हो तो शुभकारी होता है ॥ ५६ ॥

गुरुशुक्रयुते भुक्तौ नाथे सौम्ययुतेक्षिते ।
बलवच्छुभदृष्टे वा त्वन्नदाता भवेन्नरः ॥ ५७ ॥

संस्कृत — भुक्तौ=द्वितीयभावः गुरूशुक्रयुते, नाथे (भुक्तिनाथे)= द्वितीयेशे, सौम्ययुतेक्षिते=शुभग्रहेण युतदृष्टे अथवा केनचिद्बलवता शुभग्रहेण दृष्टे तदा जातो परेषामन्नदाता (राजतुल्यो) भवति ॥ ५७ ॥

हिन्दी — गुरू और शुक्र से युक्त यदि द्वितीयभाव हो या द्वितीयभावेश शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो अथवा बलवान् शुभग्रह से द्वितीयभाव दृष्ट हो तो जातक अन्नदाता अर्थात् पालनकर्ता होता है ॥ ५७ ॥

सौम्ये स्वोच्चं गते भुक्तौ सौम्यग्रहनिरीक्षिते ।
नाथे वैशेषिकांशे वा सुखभुक्तिप्रदो भवेत् ॥ ५८ ॥

संस्कृत — सौम्ये=बुधगुरुशुक्राः स्वोच्चं गते, भुक्तौ=द्वितीयभावे स्थिते,

सौम्यग्रहेण निरीक्षते, वा नाथे=द्वितीयभावेशे, स्ववैशेषिकांशे (१।४५ श्लो०) गतवति तदा सुखभुक्तिप्रदो भवेत्॥५८॥

हिन्दी — बुध अपनी उच्चराशि का होकर द्वितीयभाव में शुभग्रह से दृष्ट हो या दूसरेभाव का स्वामी वैशेषिकांश में हो तो सुख और भोगदायक होता है॥५८॥

चतुर्थभावफल—

वदन्ति विद्याजननीसुखानि सुगन्धगोबन्धुमनोगुणानि ।
महीपयानक्षितिमन्दिराणि चतुर्थभावप्रभवानि तज्ज्ञाः॥५९॥

संस्कृत — अत्र चतुर्थभावात् विचारणीयानि। **वदन्तीति**। विद्या-जननी-सुख-सुगन्ध-गो-बन्धु-मनोगुण-राज्य-यान-भू-मन्दिराणि च, एतानि चतुर्थभाववशात्प्रभवानि तज्ज्ञाः=दैवज्ञाः वदन्ति॥५९॥

हिन्दी — विद्या, माता, सुख, सुगन्ध, गो, बन्धु, मनोगुण, राज्य, यान (सवारी), भूमि और गृह ये सब चतुर्थभाव से विचारणीय होते हैं ऐसा दैवज्ञ लोग कहते हैं॥५९॥

विद्या विचार—

विद्याराशौ निजपतियुते सौम्ययुक्तेक्षिते वा
जातो विद्याविनयचतुरश्चन्द्रसूनौ बलिष्ठे ।
दुःस्थे पापद्युचरसहिते पापदृष्टे तदीशे
विद्याहीनो भवति मनुजः पापराशिस्थिते वा॥६०॥
विद्यास्थानपजीवचन्द्रतनयाः षट्त्रिव्ययायुःस्थिता
विद्याबुद्धिविवेकहीनफलदा नीचारिगा वा यदि ।
स्वोच्चस्वर्क्षगतास्त्रिकोणगृहगाः केन्द्रस्थिता वा यदि
श्रीविद्याविनयादियुक्तिनिपुणो राजाधिराजप्रियः॥६१॥

संस्कृत — इदानीं विद्याविचारः। विद्याराशौ=चतुर्थभावे, निजपतियुते=चतुर्थभावेशेन युक्ते तत्र शुभग्रहेण युक्तेक्षिते=सहिते वा दृष्टे, वा (चतुर्थभावे) चन्द्रसूनौ बलिष्ठे=बलवति बुधे गतवति तदा जातः विद्या विनय युक्तो चतुरो च भवति। तदीशे=चतुर्थेशे, दुःस्थे=षडष्टव्ययभावस्थे, पापद्युचर=पापग्रहेण सहिते, पापदृष्टे च अथवा पापराशिस्थिते तदा मनुजः विद्याहीनः=मूर्खो भवति।

विद्यास्थानपजीवचन्द्रतनयाः=चतुर्थेश-गुरु-बुधाः, षट्त्रिव्ययायुः (६।३।१२।८) स्थिताः, अथवा नीचारिगाः=नीचे शत्रुगृहे वा गता यदि भवेयुस्तदा जातस्य विद्याबुद्धिविवेकेषु हीनफलदा=अशुभफलदा अर्थात् अस्मिन् योगे जातो नरो विद्याबुद्धिविवेकैर्हीनो भवति। ते (विद्यास्थानपजीवचन्द्रतनयाः)

यदि स्वोच्चे, स्वर्क्षे, लग्नात् त्रिकोण-(९।५) अथवा लग्नात केन्द्रेषु (१।४।७।१०) गता भवेयुस्तदा जातो नरः श्रीविद्याविनयादियुक्तिषु निपुणः, राजाधिराजप्रियश्च भवतीति बोध्यम्॥ ६०-६१॥

हिन्दी — चतुर्थभाव में चतुर्थेश शुभग्रह से युत या दृष्ट हो अथवा बुध चतुर्थभाव में बलवान् हो तो जातक विद्या-विनय से युक्त और चतुर होता है। यदि चतुर्थेश दुष्टस्थान में पापग्रह से युक्त और दृष्ट हो अथवा पापराशि में स्थित हो तो जातक विद्याविहीन होता है।

चतुर्थेश, बृहस्पति और बुध यदि षष्ठ-तृतीय-द्वादश या अष्टमस्थान में हों तो विद्या-बुद्धि-विवेक की हानि करते हैं। यदि ये ग्रह नीच या शत्रुस्थान में हों तो भी यहीं फल देते हैं। यदि ये ग्रह स्वगृही-स्वोच्चस्थान या त्रिकोण में हों अथवा केन्द्र में हों तो जातक श्री-विद्या-विनय आदि से युक्त निपुण तथा राजाधिराज का प्रियपात्र होता है॥ ६०-६१॥

मातृ विचार—

शुक्रे बलिष्ठे यदि वा शशाङ्के सौम्येक्षिते शोभनभागयुक्ते ।
चतुष्टये मातृगृहे बलाढ्ये मातुश्चिरायुष्ट्वमुदाहरन्ति ॥ ६२॥
मातृस्थानाधिपे षष्ठे व्यये वा बलवर्जिते ।
लग्ने पापे पापदृष्टे मातृनाशं वदेद् बुधः ॥ ६३॥
क्षीणे चन्द्रेऽष्टमे षष्ठे व्यये वा पापसंयुते ।
पाताले पापसंयुक्ते मातृहानिर्न संशयः ॥ ६४॥
मातृस्थानगते मन्दे पापग्रहनिरीक्षिते ।
रन्ध्रनाथेऽरिनीचस्थे मातृनाशं विनिर्दिशेत् ॥ ६५॥
भ्रातृपुत्रगते पापे पातालेशेऽरिनीचगे ।
चन्द्रे पापसमायुक्ते मातृरोगं विनिर्दिशेत् ॥ ६६॥

संस्कृत — अत्र मातृविचारः। यदि शुक्रे वा शशाङ्के=चन्द्रे, बलिष्ठे=पूर्णबले, सौम्येक्षिते=शुभग्रहेण निरीक्षिते, शोभन=शुभग्रह भागयुक्ते, चतुष्टये=लग्नात्केन्द्रे गते, मातृगृहे, बलाढ्ये=चतुर्थभावे बलयुक्ते तदा जातस्य मातुः चिरायुष्टवं (दीर्घायुष्यं) दैवज्ञाः समुदाहरन्ति। अग्रे स्पष्टम्॥ ६२-६६॥

हिन्दी — शुक्र या चन्द्रमा बलवान् होकर यदि शुभग्रह से देखा जाता हो और शुभवर्ग में होकर केन्द्र में स्थित हो तथा मातृगृह (चतुर्थ) सबल हो तो जातक की माता दीर्घायु होती है।

बलहीन चतुर्थेश षष्ठभाव या द्वादशभाव में हो लग्नस्थान पापदृष्ट पापयुत हो तो पण्डित लोग माता का नाश (मृत्यु) कहते हैं।

क्षीणचन्द्रमा अष्टम-षष्ठ या व्ययभाव में पापग्रह से युक्त हो और चतुर्थभाव भी पापग्रह से युक्त हो तो माता की हानि (मुत्यु) निःसन्देह होती है।

चतुर्थभाव में शनि हो, पापग्रह उसे देखता हो और अष्टमेश शत्रुगृह में या नीचस्थान में हो तो माता का नाश कहना चाहिए।

तृतीयभाव और पञ्चमभाव पापग्रह से युत हों, चतुर्थेश शत्रुराशि में या नीच राशि में हो तथा चन्द्रमा पापग्रह के साथ हो तो माता को रोग कहना चाहिए॥ ६२-६६॥

पितृ विचार—

षष्ठेश्वरेण सहितः सुखराशिनाथो
धर्मस्थितो जनकमत्र विटं करोति।
भाग्याधिपेन सहितो यदि मातृनाथः
सौख्यस्थितो जनकमत्र विटं करोति॥ ६७॥

संस्कृत — अत्र पितुर्विटत्वमाह—**षष्ठेश्वरेणेति**। सुखराशिनाथः= चतुर्थेशः षष्ठेश्वरेण सहितो यदि धर्म (नवम) स्थितो भवेत्तदा जातस्य जनकं=पितरं विटं धूर्तं कामुकं च करोति। यदि मातृनाथः=चतुर्थभावेशः भाग्याधिपेन=नवमेशेन सहितः सौख्यस्थितः=चतुर्थभावे गतः स्यात्तदाऽत्रापि जनकं विटं करोति॥ ६७॥

हिन्दी — चतुर्थेश यदि षष्ठेश के साथ नवमभाव में स्थित हो तो जातक का पिता धूर्त और कामुक होता है। यदि सुखेश नवमेश के साथ सुखस्थान में हो तो भी धूर्त और कामुक होता है॥ ६७॥

षण्मातृपौ पितृस्थाने पितुश्च व्यभिचारदौ।
मातृतातारिदेहेशैरेकस्थैः परजातकः॥ ६८॥

संस्कृत — षण्मातृपौ=षष्ठेश-चतुर्थेशौ, पितृस्थाने=लग्नान्नवमे भावे स्थितौ तदा पितुः व्यभिचारदौ=परदार लोलुपो अर्थादस्मिन् योगे जातस्य पिताव्यभिचारी भवति। भातृतातारिदेहेशैः=चतुर्थेश-नवमेश-षष्ठेश-लग्नेशेश्चतुर्भिर्ग्रहैरेकत्र यत्र तत्रैकभावगतैस्तदा परजातकः=अन्यपुरूषोत्पादितः जातकः भवेदिति॥ ६८॥

हिन्दी — षष्ठेश और चतुर्थेश नवमभाव में हों तो जातक का पिता व्यभिचारी होता है। चतुर्थेश, नवमेश, षष्ठेश और लग्नेश एकस्थान में हों तो जातक दूसरे से उत्पन्न होता है॥ ६८॥

पापेक्षिते पापयुते शशाङ्के दिवाकरे वा यदि केन्द्रराशौ।
क्रूरे सुखे वा यदि पापदृष्टे जातो नरः स्याद्यदि मातृगामी॥ ६९॥

चन्द्रे भृगौ वा केन्द्रस्थे पापदृष्टेऽथवा द्वयोः ।
क्रूरे सुखे मातृगामी यदि वां गुरुदारभाक् ॥ ७० ॥

संस्कृत — पापेक्षिते इति। शशाङ्के दिवाकरेण वा=चन्द्रे वा सूर्ये पापग्रहेण दृष्टे युते च यदि केन्द्रराशौ स्थिते अथवा यदि क्रूरे=पापग्रहे सुखे गते तत्र पापदृष्टे चेत्तदा जातो नरः मातृगामी=माता सह कुत्सितकृद्भवेत्।

चन्द्रे वा भृगौ=शुक्रे, केन्द्रस्थे तत्र पापेन दृष्टे च, अथवा द्वयोः=चन्द्रशुक्रयोः केन्द्रस्थयोः तत्केन्द्रतः सुखे=चतुर्थस्थाने क्रूरे=पापग्रहयुते सति तदा जातो मातृगामी यदि वा=अथवा गुरूदारभाक्=गुरूपत्नीगामी भवतीति भावः ॥ ६९-७० ॥

हिन्दी — चन्द्रमा या सूर्य पापग्रह से दृष्ट या युत होकर केन्द्र में स्थित हों अथवा क्रूरग्रह चतुर्थभाव में हो और पापग्रह सुखभाव को देखता हो तो वह जातक मातृगामी होता है।

चन्द्रमा या शुक्र केन्द्र में हों और पापग्रह से दृष्ट हों अथवा दोनों के स्थान से चतुर्थ में पापग्रह स्थित हों तो वह जातक मातृगामी या गुरुपत्नीगामी होता है ॥ ६९-७० ॥

सुखस्थे सारषष्ठेशे चन्द्रे माताऽन्यमैथुनी ।
व्यभिचारप्रदो मातुः सराहुर्दिननायकः ॥ ७१ ॥
शीतांशौ राहुकेतुभ्यां युक्ते नीचेन सङ्गमः ।
मन्दयुक्ते च शूद्रेण वैश्येन बुधयोगतः ॥ ७२ ॥
रवियुक्ते क्षत्रियेण मन्त्रिभ्यां द्विजसङ्गमः ।
एवं चन्द्रः कुजारीशयुक्तस्तत्फलदो भवेत् ॥ ७३ ॥

संस्कृत — सुखस्थे इति। सुखस्थे सारषष्ठेशे=भौम-षष्ठेशाभ्यां सहितश्चतुर्थे चन्द्रः भवेत्तदा माताऽन्यमैथुनी=माता परपुरुषेण मैथुनमुपयाति। सराहुर्दिननायकः सूर्यो राहुणा सहितश्चतुर्थे तदा मातुः व्यभिचारः (अन्यान्यपुरुषसङ्ग) प्रदो भवति। चन्द्रे राहुणा केतुना वा युक्ते सुखस्थे सति तदा मातुः नीचेन=हीनजातिपुरूषेण सह सङ्गमप्रदो, सुखस्थे चन्द्रे मन्देन=शनिना युक्ते सति तदा शूद्रेण, बुधयोगतः=बुधेन युक्ते चन्द्रे वैश्येन, रविणा युक्ते क्षत्रियेण, मन्त्रिभ्यां=गुरूणा-शुक्रेण च युक्ते द्विजेन=ब्राह्मणेन सह सङ्गमो वाच्यः। एवं कुजारीशयुक्तः=भौमषष्ठेशाभ्यां सहितश्चतुर्थे चन्द्रः स्थितस्तत्फलदः=व्यभिचारी-प्रवृत्तिकरः स्यादिति ॥ ७१-७३ ॥

हिन्दी — मङ्गल के साथ षष्ठेश और चन्द्र यदि सुखभाव में हों तो उसकी माता दूसरे से मैथुन कराती है। राहु के साथ सूर्य यदि चतुर्थभाव में हो तो भी उसकी माता व्यभिचारिणी होती है।

चन्द्र यदि राहु या केतु से युक्त चतुर्थभाव में हो तो नीचजाति से, शनि से युक्त हो तो शूद्र से, बुध से युक्त हो तो वैश्य से, सूर्य से युक्त हो तो क्षत्रिय से और बृहस्पति या शुक्र से युक्त हो तो ब्राह्मण से जातक की माता मैथुन कराती है। इसी तरह चन्द्रमा यदि भौम और षष्ठेश से युक्त हो तब भी यहीं फल होता है ॥ ७१-७३ ॥

चन्द्रोऽनिष्टस्थानगः सानुजेशो जातस्यान्यस्तन्यपानं करोति ।
दुःस्थानस्थौ मातृपितृक्षनाथौ पित्रोमृत्युर्लग्ननाथे बलाढ्ये ॥ ७४ ॥

संस्कृत — सानुजेशः=तृंतीयभावपतिना युतश्चन्द्रः, अनिष्टस्थानगतस्तदा जातः अन्यस्तन्यपानं करोति, अर्थाद्स्मिन्योगे उत्पन्नो जातो मातृहीनो भवति। मातृपितृक्षनाथौ=चतुर्थनवमभावपतौ, दुःस्थानगती लग्ननाथे=लग्नेशे च बलाढ्ये सति तदा जातस्य पित्रोः=मातुः पितुश्च मृत्युः=मरणं भवतीति ज्ञेयम् ॥ ७४ ॥

हिन्दी — तृतीयेश के साथ चन्द्रमा यदि अनिष्ट (६-८-१२) स्थान में हो तो जातक माता के बदले दूसरी स्त्री का दूध पीता है। सुखेश व नवमेश यदि दुष्टस्थान (६-८-१२) में हों तथा लग्नपति बली हो तो माता और पिता की मृत्यु होती है ॥ ७४ ॥

पितृकर्माऽधिपे दुःस्थे लग्नेशे बलसंयुते ।
पित्रोरनिष्टकारी स्यात् सीमन्तरहितोऽथवा ॥ ७५ ॥

संस्कृत — पितृकर्माधिपे=पितृ (नवम) भावस्य कर्माधिपो दशमेशो अर्थात् लग्नात्षष्ठभावेशः, दुःस्थे=षडष्टव्ययगते, लग्नेशे=जन्मलग्नपतौ बलसंयुते= बलसहिते सति तदा जातः पित्रोः=मातुः पितुश्चानिष्टकारी स्यात, अथवा स्वयं सीमन्तनाम्ना गर्भसंस्कारेण रहितो भवतीति ॥ ७५ ॥

हिन्दी — पितृभाव (नवम) का दशमेश (षष्ठभावेश) दुष्टस्थान में हो, लग्नेश बलवान हो तो जातक माता और पिता का अनिष्ट करता है, अथवा वह सीमन्त संस्कार से विहीन होता है ॥ ७५ ॥

मातृस्थानेशलग्नेशौ तत्र कोणगतौ यदि ।
तदीशो लग्नगो माता पित्रा सह मृता भवेत् ॥ ७६ ॥

संस्कृत — मातृस्थानेश लग्नेशौ यदि कोण (९।५) गतौ भवेतां, तदीशः=त्रिकोणेशः (पञ्चमेशो वा नवमेशो) लग्नगतः भवेत्तदा जातस्य माता पित्रा सह मृता अर्थात् द्वयोर्मरणं भवेत् ॥ ७६ ॥

हिन्दी — यदि चतुर्थेश और लग्नेश त्रिकोण में हों और उस त्रिकोणस्थान का स्वामी लग्न में रहे तो जातक की माता पिता के साथ मृत्यु को प्राप्त करती है ॥ ७६ ॥

मातृलग्नेशपितृपाः केन्द्रकोणस्थिता यदि ।
तद्दशान्तर्द्दशाकाले जनन्यास्त्वनुमृत्युदाः ॥७७॥

संस्कृत — मातृलग्नेशपितृपाः=चतुर्थ-प्रथम-नवमभावाधिपाः, यदि केन्द्र कोण-(१।४।७।१०।५।९) स्थितास्तदा तद्दशान्तर्दशाकाले (यो बलीयांस्तद्दशान्तर्दशायां) जनन्यास्त्वनुमृत्युदा अर्थादग्रे मातुःपश्चात्पितुः मरणं भवेदित्यर्थः ॥७७॥

हिन्दी — यदि सुखेश-लग्नेश और नवमेश केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हों तो उनकी दशा-अन्तर्दशा के समय माता की मृत्यु होती है ॥७७॥

रवीन्दू पितृमातृस्थौ यदि तावनुमृत्युदौ ।
तदीशेक्षितयुक्ता वा रविसम्बन्धिनस्तथा ॥७८॥

संस्कृत — रवीन्दू=सूर्यचन्द्रौ, पितृमातृस्थौ=नवम वा चतुर्थगतौ तदा तौः अनुमृत्युदौ=जनन्याः-पितुः मरणकारकौ भवतः। अथवा रविसम्बन्धिनः=सूर्यसम्बन्धिनः (सूर्यस्य मित्रं वा दृष्टः वा युक्तः वा राशिस्थो भवेत्) तदीशेक्षित-युक्ताः=चतुर्थेशनवमेशेन दृष्टा युक्ताश्चेत्तदा तथा अनुमृत्युदा भवन्तीतिभावः ॥७८॥

हिन्दी — सूर्य और चन्द्र यदि पिता माता के (नवम-चतुर्थ) भाव में हों तो दोनों की मृत्यु होती है, अथवा नवमेश या चतुर्थेश के राशिस्वामी से दृष्ट या युत सूर्य हों तो भी यही फल होता है ॥७८॥

ये मातृभावपतिकारकतत्समेता-
स्तन्मातृराशिगतवीक्षितखेचरेन्द्राः ॥
तेषामनिष्टकरखेटदशापहारे
जातस्य मातृमरणं प्रवदन्ति सन्तः ॥७९॥

संस्कृत — अधुना मातुः मरणदशा—**ये इति**। मातृभावपतिः=चतुर्थेशः, कारकः=मातृकारक (चन्द्रःग्रहः) तत्समेतः=मातृभावगत ये ग्रहास्तथा तन्मातृ-राशि(भाव)गतग्रहेण वीक्षिता ये खेचरेन्द्राः=ग्रहाः, तेषां मध्ये यो अनिष्टकरः खेटः (यो मात्ररिष्टदो) तस्य दशापहारे=दशामन्तर्दशायां जातस्य मातुः मरणं सन्तः=दैवज्ञाः प्रवदन्ति ॥७९॥

हिन्दी — चतुर्थेश, मातृकारक, चतुर्थस्थ और चतुर्थदर्शी इन ग्रहों में जो ग्रह सबमे अनिष्टकारक हो उसकी दशा अन्तर्द्दशा में जातक की माता का मरण होता है ऐसा विद्वानों ने कहा है ॥७९॥

मार्तण्डस्फुटतो विशोध्य शशिनं तच्छेषराश्यंशके
जीवे भानुसुते च मातृमरणं तत्कोणगे वा नृणाम् ।

संशोध्यं यमकण्टकं हिमकराद्रन्ध्राधिपस्य स्फुटं
तद्राशौ रविनन्दने मृतिमुपैत्यम्बा तदंशे रवौ ॥८०॥

संस्कृत — मार्त्तण्डस्फुटतः शशिनं विशोध्य=सूर्यस्पष्टराश्यादितश्चन्द्रस्पष्टमूनीकृत्य तच्छेषराश्यंशके=शेष राशौ यन्नवांश स्यात् तन्नवांशे च गते जीवे=गुरौ, भानुसुते=शनैश्चरे च, अथवा तत्कोणगे=तच्छेषराशिसंख्यातः कोणे (९।५) गते जीवे शनौ च तदा नृणां मातृमरणं भवति। अर्थात् चन्द्रेण विरहिते सूर्ये यच्छेषं भवति तस्मिन् राशौ गतवति शनौ तच्छेषांशके गतवति गुरौ च जातस्य मातृमरणं ज्ञेयम्। हिमकराच्चन्द्राद्रन्ध्राधिपस्याष्टमस्थानपतेः स्फुटे (जन्मकालिकचन्द्रादष्टमराशीशग्रहस्यस्फुटराश्यादितः) यमकण्टकः (२।६) संशोध्य, तद्राशौ=शेष राशौ रविनन्दने=शनैश्चरे, तदंशे=शेषमितेंऽशे गते रवौ च तस्य जातस्याम्बा=जननी, मृतिं=मरणं प्राप्नोति ॥८०॥

हिन्दी — राश्यादिस्पष्टसूर्य में स्पष्टचन्द्रमा को घटानेपर जो शेषराशि हो उसके नवांश में या उस शेषराशि से त्रिकोण में जब बृहस्पति-शनि आवें तो माता का मरण होता है। चन्द्रमा से आठवें राशि के स्वामी में यमकण्टक (अ. २।६) को घटानेपर जो शेष बचे उसराशि में शनि और अंश में जब सूर्य आवे तब माता की मृत्यु होती है ॥८०॥

सुख विचार—

गोपुराद्यंशके जीवे सुखस्थानगतेऽपि वा ।
धनायवृद्धिभावेषु खेटेषु च सुखी भवेत् ॥८१॥
बुधदृष्टियुते सौख्ये सौम्यमध्यगतेऽथवा ।
जीवराश्यंशके वाऽपि पुण्यकर्मरतः सदा ॥८२॥
सुखस्थितः शोभनराशिगो बली विलग्नसम्बन्धगुणाधिको यदि ।
तज्जातिवर्गेण सुखं निरन्तरं तदीयधातुः श्रियमेति मानवः ॥८३॥
चतुर्थगो नीचसपत्नयातस्त्वनिष्टभावाधिपतिर्विलग्नात् ।
लग्नेशशत्रुर्यदि तत्प्रकोपात् शरीरसौख्यादिविनाशमाहुः ॥८४॥
चतुर्थभावस्थितदर्शिकारका बलान्विता यद्यतिसौख्यहेतुकाः ।
अनिष्टदा नीचसपत्नमूढगाः सुखं शुभेनाशुभमन्यखेचरैः ॥८५॥
चतुर्थगे भाग्यपतौ सशुक्रे बलाधिके स्याच्चिरकालभोगी ।
शुभान्विते रन्ध्ररिपुव्ययस्थे जातोऽल्पकालं समुपैति सौख्यम् ॥८६॥

संस्कृत — अधुना सुखविचार—**गोपुराद्यंशक** इत्यादिपञ्चभिः श्लोकैराह। श्लोकाः सरलार्थाः स्पष्टार्थाः ॥८१-८६॥

हिन्दी — यदि बृहस्पति गोपुराद्यंश में हो अथवा सुखस्थान में हो, द्वितीय एकादश और चतुर्थ भावों में अन्यग्रह हों तो जातक सुखी होता है।

चतुर्थभाव पर बुध की दृष्टि हो, अथवा चतुर्थभाव दो शुभग्रहों के बीच में या बृहस्पति के राशि नवांश में हो तो जातक सदा पुण्यकर्म में रत होता है।

शुभराशि का होकर बलवान् ग्रह चौथेभाव में स्थित हो तथा लग्न से सम्बन्धित हो एवं अधिक गुण (शुभबिन्दु) युक्त हो तो उसग्रह की जातिवाले मनुष्यों से जातक को सदा सुख मिलता है और उसग्रह के धातु व्यवसाय से उसे धन होता है॥ ८३॥

लग्न से अनिष्ट (६-८-१२) भाव का स्वामी चतुर्थ में स्थित होकर नीच या शत्रुगृह में प्राप्त हो और चतुर्थेश यदि लग्नेश का शत्रु हो तो उसके प्रकोप से शरीर के सुखादि का नाश होता है।

चतुर्थभावस्थित-चतुर्थदर्शी-चतुर्थ का कारक (चन्द्र-बुध) ये तीनों ग्रह बलवान् हों तो अत्यन्तसुख होता है। यदि वे सब नीच-शत्रुगृह या अस्तंगत हों तो अनिष्टकारक होते हैं। ये तीनों ग्रह शुभ हों तो सुख अन्यथा अशुभ होता है।

चतुर्थभाव में नवमेश यदि शुक्र के साथ हो तथा विशेष बलवान् हो तो जातक बहुतकाल तक सुखी रहता है। शुभग्रह से युक्त चतुर्थेश यदि अष्टम-षष्ठ या व्यय में हो तो जातक को अल्पसमय तक हीं सुख होता है॥ ८१-८६॥

चिन्ता विचार—

सुखचिन्ता गृहेज्याभ्यां मातृचिन्ता सुखेन्दुतः।
सुगन्धं गृहशुक्राभ्यां वस्त्रवाहनभूषणम्॥ ८७॥

संस्कृत — अधुना सुख विचारमाह-सुखचिन्तेति। गृहं=चतुर्थभावः, इज्य बृहस्पतिआभ्यां सुखचिन्ता=सुखस्य विचारः, सुखेन्दुतः=चतुर्थभावचन्द्राभ्यां मातृचिन्ता=मातृविचारः, गृह=चतुर्थभावशुक्राभ्यां सुगन्धविचारः तथा चतुर्थभाव शुक्रेण वस्त्र-वाहन-भूषणानां च विचारः कर्त्तव्यः। अर्थात् चतुर्थभावस्य तत्तदोक्त-ग्रहस्य च शुभाशुभस्थितिवशात् सुखादीनां न्यूनाधिकत्वं विनिर्दिशेदिति भावः॥ ८७॥

हिन्दी — चतुर्थभाव और गुरु से सुख की चिन्ता, चतुर्थभाव और चन्द्रमा से माता की चिन्ता तथा सुखभाव और शुक्र से सुगन्ध-वस्त्र-वाहन-भूषण की चिन्ता करनी चाहिए॥ ८७॥

सुगन्धि विचार—

सुखेश्वरे शोभनराशियुक्ते शुक्रेण दृष्टे सति संयुते वा।
अरातिनीचग्रहदृष्टिहीने सुगन्धमाल्यादिसुखं समेति॥ ८८॥

संस्कृत — सुखेश्वरे=चतुर्थेशे, शोभनराशियुक्ते=शुभराशिगते, शुक्रेण दृष्टे वा संयुते एवं अरातिनीचग्रहदृष्टिहीने=शत्रुगृहगतेन नीचराशिगतेन च ग्रहदृष्टिहीने सति तदा जातः सुगन्धद्रव्याणां माल्यादीनां च सुखं समेति=प्राप्नोति ॥ ८८ ॥

हिन्दी — चतुर्थेश शुभराशि में हो और शुक्र उसे देखता हो अथवा वह शुक्र से युक्त हो तथा शत्रु ग्रह अथवा नीचराशिगत ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो जातक सुगन्ध-माला-आभरणादि के सुख से युक्त होता है ॥ ८८ ॥

वस्त्रविचार—

वीर्यान्विते शीतकरे सुवस्त्रं साहिध्वजे जीर्णतरं समेति ।
कौशेयकं जीवयुते च रत्न चित्रं सशुक्रे सशनौ तु कृष्णम् ॥ ८९ ॥

संस्कृत — अत्र वस्त्रविचारः। शीतकरे=चन्द्रे वीर्यान्विते=बलैर्युक्ते तदा सुवस्त्रं=उत्तमं वासः प्राप्नोति तथा चन्द्रे साहिध्वजे=राहुणा केतुना वा सहिते सति तदा जातं जीर्णतरं वस्त्रं समेति=प्राप्नोति। चन्द्रे जीवयुते=गुरुणा युते तदा कौशेयकं वस्त्रम्, चन्द्रे सशुक्रे=शुक्रेण सहिते तदा रत्नचित्रं=रत्नादिभिर्विचित्रत्वं वस्त्रम्। सशनौ=शनियुक्ते चन्द्रे तु कृष्णं वस्त्रं जातः समेति=प्राप्नोति। अत्र चन्द्रेण सूर्य-कुज-बुधयुक्ते सति वस्त्रं नोक्तमिति अतः सूर्ययुते चन्द्रे स्फुटितं वस्त्रं, कुजयुते दग्धं, बुधयुते विविधकलायुतं वस्त्रं ज्ञेयमिति ॥ ८९ ॥

हिन्दी — लग्नकाल में यदि बलवान् चन्द्रमा हो तो सुन्दर वस्त्र प्राप्त हो। चन्द्रमा यदि राहु-केतु से युक्त हो तो जीर्णवस्त्र, बृहस्पति से युक्त हो तो कौशेय वस्त्र (रेशमी), शुक्र से युक्त हो तो रत्नादि चित्रितवस्त्र तथा शनि से युक्त हो तो कालावस्त्र प्राप्त होता है ॥ ८९ ॥

पशुविचार—

शुक्रेन्दुवर्गसहिते सुखराशिनाथे
शुक्रेण शीतरुचिना सहितेक्षिते वा ।
नीचारिपापगगनाटनदृष्टिमुक्ते
पश्वादिवित्तमखिलं लभते मनुष्यः ॥ ९० ॥

संस्कृत — अत्र पश्वादि विचारः। सुखराशिनाथे=चतुर्थेशे शुक्रचन्द्रयोः वर्गे स्थिते तत्र शुक्रेण चन्द्रेण वा युते दृष्टे एवं नीचारि पापगगनाटनानां=अशुभकारक ग्रहाणां, दृष्टिमुक्ते=दृष्टिरहिते सति तदा मनुष्यः अखिलं पश्वादिवित्तं गो-महिषी-घोटक-गजादिधनं लभते ॥ ९० ॥

हिन्दी — चतुर्थेश शुक्र या चन्द्र के वर्ग में होकर शुक्र और चन्द्र से युक्त हो अथवा देखा जाता हो तथा नीचस्थ या शत्रुगृहगत या पापग्रह से दृष्ट न हो तो मनुष्य सम्पूर्ण पशु आदि धन को प्राप्त करता है ॥ ९० ॥

बन्धु विचार—

बन्धुस्थानेश्वरे सौम्ये सौम्यग्रहनिरीक्षिते ।
कारके बलसंपूर्णे बन्धुपूज्यो भवेन्नरः ॥९१॥
बन्धूपकर्ता तन्नाथे केन्द्रकोणायसंयुते ।
वैशेषिकांशसंयुक्ते पापदृग्योगवर्जिते ॥९२॥
बन्धुद्वेषी भवेन्नित्यं पापाक्रान्ते रसातले ।
नीचास्तखेट संयुक्ते शुभदृग्योगवर्जिते ॥९३॥

संस्कृत — अत्र बन्धुविचारः. श्लोकाः सरलार्थाः स्पष्टार्थाः ॥९१-९३॥

हिन्दी — चतुर्थेश शुभग्रह हो, शुभग्रह उसे देखते हों और सुखभाव का कारकग्रह (बु. चं.) बल से परिपूर्ण हो तो मनुष्य बन्धुओं से पूज्य होता है।

चतुर्थेश केन्द्र-कोण या लाभस्थान में स्थित हो तथा वैशेषिकांश (१/४४) का हो और पापग्रह से दृष्टयुत न हो तो जातक बन्धुओं का उपकार करनेवाला होता है।

पापग्रह यदि चतुर्थभाव में नीचराशिगत या अस्तंगत ग्रह के साथ स्थित हो और उसका शुभग्रह से दृष्टियोग न हों तो वह सदा बन्धुओं का विरोधी होता है ॥९१-९३॥

मनोवृत्ति विचार—

सपापे रन्ध्रपे सौख्ये कपटी पापसंयुते ।
स्वोच्चमित्रस्ववर्गस्थे निष्कापट्यं शुभेक्षिते ॥९४॥
विशुद्धहृदयः शान्तो हृदयेशे बलान्विते ।
गोपुराद्यंशके वापि मृद्वंशादिसमन्विते ॥९५॥

संस्कृत — अत्र जातस्य मनोगुणविचारः, श्लोकौ सरलार्थौ ॥९४-९५॥

हिन्दी — यदि अष्टमेश पापग्रह से युत हो और पापग्रह चतुर्थभाव में हो तो जातक कपटी होता है। अष्टमेश यदि स्वोच्च-मित्र-स्ववर्ग में हो और शुभग्रह उसे देखते हों तो जातक कपटी नहीं होता है।

हृदयेश (चतुर्थेश) बलवान् हो, गोपुरांश या मृदु अंशादि (षष्ट्यंश) में हो तो जातक विशुद्धहृदय तथा शान्तचित्त का होता है ॥९४-९५॥

वाहन विचार—

वाहनेशे बलयुते यानराशौ बलान्विते ।
शुभग्रहेण संदृष्टे वाहनादि फलं वदेत् ॥९६॥

वाहनेशे वाहनस्थे सेन्दुजे शुभवीक्षिते ।
शुभखेचरराश्यंशे वाहनादि फलं वदेत् ॥ ९७॥
चन्द्रो विलग्नसंबन्धी वाहनेशसमन्वितः ।
तुरङ्गवाहनं तस्य वदन्ति मुनिपुङ्गवाः ॥ ९८॥
द्वितीये वा चतुर्थे वा चन्द्रे शोभनराशिगे ।
शुभखेचरसंयुक्ते समुपैत्यश्ववाहनम् ॥ ९९॥
सेन्दौ चतुर्थाधिपतौ विलग्ने
लग्नेश्वरेणापि युतेऽश्वलाभम् ।
शुक्रेण युक्ते यदि वाहनेशे
देहान्विते वा नरवाहनं स्यात् ॥ १००॥
आन्दोलिकाभरणदौ सितपूर्णचन्द्रौ
केन्द्रत्रिकोणगृहगौ बलिनौ भवेताम् ।
रक्ताम्बराभरणदः सुरपूजितर्क्षे
चन्द्रे सुरेन्द्रसचिवेक्षितसंयुते वा ॥ १०१॥
आन्दोलिकातुरगलाभमुपैति जातः
शुक्रेन्दुयानपतयस्तनुनाथयुक्ताः ।
एकत्र देवगुरुयानपचन्द्रशुक्राः
केन्द्रत्रिकोणगृहगाश्चतुरङ्गयानम् ॥ १०२॥
वाहनेशे गुरुयुते चतुरङ्गाख्यवाहनम् ।
यानेशे सशुभे माने चामरच्छत्रसंयुतः ॥ १०३॥
सुखेश्वरे केन्द्रगते तदीशे लग्नस्थिते वाहनयोगवन्तः ।
कर्मेश्वरे लाभगते तदीशे कर्मस्थिते भूषणयानवन्तः ॥ १०४॥

संस्कृत — इदानीं वाहनविचार नवभिः श्लोकैः। तत्र श्लोकाश्च सरलार्थाः ॥ ९६–१०४॥

हिन्दी — चतुर्थेश और चतुर्थभाव बली हों तथा शुभग्रह से दृष्ट हों तो जातक को वाहन आदि का सुख प्राप्त होता है।

सुखेश चतुर्थभाव में बुध के साथ हो, शुभग्रह उसे देखते हों और शुभग्रह की राशि या नवांश में हो तो वाहनादि की प्राप्ति होती है।

चन्द्रमा जन्मलग्न से सम्बन्धित हो और वह सुखेश से युक्त हो तो उस जातक को घोड़ा आदि वाहन प्राप्त होता है ऐसा श्रेष्ठमुनि कहते हैं।

द्वितीय या चतुर्थ भावगत चन्द्रमा शुभराशि में हो और शुभग्रह से युक्त हो तो उस जातक को घोड़ा आदि वाहन मिलता है।

चतुर्थेश चन्द्रमा के साथ लग्न में हो तथा लग्नेश भी वहीं हो तो उस जातक को घोड़े का लाभ होता है। यदि चतुर्थेश शुक्र से युक्त होकर लग्न में रहे तो उसे नरवाहन प्राप्त होता है।

बलवान् शुक्र तथा पूर्णचन्द्रमा केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हों तो आन्दोलिका (पालकी) और आभरण को देते हैं। यदि वे दोनों बृहस्पति के गृह में हों तो रक्तवस्त्र और भूषण को देते हैं। चन्द्रमा यदि बृहस्पति से दृष्ट-युत हो तो भी यहीं फल (रक्तवस्त्राभूषणलाभ) होता है।

शुक्र, चन्द्रमा और चतुर्थेश लग्नेश से युक्त हों तो आन्दोलिका (पालकी) और तुरङ्ग (घोड़ा) का लाभ, बृहस्पति-सुखेश-चन्द्रमा और शुक्र एकत्र होकर केन्द्र या त्रिकोण में हों तो चतुष्पदयान (सवारी) का सुख प्रास होता है।

यदि चतुर्थेश बृहस्पति से युक्त हो तो चतुरंगवाहन प्राप्त होता है। चतुर्थेश शुभग्रह के साथ दशम में हो तो जातक चामर-छत्र से युक्त (राजा) होता है।

चतुर्थेश केन्द्र में हो और उस केन्द्रस्थान का स्वामी लग्न में हो तो वह जातक वाहनवाला होता है। दशमेश एकादश में हो और लाभेश दशम में हो तो जातक भूषण तथा सवारी से युक्त होता है॥ ९६-१०४॥

राज्यविचार—

यानेशे लाभराशिस्थे सुखे वा लाभगे कुजे।
अथवा भौमराशिस्थे राज्यप्राप्तिर्न संशयः॥१०५॥

संस्कृत — अत्र राज्यप्राप्तियोगम्—**यानेशे** इति। **यानेशे**=चतुर्थेशे **लाभराशिस्थे**=एकादशभावगते **कुजे**=भौमे **सुखे**=चतुर्थे वा **लाभगे, अथवा भौमराशि**(मे.वृश्चि.)**स्थे** तदा राज्यप्राप्तिर्भवतीत्यत्र न संशयः।

यथा सर्वार्थ चिन्तामणौ (४/१६४)—

क्षेत्रेश्वरे लाभगते बलाढ्ये बन्धौ भवे वा क्षितिसुनुयुक्ते।
भूसुनुराशौ यदि वा सुखेशे राज्यार्थसौख्याभरणादियानम्॥ १०५॥

हिन्दी — चतुर्थेश एकादशभाव या चतुर्थभाव में हो, मङ्गल लाभ में हो या उन स्थानों में मङ्गल की (मे.वृ.) राशि हो तो जातक को निसंदेह राज्य प्राप्त होता है॥ १०५॥

लग्नाद्वाहनराशिगस्तदधिपस्तद्वीक्षकश्च त्रयः
स्वोच्चस्वर्क्षसुहृद्गृहेषु बलिनः केन्द्रत्रिकोणायगाः।
दीर्घायुः शयनासनाम्बरंबहुक्षेत्राणि सन्मन्दिरं
बन्धुस्नेहमनोज्ञवाहनयशः सौख्यानि कुर्वन्ति ते॥ १०६॥

संस्कृत — लग्नाद् वाहनराशिगः=जन्म लग्नात् चतुर्थस्थानगतः तदधिपः

=चतुर्थभावेशः तद्वीक्षकः=चतुर्थभाववीक्षकश्चैते ग्रहा बलिनः भूत्वा स्वोच्चराशि, स्वराशि, मित्रराशिषु अवस्थिता यदा केन्द्रत्रिकोणायेषु (१।४।७।१०। ९।५।११) गता भवेयुस्तदा ते ग्रहा जातस्य दीर्घायुः शयनासनाम्बरबहुक्षेत्राणि सन्मन्दिरं बन्धुस्नेहमनोज्ञ-वाहनयशः सौख्यानि युक्तानि कुर्वन्ति॥ १०६॥

हिन्दी — चतुर्थस्थग्रह, चतुर्थेश और चतुर्थदर्शी ये तीनों ग्रह यदि स्वोच्चराशि, स्वराशि या मित्रराशि में स्थित होकर बली हों, एवं (तीनोंग्रह) केन्द्र, त्रिकोण या एकादश में हों तो वे जातक को दीर्घायु-शयन-आसन-वस्त्र-भूक्षेत्र-उत्तमगृह-बन्धुस्नेह-मनोनुकूलसुख-वाहन-यश और सौख्य को देते हैं॥ १०६॥

स्वोच्चराशिगतश्चान्द्रिः केन्द्रकोणसमन्वितः।
विद्यावाहनसंपत्तिं करोति विपुलं धनम्॥ १०७॥

संस्कृत — चान्द्रिः=बुधः, स्वोच्चराशिगतः=कन्याराशिगतः केन्द्रे (१।४।७।१०) वा कोणे (५।९) समन्वितो तदा विद्यावाहनसम्पत्तिं विपुलं धनं च करोति॥ १०७॥

हिन्दी — बुध अपनी उच्चराशि में होकर केन्द्र या कोण (१-४-७-१०-'५-९) में हो तो जातक विद्या, वाहन, सम्पत्ति और विपुल धनवाला होता है॥ १०७॥

लग्नेशात्सुखनाथतद्भवनगौ भाग्येशभाग्यस्थितौ
चत्वारः शुभवर्गगाः सुबलिनस्ते लग्नसंबन्धिनः।
अन्योन्याश्रितवीक्षिता यदि महीपालश्चिरायुः सुखी
तेजस्वी चतुरङ्गयानविपुलश्रीराजचिह्नाङ्कितः॥ १०८॥

संस्कृत — लग्नेशात्सुखनाथः=चतुर्थेशः, तद्भवनगः=चतुर्थभावगतश्चेतौ ग्रहौ तथा लग्नेशाद्भाग्येशः=नवमभावेशः, भाग्यस्थितः=नवमभावगतग्रह एते चत्वारो ग्रहाः शुभवर्गगाः सुबलिनो भूत्वा ते यदि लग्नसम्बन्धिनस्स्युस्तथा अन्योन्याश्रित वीक्षिताः=परस्परं राशिस्था दृष्टा वा भवेयुस्तदा जातो महीपालः=राजा, चिरायुः=दीर्घायु, सुखी, तेजस्वी, चतुरङ्गयानविपुलश्रीराजचिह्नाङ्कितः=चक्रवर्ती राजा भवति॥ १०८॥

हिन्दी — चतुर्थभावगतग्रह-चतुर्थेश-नवमेश और नवमभावस्थ ग्रह ये चारों ग्रह यदि बली हों, शुभवर्ग में हों, लग्न से सम्बन्धित हों, परस्पर गृहस्थित और परस्पर दृष्टिगत हों तो जातक दीर्घायु-सुखी-तेजस्वी-चतुरङ्ग सवारी, विपुललक्ष्मी और राजचिह्न से अङ्कित राजा होता है॥ १०८॥

ग्रहत्रयं स्थानबलाधिकं चेद्विचित्ररत्नाभरणादि यानम्॥
खेटद्वये वीर्ययुते विलग्ने तदीयपाके समुपैति सौख्यम्॥ १०९॥

संस्कृत — पूर्वोक्त १०८ श्लोके ग्रहचतुष्टये यदि ग्रहत्रयं

स्थानबलेनाधिकं चेत्तदा जातो नरो विचित्ररत्नाभरणादि, यानं=वाहनसौख्यं च प्राप्नोति। यदि खेटद्वये वीर्ययुते विलग्ने गते चेत्तदा तदीयपाके=तद्ग्रहदशाकाले जातः सौख्यं समुपैति=प्राप्नोति ॥ १०९ ॥

हिन्दी — पूर्वोक्त चारग्रहों में से तीनग्रह यदि स्थानबली हों तो जातक अनेक रत्नों का आभरण और यान (सवारी) प्राप्त करता है। यदि दो ग्रह बलवान् होकर लग्न में हों तो उनकी दशा में जातक को सौख्य प्राप्त होता है ॥ १०९ ॥

उक्तस्थानत्रयेष्वेको बली वाहनराशिपः ॥
लग्नलग्नेशसम्बन्धी तद्दशा वाहनप्रदा ॥ ११० ॥

संस्कृत — उक्तस्थान (१-४-९) त्रयेषु एको ग्रहो बली भूत्वा स्थितो स्यात् तथा लग्नस्य लग्नेशस्य चतुर्थेशस्य वा सम्बन्धी भवेत्तदा तद्दशा वाहनप्रदा अर्थात् तद्दशायां जातकस्य वाहनलाभो भवेदिति वाच्य ॥ ११० ॥

हिन्दी — उक्त तीनों स्थानों (१।४।९) में स्थित एक भी बलीग्रह चतुर्थेश-लग्न या लग्नेश का सम्बन्धी हो तो उसकी दशा वाहनसुख देनेवाली होती है ॥ ११० ॥

चतुर्थधर्मायधनाधिनाथा विलग्नसम्बन्धिबलाधिकाश्चेत् ।
तदीयपाके समुपैति राज्यं क्रमेण भाग्यं धनलाभमर्थम् ॥ १११ ॥

संस्कृत — चतुर्थ-धर्म-आय-धनाधिपाः यदि विलग्नसम्बन्धिनः पूर्णबलाश्च चेत्तदा तदीयपाके क्रमेण राज्यं-भाग्यं-धनलाभं-अर्थं च समुपैति। अर्थात् विलग्नसम्बन्धिनो बलवान् चतुर्थेशस्य दशायां राज्यम्, धर्मेशस्य दशायां अर्थं समुपैति प्राप्नोति। स्थान १., दृष्टि २., मित्र ३., सहचर ४. इति चतुर्विधसम्बन्धप्रकारः ॥ १११ ॥

हिन्दी — चतुर्थ, नवम, एकादश और द्वितीयभाव के स्वामी यदि लग्न के सम्बन्धी हों और अधिक बलयुक्त हों तो उनकी दशा में क्रम से राज्यप्राप्ति, भाग्योदय, धनलाभ व धनवृद्धि होती है ॥ १११ ॥

ते चत्वारोऽधिकबलयुता देहसंबन्धिनश्चे—
देतत्सर्वं भवति विपुलं दुर्बला दुःखदाः स्युः ।
मिश्रं मिश्रैस्तनुपरिभवः कारको भातनाथो
भावाक्रान्तो विगतबलिनश्चेदतिक्लेशदास्ते ॥ ११२ ॥

संस्कृत — स्पष्टार्थाः ॥ ११२ ॥

हिन्दी — उपरोक्त चार (४।९।११।२) स्थानों के स्वामी अधिक बलशाली तथा लग्न के सम्बन्धी हों तो वे उन भावों से सम्बन्धित फल को पूर्णरूप से देते हैं। यदि वे दुर्बल हों तो दुःख और मिश्रित हों तो मिश्रफल देते हैं। भाव का

कारक, भाव का स्वामी और भावगतग्रह यदि बल से हीन हों तो विशेष कष्टदायक होते हैं ॥ ११२ ॥

वाहनेशेऽरिनीचस्थे दुःस्थे धर्माधिपेक्षिते ।
सुदुर्वाहनसंप्राप्तिश्चलवाहनताऽपि वा ॥ ११३ ॥
धर्मकर्मविलग्नस्थास्तुङ्गोपगशुभग्रहाः ।
लग्नाधिपेन संदृष्टा यानान्ते दुःखमाप्नुयात् ॥ ११४ ॥

संस्कृत — वाहनेशे=चतुर्थेशे अरिगृहे–नीचे–दुःस्थे (षडष्टव्ययस्थे) तत्रधर्माधिपेन दृष्टे चेत्तदा जातस्य दुष्टवाहनस्य सम्प्राप्तिः, अपि वा चलवाहनता= चञ्चल(तीव्रगतिक)वाहनप्राप्तिः ज्ञेयाः। अत्र दुर्धर्षसैन्यस्य चलसैन्यस्य वा प्राप्तिरपि बोध्या यथा सर्वार्थचिन्तामणौ (४। १५९)—

''दुःस्थे विमूढे यदि वाहनेशे भाग्येश्वरेणापि समीक्षिते वा।
दुर्वाहिनी चञ्चलवाहिनी वा लाभाधिपेनापि समीक्षिते वा॥''

तुङ्गोपगशुभग्रहाः=स्वोच्चराशिगताः शुभग्रहाः, यदि धर्मकर्मविलग्नस्था तथा लग्नाधिपेन संदृष्टा भवेयुस्तदा जातोनरो यानान्ते=वाहनान्ते दुःखमाप्नुयात्। अस्मिन्योगे जातः यान विरामावसरे वाहनादितो निपातेन घातपातेन च कष्टं प्राप्नोति।

यथा सर्वार्थचिन्तामणौ (४। १८२)—

''कर्मभाग्यविलग्नेषु स्वोच्चे सौम्यग्रहाः स्थिताः।
दृष्टेषु वा लग्नपेन यानान्ते दुःखमाप्नुयात्'' इति॥ ११३-११४॥

हिन्दी — चतुर्थेश यदि शत्रुराशि या नीचराशि का होकर दुष्टस्थान में स्थित हो और उसको नवमेश देखता हो तो जातक को निकृष्ट वाहन अथवा चलवाहन प्राप्त होता है।

नवम, दशम व लग्न में शुभग्रह स्थित हों और अपनी उच्चराशि के होकर लग्नेश से संदृष्ट हो तो जातक को सवारी के नष्ट होने से दुःख होता है॥ ११३-११४॥

जीवे वा सुखपे शुभग्रहयुते लग्नात्तपःस्थानगे
सौम्यर्क्षे नरवाहनं चिरतरं राजप्रतापान्वितम् ।
दुःस्थे पापयुतेऽस्तनीचरिपुगे यानादिभाग्यं नहि
स्वर्क्षे सर्वबलाधिके चिरसुखं चान्दोलिकारोहणम् ॥ ११५ ॥
बन्धुकर्मगृहाधीशौ लाभस्थानगतेक्षकौ ।
बलवन्तौ यदि स्यातां सर्वभाग्यफलप्रदौ ॥ ११६ ॥

लाभस्थौ सुखभाग्येशौ पश्यन्तौ वा सुखस्थलम् ।
वाहिनीसर्वभाग्याढ्यो राजप्रीतिकरो भवेत् ॥ ११७ ॥
धर्मवाहनराशीशौ लग्नसम्बन्धिनौ यदि ।
जीवदृष्टियुतौ तस्य राजवश्यादिभूषणम् ॥ ११८ ॥
शुभवाहनराशीशौ शुभखेचरसंयुतौ ।
बहुसेनाधिपः श्रीमान् बलिनौ यदि जायते ॥ ११९ ॥
भाग्यस्थिते वाहनराशिनाथे सशुक्रजीवे शुभखेटराशौ ।
भाग्याधिपे कोणचतुष्टये वा बहुत्वदेशाभरणार्थयानम् ॥ १२० ॥
कामारियानसहजतपोलग्नव्ययेश्वराः ।
सुखाधिपेन संयुक्तास्त्वसंख्याकरदेशभाक् ॥ १२१ ॥
सुखाधिपो देवगुरुः सितो वा बली विलग्नान्नवमोपयातः ।
त्रिकोणकेन्द्रोपगतः शुभेशः समेति जातो बहुवाहनानि ॥ १२२ ॥
सशुक्रजीवो गेहेशो भाग्यस्थो भाग्यपे सुखे ।
केन्द्रत्रिकोणयोर्वापि बहुवाहनदेशभाक् ॥ १२३ ॥

संस्कृत — सरलार्थाः ॥ ११५-१२३ ॥

हिन्दी — बृहस्पति अथवा चतुर्थेश शुभग्रह से युक्त होकर लग्न से नवम भाव गत शुभग्रह की राशि में हों तो बहुत समय तक राजप्रताप से युक्त नरवाहन सुख प्राप्त होता है। यदि गुरु या चतुर्थेश दुष्टस्थान (६-८-१२) में पापयुक्त, अस्त, नीच या शत्रुगृह में रहें तो सवारी आदि का सुख नहीं होता है। उक्तग्रह यदि स्वगृह में अति बलवान् हों तो बहुतकाल तक आन्दोलिका सवारी का सुख होता है।

यदि चतुर्थेश और दशमेश बलशाली होकर एकादशभाव में हों या एकादश भाव को देखते हो तो सर्वसुख के दाता होते हैं।

यदि चतुर्थेश और नवमेश एकादशभाव में हों अथवा चतुर्थस्थान को देखते हों तो जातक सैन्ययुक्त-सर्वसुख से युक्त और राजा को प्रसन्न करनेवाला होता है।

यदि नवमेश व चतुर्थेश लग्न से सम्बन्ध करते हों और उन्हें बृहस्पति देखता हो तो जातक को राजा से सम्मान और भूषण प्राप्त होता है।

नवमेश और चतुर्थेश यदि बलवान् हों तथा शुभग्रह से युक्त हों तो जातक बहुत सेना का स्वामी और श्रीमान होता है।

चतुर्थेश नवमभाव में स्थित हो, शुक्र और बृहस्पति से युत हो तथा शुभग्रह की राशि में हो अथवा नवमेश त्रिकोण या केन्द्र में हो तो जातक को बहुत देश, आभरण, सवारी और धन प्राप्त होता है।

सप्तम-षष्ठ-चतुर्थ-तृतीय-नवम-लग्न और व्ययभाव के स्वामी चतुर्थेश के साथ हों तो जातक असंख्य देशों को प्राप्त करता है।

चतुर्थेश, बृहस्पति या शुक्र बलवान् होकर नवमभाव में स्थित हों और नवमेश त्रिकोण या केन्द्र में हो तो जातक बहुत वाहनयुक्त होता है।

यदि चतुर्थेश शुक्र और बृहस्पति के साथ नवमभाव में हो और नवमेश चतुर्थ भाव में अथवा केन्द्र-त्रिकोण में हो तो जातक बहुत वाहन और देश से युक्त होता है ॥ ११५-१२३ ॥

राजयोग—

लग्नकेन्द्रस्थिते सौम्ये धर्मे तुङ्गगृहाश्रिते।
धनेशे केन्द्रभावस्थे योगः सिंहासन प्रदः ॥ १२४ ॥

संस्कृत — लग्नकेन्द्रे सौम्ये=शुभग्रहे, नवमे उच्चगतग्रहे, धनेशे केन्द्रे चेत्तदा सिंहासनप्रदो योगः ॥ १२४ ॥

हिन्दी — लग्न-केन्द्र में शुभग्रह हों, धर्मस्थान में उच्चगत ग्रह हो और द्वितीयेश केन्द्र में हो तो सिंहासन देनेवाला योग होता है। अर्थात् इस योग में उत्पन्न जातक सिंहासन पर बैठनेवाला (राजा) होता है ॥ १२४ ॥

भाग्ये शुभेक्षिते केन्द्रे शुभैः सह धनाधिपे ॥
उच्चग्रहे द्वितीयस्थे जन्म सिंहासनप्रदम् ॥ १२५ ॥

संस्कृत — भाग्ये=नवमे शुभग्रहदृष्टे, शुभग्रहैः सह धनेशे केन्द्रगते, उच्चराशिगतग्रहे द्वितीयस्थे चेत्तदा सिंहासनप्रदो योगः ॥ १२५ ॥

हिन्दी — नवमभाव शुभग्रह से देखा जाता हो, शुभग्रह के साथ द्वितीयेश केन्द्र में हो, द्वितीयस्थान में उच्चराशिस्थ ग्रह हो तो सिंहासन देनेवाला योग होता है ॥ १२५ ॥

लग्नवाहनभाग्येशाः कर्मस्थाः कर्मपस्तनौ ।
लग्नं पश्यति वा खेटः सिंहासनफलप्रदः ॥ १२६ ॥

संस्कृत — लग्नेश, वाहनेश=चतुर्थेश, नवमेशाः, कर्मस्था=दशमभावगता स्युः, कर्मेशो लग्नगतो भवेदथवा कर्मेशो लग्नदर्शी भवेत्तदा सिंहासनप्रदो योगः ॥ १२६ ॥

हिन्दी — लग्नेश-चतुर्थेश और नवमेश कर्म (दशम) में हों, कर्मेश लग्न में स्थित हो अथवा लग्न को देखता हो तो जातक राजसिंहासन प्राप्त करता है ॥ १२६ ॥

कर्मलग्नसुखाधीशाः कर्मस्थानगता यदि ।
कर्मपो लग्नसंबन्धी सिंहासनपतिर्भवेत् ॥ १२७ ॥

संस्कृत — कर्मेश-लग्नेश-चतुर्थेशा एते त्रयोग्रहाः कर्मस्थानगताः स्युः, कर्मेशो= दशमेशो लग्नसम्बन्धी भवेत्तदा सिंहासनप्रदो योगः ॥ १२७ ॥

हिन्दी — दशमेश-लग्नेश और चतुर्थेश दशमभाव में स्थित हों तथा दशमेश यदि लग्न का सम्बन्धी हो तो जातक सिंहासन का स्वामी होता है ॥ १२७ ॥

गुरुशुक्रशुभाधीशाः केन्द्रकोणायगा यदि ।
अनेकयानसंपन्नो मण्डलाधिपतिर्भवेत् ॥ १२८ ॥

संस्कृत — गुरू-शुक्र-शुभा=नवमेशा एते त्रयोग्रहाः केन्द्रकोणायगाः (१।४।७।१०।९।५।११) भवेत्तदा अनेकयान सम्पन्नो=बहुवाहनयुक्तः मण्डलेश्वर (राजा) कारको योगः ॥ १२८ ॥

हिन्दी — यदि बृहस्पति, शुक्र और नवमेश केन्द्र या कोण या लाभस्थान में हों तो जातक अनेक वाहनों से युक्त मण्डल का अधिपति होता है ॥ १२८ ॥

यानेशकर्मोपगतौ बलिष्ठौ धर्मेशदृष्टौ यदि तद्युतौ वा ।
परस्परक्षेत्रसमागतौ वा सिंहासनप्राप्तिकरौ भवेताम् ॥ १२९ ॥

संस्कृत — यानेशः=चतुर्थेश-दशमभावगतग्रहश्चेतौ बलिष्ठौ धर्मेश=नवमेश दृष्टौ वा तद्युतौ=धर्मेशयुक्तौ वा परस्परक्षेत्रगतौ अर्थात् चतुर्थेशो दशमस्थग्रहस्यगृहे दशमगतग्रहश्चतुर्थे तदा सिंहासनप्रदः योगः ॥ १२९ ॥

हिन्दी — चतुर्थेश और दशमस्थ ग्रह बलवान् हों नवमेश से देखे जाते हों, अथवा युत हों या परस्पर गृह में हों तो सिंहासनप्राप्ति योग होता है ॥ १२९ ॥

तद्दशान्तर्दशाकाले तद्राशिपदशागमे ।
तदीशभुक्तिसंप्राप्तौ सिंहासनपतिर्भवेत् ॥ १३० ॥

संस्कृत — एषु योगेषु समुत्पन्नो नरः सिंहासनारूढो भवति। कदा आरूढो भवतीत्यस्मिन्विषये 'तद्दशान्तर्दशाकाले' अर्थात् यो यो ग्रहः योगकारको भवति तत्तद्दशान्तर्दशायां तत्फलं राज्य सिंहासनादि लाभं वाच्यम्॥ १३० ॥

हिन्दी — योगकारक ग्रह की दशा अन्तर्दशा के समय अथवा उसके राशिपति की दशा-अन्तर्दशा प्राप्त होने पर जातक को सिंहासन प्राप्त होता है ॥ १३० ॥

भाग्यविचार—

शुभोदयेशौ सुखराशियातौ सुखाधिपो लग्नगतः शुभर्क्षे ।
अतीव सौख्यं समुपैति नित्यं सपत्नयातो यदि शत्रुभाग्यम् ॥ १३१ ॥

संस्कृत — अत्र सौख्ययोगावाह—शुभोदयेशा=नवमेशलग्नेशौ सुखराशियातौ=चतुर्थभावगतौ स्याताम्, सुखाधिपः शुभर्क्षे=शुभराशौ स्थितः सन् लग्नगतः स्यात्तदा जातोऽतीव सौख्यं नित्यं (अहर्निशं) समुपैति=प्राप्नोति। पूर्वोक्त

योगे सुखाधिपः यदि सपत्नयातः=षष्ठभावगतो भवेत्तदा शत्रुभाग्यं= रिपुवर्गेण-भाग्यंसुखं प्राप्नोति। अर्थात् शत्रुहस्तगतं तस्य भाग्यादि सुखं स्यादिति ज्ञेयम्॥ १३१॥

हिन्दी — नवमेश-लग्नेश चतुर्थस्थान में हों, चतुर्थेश शुभराशि का होकर लग्न में हो तो नित्य हीं अत्यन्त सुख होता है। यदि चतुर्थेश शत्रुस्थान में हो तो शत्रु द्वारा भाग्य प्राप्त होता है॥ १३१॥

सपत्नभावाधिपतौ तपःस्थे शुभैरदृष्टे बलसंयुते वा।
स्वकीयभाग्यादिकमल्पकालं ददाति शत्रौ सुखनाथदाये ॥ १३२॥
सुखाधिपे शोभनखेटयुक्ते तदीयपाकान्तमरातिगं तत्।
पापान्विते तस्य दशावसाने पुनः स्वभाग्यं समुपैति सर्वम् ॥ १३३॥

संस्कृत — सपत्नभावाधिपतौ=षष्ठभावपतौ, तपःस्थे=नवमभावगते शुभैरदृष्टे, वा=अथवा बलसंयुते तदा अल्पकालं=किञ्चित्कालं, स्वकीयभाग्यादिकं शत्रौ ददाति, अर्थात् स्वयं तावद्भाग्यहीनो भवति। कस्मिन् समये भाग्योदयं? 'सुखनाथदाये' चतुर्थेशस्यदशायामिति ज्ञेयमन्यत्स्पष्टम्॥ १३२-१३३॥

हिन्दी — शत्रुभावेश नवमभाव में हो, उसे शुभग्रह न देखते हों, अथवा वह बलवान हों तो चतुर्थेश की दशा में कुछ काल तक जातक अपना भाग्य शत्रु को दे देता है।

चतुर्थेश यदि शुभग्रह से युक्त हो तो उसकी दशा में जातक का भाग्य शत्रु को प्राप्त होता है। यदि चतुर्थेश पापग्रह से युक्त हो तो उसकी दशा समाप्त होने पर पुनः सब भाग्य प्राप्त हो जाता है॥ १३२-१३३॥

क्षेत्रविचार—

क्षेत्रस्थाने शुभक्षेत्रे तदीशे शुभसंयुते।
तत्कारके तथा प्राप्ते बहुक्षेत्रधनान्वितः ॥ १३४॥
क्षेत्रेश्वरे नीचसपत्नभागे कालाग्निशूलान्तकषष्टिभागे।
पापान्विते पापसमीक्षिते वा क्षेत्रादिनाशं कथयन्ति तज्ज्ञाः ॥ १३५॥

संस्कृत — द्वौ श्लोकौ स्पष्टार्थौ॥ १३४-१३५॥

हिन्दी — चतुर्थभाव में शुभराशि हो और चतुर्थेश शुभग्रह से युत हो तथा उसका कारक (चं.बृ.) शुभस्थान में स्थित हो तो जातक बहुत क्षेत्र-धन का स्वामी होता है।

चतुर्थेश नीचराशि में या शत्रु के वर्ग में हो, कालाग्नि-शूल-अन्तक के षष्ट्यंश में हो, पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक के क्षेत्रादिक का नाश होता है ऐसा दैवज्ञों का कथन है॥ १३४-१३५॥

लग्नाधिपस्य गृहपो यदि शत्रुखेट-
स्तत्पाकभुक्तिसमये गृहभूमिनाशम् ।
यानेशभुक्तिसमये निजबन्धुहानिः
शन्यारमान्दियुतभुक्तिरनर्थहेतुः ॥ १३६ ॥

संस्कृत — गृहपो=चतुर्थेशः यदि लग्नाधिपस्य=लग्नेशस्य शत्रुखेटः=शत्रुग्रहो भवेत्तदा तत्पाकभुक्तिसमये=तस्य शत्रुग्रहस्य दशान्तर्दशाकाले जातस्य गृहभूमिनाशं भवेत्। यानेशस्य=चतुर्थेशस्य भुक्तिसमये=दशाकाले निजबन्धुहानि=स्वबन्धूनां हानिर्जायते। यानेशो=चतुर्थेशः यदि शन्यारमान्दियुतः=शनि-भौम-गुलिकादियुक्तस्तदा तस्य चतुर्थेशस्य भुक्ति(दशा)रनर्थहेतुः=अनिष्टकरा भवतीति बोध्यः ॥ १३६ ॥

हिन्दी — चतुर्थेश यदि लग्नेश का शत्रुग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में गृह और भूमि का नाश होता है। चतुर्थेश की अन्तर्दशा में अपने स्वजनों की हानि होती है। शनि-मङ्गल-गुलिक से युत चतुर्थेश की अन्तर्दशा अनर्थ (मरण) कारक होती है ॥ १३६ ॥

वित्तेशः ससुखाधिपो नवमगः सौम्यान्वितः सौम्यभे
निक्षेपं समुपैति लाभधनपौ पातालराशिस्थितौ ।
तन्नाथः शुभराशिगः शुभयुतो निक्षेपसिद्धिर्भवे-
ल्लाभेशः सुखराशिगः शुभयुतो निक्षेपवित्तप्रदः ॥ १३७ ॥

संस्कृत — अत्र निक्षेप धन प्राप्तियोगाः।

१. सुखाधिपेन=चतुर्थेशेन युक्तो वित्तेशः=धनेशः नवमभावगतः सौम्यान्वितः=शुभग्रहयुक्तः शुभराशिगतश्च भवेत्तदा जातः निक्षेपं=भूमौ रक्षितं धनं समुपैति=प्राप्नोति।
२. लाभधनपौ=एकादश-द्वितीयेशौ पातालराशि=चतुर्थभावस्थितौ भवेतां, तन्नाथः=चतुर्थेशः शुभग्रहेण युतो शुभराशिगतश्च भवेत्तदा निक्षेपसिद्धिः=भूमौ रक्षितधनलाभो भवेत्।
३. लाभेशः=एकादशेशः शुभग्रहेण सहितः, सुखराशि=चतुर्थभाव गतो भवेत्तदा निक्षेपवित्तप्रदो भवति। उपरोक्ते योगत्रये जातो नरस्य भूमौ सञ्चितस्य धनस्य प्राप्तिः भवतीतिभावः ॥ १३७ ॥

हिन्दी — शुभराशि में शुभग्रह के साथ यदि द्वितीयेश चतुर्थेश के साथ नवमभाव में स्थित हो तो अथवा लाभेश और धनेश चतुर्थस्थान में स्थित हों तथा चतुर्थभाव का स्वामी शुभराशि में शुभग्रह से युत हो तो अथवा लाभेश शुभग्रह के साथ चतुर्थभाव हो तो भूमिस्थ धन का लाभ होता है ॥ १३७ ॥

गृहविचार—

अर्थव्ययगृहाधीशा नाशगाः पापसंयुताः ।
यावद्भिरशुभैर्युक्तास्तावद्देहालसत्वदाः ॥ १३८ ॥
पापेऽरौ वा पापदृष्टे सुखे गेहसुखार्तिभाक् ।
नीचेऽरातौ कुजेऽर्के वा सुखे स्यादगृहो नरः ॥ १३९ ॥
नीचेऽस्तगे वा गेहस्थे दुःखाम्भोधौ पतिष्यति ।
सुखे पापे पापभाक् स्यात् सुखे मन्दे सुखक्षयः ॥ १४० ॥
गृहेशे व्ययगे लग्नादन्यगेहोऽन्यदेशगः ।
रन्ध्रे गृहाद्यभावो वा षष्ठे ज्ञात्यादिसंग्रहः ॥ १४१ ॥
अयत्नतो मन्दिरलाभदः स्यात् चतुर्थपस्तत्र बलाधिको वा ।
दुःस्थानगो दुष्टबलान्वितश्चेदालस्यगेहं ग्रहपीडितं वा ॥ १४२ ॥
षट्त्रिव्ययाष्टमोपेता व्ययवित्तगृहाधिपाः ।
यावत्पापसमोपेतास्तावद्गृहविनाशदाः ॥ १४३ ॥
लग्नत्रिकोणकेन्द्रस्था यावद्बलसमन्विताः ।
तावत्संख्याकगेहानां समीचीन्यं वदेद् बुधः ॥ १४४ ॥
चतुर्थभावाधिपतौ विलग्नाद्व्ययस्थिते जीर्णगृहं समेति ।
त्रिकोणकेन्द्रोपगते बलाढ्ये विचित्रगेहं रुचिरं तदाहुः ॥ १४५ ॥
तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे बलसंयुते ।
गोपुराद्यंशगे वापि समेति दृढमन्दिरम् ॥ १४६ ॥
आज्ञाक्रियाक्षेत्रविनाशमाहुराज्ञेश्वरे गेहगते सपापे ।
क्रूरांशके मृत्युकरादिभागे रन्ध्रेश्वरेणापि युते तथैव ॥ १४७ ॥
तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।
लग्नेशे बलसम्पूर्णे हर्म्यं प्राकारसंयुतम् ॥ १४८ ॥
पारावतांशके गेहनाथे गुर्विन्दुवीक्षिते ।
गोपुराद्यंशके वापि दैविकं गृहमादिशेत् ॥ १४९ ॥

इति नवग्रह कृपयावैद्यनाथ विरचिते
जातकपारिजाते तृतीय-चतुर्थभावफलाध्यायः द्वादशः ॥ १२ ॥

संस्कृत — अत्र गृहविचारे अर्थव्ययगृहाधीशा इत्यादिद्वादशश्लोकैरूक्ताः । श्लोकाश्चैते सरलार्थाः स्पष्टार्थाः ॥ १३८–१४९ ॥

**"प्रज्ञावर्द्धिनी" संस्कृतटीकायां जातकपारिजातस्य तृतीय
चतुर्थभावफलाध्यायः द्वादशः ॥**

हिन्दी — द्वितीय-द्वादश और चतुर्थभाव के स्वामी यदि पापग्रह से युत होकर अष्टमभाव में स्थित हों तो वहाँ अष्टमभाव में जितने पापग्रह हों उतने गृह कष्टप्रद होते हैं।

शत्रुस्थान में पापग्रह स्थित हो या पापग्रह चतुर्थभाव को देखता हो तो जातक गृहकष्ट से दुःख भोगता है। नीचराशि या शत्रुराशिगत होकर मङ्गल या सूर्य यदि सुखभाव में रहें तो जातक गृहविहीन होता है।

यदि चतुर्थस्थ ग्रह नीचराशि में या अस्तगंत हो तो कूप, तालाब में गिरने का भय होता है। चतुर्थभाव में पापग्रह हो तो जातक पाप का भागी होता है। चतुर्थभाव में शनि हो तो सुख का नाश होता है।

चतुर्थेश यदि द्वादशभाव में हो तो जातक परगृह वासी अथवा परदेशवासी, अष्टम में हो तो गृहविहीन तथा छठे में हो तो जाति या सम्बन्धी के गृह में रहता है।

यदि चतुर्थेश बलवान् हो तो बिना प्रयास के ही गृहादि का लाभ होता है। दुष्टस्थान में यदि दुर्बल चतुर्थेश हो तो आलस्ययुक्त अथवा ग्रहपीड़ित गृह प्राप्त होता है।

द्वादशेश-द्वितीयेश और चतुर्थेश यदि षष्ठ-तृतीय-द्वादश व अष्टमस्थान में जितने पापग्रह से युक्त हों उतने संख्यातुल्य गृह का नाश होता है।

लग्न, त्रिकोण और केन्द्रस्थानों में जितने बलवान् ग्रह हों उतने ही अच्छे गृह की प्राप्ति होती है ऐसा विद्वान लोग कहते हैं।

चतुर्थभाव का स्वामी लग्न से द्वादशवें हो तो जीर्णगृह जातक को प्राप्त होता है। यदि चतुर्थेश बलवान् होकर त्रिकोण या केन्द्र में हो तो सुन्दरगृह का लाभ होता है।

यदि तृतीयभाव में शुभग्रह हो, चतुर्थेश बलवान् हो या अपने गोपुर अंश में स्थित हो तो जातक दृढ़ गृह से संयुक्त होता है।

दशमेश पापग्रह के साथ चतुर्थभाव में स्थित हो तो राज्य-कर्म तथा भूमि का नाश होता है। यदि दशमेश क्रूर षष्ट्यंश अर्थात् मृत्युकरादि षष्ट्यंश में स्थित हो और अष्टमेश से युक्त हो तब भी यहीं फल होता है।

यदि तृतीयभाव में शुभग्रह हो, चतुर्थेश बलवान हो, लग्नेश पूर्ण बली हो तो प्राकार (वाउन्ड्री) से युक्त हर्म्य (अटारी) भवन प्राप्त होता है॥ १४८॥

चतुर्थेश अपने पारावतांश में हो तथा वह बृहस्पति और चन्द्रमा से देखा जाता हो या अपने गोपुर आदि अंश में हो तो मन्दिरसमान सुन्दरगृह प्राप्त होता है॥ १४९॥

सत्येन्द्रमिश्रकृत ''प्रज्ञावर्द्धिनी'' हिन्दीटीका में जातकपारिजात का तृतीय-चतुर्थभावफलाध्याय द्वादश समाप्त॥

* * *

पंचम-षष्ठ भावफलाध्यायः—१३

पञ्चमभावफल—

पुत्राद्देवमहीपपुत्रपितृधीपुण्यानि सञ्चिन्तयेद्-
यात्रामस्तसुतस्वकर्मभवनैर्दूराटनं रिःफतः ।
लग्नाद्बन्धुदिनेशतः पितृसुखं जीवात्मजस्थानतः
पुत्रप्राप्तिरनङ्गवित्तपसितैः स्त्रीसंपदश्चिन्तयेत् ॥ १ ॥

संस्कृत — पुत्रादिति। देवः=आराध्यदेवः, महीपः=राज्ययोगः, पुत्रः=सन्तानः, पितृ=पिता, धीः=बुद्धिः, पुण्यम्=सुकर्मं एतानि पुत्रात्=पञ्चमभावात् सञ्चिन्तयेत्। अस्त-सुत-स्व-कर्मभवनैः=सप्तम-पञ्चम-द्वितीयदशमभावात् यात्रां संचिन्तयेत्। रिष्फतः=द्वादशभावतः, दूराटनं=विदेशभ्रमणं विचारयेत्। लग्नाद् बन्धुदिने-शतश्च=लग्नाचतुर्थभावतः सूर्याच्च पितृसुखं विचारयेत्। जीवात्मज-स्थानतः=गुरोः पञ्चमभावतश्च पुत्रप्राप्तिः चिन्तयेत्। अनंगवित्तपसितैः=सप्तमभाव-द्वितीयेश-शुक्रैः, स्त्रीसम्पदः चिन्तयेत्॥ १ ॥

हिन्दी — पञ्चमभाव से इष्टदेवता-राज्य-पुत्र-पिता-बुद्धि और **पुण्य** का विचार, सप्तमभाव-पंचमभाव-द्वितीयभाव और कर्मभाव से **यात्रा** का विचार, द्वादशभाव से **दूरयात्रा** का विचार, प्रथमभाव-चतुर्थभाव और सूर्य से **पिता का** विचार, बृहस्पति से और पंचमभाव से **पुत्र प्राप्ति** का विचार तथा सप्तेश-द्वितीयेश और शुक्र से **स्त्रीसंपत्ति** का विचार करना चाहिए॥ १ ॥

देवता विचार—

लग्नादात्मनि पुंग्रहेक्षितयुते पुन्देवताराधनं
युग्मे शुक्रनिशाकरेक्षितयुते स्त्रीदेवतामिच्छति ।
भानौ भास्करमुख्यमिन्दुसितयोर्गौरींकुमारं कुजे
विष्णुं चन्द्रसुते गुरौ शशिधरं शन्यादियोगे परान् ॥ २ ॥

संस्कृत — लग्नादिति। लग्नादात्मनि=पञ्चमे भावे पुंग्रहेक्षितयुते=पुरूष-(रविभौमगुरु) ग्रहेण दृष्टे युते वा तदा जातस्य पुंदेवताराधनं वदेत्। अस्मिन्योगे समुत्पन्नो नरः पुरूषदेवोपासको भवति। यदा पञ्चमे युग्मे=समराशौ सति तथा शुक्रेण वा चन्द्रेण दृष्टे अथवा युते जातः पंचमभावः तदा स्त्रीदेवतामिच्छति=भजति। यदा पञ्चमे भावे सूर्येण युक्ते दृष्टे वा तदा भास्करमुख्यं=सूर्यप्रभृति पुरूषदेवताराधनं

बोध्या। इन्दुसितयोः=चन्द्रशुक्रयोः गौरी देवता, कुजे कुमारं=भौमात् कार्तिकेयं, चन्द्रसुते=बुधे विष्णु, गुरौ शशिधरं=शिवं, शन्यादियोगे परान्=क्षुद्रदेवान् अघोरदेवान् वदेदिति॥ २॥

हिन्दी — लग्न से पंचमभाव को यदि पुरूष ग्रह देखता हो या उसमें स्थित हो तो जातक पुरुषदेवता की पूजा करता है। समराशि पञ्चम में हो और पञ्चम में शुक्र या चन्द्रमा हों अथवा पंचमस्थान को देखते हों तो जातक स्त्रीदेवता की आराधना करता है। यदि पञ्चमभाव में सूर्य हो तो सूर्य का, चन्द्रमा-शुक्र हों तो गौरी का, मंगल हो तो कार्तिकेय का, बुध हो तो विष्णु का, बृहस्पति हो तो शंकर का, शनि-राहु या केतु पञ्चम में हों तो अपर (क्षुद्र अघोर) देव आदि का पूजन-अर्चन करता है॥ २॥

लग्नाधिपस्यात्मपतौ सपत्ने तद्देवभक्तिः सुतनाशहेतुः ।
समानता साम्यतरे सुहृत्त्वे तद्देवताऽपारकृपामुपैति ॥ ३ ॥

संस्कृत — लग्नाधिपस्येति। लग्नेशस्य, आत्मापतौ पञ्चमेशः सपत्ने=शत्रुग्रहे सति तदा तद्देवभक्तिः जातस्य सुतनाशहेतु=सन्तान नाशकारकोभवति। साम्यतरे=लग्नाधिपस्यात्मपतौ यदि समत्वग्रहे (उदासीने) सति तदा तद्देवभक्तिः समानता न शुभा नाशुभा च भवति। सुहत्वे=लग्नाधिपस्यात्मपतौ मित्रग्रहे सति तदा जातस्तद्देवताया अपारकृपां=परममनुग्रहमुपैति=प्राप्नोति तदानीं तद्देवताराधनं परमक्षेमकरं कल्याणकरं भवति॥ ३॥

हिन्दी — यदि पञ्चमेश-लग्नेश परस्पर शत्रु हों तो उसदेव की भक्ति-आराधना से पुत्रनाश होता है। दोनों (लग्नेश-पंचम) सम हों तो सामान्य रहे। पञ्चमेश-लग्नेश मित्रग्रह हों तो उस देवता की आराधना से मनोरथ पूर्ति एवं कार्य की सिद्धि होती है॥ ३॥

राज्य विचार—

राजस्थाने गुरुबुधसितैरीक्षिते संयुते वा
तद्राशीशे बलवति नृपप्रीतिसम्पत्तिमेति ।
पापाक्रान्ते विगतबलिनि स्वामिनि क्रूरभागे
जातो विद्याविनयगुणधीराजसन्मानहीनः ॥ ४॥

संस्कृत — राजस्थाने इति। राजस्थाने=पञ्चमे भावे अग्रे अन्यत्स्पष्टम्॥ ४॥

हिन्दी — पंचमभाव में बुध-बृहस्पति और शुक्र की दृष्टि हो अथवा योग हो तथा पञ्चमेश बलबान् हो तो राजा की प्रसन्नता से धन मिलता है। यदि पञ्चमभावपति पापाक्रान्त हो, बलहीन हो, क्रूर-ग्रह के वर्ग में हो तो जातक विद्या, विनय, गुण, बुद्धि और राजसन्मान से हीन होता है॥ ४॥

जन्मविचार—

लग्ने यानपतौ सुखे तनुपतौ दृष्टेऽथवा खेचरैः
संयुक्ते तु चतुष्पदस्य जननं राहुध्वजाभ्यामजः ।
गोजन्मार्यसितेन्दुभिश्च महिषी मन्देन दृष्टे युते
जातः पादपुरःसरं तनुपतिर्माने तनौ भोगिराट् ॥ ५ ॥

संस्कृत — लग्न इति। यानपतौ=चतुर्थेशे लग्ने, तनुपतौ=लग्नेशः सुखे=चतुर्थे तत्र खेचरै=अन्यग्रहै यथासम्भवं दृष्टे अथवा संयुक्ते सति तदा तु चतुष्पदस्य=पशोः, जननं=उत्पतिं जानीयात्। चतुष्पदविचारे-राहुध्वजाभ्यामजः= राहुणा केतुना वा युक्ते दृष्टे वा तदा अजो, आर्यसितेन्दुभिः=गुरुशुक्रचन्द्रैर्युक्ते वा दृष्टे तदा गोजन्म, मन्देन= शनिना दृष्टे युते वा तदा महिषी। तनुपतिः=लग्नेशः, माने=दशमे स्थाने, भोगिराट्=राहुः तनौ=लग्ने व्यवस्थितः स्यात्तदा जातः पादपुरस्सरं स्यात्। अर्थादस्मिन्योगे प्रथमं जातस्य चरणौ ततः शरीरस्य पृष्ठादि भागाः प्रादुर्भवन्तिः ॥ ५ ॥

हिन्दी — यदि चतुर्थेश लग्न में हो, लग्नेश चतुर्थ में हो और वह अन्य ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो चतुष्पद का जन्म होता है। यदि राहु-केतु से (लग्नेश) युत दृष्ट हो तो बकरा, बृहस्पति-शुक्र और चन्द्रमा से दृष्ट-युक्त हो तो गौ, शनि से दृष्ट या युत हो तो भैंस का जन्म समझें। लग्नेश दशमभाव में हो और राहु लग्न में हो तो पैर के तरफ से जन्म होता है ॥ ५ ॥

वित्तास्तगौ पञ्चमयाननाथौ पापेक्षितौ पापसमन्वितौ वा ।
पुंसस्त्रिभागे पुरुषग्रहेन्द्रे जाताः कपिक्रोडबिडालकाद्याः ॥ ६ ॥

संस्कृत — वित्तास्तगाविति। पञ्चमयाननाथौ=पञ्चमेशचतुर्थेशौ वित्तास्तगौ=द्वितीयसप्तमभावगतौ तत्र पापग्रहेण दृष्टौ वा समन्वितौ, पुरूष ग्रहेन्द्रे= रविभौमजीवान्यतमे पुंसस्त्रिभागे पुरूषग्रहद्रेष्काणे गते तदा जाताः कपिक्रोड-विडालकाद्याः भवन्ति। अर्थादस्मिन्योगे वानरसूकरमार्जारादि जन्म भवतीति बोध्यः ॥ ६ ॥

हिन्दी — द्वितीय और सप्तमभाव में पञ्चमेश-चतुर्थेश स्थित हों तथा वे पापग्रह से दृष्ट या युक्त हों एवं पुरुषद्रेष्काण में पुरुषग्रह (सू० भौ० गु०) स्थित हों तो बन्दर, सूअर, विडाल आदि का जन्म समझना चाहिए ॥ ६ ॥

तस्मिन्मन्दबुधेक्षिते तु जननं पिण्डाकृतिर्वाक्पतिः
साहिर्दुर्बलवीक्षितो यदि महीदेवान्वयो नीचकृत् ।
एकस्था गुरुराहुभानुतनयाः शुक्रेन्दुपुत्रेक्षिताः
शूद्रोऽपि द्विजतौल्यमेति निखिलां विद्यामुपैति द्विजः ॥ ७॥

संस्कृत — तस्मिन्=पूर्वोक्त पुंसस्त्रिभागे पुरूषग्रहेन्द्रे योगे, मन्दबुधेक्षिते= शनि वुधौ दृष्टे तु जननं पिण्डाकृतिर्भवति। अर्थात् अस्मिन्योगे यत्प्रादुर्भवति तद् अङ्गादिरहितमिति। यदि साहिर्वाक्पतिः=राहुयुक्तो गुरुः दुर्बलवीक्षितः= बलहीनग्रहेणदृष्टः स्यात्तदा महीदेवान्वयः=विप्रवंशोद्भवः नीचकृत्=कुत्सित-कर्मकरो भवति। तात्पर्यं यत् ब्राह्मणकुलेऽपि धृतोजन्मो नीचवदाचरणशीलो भवति। गुरूराहुभानुतनयाः=बृहस्पतिराहुशनैश्चराः यदि एकस्थाः शुक्रेन्दुपुत्रेक्षिता=शुक्र बुधाभ्यां दृष्टा भवेयुस्तदा शूद्रोऽपि जातो नरो द्विजतौल्यमेति=विप्रसमं आचरति। अर्थात् शूद्रजन्माऽपि ब्राह्मणवदुच्चकर्मा भवतीति। अत्र योगे यदि द्विजः= ब्राह्मणवंशजः स्यात्तदा निखिलां विद्यां उपैति=प्राप्नोति ॥ ७ ॥

हिन्दी — उपरोक्त योग में यदि शनि और बुध पञ्चमेश-चतुर्थेश को देखते हों तो पिण्ड के समान जन्म होता है। यदि बृहस्पति राहु के साथ हो और बलरहित ग्रह से दृष्ट हो तो विप्रवंश में उत्पन्न होकर भी नीचकर्म करनेवाला होता है। बृहस्पति राहु-शनि एकस्थान में हों और उनको शुक्र-बुध देंखे तो शूद्र कुलोत्पन्न हो तो भी ब्राह्मण जैसे शुभकर्म करता है और यदि ब्राह्मण हो तो समस्त विद्या को प्राप्त करता है ॥ ७ ॥

पुत्रविचार—

लग्नात्पुत्रकलत्रभे शुभपतिप्राप्तेऽथवाऽऽलोकिते
चन्द्राद्वा यदि संपदस्ति हि तयोर्ज्ञेयोऽन्यथाऽसंभवः ।
पाथोनोदयगे रवौ रविसुते मीनस्थिते दारहा
पुत्रस्थानगतश्च पुत्रमरणं पुत्रोऽवनेर्यच्छति ॥ ८ ॥

संस्कृत — लग्नादिति। लग्नात्पुत्रे=पञ्चम-भावे, कलत्रे=सप्तमभावे च शुभग्रहेण राशिपतिना वा युक्ते अथवाऽऽलोकिते, चन्द्राद्वा=जन्मकालिकचन्द्रतो अथवा पुत्रकलत्रभे=पञ्चमे सप्तमे च शुभग्रेहण स्वराशिस्वामिना च युतेऽथवा दृष्टे सति तदा तयोः=पुत्रस्त्रियोः सम्पत् अस्ति हि=निश्चयेनेति भावः। अर्थात् लग्नाच्चन्द्राद्वा पञ्चमे भावे शुभग्रहेण पंचमेशेन च युते अथवा दृष्टे तदा पुत्रस्य प्राप्तिः। एवं लग्नाच्चन्द्राद्वा सप्तमे भावे शुभग्रहेण सप्तमेशेन च युते वा दृष्टे तदा स्त्रीसम्पदास्तीति ज्ञेयम्। अन्यथाऽसम्भवः। यदा जन्मलग्नाच्चन्द्राद्वा पञ्चमो भावः शुभेन स्व स्वामिना च दृष्टो युतो वा न भवेत्तदा पुत्रोत्पतिर्न भवेदिति। एवं लग्नाच्चन्द्राद्वा सप्तमः शुभग्रहस्वपतिभ्यां युतो वा दृष्टो न स्यात्तदा स्त्री प्राप्तिर्न भवति। सर्वेषां भावानां इदृग् विचारं भवति। अत्र विशेष वचनम्—

"यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वास्यात्तस्य तस्याभिवृद्धिः" (षट्पंचा. १।३) इति।

पाथोनोदयग। रवौ=सूर्ये, पाथोनोदयगे=लग्ने कन्याराशिगते, रविसुते=शनैश्चरे, मीनस्थिते सति तदाजातो दारहा=स्त्रीविनाशको भवति। पाथोनोदयगे रवौ,रविसुते=शनिः मीनस्थिते तदा दारहा=स्त्री नाशं भवति अवनेः पुत्रः=भौमो यदि पुत्रस्थानगतः पञ्चमभाव (मकर) गतो भवेत्तदा पुत्रमरणं यच्छति। अर्थादस्मिन् योगे जातस्य पुत्रो म्रियतेतिभावः ॥ ८ ॥

हिन्दी — लग्न या चन्द्रमा से पञ्चम और सप्तमभाव में शुभग्रह का योग हो अथवा पंचमेश-सप्तमेश की दृष्टि हो तो क्रम से पुत्र और स्त्री का सुख उत्तम होता है अन्यथा इन दोनों का सुख नहीं होता। कन्याराशि लग्न हो और उसमें सूर्य हो तथा शनि मीन में हो तो स्त्री की हानि होती है। पुत्रस्थान में मंगल हो तो पुत्र की हानि होती है ॥ ८ ॥

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे लग्नात्कलत्रेऽथवा
युग्मर्क्षे शशिशुक्रवीक्षितयुते पुत्री जनो जायते ॥
पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिको
जीवात्पञ्चमराशितश्च तनयप्राप्तिं वदेद्देशिकः ॥ ९ ॥

संस्कृत — पुत्रस्थानपताविति। पुत्रस्थानपतौ=पञ्चमेशे, वा नवमभावेशे लग्नात् कलत्रे=सप्तमे अथवा युग्मर्क्षे=समराशौ (२-४-६-८-१०-१२) व्यवस्थिते तत्र शशि=चन्द्रेण, शुक्रेण वा दृष्टे वा युते सति तदा पुत्री जनो जायते=कन्यासन्ततिर्भवति। अस्मिन्योगे पंचमेशे वा नवमेशे पुंवर्गे=पुरूषग्रहवर्गे पुरूषग्रहेण दृष्टे वा युते सति तदा तु पुत्राधिको जातः। अर्थात् जातो बहुपुत्रान्वितो भवति। यथा मन्त्रेश्वरः (फलदीपिका १२/११)—

'पुंराश्यंशेऽधीश्वरे पुंग्रहेन्द्रैर्युक्ते दृष्टे पुंग्रहे पुंप्रसूतिः।
स्त्रीराश्यंशे स्त्रीग्रहैर्युक्तदृष्टे स्त्रीणां जन्म स्यात्सुतर्क्षे सुतेशे' इति ॥

जीवात्=गुरोः, पञ्चमराशितः=पुत्रभावतः दैशिकः=दैवज्ञः तनयप्राप्ति वदेत् ॥ ९ ॥

हिन्दी — पंचमेश अथवा नवमेश लग्न से सप्तमस्थान में अथवा समराशि में स्थित हो तथा चन्द्रमा और शुक्र से युत या दृष्ट हो तो कन्यासन्तति अधिक होती है। सप्तमभाव में स्थित पंचमेश या सप्तमेश पुरुषराशि वर्ग में हो, पुरुषग्रह (सू. मं. बृ.) से युत या दृष्ट हो तो जातक अधिक पुत्र से युक्त होता है। गुरु से पञ्चमराशि जो हो उससे पुत्रप्राप्ति का विचार करना चाहिए ॥ ९ ॥

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रे च चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ॥
पापैरयुक्ते बहुपुत्रशाली शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ॥ १० ॥

संस्कृत — शुक्रेन्दुवर्गे इति। विलग्नात्सुतभे=पञ्चमे भावे, शुक्रेन्दु वर्गे=

शुक्रचन्द्रमसोर्वर्गे स्थिते, तस्मिन् शुक्रेणाथवा चन्द्रेण युते वा दृष्टे तथा पापग्रहैरयुक्ते सति तदा जातो बहुपुत्रशाली=बहुपुत्रयुक्तो भवति। तत्र पूर्वलक्षणे शन्यारदृष्टे=शनिभौमाभ्यां निरीक्षिते सति तदा जातो नरः पुत्रहीनः=पुत्ररहितो भवतीति भावः ॥ १० ॥

हिन्दी — लग्न से पञ्चमभाव में शुक्र या चन्द्रमा का वर्ग हो और पंचमभाव शुक्र या चन्द्रमा से युक्त या दृष्ट हो परन्तु वह पापग्रह से युक्त न हो तो जातक बहुत पुत्रवाला होता है। यदि शनि और मङ्गल पंचमभाव को देखते हों तो वह जातक पुत्र से विहीन होता है ॥ १० ॥

पौत्रविचार—

पौत्रप्राप्तिनङ्गभे सुतगृहात्सौम्यस्य राश्यंशके
तन्नाथे शुभखेटवीक्षितयुते केन्द्रत्रिकोणेऽथवा ॥
स्वक्षेत्रोपगते तु पुत्रगृहपे जातोऽल्पपुत्रो भवेत्
पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ॥ ११ ॥

संस्कृत — **पौत्रप्राप्तिरिति**। सुतगृहात्=पञ्चमभावात् अनङ्गभे=सप्तमे (लग्नादेकादशे) भावे सौम्यस्य राश्यंशके=शुभग्रहस्य नवांशके विद्यमाने, तन्नाथे=लाभेशे शुभखेटेन वीक्षिते वा युते, अथवा लग्नात् केन्द्रत्रिकोणे (१।४।७।१०।५।९) स्थिते सति तदा जातस्य पौत्रप्राप्तिः (पुत्रस्यापत्यं) भवति।

स्वक्षेत्रोपगत इति। पुत्रगृहपे=पञ्चमेशे, स्वक्षेत्रोपगते=स्वराशौ स्थिते सति तदा जातः अल्पपुत्रयुक्तो भवति। पुत्रेशांशपतिः=पंचमेशः यन्नवांशे भवेत्तन्नवांशपतिः यदि स्वभांशकगतः=स्वराशि नवांशे स्यात्तदा जातस्यैकं पुत्रं भवेदिति वदेत् ॥ ११ ॥

हिन्दी — पञ्चमभाव से सप्तमस्थान में (लग्न से एकादश) सौम्यग्रह की राशि तथा नवांश हो और एकादशेश शुभग्रह से युत या दृष्ट हो, अथवा केन्द्र-त्रिकोण में स्थित हो तो पौत्र की प्राप्ति होती है। पञ्चमेश यदि अपनी राशि में हो तो जातक को अल्पपुत्र होते है। पंचमेश का नवांशपति यदि अपने राशिनवांश में हो तो जातक को एकपुत्र अवश्य होता है ॥ ११ ॥

पुत्रस्थे मदनाधिपे वितनयो जायाविहीनोऽथवा
पुत्रादष्टमशत्रुरिष्फगृहगाः पापाः कुलध्वंसकाः ।
राहौ नन्दनराशिगे तदधिपे दुःस्थानगे पुत्रहा
पुत्रस्थे तनुपें तनौ सुतपतौ गृह्णाति दत्तात्मजम् ॥ १२ ॥

संस्कृत — **पुत्रस्थ** इति। मदनाधिपे=सप्तमेशे पुत्रस्थे=पञ्चमभावगते सति तदा जातः वितनयो=पुत्ररहितो अथवा जायाविहीनः=स्त्रीविहीनो भवेत्। पुत्रात्=

पञ्चमभावतः अष्टमरिष्फशत्रु (लग्नतः १२-४-१०) गृहगाः, पापाः=पापग्रहाः तदा जातस्य कुलध्वंसकाः=वंशनाशका भवन्ति। राहौ नन्दनराशिगे=पञ्चमभावगते, तदधिपे=पञ्चमेशे, दुःस्थानगे=षडष्टव्ययगते सति तदा जातो दारहा=स्त्रीविनाशको भवेत्। तनुपे=लग्नेशे, पुत्रस्थे=पञ्चमभावगते, सुतपतौ=पञ्चमेशे, तनौ=लग्ने च विद्यमाने सति तदा जातो दत्तात्मजं=दत्तकपुत्रं गृह्णाति। अर्थात् तस्यौरसः पुत्रो न भवेदिति भावः ॥ १२ ॥

हिन्दी — यदि सप्तमेश पञ्चमभाव में स्थित हो तो जातक पुत्रविहीन या स्त्री से हीन होता है। पंचमभाव से अष्टम-षष्ठ या द्वादश (लग्न से १२-४-१०) भाव में पापग्रह हों तो कुल का नाश होता है। राहु पञ्चमभाव में हो, पञ्चमेश दुष्टस्थान में हो तो जातक पुत्रहीन होता है। लग्नेश पंचमभाव में हो और पञ्चमेश लग्न में हो तो उसे दत्तक पुत्र होता है ॥ १२ ॥

दुःस्थौ विलग्नसुतपौ समुपैति पुत्रं
दत्तात्मजं च शुभखेचरवीक्षितौ चेत्।
तद्भावराशियुतकारकवर्गमूलात्
गृह्णाति दत्ततनयं परतस्त्वखेटात् ॥ १३ ॥

संस्कृत — **दुःस्थाविति।** विलग्नसुतपौ=लग्नेश-पञ्चमभावेशौ, दुःस्थौ= षडष्टव्ययगतौ चेद्यदि शुभखेचरवीक्षितौ च तदा जातस्य स्वपुत्रं, दत्तात्मजं पुत्रञ्च भवेत्। अस्मिन्योगे समुत्पन्नस्य नरस्य स्वीयः पुत्रः दत्तकपुत्रश्चापि भवति। अर्थात् दत्तकपुत्रग्रहणानन्तरं स्वपुत्रो जायेत वा जायमानस्य पुत्रस्य मरणान्ते दत्तात्मजग्रहणं भवेदिति। तद्भावराशौ=पञ्चमभावे यो ग्रहो तिष्ठति तस्य, तथा पञ्चमभावकारक (बृह.) ग्रहस्य वर्गमूलाद्=षडवर्गराशिषु अखेटात्=यो ग्रहशून्यस्थान-स्यात्तस्य राश्यस्य योवर्णः (जाति) स्यात्ततो दत्ततनयं गृह्णाति। अर्थात् पञ्चमभावस्थितग्रहस्य आत्मजकारक ग्रहस्य च मध्ये यो बली स्यात्तस्य ग्रहस्य षडवर्गे यत्स्थानं ग्रहशून्यं भवेत् तद्राश्या तस्या स्वामीग्रहस्य वा यज्जातिकं स्यात्ततो दत्तात्मजं जातकः गृह्णाति इति वदेत् ॥ १३ ॥

हिन्दी — लग्नेश व पञ्चमेश दुष्ट (६-८-१२) स्थान में हों और उन्हें यदि शुभग्रह देखते हों तो वे दत्तकपुत्र को देते है। पञ्चमभावगत ग्रह और पुत्रकारक (बृह.) ग्रह के मध्य में जो बली हो उसके षड्वर्ग में जो ग्रहशून्य स्थान हो उसीराशि की अथवा राशिपति की जाति से दत्तक पुत्र ग्रहण होता है ॥ १३.॥

केन्द्रत्रिकोणगृहगः सुतपः शुभर्क्षे
सौम्यान्वितो यदि सुतं समुपैति बाल्ये ॥

भोगीशयुक्तसुतराशिपभुक्तिजातः
स्वल्पायुरेति फणिभुक्तिभवश्चिरायुः ॥ १४ ॥

संस्कृत — केन्द्रेति। सुतपः=पञ्चमभावेशः, शुभर्क्षे स्थितः सन् केन्द्र-त्रिकोण (१-४-७-१०-५-९) गृहगः एवं भूतो यदि सौम्यान्वितः=केनचिच्छुभ-ग्रहेण युक्तः स्यात्तदा, बाल्ये=अल्पवयस्येव सुतं=पुत्रं, समुपैति=प्राप्नोति।

भोगीशयुक्तेति। भोगीशेन (राहुणा) युक्तस्य सुतराशिपस्य=पञ्चमेशस्य भुक्तिजातः=दशान्तर्दशासमये उद्भूतः पुत्रः स्वल्पायुः=अल्पजीवनं प्राप्नोति। फणिभुक्तिभवः (पञ्चमेशयुक्तस्य राहोर्दशान्तर्दशासमये समुत्पन्नः) चिरायुः= दीर्घायुर्भवति ॥ १४ ॥

हिन्दी — शुभराशि में स्थित पञ्चमेश केन्द्र-त्रिकोण में होकर शुभग्रह से युक्त हो तो जातक को बाल्यावस्था में ही पुत्रप्राप्ति होती है। राहु से युक्त पञ्चमेश की अन्तर्दशा में पुत्र उत्पन्न हो तो वह अल्पायु होता है और (पञ्चमेश से युक्त) राहु की अन्तर्दशा में पुत्र उत्पन्न हो तो वह दीर्घायु होता है ॥ १४ ॥

पुत्रस्थानपवित्तपौ गतबलौ पापेक्षिते पुत्रभे
जातोऽनेककलत्रवानपि सुताभावं समेति ध्रुवम् ।
तज्जाया यदि पुत्रयोगजनिता सौम्येन वा पञ्चमात्
षष्ठेशेन निरीक्षिते सुतवती जारेण संजायते ॥ १५ ॥

संस्कृत — पुत्रस्थानति। पुत्रस्थानप वित्तपौ=पञ्चमेश-द्वितीयेशौ यत्र तत्र स्थित्वा गतबलौ भवेतां तथा पुत्रभे=पञ्चमभावे पापेक्षिते=पापग्रहेण दृष्टे सति तदा जातो नरोऽनेक-कलत्रवानपि=अनेकदारसहितेऽपि, ध्रुवं=निश्चयेन सुताभावम्= पुत्रहीनत्वं समेति। अर्थात् जातस्य बहुविवाहे कृतेऽपि पुत्रो न जायते। तज्जाया= उपरोक्तलक्षणयुक्त नरस्य स्त्री यदि पुत्रयोगजनिता=पुत्रयोगवती स्यात् तथा पञ्चमे भावे सौम्येन=केनचिच्छुभग्रहेण वा पञ्चमात्षष्ठेशेन (लग्नाद्दशमेशेन) निरीक्षिते सति तदा जारेण=परपुरूषेण, सुतवती=पुत्रवती सञ्जायते। अर्थात् तदानीमौरसः पुत्रः न स्यात् परं क्षेत्रज एव उत्पद्यते ॥ १५ ॥

हिन्दी — पञ्चमेश और द्वितीयेश बलहीन हों तथा पंचमभाव पापग्रह से देखा जाता हो तो अनेक स्त्रियों से युक्त होने पर भी वह जातक पुत्र से रहित होता है। यदि उसकी स्त्री पुत्रयोग वाली हो और पंचमेश को शुभग्रह देखते हों या पाँचवे भाव के षष्ठेश (दशमेश) से दृष्ट हो तो वह परपुरुष से पुत्रवती होती है ॥ १५ ॥

पुत्रस्थाने तदीशे वा गुरौ वा शुभवीक्षिते ।
शुभग्रहेण संयुक्ते पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥ १६ ॥

लग्नेशे पुत्रभावस्थे पुत्रेशे बलसंयुते ।
परिपूर्णबले जीवे पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥ १७ ॥
पुत्रस्थानगते जीवे परिपूर्णबलान्विते ।
लग्नाधिपेन संदृष्टे पुत्रप्राप्तिर्न संशयः ॥ १८ ॥
वैशेषिकांशके जीवे पुत्रेशे च तथास्थिते ।
शुभनाथेन संदृष्टे पुत्रे तत्प्राप्तिमादिशेत् ॥ १९ ॥

संस्कृत — अत्र पुत्रस्थान इत्यादिश्लोकचतुष्केण पुत्रप्रदा योगाः वक्ष्यन्ते। तत्र श्लोकाः स्पष्टार्थाः सरलार्थाश्च ॥ १६-१९ ॥

हिन्दी — पञ्चमभाव-पञ्चमेश या बृहस्पति यदि शुभग्रह से दृष्ट तथा युक्त हों तो निःसन्देह ही पुत्रप्राप्ति होती है ॥ १६ ॥

लग्नेश पंचमभाव में हो, पञ्चमेश बलवान् हो तथा बृहस्पति भी पूर्ण बली हो तो निस्सन्देह ही पुत्रप्राप्ति होती है ॥ १७ ॥

पूर्णबली बृहस्पति पुत्रभाव में हो और उसे लग्नेश देखता हो तो निस्सन्देह ही पुत्रप्राप्ति होती है ॥ १८ ॥

बृहस्पति वैशेषिकांश (१ । ४४) में हो और पंचमेश भी बृहस्पति के साथ हो तथा पंचमभाव को नवमेश देखता हो तो पुत्र की प्राप्ति होती है ॥ १९ ॥

दशमे शीतगुर्द्यूने भृगुजः पापिनः सुखे ।
तस्य सन्ततिविच्छेदो भविष्यति न संशयः ॥ २० ॥
षष्ठाष्टमस्थो लग्नेशः पापयुक्तः सुताधिपः ।
दृष्टो वा शत्रुनीचस्थैः पुत्रहानिं वदेद् बुधः ॥ २१ ॥
लग्नसप्तमधर्मान्त्यराशिगाः पापखेचराः ।
सपत्नराशिवर्गस्था वंशविच्छेदकारिणः ॥ २२ ॥

संस्कृत — दशमे शीतगुरित्यादिश्लोकत्रयेण वंशविच्छेदकरायोगाः वक्ष्यन्ते। दशमे शीतगु=कर्मस्थे चन्द्रे, द्यूने=सप्तमे भृगुजः=शुक्रः, पापिनः सुखे= पापग्रहाः चतुर्थे गते तदा सन्ततिविच्छेदो=वंशक्षयो भविष्यति इति न संशयः। अग्रे सरलार्थयुक्ता ॥ २०-२२ ॥

हिन्दी — चन्द्रमा दशमभाव में हो, शुक्र सप्तमभाव में हो और पापग्रह चतुर्थभाव में हों तो निस्सन्देह हीं उसके सन्तान का नाश होता है ॥ २० ॥

लग्नेश षष्ठभाव में या अष्टमभाव में हो, पंचमेश पापग्रह से युक्त हो या उसे शत्रुराशिस्थ या नीचराशिस्थ ग्रह देखता हो तो उस जातक के पुत्र की हानि होती है ॥ २१ ॥

पापग्रह यदि लग्न-सप्तम-नवम और द्वादशस्थान में होकर षष्ठेश की राशि या वर्ग में स्थित हों तो वे वंशविच्छेद कारक होते हैं॥ २२॥

त्याज्य स्त्री—

बन्ध्या वृद्धा कृशा बाला रोगिणी पुष्पवर्जिता ।
कर्कशा स्थूलदेहा च नार्योऽष्टौ परिवर्जिताः॥ २३॥

संस्कृत — बन्ध्येति। बन्ध्या=सन्ततिविरहिता, वृद्धा=अतिवयस्का, कृशा=क्षीणाङ्गी, बाला=अत्यल्पवयस्का, रोगिणी=व्याधियुक्ता, पुष्पवर्जिता=रजोहीना, कर्कशा=दुर्व्यवहारिणी, स्थूलदेहा=वृहदकाया एता अष्टौ नार्यः परिवर्जिताः। अर्थात् एतदष्टलक्षणोपलक्षिताः स्त्रियो नोद्वाह्या इति भाव॥ २३॥

हिन्दी — बन्ध्या - वृद्धा - कृशा(दुर्बला) - बाला - रोगिणी - पुष्पवर्जिता (ऋतु से हीन)-कर्कशा (झगड़ालू)-स्थूलदेहा (मोटी) ये ८ प्रकार की स्त्रियाँ त्याज्य कही गई हैं॥ २३॥

गुरुलग्नेशदारेशपुत्रस्थानाधिपेषु च ।
सर्वेषु बलहीनेषु वक्तव्या त्वनपत्यता॥ २४॥
पुत्रस्थानं गते पापे तदीशे नीचराशिगे ।
शुभदृष्टिविहीने तु वक्तव्या त्वनपत्यता॥ २५॥
गुरुलग्नहिमांशूनां पञ्चमस्थैरशोभनैः ।
शुभदृग्योगरहितैर्वक्तव्या त्वनपत्यता॥ २६॥
पुत्रस्थानगते पापे तदीशे पापमध्यगे ।
सौम्यदृग्योगरहिते वक्तव्या त्वनपत्यता॥ २७॥
पापमध्यगते जीवे पुत्रेशे बलवर्जिते ।
सौम्यदृग्योगरहिते वक्तव्या त्वनपत्यता॥ २८॥

संस्कृत — गुरू लग्नेत्यादिश्लोक पञ्चकेन अनपत्य योगानाह—

१. गुरु-लग्नेश-सप्तमेश-पञ्चमेशा यदि निर्बलास्तदा जातस्यानपत्यतायोगो (पुत्राहित्यं) वदेत्।

२. पुत्रस्थानं=पञ्चमे पापग्रहे स्थिते, पञ्चमेशे नीचराशिस्थिते एवं शुभग्रहदृष्टिविहीने सति तदा अनपत्यता वदेत्।

३. बृहस्पतेः स्थानात् लग्नाच्चन्द्राच्च पञ्चमे यदि पापग्रहा स्थितास्तथा ते शुभ दृष्टियोगरहिता भवेयुस्तदा अनपत्यता वदेत्।

४. पापग्रहः पञ्चमगतः पञ्चमेशः पापद्वयमध्यगतः शुभग्रहदृष्टियोग-रहितश्चभवेयुस्तदा अनपत्यता वदेत्।

५. बृहस्पतिः पापद्वयमध्यगतः पुत्रेशः=पञ्चमेशः बलवर्जितः=निर्बलः शुभदृष्टियोगरहितश्च स्यात्तदा अनपत्यता वदेत् ॥ २४-२८ ॥

हिन्दी — बृहस्पति-लग्नेश-सप्तमेश और पञ्चमेश, इन सबोंके बलहीन रहने पर अनपत्य दोष होता है।

पापग्रह पंचमस्थान में रहे और पंचमेश नीचराशि में होकर शुभग्रह की दृष्टि से हीन हो तो अनपत्य दोष होता है।

बृहस्पति-लग्न व चन्द्रमा इनसे पंचमस्थान में पापग्रह हों और वे शुभग्रह से दृष्ट युत न हों तो अनपत्य दोष होता है।

पंचमस्थान में पापग्रह हो, पंचमेश पापग्रह के मध्य में हों और वह शुभग्रह से दृष्ट युत न हो तो अनपत्य दोष होता है।

पापग्रहों के मध्य में बृहस्पति हो, पञ्चमेश निर्बल हो और शुभग्रह उसे न देखता हो न युत हो तो अनपत्य दोष होता है ॥ २४-२८ ॥

पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे मन्दक्षेत्रेऽथवा यदि ।
मान्दिमन्दयुते दृष्टे तदा दत्तादयः सुताः ॥ २९ ॥

संस्कृत — पुत्रस्थान इति। बुधक्षेत्रे=मिथुनकन्ययो अथवा मन्दक्षेत्रे=मकर-कुम्भराशौ यदि पुत्रस्थाने=पञ्चमेभावे सति तत्र मान्दिमन्दयुते दृष्टे=गुलिक-शनैश्चरयोरन्यतरेण द्वाभ्यां वा स्थिते अथवा दृष्टे तदा दत्तादयः सुताः=जातस्य नौरसः सुतो भवति, परन्तु दत्तकात्मजादय एव उपयुज्यन्ते। यथा फलदीपिकायाम् (१२/८)—

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथ बौधं मान्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत्।
दत्तात्मजः स्यादुदयास्तनाथसम्बन्धहीनो विबलः सुतेशः। इति ॥ २९ ॥

हिन्दी — यदि पंचमभाव में बुध की राशि (मि. क.) या शनि की राशि हो (१०।११) उस में शनि या गुलिक हो या उसकी दृष्टि हो तो जातक को दत्तक आदि पुत्र होता है ॥ २९ ॥

मीनस्थोऽत्यल्पसन्तानश्चापस्थः कृच्छ्रसन्ततिः।
असन्ततिः कुलीरस्थो जीवः कुम्भे न सन्ततिः ॥ ३० ॥
पुत्रस्थाने कुलीरे वा मीने कुम्भे शरासने।
स्थितो यदि सुराचार्यस्तत्फलं कुरुते नृणाम् ॥ ३१ ॥

संस्कृत — मीनस्थ इति। जीवः=बृहस्पतिर्यदि मीनस्थो भवेत्तदा जातोऽत्यल्पसन्तानः, यदि बृहस्पतिश्चापस्थः=धनुर्गतस्तदा कृच्छ्रसन्ततिः=कष्टेन सन्तति प्राप्नोति, अर्थात् विविध देवाद्याराधन मन्त्र यन्त्रौषधि सेवनेन पुत्रो जायते।

यदि बृहस्पतिः कुलीरस्थः=कर्कराशिस्थितो स्यात्तदा असन्ततिः=सन्तानरहितो भवति। यदि बृहस्पतिः कुम्भे स्थितः स्यात्तदाऽपि सन्ततिर्नभवतीति। कुलीर-मीन-कुम्भ-धनुरिति राशिचतुष्टयानामन्यतमे राशौ पुत्रस्थाने=पञ्चमेभावे स्थिते तत्र यदि सुराचार्यः=बृहस्पति स्थितो भवेत्तदा नृणां=जनिमतां, तत्फलं=पुत्रलाभं कुरूते इति भावार्थः ॥ ३०-३१ ॥

हिन्दी — मीनराशि में बृहस्पति स्थित हो तो अल्प सन्तान, धनु में हो तो कष्ट से सन्तान, कर्कराशि में हो तो सन्तानरहित और कुम्भ में भी सन्तानहीन होता है।

पंचमस्थान में कर्क-मीन-कुम्भ-धनु राशि हो और यदि उसमें बृहस्पति स्थित रहे तो जातक को सन्तानप्राप्ति का फल मिलता है ॥ ३०-३१ ॥

पापग्रहेण संदृष्टे देवशापात्सुतक्षयः ॥
षष्ठाधिपयुते दृष्टे विप्रशापात्सुतक्षयः ॥ ३२ ॥

संस्कृत — पापग्रहेणेत्यादि। पंचमभावः यदि पापग्रहेण संदृष्टे तदा जातस्य देवशापात्=कस्यचिद् देवस्यायजनयाजनावहेलना दोषात् सुतक्षयो=पुत्रनाशो भवति। एवं सुतेशे षष्ठाधिपेन=षष्ठभावपतिना युते वा दृष्टे स्यात्तदा विप्रशापात्=ब्राह्मणस्य कोपवशात्सुतक्षयो भवति ॥ ३२ ॥

हिन्दी — यदि पंचमभाव को पापग्रह देखता हो तो देवशाप से पुत्र का नाश होता है। षष्ठेश से युक्त या दृष्ट यदि पंचमभाव हो तो ब्राह्मण के शाप से पुत्र का नाश होता है ॥ ३२ ॥

सुतेशे कुजसंयुक्ते रिपुनाथेन वीक्षिते।
शुभदृष्टिविहीने च रिपुदोषात्सुतक्षयः ॥ ३३ ॥

संस्कृत — सुतेशे=पञ्चमेशे कुजेन=भौमेन संयुक्ते, रिपुनाथेन=षष्ठेशेन वीक्षिते तथा शुभग्रहदृष्टिविहीने सति तदा रिपुदोषात्=शत्रोर्घातेन सुतक्षयो भवति ॥ ३३ ॥

हिन्दी — पंचमेश मङ्गल से युक्त हो और षष्ठेश उसको देखता हो परन्तु शुभग्रह उसे न देखता हो तो शत्रु के कारण पुत्र का नाश होता है ॥ ३३ ॥

नवमे पापसंयुक्ते मन्दयुक्ते सुताधिपे ॥
त्रिकोणे मान्दिसंयुक्ते पितृदोषात्सुतक्षयः ॥ ३४ ॥

संस्कृत — नवमे पापसंयुक्ते=धर्मस्थाने पापग्रहस्थिते, सुताधिपे=पञ्चम-भावेशे, मन्दयुक्ते=शनिना संयुक्ते, त्रिकोणे (९।५) मान्दिसंयुक्ते=गुलिकेन सहिते सति तदा पितृदोषात्=पितुः कुकृत्येन सुतक्षयोभवति ॥ ३४ ॥

हिन्दी — नवमभाव में पापग्रह हो पञ्चमेश शनि से युक्त हो और गुलिक त्रिकोण (५।९) स्थान में हो तो पिता के कुकृत्य से पुत्र का नाश होता है ॥ ३४ ॥

मातृस्थानगते पापे सुतेशे मन्दसंयुते ।
व्ययनाशगते पापे मातृदोषात्सुतक्षयः ॥ ३५ ॥

संस्कृत — पापे मातृस्थान=चतुर्थभाव गते, सुतेशे=पंचमेशे मन्दसंयुते=शनिना युक्तः व्यये (१२) नाशे (८) पापे गते तदा मातृदोषात्= जननी अवधानतावशात्सुतक्षयो भवति ॥ ३५ ॥

हिन्दी — चतुर्थभाव पापग्रह से युक्त हो, पंचमेश शनि से युक्त हो तथा द्वादश-अष्टम स्थान भी पापयुक्त हो तो माता के दोष से पुत्र का नाश होता है ॥ ३५ ॥

राहुकेतुयुते दृष्टे पञ्चमे बलवर्जिते ।
तदीशे वा तथा प्राप्ते सर्पदोषात्सुतक्षयः ॥ ३६ ॥

संस्कृत — पञ्चमे भावे राहुणा-केतुना युते वा दृष्टे बलहीने च सति, वा तदीशे=पञ्चमभावेशे तथा प्राप्ते (राहुणा केतुना युते दृष्टे निर्बले च) तदा सर्पदोषात्=सर्पादेर्मारणादि दोषात्तत्सुतक्षयो भवेदिति ॥ ३६ ॥

हिन्दी — पंचमस्थान राहु या केतु से युक्त या दृष्ट हो और बलरहित हो तथा पंचमेश भी यदि उसी तरह हो तो सर्प के दोष से पुत्र का नाश होता है ॥ ३६ ॥

गुरुपुत्रेशदारेशभूमिजाः संयुता यदि ।
दुर्देवपीडया पुत्री पुत्रनाशं वदेद् बुधः ॥ ३७ ॥

संस्कृत — गुरुः-पञ्चमेशः-सप्तमेशः-मङ्गलश्चैते यदि संयुता=एकत्रगताः स्युस्तदा दुर्देवपीडया=कस्यचित्प्रतिकूलदेवस्य कोपवशात् पुत्रीपुत्रयोर्नाशं बुधो वदेदितिभावः ॥ ३७ ॥

हिन्दी — गुरु-पुत्रेश-सप्तमेश और मङ्गल यदि एक साथ हों तो दुष्टदेव के कोप से पुत्री और पुत्र का नाश होता है ॥ ३७ ॥

दत्तक पुत्र योग—

पुत्रस्थानगतः कश्चित्परिपूर्णबलान्वितः ।
अदृष्टः पुत्रनाथेन तदा दत्तादयः सुताः ॥ ३८ ॥

संस्कृत — **पुत्रस्थानगत** इत्यादि। परिपूर्णबलान्वितः=पूर्वोक्तसकलबलयुक्तः कश्चिद् ग्रहः, पुत्रस्थानगतः=पञ्चमभावगतः पुत्रनाथेन=पञ्चमेशेन अदृष्टो भवेत्तदा तस्य जातस्य दत्तादय एव सुताः भवन्ति अर्थादौरसापुत्राः न भवन्ति ॥ ३८ ॥

हिन्दी — पंचमस्थान में पूर्ण बलवान् होकर कोई भी ग्रह स्थित हो और पञ्चमेश से यदि वह अदृष्ट हो तो जातक को दत्तक पुत्र होता है ॥ ३८ ॥

पापक्षेत्रगते चन्द्रे पुत्रेशे धर्मराशिगे ।
दत्तपुत्रस्य सम्प्राप्तिर्लग्नेशस्तु त्रिकोणगः ॥ ३९ ॥

संस्कृत — पापक्षेत्रगते चन्द्रे=चन्द्रः पापग्रहराशिगतः पुत्रेशे धर्मराशिगे=पञ्चमेशः नवमभावगतः, लग्नेशस्त्रिकोणस्थानगतो भवेत्तदा दत्तपुत्रस्य सम्प्राप्तिर्भवतीति ज्ञेयः ॥ ३९ ॥

हिन्दी — चन्द्रमा पापग्रह की राशि में हो, पञ्चमेश नवमभाव में हो और लग्नेश त्रिकोणस्थान में हो तो जातक को दत्तक पुत्र होता है ॥ ३९ ॥

युग्मोदये पुत्रनाथश्चतुर्थस्थानगोऽपि वा ।
मन्दांशकसमारूढो दत्तपुत्रो भविष्यति ॥ ४० ॥

संस्कृत — युग्मोदये=समराशिके लग्ने स्थिते पुत्रनाथः=पंचमेशः अथवा चतुर्थस्थानगोभवेत् मन्दांशकसमारूढः=शनेः (मकरकुम्भयोः) नवांशे स्थितोऽपि स्यात्तदा जातस्य दत्तपुत्रो भविष्यति ॥ ४० ॥

हिन्दी — पंचमेश समराशि में अथवा चतुर्थभाव में स्थित होकर शनि के नवांश में रहे तो जातक को दत्तक पुत्र होता है ॥ ४० ॥

युग्मांशे भानुजांशे वा पुत्रेशोऽर्केन्दुजान्वितः ॥
दत्तपुत्रस्य संप्राप्तिस्तस्मिन्योगे भविष्यति ॥ ४१ ॥

संस्कृत — अर्केन्दुजान्वितः=सूर्याबुधाभ्यां सहितः पुत्रेशः=पञ्चमेशः, युग्मांशे=समराशिनवांशे अथवा भानुजांशे=शनेः (मकरकुम्भ) नवांशे स्थितो भवेत्तदा तस्मिन् योगे दत्तपुत्रस्य सम्प्राप्तिर्भविष्यति ॥ ४१ ॥

हिन्दी — समराशि के नवांश में अथवा शनि के नवांश में सूर्य और चन्द्रमा से युक्त होकर यदि पञ्चमेश रहे तो जातक को दत्तकपुत्र की प्राप्ति होती है ॥ ४१ ॥

मन्दांशे पुत्रराशीशः स्वराशौ गुरुभार्गवौ ।
पूर्वं दत्तसुतप्राप्तिः पुनर्नार्याः पुनः सुतः ॥ ४२ ॥

संस्कृत — पुत्रराशीशः=पञ्चमभावेशः यत्र तत्र मन्दांशे=शनि नवांशे (मकरकुम्भराशिनवांशे) भवेत्, गुरुभार्गवौ=बृहस्पतिशुक्रौ स्वराशौ भवेतां (गुरुर्धनुमीने शुक्रो वृषतुलायां) तदा जातस्य पूर्वं=प्रथमं, दत्तसुतप्राप्तिर्भवति, ततः परं नार्याः=स्वस्त्रियाः पुनरौरसः पुत्रस्य प्राप्तिर्भवति ॥ ४२ ॥

हिन्दी — पञ्चमेश शनि के नवमांश में हो तथा अपनी अपनी राशि में बृहस्पति और शुक्र हों तो जातक को पहले दत्तक पुत्र प्राप्त होता है, पुनः अपनी स्त्री से पुत्रप्राप्ति होती है ॥ ४२ ॥

मन्दांशकस्थिताः खेटाः शुक्लपक्षबलाधिकाः ।
गुरुर्यदि सुखस्थाने दत्तपुत्रेण सन्ततिः ॥ ४३ ॥

संस्कृत — शुक्लपक्षे जन्म भवेत् तथा बलाधिकाः=पूर्णबलिनः खेटाः

(त्र्यधिकाः) मन्दांशके (मकर कुम्भ राशिनवांशे) स्थिताः स्युः तदानीं यदि गुरूः सुखस्थाने=चतुर्थभावे भवेत्तदा जातः दत्तपुत्रेण सन्ततिर्प्राप्नोति ॥ ४३ ॥

हिन्दी — शुक्लपक्ष में जन्म हो, शनि के नवमांश में अधिक बलवाले ग्रह हों और गुरु यदि पुत्रस्थान में हो तो जातक की दत्तकपुत्र द्वारा वंशवृद्धि होती है ॥ ४३ ॥

विलग्नस्थे धरासूनौ निधनस्थे दिवाकरे ।
सुखे वा शुभसंदृष्टे पुत्रः कालान्तरे भवेत् ॥ ४४ ॥

संस्कृत — **विलग्नस्थ** इति। धरासूनौ=भौमे, विलग्रस्थे=जन्मलग्नगते, दिवाकरे=सूर्ये निधनस्थे=अष्टमगते अथवा सुखे=चतुर्थगते तस्मिन् शुभग्रहेण सन्दृष्टे सति तदा कालान्तरे=विलम्बेन (कालान्तरेण) पुत्रः भवेत्। यथा होरारत्ने (अ. ७ पंचम भाव. ४०)—

''भौमे विलग्रयाते चाष्टमराशिस्थिते दिनेशसुते।
सूर्ये वाऽल्पसुतर्क्षे पुत्रः कालान्तरे भवति॥'' इति ॥ ४४ ॥

हिन्दी — लग्न में मङ्गल हो और अष्टम या चतुर्थ में स्थित सूर्य पर शुभग्रह की दृष्टि रहे तो कालान्तर में पुत्रप्राप्त होता है ॥ ४४ ॥

लग्ने दिनेशतनये रन्ध्रस्थानगते गुरौ ॥
पञ्चमे दुर्बले रिःफे भौमे कालान्तरे सुतः ॥ ४५ ॥

संस्कृत — दिनेशतनये=शनैश्चरे लग्ने स्थिते, गुरौ रन्ध्रस्थानं=अष्टमभावं गते, पञ्चमेभावे दुर्बले, भौमे रिष्फे=द्वादशे भावे गते तदा कालान्तरे=विलम्बेन सुतो जायते। यथा (अज्ञात)—

''लग्ने मन्दे गुरौ रन्ध्रे व्यये भौमसमन्विते।
शुभदृष्टे स्वतुङ्गे वा चिरात पुत्रमुपैति सः॥'' इति ॥ ४५ ॥

हिन्दी — लग्नस्थान में शनि हो, अष्टमभाव में बृहस्पति हो और पञ्चम या द्वादश में बलहीन मङ्गल हो तो कालान्तर में पुत्र होता है ॥ ४५ ॥

सन्तति संख्या ज्ञान—

पुत्रान् पञ्चमभात्तृतीयभवनाद् भ्रातॄन् कलत्रात् स्त्रियो
दासीश्च क्षितिराशितः स्वभवनाद्दासाँश्च मित्राणि च ।
याताँच्चैव नवांशकाच्छुभदृशा हत्वा तथारोपयेद्
व्योमव्योमकरैर्विभज्य तु तथा भूताश्च पुत्रादयः ॥ ४६ ॥

संस्कृत — **पुत्रानिति**। पञ्चमभात्=लग्नात्पञ्चमभावतः, पुत्रान्विचारयेत्, तृतीयभवनात्=सहजभावतः भ्रातृन्, कलत्रात्=सप्तमभवनतः स्त्रियः, क्षितिराशितः=

चतुर्थभावात् दासीश्चिन्तयेत्, स्वभवनात्=द्वितीयभावात् दासान् मित्राणि च विचारयेत्। पञ्चमतृतीयसप्तमादिभावे यातान्=भुक्तान् नवांशकान् (यावन्तो नवांशा भुक्ताः) शुभदृशा=शुभखेटदृष्ट्या (अ. २/३०, ३१), हत्वा=सङ्गुण्य तथारोपयेत्। तान् संगुणित संख्यान् व्योमव्योमकरैः=२०० शतद्वयेन विभज्य तु (पुनः) तथाभूताः= लब्धिसंख्यामिताः पुत्रादयश्च ज्ञेयाः।

"संख्या नवांशतुल्या सौम्यांशे तावती सदा दृष्टा" इति (सारा. ३४/२७) वचनेन च भ्रातृपुत्रादिभावे गतनवाशांनां शुभदृष्टिबलानां च तयोर्गुणनफले कलामये (दृष्टि बल अ. २/३०, ३१) शतद्वयभक्ते सति लब्धितुल्याः भ्रातृपुत्रादय इति सम्यगुचितम्॥ ४६॥

हिन्दी — पञ्चमभाव से पुत्रों का, तृतीयभाव से भाइयों का, सातवेंभाव से स्त्री का, चौथेभाव से दासियों का तथा द्वितीयभाव से नौकरों और मित्रों का विचार करना चाहिए। इनकी संख्या जानने के लिए उन-उन भावों पर शुभग्रहों का जो दृग्बल हो (२।३०-३१) उससे उसभाव के गत नवांशसंख्या को गुणा करके उसमें २०० से भाग देने पर लब्धि संख्यातुल्य पुत्रभ्रातादि की संख्या समझनी चाहिये॥ ४६॥

पुत्रं सोदरभं कलत्रमुदयं यानं च राशिं विना
तल्लिप्ताः शुभखेटदृग्बलहताः षष्ट्या विभक्ताः क्रमात्।
व्योमाकाशकराप्तपुत्रसहजस्त्रीदासदासीसुहृत्
संख्याः पापनभोगदृग्बलभवाः पुत्रादिनाशप्रदाः॥ ४७॥

संस्कृत — पुत्रमिति। पुत्रं=पञ्चमं, सोदरम्=तृतीयम्, कलत्रं=सप्तमं, उदयं=लग्नम्, यानं=चतुर्थभावम्, राशिं विना=उक्तभावानां राशिसंख्यां विहाय, तल्लिप्ताः=तत्तद्भावांशादीनां पृथक् पृथक् कलाः, शुभखेटदृग्बलहताः=शुभग्रहाणां दृष्टिबलसंख्यामानेन गुणिताः, षष्ट्या ६० विभक्ताः, ततः क्रमात्=क्रमशः व्योमाकाशकरैः २०० आप्ताः (विभक्ताः) तदा पुत्र-सहज-स्त्री-दास-दासी-सुहृदानां च पृथक् पृथक् संख्या ज्ञेयाः। तत्र पापनभोगदृग्बलभवाः पुत्रादिनाशप्रदाः भवन्ति। अर्थात् तदुक्तभावेषु पापग्रहाणां दृष्टिबलवशादुक्तविधिना यावत्यः संख्या प्राप्नुवन्ति तावतां पुत्रभ्रात्रादीनां नाशं भवेदिति भावः॥ ४७॥

हिन्दी — पञ्चम-तृतीय-सप्तम-लग्न और चतुर्थ भावों के राशि को छोड़कर अर्थात् इन-इन भावों के अंशादि को कला बनावें। शुभग्रह के दृष्टिबल से उनमें गुणा करके ६० का भाग दे, प्राप्त लब्धि में पुनः २०० का भाग देने पर क्रम से पुत्र-भाई-स्त्री-दासी-मित्र आदि की संख्या होती हैं। पापग्रह के दृष्टिबल से उतने संख्यक पुत्रभ्रातादि का नाश होता है॥ ४७॥

पुत्रस्थानपलग्नपस्फुटयुते राश्यंशकोणे गुरौ
पुत्राप्तिः सचिवेन्द्विनस्फुटयुते राश्यंशसंख्याः सुताः ॥
धीधर्मावनिनायकः स्फुटचयप्राप्तांशसंख्याऽथवा
धीधर्मक्षितिगस्फुटैक्यभवने यातांशतुल्याः सुताः ॥ ४८ ॥

संस्कृत — पुत्रस्थानपेति। पुत्रस्थानपलग्नपस्फुटयुते=पञ्चमेशलग्नेशयोः स्पष्टराश्यादियोगे ये राश्यंशा भवन्ति तत्र तस्मात्कोणे (९।५ भावे) च गोचरवशात्समागते गुरौ=बृहस्पतौ, पुत्राप्तिः=सुतोत्पत्तिर्भवति। सुतसंख्याज्ञाने-सचिवेन्द्विनस्फुटयुते=गुरु-चन्द्र-सूर्याणां स्पष्टैक्ये कृते जायमानस्य राश्यंशसंख्याः= नवांशसंख्यासमाः, सुताः=पुत्रा भवेयुः। अथवा धीधर्मावनिनायकस्फुटचयप्राप्तांशसंख्यां=पञ्चमेश-नवमेश-चतुर्थेशानां स्पष्टैक्ये प्राप्तराशेर्नवांशसंख्यासमा पुत्रसंख्या वाच्या। अथवा धीधर्मक्षितिगस्फुटैक्यभवने=पञ्चम-नवम्-चतुर्थभावेषु अवस्थितानां ग्रहाणां स्फुटैक्ये कृते यो राशिर्भवति तस्मिन् राशौ, यातांश तुल्याः= गतनवांशसंख्यासमाः सुता=पुत्रा वदेदितिभावः ॥ ४८ ॥

हिन्दी — पञ्चमेश और लग्नेश के स्पष्ट राश्यादि योग करने से जो हो उसमें अथवा उससे कोण (५-९) राशि में बृहस्पति के गोचरवश जाने पर पुत्रप्राप्ति होती है। स्पष्टगुरु-चन्द्र और सूर्य के योग करने पर प्राप्त राशि अंशादि में जितने नवांश गत हों उतने संख्यातुल्य पुत्र होते हैं, अथवा पञ्चमेश-नवमेश-चतुर्थेश के योगराशि के नवांश संख्या तुल्य पुत्र होते हैं, अथवा पञ्चम-नवम और चतुर्थभाव में प्राप्त ग्रहों के योगराशि में गतनवांश संख्या तुल्य पुत्र समझना चाहिए॥ ४८ ॥

जीवाच्चन्द्रमसो विलग्नभवनात्पुत्रप्रदं पञ्चमं
तस्माद्धर्मगृहं च तत्पतिदशाभुक्तौ सुताप्तिं वदेत्।
पुत्रस्थानपकामपस्फुटयुता यत्तारका तद्दशा
तत्खेटान्वितवीक्षकग्रहदशाभुक्तिश्च पुत्रप्रदा ॥ ४९ ॥

संस्कृत — जीवात्=गुरुस्थानात्, चन्द्रमसः=चन्द्राधिष्ठितराशितः, विलग्नभवनात्=जन्मलग्नतश्च पञ्चमं स्थानं पुत्रप्रदं=पुत्रदायकं भवति। एषां त्रयाणां मध्ये बलीयसो ग्रहस्य पञ्चमस्थानात् पुत्रस्यप्राप्तिं अप्राप्तिञ्च चिन्तयेत्। तस्माद्धर्मगृहं च=ततः (गुरोः चन्द्रात्विलग्नाद्वा) नवमं स्थानमपि पुत्रप्रदं भवति। तत्पति-दशाभुक्तौ=यत्स्थानं पुत्रप्रदं भवेत् तदीशग्रहस्यदशान्तर्दशाकाले सुताप्तिं=पुत्रोत्पतिं वदेत्। पुत्रस्थानपकामपस्फुटयुते=स्पष्टपञ्चमेश-सप्तमेशयोरैक्ये कृते यत्तारकाः= यत्रक्षत्रं लभ्यते, तद्दशा=विंशोत्तरीविधिना तस्मिन्नक्षत्रे यस्य ग्रहस्य दशा भवति तद्ग्रहदशां पुत्रदायको भवति। तत्खेटेन=पञ्चमेशेन सप्तमेशेन च, अन्वितस्य=

युक्तस्य, वीक्षकस्य ग्रहस्य=द्रष्टा ग्रहस्य दशा भुक्तिरन्तर्द्दशा च पुत्रप्रदा भवेदिति भावः ॥ ४९ ॥

हिन्दी — बृहस्पति से चन्द्रमा से और लग्न से पंचमस्थान पुत्रप्रदायक होता है एवं उनसे नवमभाव भी पुत्रदायक होता है। उन भावों के स्वामियों की दशा में पुत्र प्राप्ति कहनी चाहिए। पञ्चमेश-सप्तमेश के स्पष्टराश्यादि को युत करने पर जो नक्षत्र आवे उसकी स्पष्टदशा और पंचमेश-नवमेश से युत-दृष्ट ग्रह की अन्तर्दशा पुत्र देनेवाली होती है ॥ ४९ ॥

पुत्रस्थानपकारकेक्षकयुता दुःस्थानपा दुर्बला
दुःस्थास्तत्परिपाकभुक्तिसमये पुत्रस्य नाशं वदेत् ।
चत्वारो बलशालिनो यदि शुभास्तत्पाकभुक्त्यन्तरे
पुत्राप्तिं सुतसम्पदः प्रभुजनप्रीतिं च कुर्वन्ति ते ॥ ५० ॥

संस्कृति — पुत्रेति। पुत्रस्थानपकारकेक्षकयुताः= १. पंचमभावेशः, २. पुत्रकारकः, ३. पंचमभावद्रष्टा, ४. पंचमभावगतश्चैते ग्रहा यदि दुःस्थानपाः= षडष्टव्यय भावेशाः वा दुर्बलाः वा दुःस्था=षड्ष्टव्यय (त्रिकस्थान) गता भवेयुस्तदा तत्परिपाक-भुक्तिसमये=दशान्तर्द्दशाकाले पुत्रस्य नाशम्=मरणं वदेदिति भावार्थः। ते चत्वारः= "पुत्रस्थानपकारकेक्षकयुता" ग्रहा यदि बलशालिनः वीर्यवन्तः, शुभाः=शुभग्रहाश्च भवेत्तदा तत्पाकभुक्त्यन्तरे=तद्दशाऽन्तरदशाभोगसमये, पुत्रप्राप्ति= पुत्रोत्पत्तिं, सुतसम्पदः=पुत्रसम्पदः, प्रभुजनानां=नृपादीनां प्रीतिं मैत्रीं च कुर्वन्ति ॥ ५० ॥

हिन्दी — १. पंचमभावेश, २. पुत्रकारक, ३. पंचमभावद्रष्टा, ४. पंचमभावस्थ ये चार ग्रह यदि दुःस्थान (६।८।१२) के स्वामी हों, निर्बल हो या दुष्टस्थान (६।८।१२) में स्थित हों तो उनकी दशा अन्तर्दशा में पुत्र का नाश होता है। यदि वे चारों ग्रह पूर्णबली हों शुभग्रह हों तो उनकी दशा अन्तर्दशा में पुत्रलाभ-पुत्रों की समृद्धि और राजाओं की प्रीति प्राप्त होती है ॥ ५० ॥

पुत्रेशकारकयुतेक्षकखेचराणां
तत्कालजस्फुटयुतांशकराशियातौ ॥
वागीशभानुतनयौ यदि गोचरेण
जातस्य पुत्रजनिमृत्युकरौ भवेताम् ॥ ५१ ॥

संस्कृत — पुत्रेशेति। पुत्रेशकारकयुतेक्षकखेचराणां=पञ्चमेश-पुत्रकारक-पञ्चमभावस्थ-पंचमभावद्रष्टा ग्रहाणाम्, तत्काले (जन्मकाले) याता=तेषां योगेन ये राश्यंशाः समुत्पद्यन्ते तस्मिन् राशौ नवांशे च, यातौ=सम्प्राप्तौ, गोचरेण= राशिसञ्चारेण, वागीशभानुतनयौ=गुरुशनैश्चरौ यदि भवेतां तदा जातस्य पुत्रजनिमृत्यु-

करौ=पुत्रजन्म-पुत्रमृत्युकरौ भवेताम्। अर्थात् जन्मकाले उक्त चतुर्णां स्पष्टग्रहाणां योगेन यद्राश्यादिकं भवेत्तत्र गोचरवशात् यदा गुरुर्याति तदा पुत्रजन्म भवेत्। यदा तत्र शनिर्याति तदा पुत्रस्य मरणं वाच्यम्॥५१॥

हिन्दी — जन्मसमय में पंचमभावेश-पुत्रकारक-पंचमभावदर्शी-पंचमभावस्थ ग्रह इन चारों के स्पष्टराश्यादि के योग करने पर जो नवांशराशि हो उसराशि में राशिसंचारवश बृहस्पति के जाने पर पुत्र का जन्म और शनि के जाने पर पुत्र का नाश होता है॥५१॥

मातृ-पितृ सुखविचार—

पितृस्थानेश्वरे सौम्ये कारके शुभसंयुते।
भावे वा शुभसंयुक्ते पितृसौख्यं विनिर्द्दिशेत्॥५२॥

संस्कृत — पितृस्थानेश्वरे इति। पितृस्थानेश्वरे=पञ्चमभावेशे (द्र. १।५०) सौम्ये=शुभग्रहे, कारके=पितृकारके (बृह.) ग्रहे, शुभसंयुते अथवा पञ्चमभावे शुभसंयुते सति तदा पितृसौख्यं विनिर्द्दिशेत्। अर्थादस्मिन्योगे समुत्पन्नस्य जातस्य पितृसुखं भवेदिति भावः॥५२॥

हिन्दी — पंचमेश (पितृभावेश) शुभग्रह हो या पितृकारक ग्रह (बृह.) शुभग्रह से युक्त हो, या पञ्चमभाव शुभग्रह से युक्त हो तो जातक को पितृसुख प्राप्त होगा ऐसा फल कहना चाहिए॥५२॥

पारावतादौ तन्नाथे कारके च तथास्थिते।
स्वोच्चमित्रांशके वापि पितृदीर्घायुरादिशेत्॥५३॥
क्रूरनीचांशकस्थे वा भावनाथे त्र कारके।
मन्दमान्द्यगुसंयुक्ते पितृदुःखं विनिर्दिशेत्॥५४॥
सौम्ये तदीश्वरे वाऽपि नीचमूढारिराशिगे।
क्रूरषष्ट्यंशके वापि पितृदुःखं विनिर्दिशेत्॥५५॥

संस्कृत — स्पष्टार्थाः सरलार्थाश्च॥५३-५५॥

हिन्दी — पञ्चमेश अथवा पितृकारक (बृह.) ग्रह पारावत (१।४६) आदि वैशेषिकांश में हों, अथवा अपने उच्च में या मित्र के नवांश में स्थित हों तो जातक का पिता दीर्घायु होता है।

पञ्चमेश तथा पितृकारक (बृह.) ग्रह पापग्रह के नवांश में या नीचराशि में हों अथवा शनि-गुलिक-राहु इनमें से किसी एक से या एकाधिक से युत हों तो पितृकष्ट समझना चाहिये।

पंचमेश शुभग्रह हो और यदि नीचराशि में या अस्तङ्गत या शत्रुगृह में या क्रूरषष्ट्यंश में हो तो पितृदुःख का निर्देश करना चाहिये॥५३-५५॥

पितृकर्मगृहे जातः पितृतुल्यगुणान्वितः ।
पितृ-जन्मतृतीयर्क्षे जातः पितृवशानुगः ॥ ५६ ॥
पितृषष्ठाष्टमे जातः पितृशत्रुर्भविष्यति ।
तद्भावपे विलग्नस्थे पितृश्रेष्ठो भवेत्सुतः ॥ ५७ ॥

संस्कृत — पितृकर्मगृहे इति। पितृकर्मगृहे=यस्मिलग्ने पितुर्जन्म भवेत्तस्माद्दशम भावे, जातः=समुत्पन्नो नरो, पितृतुल्यगुणान्वितः=पितृसदृशविद्या-शौर्य-गुणादि संयुतो भवेत्। पितृजन्मतृतीयर्क्षे=पितुर्जन्मलग्नातृतीये भावे जातो नरो पितृ-वशानुगः=पितुरादेशपालको भवेत्। अस्मिन्योगे जातकस्य स्वीयजन्मकालीन-तत्तद्भावभावेशबलाबलवशात् फलं सञ्चिन्त्यमिति।

पितृषष्ठाष्टमे=पितुर्जन्मलग्नात्पष्ठेऽष्टमे वा भावे जातो बालः पितृशत्रु-र्भविष्यति=अस्मिन्लक्षणे जातः पित्रा सह द्वेषकारको भविष्यति। तद्भावपे=पितृभावपे जातकस्य जन्मलग्नात्पञ्चमभावेशे, यदि विलग्नस्थे=जातस्य जन्मलग्नगते सति तदा सुतः पितृश्रेष्ठो भवेत् अर्थादस्मिंल्लक्षणे जातो नरो गुणादिभिः पितुः सकाशात्, श्रेष्ठः=प्रतिष्ठितो भवेदिति भावः ॥ ५६-५७ ॥

हिन्दी — पिता के जन्मलग्न की राशि से दसवीं राशि में जन्म होने पर वह जातक पिता के समान गुण स्वभाव वाला होता है। पिता के जन्मलग्नराशि से तीसरे राशि में उत्पन्न जातक पिता का आज्ञाकारी होता है। पिता के जन्मलग्नराशि से ६।८ वें लग्नराशि में उत्पन्न जातक पिता का शत्रु (आज्ञा नहीं मानने वाला) होता है। जन्मलग्न से पञ्चमभावेश यदि जातक के लग्नस्थान में रहे तो वह गुणों में पिता से श्रेष्ठ और पिता से अधिक प्रसिद्ध होता है ॥ ५६-५७ ॥

लग्नादायतपःस्थिताः शनिमहीपुत्रागवो मृत्युदा-
स्तातस्यार्कजभूसुतौ निधनदौ बालस्य रन्ध्रास्तगौ ।
माने वा यदि पञ्चमे कुजरविच्छायाकुमारेन्दवः
सद्यो मातुलतातबालजननीनाशं प्रकुर्वन्ति ते ॥ ५८ ॥

संस्कृत — लग्नादिति। शनिमहीपुत्रागवः=शनि-कुज-राहवः, यदि लग्नादायतपःस्थिता=जन्मलग्नादेकादश-नवमभावस्थिताः तदा तातस्य=पितुः मृत्युदा =मृत्युकरा भवन्ति। अस्मिन्योगे जातस्य पिता म्रियते इतिभावः। अर्कज भूसुतौ= शनिभौमौ, रन्ध्रास्तगौ=लग्नादष्टमभाव-सप्तमभावगतौ तदा बालस्य=जातस्य निधनदौ=मृत्युकरौ स्याताम्। यदि कुजरविच्छायाकुमारेन्दवः=मङ्गल-सूर्य-शनि-चन्द्रमसः, माने=लग्नाद्दशमे यदि वा पञ्चमे स्थिताः स्युस्तदा ते सद्य एव क्रमेण मातुल, तात, बाल, जननीनाशं प्रकुर्वन्ति। अर्थात् दशमे पञ्चमेवा स्थितः भौमो

मातुलनाशकः, सूर्यः तातनाशकः, शनिर्बालकनाशकः, चन्द्रमा जननीनाशको भवतीति भावार्थः।

यथा सर्वार्थचिन्तामणौ (७।३९-४०)—

'लाभे शुभे वा यदि मन्दभौमौ फणीन्द्रयुक्तौ पितुरस्त्यपायः।
लग्राच्छुभे कर्मणि भूमिपुत्रे पापेक्षिते मातुलमृत्युमाहुः।
मन्देन युक्ते यदि पुत्रमृत्युं चन्द्रे हि तन्मातृमृतिं सपापे
पितुर्मृतिं वासरनायकेऽत्र न संशयः पापदृशा समेते' इति॥५८॥

हिन्दी — शनि-मङ्गल और राहु यदि जन्मलग्न से एकादश एवं नवमभाव में हों तो पिता की मृत्यु, शनि और मङ्गल यदि अष्टमभाव व सप्तमभाव में हों तो स्वयं की मृत्यु होती है। यदि मङ्गल दशम या पंचमभाव में हो तो मामा की मृत्यु, सूर्य दशम या पंचमभाव में हो तो पिता की मृत्यु, शनि हो तो पुत्र की मृत्यु और चन्द्र हो तो माता की मृत्यु करता है॥५८॥

सबले पितृभावेशे लग्नेशेन्दुचतुर्थपाः।
दुर्बला यदि तन्मातुर्गर्भतो मरणं विदुः॥५९॥

संस्कृत — **सबले** इति। पितृभावेशे=पञ्चमेशे, सबले=बलसहिते सति, तथा लग्नेशेन्दुचतुर्थपाः=जन्मलग्नेश-चन्द्र-चतुर्थेशः यदि दुर्बलाः भवेयुस्तदा, तन्मातुः=जातस्य मातुः, गर्भतः मरणं विदुः। अर्थादस्मिन्योगे जातस्य माता गर्भपीडया म्रियते इत्यर्थः॥५९॥

हिन्दी — यदि पञ्चमेश बली हो, लग्नेश-चन्द्र और चतुर्थेश दुर्बल हों तो जातक की माता का गर्भपीड़ा से मरण होता है॥५९॥

नवमादष्टमाधीशो नवमात्खरपोऽथवा।
शनिर्वेधेषु यः क्रूरः संभवेत् पितृमृत्युदः॥६०॥

संस्कृत — **नवमादिति**। जातस्य नवमभावादष्टमाधीशः=जन्म-लग्राच्चतुर्थस्थानस्याधिपतिः, अथवा नवमात्खरपः=नवमभावाद्द्वाविंशतिद्रेष्काणेशः ('खर' संज्ञकस्तदीशः) अर्थात् नवमे भावे यो द्रेष्काणः स एव तस्मादष्टमे (लग्राच्चतुर्थे) भावे खर (५।५६) संज्ञकस्तदीशः यदि शनिः स्यात् तथा तत्र यः क्रूरः वेधेषु तत्कालिकग्रहवेधेषु शनिना विद्धो भवेत् स पितृमृत्युप्रदायको संभवेत्। ग्रहवेधो जन्मराशेः (चन्द्राधिष्ठितराशेः) विचार्यः। तत्र तावद् वेधज्ञानाय मु. चि. (४।१) ग्रन्थोक्तश्लोका उद्ध्रियन्ते—

६ १२ १० ४ ३ ९ ११ ५
सूर्ये रसान्त्ये खयुगेऽग्निनन्दे शिवाक्षयोर्भौम-शनि-तमश्च।

६ ९ ११ ५ ३ १२ १० ४ ३ ९
रसाङ्क्योर्लाभशरे गुणान्त्ये **चन्द्रो**ऽम्बराब्धौ गुणनन्दयोश्च॥
११ ८ १ ५ ६ १२ ७ २ २ ५ ४ ३
लाभाष्टमे चाद्यशरे रसान्त्ये नगद्वये **ज्ञो** द्विशरेऽब्धिरामे।
६ ९ ८ १ १० ८ ११ १२ ५ ४
रसाङ्क्योर्नागविधौ खनागे लाभव्यये **देवगुरु** शराब्दौ॥
२ १२ ९ १० ७ ३ ११ ८ १ ८ २ ७ ३ १
द्वयन्त्ये नवांशेऽद्रि गुणे शिवाहौ **शुक्रः** कुनागे द्विनगेऽग्नि रूपे।
४ १० ५ ९ ८ ५ ९ ११ १२ ६ ११ ३
वेदाम्बरे पञ्चनिधौ गजेषौ नन्देशयोर्भानु रसे शिवाग्नौ॥
पितुः सुतस्यात्र न वेधमाहु॥ इति॥ ॥६०॥

हिन्दी — नवमभाव से अष्टमेश (लग्न से चतुर्थेश) अथवा खरेश (२२वाँ द्रेष्काण पति) यदि शनि हो तो उससे वेध में जो पापग्रह हो वह पिता की मृत्यु करता है। नीचे वेधचक्र से वेध विचारें॥ ६०॥

वेध बोधक चक्र —

ग्रह	सूर्य				चन्द्र					
शुभ स्थान	६	१०	३	११	१०	३	११	१	६	७
वेध स्थान	१२	४	९	५	४	९	८	५	१२	२

ग्रह	भौम			बुध					
शुभ स्थान	६	११	३	२	४	६	८	१०	११
वेध स्थान	९	५	१२	५	३	९	१	८	१२

ग्रह	गुरु					शुक्र								
शुभ स्थान	५	२	९	२	११	१	२	३	४	५	८	९	१२	११
वेध स्थान	५	१२	१०	३	३	८	७	१	१०	९	५	११	६	३

ग्रह	शनि			राहु			केतु		
शुभ स्थान	६	११	३	६	११	३	६	११	३
वेध स्थान	९	५	१२	९	५	१२	९	५	१२

दिनेशस्थितराश्यंशप्राणितः कोणगे रवौ ।
पितृमृत्युर्मातृमृत्युरिन्दुस्थांशर्क्षयोर्बलात् ॥ ६१ ॥

संस्कृत — दिनेशेति। दिनेशस्थितराश्यंशप्राणितः=सूर्यो यस्मिन् राशौ यन्नवांशे च स्थितः तयोर्मध्ये (सूर्यस्थित राशि नवांश मध्ये) यः प्राणी=बलवान् भवेत् तस्मात् राशेर्नवांशाद्वाकोण (५ । ९) गे रवौ=सूर्ये गते सति तदा पितृमृत्युः । एवम् इन्दुस्थांशर्क्षयोर्बलात्=चन्द्रः यस्मिन्नवांशे राशौ च तिष्ठति तयोर्द्वयोरन्तरे बलवतो राशि नवांशाद्वा कोणगे सूर्ये तदा मातुमृत्युर्भवेदिति भावः ॥ ६१ ॥

हिन्दी — सूर्य जिसराशि और जिसनवांश में स्थित रहे उन दोनों में जो बलवान् हो उससे पञ्चम-नवम राशि में जब सूर्य जाये तो पिता की मृत्यु एवं चन्द्र की राशि और नवांशराशि में जो बली हो उस से पञ्चम-नवम में सूर्य के जाने पर माता की मृत्यु होती है ॥ ६० ॥

भानुस्थितांशपारूढनवांशद्वादशांशभम् ।
गते चन्द्रे भवेन्मृत्युर्मातापित्रोर्यथाक्रमम् ॥ ६२ ॥

संस्कृत — भानुस्थितेति। भानुः=सूर्यः जन्मकाले यस्मिन्नवांशे स्थितो-भवेत्तन्नवांशाधिपतिर्ग्रहो यद्राशिसम्बन्धिनवांशे-द्वादशांशे च स्थितः स्यात्तं भं=राशिं गते चन्द्रे मातापित्रोः यथाक्रमं मृत्युर्भवेत्। अर्थात् सूर्याधिष्ठितनवांशपतिर्ग्रहो यन्नवांशे स्थिते भवति तद्राशिगते चन्द्रे मातु मरणं तथा तद्द्वादशांशराशिगते चन्द्रे पितुर्मरणं भवेदिति बोध्यम् ॥ ६२ ॥

हिन्दी — सूर्य जिस नवांशराशि में हो उसका स्वामी ग्रह जिस राशिनवांश में स्थित हो उसराशि में चन्द्र के जाने पर माता का मरण, एवं सूर्याधिष्ठित नवांशराशि का स्वामीग्रह जिस द्वादशांश में हो उसराशि में चन्द्र के जाने पर पिता का मरण होता है। इससे पूर्व माता व पिता की मृत्यु के वर्ष व मास का ज्ञान कर लेना चाहिए॥ ६२ ॥

दुष्टस्थानगते भानौ सिहान्त्यद्वादशांशके ।
जातश्चेज्जननात्पूर्वं पितृमृत्युं प्रयच्छति ॥ ६३ ॥

संस्कृत — दुष्टेति। भानौ सूर्ये, दुष्टस्थानगते=त्रिक (६-८-१२) स्थानगते तत्र सिंहान्त्ययोः=सिंहमीनयोः द्वादशांशके च स्थिते, जातश्चेत्=यदि जन्म स्यात् तदा जननात्पूर्वं=प्रसवपूर्वं गर्भस्थ एव जातकस्य पितुर्मृत्युं प्रयच्छति। अर्थात् जातस्य गर्भस्थस्यैव पितुर्मरणं भवेदिति ॥ ६३ ॥

हिन्दी — सूर्य दुष्ट (६ । ८ । १२) भाव में रहते हुए भी यदि सिंह या मीन राशि के द्वादशांश में स्थित हो तो जातक के जन्म से पूर्व ही उसके पिता की मृत्यु हो जाती है ॥ ६३ ॥

मार्तण्डे गुलिकस्फुटादपहृते राशित्रिकोणे शनौ
रोगं तज्जनकस्य देवसचिवे मृत्युस्तदंशोपगे ।
आदित्ये यमकण्टकस्फुटयुते तद्राशिकोणे गुरौ
रोगं तद्भवनांशकेऽमरगुरौ तातस्य नाशं वदेत् ॥ ६४ ॥

संस्कृत — मार्तण्ड इति। मार्त्तण्डे=सूर्ये, गुलिकस्पष्टराश्यादितः अपहृते=विशोधिते जाते यदवशिष्टं भवेत्तद्राशित्रिकोणे (५।९) गोचरवशात् सञ्जाते शनौ तज्जनकस्य रोगं वदेत्। देवसचिवे=बृहस्पतौ गोचरेण तदंशोपगे=उपरोक्तावशिष्टराश्यंशोपगते तज्जनकस्य=तस्य जातस्य पितुर्मृत्युर्भवेत्।

आदित्ये इति। आदित्ये=सूर्ये, स्पष्ट यमकण्टकस्य राश्यादिना युते जाते यो राशिस्तद्राशिकोणे गोचरवशात्समागते गुरौ तातस्य रोगं तथा तद्भवनांश=तल्लब्धराशिनवांशे सञ्जातेऽमरगुरौ=बृहस्पतौ तातस्य नाशं=मरणं वदेदिति। अर्थादनेन विधिना पितुर्मरणवर्षस्य ज्ञानं भवति। "बृहस्पतिर्मध्यमराशिभोगात् संवत्सरं संहितिका वदन्ति" इति वचनेन गुरोरेकैकराशिभ्रमणस्य वर्षमिति सिद्धम्॥ ६४॥

हिन्दी — राश्यादि स्पष्टगुलिक में राश्यादि स्पष्टसूर्य को घटाने से जो शेष राश्यादि हो उसराशि में या उससे त्रिकोण राशि में गोचरवश शनि के जाने पर जातक के पिता को रोग होता है, और उस शेषराशि के नवांश में बृहस्पति के जाने पर पिता की मृत्यु होती है।

स्पष्टसूर्य में राश्यादि स्पष्ट यमकण्टक को जोड़ने से जो राशि हो उसराशि से त्रिकोण (५-९) राशि में गुरू के जाने पर पिता को रोग-व्याधि और उसके नवांश राशि में जाने पर पिता की मृत्यु कहनी चाहिए॥ ६४॥

केन्द्रे चरेऽर्के चन्द्रे वा पितरौ न दहेत्सुतः ।
केन्द्रे द्विदेहगौ तौ चेन्मृत्युदाहौ द्विकालगौ ॥ ६५ ॥

संस्कृत — केन्द्र इति। अर्के=सूर्ये, वा चन्द्रे, चरे=मेष-कर्क-तुला-मकरराशौ विद्यमाने सति, केन्द्रे=जन्मलग्नात् १।४।७।१० भावे व्यवस्थिते सुतः पितरौ न दहेत्=पितरं मातरं च मरणानन्तरं न दहेत् अर्थात् जातस्य पितरौ पुत्रहस्तेन न दह्येते, तत्र दाहक्रियासमये पुत्रस्य परोक्षत्वादशक्यत्वाद्वेति भावः। अथ तौ=चन्द्रसूर्यौ चेद्यदि द्विदेहगौ=द्विस्वभावराशिगतौ भूत्वा यदि केन्द्रे भवेतां तदा पित्रोः मृत्युदाहौ=मरणं शवदहनञ्च द्विकालगौ भवेताम्। अर्थात् मरणावसरे एव शवदाहो न भवेत् अपितु कालान्तरे तच्छवदाहो भवेदिति। भावार्थः यत् यस्य जन्मकाले सूर्यचन्द्रौ केन्द्रे द्विदेहगौ भवतस्तस्य पितरौ स्वजनपरोक्षे (विदेशादौ)

म्रियते अतस्तयोः मृत्युदाहौ नैककालौ भवत। यदा जन्मकाले चन्द्रसूर्यौ स्थिरर्क्षे केन्द्रे भवेतां तदा पितरौ मरणानन्तरं पुत्रहस्तेन दह्येते॥ ६५॥

हिन्दी — सूर्य या चन्द्र चर (मे. क. तु. म.) राशि के होकर यदि केन्द्र (१।४।७।१०) में रहें तो वह जातक अपने माता-पिता का दाहकर्म (मरणानन्तर शवदाह) नहीं करता है। यदि सूर्य और चन्द्र द्विस्वभाव (मि. क. ध. मी.) राशि में होकर केन्द्र में रहें तो माता-पिता की मृत्यु और दाह एक समय नहीं होते, अपितु मरण के कुछ काल (दिन) के पश्चात् दाहकर्म होता है। (इस कथन से यह सिद्ध होता है कि स्थिरराशि में होकर चन्द्र और सूर्य यदि केन्द्र में रहें तो पुत्र अपने माता-पिता का दाह मरणकाल में ही करता है)॥ ६५॥

अदृश्ययातौ पितृमातृनाथौ पित्रोर्मुखादर्शनदौ भवेताम् ।
पुत्राधिपो दृश्यगृहोपगश्चेत्पुत्राननादर्शनदोऽन्त्यकाले ॥ ६६ ॥

संस्कृत — अदृश्ययाताविति। जातस्य जन्मकाले पितृमातृनाथौ= पंचम-चतुर्थ भावेशौ (अ. १।५० श्लो.) यदि अदृश्ययातौ= लग्नभोग्यसप्तम-भुक्तान्तर्गतौ (अदृश्यचक्रार्धगतौ) भवतस्तदा जातस्य पित्रोर्मुखादर्शनदौ=मरणकाले जातो नरः पित्रोर्मुखं न पश्येदिति। पुत्राधिपः जातस्य पुत्र (पंचम) भावेशः चेद्यदि अदृश्यगृहोपगः=अदृश्यचक्रार्द्धगतः स्यात्तदाऽन्त्यकाले=मरणावसरे पुत्रानना-दर्शनदः स्यात्। अर्थादस्मिन्योगे जातो नरो मरणसमये स्वपुत्रमुखं न पश्यतीत्यर्थः॥ ६६॥

हिन्दी — यदि नवमेश और चतुर्थेश अदृश्य चक्रार्द्ध (लग्नभोग्यांश व सप्तमभुक्तांश इन के बीच) में हों तो जातक अपने माता-पिता का मुख (उनके मरने के समय) नहीं देख पाता। यदि पञ्चमेश अदृश्य राशि (लग्न से सप्तम) में रहे तो जातक मरने के समय अपने पुत्र का मुख नहीं देख पाता अर्थात् दोनों योगों में पुत्र के परोक्ष में माता-पिता की मृत्यु होती है॥ ६६॥

बुद्धि विचार—

दुःस्थे बुद्धिस्थानपेऽदृश्यगे वा जातो मन्दप्रायबुद्धिं समेति ।
केन्द्रे कोणे सौम्यवागीशयुक्ते वीर्योपेते बुद्धिमानिङ्गितज्ञः ॥ ६७॥
त्रिकालज्ञो भवेज्जीवे स्वांशे मृद्वंशसंयुते ।
गोपुराद्यंशके वाऽपि शुभांशे शुभवीक्षिते ॥ ६८॥

संस्कृत — दुःस्थ इत्यादि। बुद्धिस्थानपे=पञ्चमेशे, दुःस्थे=षडष्टव्यय-(६।८।१२) गते, वा अदृश्यगे=अदृश्यचक्रार्द्ध(लग्नभोग्य सप्तमभुक्त) गते सति जातो नरः मन्दप्रायबुद्धिं=मन्दबुद्धिं, समेति=प्राप्नोति। अत्र योगे जातो नरो मन्द प्रज्ञो भवति। यदि बुद्धिस्थानपे केन्द्रे (१।४।७।१०) कोणे (५।९) गते, तत्र

सौम्यवागीशयुक्ते=बुधगुर्वोरन्यतरेण द्वाभ्यां वा सहिते (अथवा बुध-गुरू-केन्द्रे कोणे वा भवेतां) वीर्योपेते=बलयुक्ते च सति तदा जातो बुद्धिमान् इङ्गितज्ञ:= सङ्केतेनैव मनोगतविषयसूचको भवति।

जीवे=बृहस्पतौ, स्वांशे=स्वराशे: (ध. मी.) नवांशे, मृद्वंशेन=शुभषष्ट्यंशेन संयुते, अपि गोपुराद्यंशके (१अ० ४५-४६ श्लो०) शुभांशे वा विराजते, शुभग्रहेण (बुध-शुक्र-पूर्णचन्द्र) वीक्षिते=अवलोकिते चेत्तदा जातो नर:, त्रिकालज्ञ=भूत-वर्तमान-भविष्यज्ञाता भवेदितिभाव: ॥ ६७-६८ ॥

हिन्दी — पञ्चमेश यदि दु:स्थान (६।८।१२) में या अदृश्य चक्रार्द्ध में हो तो जातक मन्दबुद्धि का होता है। यदि पञ्चमेश बुध और गुरु से युक्त होकर केन्द्र या कोण में हो तथा बलवान् भी हो तो जातक बुद्धिमान और चेष्टा-संकेत द्वारा अभिप्राय को समझने वाला होता है ॥ ६७ ॥

यदि गुरु अपने नवांश में या शुभषष्ट्यंश में या गोपुरादि वैशेषिकांश में या शुभग्रह के नवांश में होकर शुभग्रह से दृष्ट हो तो जातक त्रिकालज्ञ (भूत-वर्तमान-भविष्य का ज्ञाता) होता है ॥ ६८ ॥

हृद्रोगी पञ्चमे पापे सपापे च रसातले।
क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्ते शुभदृग्योगवर्जिते ॥ ६९ ॥

संस्कृत — पञ्चमे भावे पापे=सूर्य-भौम-शनि-क्षीणचन्द्र: तिष्ठति, रसातले=चतुर्थे च सपापे=पापग्रहेण सहिते सति, तत्र क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्ते, शुभग्रहाणां दृष्ट्या योगेन च रहिते, इत्थंभूते जातो नर: हृद्रोगी=हृद्रोग (रक्तचाप) युक्तो भवति ॥ ६९ ॥

हिन्दी — यदि चतुर्थ और पञ्चमभाव में पापग्रह स्थित हों और वे पापषष्ट्यंश से युत हों तथा वे शुभग्रह के योग एवं दृष्टि से रहित हों तो जातक को हृदय (हार्ट) से सम्बन्धित रोग होता है ॥ ६९ ॥

पुण्य विचार—

अन्नदानपरो नित्यं पञ्चमेशे शुभांशके।
शुभखेचरसंयुक्ते भूमिजे केन्द्रमाश्रिते ॥ ७० ॥

संस्कृत — **अन्नदानपरो** इति। पञ्चमेशे शुभांशके, भूमिजे=मङ्गले शुभखेचर संयुक्ते सति केन्द्रमाश्रिते=केन्द्रगते चेत्तदा सति जातो नर: नित्यं=सततं, अन्नदानपर:=अन्तदानरतो भवति ॥ ७० ॥

हिन्दी — यदि पञ्चमेश शुभग्रह के नवांश में स्थित होकर शुभग्रह से युक्त हो और मङ्गल केन्द्र में रहे तो जातक नित्य अन्नदान करने में तत्पर रहता है ॥ ७० ॥

षष्ठ (रोग) भावफलम्—

रोगारिव्यसनक्षतानि वसुधापुत्रारितश्चिन्तये-
दुक्तं रोगकरं तदेव रिपुगे जीवे जितारिर्भवेत् ।
षण्ढोऽरीशबुधौ विधुन्तुदयुतौ लग्नेशसम्बन्धिनौ
लिङ्गस्यामयकृद्व्रणेन रुधिरः षष्ठे सलग्नाधिपः ॥ ७१ ॥

संस्कृत — रोगेत्यादिना। रोगः=व्याधि, अरिः=शत्रुः, व्यसनं=कुकृत्यं, क्षतं=व्रण आघातश्चैतानि वसुधापुत्रारितः=भौमतः षष्ठभावतश्च सञ्चिन्तयेत्=विचारयेत्। तदेव षष्ठस्थानं (भौमयुतं) रोगकरंभवति। जीवे=गुरौ, रिपुगे=षष्ठभावगते सति जातः, जितारिः=शत्रुहन्ता भवति। अरीशबुधौ=षष्ठेशो बुधश्च, विधुन्तुदयुतौ=राहुणा युतौ, लग्नेश सम्बन्धिनौ (स्थान-दृष्टि-मित्रवशात्) भवेतां तदा षण्ढो (नपुंसकः) भवति। सलग्नाधिपः लग्नेशेन युतः, रूधिरः=भौमः षष्ठभावस्थितो भवेत् तदा व्रणेन लिङ्गस्यामयकृद्=शिश्नरोगकरो (सुजाकादि) भवति॥ ७१ ॥

हिन्दी — भौम और शत्रुस्थान से रोग-शत्रु-व्यसन और चोट-व्रण आदि का विचार करना चाहिए। मङ्गल से युक्त षष्ठभाव रोगकारक होता है। बृहस्पति षष्ठभाव में हो तो जातक शत्रुजयी होता है। षष्ठेश व बुध राहु के साथ हो और वे लग्नेश से सम्बन्धित (दृष्टि-योग-मैत्री से) हों तो जातक नपुंसक होता है। मङ्गल लग्नेश के साथ यदि छठे भाव में रहे तो जातक के लिङ्ग में रोग व घाव होता है॥ ७१ ॥

पत्नी षण्ढत्वमेति क्षतभवनगते कामपे सासुरेज्ये
भौमे मन्देन दृष्टे रिपुभवनगते शत्रुभार्यामुपैति ।
सौम्यैर्दृष्टे युते वा न भयमरिजनाच्छत्रुभे जन्मलग्नात्
पापैः शत्रुक्षतादिव्रणभयविपुलं जायते लाञ्छनं वा ॥ ७२ ॥

संस्कृत — पत्नीति। सासुरेज्ये=असुरेज्येन शुक्रेण सहिते, कामपे=सप्तमेशे, क्षतभवनगते=षष्ठभावगते तदा जातस्य पत्नी=स्त्री षण्ढत्वं=क्लीबत्वम्; एति=आप्नोति। रजोधर्मविहीना (अपुष्पवती) भवति। भौमे=मङ्गले, रिपुभवनगते=षष्ठभावगते तत्र मन्देन=शनिना दृष्टे चेत्तदा सति शत्रुभार्या=द्विषत्स्त्रियम्, उपैति=प्राप्नोति। अर्थात् जातस्य भार्या विपरीत आचरणशीला भवति।

जन्मलग्नात् शत्रुभे=षष्ठभावे, सौम्यैः शुभग्रहैः दृष्टे वा युते सति तदा जातस्य, अरिजनात्=शत्रोःवर्गात् भयं न भवेत्। षष्ठभावे पापैः दृष्टे वा युते शुभग्रहदृष्टियोगविरहिते सति तदा शत्रोः=वैरिजनात् क्षतादि=आघातादितः, व्रणभय-विपुलं=व्रणादितो भयाधिक्यं जायते वा लाञ्छनं=मिथ्यापवादः जायते॥ ७२ ॥

हिन्दी — शुक्र के साथ सप्तमेश यदि षष्ठस्थान में रहे तो जातक की स्त्री नपुंसकी होती है। भौम षष्ठभाव में हो और शनि उसे देखता हो तो शत्रु स्त्री (उच्छृंखल) मिलती है। षष्ठस्थान में यदि शुभग्रह हों या षष्ठभाव को देखते हों तो शत्रु से भय नहीं होता है। यदि षष्ठ में पापग्रह हों तो शत्रु से घात-पात का भय होता है और लांछन मिलता है॥ ७२॥

षष्ठे भास्वति लग्ननायकरिपौ नीचारिगे दुर्बले
जातस्तत्पितृवर्गशत्रुसहितो लग्नेशमित्रग्रहे।
इष्टस्थानगते निजोच्चसुहृदां वर्गोपयाते सति
ज्ञातीनां बहुलं वदन्ति मुनयः शत्रुव्रणाभावभाक्॥ ७३॥

संस्कृत — षष्ठे इति। भास्वति=सूर्ये, षष्ठे=शत्रुभावे स्थिते, लग्ननायकरिपौ=लग्नेशस्य शत्रुग्रहः दुर्बले नीचारिगे च सति तदा जातो नरः तत्पितृवर्गशत्रुसहितः=स्वपित्रादीनां ये शत्रवस्तैः सहितो भवति। भास्वति षष्ठे स्थिते, लग्नेशस्य मित्रग्रहे इष्टस्थानगते=शुभस्थाने (उच्च-केन्द्र-त्रिकोणादिके) गते, तथा निजोच्चसुहृदां=स्वकीयोच्चराशेः मित्राणां वा वर्गोपयाते=सम्प्राप्ते सति तदा जातः ज्ञातीनां=स्ववंशजानां दायादानां बहुलं प्राप्नोति, शत्रुव्रणाभावभाक्=रिपु-क्षतादिभिः निष्कण्टको भवेदिति मुनयः वदन्ति॥ ७३॥

हिन्दी — सूर्य षष्ठभाव में हो, लग्नेश का शत्रुग्रह नीचराशि में हो और दुर्बल हो तो जातक पितृवर्ग के शत्रुओं के साथ शत्रुता करता है। लग्नेश का मित्रग्रह शुभस्थान में स्थित हो और वह अपने उच्चराशि में या मित्र के वर्ग में हो तो जातक अपने बहुत वंशजों से युक्त होता है और उसे शत्रु तथा व्रण आदि नहीं होते, ऐसा मुनिजन कहते हैं॥ ७३॥

शत्रुस्थानगतोऽरिनीचगृहगो वक्रं गतो वाऽस्तगोऽ-
नेकाज्ञातिजनो बहुक्षततनुः षष्ठाधिपो वा तथा।
षष्ठस्थानगतेषु भास्करमुखव्योमाटनेषु क्रमात्
तत्तत्कारकखेटवर्गरिपुणा संपीडितः संततम्॥ ७४॥

संस्कृत — शत्रुस्थानगतो इति। अरिनीचगृहगो=शत्रुगृहे नीचराशौ वा गतो, वक्रं गतो, वा अस्तंगतो (कश्चिद्) ग्रहो यदि शत्रुस्थानगतो=षष्ठभावगतो भवेत्तदा जातः अनेकारातिजनः=बहुशत्रुजनैर्युक्तः, बहुक्षततनुः=बहुव्रणादियुक्तगात्रश्च भवेत्। षष्ठाधिपः=षष्ठेशो, वा तथा=अरिनीचगृहगो ग्रहाः, वक्रं गतोऽस्तगो वा भवेत्तदाऽपि तत्तुल्य फलं भवेत्। भास्करमुखव्योमाटनेषु=सूर्यादिग्रहेषु, षष्ठस्थानगतेषु=अरि भावगतेषु तदा जातो नरः क्रमात् तत्तत्कारकखेटवर्गरिपुणा=यो ग्रहः षष्ठगतो भवति तस्य यो वर्गः (जाति) तज्जातीयशत्रुणा सन्ततं=अहर्निशं "सन्तता-

विरतानिशम् नित्यानवरत इत्यमर'' सम्पीडितो भवति। अर्थात् गुरू-शुक्रौ षष्ठस्थौ भवेतां तदा ब्रांह्मणजातीयशत्रुणा, सूर्य-भौमौ षष्ठस्थौ तदा क्षत्रियेण, चन्द्रश्चेत्तदा वैश्येन, बुधश्चेत्तदा शूद्रेण, शनिश्चेत्तदा म्लेच्छ रिपुणा अहर्निशं सम्पीडितो भवति॥ ७४॥

हिन्दी — कोई भी ग्रह अपने शुत्रगृह में या नीचराशि में अथवा वक्री या अस्त होकर यदि छठे भाव में रहे तो जातक अनेक शत्रुओं से युत रहता है तथा उसके शरीर में बहुत व्रण होते हैं। इसी प्रकार षष्ठेश के होने पर भी फल होता है। सूर्यादिग्रहों के छठे भाव में रहने पर उनके (ग्रहों के) जाति के शत्रु से जातक को कष्ट होता है॥ ७४॥

पापव्योमचरास्त्रयोऽरिपतितत्प्राप्तेक्षका दुर्बला
गोवित्तक्षयमामयं रिपुभयं कुर्वन्ति जन्मादितः ॥
ते सर्वे बलशालिनो यदि शुभा गोवित्तमश्वादिकं
राजान्नं सकलोपदंशसहितं रोगारिनाशं वदेत् ॥ ७५॥

संस्कृत — पापेति। अरिपतितत्प्राप्तेक्षकाः=१. षष्ठभावेशः, २. षष्ठभावस्थः, ३. षष्ठभावप्रेक्षकश्चैते त्रयो ग्रहाः यदि पापव्योमचराः=पापग्रहाः, दुर्बलाः= बलहीनाश्च भवेयुः तदा जातस्य गोवित्तक्षयं=गवां धनानां च नाशम्, आमयं=रोगम्, रिपुभयं=शत्रुभीतिं च जन्मादित एव कुर्वन्ति। ते सर्वे=षष्ठेश-षष्ठस्थ-षष्ठप्रेक्षको ग्रहा यदि शुभाः=शुभग्रहाः, बलशालिनः=बलयुक्तश्च भवेयुस्तदा गोवित्तं अश्वादिकं, सकलोपदंश सहितं=विविधसुखसंसाधनयुक्तं राजान्नं=मधुरान्नं रोगारिनाशं च वदेत्॥ ७५॥

हिन्दी — षष्ठेश, षष्ठभावस्थ व षष्ठभावद्रष्टा ये तीनों ग्रह यदि पापग्रह हों और बलहीन हों तो जन्म से ही गोधन (पशुओं) का नाश, रोग और शत्रु से भय करते हैं। यदि ये तीनों ग्रह बली हों और शुभग्रह हों तो गौ-धन-घोड़ा आदि वाहन का लाभ तथा अनेक सुख सामग्रियों सहित सुन्दर अन्न की प्राप्ति होती है एवं रोग व शत्रु का नाश होता है॥ ७५॥

तेषामम्बरचारिणामतिशुभौ केन्द्रत्रिकोणायगौ
द्वावेतौ बलशालिनौ यदि लघु व्याध्यादिनाशं नृणाम् ।
एकोऽपि प्रबलो यदि व्रणरिपुक्लेशादि किञ्चित् फलं
यत्तत्कारकवर्गमूलमखिलं मोदं प्रमादं तु वा ॥ ७६॥

संस्कृत — तेषामिति। तेषां=त्रयाणाम्, अम्बरचारिणां=षष्ठेश-षष्ठस्थ-षष्ठभाव द्रष्टाणाम्, अतिशुभौ=त्रयाणां मध्येऽतीव शुभौ द्वौ ग्रहौ यदि केन्द्रत्रिकोणाय (१।४।७।१०।५।९।११) गौ भवेतां, तथा चैतौ द्वौ यदि बलशालिनावपि

भवेतां, तदा नृणाम्=जनिमताम्, लघुव्याध्यादि (लघु व्रण-रोग-कष्टादि) नाशं भवेत्। त्रयाणां मध्ये एकोऽपि प्रबलो ग्रहो यदि केन्द्रत्रिकोणायगो भवेत्तदा किञ्चित्=क्षणिक व्रणरिपुक्लेशादिकं फलं कुरूते। अत्र मोदम्=मनोनुकूलं (शुभम्) वा प्रमादं=प्रतिकूलम् (अशुभम्) यत् फलकथितं तदखिलं तु=सर्वफलं कारकवर्गमूलं=यो ग्रहयोगकरो भवति तन्मूलकं=तज्जात्यादिना-फलप्राप्तिः जानीयादितिभावः ॥ ७६ ॥

हिन्दी — उपरोक्त तीनों (षष्ठेश-षष्ठस्थग्रह-षष्ठभावद्रष्टा) ग्रहों में से कोई दो ग्रह अत्यन्त शुभ हों और १।४।७।१०।५।९।११ इन भावों में स्थित होकर बलयुक्त हों तो जातक के छोटे-छोटे रोगों का नाश होता है। उपरोक्त तीनों में एक भी ग्रह यदि अत्यन्त बली हो तो घाव, शत्रु, रोग आदि से अल्पकष्ट होता है। यहाँ शुभ या अशुभ जो भी फल कहा गया है वह उस योगकारकग्रह के सम्बन्ध से समझना चाहिये। अर्थात् जिसग्रह का जो अच्छा या बुरा फल होता है वहीं समझना चाहिये ॥ ७६ ॥

पापे लग्नगते सपत्नपयुते देहव्रणं देहिनां
पुत्रस्थे पितृपुत्रयोः सुखगते मातुः कलत्रे स्त्रियाः ॥
धर्मस्थे सति मातुलस्य सहजे तस्यानुजस्य व्रणं
लाभस्थे तु तदग्रजस्य निधने जातो गुदार्तो भवेत् ॥ ७७ ॥

संस्कृत — पाप इति। सपत्नपेन=षष्ठेशेन युते, पापे=पापग्रहे लग्नगते सति तदा देहिनां=जातानां, देहव्रणं=शरीरे व्रणं भवेत्। सपत्नपयुते पापे पुत्रस्थे=पञ्चमगते सति तदा पितृपुत्रयोः=जातस्य पितुः पुत्रस्य च देहेव्रणं भवेत्। सुखगते=चतुर्थभावगते सति तदा मातुः=जातस्य जनन्याः देहव्रणं, कलत्रे=सप्तमगते तदा स्त्रियाः देहव्रणं, धर्मस्थे=नवमगते सति तदा तन्मातुलस्य, सहजे=तृतीये सति तदा तस्यानुजस्य=तस्य कनिष्ठभ्रातुः, लाभस्थे=एकादशस्थे सति तदा तु तदग्रजस्य=तस्य ज्येष्ठ भ्रातुः व्रणं भवेत्। अथ सपत्नपयुते पापग्रहे यदि निधने=अष्टमभावगते सति तदा जातः स्वयमेव गुदार्त्तः=गुदारोगेण (भगन्दरादिना) पीडितो भवेदिति भावार्थः ॥ ७७ ॥

हिन्दी — यदि षष्ठेश से युक्त पापग्रह लग्न में स्थित हो तो जातक के शरीर में व्रण, पञ्चम में हो तो पिता और पुत्र के शरीर में, चौथे में हो तो माता के शरीर में, नवम में हो तो मामा के शरीर में, तृतीय में हो तो छोटे भाई के शरीर में, एकादश में हो तो बड़े भाई के शरीर में व्रण और यदि अष्टम में हो तो जातक स्वयं गुदा का रोगी (बवासीर भगन्दर का) होता है ॥ ७७ ॥

भानुर्मूर्ध्नि शशी मुखेऽवनिसुतः कण्ठे तु नाभेरध-
श्चान्द्रिः सूरिरनामयं प्रकुरुते नेत्रामयं भार्गवः ।
मन्दो वातमहिश्च केतुरुदरव्याधिं बुधक्षेत्रगो
लग्नेशः शशिजेन वीक्षितयुतो गुह्यव्रणं यच्छति ॥ ७८ ॥

संस्कृत — भानुरिति। यदि भानुः=सूर्यो षष्ठेशयुतः षष्ठभावगतश्च भवेत्तदा जातस्य मूर्ध्नि=शिरोदेशे, आमयं=रोगं व्रणादिकं भवेत्, शशी=चन्द्रस्तथा भवेत्तदा मुखे, अवनिसुतः=भौमस्तदा कण्ठे, चान्द्रिः=बुधस्तदानाभेरधोदेशे आमयं करोति। सूरिः=बृहस्पतिः अनामयं=आरोग्यम् प्रकुरूते। भार्गवः=शुक्रस्तथा-विधभवेत्तदा नेत्रामयं=नेत्ररोगं कुरूते। मन्दः=शनिः वातं=वातव्याधिम्, अहिः=राहुः केतुश्च उदरव्याधिम्=उदररोगंकुरूतः। यदि लग्नेशः बुधक्षेत्रगः=कन्यामिथुनराशिस्थः शशिजेन=बुधेन वीक्षितयुतः=दृष्टो युक्तो वा षष्ठभावगतश्च यदि भवेत्तदा गुह्यव्रणं अर्श भगन्दरादि गुप्तरोगं यच्छति=करोतीति भावः ॥ ७८ ॥

हिन्दी — यदि षष्ठेश से युक्त षष्ठभाव में सूर्य हो तो शिर में व्रण-रोग, चन्द्र हो तो मुख में, भौम हो तो कण्ठ में, बुध हो तो नाभि के नीचे भाग में व्रण-रोग होता है। यदि बृहस्पति हो तो वह रोग का नाश करता है। शुक्र हो तो नेत्ररोग, शनि हो तो वातव्याधि तथा राहु-केतु हो तो पेट में रोग होता है। लग्नेश यदि बुध की राशि (मि.क.) में हो और वह बुध से दृष्ट या युत हो तो गुह्यस्थान में व्रण करता है ॥ ७८ ॥

लग्नादि यद्राशिगते फणीशे शुक्रेक्षिते तत्तनुचिह्नमेति ।
मन्दाहियुक्ते रिपुराशिनाथे तुरङ्गपश्वादिभयं वदन्ति ॥ ७९ ॥

संस्कृत — लग्नादीति। फणीशः=राहुः लग्नादि यद्राशिगतः=लग्न-स्थानाद्यस्मिन् राशौ गतः, शुक्रेण इक्षिते=दृष्टश्च भवेत् तत्राशौ यस्मिन्नङ्गे (३। ७६) भवेत्तत्तनौ=तदङ्गं, चिह्नमेति=व्रणादिचिह्नं करोति। रिपुराशिनाथे=षष्ठभावेशे मन्दाहियुक्ते=शनिराहुभ्यां युक्ते तदा जातो नरस्य तुरङ्गपश्वादिभयं=घोटकादि-चतुष्पदेभ्यो भयं मुनयः वदन्ति ॥ ७९ ॥

हिन्दी — लग्नादि जिसराशि में राहु स्थित हो और यदि वह शुक्र से दृष्ट हो तो वह (राहुधिष्ठित) राशि शरीर में जिसभाग में पड़े उस जगह व्रण होता है। शत्रुस्थान का स्वामी यदि शनि-राहु से युक्त हो तो अश्वादि पशुओं से चोट-चपेट का भय होता है ॥ ७९ ॥

पापग्रहेण संदृष्टे बलहीनेऽरिनायके ॥
पापान्तरगते वापि शत्रुपीडा भविष्यति ॥ ८० ॥

संस्कृत — अरिनायके=षष्ठेशे बलहीने, पापग्रहेण संदृष्टे च, अपि वा

पापान्तरगते=पापद्वयमध्यगतो भवेत् तदा जातस्य शत्रोः वर्गात् पीडा=दुःखं भविष्यति। अस्मिन्योगे जातो नरः शत्रुणा दुःखं कष्टं प्राप्नोति॥ ८०॥

हिन्दी — षष्ठभाव का स्वामी बलहीन हो और पापग्रह से दृष्ट हो अथवा पापग्रहों के मध्य में हो तो जातक को शत्रु से पीड़ा होती है॥ ८०॥

शत्रुस्थानाधिपे दुःस्थे नीचमूढारिराशिगे।
लग्नेशे बलसंयुक्ते शत्रुनाशं वदेद्बुधः॥ ८१॥

संस्कृत — शत्रुस्थानाधिपे=षष्ठेशे, दुःस्थे-नीचे-अस्तङ्गते-शत्रुराशिं गते व लग्नेशे=जन्मलग्नपतौ बलसंयुक्ते=बलसहिते सति तदा शत्रुनाशं=जातस्य रिपोर्नाशं पराभवं च बुधो वदेत्॥ ८१॥

हिन्दी — शत्रुभावेश दुष्टस्थान (६-८-१२) में स्थित हो, नीच-अस्तङ्गत या शत्रुराशि में गया हो और लग्नेश बलवान हो तो जातक के शत्रुओं का नाश होता है॥ ८१॥

षष्ठेशे गोपुरांशादौ दिवाकरनिरीक्षिते॥
लग्नेशे बलसंपूर्णे ज्ञातीनामुपकारकृत्॥ ८२॥

इति नवग्रहकृपया वैद्यनाथविरचिते जातकपरिजाते
पंचम-षष्ठ भावफलाध्यायः त्रयोदशः॥ १३॥

संस्कृत — **षष्ठेश** इति। षष्ठेशे=शत्रुभावेशे, गोपुरांशादौ=गोपुरादि-वैशेषिकांशे (१।४५-४७) स्थिते, दिवाकरनिरीक्षिते=सूर्येण दृष्टे, लग्नेशे बलसम्पूर्णे= परिपूर्णबलान्विते लग्नपतिः च सति तदा जातो नरो ज्ञातीनामुपकारकृत्=स्ववंश-जानामुपकारकरो भवतीति भावार्थः॥ ८२॥

'प्रज्ञावर्द्धिनी'' संस्कृतटीकायां जातकपारिजातस्य
पंचम-षष्ठ भावफलाध्यायः त्रयोदशः॥

हिन्दी — षष्ठेश यदि गोपुरांशादि वैशेषिकांश में हो, उसको सूर्य देखता हो और लग्नेश पूर्ण बलवान हो तो जातक अपनी जाति व वंश का उपकार करने वाला होता है॥ ८२॥

सत्येन्द्र मिश्र कृत ''प्रज्ञावर्द्धिनी'' हिन्दीटीका में जातकपारिजात का
पंचम-षष्ठ भावफलाध्याय त्रयोदश समाप्त॥

◆

सप्तम-अष्टम-नवम भावफलाध्याय:-१४

सप्तमभावफल—

यात्रापुत्रकलत्रसौख्यमखिलं संचिन्तयेत्सप्तमा-
दुक्तं पुत्रसुखागमागमफलं सर्वं च यत्तद्वदेत् ।
जार: कामगते सिते मदनपे साहिध्वजे वा तथा
कामे जीवयुगीक्षिते शुभगृहे जाते न जारो भवेत् ॥ १ ॥

संस्कृत — यात्रेति। सप्तमात्=सप्तमस्थानात्, यात्रापुत्रकलत्रसौख्यमखिलं सञ्चिन्तयेत्=विचारयेत्, तथा उक्तं=पूर्वोक्तं पुत्रसुखासुखागमफलं तत्सर्वं चापि सप्तमात्=सप्तमभावात् वदेत्।

यथा जातकाभरणे (सं० भा० विचार: १)—

''रणाङ्गणं चापि वणिक्क्रियाश्च जायाविचारगमन प्रमाणम्।
शास्त्रप्रवीणैर्हि विचारणीयं कलत्र भावे किल सर्वमेतत्'' इति॥

जार: इति। सिते=शुक्रे, कामगते=सप्तमगते तदा जातो नर: जार:=परस्त्रीरतो, वा मदनपे=सप्तमेशे यत्र तत्र साहिध्वजे=राहुणा वा केतुना सहिते तदा तथा अर्थात् जारो भवति। कामे=सप्तमे, शुभगृहे=शुभग्रहराशौ भवेत् तत्र जीवेन=गुरूणा युक्ते वा ईक्षिते=दृष्टे सति तदा जातो नरो जारो न भवेत् अपितु सदाचारी संयमी भवेदितिभाव: ॥ १ ॥

हिन्दी — सप्तमभाव से यात्रा-पुत्र-स्त्री-सम्पूर्णसुख आदि का विचार करना चाहिए। पहले जो पुत्रादि के सुख-दुख के विषय में फल कहे जा चुके हैं वे सब सप्तमभाव से भी विचारना चाहिए।

यदि शुक्र सप्तमभाव में हो तो जातक ''जार'' होता है अथवा सप्तमेश राहु या केतु से युत हो तो भी ''जार'' (परस्त्री लोभी) होता है। सप्तमभाव शुभराशि हो और उसमें गुरु स्थित हो अथवा उसे देखता हो तो वह जातक ''जार'' नहीं होता है ॥ १ ॥

दु:स्थे कामपतौ तु पापगृहगे पापेक्षिते तद्युते
तज्जायाभवनस्य मध्यमफलं सर्वं शुभं चान्यथा ।
कामस्थानपतौ सितेन सहिते पापर्क्षगे कामधी:
सौम्यर्क्षे शुभक्षेटवीक्षितयुते जात: सितच्छत्रवान् ॥ २ ॥

संस्कृत — दु:स्थ इति। कामपतौ=सप्तमेश तु, दु:स्थे=त्रिक (६-८-

१२) स्थानगते, पापग्रहगृहगे-पापग्रहेणेक्षिते वा पापग्रहेण युक्ते सति तदा तज्जायाभवनस्य=तस्य सप्तम्भावस्य सर्वं मध्यम (सामान्य) फलं भवेत्, अर्थात् सप्तमभावात् यत्किञ्चिद्विचार्य्यते तत्सर्वं मध्यमफलं भवति। अन्यथा च सप्तमेशे शुभस्थानगते-शुभराशिगते-शुभेक्षिते-शुभयुते वा सति तदा तज्जाया (सप्तम) भवनस्य सर्वं फलं शुभं भवेत्। कामस्थानपतौ=सप्तमेशः सितेन=शुक्रेण सहिते, पापर्क्षगे=पापग्रहस्य राशिगते तदा जातः कामधीः=कामुकबुद्धि भवति। यदि सप्तमेशे सौम्यर्क्षे=शुभराशिगते-शुभखेटेन वीक्षिते वा युते सति तदा जातो नरः सितच्छत्रवान्=श्वेत आतपत्रयुतः (राजा) भवति॥ २॥

हिन्दी — यदि सप्तमेश दुष्टस्थान (६-८-१२) में या पापगृह में हो, उसे पापग्रह देखता हो अथवा पापग्रह से युत हो तो सप्तमभाव का मध्यम फल होता है। यदि ऐसा न हो तो सब शुभ फल होता है। सप्तमेश शुक्र के साथ पापराशि में हो तो जातक कामी होता है। यदि सप्तमेश शुभराशि में हो, शुभग्रह से युक्त हो, या उसे शुभग्रह देखते हों तो वह जातक श्वेतछत्र-चामर युक्त (राजा) होता है॥ २॥

वित्तास्तारिपभार्गवास्तनुगताः पापान्विताः कामुकः
पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ चेत्तथा।
कामस्थे रिपुवित्तलग्नपयुते पापे परस्त्रीरतः
पापारातिकलत्रपा नवमगाः कामातुरो जायते॥ ३॥

संस्कृत — वित्तेति। वित्तास्तारिपभार्गवाः=धनेशः-सप्तमेशः-षष्ठेशः-शुक्रः, पापान्विताः=पापग्रहयुता भूत्वा यदि तनुगताः=लग्नगता भवेयुस्तदा जातो नरः कामुकः=अतिकामी भवेत्। चेद्यदि तनुरिपुस्थानाधिपौ=लग्नेश-षष्ठेशौ यत्र तत्र पापव्योमचरान्वितौ=पापग्रह युक्तौ चेत् तदा तथा फलं भवेत्। अर्थाज्जातः सर्वदा स्त्रीरतो भवेत्। पापे=रवि-भौम-शनी, कामस्थे=सप्तमगते, तत्र रिपुवित्त-लग्नपयुते=षष्ठेश-धनेश-लग्नेशैः सहिते चेत्तदा जातः परस्त्रीरतः=अन्यदारसक्तः भवेत्। पापारातिकलत्रपाः=पापग्रह-षष्ठेश-सप्तमेशाः यदि नवमगा चेत्तदा जातः कामातुरः=कामपीडितः (कामान्धः) जायते=भवतीति। उपरोक्तयोगेषु शुभग्रहाणां दृष्टियोगे न तादृश फलमितिज्ञेयम्।

यथा सर्वार्थचिन्तामणौ (६/४-५)—

लग्नस्थिता वित्तकलत्रशत्रुनाथाः सशुक्रा यदि पापयुक्ताः।
जातः परस्त्रीषु रतः कुमार्गी शुभेक्षिताश्चेन्न तथा भवेच्च॥
लग्नारिपौ पापयुतौ यदि स्याज्जातः परस्त्रीषु रतः कुमार्गी।
लग्नेश्वरे शत्रुकुटुम्बनाथे पापैर्युते वा यदि दारराशौ
जातः परस्त्रीषु रतः .... इति ॥ ३॥

हिन्दी — यदि द्वितीयेश-सप्तमेश-षष्ठेश और शुक्र पापग्रह से युक्त होकर लग्न में रहें तो जातक कामी होता है, लग्नेश और षष्ठेश यदि पापग्रह से युक्त हो तो भी जातक कामी होता है। कोई भी पापग्रह यदि षष्ठेश-धनेश और लग्नेश से युक्त होकर सप्तम भाव में रहे तो जातक परस्त्रीगामी होता है। पापग्रह-षष्ठेश और सप्तमेश यदि नवमभाव में हों तो जातक अधिक कामातुर होता है ॥ ३ ॥

जारः कर्मधनास्तपा दशमगाः पुत्रादिकारग्रहा
दुःस्था धीगुरुकामपाः सुतगृहे पापेक्षितेऽनात्मजः ।
जीवज्ञौ यदि वा निशाकरसितौ कामे बहुस्त्रीरतः
शुक्रे मन्मथराशिगे बलवति स्त्रीणां बहूनां पतिः ॥ ४ ॥

संस्कृत — जार इति। कर्मधनास्तपाः=कर्मेश-धनेश-सप्तमेंशाः यदि दशमस्थानगताः भवेयुस्तदा जातो नरः जारः भवेत्। धीगुरुकामपाः=पञ्चमेश-नवमेश-सप्तमेशाः-पुत्र कारक ग्रहाश्च यदि दुःस्थाः=षडष्टव्ययगताः भवेत्तथा सुतगृहे=पञ्चमे पापेक्षिते पापग्रहदृष्टे सति तदा जातो नरोऽनात्मजः=पुत्रविरहितो भवेत्। यथा सर्वार्थचिन्तामणौ (सप्तमभाव ६,९)—

'कर्मेशवित्तेश कलत्रनाथा मानस्थिता जारमुदाहरन्ति।
धीधर्मनाथौ सकलत्रनाथौ दुःस्थानगौ हीनबलौ शुभैर्न ॥
दृष्टे सुते दारबहुत्वयोगे त्वपुत्रयोगं मुनयो वदन्ति' इति ॥

जीवज्ञाविति। जीवज्ञौ=गुरू बुधौ, वा निशाकरसितौ=चन्द्रशुक्रौ, कामे=सप्तमे गतौ तदा जातो नरः बहुस्त्रीरतः=विविधस्त्री अनुरक्तो भवेत्। बलवति=पूर्णबलयुक्ते शुक्रे मन्मथराशिगे=सप्तमे गते भवति तस्य तदा बह्व्यःस्त्रियो भवन्तीति ॥ ४ ॥

हिन्दी — यदि कर्मेश-द्वितीयेश और सप्तमेश दशमभाव में हों तो जातक लंपट होता है। पञ्चमेश-नवमेश और सप्तमेश यदि दुष्टस्थान में हो और पाँचवे भाव को पापग्रह देखता हो तो जातक सन्तानहीन होता है। यदि गुरु-बुध या चन्द्रमा सप्तम भाव में हों तो वह जातक बहुत स्त्रियों से सम्पर्क करता है। बलवान् शुक्र यदि सप्तमभाव में हो तो भी वह जातक बहुत स्त्रियों का पति होता है ॥ ४ ॥

शुक्रारौ मदगौ कलत्ररहितौ धर्मात्मजस्थौ तथा
शत्रुस्थानगतौ निशाकरसितौ यद्येकपुत्रो भवेत् ।
लग्नास्तव्ययगेषु पापखचरेष्विन्दौ सुते दुर्बले
बन्ध्यास्त्रीपतिरेव जातमनुजो जायाविहीनोऽथवा ॥ ५ ॥

संस्कृत — शुक्राराविति। शुक्रारौ=शुक्रभौमौ, मदगौ=सप्तमगतौ स्यातां तदा जातः कलत्ररहितः=स्त्रीविहीनः भवति। तावेव (शुक्रारौ) यदि धर्मात्मजस्थौ=

नवमपञ्चमभावगतौ स्यातां तदा तथा=तथैवफलमर्थात् कलत्ररहितः। सारावल्यामपि (३४/५१)—

''द्यूने कुजभार्गवयोर्जातः पुरुषो भवेद्विकलदारः।
धीधर्मस्थितयोर्वा परिकल्प्यं पण्डितैरेवम्'' इति॥

शत्रुस्थानेति। निशाकरसितौ=चन्द्रशुक्रौ यदि शत्रुस्थानगतौ=रिपुभावगतौ तदा जातस्यैकपुत्रः भवेत्। पापखचरेषु=पापग्रहेषु, लग्नास्तव्ययगेषु=लग्नसप्तमद्वादशभावेषु स्थितेषु, दुर्बले=क्षीणे इन्दौ=चन्द्रे, सुते=पञ्चमे च गते सति तदा जातमनुजः=समुत्पन्नो नरः, बन्ध्यास्त्रीपतिः=अप्रसूतायाः स्त्रिया भर्ता भवति, अथवा जायाविहीनः=स्त्रीविरहितो भवति। अर्थादस्मिन्योगे जातस्य स्त्री बन्ध्या भवति, अथवा पुरूषः स्त्रीविरहितः भवेदिति। यथा सारावल्याम् (३४/५४)—

''लग्नव्ययमदनस्थैः पापैः क्षीणे निशाकरे धीस्थे।
स्त्रीहीनो भवति नरः पुत्रैश्च विवर्जितो नूनम्'' इति॥ ५॥

हिन्दी — यदि शुक्र और भौम सप्तमभाव में हों तो जातक स्त्रीविहीन होता है। नवमभाव और पञ्चमभाव में यदि शुक्र-भौम स्थित हों तो भी यही फल होता है। यदि चन्द्रमा और शुक्र षष्ठस्थान में हों तो जातक को एक ही पुत्र होता है। लग्न-सप्तम और द्वादश भाव में पापग्रह हों तथा निर्बल चन्द्रमा पञ्चमभाव में हो तो जातक बन्ध्या स्त्री का पति होता है, अथवा स्त्री से रहित होता है॥ ५॥

**बन्ध्यापतिः सितरवी मदनोदयस्थौ
चन्द्रोदये समगृहे ललनाकृतिः स्यात्।
पुंराशिगे पुरुषभावयुतं कलत्रं
स्त्रीपुंग्रहेक्षितयुते सति मिश्ररूपम्॥ ६॥**

संस्कृत — बन्ध्यापतिरिति। सितरवी=शुक्रसूर्यौ, मदनोदयस्थौ=सप्तमस्थौ वा लग्नस्थौ स्यातां तदा जातः बन्ध्यापतिः भवेत्। चन्द्रोदये=चन्द्र लग्ने स्थिते तथा लग्ने समगृहे=२।४।६।८।१०।१२ राशौ सति तदा जातो नरः ललनाकृति=योषित्प्रवृतिः वा आकृतियुतो भवति। पुंराशिगे=चन्द्रोदये पुरूष=१।३।५।७।९।११ राशिगते सति तदा जातस्य कलत्रं=स्त्री, पुरूषभावयुतं=पुरूषाकृतिः पुरुषप्रवृत्तियुता भवति। लग्नाश्रितचन्द्रे यदि स्त्रीपुंग्रहेक्षितयुते=स्त्रीग्रहेण पुरूषग्रहेण च दृष्टे वा युक्ते सति तदा जातस्य मिश्ररूपं=स्त्रीपुरूषसंयुक्ताकृतिर्भवति। उपरोक्तलक्षणलक्षिते चन्द्रोदये यदा समराशौ तदापुरूषस्य मिश्रितरूपम्, विषमराशौ तदा तत्स्त्रिया मिश्रितरूपमिति ज्ञेयम्॥ ६॥

हिन्दी — यदि शुक्र और सूर्य सप्तमभाव या लग्न में स्थित हों तो जातक बन्ध्या स्त्री का पति होता है। चन्द्रमा यदि लग्न में होकर समराशि का हो तो जातक

स्त्री के आकृति का होता है। यदि पुरुषराशि (विषमगृह) में हो तो उसकी स्त्री पुरुष आकृतिवाली होती है और यदि स्त्री-पुरुष दोनों ग्रह से दृष्ट युत (लग्नस्थ चन्द्र) हो तो मिश्रितरूपा स्त्री होती है ॥ ६ ॥

भौमांशे वा भौमराशौ विलग्नात्
कामस्थाने जन्मभे वा वधूनाम् ।
जाया दासी नीचमूढग्रहांशे
दुष्टा वा स्याद्यौवने भर्तृहीना ॥ ७ ॥

संस्कृत — भौमांशे इति। विलग्नात्=(पुरूषस्य) जन्मलग्नात् कामस्थाने=सप्तमे स्थाने, वा वधूनाम्=अथवा स्त्रीणाम् जन्मभे=जन्मलग्ने भौमांशे=मेषवृश्चिकराशिनवांशे वा=अथवा भौमराशौ=मेषवृश्चिकराशौ सति तदा जाया=स्त्री, दासी=सेविका भवति। अर्थात पुरुषस्य सप्तमे स्थाने भौमांशे वा भौमराशौ भवेत् तदा तस्य स्त्री दासी एवं यदि स्त्रिया जन्मलग्ने भौमांशे वा भौमराशौ भवेत् तदा सा दासी स्यादिति। तत्र नीचमूढग्रहांशे=नीचं वा अस्तं गतस्य ग्रहस्य नवांशे सति तदा सा स्त्री दुष्टा=दुराचारिणी, वा यौवने=युवावस्थायां भर्तृहीना=विधवा भवति ॥ ७ ॥

हिन्दी — पुरुष के सप्तमभाव में तथा स्त्रियों के जन्मलग्न में यदि भौम का नवांश या भौम की राशि हो तो वह स्त्री दासी होती है। यदि उसमें नीचगत ग्रह या अस्तंगत ग्रह का नवांश हो तो वह स्त्री दुश्चरित्रा या युवावस्था में विधवा होती है ॥ ७ ॥

शुभांशराशौ यदि सद्गुणाढ्या शुभेक्षिते चारुतरं कलत्रम् ।
चन्द्रांशके दुर्बलचन्द्रराशौ जाता पतिघ्नी सबले तु साध्वी ॥ ८ ॥

संस्कृत — शुभांशराशाविति। पुरुषस्य सप्तमे भावे अथवा स्त्रियाः प्रथमे भावे यदि शुभांशराशौ=शुभनवांशे वा शुभराशौ सति तदा जातस्य स्त्री, वा (स्वयं) स्त्री सद्गुणाढ्या भवति। तत्रसप्तमे वा प्रथमे यदि शुभांशराशौ, शुभेक्षिते=शुभग्रहेण वीक्षतो भवेत्तदा जातस्य कलत्रम्=स्त्री, चारूतरं=अतीव रमणीया भवति। दुर्बलचन्द्रराशौ अथवा चन्द्रांशके=कर्कराशिनवांशे उत्पन्ना स्त्री पतिघ्नी=पतिनाशकर्त्री भवति। तत्र यदि चन्द्रे सबले=बलयुक्ते सति तदा जाता स्त्री साध्वी=भर्तृ परायणा सच्चरित्रा च भवति ॥ ८ ॥

हिन्दी — उपरोक्त सप्तम या प्रथमभाव में यदि शुभराशि या शुभानवांश हो तो सद्गुण वाली स्त्री होती है। यदि उसे शुभग्रह देखते हों तो वह सुन्दर रमणीय स्त्री होती है। चन्द्रमा के नवांश अथवा दुर्बल चन्द्रराशि में उत्पन्न स्त्री पतिनाशिनी होती है। यदि सबल चन्द्र वाली राशि में उत्पन्न हो तो सती साध्वी होती है ॥ ८ ॥

अर्कांशे कुलटा निजोच्चगृहगे साध्वी शुभालोकिते
लग्ने शीतकरेऽथवा मदनभे नीचारिमूढान्विते ।
पापव्यालविहङ्गपाशनिगलद्रेक्काणभागान्विते
सन्ध्यंशे विगतव्रता च विधवा जातस्य जाया भवेत् ॥ ९ ॥

संस्कृत — अर्कांश इति। शीतकरे=चन्द्रे, लग्ने अथवा मदनभे=सप्तमे स्थिते, अर्कांशे=सिंहराशिनवांशे च गते तदा जातनरस्य स्त्री कुलटा=व्यभिचारिणी भवति। लग्नाश्रिते वा सप्तमाश्रिते चन्द्रे यदि निजोच्चगृहगे=वृषराशिगते तथा शुभालोकिते=शुभग्रहदृष्टे सति तदा जातस्य स्त्री साध्वी=सच्चरित्रा भवति। तस्मिन्नेव लग्ने वा सप्तमभे चन्द्रे यदि नीचारिमूढान्विते=स्वनीच राशिस्थे वा शत्रुराशिस्थे वा सूर्येण सहास्तङ्गते वा पापव्यालविहङ्गपाशनिगलद्रेष्काणभागान्विते (५/५५) अथवा सन्ध्यंशे= ऋक्षसन्ध्यंशे (कटकालिमीनभान्त्यंशे) गते सति तदा जातस्य जाया=स्त्री विगतव्रता=स्त्रीनियम पातिव्रत्यहीना अथवा विधवा=भर्तृहीना भवेत्॥ ९ ॥

हिन्दी — चन्द्रमा लग्न अथवा सप्तम में स्थित होकर यदि सूर्य के नवांश में रहे तो उसकी स्त्री कुलटा होती है। यदि अपने उच्चगृह में हो और उसे शुभग्रह देखते हों तो स्त्री साध्वी होती है। यदि नीचगत-शत्रुगृहगत या अस्तंगत हो तथा पाप-सर्प-विहंग-पाश-निगल के द्रेष्काण में स्थित हो अथवा नक्षत्रसन्धि में हो तो जातक की स्त्री पातिव्रत धर्म से हीन तथा विधवा होती है॥ ९ ॥

कामस्थे तनुपे शुभग्रहयुते सद्वंशजामिच्छति
क्रूरर्क्षे मदगे विलग्नरमणे दुर्वंशजाताङ्गनाम् ।
वर्णं रूपगुणाकृतिं च सकलं यत्तद्गृहोक्तं वदेद्
दुर्व्यापारकरग्रहाकृति नरप्रीतिं प्रयात्यङ्गना ॥ १० ॥

संस्कृत — कामस्थ इति। तनुपे=लग्नेशे, कामस्थे=सप्तमगते शुभग्रहेण युक्ते सति तदा जातो नरः सद्वंशजाम्=उत्तमवंशोत्पन्नां स्त्रियमिच्छति=प्राप्नोति। विलग्नरमणे=लग्नेशे, मदगे=सप्तमे, क्रूरर्क्षे=पापराशौ च गते तदा दुर्वंशजाताङ्गनां= नीच कुलोत्पन्नां स्त्रियं प्राप्नोति। स्त्रिया वर्णादि विचारे-सप्तमे भावे यो राशि भवेत् तदनुसारं वर्ण-रूप-गुण-आकृति च सकलं वदेत्। सप्तमे भावे यो ग्रहो दुर्व्यापारकरः=व्यभिचारयोगकारको भवेत् तद्ग्रहाकृतियुक्तेन नरेण सह, अङ्गना= जातस्य स्त्री प्रीतिं=व्यभिचार कर्मं करोति॥ १० ॥

हिन्दी — यदि लग्नेश सप्तमभाव में शुभग्रह के साथ स्थित हो तो उसे उत्तमकुल की स्त्री प्राप्त होती है। लग्नेश यदि सप्तमभाव में पापराशि में स्थित हो तो नीचवंश में उत्पन्न स्त्री प्राप्त होती है। स्त्री का वर्ण-रूप-रङ्ग-गुण-स्वभाव इसका

विचार सप्तम भाव की राशि के अनुसार करना चाहिए। जो ग्रह व्यभिचार योग उत्पन्न करता हो उसी ग्रह के अनुसार रूपवाले मनुष्य से वह स्त्री व्यभिचार करती है ॥ १० ॥

पापाप्रकाशसंयुक्ते कलत्रे दुष्टचारिणी ।
रवौ बन्ध्या तु शीतांशौ क्षीणे तु व्यभिचारिणी ॥ ११ ॥
कुजे तु म्रियते मन्दे दुर्भगा राहुसंयुते ।
परदारोऽरतिःस्वीयां निषेकाभावकोऽसुतः ॥ १२ ॥
धूमे विवाहहीनः स्याद् म्रियते कार्मुके सति ।
परिवेषे तु दुःशीला केतौ बन्ध्या सती भवेत् ॥ १३ ॥
काले विदारः पापे तु गर्भस्त्रावेण संयुता ।
सुशीला स्त्री प्रसूता च पूर्यमाणे सुधाकरे ॥ १४ ॥
बुधे सुपुत्रा वागीशे गुणयुक्ता सुपुत्रिणी ।
शुक्रे सौभाग्यसंयुक्ता श्रीमती च बलान्विते ॥ १५ ॥

संस्कृत — सप्तम भावस्थ ग्रहाणामुपग्रहाणाञ्च स्थितिवशेन श्लोकपञ्चकेन फलान्याह—कलत्रे=सप्तमे पापाप्रकाशसंयुक्ते=पापग्रहेण अप्रकाशग्रहेण (उपग्रहेण २/६) वा सहिते तदा जातस्य स्त्री दुष्टचारिणी=दुराचारवती भवति। रवौ=सूर्ये कलत्रे सति तदास्त्री बन्ध्या भवति। क्षीणे शीतांशौ=चन्द्रे दुर्बले तु व्यभिचारिणी भवति। परदारोऽरतिः स्वीयां= स्वकीये अरतिः, परदारो रतिः। अन्यत् सर्व स्पष्टमेवेत्यलम्॥ ११-१५ ॥

हिन्दी — सप्तम भाव में पापग्रह या अप्रकाश (उपग्रह) ग्रह हों तो जातक की स्त्री व्यभिचारिणी होती है। सप्तमभाव में यदि सूर्य हो तो बन्ध्या, क्षीणचन्द्र हो तो व्यभिचारिणी, मङ्गल हो तो स्वयं मर जाये, शनि हो तो दुर्भगा पत्नी, राहु हो तो जातक परस्त्री में रत व अपनी स्त्री से उदासीन, गर्भाधान का अभाव तथा पुत्रहीन होता है। उपग्रह में यदि धूम हो तो विवाह से रहित, चाप हो तो स्वयं मर जाये, परिवेष हो तो दुःशीला स्त्री वाला, केतु हो तो बाँझ परन्तु पतिव्रता होती है॥

सप्तमभाव में काल हो तो स्त्री-रहित, पापग्रह हो तो गर्भस्त्राव से युत, पूर्ण चन्द्र हो तो सुशीला और कन्या उत्पन्न करनेवाली, बुध हो तो सुपुत्रा, गुरु हो तो गुणवती व पुत्रवती स्त्री तथा बलवान शुक्र हो तो सौभाग्यवती स्त्री होती है॥ ११-१५ ॥

स्त्रीपुत्रपे बलिनि शोभनखेटदृष्टे
षष्ठाधिपेन सहिते सति वीक्षिते वा ।
जारेण पुत्रजनिलाभमुपैति जाया
तस्या धवो बहुकलत्रयुतोऽप्यपुत्रः ॥ १६ ॥

संस्कृत — **स्त्रीपुत्रप** इति। स्त्रीपुत्रपे=सप्तमेशे पञ्चमेशे वा यदि बलिनि=

पूर्णबलसहिते, शोभनखेटदृष्टे=शुभग्रहेणदृष्टे, षष्ठाधिपेन=षष्ठेशेन युक्ते वा वीक्षिते=दृष्टे च सति तदा तस्य जातस्य जाया=स्त्री, जारेण=परपुरुषेण पुत्रजनिलाभं= सुतोत्पत्तिं करोति। तस्याः=स्त्रियाः धवः=स्वामी (यस्य जन्माङ्गेदृग्लक्षणं) बहुकलत्रयुतोऽपि= अनेकस्त्रीसहितोऽपि, अपुत्रः=पुत्ररहित एव भवेदिति। अर्थात् कस्यामपि स्त्रियाँ तस्यौरसः पुत्रो न जायतेति भावार्थः ॥ १६ ॥

हिन्दी — स्त्री की कुण्डली में यदि सप्तमेश या बलवान् पञ्चमेश शुभग्रह से दृष्ट हों और षष्ठेश के साथ या षष्ठेश से दृष्ट हों तो वह स्त्री जार से पुत्र उत्पन्न करती है। उसका स्वामी का बहुत स्त्री होने पर भी पुत्रहीन होता है ॥ १६ ॥

नीचे गुरौ मदनगे सति नष्टदारौ
मीने कलत्रभवने रविजे तथैव।
मन्दारराशिनवभागगते सुरेज्ये
जारो भवेदिनसुतारसमन्विते वा ॥ १७ ॥

संस्कृत — **नीचे** इति। मकरे गुरौ मदनगे=सप्तमगते सति तदा जातः नष्टदारः=विधुरः भवेत् (कर्कलग्ने सम्भवः)। रविजे=शनैश्चरे मीने कलत्रभवने=सप्तमे भावे च गते तथैवफलमर्थान्नष्टदारः (कन्यालग्ने सम्भवः)। सुरेज्ये=गुरौ मन्दारराशिनवभागगते=शनिभौमयो (म.कु.मे.वृश्चि.) राशौ नवांशे वा गते, अथवा इनसुतारसमन्विते=शनि भौम सहिते सति तदा जातो नरो जारो भवेदिति भावार्थः। यथा मन्त्रेश्वरः—

शुक्रे वृश्चिकगे मदे मृतवधूः कामे वृषस्थे बुधे,
स्त्रीनाशस्त्वथ नीचगे सुरगुरौ द्यूनाधिरूढे तथा।
जामित्रे झषगे शनौ सति तथा भौमेऽथवा स्त्री मृति-
श्चन्द्रक्षेत्रगयोर्मदेऽर्किकुजयोः पत्नी सतीशोभना॥ इति ॥ १७ ॥

हिन्दी — यदि सप्तमभाव में मकरराशि का गुरु हो तो उस जातक की पत्नी मर जाती है। सप्तम में मीन राशि रहे और उसमें शनि स्थित हो तो भी वैसा ही फल होता है। यदि शनि या मङ्गल के नवांश में गुरु हो, या शनि मङ्गल के साथ हो तो वह व्यक्ति जार (व्यभिचारी) होता है ॥ १७ ॥

सप्तमे वाऽष्टमे पापे व्ययस्थे धरणीसुते।
अदृश्ये यदि तन्नाथे कलत्रान्तरभाग्भवेत् ॥ १८ ॥
सुवंशजातं प्रथमं कलत्रं लग्नेश्वरो दारपसंयुतश्चेत्।
दिनेशकान्त्याभिहतस्तदानीं स्वरूपहीनां सुतरां वदन्ति ॥ १९ ॥

संस्कृत — कलत्रद्वययोगावाह—श्लोकद्वयेन। जन्मलग्नात् सप्तमे, वा अष्टमे यदि कस्मिंश्चित् पापे स्थिते, धरणीसुते=भौमे व्ययस्थे=द्वादशे गते,

तत्राथे=सप्तमेशे यदि अदृश्ये=अस्तङ्गते सति तदा जातो नरः कलत्रान्तरभाक्=दाराद्वययुक्तो भवेत्। अस्मिन् योगे समुत्पन्न नरस्य कलत्रद्वयं भवेत्। कलत्रद्वय मध्ये प्रथमं सुवंशजातं जानीयात्। यदि उपरोक्तयोगे लग्नेश्वरः=जन्मलग्नेश, दारपसंयुतः=सप्तमेशेन सहितः चेत्तदेति। केवलं लग्नेशो यदि दिनेशकान्त्याभिहतः=सूर्येण सहास्तङ्गतो भवेत्तदानीं प्रथमां स्त्रियं सुतराम्=निश्चयेन स्वरूपहीनां=सौन्दर्यरहितां=कुरूपां वदन्तीति भावः ॥ १८-१९ ॥

हिन्दी — यदि लग्न से सप्तम या अष्टम स्थान में पापग्रह हो द्वादश में मङ्गल हो और सप्तमेश अदृश्य चक्रार्ध में हो तो उस जातक को दो पत्नियाँ होती हैं ॥

लग्नेश सप्तमेश के साथ हो तो पहली स्त्री अच्छे कुल की होती है। यदि सप्तमेश सूर्य की कांति से अस्त हो तो कुरूपा स्त्री होती है ॥ १८-१९ ॥

वित्ते पापबहुत्वे च कलत्रेशे तथा स्थिते ।
शत्रुस्थानगते केतौ कलत्रत्रयभाग्भवेत् ॥ २० ॥

संस्कृत — कलत्रत्रययोगमाह—**वित्ते** इति। वित्ते=द्वितीयभावे पापबहुत्वे=अधिकाधिकपापग्रहे सति कलत्रेशे=सप्तमभावेशे च तथास्थिते=अस्तङ्गते, केतौ षष्ठभावगते तदा जातः कलत्रत्रयभाग् भवेत्। अर्थात् स्त्रीत्रयं भवतीति। यथा सर्वार्थचिन्तामणौ—

"वित्ते पापबहुत्वे तु कलत्रे वा तथाविधे।
तदीशे पापसन्दृष्टे कलत्रत्रयभाग्भवेत्" इति ॥ २० ॥

हिन्दी — यदि द्वितीय भाव में बहुत पापग्रह हों, सप्तमेश भी पापग्रहों से युक्त हो और शत्रुभाव में केतु हो तो जातक की तीन पत्नियाँ होती हैं ॥ २० ॥

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा दृष्टे बहुस्त्रीसहितो भवेत् ॥ २१ ॥

संस्कृत — बहुस्त्रीयोगमाह—दारेशे=सप्तमभावेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे सति केन्द्रत्रिकोणे (१।४।७।१०।९।५) गतवति अथवा कर्माधिपेन=दशमभावेशेन दृष्टे सति तदा जातो नरः बहुस्त्रीसहितः=अधिककलत्रयुक्तो भवति ॥ २१ ॥

हिन्दी — यदि सप्तमभावेश अपनी उच्चराशि-मित्रगृह-स्ववर्ग में होकर केन्द्र त्रिकोण में रहे अथवा कर्मेश उसे देखता हो तो जातक बहुत स्त्री से युक्त होता है ॥ २१ ॥

कलत्राधिपतौ केन्द्रे शुभग्रहनिरीक्षिते ।
शुभांशे शुभराशौ वा पत्नी व्रतपरायणा ॥ २२ ॥

संस्कृत — **कलत्रेति**। कलत्राधिपतौ=सप्तमभावेशे केन्द्रे (१।४।७।

१०) शुभांशे=शुभग्रहस्यनवांशे-शुभराशौ वा व्यवस्थिते तथा शुभग्रहेण निरीक्षिते सति तदा जातः पत्नी व्रतपरायणा=स्त्रीव्रतपरायणा (स्त्री भक्तो) भवति॥ २२॥

हिन्दी — यदि सप्तमेश केन्द्र में स्थित हो शुभग्रह उसे देखता हो और वह शुभग्रह के नवांश या शुभराशि में हो तो जातक स्त्रीव्रता अर्थात् पत्नीभक्त होता है॥ २२॥

दाराधिपे सोमसुते सपापे नीचारिवर्गे रिपुनाशभावे।
पापान्तरे पापदृशा समेते जाया पतिघ्नी कुलनाशिनी स्यात्॥ २३॥

संस्कृत — **दाराधिपे** इति। सोमसुते=बुधे दाराधिपे=सप्तमेशे सपापे=केनचित्पापग्रहेण युते नीचारिवर्गे वा रिपुनाश (६।८) भावे तिष्ठति, वा पापान्तरे=पापद्वयमध्यगते (बुधात् द्वितीयेऽन्यो द्वादशे तत्र) पाप दृशा समेते=पापग्रहदृष्टियुता तदा जातस्य जाया पतिघ्नी=पतिनाशिनी, कुलनाशिनी=वंशघातिनी च भवेदिति भावः॥ २३॥

हिन्दी — यदि सप्तमेश बुध हो और वह पापग्रह के साथ नीच या शत्रुवर्ग में हो अथवा षष्ठ या अष्टम स्थान में रहे या पापग्रहों के मध्य में रहे और उसपर पापग्रह की दृष्टि हो तो उस जातक की स्त्री पति को मारनेवाली और कुलनाशिनी होती है॥ २३॥

शुभांशे शुभसंदृष्टे नाथे जाया सुवंशजा।
पापारूढे पापवर्गे तस्य जाया कुवंशजा॥ २४॥

संस्कृत — सरलार्थः॥ २४॥

हिन्दी — यदि सप्तमेश शुभग्रह के नवांश में होकर शुभग्रह से दृष्ट रहे तो जातक की स्त्री उत्तमकुल की होती है। सप्तमेश यदि पापग्रह से युत होकर पापवर्ग में रहे तो उसकी स्त्री नीचकुलोत्पन्ना होती है॥ २४॥

पत्नी संख्या ज्ञान—

कामस्थाने सखेटे सितयुतखचरैर्दारसंख्यां वदन्ति
स्वोच्चस्थव्योमवासो न भवति गणने शुक्रयुक्तग्रहैर्वा।
जायाधीशे सितर्क्षे सति धनभवने शुक्रसंयुक्तसंख्या
शुक्रानङ्गेशयुक्तद्युचरनववधूवल्लभो जायते वा॥ २५॥

संस्कृत — **कामस्थाने** इति। कामस्थाने=सप्तमे स्थाने सखेटे=ग्रहसहिते सितयुतखचरैः=शुक्रयुक्तव्योमचरैः दारसङ्ख्यां=स्त्रीसङ्ख्यां वदन्ति। अर्थात् सप्तमे भावे कश्चिद्ग्रहो भवेत्तदा शुक्रेण युता यावन्तो ग्रहा भवेयुस्तावत्यो तस्य जातस्य दारा भवन्तीति। शुक्रयुक्तग्रहेः स्वोच्चस्थव्योमवासः=स्वक्षेत्रस्थो वा उच्चस्थितो ग्रहो गणने=संख्या गणने न ग्राह्यो। यदुक्तं 'सितयुतखचरैः दारसंख्यां वदन्ति'

अत्र शुक्रेण युक्तः स्वक्षेत्रोच्चङ्गतो ग्रहो न गणनीय। अत्र 'वा' पदं मतान्तरसूचकं विभाव्यते।

जायाधीशे=सप्तमेशे, सितर्क्षे=शुक्रराशौ (वृषतुलयो) धनभवने=द्वितीयभावे च सति शुक्रसंयुक्तसंख्या=शुक्रेण संयुक्ता यावन्तो ग्रहास्तावती संख्या जातस्य स्त्रियो नेया। वा शुक्रेण, अनङ्गेशेन=सप्तमभावेशेन च युता यावन्तो द्युचराः= ग्रहास्तावतीनां नववधूनां=नूतन स्त्रीणां वल्लभो=भर्ता, जायते इति वाच्या ॥ २५ ॥

हिन्दी — यदि सप्तमभाव ग्रहयुक्त हो तो शुक्र से युत जितने ग्रह रहें उतनी स्त्रियों की संख्या विद्वान लोग कहते हैं। शुक्रयुक्त ग्रहों में उच्चराशिगत ग्रह की गणना नहीं होती। यदि सप्तमेश शुक्र (२/७) की राशि का होकर धनभाव में रहे तो शुक्र से युत ग्रह सङ्ख्या तुल्य स्त्री समझें। अथवा शुक्र और सप्तमभावेश से युक्त ग्रह सङ्ख्या तुल्य नवीन स्त्रियों का स्वामी वह जातक होता है ॥ २५ ॥

दारेशेन कुटुम्बपेन सहिता यावद्ग्रहा दुर्बला-
स्तत्संख्याककलत्रनाशनकरा दुःस्थाननाथा यदि ।
यावन्तो बलशालिनः शुभकरास्तत्तुल्य जायासुखं
कुर्वन्त्येकवियच्चरो बलयुतो यद्येकदारो भवेत् ॥ २६ ॥

संस्कृत — **दारेशेनेति**। दारेशेन=सप्तमभावेशेन, वा कुटुम्बपेन= द्वितीय-भावेशेन सहिता, यावद्ग्रहा दुर्बलाः=बलविहीना यदि दुःस्थाननाथाश्च भवेयुस्तदा तत्संख्याककलत्रनाशनकरा वदेयुः। शुभकराः=शुभस्थाननाथाः शुभस्थानगताश्च यावन्तो बलशालिनः खेचराः दारेशेन द्वितीयेशेन वा सहिता तत्तुल्यं जायासुखं कुर्वन्ति। यदि बलयुतः एक एव वियच्चरः=ग्रहः दारेशेन द्वितीयेशेन वा सहितो भवेत्तदा जातो एकदारः=एकस्त्रीयुतो भवेदिति। यथा मन्त्रेश्वरः—

स्त्रीसंख्यां मदगैर्ग्रहैर्मृतिमसत्खेटैश्च सद्भिः स्थितिः,
द्यूनेशे सबले शुभे सति वधूः साध्वी सुपुत्रान्विता।
पापोऽपि स्वगृहं गतः शुभकरः पत्न्याश्च कामस्थितो
हित्वा षड्व्ययरन्ध्रपान् मदनगाः सौम्यास्तु सौख्यावहाः ॥ २६ ॥

हिन्दी — जितनी सङ्ख्या तुल्य बलहीन ग्रह सप्तमेश या द्वितीयेश से युत हों और यदि वे दुष्टस्थान के स्वामी हों तो उतनी सङ्ख्या तुल्य स्त्रियों का नाश करते हैं, जितने बलवान शुभग्रह सप्तमेश या द्वितीयेश के साथ हो उतने सङ्ख्यातुल्य स्त्रियों का सुख प्राप्त होता है। यदि एक ही ग्रह बलवान हो तो एक ही स्त्री होती है ॥ २६ ॥

विवाह का समय—

लग्नानङ्गपतिस्फुटैक्यगृहगे जीवे विवाहं वदे-
च्चन्द्राधिष्ठिततारकावधुपयोरैक्यांशके वा तथा ।

जीवे मित्रनवांशके बलयुते यद्येकदारान्वितः
स्वांशे द्वित्रिकलत्रवान् बहुवधूनाथाः स्वतुङ्गांशके ॥ २७।

संस्कृत — लग्नेति। लग्नानङ्गपतिस्फुटैक्यगृहगे=लग्नेशस्य सप्तमेशस्य च उभयोः यत्स्पष्टराश्यादिकं तयोर्योगे यद्राश्यादिकं भवेत्ततुल्ये गोचरवशात् गते जीवे=गुरौ जातस्य विवाहं वदेत्। वा=अथवा जन्मकाले चन्द्राधिष्ठिततारकायाः= चान्द्र नक्षत्रस्य यत्स्पष्टराश्यादिकं तथा वधुपस्य=सप्तमेशस्य यत्स्पष्टराश्यादिकं तयोरैक्यांशके=एकीकृते सति यन्नवांशस्तस्मिन् नवांशे गते जीवे तथा=जातस्य विवाहं वदेदिति भावः। **जीव इति।** यदि जन्म समये बलयुते=बलसहिते जीवे=गुरौ मित्रनवांशके च स्थिते सति तदा जातः एकदारान्वितः=एकभार्यायुतो भवति। **स्वांश** इति। बलयुते जीवे यदि 'स्वांशे=धनुर्मीना राशिनवांशे सति तदा जातः द्वित्रिकलत्रवान् भवति। **बह्विति।** बलयुते जीवे यदि स्वतुङ्गांशके=स्वोच्च (कर्क) राशिनवांशे गते तदा जातः बहुवधूनाथः=त्र्याधिकभार्यापतिर्भवति॥ २७॥

हिन्दी — लग्नेश-सप्तमेश के स्पष्टराश्यादि योगतुल्य राशि में जब गोचरवश बृहस्पति हो तब, या चन्द्राधिष्ठित नक्षत्र और सप्तमेश के योगतुल्य नवांश में गुरु के होने पर विवाह होता है। यदि गुरु मित्रग्रह के नवांश में रहे तो एक ही स्त्री से युक्त, स्व नवांश में हो तो दो तीन से युक्त और उच्च राशि में हो तो बहुत स्त्रियों से युक्त होता है॥ २७॥

कलत्रनाथस्थितभांशकेशयोः सितक्षपानायकयोर्बलीयसः।
दशागमे द्यूनपयुक्तभांशकत्रिकोणगे देवगुरौ करग्रहः ॥ २८॥

संस्कृत — कलत्रेति। कलत्रनाथस्थितभांशकेशयोः=सप्तमेशः यस्मिन् भ=राशौ, अंशके=नवांशे च स्थितो तदीशयोः (राशिपति-नवांशपति) मध्ये बलीयसो ग्रहस्य दशाकाले वा सितक्षपानायकयोः=शुक्रचन्द्रयोर्मध्ये यो बलीयसो तस्य दशागमे=महादशायां, द्यूनपेन=जन्मलग्नात्सप्तमेशेन युक्तो यो राशि भवेत्तस्तस्मात् राश्यात् त्रिकोणे (५।९) गते गुरौ च जातस्य करग्रहः=विवाहो भवेदिति॥ २८॥

हिन्दी — सप्तमेश जिसराशि और जिसनवांश में हो उनके अधिपतियों में, अथवा शुक्र और चन्द्र में जो अधिक बली हो उसकी दशा में, अथवा सप्तमेशयुत राशि से त्रिकोण राशि में गुरु के जाने पर विवाह होता है॥ २८॥

शुक्रोपेतकलत्रराशिपदशाभुक्तिर्विवाहप्रदा
लग्नाद्वित्तपतिस्थराशिपदशाभुक्तौ च पाणिग्रहः।
कर्मायुर्भवनाधिनायकदशाभुक्तौ विवाहःक्रमात्
कामेशेन युतः कलत्रगृहगस्तत्पाकभुक्तौ तु वा ॥ २९॥

संस्कृत — शुक्रोपेतेति। शुक्रेण उपेतः=सहितः कलत्रराशिपस्य= सप्तमेशस्य दशाभुक्तिः विवाहप्रदा भवति। अर्थाद्यस्य जन्मकाले सप्तमेशः शुक्रसंयुक्तो भवेत्तदा सप्तमेशस्य दशाऽन्तर्दशाकाले विवाहो भवतीति बोध्यः। **लग्नादिति**। लग्नाद् वित्तपतिः=द्वितीयेशः यस्मिन् राशौ स्थितो भवेत् तद्राशिपस्यदशाकाले च पाणिग्रह=विवाहो वदेत्। कर्मभावेशस्यायुर्भावेशस्य च दशान्तर्दशासमयेविवाहो वा कलत्रगृहगः=सप्तमस्थो ग्रहः अथवा कामेशेन=सप्तमेशेन युतो ग्रहस्यदशाकाले विवाहो भवेदिति॥ २९॥

हिन्दी — शुक्र से युक्त सप्तमेश की दशा विवाहकारक होती है। द्वितीयेश जिसराशि में हो उस राशिपति की दशा में विवाह होता है, दशमेश और अष्टमेश की दशा में भी विवाह होता है अथवा सप्तमेश से युक्त तथा कलत्र (सप्तम) राशि में स्थित ग्रह की दशा में भी विवाह होता है॥ २९॥

सौम्यव्योमचरः स्थितः शुभगृहे चादौ ददाति श्रियं
पापर्क्षे शुभखेचरो यदि दशामध्ये विवाहादिकम्।
क्रूरः पापगृहोपगो यदि फलं पाकावसाने तथा
सौम्यर्क्षे यदि सर्वकालफलदः सौम्यान्वितः शोभनः॥ ३०॥

संस्कृत — सौम्यव्योमचर=शुभग्रहो यदि शुभगृहे स्थितो भवेत् तदा आदौ=स्वदशायाऽरंभकाले श्रियं=शुभसम्पदं ददाति=प्रयच्छति। शुभखेचरः= शुभग्रहो यदि पापर्क्षे=पापराशौ भवेत्तदा स्वदशामध्ये=स्वदशायामध्यकाले विवाहादिकं शुभफलं करोति। क्रूरः=पापग्रहो यदि पापगृहोपगः=पापराशिस्थितस्तदा पाकावसाने=स्वदशाया अन्ते तथा=विवाहादिफलं प्रयच्छति। यदि क्रूरः सौम्यर्क्षे=शुभराशौ स्थितस्तदा सर्वकालफलदो भवेत्। क्रूरः सौम्यान्वितः= शुभग्रहसहितश्चेत्तदाऽसौ शोभनः=शुभो भवेदिति॥ ३०॥

हिन्दी — यदि शुभग्रह शुभराशि में हो तो वह अपनी दशा में पहले शुभफल को देता है। यदि पापराशि में शुभग्रह हो तो अपनी दशा के मध्य में विवाहादि शुभ फल देता है, पापग्रह यदि पापराशि में हो तो दशा के अन्तसमय में शुभफल देता है। पापग्रह यदि शुभराशि में हो तो अपनी सम्पूर्ण दशाकाल में फल देता है। यदि पापग्रह शुभग्रह से युक्त हो तो वह शुभकर होता है॥ ३०॥

लग्नेश्वरस्थितनवांशपतिः स्वराशौ
चन्द्रे पुरन्दरगुरौ च कलत्रलाभम्।
कामेशशुक्रगृहगेऽमरमन्त्रिणीन्दौ
केन्द्रेऽथवा गुरुयुते सति गोचरेण॥ ३१॥

संस्कृत — लग्नेश्वरेति। लग्नेश्वरः=जन्मलग्नेशः यस्मिन्नवांशे तिष्ठति

तन्नवांशेशग्रहस्य स्वराशौ=द्वितीयस्थाने चन्द्रे, पुरन्दरगुरौ=बृहस्पतौ च गोचरेण समागते सति तदा कलत्रलाभम्=स्त्रीप्राप्तिं (विवाहं) विजानीयात्। अथवा कामेशशुक्रगृहे=सप्तमेशो भृगुर्वा यस्मिन् राशौ तिष्ठति तत्रतः केन्द्रे (१-४-७-१०) राशौ गोचरेण=सञ्चारवशेन गतवति अमरमन्त्रिणी=गुरौ, इन्दौ=चन्द्रे च तदा कलत्रलाभं वदेदिति ॥ ३१ ॥

हिन्दी — लग्नेश जिस नवांश में रहे उस नवांश का स्वामी जिसराशि में स्थित हो उससे दूसरी राशि में चन्द्रमा और बृहस्पति जब आवें तो स्त्री का लाभ होता है। सप्तमेश और शुक्र जिसराशि में हों उसमें तथा उससे केन्द्रराशि में जब गोचरीय गुरु आवे तो स्त्री का लाभ होता है ॥ ३१ ॥

यत्संख्याकमजादि कामभवनं तद्वत्सरे वा नृणां
साष्टाब्दे कृतमौञ्जिकर्मपरतः कल्याणकालो भवेत् ।
लग्नादस्तविलग्ननायकयुतक्षेत्रांशके सम्भवा
या सा भर्तृमनःप्रसादकरिणी भर्ता तथैव स्त्रियाः ॥ ३२ ॥

संस्कृत — यदिति। कामभवनं=सप्तमभवनम् अजादि=मेषादिराशि-गणनाक्रमेण यत्संख्याकं भवेत्तद्वत्सरे, वा साष्टाब्दे=अष्टवर्षसहिते तत्सप्तमभाव-राश्याङ्कसमवर्षे नृणां=जातस्य कृतमौञ्जिकर्मपरतः=मौञ्जिसंस्कार (व्रतबन्धन) परतः अनन्तरं कल्याणकालः=विवाहसमयो भवेत्। यथा सप्तमे भावे यदि कन्याराशिस्तथा तस्य मौञ्जिबन्धनमष्टाब्दे जातं तदा मौञ्जिकर्मपरतो चतुर्दशे (८+६) वर्षे जन्मतो द्वाविंशतितमे (६+८+८) वर्षे तस्य परिणयनं वदेदिति। **लग्नादिति**। लग्नात्=जन्मलग्नात् अस्तविलग्नं=सप्तमो भावस्तस्य नायकेन=स्वामिना (सप्तमेशेन) युतो यः क्षेत्रांशकः=राशिनवांशस्तस्मिन् राशौ सम्भवा=उत्पन्ना या स्त्री, सा भर्तृमनः प्रसादकरणी=पतिमनभाविनी भवति। तथैव तल्लक्षणयुतः भर्ता=स्वामी, स्त्रियाः मनःतोषकरो भवेदिति ॥ ३२ ॥

हिन्दी — मेषादिराशि से सप्तमभाव के राशि की जितनी संख्या हो उतने वर्ष या उसमें ८ जोड़कर यज्ञोपवीत के बाद कल्याण (पाणिग्रहण) का समय होता है। लग्न से सप्तमेश के नवांशराशि में उत्पन्न स्त्री स्वामी के मन को प्रसन्न करनेवाली होती है। इसी तरह की स्त्री को उसका पति प्रसन्न करनेवाला होता है ॥ ३२ ॥

कामान्वितेक्षकवियच्चरराशिजाता
चन्द्रादतीव सुभगा च पतिप्रिया स्यात् ।
स्त्रीजातके च पतिरिष्टकरो वधूनां
दिग्देशजा भृगुसुतादबलाधिपस्य ॥ ३३ ॥

संस्कृत — कमिति। चन्द्रात्=जन्मकालीनचन्द्रस्थित राशितः कामे=

सप्तमे, अन्वितः=स्थितः वा ईक्षकः=सप्तमभावद्रष्टा यो वियच्चरः=ग्रहस्तस्य ग्रहस्य राशौ जाता=उत्पन्ना स्त्री अतीव सुभगा पतिप्रिया च स्यात्। अर्थात् जन्मकाले चन्द्रकुण्डल्यां सप्तमे स्थाने यो ग्रहो भवेद्वाग्रहाभावे तदभावोपरि यस्य ग्रहस्य सर्वाधिका दृष्टिर्भवेत् तस्य ग्रहस्य राशि यस्या कन्याया जन्मराशिर्भवति सा अतीव सुन्दरी पतिप्रिया च भवति। स्त्रीजातके=स्त्रियाः जन्मकुण्डल्यामपि उपरोक्तलक्षणे सति पतिः वधूनां=स्त्रीणाम् इष्टकरः मनस्तोषकरो भवेदिति। **दिगिति।** भृगुसुतात्=शुक्रात् अबलाधिपस्य=सप्तमेशस्य या दिक् (२/२३) तद्दिग्देशजा जातस्य स्त्री ज्ञेया। अर्थात् जन्मकाले यस्मिन् भावे शुक्रो भवेत्तस्मात्सप्तमभावस्य योऽधिपस्तस्य दिशि पुरूषस्य विवाहो भवेदिति।

अत्रदारदिग्ज्ञानेऽन्येऽपि प्रकाराः—

शुक्राधिष्ठितराश्यंशदिशो वा दारसम्भवः
शुक्रजामित्रतो वाऽपि दारेशस्य दिशोऽथवा।
कलत्रसंस्थस्य तदीक्षकस्य लग्नात्तदीशस्य च चन्द्रतो वा
दिग्जातमत्र प्रवदेत् कलत्रं पुंसोङ्गनायाश्च पतिं तथैव॥
कामस्थकामाधिपभार्गवानामृक्षं दिशं शंसति तस्य पत्न्याः॥ इति॥ ३३॥

हिन्दी — पुरुषजातक की कुण्डली में चन्द्रमा से सप्तमभाव में स्थित तथा सप्तम को देखनेवाले ग्रह की राशि में उत्पन्न स्त्री अत्यन्त सुन्दरी और पति की प्रिया होती है। यदि स्त्री की कुण्डली में ऐसा हो तो स्त्रियों के अभीष्ट को पूर्ण करनेवाला पति होता है। शुक्र से सप्तमेश की दिशा में जातक का विवाह कहें। अर्थात् जातक का विवाह शुक्र से जो सप्तमेश हो उसकी दिशा (२/२३) में कहनी चाहिये॥ ३३॥

वरवधूनाशकयोगः—

धनावसानस्मरयानरन्ध्रगो धरासुतो जन्मनि यस्य दारहा।
तथैव कन्याजनजन्मलग्नतो यदि क्षमासूनुरनिष्टदः पतेः॥ ३४॥

संस्कृत — धनेति। यस्य जन्मनि=जन्मसमये धरासुतः=भौमः, धनावसानस्मरयानरन्ध्रगः=द्वितीय-द्वादश-सप्तम-चतुर्थाष्टमगतः स्यात्तदा जातको दारहा=स्त्रीनाशकः भवेदर्थात्तस्य स्त्री म्रियते। कन्याजनजन्मलग्नतो यदि क्षमासूनुः=भौमः तथैव=धनावसानस्मरयानरन्ध्रस्थान गतः स्यात्तदा पतेः=स्वामिनः अनिष्टदः=नाशकरः भवेदिति। अत्र बध्वा वरस्य च जन्मलग्नगतो भौमकृत अशुभ योगः—

"लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्या भर्तृविनाशाय भर्ता कन्याविनाशकृत" इति॥ ३४॥

हिन्दी — पुरुष के द्वितीय-द्वादश-सप्तम-चतुर्थ या अष्टम स्थान में यदि भौम हो तो वह स्त्रीनाशक होता है। इसी तरह कन्या के लग्न से द्वितीय-द्वादश-सप्तम-अष्टम-द्वादश भाव में यदि मङ्गल हो तो वह पति का अनिष्ट करती है॥ ३४॥

क्रूरव्योमचरः स्त्रीणामष्टमस्थो विलग्नतः ।
नीचारिपापवर्गेषु यदि मृत्युकरः पतेः ॥ ३५ ॥

संस्कृत —क्रूरेति। क्रूरव्योमचरः=कश्चित्क्रूरग्रहः नीचारिपापवर्गेषु स्थितः सन् यदि स्त्रीणां विलग्नतः=जन्मलग्नात् अष्टमस्थो=अष्टमभावगतो भवेत् तदा पतेः=स्वामिनः कृते मृत्युकारको भवेदिति॥ ३५॥

हिन्दी — स्त्रियों की कुण्डली में लग्न से अष्टमभाव में स्थित क्रूरग्रह यदि नीच-शत्रु-पाप के वर्ग में हो तो वह पति के लिए मृत्युकारक होता है॥ ३५॥

द्यूनकुटुम्बगतौ यदि पापौ दारवियोगजदुःखकरौ तौ ।
तादृशयोगजदारयुतश्चेज्जीवति पुत्रधनादियुतश्च ॥ ३६ ॥

संस्कृत — द्यूनेति। पापो=द्वौ पापग्रहो यदि द्यूनकुटुम्बगतौ= सप्तमद्वितीयगतौ (एकः सप्तमे, अपरः द्वितीये) तदा तौ दारवियोगजदुःखकरौ= स्त्रीवियोगजन्यदुःखकारकौ भवतः। अथासौ पुरूषो यदि तादृशयोगजदारयुतः= तादृशेयोगे द्यूनकुटुम्बगतौ यदि पापावित्यस्मिन् योगे जातैः स्त्रीभिः युतो भवेत् अर्थात् स्त्रिया जन्मकुण्डल्यामंपि पापौ द्वितीयसप्तमगतौ भवेतां तदा पुत्रधनादियुतश्च जीवतिं॥ ३६॥

हिन्दी — पुरुष कुण्डली में यदि पापग्रह सप्तम और द्वितीयस्थान में रहें तो वे दोनों स्त्री-वियोग दुःख देनेवाले होते हैं। यदि ऐसे ही योग से युक्त उसकी स्त्री भी हो तो वह जातक पुत्र धनादि से युक्त होकर जीवित रहता है॥ ३६॥

कलत्रराशित्रितयेऽथवा स्यात्तदीशसंयुक्तभराशिकोणे ॥
कलत्रराशिर्यदि पुत्रशाली तदन्यराशिर्यदि पुत्रहीनः ॥ ३७ ॥

संस्कृत — कलत्रेति। पुरूषकुण्डल्याम्—कलत्रराशित्रितये=कलत्र-राशेर्भेदत्रये (१. कलत्रेशो यत्र स्थितो, २. तस्योच्चं नीचं, ३. कलत्रराशिः) अथवा तदीशसंयुक्तभराशिकोणे=सप्तमेशस्थितःराशे कोणे (५।९) यदि कलत्रराशिः=स्त्रिया जन्मराशिः भवेत्तदा पुत्रशाली, यदि तदन्यराशिः=स्त्रिया जन्मराशेर्भिन्नो राशिः स्यात्तदा जातः पुत्रहीनो भवेदिति भावः॥ ३७॥

हिन्दी — यदि पुरुष के कलत्र राशित्रय में अथवा सप्तमेश से युक्त राशि के त्रिकोण में उसके स्त्री की राशि हो तो वह जातक पुत्रशाली (पुत्रवान्) अन्यथा यदि उससे अन्यराशि हो तो वह पुत्रहीन होता है॥ ३७॥

स्तन विचार—

काठिन्योरुकुचा मदे दिनकरे कामाधिपे केन्द्रगे
जीवेन्दुज्ञसितान्विते गुरुकुचा शुष्कस्तना भूमिजे ।
लम्बापीनपयोधरा सगुलिकछायासुताहिध्वजे
धूमादौ विषमाकृतिस्तनवती दुःस्थेऽथवा कामपे ॥ ३८ ॥

संस्कृत — काठिन्येति। दिनकरे=सूर्ये, मदे=सप्तमे गते सती तदा जातस्य स्त्री काठिन्योरूकुचा=उरू-जघनौ, कुचौ=स्तनौ च काठिन्य=घनत्व युक्तौ भवेत् जीवेन्दुज्ञसितान्विते=गुरू-चन्द्र-बुध-शुक्र सहिते कामाधिपे=सप्तमेशे केन्द्रगे=केन्द्रगते सति तदा स्त्री गुरूकुचा=पीनपयोधरा, भूमिजे=मङ्गले सप्तमगे सति तदा शुष्कस्तना=गलत्कुचा, सगुलिकच्छायासुताहिध्वजे=गुलिकेन सहिते छायासुते=शनौ, अहिध्वजे=राहुकेत्वो वा सप्तमे गते तदा लम्बापीनपयोधरा=स्थूलौ पयोधरौ=कुचौ, धूमादौ=सप्तमे भावे धूमाद्युपग्रहे सति तदा स्त्री विषमाकृति-स्तनवती=असमान् लघुदीर्घ पयोधरा, अथवा कामपे=सप्तमेशे दुःस्थे=दुष्टस्थानगते तदा विषमाकृतिस्तनवती स्त्री भवेत् ॥ ३८ ॥

हिन्दी — यदि सूर्य सप्तमेश रहे तो उस जातक के स्त्री की जांघे और स्तन पुष्ट होते हैं। सप्तमेश केन्द्र में हो और बृहस्पति-चन्द्र-बुध या शुक्र से युक्त हो तो स्तन बड़े होते हैं। यदि सप्तम में मङ्गल हो तो शुष्क स्तन, यदि गुलिक के साथ शनि-राहु या केतु हों तो लम्बे मोटे स्तन होते हैं। सप्तमेश यदि दुष्टस्थान में हो अथवा सप्तम में धूमादि उपग्रह रहें तो स्त्री विषमस्तनवाली होती है ॥ ३८ ॥

गम्य स्त्री विचार—

बन्ध्यासङ्गमिनेऽस्तगे समवधूकेलिं निशानायके
भूपुत्रे तु रजस्वलाजनरतिं बन्ध्यावधूमेति वा ।
वेश्यामिन्दुसुते तु विप्रवनितां जीवे सिते गर्भिणीं
नीचस्त्रीरतिकर्मजोरगशिखिप्राप्तेऽथवा पुष्पिणीम् ॥ ३९ ॥

संस्कृत — बन्ध्येति। इने=सूर्ये, अस्तगे=सप्तमगते सति तदा जातः बन्ध्यासहसङ्गमं करोति। निशानायके=चन्द्रे सप्तमगे सति तदा समवधूकेलिं=स्वसमानरूपगुणवयोतुल्य वध्वा सह केलिं=रतिं करोति। भूपुत्रे=भौमे सप्तमे गते सति तदा रजस्वलाजनरतिं करोति वा बन्ध्यावधूम्=अप्रसूयास्त्रीं, एति=प्राप्नोति। इन्दुसुते=बुधे सप्तमे गते सति तदा तु वेश्यामुपगच्छति। जीवे=गुरौ सप्तमे गते सति तदा विप्रवनितां=ब्राह्मणीसह। सिते=शुक्रे तथाभूते सति तदा गर्भिणी सह, अर्कजोरगशिखिप्राप्ते=सप्तमे भावे शनौ, राहौ, केतौ वा सप्तमे गते सति तदा नीचस्त्रीसहरतिं कुर्यादथवा पुष्पिणीं=रजस्वलासहसंगमं करोति ॥ ३९ ॥

हिन्दी — सूर्य यदि सप्तमभाव में हो तो बन्ध्या स्त्री से सङ्गम, चन्द्र सप्तम में हो तो अपने समान स्त्री से, मङ्गल हो तो रजस्वला अथवा बन्ध्या स्त्री से, बुध हो तो वेश्या से, बृहस्पति हो तो ब्राह्मणी से, शुक्र हो तो गर्भिणी स्त्री से, शनि-राहु या केतु हो तो नीच स्त्री या रजस्वला स्त्री से रतिक्रिया होती है॥ ३९॥

संगम स्थान विचार—

क्रीडागारमिने वनं सुखगते चारु स्वगेहं विधौ
भूपुत्रे सति कुड्यमिच्छति बुधे जाते विहारस्थलम्।
जीवे देवगृहं सिते तु सलिलं मन्देऽथवा पन्नगे
केतौ माधवशङ्करप्रियसुतस्थानं वधूसंगमे॥४०॥

संस्कृत — इने=सूर्ये, सुखगते=चतुर्थभावगते सति तदा वनम्=अरण्यम्, क्रीडागारं=विहारस्थलं बोध्यम्। विधौ=चन्द्रे सुखगते सति तदा चारू स्वगेहं= रमणीयमात्मभवनमेव ज्ञेयम्। भूपुत्रे=भौमे चतुर्थे सति तदा कुड्यं=तृष्णकाष्ठ गृहं बोध्यम्। बुधे चतुर्थे सति तदा विहारस्थलं=रम्यभूमिः, जीवे चतुर्थे सति तदा देवगृहं=देवालयः मठमन्दिरादि। सिते=शुक्रे चतुर्थे सति तदा तु सलिलं= जलाशयतटम्। मन्दे=शनौ, पन्नगे=राहौ, केतौ वा चतुर्थे सति तदा माधव-शङ्कर-प्रिया-सुत-स्थानं वधूसङ्गमे=स्त्रीप्रसङ्गे स्थानं ज्ञेयमिति॥ ४०॥

हिन्दी — यदि चतुर्थस्थान में सूर्य हो तो निर्जन स्थान में रतिक्रीड़ा, चन्द्रमा हो तो रमणीय गृह में, मङ्गल हो तो पर्णकुटी में, बुध हो तो विहारयोग्य स्थान में, गुरु हो तो देव स्थान में, शुक्र हो तो जल के समीप और शनि या राहु-केतु हों तो विष्णु-शङ्कर-देवी-गणेश आदि देवताओं के मन्दिर में रतिक्रिया समझनी चाहिए॥ ४०॥

शुक्रांशे मदनस्थितेऽवनिसुते कामाधिपे पञ्चमे
जायारिष्टमुपैति सप्तमगते भानौ कलत्रार्थवान्।
दुःस्थौ कामकुटुम्बपौ सभृगुजौ दुश्चिक्ययातौ तु वा
तत्संख्याककलत्रहा बलयुतौ वित्तास्तपौ दारवान्॥४१॥

संस्कृत — **शुक्रांश** इति। अवनिसुते=भौमे शुक्रांशे=शुक्रनवांशे गतवति मदनस्थिते=सप्तमस्थिते सति, कामाधिपे=सप्तमेशे पञ्चमे च सति तदा जातो जायारिष्टं=स्त्रीकष्टं, उपैति=प्राप्नोति। अर्थात् जातस्य स्त्री कष्टं प्राप्नोतीत्यर्थः। भानौ=सूर्ये सप्तमगते सति तदाजातः कलत्रार्थवान् भवति। कामकुटुम्बपौ=सप्तमेश द्वितीयेशौ सभृगुजौ=शुक्रेण सहितौ दुःस्थौ=षडष्टव्ययस्थानगतौ वा दुश्चिक्ययातौ= तृतीयभावगतौ तु तत्संख्याककलत्रहा=यस्मिन् भावेऽयं योगो भवेत्तद्भावाङ्कतुल्य-स्त्रीनाशः भवेत्। वित्तास्तपौ=धनेश-सप्तमेशौ यदि बलयुतौ भवेत् तदा तत्संख्या-कदारवान् भवेदिति॥ ४१॥

हिन्दी — यदि सप्तमस्थ मङ्गल शुक्र के नवांश में हो और सप्तमेश पञ्चमभाव में हो तो स्त्री को कष्ट होता है। सूर्य सप्तम में रहे तो स्त्री-सुख प्राप्त होता है। सप्तमेश और द्वितीयेश शुक्र के साथ यदि दुष्ट स्थान में हों या तृतीय भाव में हों तो उतनी ही संख्या में जातक के स्त्रियों की हानि होती है। यदि द्वितीयेश और सप्तमेश बली हों तो जातक की स्त्री जीवित रहती है ॥ ४१ ॥

भग चुम्बन योग—

जातः समेति भगचुम्बनमस्तनाथे
शुक्रेण वीक्षितयुते भृगुमन्दिरे वा ।
एवं कुटुम्बभवनाधिपतौ तथा स्याद्
दारर्क्षगे दशमपे ससिते तथैव ॥ ४२ ॥

संस्कृत — जात इति। १. अस्तनाथे=सप्तमेशे शुक्रेण वीक्षिते युते वा भृगुमन्दिरे=वृषतुलाराशौ गते सति तदा जातः भगचुम्बनं समेति। २. कुटुम्बभवनाधिपतौ=द्वितीयेशे यदि शुक्रेण वीक्षितयुते वा वृषतुलाराशौ गते सति तदा तथा स्यादर्थाज्जातो भगचुम्बनं करोति। ३. ससिते=शुक्रसहिते दशमपे=दशमभावेशे, दारर्क्षगे=सप्तमगते सति तदा तथैवार्थाज्जातो भगचुम्बनं करोति ॥ ४२ ॥

हिन्दी — यदि समसप्तमेश शुक्र से दृष्ट या युत हो तो अथवा शुक्र के गृह में (सप्तमेश) हो तो अथवा शुक्र के गृह में द्वितीयेश के होने पर अथवा दशमेश व शुक्र एक साथ सप्तम में हो तब जातक भगचुम्बनरती होता है ॥ ४२ ॥

कामेश्वरो देवगुरुः सितो वा समं भगं चारुतरं तरुण्याः ।
ह्रस्वं भगं सप्तमराशिनाथे शनीन्दुतारासुतमध्ययाते ॥ ४३ ॥

संस्कृत — कामेश्वर इति। देवगुरुः=बृहस्पतिः वा सितः=शुक्रः, कामेश्वरः=सप्तमेशः भवेत्तदा तरूण्याः=स्त्रियाः समं=नातिह्रस्वं नातिदीर्घं चारूतरम्=अतीव चिक्कणं, भगम्=योनिः भवेत्। मेषवृश्चिकः मिथुनकन्या लग्ने सति अयं योगः सम्भवेत्। सप्तमराशिनाथे=सप्तमेशे शनीन्दुतारासुतमध्ययाते=ग्रहाणां मध्येस्थिते सति तदा ह्रस्वं=लघुप्रमाणकं भगं भवेदिति ॥ ४३ ॥

हिन्दी — सप्तमेश यदि बृहस्पति या शुक्र रहे तो उसके स्त्री की योनि सम और सुन्दर होती है। सप्तमेश यदि शनि-चन्द्र और बुध के मध्य में रहे तो योनि छोटी होती है ॥ ४३ ॥

दीर्घं समेति भगमस्तपतौ जलर्क्षे
तत्कारके जलगृहोपगते तथैव ।
सार्द्रं भगं मदनगे भृगुवीक्षितेऽब्जे
गुह्यं त्वनार्द्रमुपयाति वधूःसपापे ॥ ४४ ॥

संस्कृत — दीर्घमिति। अस्तपतौ=सप्तमभावेशे, जलर्क्षे=जलचरराशौ=मृगापरार्द्ध-मीन-कर्के सति, दीर्घ=महत्प्रमाणकं भगं समेति। तत्कारके=सप्तम-भावकारके (शुक्रे) जलगृहोपगते=जलचरराशौ गते सति तदा तथैव=दीर्घं भगं समेति। अब्जे=चन्द्रे, मदनगे=सप्तमगते, तत्र भृगुवीक्षिते=शुक्रेणावलोकिते चेत्तदा सार्द्रं=सजलं भगं समेति। यदि तादृशेऽब्जे सपापे=पापग्रह युते चन्द्रे सप्तमगते भृगुवीक्षिते सति वधूः=स्त्री, अनार्द्रं=शुष्कं, गुह्यं=रहस्यक्षेत्रं (भगम्) उपयाति=प्राप्नोति॥ ४४॥

हिन्दी — यदि सप्तमेश जलचर (मकरोत्तरार्द्ध-मीन-कर्क) राशि में हो तो अथवा स्त्रीभाव का कारक (शुक्र) ग्रह जलर्क्ष में हो तो बड़ी योनि, चन्द्र सप्तम में हो और उसे शुक्र देखता हो तो सार्द्र (भींगी हुई) योनि, सप्तम में यदि पापग्रह हो तो शुष्क योनि होती है॥ ४४॥

लग्नेशस्थनवांशनाथगृहगे जीवे समेति स्त्रियं
नीचारातिनवांशके सति मृतस्त्रीको विदारोऽथवा।
लग्ने कामपतिस्फुटादपहृते राशित्रिकोणे गुरौ
लग्ने सप्तमराशिपस्फुटहृते जीवे मृतिं योषितः॥ ४५॥

संस्कृत — लग्नेशेति। लग्नेशस्थनवांशनाथगृहगे=लग्नेशो यस्मिन्नवमांशे स्थितो स्यात् तन्नवांशनाथो यद्गृहगतो भवेत् तत्र जीवे=गुरौ सति तदा जातः स्त्रियं समेति=प्राप्नोति। नीचारातिनवांशके=तथाभूते जीवे स्वनीचराशेः शत्रुग्रहस्य-राशेः वा नवांशे सति तदा जातः मृतस्त्रीकः, अथवा विदारः=स्त्रीरहितः अविवाहितः-परित्यक्तः-विधुरो वा भवेत्। **लग्न इति**। कामपतिस्फुटात्=स्पष्टसप्तमेशग्रहात् लग्ने अपहृते=शोधिते जाते शेष राश्यात् त्रिकोणे गते वा शेष राशौ गते गुरौ तदा योषितः जातस्य पत्न्याः मृतिं भवेदिति भावः॥ ४५॥

हिन्दी — लग्नेश जिस नवांश में हो उस नवांशपति के गृह में जब गुरु हो तो जातक को स्त्री प्राप्त होती है। यदि लग्नेश नीच या शत्रु के नवांश में हो तो उसकी स्त्री मरती है या वह बिना स्त्री का ही रहता है। स्पष्टसप्तमेश में से लग्न को घटाने से जो शेष राशि बचे उससे त्रिकोणस्थान में गुरु के होने पर या लग्न में स्पष्ट सप्तमेश को घटाने पर शेषराशि में जब गुरु आवे तो स्त्री की मृत्यु होती है॥ ४५॥

लग्नात्कामपकारकौ शुभकरौ वीर्याधिके सप्तमे
पत्या साकमुपैति मृत्युमबला पापैरयुक्तेक्षिते।
कामच्छिद्रदशापहारसमये शुक्राष्टवर्गोदिते
राशौ भानुसुते कलत्रमरणं जीवे तदंशान्विते॥ ४६॥

संस्कृत — लग्नादिति। लग्नात् यः कामपः=सप्तमेशः, कारकः=

स्त्रीकारक(शुक्रः)श्च तौ यदि शुभकरौ=शुभग्रहौ भवेतां तथा सप्तमे वीर्याधिके=सप्तमभाव पूर्णबलान्विते सप्तमभावः पापैरयुक्तेक्षिते=पापग्रहयोगदृष्टिवर्जिते सति तदा अबला=स्त्री, पत्या=भर्त्रा, साकं=सहैव मृत्युमुपैति=प्राप्नोति। अस्मिन् योगे दम्पत्योर्मरणं सहैव भवेदिति। कामच्छिद्रदशापहारसमये=सप्तमस्थानात् छिद्रग्रहस्य (५/५२-५३) दशा-अन्तर्दशाकाले, शुक्राष्टवर्गोदिते=पूर्वोक्त (अ० १०। २८-२९) शुक्राष्टकवर्गराशौ भानुसुते=शनैश्चरे, जीवे तदंशान्विते=तद्राश्यंशे (शनिस्थित-राशिनवांशे) गतवति गुरौ तदा कलत्रमरणं=स्त्रीमरणं भवेदिति भावः॥४६॥

हिन्दी — लग्न से सप्तमभावेश और स्त्रीकारक दोनों ही शुभग्रह हों, सप्तमभाव बलवान हो और उसपर पापग्रहों का योग या दृष्टि नहीं हो तो उसकी स्त्री पति के साथ मरती है। सप्तमभाव से छिद्रग्रह (५/५२) की दशा प्राप्त होने पर शुक्र के अष्टकवर्गोक्त पत्नी के लिए अरिष्टकर राशि में शनि हो और उस (शनि के) राशि नवांश में जब गुरु आवे तब स्त्री की मृत्यु होती है॥४६॥

मदनभवननाथे पारिजातादिवर्गे
सुरगुरुयुतदृष्टे शोभनस्थानयाते।
दधिमधुघृतसूपक्षीरपक्वोपदंशैः
सह शुचि रुचिरान्नं चारुकान्तामुपैति॥४७॥

संस्कृत — सरलार्थः॥४७॥

हिन्दी — यदि सप्तमेश अपने पारिजातादि वैशेषिक वर्ग में गुरु से युत या दृष्ट होकर शुभस्थान में हो तो जातक को दधि-मधु-घी-दाल-पक्व पदार्थों के साथ सुन्दर रुचिकर अन्न का भोजन और रमणीय स्त्री की प्राप्ति होती है॥४७॥

अष्टमभावफल—

आयुर्दायमनिष्टहेतुमुदयव्योमायुरीशार्कजै-
रुक्तं तत्सकलं तथापि निधनप्राप्तिं प्रवक्ष्ये पुनः।
अल्पायुर्व्ययगेऽथवा रिपुगते पापान्विते रन्ध्रपे
लग्नेशेन युते तु तत्र विबले जातोऽल्पजीवी नरः॥४८॥

संस्कृत — आयुर्दायमिति। उदयव्योमायुरीशार्कजैः=लग्नेश-दशमेश-अष्टमेश-शनिग्रहैः जातनरस्यायुर्दायम्, अनिष्टहेतुं=कष्टकारणं च सकलं उक्तम्=पूर्वमुक्तम् (४-५ अध्याय) तथापि पुनः निधनप्राप्ति प्रवक्ष्ये। पापान्विते= पापग्रहेण सहिते रन्ध्रपे अष्टमेशे व्ययगे=द्वादशभावगे, अथवा रिपुगते षष्ठभावगते तदा जातः अल्पायुर्भवेत् तत्र=रन्ध्रपे तथाभूते विबले=बलहीन लग्नेशेन युते च तदा जातो नरः अल्पजीवी भवेदितिभावः॥४८॥

हिन्दी — लग्न-दशम व अष्टम भावों के स्वामी और शनिग्रह से जातक की

आयु तथा अनिष्ट का विचार पहले कहा जा चुका है, तथापि पुनः अष्टमभाव को प्रसङ्गवश कहते हैं। अष्टमेश यदि द्वादश या षष्ठ भाव में पापग्रह से युक्त रहे तो जातक अल्पायु होता है। पूर्वोक्त स्थानों (६/१२) पर यदि अष्टमेश बलहीन हो और लग्नेश के साथ हो तो जातक अल्पजीवी होता है॥ ४८॥

स्वस्थे रन्ध्रपतौ चिरायुरुदयछिद्राधिपौ षष्ठगौ
रिःफस्थौ यदि वा समेति मनुजो जातश्चिरायुर्बलम्।
व्यापारोदयरन्ध्रराशिपतयः केन्द्रत्रिकोणायगा
दीर्घायुर्विबलाः सभानुतनया यद्यल्पमायुर्वदेत् ॥ ४९ ॥

संस्कृत — स्वस्थ इति। रन्ध्रपतौ=अष्टमेशे स्वस्थे=स्वराशिस्थिते तदा जातश्चिरायुः=दीर्घजीवी भवेत्। उदयच्छिद्राधिपौ=लग्नेशाष्टमेशौ यदि षष्ठगौ वा रिष्फस्थौ=द्वादशभावगतौ स्यातां तदा जातः चिरायुर्बलं=दीर्घ जीवनं प्राप्नोति। व्यापारोदय-रन्ध्रराशिपतयः=दशमेश-लग्नेश-अष्टमेशाः यदि केन्द्र त्रिकोणाय (१।४।७।१०।५।९।११) गताः भवेयुस्तदा जातो नरो दीर्घायुः भवेत्। तथाभूता ग्रहाः सभानुतनयाः=सूर्यपुत्रेण (शनिना) सहिताः यदि विबलाः=बलहीना भवेयुस्तदा अल्पमायुर्वदेत्॥ ४९॥

हिन्दी — यदि अष्टमेश अपने राशिस्थान में रहे तो जातक दीर्घायु होता है। लग्नेश और अष्टमेश दोनों ही यदि छठे भाव या द्वादश में रहें तो भी जातक दीर्घायु होता है। दशम-लग्न और अष्टमभाव के स्वामी यदि केन्द्र त्रिकोण या एकादश भाव में रहें तो भी जातक दीर्घायु होता है। यदि वे निर्बल होकर शनि के साथ रहें तो अल्पायु होता है॥ ४९॥

कर्मेशरन्ध्रतनुपा बलशालिनश्चे-
ज्जातश्चिरायुरिननन्दनयोगहीनाः ।
द्वावप्यतीव बलिनौ यदि मध्यमायु-
रेको बली लघुतरायुरनायुरन्यः ॥ ५० ॥

संस्कृत — चिरायुः—कर्मेशरन्ध्रतनुपाः=दशमेश-अष्टमेश-लग्नेशाचेद्यदि त्रयो बलशालिनः=पूर्णबलाः तथा इननन्दनयोगहीनाः=शनैश्चरयोगविहीनाश्च भवेयुस्तदा जातश्चिरायुः=दीर्घजीवी भवेत्। अत्र पूर्णबला अपि यदि शनियोगसहिता तदा दीर्घायुः योगकरा न स्युरिति ज्ञेयम्।

मध्यायुः—तेषु (कर्मेशरन्ध्रतनुपेषु) मध्ये यदि द्वावपि बलिनौ भवेताम् तदा मध्यमायुः ज्ञेयम्।

अल्पायुः—तेषु (त्रिषु) मध्ये कश्चिदेको यदि बली भवेत् तदा लघुतरायुः= अल्पायुर्ज्ञेयम्।

हीनायुः—अन्यः अनायु=तेषु न कश्चिदपि बली अपितु लग्नेशाष्टमेश-दशमेशाः निर्बला भवेयुस्तदा जातः अनायुः=हीनायुः ज्ञेयम्॥ ५०॥

हिन्दी — यदि दशमेश-अष्टमेश-लग्नेश बलवान हों और शनि का योग उनसे नहीं होता हो तो जातक चिरायु होता है। इन तीनों में से दो यदि बली हों तो जातक मध्यमायु होता है। यदि एकबली रहे तो जातक अल्पायु होता है, और यदि तीनों में से कोई भी बली नहीं हो तो जातक की आयु नहीं होती है॥ ५०॥

रन्ध्राधिपे पापगृहोपयाते दुःस्थानगे पापयुतेऽल्पमायुः ।
शुभान्विते शोभनराशियुक्ते शुभेक्षिते रन्ध्रगते चिरायुः ॥ ५१ ॥

संस्कृति — स्पष्टार्थः॥ ५१॥

हिन्दी — अष्टमेश पापग्रह की राशि में हो अथवा दुष्टस्थान (६-८-१२) में पापग्रह से युत रहे तो जातक अल्पायु होता है। किन्तु अष्टमेश यदि शुभग्रह से युक्त होकर शुभराशि में हो या शुभदृष्ट होकर अष्टमभाव में रहे तो जातक चिरायु होता है॥ ५१॥

नाशस्थे तनुपे ऽथवा निधनपे पापेन युक्तेक्षिते
मूढे दृश्यगतेऽथवा रिपुगृहे जातो गतायुर्भवेत् ।
दीर्घायुर्निजतुङ्गगे शुभयुते केन्द्रत्रिकोणेऽथवा
रन्ध्रे रन्ध्रपतौ चिरायुरुदयं यातो विलग्नाधिपे ॥ ५२ ॥

संस्कृत — नाशस्थे इति। तनुपे=लग्नेशे, अथवा निधनपे=अष्टमेशे, नाशस्थे=अष्टमस्थानगते, पापेन युक्तेक्षिते=पापग्रहेण सहिते वा दृष्टे, मूढेऽदृश्यगते=सूर्येण सहास्तंगतेवाऽदृश्यकालांशान्तर्गते अथवा रिपुगृहे=षष्ठभावगते सति तदा जातः गतायुः=आयुहीनः अर्थात् जातः न जीवेदित्यर्थः।

तस्मिन्नेव योगे तनुपेऽथवा निधनपे शुभयुते निजतुङ्गगे=स्वकीयोच्चं अथवा केन्द्रत्रिकोणे गतवति तदा जातः चिरायुः, अथवा रन्ध्रपतौ, रन्ध्रे=अष्टमे, विलग्नाधिपे=लग्नेशे, उदयं याते=लग्नं गते तदा जातश्चिरायुर्भवेदिति ज्ञेयम्॥ ५२॥

हिन्दी — लग्नेश अष्टमभाव में हो या अष्टमेश पापग्रह से युत या दृष्ट होकर अस्तंगत हो या अदृश्य चक्रार्ध में अथवा शत्रुगृह में हो तो जातक आयुहीन होता है। अष्टमेश अपनी उच्चराशि में शुभग्रह से युत हो या केन्द्र त्रिकोण में हो तो जातक दीर्घायु होता है। अथवा अष्टमेश अष्टमभाव में व लग्नेश लग्न में हो तो जातक चिरायु होता है॥ ५२॥

लग्नादन्त्यगृहाधिपे बलवति स्वर्क्षे चिरायुः सुखी
लग्नेशो यदि रन्ध्रपश्च बलिनौ केन्द्रस्थितौ चेत्तथा ।

आधानोदयराशितोऽष्टमगृहान्मेषपूरणं जन्मभं
शुक्रज्ञामरवन्दितेक्षितयुतं यद्यायुरारोग्यभाक् ॥ ५३ ॥

संस्कृत — लग्नादिति। लग्नादन्त्यगृहाधिपे=द्वादशेशे बलवति स्वर्क्षे च गतवति तदा जातः चिरायुः सुखी च भवेत्। लग्नेशः, रन्ध्रपः=अष्टमेशश्चैतौ=यदि बलिनौ भूत्वा केन्द्रस्थितौ भवेताम् तदा चेत्तथा=चिरायुः सुखी च भवेत्। आधानोदयराशितः=गर्भाधान लग्नात् वा अष्टमगृहात्=जन्मलग्नस्याष्टमभावात् मेषूरणं=दशमभावः, अथवा जन्मभं=जन्मकालीनचन्द्रराशिः यदि शुक्रज्ञामरवन्दिते-क्षितयुतं =शुक्रबुधजीवेन दृष्टः युतो वा भवेत्तदा जातः आयु आरोग्यभाक्=चिरायु निरोगी च भवेदिति ॥ ५३ ॥

हिन्दी — यदि लग्न से द्वादशभाव का स्वामी अपनीराशि में बलवान् हो तो जातक चिरायु और सुखी होता है। यदि लग्नेश व अष्टमेश बली हों और केन्द्र में हों तो भी वही फल होता है। आधानलग्न या जन्मलग्नराशि के अष्टमराशि से दशवीं राशि अथवा जन्मलग्न शुक्र-बुध-बृहस्पति से दृष्ट या युत रहे तो जातक दीर्घजीवी और निरोग होता है ॥ ५३ ॥

मृत्यु विचार—

रन्ध्रेशे रिपुरन्ध्ररिःफगृहगे तत्पाकभुक्तौ मृतिं
मन्दाक्रान्तगृहेशपाकसमये रन्ध्रेशभुक्तौ तथा ।
पाके रन्ध्रगृहाधिपस्य तदनुक्रान्तस्य भुक्तौ तु वा
खेटानां बलदुर्बलेन सकलं संचिन्त्य यत्तद्वदेत् ॥ ५४ ॥

संस्कृत — रन्ध्रेश इति। अष्टमेशौ रिपुरन्ध्ररिष्फगृहगे=षष्टाष्टमद्वादश भावगते अर्थात् त्रिके सति तदा तत्पाकभुक्तौ=अष्टमेशस्य दशान्तर्दशाकाले मृतिं= जातस्य मरणं भवेत्। मन्दाक्रान्तगृहेशपाकसमये=जन्मकालिक शनि यत्रस्थितो राशौ भवेत्तद्राशीश ग्रहस्य दशायाम्, रन्ध्रेशभुक्तौ=अष्टमेशस्य दशान्तर्दशाकाले, तथा=जातस्य मृतिं भवेदिति अथवा रन्ध्रगृहाधिपस्य=अष्टमेशस्य, पाके=दशायाम्, तदनुक्रान्तस्य=अष्टमभावगतेः ग्रहस्य, भुक्तौ=अन्तर्दशाकाले जातस्य मृतिं भवेत्। उपरोक्तयोगत्रये खेटानां=मरणयोगकारकग्रहाणां बलदुर्बलत्वेन सकलं साञ्चिन्त्य= विचार्य, यत्=यद्ग्रहदशायां सम्भवः भवेत्तद्ग्रहदशान्तर्दशायां तन्मरणं भवेदिति ॥ ५४ ॥

हिन्दी — यदि अष्टमेश-षष्ठ-अष्टम या द्वादश भाव में हो तो उसकी दशा में जातक की मृत्यु होती है। शनि जिसराशि में हो उसराशि के स्वामी की दशा व अष्टमेश की अन्तर्दशा में मृत्यु होती है अथवा अष्टमेश की दशा और अष्टमस्थ ग्रह की

अन्तर्दशा में मृत्यु होती है। इन योगों में ग्रहों के बलाबल से सम्यक् विचारकर फल कहना चाहिए॥५४॥

लग्नेशे निधनारिरिःफगृहगे साहौ सकेतौ तु वा
होरारन्ध्रपसंयुतग्रहदशा जातस्य मृत्युप्रदा।
तत्खेटान्वितराशिनायकदशा नाशप्रदा देहिनां
खेटानां प्रथमागतस्य फणिनः पाकापहारे क्रमात्॥५५॥

संस्कृत — लग्नेश इति। साहौ=राहुग्रहेण सहिते, वा सकेतौ=केतुसहिते लग्नेशे निधनारिरिष्फगृहगे=अष्टम-षष्ठ-व्यय (त्रिक) स्थानगते सति तदा होरा-रन्ध्रपसंयुतग्रहदशा=लग्नेश-अष्टमेशेन युतस्य ग्रहस्य दशा जातस्य मृत्युप्रदा=मृत्यु-कारका भवति। लग्नेशेनाष्टमेशेन वा न कश्चिद् ग्रहो यदि संयुतो स्यात्तदा तत्खेटान्वित-राशिनायकदशा=तेन खेटेन युतो यो राशिरर्थाल्लग्नेशाष्टमेशयुतौ ग्रहौ यस्मिन् राशौ भवेत् तन्नायकस्य दशायां देहिनां मरणमित्याह। योगकर्तृकग्रहाणां प्रथमागतस्य=पूर्व प्राप्तस्य फणिनः=राहोःपाकापहारे=भुक्तौ मरणम्। अर्थात् अष्टमेश वा अष्टमस्थ ग्रहस्य दशायां राहु वा केतु अन्तर्दशार्मृत्युकर्त्री भवति॥५५॥

हिन्दी — लग्न का स्वामी अष्टम-षष्ठ या द्वादशभाव में हो अथवा राहु या केतु के साथ हो तो लग्नेश व अष्टमेश से युत ग्रह की दशा मृत्युदायक होती है। यदि लग्नेश या अष्टमेश के साथ कोई अन्य ग्रह न हो तो उससे युक्तराशि के स्वामी की दशा जातक को नष्ट करने वाली होतो है। उपरोक्त ग्रहों में राहु की अन्तर्दशा में विशेषकर मृत्यु कहना चाहिए॥५५॥

व्यापाररन्ध्रतनुनाथशनैश्चराणां
मध्ये विन्धुतुदयुतो विबलग्रहो यः।
तत्पाकभुक्तिसमये मरणं नराणां
तद्युक्तवीक्षकनभोगदशान्तरे वा॥५६॥

संस्कृत — व्यापारेति। दशमेशाष्टमेशलग्नेशशनैश्चराणां एतेषां ग्रहाणां मध्ये यो ग्रहो विबलो=निर्बलो विधुन्तुदयुतः राहुग्रहयुतो भवेत् तस्य पाकभुक्तिसमये, अथवा तद्युक्तस्य तद्वीक्षकस्य वा दशान्तरे नराणां मरणं भवेदिति बोध्यम्॥५६॥

हिन्दी — दशमेश-अष्टमेश-लग्नेश और शनि में जो राहु से युत और बलरहित हो उस ग्रह की दशा में मनुष्यों का मरण होता है। अथवा उससे युत या उसको देखने वाले ग्रह की अन्तर्दशा मृत्युकारक होती है॥५६॥

नाशे नाशपतौ तु तद्ग्रहदशाभुक्तौ समेत्यामयं
लग्ने लग्नपतौ तु लग्नपदशाभुक्तौ शरीरार्तिभाक्।

पश्चादामयनाशनं तनुसुखं मोदश्च संजायते
रन्ध्रेशे बलसंयुते तनुपतेर्दाये मृतिर्देहिनाम् ॥ ५७ ॥

संस्कृत — नाशे इति। नाशपतौ=अष्टमेशे, नाशे=अष्टमगते तु तद्-ग्रहदशाभुक्तौ=अष्टमेशस्य दशान्तर्दशाकाले जातः आमयं=व्याधिं समेति=प्राप्नोति, लग्नपतौ लग्ने स्थिते तु जातः लग्नपदशाभुक्तौ=लग्नेशस्य दशान्तर्दशासमये, शरीरार्ति-भाक्=शरीररुग्णो भवेत्। अत्र लग्नेशाष्टमेशयोर्मध्ये रन्ध्रेशे=अष्टमेशे, बलसंयुते= बलीयसि सति तदा पश्चात् आमयनाशनं=व्याधिमुक्तिः, तनुसुखम्= शरीरसुखम्, मोदश्च=हर्षश्च सञ्जायते तथा तनुपतेः=लग्नेशस्य दाये=दशायाम्, देहिनां मृतिः भवेदिति ॥ ५७ ॥

हिन्दी — यदि अष्टमेश अष्टम में हो तो उसकी दशा अन्तर्दशा में रोग होता है। लग्न में लग्नेश हो तो उसकी दशा में पहले शरीर में रोग होता है, बाद में रोग का नाश होता है और शरीर सुख, हर्ष आदि प्राप्त होता है। यदि अष्टमेश बलवान हो तो लग्नेश की दशा-अन्तर्दशा में मनुष्यों की मृत्यु होती है ॥ ५७ ॥

जातस्य जन्मसमये विबले विलग्ने
लग्नेशरन्ध्रपतिपाकमतीव कष्टम् ।
पश्चादतीव सुखमेति विलग्ननाथे
वीर्यान्विते निधनपस्य मृतिं दशायाम् ॥ ५८ ॥

संस्कृत — जातस्येति। जन्मसमये विलग्ने विबले=बलहीने सति तदा लग्नेशरन्ध्रपत्योःपाकं (दशा) जातस्यातीव कष्टं=दुखकरं भवति। यदि विलग्ननाथे लग्नेशे वीर्यान्विते=पूर्णबलसहिते सति तदा पश्चात्=तदनन्तरमतीव सुखं प्राप्नोति। तथा निधनपस्य=अष्टमेशे दशायाम् मृतिः भवेदिति ॥ ५८ ॥

हिन्दी — जन्मसमय में लग्न यदि निर्बल हो तो लग्नेश और अष्टमेश की दशा जातक के लिए विशेष कष्टकारक होती है। यदि लग्नेश बलवान हो तो बाद में सुख प्राप्त होता है। अष्टमेश की दशा मृत्युकारक होती है ॥ ५८ ॥

देहेशे च विनाशपे बलयुते केन्द्रत्रिकोणस्थिते
तद्युक्तग्रहपाकभुक्तिसमये रोगापवादः फलम् ।
रन्ध्रेशस्तनुपश्च खेचरयुतौ केन्द्रत्रिकोणस्थितौ
रन्ध्रस्थानगतस्य पाकसमये मृत्युं समेति ध्रुवम् ॥ ५९ ॥

संस्कृत — देहेशे इति। देहेशे=लग्नेशे, च=अथवा विनाशपे=अष्टमेशे बलयुते केन्द्रे त्रिकोणे च सति तदा तद्युक्तग्रहपाकभुक्तिसमये=तादृक्भूतेन लग्नेशाष्टमेशेन युक्तस्य ग्रहस्य पाकसमये रोगापवादः=कष्टव्याधिभयम् फलं प्राप्नोति।

रन्ध्रेशः=अष्टमेशः, तनुपः=लग्नेशश्चैतौ, खेचरयुतौ=येन केनचिद् ग्रहेण युक्तौ तथा केन्द्रत्रिकोणस्थितौ च भवेतां तदा रन्ध्रस्थानगतस्य=अष्टमभावगतस्य ग्रहस्य पाके (दशायां) ध्रुवम्=अवश्यमेव जातो मृत्युं समेति=प्राप्नोति ॥ ५९ ॥

हिन्दी — यदि लग्नेश और अष्टमेश बलवान् तथा केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हों तो उनसे युक्त ग्रह की दशा में जातक को रोग और अपवाद होता है। अष्टमेश और लग्नेश दोनों ही यदि किसी भी ग्रह से युक्त होकर केन्द्र-त्रिकोण में रहें तो अष्टमभाव में स्थितग्रह की दशा में जातक की निश्चय ही मृत्यु होती है ॥ ५९ ॥

नो चेदष्टमखेचरो यदि तनुप्राप्तेन संचिन्तये-
न्मन्दे लग्नगतेऽथवाऽष्टमगते तत्पाकभुक्तौ मृतिः ।
रन्ध्रेशोदयनायकौ सखचरौ युक्तग्रहो दुर्बलो
यस्तस्य द्युचरस्य पाकसमये भुक्तौ च मृत्युं वदेत् ॥ ६० ॥

संस्कृत — नो चेदिति। पूर्वोक्तंयत् (५९ श्लोके) 'रन्ध्रस्थानगतस्य पाकसमये मृत्युं समेति ध्रुवम्' इति वचनात् रन्ध्रे यदि ग्रहाभावे सति तदा तनुप्राप्तेन=लग्नगतेन ग्रहेणार्थाल्लग्नस्थग्रहस्य पाक (दशा) समये मृत्युं सञ्चिन्त्येदिति भावः। मन्दे=शनैश्चरे लग्नगते, अथवा अष्टमगते तदा तत्पाकभुक्तौ=अर्थात् शनि-दशान्तर्दशायाम् जातस्य मृतिः=मरणं भवेत्। रन्ध्रेशोदयनायकौ=अष्टमेशलग्नेशौ सखचरौ=येनकेनचित्ग्रहेण सहितौ तदा तत्र यो दुर्बलोग्रहोयुक्तस्तस्य पाकसमये (दशायां) तस्यैव भुक्तौ च जातस्य मृत्युं भवेदिति ॥ ६० ॥

हिन्दी — पूर्वोक्त योगों में यदि ८वें भाव में कोई ग्रह न हो तो लग्नगत ग्रह से विचार करना चाहिए। लग्न में या अष्टम में शनि हो तो उसकी दशाभुक्ति में मृत्यु होती है। अष्टमेश और लग्नेश जिसग्रह के साथ हों वह निर्बल हो तो उसग्रह की दशा और भुक्ति (अन्तर्दशा) में मरण कहना चाहिए ॥ ६० ॥

लग्नात्पञ्चमराशिपेन सहितव्योमाटनानां दशा-
संख्या भानुहृतावशेषगृहगे मृत्युं दिनेशे सति ।
पुत्रेशो न वियच्चरेण सहितःस्वाब्देन संचिन्तये-
ल्लग्नेशेन युताब्दमङ्गविहृतं संक्रान्तिपूर्वं दिनम् ॥ ६१ ॥

संस्कृत — लग्नात्=जन्मलग्नाद् पञ्चमराशिपेन=पञ्चमभावेशेन सहितानां व्योमाटनानां=खेचराणां, दशासंख्याभानुहृतावशेषगृहगे=दशासंख्यामानानि द्वादश-भिर्विभज्य शेषसंख्या तुल्य राशौ गतवति दिनेशे=सूर्ये सति तदा जातस्य मृत्युं भवेत्। पुत्रेशो=पञ्चमेशो न केनापि वियच्चरेण=ग्रहेण सहितो चेत्तदा स्वाब्देन=स्वदशासंख्यावर्षेण मृत्युं सञ्चिन्तयेत्। पञ्चमेशे यदि ग्रहयोगविरहिते सति तदानीं पञ्चमेशस्यैव दशामानं द्वादश भिर्विहृत्य लब्धमिते राशौ गतवति सूर्ये तदा जातस्य

मरणमिति ज्ञेयम्। लग्नेशग्रहेण युताब्दं=सहितग्रहदशामानं (ग्रहयोगाभावे लग्नेश-वर्षमिति) अङ्गविहृतं=त्रिशद्भक्तं (क-ट-प-य-रित्यादिना अङ्ग=३०) शेषतुल्यं संक्रान्तिपूर्वं=सूर्यस्य राशिसंक्रमणमारभ्य दिनं वाच्यमर्थात्तद्राशौ तद्दिने जातस्य मरणम् भवेदिति॥ ६१॥

हिन्दी — लग्न से पञ्चमभाव का जो अधिपति हो उससे युक्त ग्रहों के दशा वर्ष को जोड़कर उस संख्या में १२ से भाग देने पर जो शेष हो उस संख्यक राशि में जब सूर्य जाये तो मृत्यु हो। पञ्चमेश यदि किसी भी ग्रह से युक्त न हो तो केवल अपने वर्ष (पंचमेश दशावर्ष) से ही विचार करें। लग्नेश से संयुक्त ग्रह के दशावर्ष में ३० का भाग देने पर जो हो उतने ही दिन सूर्यसंक्रान्ति से मृत्युकाल तक के होते हैं॥ ६१॥

त्रिकोणे केन्द्रे वा यदि पितृतनुक्षेत्रपतयो
दशाभुक्तौ तेषामनुमरणमाहुर्मुनिगणाः।
सभौमे मन्दाढ्ये फणियुजि तु वेन्दौ निधनगे
त्वपस्मारस्तस्मान्मरणमथवेन्दौ कृशतनौ॥ ६२॥

संस्कृत — त्रिकोण इति। पितृतनुक्षेत्रपतयः पितृ=नवमभावेशः, लग्नेशः, क्षेत्रपतिः=चतुर्थेशः इति त्रयो ग्रहा यदि त्रिकोणे वा केन्द्रे १।४।७।१० स्यात्तदा तेषां मध्ये बलीयसो ग्रहस्य दशाभुक्तौ तेषामनुमरणं=मातृ-पितृ सहैव मरणं मुनिगणाः=सिद्ध महर्षयः आहुः। यथा सर्वार्थचिन्तामणौ (९/३४)—

सुखेश-भाग्येश-विलग्ननाथास्त्रिकोणगाः केन्द्रगताश्च सर्वे।
भुक्तौ यदा तत्परिपाककाले पित्रा सहैवानुमृतिश्च मातुः॥

सभौमे=मङ्गलसहिते वा मन्दाढ्ये=शनियुक्ते, वा फणियुजि=राहुसहिते इन्दौ=चन्द्रे, निधनगे=अष्टमभावगते तदा तु अपस्मारः=मृगी रोगयुक्तः स्यात्। अथवा कृशतनौ=नष्टबले इन्दौ=चन्द्रे पूर्वोक्तलक्षणे सति तस्यापस्मारान्मरणं भवेदिति। यथा सर्वार्थचिन्तामणौ(९/३५-३६)—

रन्ध्रे शशाङ्के फणिनाथयुक्ते हीने त्वपस्मारयुतः समन्दे।
तत्र स्थिते हीनबले शशाङ्के पिचाशपीडा जलजा च पीडा॥
भौमाहिमन्दान्यतमेन युक्ते क्षीणे शशाङ्के निधनस्थितेऽपि।
दुःस्थे त्वपस्मारभयान्मृतिः स्यात् पिचाशपीडा त्वथवा मृतिः स्यात्॥ ६२॥

हिन्दी — यदि नवमेश-लग्नेश और चतुर्थेश त्रिकोण या केन्द्रस्थान में स्थित हों तो उनमें बली ग्रह की दशाभुक्ति में मुनिगणों ने माता-पिता का मरण कहा है। चन्द्रमा यदि मङ्गल-शनि या राहु के साथ अष्टमभाव में स्थित हो या निर्बल हो तो जातक की ''मिरगी'' रोग से मृत्यु होती है॥ ६२॥

चन्द्रे वित्तगतेऽथवा निधनगे जातो बहुस्वेदवान्
कर्मस्थानगते कुजे बुधयुते दुर्गन्धदेहो भवेत् ।
पापे रन्ध्रगते तु पापसहिते रोगप्रमादाकरः
सौम्यव्योमगृहेऽतिशोभनयुते जातः समोदः सुखी ॥ ६३ ॥

संस्कृत — स्पष्टभावार्थयुक्तः ॥ ६३ ॥

हिन्दी — यदि चन्द्रमा द्वितीय अथवा अष्टमभाव में स्थित हो तो जातक बहुत स्वेद (पसीना) वाला होता है। दशमभाव में मङ्गल यदि बुध से युक्त हो तो दुर्गन्ध युक्त देह होता है। अष्टम में पापग्रह यदि अन्य पापयुक्त हो तो जातक बहुत रोगयुक्त और प्रमादी होता है। बुध दशमभाव में हो और अत्यन्त शुभग्रह से यदि युक्त हो तो जातक हर्षयुत तथा अत्यन्त सुखी होता है ॥ ६३ ॥

शीर्षोदयेषु चरभादिषु वित्तपस्य
लग्नाधिपस्य भुजगस्य दशापहारे ।
पृष्ठोदये सति तदीयदृगाणपस्य
तद्वीक्षितादिसहितस्य मृतिं वदेद्वा ॥ ६४ ॥

संस्कृत — शीर्षोदयेष्विति। शीर्षोदय राशिषु (मि.सिं.क.तु.वृ.कुं.) लग्नगतेषु चरभादिषु=चरस्थिरद्विस्वभाव राशिषु क्रमेण वित्तपस्य=धनेशस्य, लग्नाधिपस्य=लग्नेशस्य, भुजगस्य=राहोःदशापहारे मृतिं भवेत्। अर्थात् शीर्षोदय राशिनां मध्ये तुला (चरराशि) लग्ने द्वितीयेशस्य दशापहारे, सिंह-वृश्चिक-कुम्भ (स्थिर राशि) लग्ने लग्नेशस्य दशापहारे, मिथुन-कन्ययो (द्विस्वभाव राशि) लग्ने राहोर्दशापहारे जातस्य मरणं भवेदितिभावः। पृष्ठोदये=वृष-कर्क-मेष-धनुः-मकर (१।१४) राशिलग्ने सति तदीयदृगाणपस्य=लग्नगतद्रेष्काणपतेः, तद्वीक्षितादि-सहितस्य=लग्नस्थद्रेष्काणपतिद्रष्टुः तत्सहितस्य वा दशापहारे (दशाकाले) जातस्य मृतिं वदेत्। अत्रापि पूर्वविधिना त्रैविध्यमर्थात् चरादिराशि (मेष-कर्क-मकर) लग्ने लग्नद्रेष्काणपतेर्दशापहारे, वृषराशि (स्थिर) लग्नेलग्नद्रेष्काणपति-द्रष्टुर्दशापहारे, धनुराशि (द्विस्वभाव) लग्ने-लग्नद्रेष्काणपतिंना सहितस्य दशापहारे जातस्य मरणं ज्ञेयम् ॥ ६४ ॥

हिन्दी — जन्मलग्न यदि शीर्षोदयराशि में हो तो शीर्षोदयराशि के चरराशि में धनेश की, स्थिर में लग्नेश की और द्विस्वभाव में राहु की दशा में, पृष्ठोदय राशि लग्न हो तो पृष्ठोदय चर राशि में उसके द्रेष्काणपति के, स्थिर में उसके देखने वाले तथा द्विस्वभाव में उससे युक्त ग्रह की दशा में मृत्यु होती है ॥ ६४ ॥

नवमभावफल—

भाग्यप्रभावगुरुधर्मतपःशुभानि
संचिन्तयेन्नवमदेवपुरोहिताभ्याम् ।
भाग्येशदेवसचिवौ शुभवर्गयातौ
भाग्ये शुभग्रहयुते समुपैति भाग्यम् ॥ ६५ ॥

संस्कृत — भाग्येति। नवमदेवपुरोहिताभ्याम्=लग्नस्थानात् नवमभावत: गुरो अपि च सकाशात् भाग्यम्=दैवम्, प्रभाव: सामर्थ्यम्, गुरू:=शिक्षको दीक्षा-गुरूश्च, धर्म:, तप:, शुभम्=शुभकार्याणि एतानि विषयानि सञ्चिन्तयेत्=विचारयेत्। एतेषां विचारो नवमभाववृहस्पतिभ्यां च कर्त्तव्या। भाग्येशदेवसचिवौ=नवमेशो बृहस्पतिश्च शुभवर्गयातौ शुभग्रहस्य षडवर्गगतौ भाग्ये=नवमे शुभग्रहयुते तदा जातो नर: भाग्यं=सदभ्युदयं, समुपैति=प्राप्नोति। अर्थात् जातो भाग्यशाली भवेदित्यर्थ ॥ ६५ ॥

हिन्दी — नवमभाव और बृहस्पति से भाग्य-प्रभाव-गुरु-धर्म-तपश्चर्या और शुभ-अशुभ का विचार किया जाता है। नवमेश और बृहस्पति यदि शुभवर्ग में हो तथा भाग्य (नवम) भाव शुभग्रह से युक्त हो तो जातक भाग्यशाली होता है ॥ ६५ ॥

पापारिनीचरविलुप्तकरा नभोगा
भाग्यस्थिता यदि यशोधनधर्महीना: ।
पापोऽपि तुङ्गनिजमित्रगृहोपगश्चेद्
भाग्ये तु भाग्यफलदः सततं नराणाम् ॥ ६६ ॥

संस्कृत — पापारीति। पापा=पापग्रहा: वा शत्रुगृहस्था वा नीचराशिगता: वा सूर्येण सहास्तङ्गता नभोगा:=ग्रहा: यदि, भाग्यस्थिता:=नवमभावगता: स्युस्तदा जातो नर: यशोधनधर्महीना: भवति। यदि पापोऽपि=पापग्रहोऽपि तुङ्गगत: (स्वोच्चराशिगत:), निजराशिगत: मित्रराशिगत: सन् चेद् भाग्ये=नवमे स्थितो भवेत्तदा तु नराणां सततं भाग्यफलद:=भाग्योदयकृदेव भवेत्। पापो अथवा शुभो कश्चिद्ग्रह यदि उच्च-स्व-मित्रराशिगतो यद्भावस्थो भवेत्तद्भावपोषको एव भवतीति सर्वमान्य सिद्धान्त: ॥ ६६ ॥

हिन्दी — पापग्रह या नीचराशिस्थग्रह या अस्तङ्गतग्रह यदि नवमभाव में रहें तो जातक यश-धर्म और धन से विहीन होता है। पापग्रह यदि उच्च में या मित्रगृह में होकर नवमभाव में रहें तो जातक निरन्तर भाग्यशाली रहता है ॥ ६६ ॥

सौम्यस्वामियुतेक्षितं नवमभं भाग्यप्रदं प्रणिनां
तद्राशीशसमेतराशिरमणो भाग्यस्य कर्त्ता भवेत् ।

भाग्येशः परिपाचको भवति तत्पुत्रेश्वरो बोधक-
स्तुङ्गस्वर्क्षगृहोपगो यदि चिरं भाग्यं प्रकुर्वन्ति ते ॥ ६७॥

संस्कृत — सौम्यस्वामीति। नवमभम्=भाग्यभवनम्, सौम्येन=शुभग्रहेण, स्वामिना=स्वपतिना नवमाधिपेन, युक्तमीक्षितं=युक्तं दृष्टं वा भवेत्तदा प्राणिनां=देहिनां भाग्यप्रदम्=वृद्धिकारकं भवेदिति। तद्राशीशः=नवमभाव-राशिशः, समेतः=यस्मिंन् राशौ स्थितः तद्राशिरमणः=राशिपतिः अर्थात् नवमे-शाधिष्ठितराशिपतिर्ग्रह इति भावार्थः, स ग्रह एव भाग्यस्य कर्त्ता भवेत्। भाग्येशो परिपाचको भवति। अर्थाद्भाग्येशग्रहस्य दशायां भाग्योदयसम्भवः। तत्पुत्रेश्वरः= नवमस्थानात्पञ्चमभावऽर्थाल्लग्नेशः, बोधकः=भाग्यबोधको भवति। पूर्वोक्ताः भाग्येश-भाग्येशाधिष्ठितराशीश-भाग्यगतग्रहः-लग्नेशाः यदि तुङ्गस्वर्क्ष=स्वोच्चराशि स्वगृहराशिगताः स्युस्तदा ते चिरं=यावज्जीवनं भाग्यं प्रकुर्वन्ति ॥ ६७॥

हिन्दी — भाग्यभाव यदि अपने स्वामी या शुभग्रह से युत या दृष्ट रहे तो वह जातक का भाग्यवर्धन करता है। भाग्येश जिसराशि में रहे उसका स्वामी भी भाग्यवर्द्धक होता है। भाग्येश ग्रह भाग्य का परिपाचक और भाग्य स्थान से पञ्चमेश (लग्नेश) भाग्यबोधक होता है। ये सब ग्रह भी यदि अपने अपने उच्च या स्वगृह की राशि में रहें तो जातक को सर्वदा भाग्यवान् और सुखी बनाते हैं ॥ ६७॥

भाग्यस्थे दशवर्गजोच्चभवनस्वांशस्थिते पञ्चके
भाग्यं श्रीविपुलं समेति नृपतिस्तत्स्वामियुक्तेक्षिते।
चत्वारो बलशालिनो नवमंगा भाग्यं प्रयच्छन्ति ते
तुङ्गस्वांशगताः स्वदेशविभवं त्वन्यत्र चान्यांशगाः ॥ ६८॥

संस्कृत — भाग्यस्थे इति। दशवर्गजो अर्थात् वैशेषिकांशे, उच्चे=उच्च-राशौ स्वभवने=स्वगृहे स्वांशे=स्वनवांशे च स्थिते पञ्चके=ग्रहाणां पञ्चके (पञ्च ग्रहे) भाग्यस्थे=नवमगते अथवा तत्स्वामीयुक्ते=नवमेशेन युक्ते दृष्टे सति तदा जातो नृपतिः भवेत्, तथा श्रीविपुलं=विविध धनधान्य सहितं, भाग्यं समेति= प्राप्नोति। यदि चेच्चत्वारोबलशालिनः ग्रहास्तुङ्गस्वांशगताः सन्तो नवमगा भवेयुस्तदा ते भाग्यं, स्वदेशविभवं=स्वदेशस्थित धनसम्पत्तिं प्रयच्छन्ति=ददन्ति। ते चेदन्यांशगाः=परनवांशगताः स्युस्तदाऽन्यत्रभवं=विदेश विभवं प्रयच्छन्तीति ॥ ६८॥

हिन्दी — स्व वैशेषिकांश में-उच्चराशि में-स्वगृह में-स्वनवांश में स्थित पाँच ग्रह यदि नवमभाव में स्थित हों और उनपर नवमेश की दृष्टि हो या नवमेश से योग हो तो जातक राजा तथा विविध सम्पत्ति से युक्त भाग्यवान् व्यक्ति होता है। यदि चारग्रह बली और अपने उच्च व नवांश में स्थित होकर भाग्यभाव में रहें तो भाग्य तथा

स्वदेश में जातक को सम्पत्ति प्रदान करते हैं। यदि दूसरे के नवांश में हों तो अन्यत्र सम्पत्ति देते हैं॥ ६८॥

नवमभावगत गुरु पर दृष्टि का फल—

भाग्ये तत्पतिशोभनेक्षितयुते भाग्ये समेति ध्रुवं
धर्मे पापयुते भृगौ शशिनि वा जातो गुरुस्त्रीरतः।
दृष्टेऽर्केण गुरौ नृपः क्षितिभुवां मन्त्री बुधेनार्थवान्
शुक्रेणाश्वपतिः सुखी तु शशिना मन्देन चोष्ट्रादिभाक् ॥ ६९ ॥

संस्कृत — भाग्ये इति। भाग्ये=नवमे तत्पतिना=नवमेशेन, वा शोभनेन=शुभग्रहेण ईक्षिते वा युते तदा जातो नरः ध्रुवं=निश्चयेन, भाग्यं समेति=भाग्यशाली भवति। पापग्रहेण युते भृगौ=शुक्रे, वा शशिनि=चन्द्रे, धर्मे=नवमे गते तदा जातो नरो गुरुस्त्रीरतः=गुरूपत्न्यामासक्तो भवेत्। यथा जातकरत्ने—

चन्द्रे सपापे यदि धर्मराशौ भृगोः सुते वा गुरुदारगामी।
धर्माधिपस्यांशपतौ तथैव युक्ते तथा तादृशदारगामी॥

गुरौ=बृहस्पतौ, अर्केण=सूर्येण दृष्टे तदा जातो नरो नृपो भवेत्। क्षितिभुवा=भौमेन दृष्टे गुरौ तदा जातो मन्त्री=सचिवः, बुधेन दृष्टे गुरौ जातोऽर्थवान्, शुक्रेण दृष्टे गुरौ जातोऽश्वपतिः=तुरङ्गधनो, शशिना=चन्द्रेण दृष्टे गुरौ सुखी, मन्देन=शनिना दृष्टे गुरौ तदा जातः उष्ट्रादिभाक्=उष्ट्रादि चतुष्पदयुक्तो भवेदिति॥ ६९॥

हिन्दी — यदि नवमभाव अपने स्वामी या शुभग्रह से युत या दृष्ट हो तो वह जातक निश्चय ही भाग्यशाली होता है। पापग्रह के साथ शुक्र या चन्द्र यदि नवमभाव में हो तो जातक अपने गुरु की स्त्री में आसक्त रहता है। नवम भावगत गुरु यदि सूर्य से देखा जाता हो तो जातक राजा, मङ्गल देखे तो मन्त्री, बुध देखे तो धनवान, शुक्र देखे तो अश्वपति, चन्द्र देखे तो सुखी तथा शनि देखे तो ऊँट आदि क्षुद्र चौपायों से युक्त होता है॥ ६९॥

विद्वान् वारणगोतुरङ्गधनवानिन्द्वर्कदृष्टे गुरौ
सेनावाहनरत्नवान्नवमगे जीवे कुजार्केक्षिते।
विद्यावादविनोदवित्तविपुलः सूर्येन्दुजालोकिते
शुक्रादित्यनिरीक्षिते विनयवाग् जीवे तपःस्थानगे ॥ ७० ॥
मन्दादित्यनिरीक्षिते गुणनिधिः प्राज्ञो बहुग्रामवान्
जीवे चन्द्रकुजेक्षिते पृथुयशाः सेनासुखश्रीयुतः।
तारेशेन्दुजवीक्षिते गृहसुखश्रेष्ठार्थशय्यासनः
शुक्रेन्दुप्रविलोकिते वितनयः शूरो धनी कर्मकृत् ॥ ७१ ॥

चन्द्रादित्यसुतेक्षिते तु गुणवान् वादी विदेशं गतो
जीवे शुक्रबुधेक्षिते नवमगे विद्याधिको जायते ।
सर्वव्योमचरेक्षिते नरवरो राजा बहुद्रव्यवान्
सौभाग्याचरराज्यवित्तफलदाः सर्वे तपःस्थानगाः ॥ ७२ ॥

संस्कृत — विद्वानिति। नवमगे जीवे यदि इन्द्वर्कदृष्टे=चन्द्रसूर्याभ्यामिक्षिते तदा जातः विद्वान् वारण=गजगोतुरङ्गधनवांश्च भवेत्। कुजार्केक्षिते=कुजार्काभ्यामीक्षिते नवमगे जीवे तदा जातः सेनावाहनरत्नवान् भवेत्। अग्रे स्पष्टम् ॥ ७०-७२ ॥

हिन्दी — नवमभावगत बृहस्पति को यदि चन्द्र और सूर्य देखें तो जातक विद्वान तथा हाथी-गौ-घोड़े सहित अन्य सम्पत्तियों से युक्त होता है। भौम और सूर्य देखें तो सेना-वाहन और रत्न से युक्त, सूर्य और बुध देखें तो विद्या की चर्चा में आनन्दित व अत्यन्त धनी, शुक्र और सूर्य यदि नवमगत गुरु को देखें तो जातक अत्यन्त विनयी व मधुरभाषी होता है।

नवमभावगत बृहस्पति को यदि शनि और सूर्य देखें तो जातक अत्यन्त गुणी-विद्वान् व अनेक ग्राम का स्वामी, चन्द्र और भौम देखें तो बहुत बड़ा यशस्वी-सेना-सुख व सम्पत्ति से परिपूर्ण, चन्द्र और बुध देखें तो अनेक प्रकार के गृहसुख उत्तम धन व शय्यादि सुखों एवं भोजन से युक्त तथा शुक्र और चन्द्र देखें तो संतानहीन-पराक्रमी धनवान् व कर्मनिष्ठ होता है।

नवमभावस्थ बृहस्पति को यदि चन्द्र और शनि देखें तो जातक गुणी-विवादी व प्रवासी, बुध और शुक्र देखें तो उत्तम विद्वान् होता है। यदि सभी ग्रह देखें तो मनुष्यों में पूज्य और बहुत धनी राजा, सभी शुभग्रह यदि नवमभाव में रहें तो वे अचल राज्य और धन प्रदान करनेवाले होते हैं ॥ ७०-७२ ॥

नवमभावगत द्विग्रह फल—

भाग्यस्थे शशिनि प्रभाकरसुतज्ञारेक्षिते भूपति-
स्तुङ्गव्योमचरे तपःस्थलगते भूपः शुभालोकिते ।
सेन्दौ तिग्मकरे तु तत्र धनिको नेत्रापयार्त्तो भवेद्
दुःखी वादरतः कुजेन सहिते भानौ नृपालप्रियः ॥ ७३ ॥

संस्कृत — भाग्यस्थे इति। शशिनि=चन्द्रे भाग्यभावस्थे, तत्र प्रभाकरसुतज्ञारेक्षिते=शनिबुधभौमैः दृष्टे सति तदा जातो नरः भूपतिः=नृपति भवेत्। तुङ्गव्योमचरे=उच्चराशिस्थिते ग्रहे तपःस्थलगते=नवमगते (शुभग्रहबोद्धव्यम्) तत्र शुभमालोकिते च तदा जातो नरो भूपः राजा स्यात्। सेन्दौ=चन्द्रसहिते तिग्मकरे=सूर्ये, (अमावास्यातिथौ) तत्र=नवमभावस्थे तु जातः धनिकः, नेत्रामयार्त्तः=नेत्र रोग-

पीडितश्च भवेत्। कुज सहित भानौ यदि नवमभावस्थे जातो तदा जातः दुःखी, वादरतः=विवादप्रियः, नृपाल=राजप्रियश्च भवेदिति ॥ ७३ ॥

हिन्दी — नवमभाव में स्थित चन्द्र को यदि शनि-बुध और भौम देखते हों तो जातक राजा होता है। उच्चराशि में स्थित ग्रह यदि नवमभाव में हो और उसे शुभग्रह देखते हों तो वह जातक राजा होता है। नवमभाव में यदि चन्द्र और सूर्य हों तो जातक धनी व चक्षुरोगी होता है। भौम के साथ सूर्य यदि भाग्यस्थान में रहे तो जातक दुःखी-विवादी और राजा का प्रिय पात्र होता है ॥ ७३ ॥

भानौ सेन्दुसुते सपत्नबहुलो दुःखी रुगार्तः सदा
वागीशेन युते पितृप्रियकरो जातः स्वयं वित्तवान् ।
रोगी शुक्रयुते रवौ शनियुते रुग्णः पिता कुक्षिरुक्
चन्द्रे सावनिनन्दने तु जननीहन्ता धनत्यागवान् ॥ ७४ ॥

संस्कृत —भानाविति। सेन्दुसुते=चन्द्रसुतेन (बुधेन) सहिते, भानौ=सूर्ये नवमे गतवति तदा जातः सपत्न (शत्रु) बहुलः-दुःखी-सदारूगार्त्तः=सर्वदा रोग व्याधिपीडितश्च भवेत्। वागीशेन=बृहस्पतिना युते भाग्यस्थे भानौ तदाजातः पितृप्रियकरः=स्वजनकस्याज्ञाकारी, स्वयं वित्तवान्=स्वबुद्धि-बाहुबलेन च धनी भवेत्। शुक्रयुते रवौ नवमे सति तदा जातो रोगी=रोगयुक्तो भवेत्। शनि युते रवौ यदि नवमभावस्थे तदा जातो रूग्णः=रोगयुक्तो, तस्य पिता च कुक्षिरूक्=उदरवातरोगयुक्तो भवेत्। चन्द्रे सावनिनन्दने=मंगलेन सहिते चन्द्रे नवमगते तदा तु जातो नरो जननीहन्ता=मातृवधकृत् धननाशकर्ताश्च भवेत् ॥ ७४ ॥

हिन्दी — सूर्य और बुध यदि नवमभाव में रहें तो जातक के बहुत से शत्रु होते हैं वह स्वयं सदा दुःखी और रोग से पीड़ित रहता है। सूर्य-गुरु के साथ नवम् भाव में हो तो जातक पिता का आज्ञाकारी और धनवान होता है। सूर्य शुक्र के साथ यदि भाग्यभाव में रहे तो जातक रोगी होता है। शनि से युक्त सूर्य यदि नवम में हो तो जातक रोगी होता है और उसका पिता उदरवातव्याधि से युक्त रहता है। यदि भौम व चन्द्र नवमभाव में रहें तो जातक माता का नाश करता है और धन का भी परित्याग करता है ॥ ७४ ॥

वाग्मी शास्त्रकलापवान् नवमगे चन्द्रे सतारासुते
सेन्दौ मन्त्रिणि धीरधीर्नरवरः श्रीमान् गुरुस्थानगे ।
तारेशे कुलटापतिः सभृगुजे सापत्नमातृप्रिय
श्चन्द्रे मन्दयुते विधर्मगुणवान् माता कुलप्रच्युता ॥ ७५ ॥

संस्कृत — वाग्मीति। सतारासुते=बुधेन सहिते चन्द्रे नवमगे=भाग्यभावस्थे सति तदा जातो नरः वाग्मी=वाक्पटुः, शास्त्रकलापवान्= विविध-

शास्त्रज्ञाता च भवेत्। सेन्दौ=चन्द्रसहिते, मन्त्रिणि=गुरौ, गुरूस्थानगे=नवमभावगे, तदा जातः श्रीमान् धीरधीः=गम्भीर प्रकृति, नरवरः=पुरूषश्रेष्ठश्च भवेत्। सभृगुजे=शुक्रेण सहिते, तारेशे=चन्द्रे नवमगे तदा जातः कुलटापतिः=पुंश्चली-भार्यास्वामी, सापत्नमातृप्रियः=विमातुः स्नेहपात्रश्च भवेत्। मन्दयुते=शनिसहिते चन्द्रे यदि नवमभावगते तदा जातो नरः विधर्मगुणवान् भवेत्, तस्य माता च कुलप्रच्युता=कुलाद् बहिर्गता भवेदिति ॥ ७५ ॥

हिन्दी — यदि चन्द्रमा बुध के साथ नवमभाव में रहे तो जातक बोलने में चतुर और अनेक शास्त्रों का जानकार होता है। चन्द्रमा और गुरु यदि नवमभाव में हों तो जातक धीरबुद्धियुक्त-पुरुषश्रेष्ठ व श्रीमान् होता है। नवमभाव में चन्द्र यदि शुक्र से युक्त हो तो वह जातक दुश्चरित्रा स्त्री का पति और सौतेली माता का प्रियपात्र होता है। नवमभाव में चन्द्र यदि शनि से युक्त हो तो जातक विधर्मी होता है और उसकी माता स्वकुल से बहिष्कृत होती है ॥ ७५ ॥

शास्त्री भोगसुखी कुजे बुधयुते सेज्ये धनी पूजितः
शुक्रेण द्विवधूपतिः सहकुजे वादी विदेशं गतः ।
भौमे भानुसुतान्विते नवमगे पापी परस्त्रीरतः
सौम्ये सामरवन्दिते पटुमतिर्विद्वान धनी पण्डितः ॥ ७६ ॥

संस्कृत — शास्त्रीति। बुधयुते, कुजे=भौमे नवमभावगे तदा जातः शास्त्री=शास्त्राध्ययनाध्यापनरतोभवेत्। सेज्ये=इज्येन=गुरूणा सहिते कुजे नवमभावगे तदा जातो नरो धनी, लोकैः पूजितः लोकप्रियश्च भवेत्। शुक्रेण सह कुजे नवमगे तदा जातो द्विवधूपतिः=द्विभार्यः, वादी=विवादी विदेशंगतश्च भवेत्। भानुसुतान्विते=शनि सहिते भौमे नवमभावगे तदा जातो पापी-परस्त्रीलोलुपश्च भवेत्। सामरवन्दिते=अमरवन्दितेन=गुरूणा सहिते, सौम्ये=बुधे नवमगे सति तदा जातः पटुमतिः=चतुरबुद्धिः-विद्वान्-धनी-पण्डितः च भवेदिति ॥ ७६ ॥

हिन्दी — नवमभाव में बुध से युक्त भौम हो तो जातक शास्त्र का ज्ञाता भोगी तथा सुखी होता है। बृहस्पति से युक्त भौम यदि नवमभाव में हो तो जातक धनवान् और पूज्य, मङ्गल यदि शुक्र से युक्त नवम में हो तो वह जातक दो स्त्रियों का पति, विवादी और प्रवासी होता है। नवमभाव में भौम यदि शनि से युक्त हो तो जातक पापी एवं परस्त्रीगामी होता है। नवम में बुध यदि गुरु के साथ हो तो जातक चतुरबुद्धि-विद्वान्-धनी और बुद्धिमान होता है ॥ ७६ ॥

प्राज्ञो गीतरतिप्रियः सभृगुजे चन्द्रात्मजे पण्डितः
सौम्ये मन्दयुते तु रोगतनुको वित्ताधिकोऽसत्यवाक् ।
जीवे शुक्रयुते चिरायुरधिकश्रीमान् समन्दे गुरौ
रोगी रत्नधनः सितेऽसितयुते भूपालतुल्यो भवेत् ॥ ७७ ॥

संस्कृत — प्राज्ञो इति। सभृगुजे=शुक्रेण सहिते, चन्द्रात्मजे=बुधे नवम भावगते तदा जातः पण्डितः भवेत्। मन्द (शनि) युते, सौम्ये=बुधे नवमगते तदा तु जातो रोगितनुकः=व्याधियुक्शरीरः, वित्ताधिकः=धनी, असत्यवाक्=मिथ्यावादी च भवेत्। शुक्रयुते जीवे=गुरौ नवमभावगते तदा जातः चिरायुः दीर्घजीवी, अधिक श्रीमान्=बहुल धनधान्ययुतश्च भवेत्। समन्दे=शनि सहिते गुरौ नवम भाव गते तदा जातो रोगी रत्नधनयुतश्च भवेत्। सिते=शुक्रे असितेन=शनिना सहिते नवमगते सति तदा जातो भूपालतुल्यो=राजा सदृशो भवेत्॥ ७७॥

हिन्दी — यदि नवमभाव में बुध के साथ शुक्र हो तो जातक बुद्धिमान्-गीतरतिप्रिय और पण्डित, बुध के साथ शनि नवमभाव में हो तो जातक रोगी-अधिक धनवान् और मिथ्यावादी, नवमभाव में बृहस्पति यदि शुक्र से युक्त हो तो जातक चिरायु और विशेष धनवान, नवमभाव में शनि के साथ गुरु हो तो जातक रोगी तथा रत्न आदि का धनी और नवमभाव में शुक्र यदि शनि से युक्त हो तो जातक राजा के सदृश वैभवयुक्त होता है॥ ७७॥

नवभावगत त्रिग्रहयोगफल—

रवीन्दुभौमा नवमोपयाता यदि क्षताङ्गः पितृमातृहीनः॥
हिंसीविकर्मा रविचन्द्रसौम्या रवीन्दुजीवाः सुखवाहनाढ्यः॥ ७८॥

संस्कृत — रवीन्दु इति। सूर्य-चन्द्र-भौमाः यदि नवमोपयाताः=भाग्यभावगता तदा जातः क्षताङ्गः=भङ्ग-शरीरः, पितृमातृहीनश्च भवेत्। रविचन्द्रसौम्याः=सूर्यचन्द्रबुधाः यदि नवमभावगाश्चेत्तदा जातो हिंसी=क्रूरकर्मकृत्, विकर्मा=स्वकुलाचारकर्महीनश्च भवेत्। रवीन्दुजीवा=सूर्य-चन्द्र-गुरु यदि नवमे भवेयुस्तदा जातो नरो सुखवाहनाढ्यो=सुख सम्पत्ति वाहनादि युतो भवतीति॥ ७८॥

हिन्दी — यदि नवमभाव में सूर्य-चन्द्र व मङ्गल हों तो जातक के शरीर में घाव होता है और वह माता पिता से विहीन होता है। नवमभाव में रवि-चन्द्र और बुध रहें तो जातक हिंसा कर्म करने वाला व कुलाचार से हीन होता है। नवम में रवि-चन्द्र और गुरु हों तो जातक सुखी व वाहन से परिपूर्ण होता है॥ ७८॥

चन्द्रार्कौ ससितौ वधूकलहकृद् राजप्रियो वित्तहा
भाग्यस्थौ रविशीतगू शनियुतौ भृत्यो विरोधी सताम्।
रव्यारौ सबुधौ तु तत्र सुभगः क्रुद्धो विवादप्रियः
सेज्यौ देवपितृप्रियः सुतवधूवित्तान्वितो जायते॥ ७९॥

संस्कृत — सितौ=शुक्रेण युतौ चन्द्रार्कौ यदि भाग्यस्थौ स्यातां तदा जातो नरो वधूकलहकृत्=स्त्रीभिः सह कलहकरो, राजप्रियो, वित्तहा=धननाशकारकश्च भवेत्। शनियुतौ रविशीतगू=सूर्य-चन्द्रौ यदि भाग्यस्थौ स्यातां तदा जातः

भृत्यः परेषां सेवकः सतां=सज्जनानां विरोधी च भवेत्। सबुधौ=बुधेन सहितौ रव्यारौ=सूर्यभौमो, तत्र=भाग्ये भवेतां तदा जातः सुभगः=दर्शनीयशरीरयुतो, क्रुद्धः, विवादप्रियश्च=कलहप्रियश्च भवेत्। सेज्यौ=गुरुणा सहितौ (रव्यारौ) सूर्य भौमौ भाग्यस्थानगतौ स्यातां तदा जातः देवपितृप्रियः=देव-पितरभक्तः, सुतवधूवित्तान्वितः=पुत्रस्त्रीधनैः युतश्च भवेदिति ॥ ७९ ॥

हिन्दी — यदि नवमभाव में सूर्य चन्द्र व शुक्र रहें तो जातक अपनी स्त्री से कलह करने वाला—राजा का प्रियपात्र और धन नाशकारक होता है। सूर्य-चन्द्र व शनि यदि नवमभाव में रहें तो जातक दूसरों का दास और सज्जनों का विरोधी होता है। यदि सूर्य-मङ्गल व बुध नवमभाव में हों तो जातक देखने में सुशोभन क्रोधी और कलहप्रिय होता है। सूर्य-मङ्गल व गुरु यदि नवमभाव में रहें तो जातक देवता और पितरों का प्रिय, पुत्र-स्त्री धन से परिपूर्ण होता है ॥ ७९ ॥

सूर्यारौ ससितौ विवादनिरतः कोपी वधूदूषक-
श्छायासूनुयुतौ विबन्धुरधनो साधुः पितुर्मारकः ।
धर्मस्थौ रविचन्द्रजौ गुरुयुतौ राजप्रियो वित्तवान्
साच्छौ राजसमःसभानुतनयौ पापी परस्त्रीपतिः ॥ ८० ॥

संस्कृत — ससितौ=शुक्रेण सहितौ सूर्यारौ=सूर्यभौमौ नवमभावगतौ स्यातां तदा जातो विवादनिरतः, कोपी, वधूदूषकः=परस्त्रीलोलुपः भवेत्। छायासूनुयुतौ=शनिना सहितौ सूर्यभौमौ नवमगतौ तदा जातो नरो विबन्धुः=बन्धुरहितः अधनो दरिद्रो, साधुः=सज्जनः पितुर्मारको (तस्य जातस्य पिता म्रियते) भवेत्। गुरूयुतौ रविचन्द्रजौ (सूर्यबुधगुरवः) धर्मस्थौ स्यातां तदा जातो नरो राजप्रियो वित्तवांश्च भवेत्। सात्=तदवत् शु=ससम्यन्ते शौ, योगे जाते साच्छौ=शुक्रेण सहितौ सूर्यबुधौ नवमगतौ तदा जातो नरो राजसमः=राजतुल्यो भवेत्। सभानुतनयो=शनिना सहितौ सूर्यबुधौ भाग्यभावे भवेतां तदा जातो नरो पापी=पापकर्मा परस्त्रीपतिः=परदाररतश्च स्यादिति ॥ ८० ॥

हिन्दी — सूर्य-मङ्गल व शुक्र यदि नवमभाव में रहें तो जातक विवादप्रिय-क्रोधी और स्त्रियों से व्यभिचार करनेवाला होता है। सूर्य-मङ्गल व शनि यदि नवम भाव में हो तो जातक बन्धुहीन-साधुस्वभाव का और पितृद्रोही होता है। सूर्य-बुध व वृहस्पति यदि नवमभाव में हों तो जातक राजा का प्रिय और धनी होता है। सूर्य-बुध और शुक्र यदि नवमभाव में हों तो जातक राजा के समान धन वैभव से युक्त होता है। सूर्य-बुध और शनि नवमभाव में हों तो जातक पापी व परस्त्रीगामी होता है ॥ ८० ॥

जीवार्कौ सितसंयुतौ परवधूसक्तो धनी पण्डितः
सार्की जीवदिवाकरौ यदि विटस्वामी तपःस्थानगौ ।

आदित्यासितभार्गवा नवमगा हीनो नृपैर्दण्डितो
बाल्ये तप्तमनाःसुखी च परतश्चन्द्रारशीतांशुजाः ॥ ८१ ॥

संस्कृत — जीवार्काविति। जीवार्कौ=गुरूसूर्यौ, सितेन=शुक्रेण संयुतौ भाग्यस्थानगतौ तदा जातः परवधूसक्तः=परदाररतः, धनी पण्डितश्च भवेत्। सार्की=शनिना सहितौ जीवदिवाकरौ=बृहस्पतिसूर्यौ, तपःस्थानगौ=भाग्यभावगतौ भवेतां तदा जातो नरः विटस्वामी=विटानां (धूर्तानां) स्वामी=धूर्तसम्राड् भवेदितिभावः। आदित्यासित-भार्गवाः=सूर्यशुक्रशनैश्चराः यदि भाग्यभावगता स्युस्तदा जातो नरो हीनो=गुणादिविरहितो नृपैः राजभिर्दण्डितश्च भवेत्। चन्द्रारशीतांशुजाः=चन्द्रकुजबुधा यदि भाग्यभावगताः स्युस्तदा जातो नरो बाल्ये=शैशवे, तप्तमनाः=क्षुब्धचित्तः परतः=तत्पश्चाच्च सुखी भवेदिति भावः ॥ ८१ ॥

हिन्दी — यदि भाग्यभाव में सूर्य-गुरु-शुक्र हों तो जातक परस्त्रीरत, धनी और पण्डित होता है। यदि सूर्य-गुरु-शनि हों तो धूर्तराज होता है। यदि सूर्य-शुक्र-शनि नवमभाव में हों तो जातक निर्गुण तथा राजा से दण्डित होता है। यदि चन्द्र-भौम व बुध नवमभाव में हों तो जातक बाल्यावस्था में दुःखी और उसके पश्चात् सुखी होता है ॥ ८१ ॥

देवाराधनतत्परो नवमगैश्चन्द्रारवागीश्वरै-
र्जातो नष्टकलत्रवान् क्षततनुः शुक्रेन्दुभूनन्दनैः ॥
क्षुद्रो मातृहरो महीपतिसमश्चन्द्रारसूर्यात्मजै-
राचार्यो धनवान् विभुश्च रजनीनाथज्ञदेवार्च्चितै ॥ ८२ ॥

संस्कृत — देवेत्यादि। चन्द्रारवागीश्वरैः=चन्द्रभौमगुरुभिः भाग्यस्थान गतैस्तदा जातः देवाराधनतत्परः=देवपूजननिरतो भवेत्। शुक्रेन्दुभूनन्दनैः=शुक्र-चन्द्र-भौमैः नवमभावगतैस्तदा जातः नष्टकलत्रवान्=विधुरः, क्षततनुः=व्याधित-गात्रश्च भवेत्। चन्द्रारसूर्यात्मजैः=चन्द्रकुजशनैश्चरैः=भाग्यभावगतैस्तदा जातः, क्षुद्रः =नीच, कृपणः, मातृहरः=जननीनाशकः, महीपतिसमः=अतिवैभवयुक्तश्च भवेत्। रजनीनाथज्ञदेवार्च्चितैः=चन्द्रबुधगुरूभिर्भाग्यभावगतैस्तदा जातः आचार्यः=शास्त्रज्ञः पूज्यश्च, धनवान्, विभुश्च=ऐश्वर्यशालीच भवेदिति ॥ ८२ ॥

हिन्दी — यदि चन्द्र-भौम-गुरु-नवमभाव में रहें तो जातक देवताओं की पूजा में रत रहता है। चन्द्र-भौम-शुक्र यदि नवम में हों तो जातक स्त्रीरहित तथा रोगी होता है। चन्द्र-भौम-शनि यदि नवम में हों तो जातक कृपण (कञ्जूस) और मातृहीन होता है। चन्द्र-बुध-गुरु यदि नवमभाव में रहें तो जातक पूज्यविद्वान्, धनी और ऐश्वर्यशाली होता है ॥ ८२ ॥

मातुः सपत्नीजनको विभुः स्यात्
चन्द्रज्ञशुक्रा नवमोपयाताः ।
पापी विवादप्रियबुद्धियुक्तो
जातः सुधारश्मिबुधार्कपुत्राः ॥ ८३ ॥

संस्कृत — मातुरिति। चन्द्रज्ञशुक्रा=चन्द्र-बुध-शुक्राः यदि नवमोपयाता=भाग्यभावगता भवेयुस्तदा जातः मातुः=स्वजनन्याः, सपत्नीजनकः=सापत्न्य (सौत) कारको, विभुः=ऐश्वर्ययुक्तश्च भवेत्। सुधारश्मिबुधार्कपुत्राः=चन्द्रबुधशनैश्चरा यदि भाग्यभावगताः भवेयुस्तदा जातः पापी=पापकर्मी, विवादप्रियबुद्धियुक्तः=विवादनिरतश्च भवेदिति ॥ ८३ ॥

हिन्दी — यदि चन्द्र-बुध व शुक्र नवमभाव में हों तो जातक वैभवशाली और अपनी माता के लिए सपत्नी (सौत) उत्पन्न करनेवाला होता है। चन्द्र-बुध व शनि यदि नवमभाव में हों तो जातक पापी और विवादप्रिय बुद्धियुक्त होता है ॥ ८३ ॥

चन्द्रामरेज्यौ समितौ महीपःसार्कात्मजौ सदगुणकर्मशीलः ।
मन्दज्ञशुक्रा नरपालतुल्यः कृषिक्रियावित्तपरो गुरुस्थाः ॥ ८४ ॥

संस्कृत — ससितौ=शुक्रसहितौ, चन्द्रामरेज्यौ=चन्द्र-बृहस्पति यदि नवम भावगतौ भवेतां तदा जातः महीपः=नृपति भवेत्। सार्कात्मजौ=शनिना सहितौ चन्द्रगुरू भाग्यभावगतौ चेत्तदा जातः सद्गुणकर्मशीलः=वेदकुल-वंशविहित-सत्कर्मकृद्भवेत्। मन्दज्ञशुक्राः=शनिबुधशुक्राः, गुरुस्थाः=भाग्यभावगताः भवेयुस्तदा जातः नरपालतुल्यः=नृपतिसमः, कृषिक्रियावित्तपरः=कृषिकार्येण धनोपार्जनं करोतीति भावः ॥ ८४ ॥

हिन्दी — यदि चन्द्र व बृहस्पति के साथ शुक्र नवमभाव में रहें तो राजा, और यदि शानि के साथ रहें तो सद्गुणीव कर्मशील होता है। नवमभाव में शनि-बुध व शुक्र रहें तो जातक राजा के समान वैभवयुक्त और कृषिकार्य द्वारा धनार्जन में तत्पर रहता है ॥ ८४ ॥

राज़ा प्रियो माण्डलिकः सजीवौ भाग्यस्थितौ भूसुतचन्द्रपुत्रौ ।
शास्त्री सशुक्रौ चपलश्च भीरुः सभानुजौ वादपरोऽसमर्थः ॥ ८५ ॥

संस्कृत — राजप्रिय इति। सजीवौ=बृहस्पतिना सहितौ भूसुतचन्द्रपुत्रौ=मङ्गलबुधौ यदि भाग्यस्थितौ=नवमभावगतौ तदा जातः राजप्रियः=नृपस्यमित्रः, माण्डलिकः=प्रमण्डलमण्डलशासकः भवेत्। सशुक्रौ=शुक्रसहितौ मंगलबुधौ भाग्यस्थौ यदि भवेताम् तदा जातः, शास्त्री=शास्त्रज्ञाता चपलः=चञ्चलप्रवृत्तियुक्तः भीरूः=भयभीतश्च भवेत्। सभानुजौ=शनिना सहितौ मंगलबुधौ नवमभावगतौ स्यातां तदा जातः वादपरः=विवादी, असमर्थः=कार्ये व्यापारे च अक्षमो भवेदिति ॥ ८५ ॥

हिन्दी -- गुरु के साथ भौम व बुध यदि नवमभाव में रहें तो वह राजा का प्रिय और प्रान्त का शासक होता है। शुक्र के साथ हो तो शास्त्रवेत्ता-चञ्चल-भीरु (डरपोक) और शनि के साथ हो तो विवाद में तत्पर तथा कार्यो में असमर्थ होता है ॥ ८५ ॥

ख्यातो विद्वान धर्मवाञ्जीवसौम्यौ
धर्मस्थाने दानवाचार्ययुक्तौ ॥
विद्यावाग्मी सासितौ धर्मयातौ
राजश्रीमान् जीवशुक्रज्ञचन्द्राः ॥ ८६ ॥

संस्कृते — जीवसौम्यौ=बृहस्पतिबुधौ, दानवाचार्येण=शुक्रेण युक्तौ= सहितौ धर्मस्थाने=भाग्यभावे भवेतां, तदा जातः ख्यातः अतिप्रसिद्धः, विद्वान् धर्मवांश्च=धार्मिकश्च भवेत्। सासितौ=शनैश्चरेण सहितौ बृहस्पतिबुधौ नवमभावगतौ स्याताम् तदा जातः विद्यावाग्मी=विविधविद्याविशारदो भवति। अत्र भाग्यभावे चतुर्ग्रहाणां योगफलमाह—जीवशुक्रज्ञचन्द्रा=गुरू-शुक्र-बुध-चन्द्राः यदि भाग्य-भावस्थिताः भवेयुस्तदा जातः राजश्रीमान्=राजलक्ष्मीवैभवयुतो भवेदिति ॥ ८६ ॥

हिन्दी — नवमभाव में शुक्र से युक्त बृहस्पति व बुध रहें तो जातक विख्यातविद्वान और धार्मिक होता है। यदि बुध-गुरु और शनि नवमभावस्थ हों तो जातक श्रेष्ठवक्ता होता है। गुरु-शुक्र-बुध और चन्द्र यदि नवमभाव में हों तो जातक श्रीमान् राजा होता है ॥ ८६ ॥

नवमभावगत चारग्रह युतिफल—

जातः साहसविक्रमार्जितधनः सूर्यारजीवार्कजैः
शूरः सर्वगुणप्रपञ्चरसिकः शुक्रारजीवेन्दुभिः ।
षट्पञ्चत्रिचतुर्वियच्चरयुते भाग्ये समेति श्रियं
राजत्वं सबुधे विबोधनगुरौ जातः समेत्यश्रियम् ॥ ८७ ॥

संस्कृत — जात इति। सूर्यारजीवार्कजैः=सूर्य-भौम-गुरू-शनैश्चरैः यदि भाग्ये=नवमे गतैस्तदा जातः साहसविक्रमार्जितधनः=उद्योगेन, स्वपराक्रमेण बाहु-बलेनोपार्जित धनधान्ययुक्तो भवेत्। शुक्रारजीवेन्दुभिः=शुक्रभौमगुरूचन्द्रैः नवम-भावस्थितैस्तदा जातः शूरः=साहसिकः, सर्वगुणप्रपञ्चरसिकः=अनेकविधविलासी च भवेदितिभावः। नवमे त्र्यादिग्रहयोगफलमाह—भाग्ये=नवमे षट्-पञ्च-त्रि-चतुर्वियच्चरैर्युते जातस्तदा जातो नरो श्रियं=ऐश्वर्यसम्पत्ति, समेति=प्राप्नोति। सबुधे= बुधयुक्ते त्र्यादिग्रहे नवमे गते तदा जातो नरो राजत्व समेति। नवमे त्र्यादिग्रहे विबोधनगुरौ अर्थात् विगतो बोधनो गुरूश्च=बुध-गुरू-रहिते अन्यग्रहाः यदि भाग्ये गते तदा अश्रियम्=अनैश्वर्य्यं समेति। बुधे वा गुरौ भाग्ये यदि गते तदा भाग्यवान्

भवतीति भावः। नवमेभावे त्र्यादिग्रहयोगे बुध गुरौ स्थितिवशात् फलकथने विशेषादिति चिन्त्यम्॥ ८७॥

हिन्दी — नवम भाव में सूर्य-भौम-गुरु व शनि हों तो जातक साहस और स्वपराक्रम से धन अर्जित करता है। शुक्र-भौम-गुरु व चन्द्र हों तो जातक वीर और सर्वगुण का रसिक होता है। छः, पाँच, तीन या चार ग्रह गुरू के साथ नवम में हों तो जातक राज प्राप्त करता है। यदि वे ग्रह बुध या गुरू से रहित होकर नवम में हों तो वह जातक भाग्यहीन होता है॥ ८७॥

जनयन्ति भाग्यसंस्था गुरुसौम्यविवर्जिता ग्रहाः पुरुषम्।
व्याधिप्रायमकान्तं जनहीनं बन्धनार्तमतिदीनम्॥ ८८॥

संस्कृत — जनयन्तीति। गुरूसौम्य=बृहस्पतिबुध विवर्जिताः=विरहिताः (त्रि-चतुर्प्रभृतयः) ग्रहा, भाग्यसंस्थाः=नवमभावगताः भवेयुस्तदा जातः व्याधिप्रायं =विविधरोगाक्रान्तम्, अकान्तं=कान्तिहीनं जनहीनं=कुलपरिवारादिविरहितं, बन्धनार्त्त=कारागारादिदुःखयुतम्ः, अतिदीनं च पुरूषं जनयन्ति=उत्पादयन्ति। अर्थात् नवमे बुधगुरूरहिता त्र्यादयो ग्रहा न भाग्योदयकारका भवन्ति। परं बुध वा गुरु सहिता भवेयुस्तदा जातः भाग्यवन्तं भवेदिति॥ ८८॥

हिन्दी — गुरू और बुध के अतिरिक्त अन्य ग्रह भाग्यस्थान में हों तो वह जातक व्याधियुक्त, परिवार से हीन, तेजहीन, बन्धनार्त व अत्यन्त दीन होता है॥ ८८॥

नवमेश से फल विचार—

भाग्यधिपे विनाशस्थे नीचशुत्रुखगेक्षिते।
क्रूरांशनीचराश्यादौ भाग्यहीनो भवेन्नरः॥ ८९॥

संस्कृत — भाग्याधिपे=नवमेशे, विनाशस्थे=अष्टमस्थानगते तत्र नीच-राशिस्थग्रहेण स्वशत्रुग्रहेण वा दृष्टे, क्रूरांशे=क्रूरग्रहनवांशे, वा नीचराश्यादौ=स्वनीच राशौ स्वनीच-नवांशे वा स्थिते भाग्येशे तदा जातो नरः भाग्यहीनः भवेदिति॥ ८९॥

हिन्दी — नवमेश अष्टमभाव में हो और उसे नीचराशिस्थ ग्रह या शत्रुग्रह देखता हो, अथवा क्रूरांश या नीचराशि आदि में हो तो वह जातक भाग्यहीन और दीनहीन होता है॥ ८९॥

भाग्याधिपे शुभयुते शुभग्रहनिरीक्षिते।
तद्भावे शुभसन्बन्धे तत्कीर्तिधनभाग्यवान्॥ ९०॥

संस्कृत — भाग्याधिपे=भाग्येशे शुभयुते=केनचिच्छुभग्रहेण युते केनचिच्छुभग्रहेण निरीक्षिते च तद्भावे शुभसम्बन्धे=नवमो भावः शुभग्रहस्य राशि वा शुभग्रहेणदृष्टो, वा शुभग्रहयुक्तो सति तदा जातो नरो सत्कीर्तिधनभाग्यवान् भवेदिति॥ ९०॥

हिन्दी — भाग्येश शुभग्रह से युक्त हो और शुभग्रह से देखा जाता हो तथा उस भाव से शुभग्रह का सम्बन्ध हो तो वह जातक कीर्तिमान्, धन ऐश्वर्य से युत एवं भाग्यशाली होता है ॥ ९० ॥

सिंहासनांशे तन्नाथे लग्नेशेन निरीक्षिते ।
कर्माधिपेन संदृष्टे महादानकरो भवेत् ॥ ९१ ॥
जातः पुरोहितो वाऽपि ब्रह्मवंशसमुद्भवः ।
दानाध्यक्षोपकारी स्याद् वर्णभेद विकल्पना ॥ ९२ ॥

संस्कृत — तन्नाथे=भाग्येशे सिंहासनांशे (१/४५ श्लो०) गते तथाभूते लग्नेशेन निरीक्षिते=दृष्टे, कर्माधिपेन=दशमभावेशेन संदृष्टे चेत्तदा जातो नरो महादानकरो=महादानी भवेदिति।

उपरोक्तयोगे जातोनरो यदि ब्रह्मवंशसमुद्भवः=ब्राह्मणकुलोत्पन्नो जातश्चेत्तदा पुरोहितः याजकः वा दानाध्यक्षोपकारी=राजकुले दानाध्यक्षत्वपदमवाप्य परेषामुपकारकृद्भवेत्। वर्णभेदविकल्पना=नवमभावराशेः यो वर्णस्तदनुकूलकार्ये जातस्य प्रवृत्ति भवेदिति। यथा विप्रस्य पौरोहित्यम्, क्षत्रियस्य सेनापतित्वं, वैश्यस्य कोशाधिपत्यम्, शूद्रस्य दास्यकर्ममिति कर्म ध्येतव्यम्॥ ९१-९२॥

हिन्दी — नवमेश सिंहासनांश में हो और लग्नेश तथा दशमेश उसे देखते हों तो वह जातक महादानी होता है। वह जातक यदि ब्राह्मण वंश में उत्पन्न हो तो पुरोहित-दानाध्यक्ष और परोपकारी होता है। यहाँ वर्ण भेदानुसार फल की कल्पना करनी चाहिए॥ ९१-९२॥

गुरौ तद्भावसंयुक्ते नवांशाधिपतौ तथा ।
शुभग्रहेक्षिते वाऽपि गुरुभक्तियुतो भवेत् ॥ ९३ ॥

संस्कृत — गुरौ=बृहस्पतौ तद्भावसंयुक्ते=भाग्यभावगते, नवांशाधिपतौ=नवमभावगतनवांशेशग्रहो तथा (तद्भावयुते), अपि वा गुरौ शुभग्रहेक्षिते सति तदा जातो गुरु भक्ति युतो भवेत्॥ ९३ ॥

हिन्दी — नवमभाव में गुरु हो, नवांशेश नवमभाव में हो तथा शुभग्रह से दृष्ट हो तो जातक गुरुभक्ति में निरत रहता है ॥ ९३ ॥

गुरुस्थाने सौम्ययुते गुरुवर्गसमन्विते ।
तदीशे गुरुभागस्थे गुरुभक्तिरतः सुखी ॥ ९४॥
गुरुशुक्रबुधांशस्थे धर्मनाथेन वीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे धर्मकृत्स नरो भवेत् ॥ ९५॥

संस्कृत — गुरुस्थाने=भाग्यभावे, सौम्ययुते=शुभग्रह सहिते तत्र् गुरोर्वर्गेण

(षड्वर्गे) समन्विते च, तदीशे=भाग्येशे गुरुभागस्थे=गुरूनवांशगते च सति तदा जातो गुरूभक्तिरतः=गुरुसेवानिरतः सुखी च भवेत्॥

तत्र गुरूस्थाने गुरूशुक्रबुधांशस्थे=गुरूशुक्रबुधानाम् नवांशगते तत्र धर्मनाथेन=भाग्येशेन वीक्षिते=दृष्टे शुभग्रहाणां मध्यस्थे च सति तदा स नरः=धर्मकृत् भवेत्॥ ९४-९५॥

हिन्दी — भाग्यभाव में शुभग्रह यदि गुरू के वर्ग में रहे, नवमेश गुरू के नवांश में रहे तो जातक गुरुभक्ति परायण तथा सुखी होता है। बृहस्पति यदि शुक्र या बुध के नवांश में हो और नवमेश को शुभग्रह देखते हों या वह (नवमेश) शुभग्रहों के बीच में हो तो जातक धार्मिकप्रवृत्ति का होता है॥ ९४-९५॥

धर्मे पापे पापभाक् स्यात् तदीशे पापसंयुते ।
क्रूरषष्ट्यंशके वाऽपि धर्महीनो भवेन्नरः ॥ ९६ ॥

संस्कृत — **धर्मे** इति। पापग्रहे धर्मे=नवमभावे कोऽपि पापग्रहः गतवति तदा जातो नरः पापभाक्=पापकर्मा भवति। तदीशे=धर्मेशे पापसंयुते=केनापि पापग्रहेण संयुते अपि वा क्रूरषष्ट्यंशके गतवति तदा नरो धर्महीनो=नास्तिको भवेदिति॥ ९६॥

हिन्दी — नवमभाव में पापग्रह हो तो जातक पापकर्मी होता है। धर्मेश पापग्रह से युक्त हो या क्रूर षष्ट्यंश में स्थित हो तो जातक धर्म से हीन (नास्तिक) होता है॥ ९६॥

बलवति शुभनाथे केन्द्रकोणोपयाते
शुभशतमुपयाति स्वामिदृष्टे विलग्ने ।
सुरगुरुनवभागत्रिंशदंशत्रिभागे
दशमभवनपे वा वीतभोगस्तपस्वी॥ ९७॥

संस्कृत — **बलवतीति**। शुभनाथे=नवमेशे, केन्द्रकोणोपयाते=लग्नात् केन्द्रं (१।४।७।१०) वा त्रिकोणं (५।९) गते विलग्ने=जन्मलग्ने स्वामिदृष्टे=लग्नेशेनेक्षिते सति तदा जातः शुभशतं=अनेकानेकशुभफलानि, उपयाति=प्राप्नोति। वा दशम भवनपे=दशमभावेशे, सुरगुरूनवभाग त्रिंशदंशत्रिभागे=बृहस्पतेर्नवमांशे त्रिशांशे द्रेष्काणे वा अवस्थिते तदा जातो नरो वीतभोगः=सुखैश्वर्यसम्पदः त्यक्त्वा तपस्वी भवेत्॥ ९७॥

हिन्दी — बलवान् नवमेश केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो और लग्नेश से दृष्ट हो तो जातक के अनेक शुभकार्य होते हैं। अथवा दशमेश यदि बृहस्पति के नवांश-त्रिशांश-द्रेष्काण में रहे तो जातक भोगरहित-तपस्वी और त्यागी होता है॥ ९७॥

सकलगगनवासाः स्वोच्चगा भाग्यराशौ
धनकनकसमृद्धं श्रेष्ठमुत्पादयन्ति ।
यदि शुभखचरेन्द्रैस्तत्र दृष्टा नभोगा
विनिहतरिपुपक्षौ दिव्यदेहः सुकीर्तिः ॥ ९८ ॥

संस्कृत — सकलेति। सकलगगनवासाः=कश्चिदपि (पापो शुभो वा) सर्व एव ग्रहः (न खलु सर्वे अपितु अधिकाधिका) स्वोच्चगाः, भाग्यराशौ=नवमे स्थाने गता भवेयुस्तदा श्रेष्ठम्=अत्युन्नति-धनधान्यंसमृद्धम् उत्पादयन्ति=वर्द्धयन्ति। यदि तत्र=नवमे भावे केचिदपि नभोगाः=ग्रहाः, शुभखचरेन्द्रैः=शुभग्रहैः दृष्टा भवेयुस्तदा जातो नरो विनिहतरिपुपक्षः=विनाशितं वैरिकुलम्, दिव्यदेहः=शोभनवपुयुक्तः सुकीर्तिश्च भवेत् ॥ ९८ ॥

हिन्दी — जन्मकाल में सभीग्रह (अधिकाधिक ग्रह) अपनी-अपनी उच्चराशि में, या नवमभाव में रहें तो जातक को धन-स्वर्ण का लाभ-वृद्धि कराते हैं। यदि शुभग्रह नवमभावस्थ ग्रहों को देखते हों तो ज़ातक के शत्रुपक्ष का नाश होता है और उसकी सुकीर्ति होती है ॥ ९८ ॥

तातेशतत्कारकखेचरेन्द्रौ दुःस्थौ तयोः पुत्रमुखं न दृश्यम् ।
केन्द्रत्रिकोणे यदि तौ नभोगौ वदेत्तयोः पुत्रमुखं हि दृश्यम् ॥ ९९ ॥

संस्कृत — तातेशः=पितृभावेशः (नवमेशः), तत्कारकः (कारकांशे) पितृकारकः तौ खेचरेन्द्रौ=द्वौग्रहौ, दुःस्थौ=दुःस्थान (६-८-१२) गतौ तदा जातो नरो पुत्रमुखं न दृश्यं=पुत्र सन्ततिः न प्राप्नुयात्। यदि तौ नभोगौ=ग्रहौ (तातेश तत्कारकौ) केन्द्रत्रिकोणे (१।४।७।१०।५।९) भवेतां तदा तयोः=दम्पत्योः पुत्रमुखं, हि=निश्चयेन दृश्यं=पुत्र सन्ततिः प्राप्नुयादिति ॥ ९९ ॥

हिन्दी — नवमभावेश और पितृकारक ग्रह इन दोनों के दुष्टस्थान में रहने पर जातक को पुत्र का सुख नहीं होता है। यदि वे दोनों ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में रहें तो जातक को पुत्र का सुख होता है ॥ ९९ ॥

पितुर्निशायां मरणं सुखेश शुक्रेन्दवः षष्ठगता बलाढ्याः ।
सारीश्वरास्तन्मरणं तथैव चन्द्रेण हीनास्तु दिवा मृतिः स्यात् ॥ १०० ॥

संस्कृत — सुखेशशुक्रेन्दवः=चतुर्थेश-शुक्र-चन्द्राः बलाढ्याः=बली भूत्वा यदि षष्ठगताः=लग्नात् षष्ठभावे स्थिताः भवेयुस्तदा जातस्य पितुः मरणं, निशायां=रात्रिकाले भवति। त्रयो ग्रहाः (सुखेशशुक्रेन्दवः) सारीश्वराः=षष्ठेशेन युताः, चन्द्रेण हीनाश्च अर्थात् चन्द्रं विहाय चतुर्थेश-षष्ठेश-शुक्रास्तथैव बलाढ्याः षष्ठगतास्तदा तु जातस्य पितुः दिवा=दिवाकाले, मृतिः=मरणं स्यादिति ॥ १०० ॥

हिन्दी — चतुर्थेश, शुक्र व चन्द्र छठेस्थान में हों तो रात्रिकाल में जातक के

पिता का मरण होता है। यदि वहाँ चन्द्र नहीं हो और वे षष्ठेश से युक्त हों तो दिन में पिता की मृत्यु होती है ॥ १०० ॥

सौम्ये चराद्यभागस्थे भाग्येशे बलसंयुते ॥
गुरुशुक्रयुते दृष्टे जपध्यानसमाधिमान् ॥ १०१ ॥

संस्कृत — सौम्ये=बुधे भाग्येशे=नवमभावेशे बलसंयुते=बली सति चराद्यभागस्थे=चरराशिप्रथमनवांशगते तत्र गुरूशुक्रयुते, अथवा गुरूशुक्रदृष्टे स्यात्तदा जातो नरो जपध्यानसमाधिमान=जपतपनिरतो भवेत्। तुला वा मकरलग्ने अयं योगः संभाव्यते ॥ १०१ ॥

हिन्दी — नवमेश बुध हो और वह बलवान् होकर चरराशि के प्रथम नवमांश में हो तथा वह गुरू-शुक्र से युत दृष्ट हो तो जातक जप-ध्यान-समाधि में रमने वाला होता है ॥ १०१ ॥

देवलोकादिभागस्थे कर्मेशे भाग्यपेऽपि वा ।
पारावतांशके सौम्ये ब्रह्मनिष्ठापरो भवेत् ॥ १०२ ॥

संस्कृत — कर्मेशे=दशमेशे, अपि वा भाग्यपे= नवमेशे, देवलोकादिभागस्थे (१/४५-४७ श्लो०) सौम्ये=कस्मिंश्चिच्छुभग्रहे पारावतांशके गते तदा जातो नरो ब्रह्मनिष्ठापरः ब्रह्मतत्वान्वेषी-ज्ञानी च भवेत् ॥ १०२ ॥

हिन्दी — दशमेश या नवमेश अपने देवलोकादि वैशेषिकांश में हो, अथवा पारावतांश में हों तो जातक ब्रह्म उपासना में तत्पर रहता है ॥ १०२ ॥

पारावतादिभागस्थे धर्मेशे गुरुसंयुते ।
लग्नेशे गुरुसंदृष्टे महादानकरो भवेत् ॥ १०३ ॥

इति नवग्रहकृपया वैद्यनाथविरचिते जातकपारिजाते सप्तम-अष्टम नवमभावफलाध्यायः चतुर्दशः ॥ १४ ॥

संस्कृत — धर्मेशे=नवमेशे गुरूणा संयुते तथा स्वपारावतादिभागस्थे, लग्नेशे गुरूसंदृष्टे सति तदा जातो नरो महादानकरो=अति उदारमना भवेदिति ॥ १०३ ॥

''प्रज्ञावर्द्धिनी'' संस्कृतटीकायां जातकपारिजातस्य सप्तम-अष्टम-नवमभावफलाध्यायः चतुर्दशः ॥

हिन्दी — नवमेश बृहस्पति के साथ पारावतादि भाग में हो और लग्नेश गुरू से दृष्ट हो तो जातक उदार और महादानी होता है ॥ १०३ ॥

सत्येन्द्रमिश्र कृत ''प्रज्ञावर्द्धिनी'' हिन्दीटीका में जातकपारिजात का सप्तम-अष्टम-नवम भावफलाध्याय चतुर्दश समाप्त ॥

दशम-एकादश-द्वादश भावफलाध्याय:—१५

दशमभाव से विचारणीय—

आज्ञामानविभूषणानि वसनव्यापारनिद्राकृषि-
प्रव्रज्यागमकर्मजीवनयशोविज्ञानविद्याः क्रमात्।
कर्मस्वामिदिनेशबोधनगुरुच्छायासुतैश्चिन्तये-
दुक्तानि प्रविहाय पूर्वमशुभे मानी विमानो भवेत्॥ १॥

संस्कृत — आज्ञेति। आज्ञा-मानम्-विभूषणानि-वसनम्-व्यापारः-निद्रा-कृषिः-प्रव्रज्या-आगमः-कर्म-जीवनम्-यशो-विज्ञानम्-विद्या इत्येतान् विषयान् कर्मस्वामिदिनेशबोधनगुरुच्छायासुतैः=दशमेश-सूर्य-बुध-गुरु-शनैश्चरैः, क्रमात् सञ्चिन्तयेत्=विचारयेत्। अत्र क्रमादित्यनेन शब्देन कर्मस्वामिदिनेशबोधनगुरुच्छायासुतैरित्यत्र पूर्व पूर्वस्याभावे सति उत्तरोत्तरतो ग्राह्य इति भावार्थः। मानी=दशमे भावे अशुभे पापाक्रान्ते, पापदृष्टे चेत्तदा जातो नरः विमानः=मानरहितः= अप्रतिष्टः लोकैरपमानितश्च भवेदितिभावः॥ १॥

हिन्दी — आज्ञा (आदेश)-मान-आभूषण-वस्त्र-व्यापार-निद्रा-कृषि-प्रव्रज्या आगम-कर्म-जिविकां-यश-विज्ञान और विद्या आदि का विचार दशमभावेश-सूर्य-बुध-गुरु और शनि से क्रमशः करना चाहिए। दशमभाव में यदि अशुभग्रह हों तो जातक मान-सम्मान से रहित होता है॥ १॥

कर्म विचार—

कर्मेशे बलवर्जिते चपलधीर्जातो दुराचारवान्
जीवज्ञासितभानवो विबलिनो दुःस्था विकर्मप्रदाः।
गङ्गास्नानफलं समेति दशमे राहौ दिनेशेऽथवा
मीने कर्मणि चन्द्रजारसहिते जातः स मुक्तो भवेत्॥ २॥

संस्कृत — कर्मेशे इति। कर्मेशे=दशमेशे, बलवर्जिते=बलरहिते सति तदा जातो नरः चपलधीः=चञ्चलबुद्धि, दुराचारवान्=कुत्सितकर्मा च भवेत्। जीवज्ञासितभानवो=गुरु-बुध-शनि-सूर्याः विबलिनो=बलरहितो भूत्वा यदि दुःस्था=दुःस्थान (६। ८। १२) गता स्युस्तदा विकर्मप्रदाः=विकृतकर्मकारको जातः भवेत्। राहौ अथवा दिनेशे=सूर्ये यदि दशमे सति तदा जातो नरो गङ्गास्नानफलं, समेति=प्राप्नोति। कर्मणि=दशमे मीने=मीनराशौ सति तत्र् चन्द्रजारसहिते=बुधभौमाभ्यां युते सति तदा जातो नरः मुक्तः=जीवन्मुक्तो भवेदिति॥२॥

हिन्दी — यदि दशमेश बलहीन हो तो जातक चञ्चलबुद्धि और दुराचारी प्रवृत्ति का होता है। बृहस्पति, बुध, शनि और सूर्य यदि बलहीन होकर दुष्टस्थान में रहें तो जातक सत्कर्महीन होता है। दशम में राहु या सूर्य हों तो जातक को गङ्गास्नान का फल प्राप्त होता है। मीनराशि दशमभाव में हो और उसमें बुध तथा मङ्गल रहें तो जातक मोक्ष प्राप्त करता है ॥२॥

मानेश्वरे शुक्रयुते च केन्द्रे
तुङ्गस्थिते तादृशतोयपूतः।
व्यये बुधे तद्भवनाधिपे वा
स्वोच्चान्विते तादृशपुण्यभाक् स्यात्॥ ३॥

संस्कृत — मानेश्वरे इति। शुक्रयुते मानेश्वरे=दशमेशः शुक्रसहिते केन्द्रे अथवा तुङ्गस्थिते=उच्चङ्गते सति तदा जातः तादृशतोयपूतः=गङ्गाजले विमलीकृतकायो भवेत्। तद्भवनाधिपे=दशमेशे-बुधे, व्यये=द्वादशे अथवा स्वोच्चान्विते=स्वकीयोच्चराशिं गते सति तदा जातः तादृशपुण्यभाक्=पूर्वोक्त पुण्ययुक्तो भवेदिति ॥३॥

हिन्दी — यदि कर्मेश शुक्र से युक्त होकर केन्द्रस्थ हो या अपनी उच्चराशि में बैठा हो तो जातक को गंगास्नान का पुण्यलाभ मिलता है। द्वादश में बुध और कर्मेश स्थित हों अथवा बुध और दशमेश उच्चराशि में हों तो जातक उसी के सदृश (उपरोक्त) पुण्य का भागी होता है ॥३॥

चन्द्रे कर्मणि जाह्नवीसलिलतः पूतो हि पूतद्युतौ
पापो यच्छति कर्मगो विबलवान्द्यूतक्रियासाहसम्।
सौम्यादुर्बलशालिनो दशपगाः सत्कर्मविध्वंसकाः
कर्मेशज्ञसुरार्चितैः क्रतुफलं संचिन्त्य सम्यग्वदेत्॥ ४॥

संस्कृत — चन्द्रे इति। पूतद्युतौ=समुज्ज्वलकिरणे (पूर्णबिम्बे) चन्द्रे, कर्मणि=दशमे सति तदा जातो नरो हि=निश्चयेन जाह्नवीसलिलतः=सुरसरि (गंगा) जलतः, पूतः=गतकल्मषः भवेत्। कर्मगः=दशमभावगतः विबलवान्=निर्बलः पापः=दुष्टग्रहः द्यूतक्रियासाहसम्=द्यूतक्रीडाव्यसनी यच्छति=करोतीति। दुर्बलशालिनः=विबलाः, सौम्याः=शुभग्रहाः, दशमगाश्चेद्भवेयुस्तदा जातः सत्कर्मविध्वंसकाः=तीर्थस्नानदेवयज्ञतपव्रतादि पुण्यकर्म नाशकराः भवेयुः। कर्मेशज्ञसुरार्चितैः=कर्मेश-बुध-गुरुभिः, (दशमभावगतैः) तदा जातः क्रतु-फलं=यज्ञफलं प्राप्नोति। सम्यक् सञ्चिन्त्य=विचार्य, ग्रह स्थितिवशात् सम्यक् फलं वदेत् ॥४॥

हिन्दी — पूर्णचन्द्र यदि दशमभाव में रहे तो जातक गङ्गाजल द्वारा पवित्र

होता है। बलहीन पापग्रह दशम में हों तो सट्टा लाटरी में साहसी होता है। निर्बल शुभग्रह दशमस्थान में हों तो सत्कर्म का संहार कारक होता है। दशमेश, बुध या बृहस्पति दशम में हों तो जातक यज्ञकर्ता होता है। ये सब फल अच्छे प्रकार से विचार कर कहना चाहिए।।४।।

एकस्थौ तनुकर्मपौ यदि तयोरेकाधिपत्यं तु वा
जातः स्वार्जितसद्धनेन कुरुते यज्ञादिकर्मोत्सवम्।
सार्कौ शूद्रधनेन साहिशिखिनि क्षुद्रैः सजीवे नृप-
स्तत्तत्कारकवित्ततो यदि युते रव्यादिभिः कर्मपे॥ ५॥

संस्कृत — एकस्थाविति। तनुकर्मपौ=लग्नेश-दशमेशौ यदि, एकस्थौ=सङ्गतौ स्याताम्, अथवा तयोः=लग्नकर्मभावयोः, एकाधिपत्यम्=एकस्वामित्वं (कन्या-मीन लग्ने संभवेत्) यदि भवेत्, तदा जातः स्वार्जितसद्धनेन=निजप्रतापादुपार्जितेन सद्धनेन यज्ञादिकर्मोत्सवं कुरुते। कर्मपे=दशमभावेशे यदि सार्कौ=आर्किणा (शनिना) सह सति तदा शूद्रधनेन, कर्मपे साहिशिखिनि=अहिना (राहुणा) शिखिना (केतुना) वा सहिते सति, तदा क्षुद्रैः=क्षुद्रजातिधनैः, सजीवे=गुरुणा सहिते कर्मपे सति तदा नृपैः=राजन्यधनैः यज्ञादिकर्मोत्सवं जातो नरो कुरुते। कर्मपे रव्यादिभिः=सूर्यादिभिः ग्रहैः युते सति तदा तत्तत्कारकवित्ततो=दशमेशयुतो ग्रहो यस्य भावस्य जातीयस्य (वर्णस्य) वा कारको भवति तदुपार्जितधनेन यज्ञादिकर्मोत्सवं जातो नरो कुरुते॥ ५॥

हिन्दी — लग्नेश और कर्मेश यदि एकभाव में हों या दोनों भावों (१-१०) का एकाधिपत्य हो (कन्या अथवा मीन लग्न से संभव है) तो जातक स्वार्जित उत्तम धन से यज्ञादि कर्म सम्पन्न करता है। यदि कर्मेश शनि से युत हो तो शूद्रजाति के धन से, राहु-केतु के साथ यदि कर्मेश हो तो क्षुद्र जाति के धन से तथा गुरु से युक्त हो तो राजा के धन से यज्ञादि कर्म करता है। सूर्यादि ग्रह में कर्मेश जिसग्रह से युक्त हो वह ग्रह जिसजाति या भाव का कारक हो उसके धन से यज्ञादि कार्य होता है।।५।।

बहुशुभयुजि माने वाजपेयादिसिद्धिः
सितबुधयुतराशिस्वामिनौ दुर्बलाढ्यौ।
यदि कृतसवनोऽपि प्राप्तकर्मप्रणष्टो
भवति परमकर्मा दानवाचारशीलः॥ ६॥

संस्कृत — बह्विति। माने=दशमे, बहुशुभयुजि=बहूनां शुभखेचराणां संयोगे चेत्तदा वाजपेयादिसिद्धिः=वाजपेयादियज्ञानां पूर्त्तिर्भवति। यदि सितबुधयुतराशिस्वामिनौ=शुक्रबुधाक्रान्तराशीपतौ दुर्बलाढ्यौ=विर्बलौ तदा कृतसवनोऽपि=सम्पादितासवनोकर्मणोऽपि ''सुत्याऽभिषवः सवनं च इत्यमरः''

प्राप्तकर्मप्रनष्टः=दुर्दैववशादुपस्थिताध्वरेऽक्षमोऽभूत्वा परमकर्मा=उत्कृष्टकर्मकृदपि, दानवाचारशीलः=राक्षसतुल्य कर्मकृद् भवेदिति ॥६ ॥

हिन्दी — दशमभाव में यदि बहुत शुभग्रह हों तो जातक वाजपेय यज्ञ करता है। यदि शुक्र तथा बुध से युत राशि के स्वामी निर्बल हों तो जातक का यज्ञकार्य नष्ट होता है और वह परमकर्म (शुभकर्म) करनेवाला होकर भी राक्षसी स्वभाववाला हो जाता है ॥ ६ ॥

चन्द्रात् कर्मणि शोभने बलयुते तुङ्गादिवर्गस्थिते
वागीशेन युतेक्षिते नरवरो यज्वा यशस्वी भवेत्।
जीवज्ञासुरपूजितस्थितगृहाधीशा विनाशं गता
जातः सत्फलकर्मवानपि कृतं कर्म श्रियं नाप्नुयात्॥ ७॥

संस्कृत — **चन्द्रादिति**। बलयुते=बलसहिते, शोभने=शुभग्रहे तुङ्गादिवर्गस्थिते=स्वोच्चेस्ववर्गस्थे, चन्द्रात्=जन्मराशितः, कर्मणि=दशमे गते तत्र वागीशेन=बृहस्पतिना, युतेक्षिते=युक्ते दृष्टे वा तदा जातः, नरवरः=पुरुषेषु श्रेष्ठः, यज्वा=यज्ञकर्त्ता यशस्वी=यशोधनयुक्तो भवेत्। जीवः=गुरुः, ज्ञः=बुधः, असुरपूजितः=शुक्रः, एते ग्रहाः यत्र यत्र स्थिताः स्युस्तत्तदगृहाधीशाः=राशीशाः (गुरु-बुध-शुक्राधिष्ठितराशीपतयः) चेद् विनाशम्=अष्टमस्थानंगतास्तदा जातः सत्फलकर्मवान्=कृतपुण्यकर्मा, अपि, कृतां=सम्पादितां, कर्मश्रियं=परिणामं, नाप्नुयात्=न प्राप्नुयात्। अर्थात् मनोयोगपूर्वकं कर्माणि कृत्वाऽपि तत् साफल्यं न प्राप्नोति ॥७ ॥

हिन्दी — चन्द्रमा से दशमस्थान में बलवान् शुभग्रह उच्चादि वर्ग में होकर बृहस्पति से युत या दृष्ट रहे तो जातक मनुष्यों में श्रेष्ठ, यज्ञ करनेवाला तथा विख्यात होता है। बृहस्पति-बुध और शुक्र जिसराशि में स्थित हों उनके स्वामी यदि अष्टमभाव में रहें तो जातक के सत्कर्मी होते हुए भी किये हुए कर्म का फल (यश) प्राप्त नहीं होता ॥ ७ ॥

कर्मेशज्ञसुरार्चिता बलयुता यज्ञादिसत्कर्मदाः
सौम्यव्योमचरेण वीक्षितयुतास्ते वाजपेयादिभाक्।
जीर्णोद्धारणमुख्यगोपुरतटाकारामपुण्यप्रदा
यज्वा कर्मपतौ शुभे शशियुते माने विराहुध्वजे॥ ८॥

संस्कृत — कर्मेशेति। कर्मेशः=दशमभावेशः, ज्ञ=बुधः, सुरार्चितः=गुरुश्चैतेग्रहाः यदि बलयुताः=बलसहिता भवेयुस्तदा यज्ञादिसत्कर्मप्रदा भवेयुः। एते (त्रयो) यदि सौम्यव्योमचरेण=शुक्रेण वा पूर्णचन्द्रेण वीक्षिताः युताश्चेत्तदा जातः वाजपेयादिभाक्=वाजपेयप्रभृतियज्ञयागादिकर्त्ता भवेत्। तथा च ग्रहास्तस्य

जातस्य जीर्णोद्धारणमुख्यगोपुरतटाकारामपुण्यप्रदा अर्थात् जीर्णोद्धारणम्=पुरातनस्य मठमन्दिरादेः नवीनीकरणम् मुख्यगोपुरादेः=गोशालादेर्निर्माणं, तटाकादेर्निर्माणं, आरामादेः=उद्यानादेर्निर्माणमित्यादि पुण्यकार्यं जातः कुर्यादितिभावः भाव। कर्मपतौ=दशमभावाधिपतौ, शुभे=शुभग्रहे, शशिना=चन्द्रेण युते, माने=दशमभावगते तत्र विराहुध्वजे=राहुणा केतुना वा विरहिते च सति तदा जातः, यज्वा=यज्ञकर्ता भवेदिति ॥ ८ ॥

हिन्दी — दशमभावेश बुध और गुरु बलवान् हों तो जातक यज्ञादि सत्कर्म में रत होता है। यदि वे शुभग्रह से दृष्ट या युत हों तो जातक वाजपेयादि यज्ञ करता है, तथा मठमन्दिर जीर्णोद्धार, गोशाला-तालाव-बाग आदि का निर्माण करने कराने का पुण्य कार्य करता है। यदि दशमेश शुभग्रह तथा चन्द्र से युत हो और दशमभाव में राहु या केतु नहीं हो तो जातक यज्ञकर्ता होता है ॥८ ॥

उच्चस्थे शशिजेऽहिकेतुवियुते भाग्योपयातेऽथवा
कर्मस्वामिनि भाग्यगे च मनुजो यागादिसत्कर्मवान्।
कर्मेशे निजतुङ्गगे बुधयुते तारासुते चास्तगे
तुङ्गस्थानगते सति क्रतुफलं जातः समेति ध्रुवम् ॥ ९ ॥

संस्कृत — सरलार्थः स्पष्टार्थ इति ॥९ ॥

हिन्दी — यदि बुध अपनी उच्च (कन्या) राशि में राहु-केतु से विरहित होकर नवमभाव में हो अथवा दशमेश नवमभाव में हो तो जातक यज्ञ आदि कर्म करनेवाला होता है। यदि दशमेश अपनी उच्चराशि में बुध से युक्त हो या सप्तमभाव में उच्चराशि का बुध रहे तो जातक निश्चय ही यज्ञादि के फल को प्राप्त करता है ॥ ९ ॥

कर्मस्थे शशिनन्दने सवनकृत्साहिध्वजे कर्महा
कर्मेशे रिपुरन्ध्ररिःफगृहगें कर्मावरोधी भवेत्।
कर्मेशस्य बुधस्य कर्मभवने राहौ मखध्वंसक-
स्तुङ्गस्थानगतोऽपि कर्मगृहपो दुःस्थानगः कर्महा ॥ १० ॥

संस्कृत — **कर्मस्थे** इति। शशिनन्दने=बुधे, कर्मस्थे=दशमगते सति, तदा जातः सवनकृत=यज्ञयागादिसम्बन्धिवस्तुसग्राहको भवेत्। तथाभूते बुधे साहिध्वजे=राहुणा केतुना वा युते सति तदा जातः कर्महा=यज्ञादिकर्मविनाशको भवेत्। कर्मेशे=दशमेशे, रिपुरन्ध्ररिष्फगृहगे=षष्ठाष्टमव्ययभावगते सति तदा जातः कर्मावरोधी=अपरस्यापि यज्ञादिकर्मस्यावरोधको भवेत्। कर्मेशस्य बुधस्य, कर्मभवने=दशमे स्थाने राहौ अर्थात् दशमेशो बुधो भवेत्तथा बुधो यत्र भवेत्तस्माद्दशमे स्थाने राहुर्भवेत्तदा जातः मखध्वंसकः=यज्ञकर्मविनाशकः स्यादिति। कर्मगृहपः=तुङ्गस्थानगतोऽपि स्वोच्च-राशिं गतोऽपि यदि दुस्थानगः

=षडष्टव्ययगतस्तदा जातः, कर्महा=कर्मनाशको भवेत्। उच्चस्थितः कर्मेशः यदि षष्ठेऽष्टमे व्यये वा भवेत्तदा जातः कर्म-विनाशको भवतीति भावः॥ १०॥

हिन्दी — यदि बुध कर्मभाव में हो तो जातक सवन (यज्ञार्थ औषध संग्रह) करने वाला होता है। यदि बुध राहु या केतु से युक्त हो तो पुण्यकर्म को नाश करनेवाला होता है। दशमेश षष्ठ-अष्टम या द्वादश में हो तो जातक कर्म का अवरोधी होता है। दशमेश बुध हो और उससे दशम में राहु हो तो वह जातक के यज्ञकार्य का नाशक होता है। उच्चराशिगत होने पर भी कर्मेश यदि दुःस्थान (६-८-१२) में रहे तो जातक के कर्म का वह विनाशक होता है॥१०॥

व्यापारधर्मभवने शुभखेटयुक्ते
तन्नाथजीवतनुपा बलशालिनश्चेत्।
आचारधर्मगुणकर्मविधिप्रयुक्त
श्रद्धापरो भवति विप्रकुलाग्रगण्यः॥ ११॥

संस्कृत — व्यापारे इति। व्यापारः=दशमभावः धर्मः=नवमभावः शुभखेटयुक्ते=शुभग्रहेण युक्ते, तन्नाथजीवतनुपा=दशमेशः-नवमेशः-गुरुः लग्नेशश्च, अन्यत्स्पष्टम्॥ ११॥

हिन्दी — दशम और नवमभाव यदि शुभग्रह से युक्त हो और उनके स्वामी तथा बृहस्पति एवं लग्नेश बलवान् हों तो जातक आचार-धर्म-गुण-कर्मविधि में निपुण और श्रद्धावान् होता है। वह जातक ब्राह्मण कुल में अग्रगण्य होता है॥११॥

सौम्यान्वितानि गुरुकर्मकलत्रपुत्र-
लग्नानि पञ्च भवनानि शुभेक्षितानि।
तन्नायकाश्च बलिनो यदि सर्वतत्व-
विद्याधिकक्रतुसमस्तगुणप्रसिद्धः ॥ १२॥

संस्कृत — सौम्यान्वितानीति। गुरु-कर्म-कलत्र-पुत्र-लग्नानि अर्थात् नवम-दशम-सप्तम-पञ्चम-प्रथम एतानि भवनानि=गृहाणि यथासम्भवं सौम्यान्वितानि=शुभग्रह-युतानि वा शुभेक्षितानि भवेयुस्तथा तन्नायकाश्च= नवमेश-दशमेश-सप्तमेश-पञ्चमेश लग्नेशाश्च यदि बलिनस्तदा जातः सर्वतत्वविद्याधिकः, क्रतुकरः, समस्तैः गुणैः प्रसिद्धश्च भवेदिति ज्ञेयम्॥ १२॥

हिन्दी — नवम-दशम-सप्तम-पञ्चम और लग्न ये पाँच भाव यदि शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हों तथा उन स्थानों के स्वामी बलवान् हों तो जातक सर्वतत्त्ववेत्ता-प्रसिद्ध विद्वान्-यज्ञकर्त्ता और अनेक गुणों के कारण प्रसिद्ध होता है॥१२॥

ज्ञानव्योमाधिवासास्तनुगुरुदशमस्थानपाः षड्बलाढ्या
जातः षट्शास्त्रवेत्ता निखिलनिगमविद् ज्ञानदीक्षामुपैति।

धर्मव्यपारलग्नाधिपबुधविबुधाचार्यपाकापहारे
सत्कर्माचारसर्वक्रतुफलनिगमज्ञानविद्याकरः स्यात्॥ १३॥

संस्कृत — **ज्ञानेति**। ज्ञानव्योमाधिवासाः, ज्ञान=पंचमः, व्योम=दशमः अधिवासा=स्थिता ग्रहा यदि तनुगुरुदशमस्थानपाः=लग्न-नवम-दशम-भावानामधिपाः भवेयुस्तथा षड्बलाढ्याः=पूर्वोक्तैः षड्वर्गबलैः सहिता भवेत्तदा जातो नरो षट्शास्त्रवेत्ता, निखिल-निगमविद्, तथा ज्ञानदीक्षाम् च उपैति=प्राप्नोति। धर्मव्यापारलग्नाधिपबुधविबुधाचार्याणां=नवमेश-दशमेश-लग्नेश-बुध-गुरु एतेषां ग्रहाणां, पाकापहारे=दशान्तर्दशासमये जातो नरः-सत्कर्माचारयुक्त सर्वक्रतुफलयुक्तः सकलनिगम-ज्ञान-विद्याकरश्च स्यादिति ॥१३॥

हिन्दी — ज्ञानस्थान (पंचम) तथा दशमस्थान में लग्नेश-नवमेश-दशमेश यदि अपने षड्बल से युक्त होकर रहें तो जातक षट्शास्त्रों का ज्ञाता, सम्पूर्ण निगम का ज्ञानी और ज्ञानदीक्षा से युक्त होता है। नवम-दशम-लग्न के स्वामी-बुध और गुरु की दशा-अन्तर्दशा में जातक को शुभकर्म-आचार-शुभयज्ञफल-वेदज्ञान और विद्या आदि की प्राप्ति होती है ॥ १३ ॥

चन्द्रे तृतीये जलराशियुक्ते करोति जीर्णोद्धरणादि पुण्यम्।
तटाककूपादिकमत्र लग्नात् कर्मेश्वरे गोपुरभागयुक्ते ॥१४॥

संस्कृत — **चन्द्र** इति। जलराशियुक्ते=मृगोत्तरार्द्धमीनकुलीर (१/१७ श्लो.) राशौ स्थिते चन्द्रे, तृतीये=लग्नात्तृतीये गते सति तदा जातः जीर्णोद्धरणादि=जीर्णशीर्ण जलाशयारामदेवमन्दिरादेः जीर्णोद्धरादि पुण्यं=धर्मकार्यं करोति। लग्नात् कर्मेश्वरे=दशमेशे गोपुरभागयुक्ते गोपुरादि (वैशेषिकांशे) =गते अत्र=एतादृशेयोगे जातो नरो तटाककूपादिकं धर्म कार्यं करोति॥ १४॥

हिन्दी — जलचरराशि (कर्क-मकरपरार्द्ध-मीन) का चन्द्र यदि तृतीय भाव में रहे तो जातक जीर्णोद्धार आदि पुण्य का कार्य करता है। लग्न से दशमेश ग्रह यदि गोपुरभाग में हो तो जातक तालाब-कूप आदि का निर्माण कार्य करनेवाला होता है ॥१४॥

प्रवज्यायोग—

जातः पञ्चचतुर्वियच्चरवरैः केन्द्रत्रिकोणस्थितै-
रेकस्थैर्बलिभिः प्रधानबलवत्खेटाश्रमस्थो भवंत्।
आदित्यासितजीवशुक्रधरणीपुत्रेन्दुतारासुतै-
र्वानप्रस्थविवासभिक्षुचरकाः शाक्यो गुरुर्जीवकः॥ १५॥
वानप्रस्थस्तपस्वी वनगिरिनिलयो नग्नशीलो विवासा
भिक्षुःस्यादेकदण्डी सततमुपनिषत्तत्त्वनिष्ठो महात्मा।

नानादेशप्रवासी चरकपतिवरः शाक्ययोगी कुशीलो
राजश्रीमान् यशस्वी गुरुरशनपरो जल्पको जीवकः स्यात्॥ १६॥

संस्कृत — अत्र प्रव्रज्यायोगं प्रव्रज्यालणञ्चाह—**जात** इति। पञ्चचतुर्वियच्चरवरैः=पञ्चभिश्चतुर्भिर्वा ग्रहैरेकस्थैः=संयुक्तैर्बलिभिश्च भूत्वा यदि केन्द्रः-त्रिकोण (१-४-७-१०-५-९) स्थितैः तदा जातः प्रधानबलवतः=तेषु पञ्चषु चतुर्षु वा ग्रहेषु यः प्रधानबली (सर्वापेक्षया बलीयान्) भवेत्तस्य खेटस्याश्रमस्थो (यस्य ग्रहस्य य आश्रम) भवेत्। ग्रहाणां प्रव्रज्याश्रमम् यथा—आदित्यासितजीवशुक्रधरणीपुत्रेन्दुधारासुतैः=सूर्य-शनि-गुरु-शुक्र-कुज-चन्द्र-बुधैः ग्रहाणां "वानप्रस्थ-विवास-भिक्षु-चरक-शाक्य-गुरु-जीवक" रूपाः प्रव्रज्या ज्ञेयाः। यथास्वहोराशास्त्रे वराहेण (प्रव्रज्या. भट्टो. टी.)—

"चतुरादिभिरेकस्थैः प्रव्रज्यां स्वां ग्रहः करोतिबली।
बहुवीर्यैस्तावत्यः प्रथमा वीर्याधिकस्यैव॥
तापसवृद्धश्रावकरक्तपटाजीविभिक्षुचरकाणाम् ।
निर्ग्रन्थानां चार्कात् पराजितैः प्रच्युतिर्बलिभिः"॥ इति॥

प्रवज्यानां लक्षणान्याह—वानप्रस्थः-तपस्वी, वनगिरिनिलयः=वनानि गिरयश्च निलयो गृहं वासस्थानं यस्येति स वानप्रस्थः।

विवासाः—नग्नशीलः=वस्त्ररहितः (नग्नः) विवासाः=विगतावासा कथ्यते।

भिक्षुः-एकदण्डी=एकदण्डधरः, सततमुपनिषत्तत्वनिष्ठः=ब्रह्मविचार-निरतः, महात्मा च भिक्षुरुच्यते।

चरकः—चरतीति=चरक यतिवरः, नानादेशप्रवासी=विविधदेश-स्थानभ्रमणशीलो भवति।

शाक्यः-शाक्ययोगी=अघोरी, कुशीलः=दुराचारवान् वञ्चकः भवति।

गुरुः—राजश्रीमान्=राजसम्पद्युतः, यशस्वी=कीर्तियुक्तश्च भवति। जीवकः-अशनपरः=केवलमुदरपोषकः, जल्पकः=वकवादी च भवति॥ १५-१६॥

हिन्दी — पाँच या चार बलवान् ग्रह केन्द्र (१-४-७-१०) या त्रिकोण (५-९) के किसी एक स्थान में स्थित हों तो उनमें सबसे अधिक बलवाले ग्रह का आश्रमानुयायी जातक होता है। यहाँ सूर्य-शनि-गुरु-शुक्र-मङ्गल-चन्द्र और बुध से क्रमानुसार से वानप्रस्थ, विवास (नग्न), भिक्षु, चरक, शाक्य, गुरु और जीवक प्रव्रज्या होती हैं। अर्थात् सूर्य के बली होने से वानप्रस्थ,

शनि से नग्न, गुरु से भिक्षुक, शुक्र से चरक, मङ्गल से शाक्य, चन्द्र से गुरु और बुध से जीवक आश्रमानुयायी होता है।

प्रव्रज्याओं का लक्षण **वानप्रस्थ** तपस्वी वेशधारी, जङ्गल तथा पर्वतों पर रहनेवाला होता है। **विवास** सर्वदा नङ्गा, बिना वस्त्र का रहता है। **भिक्षु** त्रिदण्डी उपनिषत् का ज्ञाता तत्त्वज्ञ और महात्मा होता है। **चरक** नानादेश प्रवासी-यति और यायावर होता है। **शाक्य** योगी-कुशील दुराचारी-वंचक होता है। **गुरु**-राजश्रीयुत व यशस्वी होता है। **जीवक**-भोजन में तत्पर, उदरपोषक व बहुत बोलनेवाला होता है॥ १५-१६॥

कर्मस्था बलिनस्त्रयो गगनगाः स्वोच्चादिवर्गस्थिताः
कर्मेशश्च बलाधिको यदि यतिस्तत्तुल्यशीलोऽथवा।
कर्मेशे बलवर्जिते गृहगृहप्राप्ते दुराचारवान्
तद्योगप्रदमध्यगौ धनमदस्थानाधिपौ कामधीः॥ १७॥

संस्कृत — कर्मस्था इति। स्वोच्चादिवर्गस्थिताः=स्वोच्च-मूल-त्रिकोण—स्वराश्यादिवर्गे स्थिता बलिनस्त्रयो गगनगा=ग्रहा यदि कर्मस्थाः= दशमगता भवेयुस्तथा कर्मेशः=दशमभावेशो बलाधिको यदि भवेत्तदा जातः, यतिः=जितेन्द्रियः भवेत् 'ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते' इत्यमरः (२।७-४३)। अथवा तत्तुल्यशीलः=यतितुल्याचरति। दशमपतौ बलवर्जिते= निर्बले, गृहगृहप्राप्ते=गृहात्=चतुर्थस्थानाद् गृहं=चतुर्थं (१/५० श्लो) अर्थाल्लग्नात्सप्तमे भावे च विद्यमाने सति तदा जातः दुराचारवान्=दुश्चरित्रः (लम्पटः) भवेत्। धनमदस्थानाधिपौ=द्वितीयेश सप्तमेशौ यदि तद्योगप्रद-मध्यगौ=पूर्वोक्त प्रवज्यायोगकारकग्रहाणां मध्यगतौ तदा जातो नरो कामधीः= कामुकप्रवृत्तिको भवेदिति॥ १७॥

हिन्दी — दशमभाव में तीन ग्रह बली होकर स्वोच्चादि वर्गस्थित हों और कर्मेश यदि अधिक बलवान् हो तो जातक यति अथवा उसके समान स्वभाववाला होता है। यदि कर्मेश बलहीन हो और सप्तमभाव में स्थित हो तो जातक दुराचारी होता है। द्वितीय और सप्तम भावों के स्वामी यदि प्रव्रज्याकारक ग्रहों के बीच में रहें तो वह जातक कामुकप्रवृत्ति का होता है॥ १७॥

तद्योगप्रदखेचरैररिनिशनिक्षोणीकुमारान्वितैः
संन्यासं समुपैति वित्ततनयस्त्रीवर्जितो मानवः।
सौम्यांशोपगतः सहस्त्रकिरणस्तुङ्गान्तभागस्थितं
खेटं पश्यति यौवने वयसि वा बाल्ये यतीशो भवेत्॥ १८॥

संस्कृत — तद्योगेति। तद्योगप्रदखेचरैः=उक्तप्रव्रज्यायोगकारकैः खैचरैः, इनशनिक्षोणीकुमारान्वितैः=सूर्य-शनि-मङ्गलयुतैः तदा जातो मानवः= नरः, वित्ततनयस्त्रीवर्जितः=धन-पुत्र-स्त्रीविरहितः संन्यासं समुपैति। सहस्त्र-किरणः=सूर्यः सौम्यांशोपगतः=शुभग्रहनवांशगतः सन् तुङ्गान्तभागस्थितम्= परमोच्चभागे स्थितं खेटं=ग्रहं (कोऽपिग्रहं) पश्यति तदा जातो नरः यौवने वा बाल्ये वयसि, यतीशः=जितेन्द्रियाग्रणीः भवेत्॥ १८॥

हिन्दी — प्रव्रज्यायोगकारक ग्रह यदि सूर्य-शनि-मङ्गल से युत हो तो जातक धन-पुत्र-स्त्री से हीन होकर संन्यास को ग्रहण करता है। शुभनवांश में स्थित सूर्य यदि परमोच्च में स्थित ग्रह को देखता हो तो जातक युवावस्था में अथवा बाल्यावस्था में उत्तम कोटि का संन्यासी होता है॥१८॥

शुक्रेन्दुप्रविलोकिते गतबले लग्नाधिपे निर्धनो
भिक्षुः स्याद्यदि तुङ्गभांशकयुतस्तारापतिं पश्यति।
एकस्थैरविलोकिते तु बहुभिर्लग्नेश्वरे दीक्षित-
स्तद्योगप्रदभावकारकदशाभुक्तौ तदीयं फलम्॥ १९॥

संस्कृत — शुक्रेन्द्विति। गतबले=निर्बले, लग्नाधिपे=लग्नेशे शुक्रेन्दु-प्रविलोकिते=शुक्रचन्द्राभ्यां निरीक्षिते सति तदा जातः निर्धनः=धनादिरहितो भवेत्। यदि तुङ्गभांशकयुतः=स्वकीयोच्चराश्यंशगतः कश्चिद्ग्रहः तारापतिं= चन्द्रं पश्यति तदा जातः भिक्षुः=परिव्राजकः भवति। एकस्थैः बहुभिः (त्र्याधिकैः) ग्रहैर्यदि अवलोकिते लग्नेश्वरे तदा जातः दीक्षितः=दीक्षा युतो भवेत्। अत्रोक्तेषू फलानां पाककालम्-तदुक्त' प्रव्रज्यायोगो यद्भावे (राशौ) सम्भवेत्तद्भावकारकग्रहस्य दशाकाले तदीयमुक्तं फलं भवेदिति॥१९॥

हिन्दी — यदि शुक्र और चन्द्र निर्बल लग्नेश को देखते हों तो जातक निर्धन होता है। कोई ग्रह अपने उच्चराश्यंश में होकर चन्द्र को देखता हो तो जातक भिक्षुक (संन्यासी) होता है। बहुतग्रह एकस्थान में होकर लग्नेश को देखते हों तो जातक संन्यास में दीक्षित होता है। उपरोक्त योगों के फल भावकारक ग्रह की दशा अन्तर्दशा में होते हैं॥ १९॥

शीतांशुराशीशमिनात्मजो वा लग्नेश्वरः पश्यति दीक्षितः स्यात्।
भौमर्क्षगे मन्ददृगाणभागे मन्देक्षिते शीतकरे यतिः स्यात्॥ २०॥

संस्कृत — शीतांशुराशीशमिति। शीतांशोः=चन्द्रस्य यो राशित-द्राशीशम्=जन्मकालीनचन्द्राधिष्ठितराशीशम्, इनात्मजः=शनैश्चरः, वा लग्नेश्वरः =जन्मलग्नेशः यदि पश्यति तदा जातः दीक्षितः=प्रव्रजितः भवेत्। शीतकरे=चन्द्रे, भौमर्क्षगे=मेषवृश्चिकराशिगते, वा मन्ददृगाणभागे=शनैश्चरस्य द्रेष्काणे नवांशे वा

स्थिते, मन्देक्षिते=शनैश्चरेण विलोकिते सति तदा जातो नरो यतिः=जितेन्द्रियः भवेदिति। "प्रथम पंच नवाधिपानां" विधिना द्रेष्काण साधने मेष-वृश्चिक राशौ मकर वा कुम्भस्य गणना न संभवेत्। अतः श्लोकोत्तरार्धोक्तयोगो न युक्तियुक्त प्रतिभाति।

वरामिहिरः वृहज्जातके (१५/३)—

"जन्मेशोऽन्यैर्यद्यदृष्टोऽर्कपुत्रं पश्यत्यार्किर्जन्मपं वा बलोनम्।
दीक्षां प्राप्नोत्यार्किदृक्काणसंस्थे भौमार्क्यंशे सौरदृष्टे च चन्द्रे" इति॥ २०॥

हिन्दी — चन्द्र जिसराशि में हो उसराशि के स्वामी को शनि या लग्नेश देखता हो तो जातक दीक्षित होता है। यदि चन्द्रमा मङ्गल की राशि (मेष-वृश्चिक) में होकर शनि के द्रेष्काण में हो और शनि से दृष्ट हो तो जातक संन्यासी होता है॥२०॥

जीवारमन्दलग्नेषु मन्ददृष्टियुतेषु च।
लग्नाद्धर्मगते जीवे नृपयोगेऽपि तीर्थकृत्॥ २१॥

संस्कृत — जीवारेति। गुरु-भौम-शनि-लग्नेषु, मन्ददृष्टियुतेषु= शनिनानिरीक्षितेषु, च=पुनः लग्नाद्धर्मगते जीवे=गुरौ लग्नान्नवमभावगते नृपयोगेऽपि=कस्मिंश्चिद्राजयोगो भवेत्तथापि जातो नरः तीर्थकृत्= तीर्थभ्रमणशीलो शास्त्रज्ञो च भवेत्॥ २१॥

हिन्दी — बृहस्पति-मङ्गल-शनि की राशि लग्न में हों और यदि शनि की दृष्टि उसपर हो तथा लग्न से नवमभाव में बृहस्पति हो तो जातक राजयोग होने पर भी तीर्थभ्रमण व शास्त्ररचना करनेवाला होता है॥ २१॥

नवमस्थानगे चन्द्रे नभोगैर्नावलोकिते।
नृपयोगेऽपि सञ्जातो दीक्षितो नृपतिर्भवेत्॥ २२॥

संस्कृत — नवमस्थानगे इति। यदि चन्द्रः लग्नान्नवमभावगतः न केनापि ग्रहेण अवलोकितस्तदा नृपयोगे संजातो=समुत्पन्नोऽपि दीक्षितः= प्रव्रज्याप्राप्तः नृपतिः भवेत्। अधुना जगद्गुरु मण्डलेश्वरः, महान्त इत्यादि पदवीधारकाः परिव्राजकाः भवन्ति॥२२॥

हिन्दी — नवमभावगत चन्द्र को यदि कोई भी ग्रह नहीं देखता हों तो राजयोग में उत्पन्न जातक भी दीक्षित होता है॥२२॥

सुरगुरुशशिहोरास्वार्किदृष्टासु धर्मे
गुरुरथ नृपतीनां योगजस्तीर्थकृत् स्यात्॥
नवमभवनसंस्थे मन्दगेऽन्यैरदृष्टे
भवति नरपयोगे दीक्षितः पार्थिवेन्द्रः॥ २३॥

संस्कृत — सुरगुरुः=बृहस्पतिः, शशी-चन्द्रः, होरा=जन्मलग्नम्, आर्किदृष्टासु=शनिनाऽवलोकितासु, अथ=तथा, गुरुः धर्मे=नवमभावे स्यात्तदा नृपतीनां योगजः=राजयोगे उत्पन्नोजातः, तीर्थकृत्=तीर्थभ्रमण शास्त्रसंवर्धन-शीलो च भवेत्। यथा माण्डव्य वचनम् (बृ.जा.भटो. १५-४)—

गुरुशशिलग्ना दृष्टा कोणेन तु नवमगो यदि गुरुः।
नरनाथजन्मजातः शास्त्रकरो भवति न च नृपः॥

नवमभवन संस्थे, मन्दगे=शनैश्चरे, अन्यैः=अन्यैर्ग्रहैः, अदृष्टे=नावलोकिते तत्र नरपयोगे=कस्मिंश्चिद्राजयोगे उत्पन्ने सति तदा जातो नरः, दीक्षितः=प्रव्रज्यामुपगतः, पार्थिवेन्द्रः=राजाधिराजः स्यात्। अस्मिन् योगे राजयोगाभावे सति तदाऽपि जातो नरः प्रव्रज्याप्राप्नुयादिति। यथा (बृ.जा.भटो. १५-४)—

"नवमस्थाने सौरो यदि स्थितः सर्वदर्शनविमुक्तः।
नरनाथयोगजातो नृपोऽपि दीक्षान्वितो भवति॥
नृपयोगस्याभावे योगेऽस्मिन् दीक्षितो नरो जातः।
निःसन्दिग्धं प्रवदेद्योगस्यास्य प्रभावेण" इति॥२३॥

हिन्दी — बृहस्पति-चन्द्रमा और लग्न पर यदि शनि की दृष्टि हो और बृहस्पति नवमभाव में स्थित हो तो जातक राजयोग में उत्पन्न होकर भी तीर्थ (शास्त्र) करने वाला होता है। नवम् स्थान में स्थित शनि यदि किसी से देखा न जाता हो तो जातक राजयोग में उत्पन्न होकर भी दीक्षित राजाधिराज होता है॥ २३॥

सितार्कभौमार्कसुता महाबलाः सुरेज्यभूनन्दनभानुभानुजाः।
कुजेन्दुवागीशशनैश्चरा इमे समं गताश्चेज्जनयन्ति तापसम्॥ २४॥

संस्कृत — सितार्केति। सितार्क भौमार्कसुताः=शुक्र-सूर्य-कुज-शनैश्चराः, अथवा सुरेज्यभूनन्दनभानुभानुजाः=गुरु-भौम-सूर्य-शनैश्चराः, अथवा कुजेन्दुवागीशशनैश्चराः=कुज-चन्द्र-गुरु-शनैश्चराः ग्रहाः यदि महाबलाः=पूर्णबलयुक्ताः इमे समं गताः=एकत्र सम्मिलिताः चेत्तदा तापसं=वानप्रस्थं जनयन्ति। अर्थादस्मिन्योगे जातो नरस्तपस्वीयोगी भवेत्॥२४॥

हिन्दी — शुक्र-सूर्य-मङ्गल और शनि अथवा बृहस्पति-मङ्गल-सूर्य-शनि अथवा मङ्गल-चन्द्रमा-बृहस्पति व शनि पूर्णबली होकर एक स्थान में स्थित हों तो जातक तपस्वी होता है॥ २४॥

ग्रहैश्चतुर्भिः सहिते तदीशे केन्द्रत्रिकोणोपगतैस्तु मुक्तः।
चतुर्ग्रहैः कर्मगतैः प्रव्रज्यां प्राप्नोति जातः कथितो मुनीन्द्रैः॥ २५॥

संस्कृत — ग्रहैरिति। तदीशे=दशमेशे केन्द्रत्रिकोणोपगतैः कैश्चिच्चतुर्भिर्ग्रहैः सहिते तदा जातो नरः मुक्तो (मोक्षको) भवेत्। यैः कैश्चिच्चतुर्ग्रहैः कर्मगतैः=दशमस्थानगतैः तदा जातः प्रव्रज्यां=वैराग्यं प्राप्नोति इति मुनीन्द्रैः कथितः। अस्मिन्योगे चतुर्णां ग्रहाणां मध्ये यो वलीयान् भवेत्तत्कृतां प्रव्रज्यां जातकः प्राप्नुयादिति॥ २५॥

हिन्दी — यदि दशमभाव का स्वामी केन्द्र या त्रिकोण में चारग्रहों के साथ हो तो जातक मुक्त (मोक्षगामी) होता है। चारग्रह यदि दशमभाव में हों तो जातक संन्यास ग्रहण करता है, ऐसा मुनियों का कथन है॥ २५॥

कुजार्कसोमार्कजदेववन्दितैः कुजार्कचन्द्रात्मजमन्दभार्गवैः।
रवीन्दुभौमासितदानवप्रियैर्भवन्ति जाता व्रतसंयुता नराः॥ २६॥

संस्कृत — कुजार्केति। कुजार्कसोमार्कजदेववन्दितैः=भौम-सूर्य-चन्द्र-शनि-गुरुभिः, अथवा कुजार्कचन्द्रात्मजमन्दभार्गवैः=भौम-सूर्य-बुध-शनि-शुक्रैः, अथवा रवीन्दुभौमासितदानवप्रियैः=सूर्य-चन्द्र-कुज-शनि-शुक्रैः, यत्र कुत्रापि सम्मिलितैः तदा जाता नराः व्रतसंयुताः=परिव्राजक-व्रत आचरणशीला भवन्ति॥ २६॥

हिन्दी — भौम-सूर्य-चन्द्र-शनि और गुरु अथवा भौम-सूर्य-बुध-शनि व शुक्र अथवा सूर्य-चन्द्र-भौम-शनि व शुक्र यदि एकराशि में स्थित हो तो जातक व्रत से युक्त (संयमी) होता है॥ २६॥

सितारसूर्यात्मजजीवभास्करैः कुजेन्दुदेवेज्यबुधार्किनन्दनैः।
सितेन्दुपुत्रार्किशशाङ्कभूमिजैर्भवेत्तपस्वी वनपर्वताश्रयः॥ २७॥

संस्कृत — सितारेत्यादि। शुक्र-कुज-शनि-गुरु-सूर्यैः अथवा भौम-चन्द्र-गुरु-बुध शनैश्चरैः अथवा शुक्र-बुध-शनि-चन्द्र-भौमैर्यत्र कुत्रापि सम्मिलितैस्तदा जातः वनपर्वताश्रयः=वनगिरिवासीः साधु तपस्वी च भवति॥२७॥

हिन्दी — शुक्र-मङ्गल-शनि-गुरु और सूर्य अथवा भौम-चन्द्र-गुरु-बुध व शनि अथवा शुक्र-बुध-शनि-चन्द्र व भौम के एकत्र होने पर जातक पर्वत तथा वन में निवास करनेवाला साधक तपस्वी होता है॥ २७॥

चन्द्रेन्दुपुत्रारसुरेज्यभास्करैः शशाङ्कसूर्येन्दुजशुक्रभूमिजैः।
एकर्क्षगैरेभिरिह प्रजाता भवन्ति विद्यामुनयोऽस्त्र दूषकाः॥ २८॥

संस्कृत — चन्द्रेत्यादि। चन्द्र-बुध-भौम-गुरु-सूर्यैः अथवा चन्द्र-सूर्य-बुध-शुक्र-भौमैः यत्रकुत्राप्येकत्र सम्मिलितैः गतैः तदा प्रजाता नरा अस्त्र-दूषकाः=आयुधनिन्दका विद्यामुनयः=सद्ज्ञानप्रवर्त्तको मुनयो भवन्ति॥ २८॥

हिन्दी — चन्द्र-बुध-भौम-गुरु और सूर्य अथवा चन्द्र-सूर्य-बुध-शुक्र व भौम यदि एक राशि में हों तो जातक अस्त्र शस्त्रों (युद्धों) के विरोधी तथा विद्याव्यसनी प्रवृत्ति का होता हैं ॥ २८ ॥

रवीन्दुभौमेन्दुजजीवभार्गवैः सुधाकराराकिगुरुज्ञभास्करैः ।
कुजेन्दुसूर्यार्किसितेन्दुसम्भवैर्भवेदमीभिः सहितैर्व्रती नरः ॥ २९ ॥

संस्कृत — रवीत्यादि। रवीन्दुभौमेन्दुजजीवभार्गवैः=सूर्य-चन्द्र-कुज-बुध-गुरु-शुक्रै अथवा सुधाकराराकिगुरुज्ञभास्करैः=चन्द्र-कुज-शनि-गुरु-बुध-सूर्यैः अथवा कुजेन्दुसूर्यार्किसितेन्दु मङ्गल-चन्द्र-सूर्य-शनि-शुक्र-बुधैर्ग्रहैः यत्रकुत्राप्येकत्रस्थानगतैः तदा जातो नरो व्रती भवेत्। अर्थादस्मिन्न् योगे जातो नरो व्रत-यम-नियमकृद्भवति ॥ २९ ॥

हिन्दी — सूर्य-चन्द्र-मङ्गल-बुध-गुरु और शुक्र अथवा चन्द्र-मङ्गल-शनि-गुरु-बुध व सूर्य अथवा मङ्गल-चन्द्र-सूर्य-शनि-शुक्र व बुध यदि एक राशि में हों तो जातक व्रती (व्रत नियम पालक) होता है ॥ २९ ॥

सितेन्दुजीवार्कजभानुलोहितैः सितार्किभौमार्कमृगाङ्कसोमजैः ।
एकत्र यातैर्गगनाटनैः सदा भवन्ति जाता मुनयस्तपस्विनः ॥ ३० ॥

संस्कृत — सितेन्द्वित्यादि। सितेन्दुजीवार्कजभानुलोहितैः=शुक्र-चन्द्र-गुरु-शनि-सूर्य-मङ्गलैः, अथवा सितार्किभौमार्कमृगाङ्क सोमजैः=शुक्र-शनि-गुरु-सूर्य-चन्द्र-बुधैः एकत्रयातैरेभिः गगनाटनैः=ग्रहैः तदा जाता नराः तपस्विनः मुनयो सदा भवन्ति ॥ ३० ॥

हिन्दी — शुक्र-चन्द्रमा-वृहस्पति-शनि-सूर्य और मङ्गल अथवा शुक्र-शनि-बृहस्पति-सूर्य-चन्द्र व बुध यदि एक राशि में हों तो जातक ऋषि-तपस्वी होता है ॥ ३० ॥

कुजज्ञवागीशसितासितारुणैः सितार्किजीवेन्दुजचन्द्रभूमिजैः ।
बलप्रधानैर्गगनाटनैर्यदा यदि प्रजातः पुरुषस्तपस्विनाम् ॥ ३१ ॥

संस्कृत — कुजज्ञेति। कुजज्ञवागीशसितासितारुणैः=मङ्गल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि-सूर्यैः, अथवा सितार्किजीवेन्दुजचन्द्रभूमिजैः=शुक्र-शनि-गुरु-बुध-चन्द्र-मङ्गलैः, बलप्रधानैः गगनाटनैः=पूर्णबलान्वितैर्ग्रहै यदि एकत्रगतैः तदा॰जातस्तपस्विनां मध्ये पुरुषः=प्रमुखो भवति ॥ ३१ ॥

हिन्दी — मङ्गल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि और सूर्य अथवा शुक्र-शनि-बृहस्पति-बुध-चन्द्र व मङ्गल यदि पूर्ण बली होकर एकराशि में रहें तो जातक उच्चकोटि का तपस्वी होता है ॥ ३१ ॥

रवीन्दुवागीशदिनेशपुत्रैः शनैश्चरेन्द्वर्कसितैरवश्यम्।
रवीन्दुपुत्रक्षितिजामरेज्यैस्तपस्विनो मूलफलाशनाः स्युः॥ ३२॥

संस्कृत — रवीन्द्विति। रवीन्दुवागीशदिनेशपुत्रैः=सूर्य-चन्द्र-गुरु-शनैश्चराः, अथवा शनैश्चरेन्द्वर्कसितैः=शनि-चन्द्र-सूर्य-शुक्राः, अथवा रवीन्दुपुत्रक्षितिजामरेज्यैः=सूर्य-बुध-भौम-गुरुवो यत्रकुत्राप्येकत्र गताः स्युस्तदा जाता नरा अवश्यमेव मूलफलाशनाः=कन्द-मूल-फलाहारी तपस्विनः स्युः॥ ३२॥

हिन्दी — सूर्य-चन्द्रमा-बृहस्पति और शनि अथवा शनि-चन्द्र-सूर्य व शुक्र अथवा सूर्य-बुध-मङ्गल व बृहस्पति के एकराशि में रहने पर जातक अवश्य ही कन्द-मूल-फल भोजन करने वाला तपस्वी होता है॥३२॥

वक्रार्कसोमात्मजदानवेज्या भौमेन्दुवागीशशाङ्कपुत्राः।
एकर्क्षगा जन्मनि यस्य जन्तोर्भवेद्यती वल्कलभूतिधारी॥ ३३॥

संस्कृत — वक्रेति। वक्रार्कसोमात्मजदानवेज्या=मङ्गल-सूर्य-बुध-शुक्राः, अथवा भौमेन्दुवागीशशशाङ्कपुत्राः=मङ्गल-चन्द्र-गुरु-बुधाः यस्य जन्तोः=नरस्य, जन्मनि=जन्मकाले एकर्क्षगा=एकराशिगताः भवन्ति स जन्तो=जातकः वल्कलभूतिधारी=वल्कलं कौपीनं, भूतिः=भस्मलेपकः यति=परिव्राजको भवेदिति॥ ३३॥

हिन्दी — जन्मकाल में भौम-सूर्य-बुध तथा शुक्र अथवा भौम-चन्द्र-गुरु व बुध यदि एकराशि में हों तो वह जातक वल्कल और विभूति धारण करनेवाला योगी होता है॥ ३३॥

शशीन्दुसूनुक्षितिजार्कपुत्रा बुधक्षमापुत्रसुरेज्यसौराः॥
एकत्रगा यस्य नरस्य जातं कुर्वन्ति ते तापसमेव शान्तम्॥ ३४॥

संस्कृत — शशीति। शशीन्दुसूनुक्षितिजार्कपुत्रा=चन्द्र-बुध-मङ्गल-शनैश्चराः, अथवा बुधक्षमापुत्रसुरेज्यसौराः=बुध-मङ्गल-गुरु-शनैश्चराः यस्य नरस्य जन्मकाले एकत्रगतास्युः ते=तथाभूता ग्रहाः तं जातं नरं एव=निश्चयेन, शान्तं=निर्मल हृदयं तापसं कुर्वन्ति॥ ३४॥

हिन्दी — जन्मसमय में यदि चन्द्र-बुध-मङ्गल और शनि अथवा बुध-मङ्गल-बृहस्पति व शनि यदि एकराशि में हों तो वह जातक शान्तचित्तवाला तपस्वी होता है॥ ३४॥

चन्द्रार्कभार्गवशशाङ्कसुता बलिष्ठा
भौमेन्दुपुत्रसितभास्करनन्दनाश्च।
मन्देन्दुवाक्पतिसिता नियतं यतीनां
कुर्वन्ति जन्म कृतवल्कफलाशनानाम्॥ ३५॥

संस्कृत — चन्द्रार्केति। चन्द्रार्कभार्गवशशाङ्कसुता=चन्द्र-सूर्य-शुक्र-बुधाः, अथवा भौमेन्दुपुत्रसितभास्करनन्दन=मङ्गल-बुध-शुक्र-शनैश्चराः, अथवा मन्देन्दुवाक्पतिसिता=शनि-चन्द्र-गुरु-शुक्राः यदि बलिष्ठाः भूत्वाः एकराशिगता सन्ति तदा नियतम्=अवश्यमेव कृतवल्कफलाशनानां यतीनां जन्म कृत्=कुर्वन्ति। अर्थादस्मिन्योगे जातो नरो कौपीनधारी कन्दमूलफलाहारी तपस्वी भवतीत्यर्थः ॥ ३५ ॥

हिन्दी — चन्द्र-सूर्य-शुक्र व बुध अथवा भौम-बुध-शुक्र व शनि अथवा शनि-चन्द्र-बृहस्पति-शुक्र यदि बलवान् हों तथा एकराशि में स्थित हों तो जातक वल्कल धारण करनेवाला और फल भोजन करनेवाला योगी होता है ॥ ३५ ॥

रविशशिकुजशुक्रैश्चन्द्रभौमज्ञसूर्यै-
गुरुसितरविमन्दैः शुक्रमन्देन्दुजीवैः।
कुजबुधसितचन्द्रैरेभिरेकर्क्षयातै-
र्भवति गिरिवनौकास्तापसः सर्ववन्द्यः ॥ ३६ ॥

संस्कृत — रवीति। रविशशिकुजशुक्रैः=सूर्य-चन्द्र-मङ्गल-शुक्राः, अथवा चन्द्रभौमज्ञसूर्यैः=चन्द्र-मङ्गल-बुध-सूर्याः, अथवा गुरुसितरविमन्दै=गुरु-शुक्र-सूर्य-शनैश्चराः, अथवा शुक्रमन्देन्दुजीवैः=शुक्र-शनि-चन्द्र-गुरुवः, अथवा कुजबुधसितचन्द्रैः=मङ्गल-बुध-शुक्र-चन्द्राः यदि जन्मकाले एकर्क्षगताः भवेत्तदा जातकः गिरिवनौकाः=गिरयः (पर्वता) वनानि (विपिनानि) च, ओकः (आश्रय) तापसः=तपश्चरः सर्ववन्द्यो=सर्वजनवन्द्यो महात्मा भवति ॥ ३६ ॥

हिन्दी — सूर्य-चन्द्र-भौम-शुक्र अथवा चन्द्र-भौम-बुध-सूर्य अथवा बृहस्पति-शुक्र-रवि-शनि अथवा शुक्र-शनि-चन्द्र-बृहस्पति अथवा कुज-बुध-शुक्र-चन्द्र यदि एक राशि में स्थित हों तो जातक पर्वत और वन में रहनेवाला सर्ववन्दित तपस्वी होता है ॥ ३६ ॥

सितशशिकुजगुरुमन्दैश्चन्द्रेन्दुजभौमगुरुशुक्रैः ।
रविकुजशनिबुधजीवैर्भवति यती दुःखितो दीनः ॥ ३७ ॥

संस्कृत — सितेति। सितशशिकुजगुरुमन्दैः=शुक्र-चन्द्र-मङ्गल-गुरु-शनैश्चराः, अथवा चन्द्रेन्दुजभौमगुरुशुक्रैः=चन्द्र-बुध-भौम-गुरु-शुक्राः, अथवा रविकुजशनिबुधजीवैः=सूर्य-भौम-शनि-बुध-गुरुवः यदि जन्मकाले एक राशौ गताः स्युस्तदा जातो नरो दुःखितः दीनः यती=तपस्वी भवति ॥ ३७ ॥

हिन्दी — शुक्र-चन्द्र-भौम-गुरु-शनि अथवा चन्द्र-बुध-भौम-गुरु-शुक्र

अथवा सूर्य-भौम-शनि-बुध-बृहस्पति यदि एक राशि में स्थित हों तो जातक दुःखी और दीन तपस्वी होता है ॥ ३७ ॥

कुजार्किदेवेज्यसितेन्दुपुत्रैः शनीनसोमात्मजचन्द्रभौमैः ।
नभश्चैरैरेकगृहोपयातैर्जटाधरा वल्कलधारिणः स्युः ॥ ३८ ॥

संस्कृत — कुजार्कीति। कुजार्किदेवेज्यसितेन्दुपुत्रैः=मङ्गल-शनि-गुरु-शुक्र-बुधाः, अथवा शनीनसोमात्मजचन्द्रभौमे=शनि-सूर्य-बुध-चन्द्र-भौमाः जन्मकाले यदा एकराशिगताः स्युस्तदा ते जातकाः जटाधराः वल्कलधारिणः परिव्राजको भवेयुः ॥ ३८ ॥

हिन्दी — भौम-शनि-बृहस्पति-शुक्र और बुध अथवा शनि-सूर्य-बुध-चन्द्र व भौम यदि एकराशि में हो तो जातक जटा और वल्कल धारण करने वाला तपस्वी होता है ॥ ३८ ॥

भान्विन्दुजेन्दुकुजजीवसुरारिपूज्यैः
सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रदिनेशपुत्रैः ।
प्राप्नोत्यवश्यमिह तापसरूपमेभि-
रेकर्क्षगैर्गगनचारिभिरायताक्षः ॥ ३९ ॥

संस्कृत — भान्विन्द्विति। भान्विन्दुजेन्दुकुजजीवसुरारिपूज्यैः=सूर्य-बुध-चन्द्र-मङ्गल-गुरु-शुक्राः, अथवा सूर्येन्दु भौमगुरुशुक्रदिनेशपुत्रैः=सूर्य-चन्द्र-मङ्गल-गुरु-शुक्र-शनैश्चराः जन्मकाले यदि एकत्रस्थिता स्युस्तदा जातः आयताक्षः=विशालनयनयुतो सन् अवश्यमेव इह तापस रूपं प्राप्नोति ॥ ३९ ॥

हिन्दी — सूर्य-बुध-चन्द्र-भौम-गुरु और शुक्र यदि एकराशि में हों तो अथवा सूर्य-चन्द्र-भौम-गुरु-शुक्र व शनि एकराशि में हो तो जातक विशालाक्ष (बड़े नेत्रवाला) तपस्वीं होता है ॥ ३९ ॥

न वीक्षितश्चेदितरग्रहेन्द्रैर्लग्नाधिपः पश्यति भानुपुत्रम्।
लग्नाधिपं वा यदि भानुपुत्रः संन्यासयोगो हि बलेन हीनम्॥ ४० ॥

संस्कृत — न वीक्षितेति। लग्नाधिपः=लग्नेशः इतरग्रहेन्द्रैः=स्वेतरैर्ग्रहैः, न वीक्षितः=नदृष्टस्तथाभूतश्चेद्यदि भानुपुत्रं=शनैश्चरं, पश्यति, अथवा भानुपुत्रः=शनैश्चरः, बलेन हीनं=निर्बलं, लग्नाधिपं=जन्मलग्नेशं पश्यति तदा, हि=निश्चयेन संन्यासयोगः भवति। अस्मिन्विषये वराहमिहिरः लग्नाधिपस्य स्थाने जन्माधिपोऽर्थाज्जन्मकालीनचन्द्रस्यराशीश उक्तः। यथा (बृहज्जातके १५।३)—

"जन्मेशोऽन्यैर्यद्यदृष्टोऽर्कपुत्रं पश्यत्यार्किर्जन्मपं वा बलोनम्।
दीक्षां प्राप्नोत्यार्किदृक्काणसंस्थे भौमार्क्यंशे सौरदृष्टे च चन्द्रे" इति ॥ ४० ॥

हिन्दी — यदि लग्नेश शनि को देखता हो और अन्य ग्रह लग्नेश को न देखते हों तो अथवा यदि शनि बलहीन लग्नेश को देखता हो तो संन्यासयोग होता है। अर्थात् इस योग में जातक संन्यासी होता है ॥ ४० ॥

चन्द्रे भानुसुतेक्षिते रविसुतद्रेक्काणयाते तथा
भिक्षुर्मन्दनिरीक्षिते रविसुतक्षोणीसुतांशे विधौ।
संन्यासप्रदखेचरः सगुलिकः साहिध्वजो वा यदि
क्रूरांशोपगतः करोति विगताचारं यतीनां ध्रुवम्॥ ४१ ॥

संस्कृत — चन्द्रे इति। रविसुतद्रेक्काणयाते=शनैश्चरस्य द्रेष्काणगते चन्द्रे, तत्र भानुसुतेक्षिते=शनिना विलोकिते सति तदा जातो भिक्षुः=भिक्षाशी (परिव्राजको) भवेत्। विधौ=चन्द्रे, रविसुतक्षोणीसुतांशे=शनैश्चरःभौमस्य नवांशे गते तथा मन्देन निरीक्षिते सति तदा जातः भिक्षुः भवेत्। संन्यासप्रदखेचरः=प्रव्रज्यायोगकारको ग्रहः, सगुलिकः=गुलिकेन सहितः, अथवा साहिध्वजः=राहुणा वा केतुना सहितः, यदि क्रूरांशोपगतः=पापनवांशगतः स्यात् तदा जातं नरं यतीनां=तपस्विनां समवाये-(मध्ये) विगताचारम्=आचारहीनं ध्रुवम् निश्चयेन करोतीतिभावः।

यथा सवार्थचिन्तामणौ ८।१०-३, ४ —

'शनेर्दृगाणे कुमुदात्मबन्धौ मन्देक्षिते तादृशयोगमाहुः।
मन्दांशके भूमिसुतांशके वा मन्देक्षिते चन्द्रयुते तथैव॥
संन्यासयोगाधिपतौ सराहौ क्रूरांशके वा गुलिकेन युक्ते।
संन्यासवैकल्यमुदाहरन्ति भङ्गो भवेतस्य शुभैर्विहीने' इति॥ ४१ ॥

हिन्दी — शनि के द्रेष्काण में स्थित चन्द्र को शनि देखता हो तो अथवा भौम के नवांश में स्थितचन्द्र यदि शनि से दृष्ट हो तो जातक भिक्षु (संन्यासी) होता है। संन्यासकारक ग्रह यदि गुलिक के साथ अथवा राहु-केतु से युक्त होकर, क्रूरग्रह के नवांश में हो तो जातक आचरण से भ्रष्ट यती (संन्यासी) होता है ॥४१ ॥

रविलुप्तकरैरदीक्षिता बलिभिस्तद्गतभक्तयो नराः।
अभियाचितमात्रदीक्षिता निहतैरन्यनिरीक्षितैरपि॥ ४२ ॥

संस्कृत — रविलुप्तकरैरिति। पूर्वोक्तयोगेषु चतुरादिग्रहेषु रविलुप्तकरैः=रविणा सहास्तंगतैर्बलिभिर्ग्रहैः तदा जाता नराः अदीक्षिताः= अलब्धप्रव्रज्या भवन्ति, किन्तु तद्गतभक्तयो भवन्ति, अर्थात् चतुरादिग्रहेषु यावन्तो ग्रहा बलयुक्तास्तावन्तः स्वस्वप्रव्रज्याकारकाः भवन्ति। तत्र यावन्तो अस्तमिताः स्युस्तावन्तः खलु स्वप्रव्रज्यां न प्रयच्छन्ति, परञ्च ते नराः आस्तिकाः भवन्ति। निहतैः=अन्यग्रहेण युद्धे पराजितैः बलिभिस्तैर्ग्रहै अन्यैश्च निरीक्षितैः=दृष्टैरपि

तदा जाता नरा अभियाचितमात्रदीक्षिताः=दीक्षार्थप्रयन्तशीलाः भवन्ति न तु दीक्षिताः भवन्तीति भावः। सूर्येण सह स्थितो ग्रहः स्वकालांशाधिकान्तरितश्चेन्नास्तं परं यदि सूर्याद् द्वितीयराशावपि यदि स्वकालांशान्तर्गतस्दाऽस्तम् गच्छतीति। यथाग्रहाणां कालांशा—

दस्रेन्दवः १२, शैलभुवश्च १७, शक्रा १४,
रुद्राः ११, खचन्द्राः १०, तिथयः १५ क्रमेण।
चन्द्रादितः काललवा निरुक्ता ज्ञशुक्रयोर्वक्रगयोर्द्विहीनाः १२, ८॥

इति, सि. शि.॥

पराजित ग्रहस्य लक्षणं वराहमिहिरः वृहत्संहितायामुक्तम् (१७-९)।

दक्षिणदिक्स्थः परुषी वेपथुरप्राप्य सन्निवृतोऽणुः।
अधिरूढो विकृतो निष्प्रभो विवर्णश्च यः स जितः॥ ४२॥

हिन्दी — पूर्वोक्त प्रव्रज्याकारक ग्रह यदि सूर्य के सानिध्यवश अस्त हों तो वह जातक अदीक्षित (दीक्षाहीन) यती होता है। यदि वे बलवान रहें तो वह जातक आस्तिक-श्रद्धालु होता है परन्तु यती नहीं होता। यदि वे युद्ध में पराजित और अन्य ग्रहों से दृष्ट हों तो वह जातक दीक्षा के लिए याचना मात्र करता है परन्तु दीक्षित नहीं होता॥ ४२॥

जिविका विचार—

अर्थाप्तिः पितृजननीसपत्नमित्रभ्रातृस्त्रीभृतकजनाद्दिवाकराद्यैः।
होरेन्द्वोर्दशमगतैर्विकल्पनीया भेन्द्वर्कास्पदपतिगांशनाथवृत्त्या॥ ४३॥

संस्कृत —अर्थाप्तिरिति। होरेन्द्वोः=लग्नं चन्द्रः स्तयोदशमगतैः=तयोः कर्मस्थानगतै दिवाकराद्यैः=सूर्यादिग्रहैः, पितृ-जननी-सपत्न-मित्र-भ्रातृ-स्त्री-भृतकजनात् क्रमेण अर्थाप्तिः (अर्थागमं) विकल्पनीया=चिन्तनीया। लग्नाच्चन्द्राद्वा यदि रविर्दशमे स्यात् तदा पितृतो धनागमं, चन्द्रे सति तदा जनन्याः=मातुः सकाशाद्धनाप्ति, भौमे दशमगते तदा सपत्नात्=शत्रुतः (ज्ञातिवर्गात्), बुधे सति तदा मित्रात्=सुहृदः सकाशात्, गुरौ तदा भ्रातुः सकाशात्, शुक्रे सति तदा स्त्रीतः, शनौ सति तदा भृतकजनात्= सेवकाद्धनप्राप्तिर्वाच्या। लग्नादशमे ग्रहाभावे यदि स्यात्तदा चन्द्राद्दशमस्थग्रहाद्विचार्यः। यदि चेत् लग्नाद्दशमगतः चन्द्रादपि दशमगतस्तदा द्वाभ्यामेव विचारयेत्। अर्थात् द्वावपि ग्रहौ स्वस्वदशायां स्वस्वोक्त जनादर्थाप्तिं कुरुतः। अत्र बलीयान् ग्रहेण विशेषेणेति विचार्यम्। यदि लग्नाच्चन्द्रादपि दशमे ग्रहरहिते सति तदा भेन्द्वर्का=लग्न-चन्द्र-सूर्याणाम्, आस्पदपतयः=दशमेशाः, गा=गता, येषु अंशेषु=नवांशेषु, तेषां नवांशानां ये ये नाथास्तेषां या या वृत्तिस्तया वृत्त्या

जातस्यार्थाप्तिर्वाच्या। अर्थात् लग्नाच्चन्द्रात् सूर्याच्च दशमेशा (ग्रहा) यत्र यत्र नवांशे स्थिताः स्युस्तत्तन्नवांशेशग्रहाणां वृत्तिद्वारा जातस्यार्थाप्तिः वाच्या। यथा चोक्तम् भगवान्गार्गिः (बृ.जा.भट्टो. १०-१)—

उदयाच्छशिनो वाऽपि ये ग्रहा दशमस्थिताः।
ते सर्वेऽर्थप्रदा ज्ञेयाः स्वदशासु यथोदिताः॥
लग्नार्करात्रिनाथेभ्यो दशमाधिपतिग्रहः।
यस्मिन्नवांशे तत्कालं वर्त्तते तस्य यः पतिः॥
तद्वृत्त्या प्रवदेद्वित्तं जातस्य बहवो यदा।
भवन्ति वित्तदास्तेऽपि स्वदशासु विनिश्चतम्॥ इति॥ ४३॥

हिन्दी — लग्न या चन्द्र से दशवें में जो ग्रह हो उसग्रह के अनुसार व्यक्ति से द्रव्यप्राप्ति होती है। जैसे—लग्न या चन्द्र से दशम में यदि सूर्य हो तो पिता से, चन्द्र हो तो माता से, भौम हो तो शत्रु से, बुध हो तो मित्र से, गुरु हो तो भाई से, शुक्र हो तो स्त्री से और शनि हो तो सेवक से द्रव्य मिलता है। यदि लग्न और चन्द्र दोनों से दशम में ग्रह हों तो वे अपनी-अपनी दशा में फल देते हैं। यदि दशवें में बहुत ग्रह हों तो वो अपनी-अपनी दशा में उक्त व्यक्ति द्वारा धन देते हैं। यदि लग्न या चन्द्र से दशवें में कोई ग्रह न हो तो लग्न-चन्द्र-सूर्य इनसे दशमभाव के पति जिस नवांश में रहे उसकास्वामी जो ग्रह हो उसव्यक्ति से धन प्राप्ति होता है॥ ४३॥

अर्थाप्तिं कथयेद्विलग्नशशिनोर्मध्ये बली यस्ततः।
कर्मेशस्थनवांशराशिपवशाद् वृत्तिं जगुस्तद्विदः॥ ४३$\frac{1}{2}$॥

संस्कृत — अर्थाप्तिमिति। विलग्नशशिनोः=जन्मकालीनलग्नचन्द्रयोर्मध्ये यो बली=बलवत्तरो भवेत् ततः=तस्मात्, अर्थाप्तिं=धनलाभं भवेत्। अर्थात् लग्नचन्द्रयोर्बलाधिकात् अर्थलाभं कथयेत्। यथा साावल्याम् (३३-२)—

होरेन्द्वोर्बलयोगाद्यो दशमस्तत्स्वभावजं कर्म।
तस्याधिपपरिवृद्ध्या वृद्धिर्ज्ञेयाऽन्यथा हानिः॥

कर्मेशस्थनवांशराशिपवशात्=लग्नाच्चन्द्राद्वा दशमेशः यस्मिन्नवांशे स्थितः तत्रवांशराशिपतिवशात्, वृतिं=जीविकां, तद्विदः=ज्योतिषविदो विद्वांसः, जगुः=ऊचुः। अर्थात् लग्नचन्द्रयोर्दशमेशस्थनवांशपतिवशात् पूर्वोक्ता वृत्तिस्तयैव तस्य जातस्य जीवनयापनं भवेदिति॥ ४३$\frac{1}{2}$॥

हिन्दी — लग्न और चन्द्रमा इन दोनों में जो बलवान् हों उससे दशमभाव का स्वामी जहाँ स्थित हो उस नवांशपति से जीविका का विचार करना चाहिए॥ ४३$\frac{1}{2}$॥

भैषज्योर्णतृणाम्बुधान्यकनकव्यापारमुक्तादिकै- ।
रन्योन्यागमदूतवृत्तिभिरिनस्यांशे तु जीवत्यसौ॥ ४४॥

संस्कृत — अधुना ग्रहाणां वृत्तय उच्यन्ते। इनस्यांशे=सूर्यस्य नवांशे (कर्मेशस्यनवांशस्याधिपति यदि सूर्यः) सति तदा जातकः भैषज्यं=औधषम्, उर्णा=मेपादिकलोम (उन, रेशम) तृणानि=लतापत्राणि अम्बुधान्यं=जलजात-मन्नम्, कनकं=सुवर्णम्, मुक्तादिकैः=मौक्तिकादीनां (मोती शुक्ति) एषां व्यापारेण, अन्योन्यागमदूतवृत्तिभिः=परस्परं (संवाद प्रेषक) भृत्यकार्यैश्च जीवति=जीवनयापनं करोति॥ ४४॥

हिन्दी — लग्न या चन्द्र से दशमभाव का स्वामी यदि सूर्य के नवांश में हो तो जातक औषध (दवा), उन, तृण, जल से उत्पन्न अन्न से, सोना, मोती आदि के व्यापार से, परस्पर आने जाने सम्बन्धी दूतवृत्ति से जीविका निर्वाह करता है॥ ४४॥

जलोद्भवानां क्रयविक्रयेण कृषेश्च मृद्वाद्यविनोदमार्गात्।
राजाङ्गनासंश्रयवित्तरूपान्निशाकरांशे वसनक्रयाद्वा॥ ४५॥

संस्कृत — निशाकरांशे=चन्द्रनवांशे (कर्मेशस्य नवांशस्याधिपतियदि चन्द्रः) सति तदा जलोद्भवानां=जलोत्पन्नानां शङ्खमुक्तादीनां व्यापारेण, कृषेः=कृषि कर्मतश्च, मृद्वाद्यविनोदमार्गात्=मृतिकानिर्मित वाद्ययन्त्रात् मोदादिकर्मणा, राजाङ्गनानां=राजमहीषीनां, संश्रयेण=आश्रयणेन लब्धं=प्राप्तं यद्वित्तं=धनं तस्मात्, वा वसनक्रयात् वस्त्रादेः क्रयविक्रयव्यापारेण जीवनं यापयति॥ ४५॥

हिन्दी — लग्न या चन्द्र से दशमभाव का स्वामी यदि चन्द्र के नवांश में रहे तो जल में उत्पन्न होने वाले वस्तु (शंख, मोती, मखाना, सिंहारा) के व्यापार से, कृषि (खेती) से, मिट्टी के खिलौने, बाजा आदि विनोदसामग्री से, राजा की स्त्री से प्राप्त धन से या वस्त्र के व्यापार से जीविका निर्वाह होता है॥ ४५॥

धातोर्विवादेन रणप्रकारात् स्तब्धाग्निवादात् कलहप्रवृत्त्या।
जीवत्यसौ साहसमार्गरूपाद् धरासुतांशे यदि चोरवृत्त्या॥ ४६॥

संस्कृत — धरासुतांशे=भौमनवांशे=कर्मेशस्य नवांशपतौ भौमे सति तदा जातः धातोः (सुवर्णरजतादिः) विवादेन=व्यवहारेण (विवादो (मुकदमा) व्यवहारः स्यादित्यमरः) रणप्रकारात्=मल्ल (कुश्ती) संग्रामात्, स्तब्धाग्नि=स्तब्धानलस्य शान्ताग्नेः (कोयला) वादात्=व्यवहारतः। कलहप्रवृत्या=आततायी (गुंडा रंगदार) प्रवृत्या, साहसमार्गरूपात्=जादूसर्कस आदि कार्यात्, चोरवृत्या=तस्करकर्मणा च जीवनयापनंकरोति॥ ४६॥

हिन्दी — लग्न से या चन्द्र से दशमेश यदि भौम के नवांश में हो तो वह जातक धातु (सोना, चाँदी, पीतल आदि) के व्यापार से, मुकदमा लड़ाई से, कोयला

के व्यापार से, कलह से, चोरी से तथा साहसपूर्ण कार्य (सर्कस-जादू) द्वारा निर्वाह करता है ॥ ४६ ॥

शिल्पादिकाव्यागमशास्त्रमार्गाज्ज्योतिर्गणज्ञानवशाद् बुधांशे।
परार्थवेदाध्ययनाज्जपाच्च पुरोहिताद्याज्यवशात् प्रवृत्तिः ॥ ४७ ॥

संस्कृत — बुधांशे=बुधनवांशे=कर्मेशस्यनवांशेशोयदि बुधो भवेत्तदा जातः शिल्पादिना=चित्र-मूर्ति-आदिनिर्माणेन, काव्येन=कविकर्मणा, आगम-शास्त्रमार्गात=तन्त्रादिशास्त्र ज्ञानतः, ज्योतिर्गणज्ञानवशात्=भाग्यगणनावृत्तिना, परार्थवेदाध्ययनाज्जपाच्च=परस्य हेतोः वेदमन्त्राणामध्ययनेन अर्थाज्जय-पाठेन च पुरोहिताद्याज्यादिकर्मवशात्=पौरोहित्यकर्मतो प्रवृत्तिः=जीवनयापनं भवति ॥ ४७ ॥

हिन्दी — लग्न या चन्द्र से दशमेश यदि बुध के नवांश में हो तो जातक का शिल्प (कारीगरी) से, काव्य, पुराण, धर्मशास्त्र के अध्ययनाध्यापन से, ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान से, दूसरे के निमित्त वेद (कर्मकाण्ड) पढ़ने से, जप से, पुरोहिती से और यज्ञ कराने से जीविका निर्वहन होता है ॥ ४७ ॥

जीवांशके भूसुरदेवतानामुपासनाध्यापकरूपमार्गात्।
पुराणशास्त्रागमनीतिमार्गाद्धर्मोपदेशैरकुसीदमाहुः ॥ ४८ ॥

संस्कृत — जीवांशके=कर्मेशस्यनवांशेशो यदि गुरौ भवेत्तदा भूसुर-देवतानाम्=विप्राणां देवानाञ्च, उपासनया=पूजनेन, अध्यापकरूपमार्गात्=छात्रेभ्यःविद्याप्रदानकर्मतः, पुराणशास्त्रागमनीतिमार्गात्=सन्यासी-जगद्गुरु-मण्डलेश्वर वृत्तितः, धर्मोपदेशैश्चाकुसीदं=व्यासवृत्तिः (कथावाचको) स्वजीविकावृत्ति तथा महाजना (सूदखोर) कर्मतः जीवनयापनं मनीषिणः आहुः ॥ ४८ ॥

हिन्दी — लग्न या चन्द्र से दशमभावेश यदि गुरु के नवांश में हो तो जातक की ब्राह्मण-देवता की उपासना करने से, अध्यापन कार्य से, पुराण-शास्त्र-धर्मग्रन्थ के नीतिमार्ग से, धर्मोपदेश या सूद से जीविका चलती है ॥ ४८ ॥

सुवर्णमाणिक्यगजाश्वमूलाद्गवां क्रयाज्जीवनमाहुरार्याः।
गुडौदनक्षारदधिक्रयेण स्त्रियाः प्रलोभेन भृगोः सुतांशे ॥ ४९ ॥

संस्कृत — भृगोः सुतांशे=शुक्रस्य नवांशे यदि चेत्तदा सुवर्ण-माणिक्यगजाश्वादीनां व्यापारतः, गवां क्रयात्=पशुव्यापारतः गुडौदनक्षारदधि-क्रयेण=मिष्ठान्नव्यापारतः स्त्रियाः प्रलोभेन=सौन्दर्यप्रसाधन व्यापारेण च जीवनं आर्या आहुः ॥ ४९ ॥

हिन्दी — लग्न या चन्द्र से दशमेश यदि शुक्र के नवांश रहे तो जातक का

सुवर्ण-मणि-हाथी-घोड़ा-गाय के व्यापार से, गुड़-चावल-नमक दधि से, स्त्रियों के सौन्दर्य-प्रसाधन के व्यापार से जीवनयापन होता है ऐसा विद्वान लोग कहते हैं ॥ ४९ ॥

शन्यंशके कुत्सितमार्गवृत्त्या शिल्पादिभिर्दारुमयैर्वधाद्यैः ॥
विन्यस्तभाराज्जनविप्रलम्भादन्योन्यवैरागममार्गमूलात् ॥५० ॥

संस्कृत — शन्यंशके=शनिनवांशे यदि चेत्तदा कुत्सितमार्गवृत्या= निन्दितकर्मणा, दारुमयैः शिल्पादिभिः=काष्ठमयीमूर्तिचित्रादिरचनया, वधाद्यैः= मांस (छाग-कुक्कुट) विक्रयेण, विन्यस्तभारात्=भार (ट्रांसपोर्ट) वहनात्, जनविप्रलम्भात्=जनानां वञ्चनकर्मतः (एजेन्ट-दलाल), अन्योन्यवैरागम-मार्गमूलात्=परस्परविद्वेषमूलककर्मतश्च (वकील वृतिः) जीवनयापनं भवति ॥ ५० ॥

हिन्दी — लग्न या चन्द्र से दशमभाव का स्वामी शनि के नवांश में यदि हो तो जातक निन्दित कार्यवृत्ति से, लकड़ी के शिल्प से, वध (कसाई कर्म) से, भार ढोने से, लोगों के ठगने से, परस्पर वैर से, जीवनयापन करता है ॥ ५० ॥

सौम्यैश्चतुष्केन्द्रगृहोपयातैः कुलोत्तमा वंशकरा नृपालाः ।
सर्वज्ञधीवित्तयशोगुणाढ्या नरा नृपप्रीतिकराश्च वा स्युः ॥ ५१ ॥

संस्कृत — सौम्यैरिति। सौम्यैः=शुभग्रहैः चतुष्केन्द्रगृहोपयातैः= चतुर्ष्वपि (१/४/७/१०) केन्द्रस्थानेषु यथा सम्भवं स्थितैः तदा जाता नरा कुलोत्तमाः=स्वकीयकुले मान्याः, वंशकराः=कुलवृद्धिकराः, सर्वज्ञधीवित्त-यशोगुणाढ्याः=सर्वज्ञत्व-बुद्धि-धन-कीर्ति-गुणगणैः युताः, नृपालाः=शाशकाः भवन्ति। वा=अथवा नृपप्रीतिकराः=राज्ञामानन्ददायकाः (सेक्रेटरी) भवन्ति। पापैः यदा चतुष्कैन्द्रगतैस्तदाविपरीतं फलं ज्ञेयम्। केषाञ्चित् प्रतिषु पाठभेदं लभ्यते तद्यथा—

पापैश्चतुष्केन्द्रगृहोपयातैर्नीचव्रताचाररताश्च निःस्वाः ।
मूर्खाः परस्त्रीपरवित्तशीलाः शूराः कदाचिन्नृपतिप्रियाःस्युः ॥ इति ॥ ५१ ॥

हिन्दी — चारों केन्द्रस्थानों में यदि में शुभग्रह हों तो जातक अपने कुल में उत्तम-सर्वज्ञ, कुल को बढ़ाने वाला, बुद्धिमान्, धनवान्, यशस्वी, गुणी और राजा को प्रसन्न करनेवाला होता है ॥ ५१ ॥

कर्मकर्मांशगाः सौम्या जातः पुण्यरतः सदा।
पापिनः पापकर्मात्मा चन्द्राद्वा यदि जायते॥ ५२ ॥

संस्कृत — कर्मेति। यदि सौम्याः=शुभग्रहा कर्मकर्मांशगाः= लग्नाद्दशमे अथवा दशमेशस्य नवांशे गताः स्युः (दशमे वा दशमराशिनवांशे सौम्यै) तदा जातः सदा पुण्यरतः=श्रेष्ठकर्मनिरतो भवेत्। यदि पापिनः=पापग्रहाः

कर्मकर्मांशगाः स्युस्तदा जातः सदा कुत्सित्कर्मा भवेत्। चन्द्राद्वा=लग्नात् कर्मणि कर्मांशे च यदि ग्रहाभावें सति तदा चन्द्रात् कर्मकर्मांशे तथाभूते सति तथैव (उपरोक्तवत्) फलं जायते। अत्र कर्मणि कर्मांशे वा सौम्यपापग्रहबलवशाद् फले तारतम्यं ज्ञेयमिति॥५२॥

हिन्दी — लग्न या चन्द्र से दशमभाव में या दशमेश के नवांश में शुभग्रह रहें तो जातक सदा पुण्यकार्य में संलग्न रहता है। यदि पापग्रह हों तो पापी और अधर्मी होता है॥५२॥

कर्मराश्यंशपो यत्र तदीशः पापखेचरः।
धूमादिग्रहसम्बन्धी यदि पापरतो भवेत्॥५३॥

संस्कृत — कर्मराश्यंशप इति। कर्मराश्यंशपः=दशमभावे यो नवांशस्तस्य स्वामी यत्र भवेत् तद्राशीशो यदि पापखेचरस्तथा धूमाद्युपग्रह (२/६) सम्बन्धी स्यात्तदा जातः पापरतः=पापकर्मा भवेदितिभावः॥५३॥

हिन्दी — दशमभावेश जहाँ हो उसस्थान का स्वामी अथवा दशमभाव के नवांश का स्वामी जिसराशि में हो उस राशि का स्वामी पापग्रह हो तथा यदि वह धूमादि उपग्रह का सम्बन्धी हो तो जातक पापकर्म में निरत होता है॥५३॥

सिद्धारम्भः कर्मगे चन्द्रलग्नाद्भानौ भौमे साहसी पापबुद्धिः।
विद्वान् सौम्ये वाक्पतौ राजतुल्यः शुक्रे भोगी भानुजे शोकतप्तः॥५४॥

संस्कृत — सिद्धारम्भ इति। चन्द्रलग्नात्=जन्मकालीनचन्द्रस्थानात् कर्मगे=दशमगते, भानौ=सूर्ये तदा जातः सिद्धारम्भः=सिद्धा (साफल्यता) आरम्भाः (सङ्कल्पाः) यस्य (पूर्णमनोरथ) इति। भौमे=मङ्गले चन्द्राद्दशमे सति तदा जातः साहसी=दृढनिश्चयी पापबुद्धिश्च भवति। सौम्ये=बुधे तथा सति तदा जातः विद्वान्=शास्त्रज्ञो भवति। वाक्पतौ=बृहस्पतौ तथाभूते सति तदा जातः राजतुल्यो भवेत्। शुक्रे तथाभूते सति जाते तदा जातः भोगी=विविध भोग-सुखसौविध्ययुक्तो भवति। भानुजे=शनैश्चरे तथा सति तदा जातः शोकतप्तः= चिन्तामग्नो व्याकुलचित्तो भवेदिति॥५४॥

हिन्दी — चन्द्रस्थित राशि से दशम में यदि सूर्य हो तो जातक सिद्धमनोरथ अर्थात् वह जिसकार्य को आरम्भ करता है उसकी सिद्धि जरूर होती है, मङ्गल हो तो साहसी व पापबुद्धि, बुध हो तो विद्वान्, गुरु हो तो राजासदृश शुक्र हो तो भोगी और शनि हो तो शोक से संतप्त हृदयवाला होता है॥५४॥

चन्द्रात्कर्मगते रवौ सरुधिरे मत्तः परस्त्रीरतो-
ज्योतिर्विच्च सचन्द्रजे जलधनस्त्रीभूषणादिप्रियः।

सिद्धार्थो नृपसंमतश्च सगुरौ शुक्रेण युक्ते नृप-
प्रीतिस्त्रीधनवृद्धिभाक् शनियुते दीनो दरिद्रो भवेत्॥ ५५॥

संस्कृत — चन्द्रादिति। सरुधिरे=भौमेन सहिते सूर्ये यदि चन्द्रात्कर्म(दशम)गते सति तदा जातः मत्तः=मदान्धः, परस्त्रीरतश्च भवेत्। सचन्द्रजे=बुधयुक्ते सूर्ये चन्द्राद्दशमे तदा ज्योतिर्वित्=ज्योतिश्शास्त्रज्ञः, जलधन-स्त्रीभूषणादिप्रियः=जलधनानि (शङ्खमुक्तादि) स्त्रियः भूषणादयः (अलङ्करणादि) प्रियः=इच्छुकः, सगुरौ=गुरुणा सहिते सूर्ये तथाभूते सति तदा जातः सिद्धार्थः=सफलमनोरथः, नृपसंमतश्च=राजप्रियश्च, शुक्रेण युक्ते सूर्ये तथासति तदा जातः नृपप्रीतिस्त्रीधनवृद्धिभाग्, शनियुते सूर्ये चन्द्राद्दशमे सति तदा जातः, दीनः=अप्रसन्नवदनः, दरिद्रः=अधनश्च भवेदिति॥ ५५॥

हिन्दी — चन्द्र से दशम में सूर्य यदि मङ्गल के साथ रहे तो जातक मतवाला तथा परस्त्रीगामी, बुध के साथ रहे तो ज्योतिषी-जलधन-स्त्रीभूषण आदि का प्रिय, बृहस्पति के साथ रहे तो सिद्धमनोरथ व राजसंमत (मन्त्री), शुक्र से युक्त रहे तो राजा का प्रिय तथा स्त्री-धन-की वृद्धिवाला और शनि से युक्त रहे तो दुःखी तथा दीन-हीन होता है॥ ५५॥

चन्द्रात्कर्मणि भूसुते बुधयुते शास्त्रोपजीवी भवेत्
सेज्ये नीचजनाधिपः सभृगुजे वैदेशिकः स्याद्वणिक्।
सार्कौ साहसिकोऽसुतश्च शशिनः कर्मस्थिते बोधने
सेज्ये षण्ढतनुश्च दीनवचनः ख्यातो नृपालप्रियः॥ ५६॥

संस्कृत — चन्द्रादिति। बुधयुते भूसुते=भौमे, चन्द्रात् कर्मणि=दशमस्थानगते सति तदा जातः, शास्त्रोपजीवी=अध्यापनादि जीविकाप्राप्नोति। सेज्ये=गुरुणा युते भौमे चन्द्राद्दशमे सति तदा नीचजनानां (अशिक्षितानां) अधिपः स्यात्। सभृगुजे=शुक्रसहिते भौमे चन्द्राद्दशमे गते सति तदा जातः वैदेशिकः=दूरदेशप्रवासी, वणिक्=व्यापारकार्ये निरतः स्यात्। सार्कौ=शनिना सहिते भौमे तथाभूते सति तदा जातः साहसिकः=उद्यमी असुतः=पुत्रविहीनश्च भवेदिति।

बोधने=बुधे, सेज्ये=गुरुणा सहिते, शशिनः=चन्द्रात्, कर्मस्थिते=दशमस्थानगते सति तदा जातः षण्ढतनुः=नपुंसकः दीनवचनः, ख्यातः=विख्यातः। नृपालप्रियश्च राज्ञप्रियश्च भवेत्॥ ५६॥

हिन्दी — चन्द्र से दशमस्थान में मङ्गल यदि बुध से युक्त हो तो जातक शास्त्रोपजीवी, बृहस्पति से युक्त हो तो नीचों का स्वामी, शुक्र से युत हो तो विदेशी व्यापारी, शनि से युत हो तो साहसी और संतानहीन होता है। चन्द्र से दशवें में बुध

यदि गुरु से युक्त हो तो नपुंसक-दीनवचनबोलनेवाला विख्यात तथा राजप्रिय होता है ॥ ५६ ॥

भाने चन्द्रमसो बुधे सभृगुजे विद्यावधूवित्तवान्
सार्कौ पुस्तकलेखकश्च विषमाचारप्रवृत्तोऽथवा।
जीवे शुक्रयुते तु विप्रजनपो भूपप्रियः पण्डितः
सार्कौ सर्वजनोपतापचतुरो जातः स्थिरारम्भधीः ॥ ५७ ॥

संस्कृत — सभृगुजे=शुक्रेणसहिते बुधे चन्द्रमसः=चन्द्रतः माने= दशमे गते सति तदा जातः विद्यावधूवित्तवान्, सार्कौ=अर्किणा (शनैश्चरेण) सहिते बुधे चन्द्राद्दशमे गते सति तदा जातः पुस्तकलेखकः, अथवा विषमाचरणे प्रवृतः=असमान्यव्यवहारोन्मुखः (सुधारवादी) भवेत्। शुक्रयुते जीवे=गुरौ शुक्रेण युते चन्द्राद्दशमस्थानगते तदा जातः विप्रजनपः=विप्राणामधिपः, भूपप्रियः =राजप्रियः, पण्डितः=ज्ञानवांश्च भवेत्। सार्कौ=शनिना, सहिते गुरौ चन्द्राद्दशमे गति सति तदा जातः सर्वजनोपतापचतुरः=सर्वेषां जनानाम् उपतापने (पीडने) चतुरः (दक्षः कुशलः) सकललोकताडनेसमर्थः, स्थिरारम्भधीः=दृढप्रतिज्ञ-बुद्धिश्च भवेत् ॥ ५७ ॥

हिन्दी — चन्द्रमा से दशम में बुध यदि शुक्र से युक्त हो तो जातक विद्या-स्त्री और धन से युक्त, शनि से युक्त हो तो पुस्तकलेखक अथवा सुधारवादी, चन्द्र से दशम में बृहस्पति यदि शुक्र से युक्त हो तो जातक ब्राह्मणों में मुख्य-राजा का प्रिय और पंडित, शनि से युक्त हो तो जातक सभी को सताने में व्यग्र तथा अपने कार्य के सम्पादन में दृढ़सङ्कल्पबुद्धि का होता है ॥ ५७ ॥

सुगन्धनीलचूर्णादिचित्रकारो भिषग्वणिक्।
कर्मस्थानगते मन्दे सासुरेज्ये निशाकरात् ॥ ५८ ॥

संस्कृत — सुगन्धेति। सासुरेज्ये=असुरेज्येन (शुक्रेण) सहिते, मन्दे =शनैश्चरे, निशाकरात्=चन्द्रस्थानात्, कर्मस्थाने=दशमेगते सति तदा जातः सुगन्धनीलचूर्णादिभिश्चित्रकारः, भिषक्=वैद्यः, वणिक्=व्यापारी च भवेदिति ॥ ५८ ॥

हिन्दी — चन्द्रमा से दशमस्थान में शनि यदि शुक्र से युक्त रहे तो जातक सुगन्धविक्रेता, नील आदि चूर्ण से चित्रकारी करनेवाला, दवाविशेषज्ञ तथा व्यापारी होता है ॥ ५८ ॥

आज्ञाविचार—

आज्ञास्थानाधिपे सौम्ये शुभयुक्तेक्षितेऽपि वा।
शोभनांशगते वाऽपि जातस्त्वाज्ञाधरो भवेत् ॥ ५९ ॥

आज्ञाधिपे मन्दयुते रन्ध्रनाथेन वीक्षिते।
क्रूरांशे केन्द्रराशौ वा क्रूराज्ञां प्रकरोति सः॥ ६०॥

संस्कृत — आज्ञास्थानाधिपेति। आज्ञास्थानाधिपे=दशमेशे, सौम्ये=शुभग्रहे सति अथवा शुभग्रहेण युक्ते वा दृष्टे सति, तथा दशमेशे शोभनांशगते=शुभग्रहनवांशे गतवति तदा जातस्तु आज्ञाधरः=शासनाध्यक्षः भवति। ''निदेशः शासनं च सः'' इत्यमरः (२-८-२५)।

आज्ञाधिपे=दशमेशे, मन्दयुते=शनिनायुते, रन्ध्रनाथेन=अष्टमेशंन, वीक्षिते=निरीक्षिते, क्रूरांशे=पापग्रहस्य नवांशे वा केन्द्रराशौ स्थिते सति तदा सः=जातः क्रूराज्ञां=निकृष्टादेशं प्रकरोति=पालयति॥ ५९-६०॥

हिन्दी — यदि दशमभाव का स्वामी शुभग्रह हो और वह शुभग्रहयुक्त हो अथवा शुभग्रह उसको देखते हों अथवा दशमेश शुभनवांश में प्राप्त हो तो जातक आज्ञा देनेवाला होता है॥ ५९॥

यदि दशमेश शनि से युक्त हो और अष्टमेश उसको देखता हो तथा दशमेश क्रूरांश या केन्द्रराशि में स्थित हो तो वह जातक क्रूर आज्ञा करनेवाला होता है॥ ६०॥

कर्कटस्थे निशानाथे गुरुशुक्रनिरीक्षिते।
पारावतादिभागस्थे सत्कीर्तिर्धनवान् भवेत्॥ ६१॥

संस्कृत — कर्कटस्थेति। निशानाथे=चन्द्रे, कर्कटस्थे=कर्कराशिस्थे, गुरुशुक्रनिरीक्षिते=गुरुशुक्राभ्यां वीक्षिते तथा पारावतादिगोपुरांशे वैशेषिकांशे गते सति तदा जातः सत्कीर्तिः=परोपकार्यकृत्, धनवांश्च भवेत्॥ ६१॥

हिन्दी — यदि चन्द्र कर्कराशि में स्थित हो और उसको बृहस्पति-शुक्र देखते हों, तथा चन्द्रमा यदि अपने पारावतादि अंशभाग में हो तो जातक सत्कीर्तियुक्त धनी होता है॥ ६१॥

मानेशे शुभसंयुक्ते शुभमध्यगतेऽपि वा।
शुभग्रहांशके वाऽपि कीर्तिमानभिमानवान्॥ ६२॥

संस्कृत — मानेश इति। मानेशे=दशमेशे शुभेन युक्ते शुभानां मध्ये स्थिते च अग्रेस्पष्टम्॥६२॥

हिन्दी — दशमभावेश शुभग्रह से युक्त हो अथवा शुभग्रह के मध्य में हो अथवा शुभग्रह के नवांश में हो तो जातक कीर्तिमान् और अभिमानी होता है॥ ६२॥

पापेक्षिते कर्मणि पापयुक्ते मानाधिपे हीनबलोपयाते।
जातोऽपवादी विगताभिमानः स्वकर्मतेजोबलकीर्तिहीनः॥ ६३॥

संस्कृत — पापेक्षिते इति। कर्मणि=दशमे भावे पापेक्षिते=पापग्रहेणावलोकिते, अथवा पापयुक्ते, मानाधिपे=दशमेशे, हीनबलोपयाते=

दौर्बल्यताप्राप्ते सति तदा जातो नरः अपवादी=कलङ्कयुतः, विगताभिमानः मानहीनः, स्वकर्मणा-तेजसः-बलेन-कीर्त्या च हीनो भवति ॥६३॥

हिन्दी — दशमभाव में बलहीन दशमेश हो और वह पापग्रह से दृष्ट-युक्त हो तो जातक अपवादी-अभिमान रहित तथा अपने कर्म से-तेज से-बल से-कीर्ति से रहित होता है ॥ ६३ ॥

कर्मेशतन्नवांशेशौ शनिसम्बन्धसंयुतौ।
षष्ठाधिपयुतौ दृष्टौ बहुदारान्वितो भवेत्॥ ६४॥

संस्कृत — कर्मेशेति। कर्मेशतन्नवांशेशौ=दशमभावेशः तथा तन्नवांशपतिः एतौ द्वौ यदि शनिसम्बन्धसंयुतौ=शनैश्चरस्य सम्बन्धिनौ (शनिना-दृष्टौ-युतौ, राशिगतौ वा मित्रौ) भवेतां तथा षष्ठाधिपेक्षितयुतौ=षष्ठेशेन दृष्टौ वा युतौ भवेतां तदा जातो नरो बहुदारान्वितः=बहुभार्यायुतो भवेत् ॥६४॥

हिन्दी — दशमेश और उसका नवांशेश दोनों ही यदि शनि से सम्बन्ध करते हों और षष्ठेश से युक्त या दृष्ट हों तो जातक बहुत स्त्रियों से युक्त होता है ॥ ६४ ॥

भूसुनुक्षितिराशिपौ च बलिनौ केन्द्रत्रिकोणायगौ
कर्मेशे भृगुचन्द्रवीक्षितयुते कृष्यादिगोवित्तवान्।
सम्बन्धी यदि कर्मणः शशिसुतो वाणिज्यशीलः सदा
सौम्यासौम्ययुते तु सात्त्विकतमोनिद्री विमिश्रेऽन्यथा॥ ६५॥

संस्कृत — भूसूनुक्षितिति। भूसूनुक्षितिराशिपौ=भौमश्चतुर्थेशश्चैतौ द्वौ च बलिनौ भूत्वा केन्द्रत्रिकोणायगौ (१-४-७-१०-५-९-११ गतौ) तथा कर्मेशे=दशमेशे भृगुचन्द्राभ्यां वीक्षिते=दृष्टे, वा युते=सहिते सति तदा जातो नरो कृष्यादिगोवित्तवान्=कृषि-गो-धन=पशुधनयुक्तो भवेत्। शशिसुतः=बुधः यदि कर्मणः=दशमभावस्य सम्बन्धी=सम्बन्धचतुष्टय (दृष्टि-युति राशिगत-मित्र) युतो भवेत्तदा जातः सदा वाणिज्यशीलः=व्यापारकर्मयुतो स्यात्। दशमेभावे सौम्यासौम्ययुते=शुभपापसहिते क्रमेण सात्त्विकतमोनिद्री भवेत्। यथा दशमे शुभग्रहयुते तदा सात्त्विकनिद्री (अपेक्षितनिद्रा ''योगीसदृश''), दशमे पापग्रहयुते तदा तमोनिद्री (गर्हितनिद्रा रोगी-आलसी) भवेत्। विमिश्रे=दशमे शुभपापाभ्यां सहिते सति तदन्यथा=रजोनिद्री (भोगी) भवेदिति ॥ ६५ ॥

हिन्दी — भौम और चतुर्थेश यदि बली होकर १-४-७-१०-५-९-११ भावों में रहें और कर्मेश शुक्र व चन्द्र से दृष्ट या युत हो तो जातक कृषि और गो-धन से युक्त होता है। यदि बुध दशमभाव से सम्बन्धित रहे तो जातक सदा व्यापार करने वाला होता है। दशमभाव यदि शुभग्रह से युत हो तो जातक सात्त्विक निद्रावाला, तथा

पापग्रह से युत हो तो तमो निद्रावाला एवं यदि मिश्रित (शुभ और पाप) ग्रह से युत हो तो मिश्रित (रजो-तमो) निद्रावाला होता है ॥६५॥

लाभभाव विचार—

लाभस्थानेन लग्नादखिलधनचयप्राप्तिमिच्छन्ति सर्वे
लाभस्थानोपयातः सकलबलयुतः खेचरो वित्तदः स्यात्।
भानुश्चेज्ज्ञातिवर्गादतिधनमुडुपो मातृवर्गेण भौमः
स्वोत्थाच्चान्द्रिर्यदिष्टप्रभुबिबुधसुहृन्मातुलैर्वित्तमेति ॥६६॥

संस्कृत — लाभस्थानेनेति। लग्नात् लाभस्थानेन=आयभावेन अखिलधनचयप्राप्तिं=सर्वेषामेव धनानां चयं=वृद्धिं, प्राप्तिं=लाभं च सर्वे जना इच्छन्ति। अखिलधनवृद्धिलाभमेकादशभावतो विचारयेदिति भावार्थः। यः कोऽपि खेचरः=ग्रहः सकल बलयुतः=पूर्णबलयुतः सन् लाभस्थानोपयातः= एकादशभावगतः स्यात्तदासौ वित्तदः=धन-लाभप्रदायको भवेत्। सूर्यश्चेद्यदि लाभे पूर्णबलयुतो तदा ज्ञातिवर्गाल्लाभः उडुपः=चन्द्रस्तदा मातृवर्गेण=मातृमाता-महीमातृष्वसृभ्यः, भौमश्चेत्तदा स्वोत्थात्=भ्रातृवर्गात्, चान्द्रिः=बुधश्चेत्तदा इष्टः= स्वजनवर्गेण, प्रभुः=स्वामी (मालिक), विबुधः=देवो ब्राह्मणश्च, सुहृत्=मित्रम्, मातुलः=मातृभ्रातावर्गैः वित्तं=धनम्, एति=प्राप्नोति ॥ ६६ ॥

हिन्दी — लग्न से ग्यारहवें भाव द्वारा सम्पूर्ण धनप्राप्ति का विचार करना चाहिए ऐसा सभी आचार्यों का मत है। पूर्णबली ग्रह यदि लाभस्थान में रहे तो वह धनप्रदायक होता है। बलवान् सूर्य यदि लाभस्थान में रहे तो अपने जातिवर्ग से, चन्द्र हो तो मातृवर्ग से, भौम हो तो भ्रातृवर्ग से, बुध हो तो मालिक-देवता-मित्र आदि से और मामा से धन प्राप्त होता है ॥ ६६ ॥

जीवो यच्छति वेदशास्त्रयजनाचारादिपुत्रैर्द्धनं
शुक्रः स्त्रीजनकाव्यनाटककलासंगीतविद्यादिभिः।
दासीदासकृषिक्रियार्जितधनं धान्यं समृद्धं शनि-
र्विप्रादिद्युचरेण वीक्षितयुते विप्रादयो वित्तदाः॥६७॥

संस्कृत — जीवः=गुरुः सबलो लाभस्थाने स्यात् तदा वेदशास्त्रय-जनादीनामाचारादीना=अध्ययनाध्यापनयज्ञादिकर्मतः, पुत्रैश्च धनं यच्छति= प्राप्नोति। शुक्रः तदवद् भवेत्तदा स्त्रीजनैः, काव्यादिना, नाटकेन, कलाभिः (काष्ठ-हस्त-शिल्पादिभिः) सङ्गीतविद्यादिभिश्च धनं प्राप्नोति। शनिः लाभे पूर्णबलसहितो भवेत्तदा दासी-दास-कृषि-क्रियाभिः=सेवकवृत्या कृषिकर्मणा चोपार्जितं धनं, धान्यं समृद्धं (विभवं) प्राप्नोति। एकादशे विप्रादिद्युचरेण=

ब्राह्मणवर्णग्रहेण वीक्षिते वा युते तदा विप्रादयो वित्तदा भवन्ति। अर्थात् गुरुशुक्रौ पूर्णबलौ एकादशे स्थितौ वा लाभस्थान वीक्षकौ स्याताम् तदा जातस्य ब्राह्मणवर्णेन धनाप्तिः। सूर्यभौमौ चेत्तदा क्षत्रियवर्णेन चन्द्रः स्यात्तदा वैश्यवर्णात्, बुधः स्यात्तदा शूद्रवर्णात्, शनि चेत्तदा अन्त्यजैः (नीचवर्गात्) धनाप्ति-ज्ञेयेति ॥ ६७ ॥

हिन्दी — बृहस्पति हो तो वेदशास्त्र-यज्ञादि कर्म से तथा पुत्र से, शुक्र हो तो स्त्रीवर्ग तथा काव्य-नाटक-कला-सङ्गीत-विद्या से, शनि हो तो दासी-दास-कृषिक्रिया आदि से उपार्जित धन-धान्य से युत होता है। लाभस्थान यदि ब्राह्मणादि (गुरु-शुक्र) ग्रह से युत दृष्ट हो तो ब्राह्मणादि वर्ग से धनप्राप्त होता है ॥ ६७ ॥

आयस्थः शुभखेचरः शुभधनं पापस्तु पापार्जितं
मिश्रैर्मिश्रधनं समेति मनुजस्तज्जातकोक्तं वदेत्।
लाभस्थानगतः समस्तगुणवानिष्टाधिकश्चेद्बली
जातो यानविभूषणाम्बरवधूभोगादिविद्याधिकः ॥ ६८ ॥

संस्कृत — आयस्थ=लाभस्थः, इष्टाधिक=अधिकाधिकः अन्यत् स्पष्टार्थम् ॥ ६८ ॥

हिन्दी — लाभस्थान में शुभग्रह हो तो शुभप्रकार से, पापग्रह हो तो पाप प्रकार से, मिश्रगृह हो तो शुभ तथा पाप दोनों प्रकार से धनलाभ होता है। लाभस्थान में अधिक बलवान् ग्रह रहें तो जातक समस्त गुणसंयुक्त, मित्रवाला, यान (वाहन), विभूषण, वस्त्र व स्त्री भोगादि से परिपूर्ण विद्वान् होता है ॥ ६८ ॥

वित्तेशायगृहाधिपौ तनुपतेरिष्टग्रहौ चेद्धनं
सत्कर्मामरविप्रपुण्यविषये दानादियोग्यं वदेत्।
आयस्थो विबलः पराजितबलो नीचारिदुःस्थानपो
रेकायोगकरो यदि प्रतिदिनं कुर्वीत भिक्षाटनम् ॥ ६९ ॥

संस्कृत — वित्तेशेति। वित्तेशायगृहाधिपौ=धनेशलाभेशौ यदि तनुपतेः=लग्नेशस्य, इष्टग्रहौ=मित्रग्रहौ तदा जातस्य धनं सत्कर्म=यज्ञाद्यनुष्ठाने, अमर=देवचरित्र व्याख्याने, विप्र=अध्ययनाध्यापने, पुण्यविषये=तीर्थ-क्षेत्रादौ दानादियोग्यं भवतीति वदेत्। विबलः=बलहीनः, वा युद्धे पराजितः, वा नीचारिदुःस्थानपः=नीचराशिगतः-शत्रुगृहगतः-दुःस्थान (६-८-१२) पतिर्वा ग्रहो यदि आयस्थः=एकादशस्थानगतः स्यात्तदा रेकायोगकरः= दारिद्र्ययोगकरः (६/२१) स्यादर्थादसौ जातकः भिक्षाटनं प्रतिदिनं कुर्वीत। अर्थात् जातो नरो भिक्षुकः भवेदिति भावः ॥ ६९ ॥

हिन्दी — द्वितीय और एकादश के स्वामी यदि लग्नेश के मित्र हों तो

उसका धन सत्कर्म-देवता-विप्र-पुण्यविषयकदान आदि के योग्य होता है। एकादश भाव में निर्बल-पराजित-नीचगत-शत्रुगृहस्थ-दुःस्थानपति और रेकायोगकर्ता ग्रह एकादश रहे तो जातक प्रतिदिन भिक्षाटन करनेवाला होता है॥ ६९॥

लाभेशे दिनपेऽथवा शशधरे भूपालतुल्याश्रयाद्
भौमे मन्त्रिजनाग्रजानुजकृषिद्वारैर्धनं लभ्यते।
विद्याबन्धुसुतैः सुधाकरसुते जीवे निजाचारतः
शुक्रे रत्नवधूगजादिपशुर्भिमन्दे कुवृत्त्या श्रियम्॥ ७०॥

संस्कृत — स्पष्टार्थः सरलार्थः॥ ७०॥

हिन्दी — लाभेश यदि सूर्य या चन्द्र लाभेश हों तो राजा के समान धनवान् व्यक्ति के आश्रय से, मङ्गल वर्ग हो तो मन्त्री, ज्येष्ठ तथा छोटे भाई और कृषिकर्म से, बुध हो तो विद्या-बन्धु-पुत्र से, वृहस्पति हो तो आचार-विचार से, शुक्र हो तो रत्न-स्त्री तथा हाथी आदि पशुओं से और शनि हो तो दुष्कर्म द्वारा धन लाभ होता है॥ ७०॥

लाभस्थानपतौ विलग्नभवनात् केन्द्रत्रिकोणस्थिते
लाभे पापसमन्विते तु धनवान् तुङ्गादिराश्यंशके।
तत्तत्कारकवर्गतो बलवशाद् योगानुसारं वदेत्
तत्तत्खेटदशापहारसमये वित्तं वदेत्तद्दिशि॥ ७१॥

संस्कृत — लाभस्थानेति। एकादशेशः विलग्नभवनात्=जन्मलग्नात् केन्द्रे वा त्रिकोणे स्थिते अथवा लाभे=एकादशभावे, पापसमन्विते=केनचित् पापग्रहेण सहिते, अथवा लाभेशे तुङ्गादिराश्यंशके स्थिते सति तदा जातो नरः धनवान् भवेत्। यथोक्तं सवार्थचिन्तामणौ (८ लाभभाव २)—

"लाभेश्वरे केन्द्रगते त्रिकोणे वा समन्विते।
लाभे वा पापसंयुक्ते धनलाभमुदीरयेत्"॥

केन प्रकारेण धनलाभो भवेत्—बलवशात् योगानुसारं च=धनप्राप्तियोगे यो ग्रहो योगकृद्भवेत्तद्ग्रहस्यानुसारं (अल्पाधिक्यम्) तत्तत्कारकवर्गतः=स योगकारक ग्रहो यद्भावस्य कारको भवेत्तद्वर्गवशाल्लाभं वदेत्। यदा कुत्र च स्थाने धनलाभं भवेदित्याह। तस्य योगकृतो ग्रहस्य दशापहारसमये, तद्दिशि च= योगकृद् ग्रहो यद्दिगधिपो (२। २३) भवेतस्यां दिशि वित्तं=धनलाभं वदेदिति॥ ७१॥

हिन्दी — एकादश स्थान का स्वामी लग्न से केन्द्र या कोण में (१-७-४-१०-५-९) पापग्रह के साथ स्थित हो, या लाभेश उच्च आदि राशि में या उच्च नवांश में हो तो जातक धनवान् होता है। लाभकारक ग्रह के अनुसार उस ग्रह की जाति द्वारा

धन लाभ कहना चाहिए। लाभकारक ग्रह की दशा-अन्तर्दशा में उसी ग्रह की दिशा में धन का लाभ कहना चाहिए॥ ७१ ॥

व्ययभाव से विचारणीय—

लग्नादन्त्यतदीशभानुतनयैर्दूराटनं दुर्गतिं
दातृत्वं शयनादिसौख्यविभवं वित्तक्षयं चिन्तयेत्।
रिःफस्थे चरखेचरे चरगृहे दुःस्थाननाथेऽथवा
नानादेशवनाटनो हि शनिना युक्तेऽथवाऽऽलोकिते॥ ७२ ॥

संस्कृत — लग्नादिति। दूराटनं=दूरदेशादियात्रा, दुर्गतिं=शारीरिक कष्ट-यातनादिकम्, द्रातृत्वं=दानकर्म (त्यागम्), शयनादिसौख्यविभवं= पर्यङ्कादिसुखवैभवम्, वित्तक्षयं=धननाशश्चैतानि विषयानि लग्नादन्त्यतदीश-भानुतनयैः=द्वादशभाव-व्ययेश-शनैश्चरैः, चिन्तयेत्=विचारयेत्। चरखेचरे= चरप्रकृतिग्रहे चरगृहे=चरराशौ (२/४७) अथवा दुःस्थाननाथे=षडष्टव्यय-भावेशे चरगृहे सति रिष्फस्थे=व्ययभावमुपगते तत्र शनिना युक्ते अथवा आलोकिते च सति तदा जातो हि=निश्चयेन, नानादेशवनाटनः=विविधदेशेषु वनेषु च भ्रमणशीलो भवति॥ ७२ ॥

हिन्दी — लग्न से व्ययभाव, उसके स्वामी और शनि से दूरदेश की यात्रा-दुर्गति-दान-शयनादिसौख्य-विभव और धननाश का विचार करना चाहिए। व्ययभाव में चरग्रह हो अथवा दुष्टस्थान का स्वामी चरराशि में होकर शनि से युक्त या दृष्ट रहे तो जातक देश-देशान्तर और वन में भ्रमण करनेवाला होता है॥ ७२ ॥

व्यय विचार—

रिःफस्थानगते शुभे शुभयुते सौम्यग्रहालोकिते
तन्नाथे विबलेऽरिनीचगृहगे वित्तव्ययाभावभाक्।
रिःफस्थे विबले बलेन सहिते रिःफाधिपे वित्तहा
मिश्रव्योमचरान्विते तु सकलं मिश्रव्ययं देहिनाम्॥ ७३ ॥

संस्कृत — रिष्फेति। शुभे=कस्मिंश्चिच्छुभग्रहे, शुभयुते=शुभग्रहेण सहिते रिष्फस्थानगते=द्वादशभावगते, तत्र सौम्यग्रहेणावलोकिते, तथा तन्नाथे= व्ययेशे विबले=बलहीने अथवा अरिनीचगृहगे सति तदा जातः वित्तव्यया-भावभाक्=धनव्ययरहितः (धनसञ्चयी) भवेत्। रिष्फस्थे विबले=व्ययभावे बलहीने ग्रहे, रिष्फाधिपे=द्वादशेशे बलेन सहिते चेत्तदा जातः वित्तहा= धननाशकरः भवेत्। द्वादशेशे वा व्ययभावे मिश्रव्योमचरान्विते=पापसौम्यग्रहेण सहिते तदा तु देहिनां=जनिमताम् सकलं मिश्रव्ययं=साधारणं (धर्माऽधर्मेऽपि) धनव्ययं वदेदिति॥ ७३ ॥

हिन्दी — व्ययभाव में शुभग्रह यदि शुभग्रह से युक्त-दृष्ट हो और व्ययभाव का स्वामी निर्बल, नीचराशि में या शत्रुगृह में हो तो जातक के धन का व्यय नहीं होता है। व्ययभाव में निर्बल ग्रह हो व्ययेश बल से युक्त रहे तो धननाश होता है। व्यय भाव या द्वादशेश मिश्रग्रह (शुभ और पाप) से युक्त हों तो मिश्रव्यय (शुभ तथा अशुभ में खर्च) होता है ॥ ७३ ॥

इष्टव्ययो भवति शोभनवर्गयाते दुष्टव्ययो विबलखेटयुतेक्षिते वा।
यत्कारकद्युचरवर्गजनादनर्थं जातः समेति बलहीनदशापहारे ॥ ७४ ॥

संस्कृत — इष्टव्यय इति। द्वादशे द्वादभावेशे वा शोभनवर्गयाते सबलखेटयुतेक्षिते तदा जातः इष्टव्ययः=शुभकार्ये व्ययकृद् भवति। यदि विबलखेटयुतेक्षिते तदा जातः दुष्टव्ययः=कुमार्गे व्ययकृद्भवति। बलहीनदशापहारे=व्ययस्थो ग्रहो अथवा व्ययेशो यदि बलहीनः स्यात्तदा तस्य दशान्तर्दशायां, यत्कारकद्युचरवर्गजनात्=योगकारकौ ग्रहौ यत्कारको (जातिकारकौ) भवेत्तद्वर्णजनात् जात अनर्थं=कष्टं दुर्गतिं, समेति=प्राप्नोति ॥ ७४ ॥

हिन्दी — व्ययेश यदि शुभवर्ग में हो तो सन्मार्ग से व्यय होता है। निर्बल ग्रह से युत-दृष्ट यदि व्ययेश हो तो अपव्यय होता है। अपव्ययकारक ग्रह जिसवर्ण (जाति) का हो उसीवर्ण के द्वारा उस (निर्बल ग्रह) की दशाभुक्ति में जातक कष्ट पाता है ॥ ७४ ॥

क्रूरग्रहे बलवति व्ययगेऽरिनाश-
स्थानाधिपे कृषिधनस्थितिनाशकः स्यात्।
रिःफे चतुर्द्विपदभे सह तत्पदेन
खेटेन सर्वपशुभृत्यविनाशमेति ॥ ७५ ॥

संस्कृत — क्रूरग्रह इति। अरिनाशस्थानाधिपे=षष्ठाष्टमभावेशे, बलवति क्रूरग्रहे=बलवान पापग्रहे च यदि व्ययगे=द्वादशभावमुपगते तदा जातः कृषिधनस्थिति नाशकः स्यात्। रिष्फे=द्वादशे चतुर्द्विपदभे=चतुष्पद (१/१६) भे अथवा द्विपद (१/१६) भे तत्पदेन खेटेन चतुष्पदग्रहेण (शनि भौम), द्विपदग्रहेण (गुरु शुक्र) वा सह स्थिते (चतुष्पदराशौ चतुष्पदग्रहेण, द्विपदराशौ द्विपदग्रहेण) तदा जातस्य सर्व-पशु-भृत्यविनाशमेति=नष्टं भवति ॥ ७५ ॥

हिन्दी — बलवान् पापग्रह यदि षष्ठेश या अष्टमेश होकर व्ययभाव में रहे तो जातक के कृषि-धन तथा स्थान का नाश होता है। व्ययभाव में यदि चतुष्पद या द्विपद राशि हो और उसमें वैसा ही ग्रह (चतुष्पद या द्विपद) भी हो तो जातक के सभी पशुओं तथा नौकरों का नाश होता है ॥ ७५ ॥

विप्रादिखेचरयुते सति विप्रमुख्यैः

स्त्रीवर्गतस्तु तरुणीखचरेण युक्ते।
रिःफे नरग्रहयुते रिपुणा सुहृद्भे
जातः सुहृज्जनवशाद्धननाशमेति॥ ७६॥

संस्कृत — विप्रादीति। रिष्फे=व्ययभावे विप्रादिखेचरयुते सति विप्रमुख्यैः=ब्राह्मणादिभिः धनव्ययो वाच्यः। अर्थात् गुरुशुक्रौ द्वादशे सति तदा ब्राह्मणवर्णेन, कुजार्कौ सति तदा क्षत्रियेण, चन्द्रे सति तदा वैश्येन, बुधे सति तदा शूद्रेण, शनिराहुकेतुर्वा सति तदा म्लेच्छैः व्ययो वाच्य इति। तरुणी-खेचरेण=स्त्रीग्रहेण चन्द्रशुक्रौ युक्तौ रिष्फे तदा तु स्त्रीवर्गतः=योषिज्जनवशाद्धन-व्ययः भवति। रिष्फे नरग्रहयुते=सूर्य-कुज-गुरुयुते तदा रिपुणा=शत्रुवर्गेण धन-व्ययोभवति। रिष्फे सुहृद्भे=मित्रग्रहराशौ, अर्थान्नरग्रहस्यासौ व्यय भावः सुहृद्गृहं चेत्तदा जातः सुहृज्जनवशात्=मित्रवर्गेण धननाशमेति=धनव्ययो भवति॥ ७६॥

हिन्दी — यदि व्ययभाव विप्रादिग्रह से युक्त हो तो विप्रादिजाति से, स्त्रीसंज्ञकग्रह से युक्त हो तो स्त्रीवर्ग से, यदि पुरुषग्रह से युक्त हो तो शत्रुद्वारा और मित्रराशिस्थग्रह यदि व्ययभाव में हो तो मित्रवर्ग से जातक का धननाश होता है॥ ७६॥

दान विचार—

त्यागी शुभग्रहयुते कृषकश्च धर्मी
पापेऽवसानगृहगे तु विवादशीलः।
नेत्रामयः पवनकृच्चपलोऽटनःस्या-
दुच्चस्वमित्रभवने तु परोपकारी॥ ७७॥

संस्कृत — त्यागीति। रिष्फेः=व्ययभावे शुभग्रहयुते तदा जातः त्यागी=दानीः, कृषकः=कृषिकृत, धर्मी=धर्मपरायणश्च भवति। पापे=पापग्रहे अवसानगृहगे=व्ययभावगते तु विवादशीलः=कटुभाषी, पवनकृत्=वातव्याधि-युक्तः नेत्रामयः=दृष्टिरोगयुक्तः, चपलः=चञ्चलः, अटनः=इतस्ततः भ्रमणशीलः स्यात्। व्ययभावे यदि पापग्रहे उच्च-स्व-मित्र भवने गतवति तदा तु जातः परोपकारी भवेदिति॥ ७७॥

हिन्दी — यदि व्ययभाव में शुभग्रह हों तो जातक त्यागी, कृषक और धर्मात्मा होता है। व्ययभाव पापग्रह से युक्त हो तो जातक विवादी, वातरोग से युक्त, नेत्ररोगी, चञ्चलमति और घूमनेवाला होता है। उच्च-स्वगृही या मित्रगृही ग्रह यदि व्ययभाव में हो तो जातक परोपकारी होता है॥ ७७॥

भानुर्वा कृशशीतगुर्व्ययगतो वित्तस्य नाशं नृपै—
र्भौमो नाशयतीन्दुजेक्षितयुतो नानाप्रकारैर्द्धनम्।

वागीशेन्दुसुता यदि व्ययगता वित्तस्य संरक्षकाः
सौम्यः शुक्रयुतेक्षितो यदि नृणां शय्यासुखं जायते ॥ ७८ ॥

संस्कृत — भानुरिति। भानुः=सूर्यः, वा कृशशीतगुः=बलहीनचन्द्रः, व्ययगतः=द्वादशभावगतः स्यात्तदा नृपैः=राजभिः, वित्तस्य=धनस्य नाशं भवेत्। भौमः=कुजः व्यये इन्दुजेक्षितयुतः=बुधेन निरीक्षितो वा युतः स्यात् तदा जातस्य नानाप्रकारैः=विविधहेतुभिः धननाशं भवेदिति।

वागीशेन्दुसिताः=गुरुचन्द्रशुक्राः यदि व्ययगताः भवेत्तदा ते वित्तस्य संरक्षकाः=रक्षकाः भवन्ति, अर्थात् धनस्य व्ययो न भवति। सौम्यः=बुधः शुक्रेण युक्तो वा दृष्टो यदि व्ययभावे गतस्तदा नृणां=जनिमताम्, शय्यासुखं= शयनादिसुखो जायते=प्राप्यते ॥ ७८ ॥

हिन्दी — सूर्य अथवा क्षीणचन्द्र यदि व्ययभाव में हों तो राजा के द्वारा धन का नाश होता है। व्ययभाव में मङ्गल यदि बुध से युक्त या दृष्ट हो तो अनेक प्रकार से धन का नाश होता है। यदि व्ययभाव में चन्द्र-शुक्र और गुरु हों तो वे धन के संरक्षक होते हैं। व्ययभाव यदि बुध-शुक्र से युक्त या दृष्ट रहे तो जातक को शय्या का सुख होता है ॥ ७८ ॥

शयन विचार—

व्ययेशे स्वोच्चराशिस्थे शुभवर्गसमन्विते।
शुभखेचरसंदृष्टे पर्यङ्कशयनं वदेत् ॥ ७९ ॥

संस्कृत — व्ययेश इति। व्ययेशः (द्वादशभावेशः) स्वोच्चराशिस्थः शुभवर्गगतः शुभग्रहनिरीक्षितश्च भवेत्तदा जातस्य पर्य्यङ्कशयनं-मञ्च=खट्वा शयनसुखं वदेत् ॥ ७९ ॥

हिन्दी — व्ययेश अपनी उच्चराशि में हों, शुभवर्ग में हो और शुभग्रह से दृष्ट हों तो जातक को पर्यङ्क (पलङ्ग) सुख कहना चाहिए ॥ ७९ ॥

विचित्रमञ्चे शयनं व्ययेशे परमोच्चगे।
भाग्यनाथेन वा दृष्टे मणिरत्नविभूषितम् ॥ ८० ॥

संस्कृत — व्ययेशे परमोच्चगते वा=अथवा भाग्यनाथेन=नवमेशेन दृष्टो भवेत्तदा विचित्रमञ्चे=विविधशिल्पसुसज्जितेपर्यङ्के मणिरत्नविभूषितं शयनं=शय्यासुखं लभ्यते ॥ ८० ॥

हिन्दी — यदि व्ययेश परमोच्चस्थान में हो अथवा नवमेश से दृष्ट हो तो विचित्र मणि रत्न से विभूषित शय्या (पलङ्ग) पर शयनसुख कहना चाहिए ॥ ८० ॥

शुक्रे वा रविनन्दने हिमकरे रन्ध्रत्रिकोणस्थिते
तद्गेहे शिथिलीभवेन्नृपतनं जातस्य केत्वन्विते।
निद्रास्त्रीकृकलासगौलिपतनं पापान्विते भार्गवे

भौमे कच्छपदर्शनं बुधयुते जातः श्वदष्टो भवेत्॥ ८१॥

संस्कृत — शुक्रेवेति। शुक्रे रविनन्दने=शनैश्चरे वा=अथवा हिमकरे=चन्द्रे रन्ध्रत्रिकोणस्थिते=अष्टमभावात् त्रिकोण (५-९) स्थिते अर्थात् द्वादशे-चतुर्थे भावे गते, केत्वन्विते=केतुना सहिते च, तद्गेहे=तस्य जातस्य गेहे शिथिली नृपतनं=अकस्मान्मनुष्याणां (निद्रावस्थायां) निपतनं भवेदित्यर्थः। तत्र यदि भार्गवे=शुक्रे पापान्विते सति तदा निद्रास्त्री=सुषुप्ता नारी, कृकलासः=सरटः (गिरगिटः) गौलिः=गौधेयः (विषखोपरा) एषां पतनं भवेत्। यदि तत्र भौमे सति तदा जातस्य कच्छपदर्शनं=स्वप्ने कच्छपस्य दर्शनं भवेत्। यदि बुधयुते सति तदा जातः श्वदष्टो=शुना (कुक्कुरेण) दंशितो भवेत्॥ ८१॥

हिन्दी — शुक्र-शनि या चन्द्र अष्टमभाव से त्रिकोण (लग्न से द्वादश-चतुर्थ) में स्थित हों और केतु के साथ हों तो जातक के घर में नरपतन (निद्रावस्था में किसी अन्य के ऊपर गिरना) होता है। उक्त भावों में यदि पापग्रह से युक्त शुक्र हो तो निद्रित स्त्री, गिरगिट तथा गौलि (विषखोपरा) का पतन होता है। योगकारक यदि मङ्गलग्रह हो तो स्वप्न में कछुआ दिखाई देता है। योगकारक ग्रह बुध से युक्त हो तो कुत्ते से काटा जाना कहना चाहिए॥ ८१॥

मरणोपरान्त गति विचार—

मन्दाहिध्वजसंयुते तु निधनस्थानाधिपेनान्विते
रिःफे दुर्गतिमेति षष्ठपतिना दृष्टेऽथवा मानवः।
जातो याति परं पदं सुरगुरौ लग्ने भृगौ कामगे
कन्यास्थे रजनीकरे यदि धनुर्लग्ने च मेषांशके॥ ८२॥

संस्कृत — मन्दाहीति। निधनस्थानाधिपेन=अष्टमेशेन अन्विते=युते रिष्फे=व्यये भावे, मन्दाहिध्वजसंयुते=शनि राहु-केतुना च सहिते अथवा तत्र षष्ठेशेन निरीक्षिते सति तदा जातो मानवो दुर्गतिं=यातनां (नरकम्) एति=

दुर्गति योग

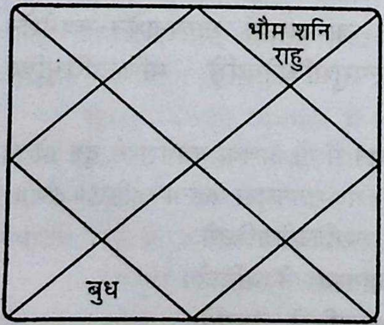

मोक्ष योग

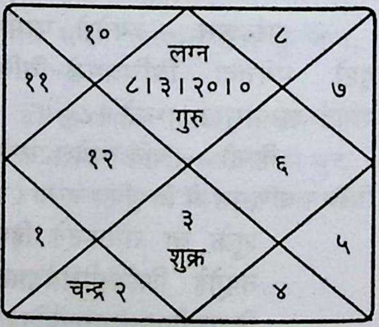

प्राप्नोति। जातः सुरगुरौ=बृहस्पतौ लग्ने=जन्मलग्ने भृगौ=शुक्रे, कामगे=सप्तमभावगते, रजनीकरे=चन्द्रे कन्यास्थे=कन्याराशिस्थे सति तदा जातो नरः परंपदं=निर्वाण पदं (मोक्षस्थानम्) याति=गच्छति।

'यदि धनुर्लग्ने च मेषांशके' अर्थाद्धनूराशौ मेषनवांशे च (८/३°/२०'००'') लग्नं भवेदिति। अत्र गुरुः स्वराशौ लग्नगतः शुक्रः मिथुने सप्तमगतः, चन्द्रः षष्ठे वृषगतश्च भवेदिति चक्रे स्पष्टमेव॥ ८२॥

हिन्दी — यदि व्ययभावस्थ शनि, राहु या केतु तथा अष्टमेश से युक्त हो, अथवा षष्ठेश से दृष्ट हो तो मरने के बाद दुर्गति होती है। यदि बृहस्पति लग्न में हो, शुक्र सप्तम में हो, कन्याराशि में चन्द्र हो और धनुलग्न में मेष का नवांश हो तो जातक परमपद (मोक्ष) प्राप्त करता है॥ ८२॥

दुःस्थे दुष्टगृहाधिपे बलयुते तद्भावपुष्टिं वदे-
दायुःस्थानपतौ तु यत्र विबले तद्भावनाशं तथा।
लग्नेशः शुभखेटवीक्षितयुतो यद्भावयातो बली
तद्भावस्य शुभं करोति विपुलं नीचारिगस्त्वन्यथा॥ ८३॥

इति नवग्रहकृपया वैद्यनाथविरचिते जातकपारिजाते दशम-
एकादश-द्वादशभावफलाध्यायः पञ्चदशः॥ १५॥

संस्कृत — दुःस्थ इति। बलयुते=सबले दुष्टगृहाधिपे=षष्ठाष्टमद्वादशभावेशे, दुःस्थे=षष्ठाष्टमद्वादशभावगते तदा तद्भावपुष्टिं (वृद्धिं) वदेत्। विबले=निर्बले आयुःस्थान पतौ=अष्टमेशे तु यत्र भावे स्थिते तद्भावस्य नाशं वदेत्। अर्थात् विबलोऽष्टमेशो यद्भावगतः तद्भावस्य नाशो भवेत्। बली लग्नेशः शुभखेटेन वीक्षितो वा युतो यद्भावयातो=यस्मिन् भावे गतः तद्भावस्य विपुलम्=अतीव शुभं (वृद्धिं) करोति। लग्नेशो यदि नीचारिगो भूत्वा यद्भावगतो तदा तु अन्यथा=अशुभं-ह्रासं (फलनाशं) करोतीति॥ ८३॥

''प्रज्ञावर्द्धिनी'' संस्कृतटीकायां जातकपारिजातस्य दशम-
एकादश-द्वादश भावफलाध्यायः पञ्चदशः॥

हिन्दी — दुष्ट (६-८-१२) स्थान का स्वामी दुष्टस्थान में बलवान होकर रहे तो उसभाव की पुष्टि होती है। अष्टमभाव का स्वामी निर्बल होकर जिसभाव में रहे, उसभाव का नाश होता है। बलवान लग्नेश शुभग्रह से दृष्ट-युक्त होकर जिस भाव में रहता है उसभाव की वृद्धि करता है। यदि वह नीच राशि या शत्रुगृह का होकर निर्बल रहे तो अन्यथा (अशुभ) फल देता है॥ ८३॥

सत्येन्द्रमिश्रकृत ''प्रज्ञावर्द्धिनी'' हिन्दीटीका में जातकपरिजात का
दशम-एकादश-द्वादश भावफलाध्याय पञ्चदश समाप्त॥

स्त्रीजातकाध्यायः—१६

स्त्रीजातक विचार—

श्रीबलारोग्यसंतानविद्याकीर्तिविवर्द्धनम् ।
तिथिभग्रहसंयुक्तं जातकं ब्रूमहे वयम्॥ १॥

संस्कृत — स्त्रीजातकाध्यायो व्याख्यायते। **श्रीबलारोग्येत्यादि**। श्रीः =विभवं, बलं=शौर्यं, आरोग्यं=नैरूज्यम्, सन्तानः=अपत्यानि, विद्याः=ज्ञानं, कीर्त्तयः=यशांसि, एतेषां विवर्द्धनं यतो ज्ञायते तं तिथिभग्रहसंयुक्तं=तिथि-नक्षत्र-ग्रहवशाज्जायमानं (स्त्री) जातकं वयं (ग्रन्थकर्त्तारो) ब्रूमहे=कथयाम, इति॥ १॥

हिन्दी — अब हम धन ऐश्वर्य-बल-आरोग्य-सन्तान-विद्या और कीर्ति को बढ़ाने वाला तिथि-नक्षत्र-ग्रह से युक्त स्त्री जातक के विषय में कहते हैं॥ १॥

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्राकाले मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥ २॥

संस्कृत — स्त्री जातकः (शास्त्रं) पुरुषाणामर्थाजने=धनार्जने सहायो भवति, अर्थात् शुभग्रहदशादि समयेऽर्थार्जने यः प्रवृत्तो भवति स सुखेनार्थमुपार्जयति, अथवा जातकशास्त्रबलेन दैवज्ञा पुरुषाणांमर्थाः कुशलेन सिद्धयन्ति। आपदर्णवे पोतः=विपत्तेः समुद्रस्तस्मिन् पोतः। जातकशास्त्रमेव पुरुषाणामापदविपदकाले परित्राणोपायं निर्देशयतीति भावः। यात्राकाले मन्त्री=यथा मन्त्री नृपमधुनाऽनेन विधिना इदमाचरणीयकरणीयमित्यादि श्रेयप्रेयमार्गमुपदिशति तथैवेतच्छास्त्रंविहितमार्गे गच्छतां पुरुषाणां वैशिष्ट्यं प्रकटयतीत्यर्थः। जातकमपहाय=जातकशास्त्रं विना अपरो नास्ति, अर्थात् जातकशास्त्रबलादेव सर्वं कार्यं सम्पत्स्यतेति भावः॥ २॥

हिन्दी — धनोपार्जन में सहायक-आपत्तिरूपी समुद्र को पार करने में जहाज, यात्रासमय में मन्त्री जैसा सहायक स्त्रीजातक जैसा दूसरा नहीं है॥ २॥

श्रीमज्जातकपत्रिका परहितंव्योमाधिवासस्फुटैः
पञ्चाङ्गद्युचराष्टवर्गसहितस्थानादिषड्वीर्यजैः ।
आयुर्गोचरयोगभावजफलैः सार्द्धं दशाचक्रजै-
र्दीर्घायुःसुतभर्तृसौख्यविपुलश्रीकीर्तिदा लिख्यते॥ ३॥

संस्कृत — जातकपत्रिका जन्मपत्रिका लेखनोपकरणानि। यथा—व्योमाधिवासस्फुटै=तात्कालिकास्पष्टग्रहाः, पञ्चाङ्गस्थिता ग्रहाः, ग्रहाणामष्टकवर्गाः स्थानादिषड्बलानि, आयूंषि, ग्रहयोगाः, भावफलानि, दशाचक्राणि, दीर्घायुः सुत-भर्तृसौख्य-विपुलश्री-कीर्तिदा परहितं=अन्येषामुपकाराय श्रीमज्जातकपत्रिका=स्त्रीजातक पत्रिका लिख्यते॥ ३॥

हिन्दी — दीर्घजीवी पुत्र-पति-सुख विपुलधन तथा यश को देने वाले स्त्री जातक को दूसरों के उपकार के लिये लिखा गया है। जिसमें स्पष्टग्रह, अष्टकवर्ग, षड्बल, आयु, गोचर, भावफल और अनेक दशाचक्र लिखे गये हैं॥ ३॥

स्त्रीणां जन्मफलं नृयोगमुदितं यत्तत्पतौ योजयेत्—
तासां देहशुभाशुभं हिमकराल्लग्नाच्च वीर्याधिकात्।
भर्तॄणामगुणं गुणं मदगृहाच्छिद्राच्च तेषां मृतिं
सौम्यासौम्यबलाबलेन सकलं सञ्चिन्त्य सर्वं वदेत्॥ ४॥

संस्कृत — अत्र स्त्रीणां जन्मफलान्युच्यन्ते। स्त्रीणां जन्मफलं=जन्मलग्नवशाज्जातं शुभाशुभं फलं नृयोगं=पुरुषसम्भवमुदितं तत्सर्वं तासां पतौ=स्वामिनि योजयेत्। अर्थात् स्त्रीषु यद्यत्फलमक्षमं तत्तत्तासां पतिविषये जानीयात्। अथ तासां स्त्रीणां देहशुभाशुभं=शरीरसौख्यं-दुःखं हिमकरात्= चन्द्रवशात्, लग्नाज्जन्मलग्नाच्च वीर्याधिकादर्थाच्चन्द्रलग्नयोर्मध्ये यो बली भवेत्तद्वशाच्छारीरिकं सौख्यं-चिन्त्यम्। चन्द्रे लग्ने वा सबले तदा शरीरसौख्यं, विबले वा दुःस्थाने तदा शरीरकष्टमिति। तेषां भर्तृणां=पतीनामगुणं (दोषं) गुणं च मदगृहाज्जन्मलग्नात्सप्तमभावात्। छिद्रादष्टमभावात् (स्त्रीणां जन्माष्टम् भावात्) मृतिः विचारणीया। अन्यत्सकलं सौम्यासौम्यबलेन=शुभपापग्रहबलेन सञ्चिन्त्य =विविच्य सर्वं फलं वदेत्। शुभबलाधिक्यं तदाशुभम्, अशुभबलाधिक्यं तदाऽशुभंवदेदिति। यथावृहज्जातके (२४। १) वराहमिहिरः—

यद्यत्फलं नरभवेऽक्षममङ्गनानां तत्तद्वदेत्पतिषु वा सकलं विधेयम्।
तासां तु भर्तृमरणं निधने वपुस्तु लग्नेन्दुगं सुभगतास्तमये पतिश्च॥ इति॥ ४॥

हिन्दी — स्त्रियों के जन्माङ्ग में जो पुरुषोचित फल हों उसे उस स्त्री के पति के लिए कहना चाहिए। स्त्रियों के शरीर का शुभाशुभफल लग्न या चन्द्रमा के बलाबल से विचारना चाहिए। सप्तम से पति के गुण और दुर्गुण का विचार तथा अष्टम से पति की मृत्यु का विचार करना चाहिए। इससे शुभ और पापग्रहों का बलाबल विचार करके ही भावों का फल कहना चाहिए॥ ४॥

स्त्रीणां जन्मनि लग्नशीतकरयोर्मध्ये बली यस्ततः
सम्पद्रूपबलानि तन्नवमतः पुत्रायवृद्धिं वदेत्।

सौमङ्गल्यमनिष्टमष्टमगृहाद् भर्तृश्रियं सप्तमात्
केचिद्भर्तृशुभाशुभं शुभगृहादिच्छन्ति होराविदः ॥ ५ ॥

संस्कृत — जन्मनि=जन्मसमये लग्नशीतकरयोः=लग्न चन्द्रयोर्मध्ये यो बली भवेत्ततस्माद् स्त्रीणां सम्पदः=श्रियः, रूपमाकृत्यादि, बलानि=शौर्याणि चिन्त्यम्। तन्नवमतः=जन्मलग्नान्नवमभावतः पुत्रायवृद्धिं=पुत्रस्य द्रव्यादेर्लाभस्य च वृद्धिं वदेत्। सौमङ्गल्यं=सौभाग्यं, अनिष्टं=मरणाञ्चाष्टमगृहाच्चिन्त्यम्। सप्तम-भावात् भर्तृश्रियं=पतिसौख्यं चिन्तयेत्। केचित् होराविदः=जातकशास्त्रवेत्तारः भर्तृशुभाशुभं स्त्रीणां शुभगृहात्=नवमभावादिच्छन्ति (विचारयन्ति)। अत्र केचिदिति शब्देन ग्रन्थकर्तृकस्य मतं न बोध्यते। अतः स्त्रीणां सप्तमस्थानादेव भर्तृशुभाशुभं विचार्यमिति ॥ ५ ॥

हिन्दी — स्त्रियों के जन्मलग्न और जन्मराशि में से जो बली हो उससे धन-रूप और बल आदि का विचार, नवमभाव से पुत्र और आयवृद्धि का विचार, अष्टम भाव से शुभ और अनिष्ट का विचार तथा सप्तमभाव से पति के धन-संपत्ति का विचार करना चाहिए। किसी आचार्य का मत है कि नवमभाव से पति का शुभाशुभ फल कहना चाहिए ॥ ५ ॥

वैधव्यं निधनेन लग्नभवनात्तेजो यशः सम्पदः
पुत्रं पञ्चमभावतः पतिसुखं कामेन केचिद्विदुः।
प्रव्रज्यामपि योषितामतिसुखं धर्मोपयातग्रहैः
शेषं भावजयोगजन्यमखिलं नारीनराणां समम्॥ ६ ॥

संस्कृत — निधनेन अष्टमभावेन स्त्रीणां वैधव्यं=पतिनिधनं, जन्म-लग्नात्तेजः=कान्तिः, यशः, सम्पदः=श्रियो विचार्याः। पञ्चमभावतः पुत्रं आत्मजं, कामेन=सप्तमभावेन पतिसुखं विचार्यम् इति केचिदन्ये विदु=विज्ञाः ऊचुः। धर्मोपयातग्रहैः=नवमभावस्थितग्रहैस्तत्र बलीग्रहवशात्, योषितां=स्त्रीणां, प्रव्रज्यां=वैराग्यं अपि अतिसुखञ्चापि चिन्त्यम्। शेषम्=अवशिष्टं भावजं फलं योगजन्यं चाखिलं फलं, नारी-नराणां=स्त्रीपुरुषाणां, समम्=समानमेव भवतीति ॥ ६ ॥

हिन्दी — अष्टमभाव से वैधव्य, लग्न से तेज-यश-सम्पति का विचार तथा पञ्चमभाव से पुत्र-पुत्री का विचार करना चाहिए। किसी किसी के मत में सप्तम से पतिसुख का विचार करना चाहिए। नवमभाव से प्रव्रज्या (वैराग्य) और (स्त्रियों का) विशेष सुख विचारना चाहिए। शेषभावों के फल स्त्री और पुरुष के समान रूप से होते हैं ॥ ६ ॥

युग्मे लग्ननिशाकरौ यदि वरस्त्री रूपशीलान्विता
सौम्यालोकितसंयुतौ गुणवती साध्वी च सम्पद्युता।
ओजर्क्षे पुरुषाकृतिश्च चपला पुँश्चेष्टिता पापिनी
पापव्योमचरेण वीक्षितयुतौ जाता दुराचारिणी॥ ७॥

संस्कृत — अत्र लग्नेन्दुवशात् फलमाह। यदि लग्ननिशाकरौ= जन्मलग्नं चन्द्रश्च, युग्मे=समराशौ-(२-४-६-८-१०-१२) स्थितौ तदा जाता वर (श्रेष्ठा) स्त्री रूपशीलान्विता भवति। युग्मगतौ लग्नेन्दू सौम्यैः=शुभग्रहैरालोकितौ वा संयुतौ भवेतां तदा सा गुणवती साध्वी सम्पद्युता च। तौ लग्नेन्दू यदि ओजर्क्षे=विषम-(१-३-५-७-९-११) राशौ स्थितौ तदा जाता स्त्री, पुरुषाकृतिः=पुरुष आकृति स्वभावयुक्ता, चपला=अस्थिरमति, पुँश्चेष्टिता=पुंश्चली, पापिनी च भवति। विषमर्क्षगौ लग्नेन्दू, यदि पापव्योमचरेण=पापग्रहेण विक्षितौ= निरीक्षितौ, वा युतौ=सहितौ भवेतां तदा जाता दुराचारिणी=दुष्कर्मकर्त्री भवति। यथोक्तं मन्त्रेश्वरः फलदीपिकायाम् (११। २)—

'उदयहिमकरौ द्वौ युग्मगौ सौम्यदृष्टौ सुतनयपतिभूषासम्पदुत्कृष्टशीला।
अशुभसहितदृष्टौ चौजगौ पुंस्वभावा कुटिलमतिरवश्या भर्तुरुग्रा दरिद्रा'॥ ७॥

हिन्दी — यदि लग्न व चन्द्र दोनों ही सम (२-४-६-८-१०-१२) राशि में रहें तो रूप और शील से युक्त श्रेष्ठ स्त्री होती है। यदि उनको शुभग्रह देखते हों तो वह स्त्री गुणवती साध्वी और संपत्ति से युत होती है। लग्न व चन्द्र यदि विषमराशि (१-३-५-७-९-११) में रहें तो वह स्त्री पुरुष की आकृति स्वभाववाली-चञ्चल-परपुरुषरता और पापिनी होती है। यदि लग्न और चन्द्र दोनों ही पापग्रह से दृष्ट-युत हों तो वह स्त्री स्वेच्छाचारिणी होती है॥ ७॥

लग्नेन्दू विषमर्क्षगौ शुभयुतौ सौम्यग्रहालोकितौ
नारी मिश्रगुणाकृतिःस्थितिगतिप्रज्ञावती जायते।
युग्मागारगतौ तु पापसहितौ पापेक्षितौ वा तथा
तद्राशीशयुतेक्षकग्रहबलादाहुः समस्तं विदः॥ ८॥

संस्कृत — लग्नेन्दू, यदि विषमर्क्षगौ शुभग्रहेण युतौ, सौम्यग्रहालोकितौ च भवेतां तदा सा नारी=मिश्रगुणाकृतिः=स्त्री-पुरुषोभयाकृति-स्वभावयुक्ता तथा स्थिति-गतिप्रज्ञावती=लोकाचारबुद्धियुक्ता (कार्यकुशला) जायते। यदि लग्नेन्दू, युग्मागारगतौ=समराशि (२-४-६-८-१०-१२) गतौ, पाप सहितौ वा पापवीक्षितौ भवेतां तदा तथा=पूर्वोक्त मिश्रगुणाकृतिरित्यादि युक्ता भवति। तद्राशीशयुतेक्षकग्रहबलात्=तस्याः कन्याया राशीशेन यस्य यस्य

ग्रहस्य योगो दृष्टिश्च भवति, तेषु बलीयसो ग्रहस्यानुरूपं समस्तं फलंविदो=होराशास्त्रज्ञा कथयन्ति॥ ८॥

हिन्दी — लग्न व चन्द्र यदि विषमराशि में हों, शुभग्रह से युक्त और दृष्ट हों तो वह स्त्री मिश्रित गुण-आकृति-स्वभाव-चेष्टा व बुद्धिवाली होती है। यदि दोनों (लग्न-चन्द्र) समराशि में हों और पापग्रह से युक्त हों या पापग्रह से दृष्ट हों तो भी मिश्रगुणादि फल होता है। जन्मराशिपति से जिसग्रह का योग या दृष्टि रहे उसग्रह के बलानुसार समस्त दैवज्ञों को फल कहना चाहिए॥ ८॥

ओजे विलग्ने पुरुषैर्बलिष्ठैर्बलान्वितैश्चन्द्रबुधासुरेज्यैः।
सामान्यशक्तौ सति सूर्यपुत्रे जाता हि तस्या बहवो धवाःस्युः॥ ९॥

संस्कृत — ओज इति। ओजे विलग्ने=विषमराशिके लग्ने, पुरुषैः=रवि भौमगुरुभिः ग्रहैः बलिष्ठैः=पूर्णबलयुक्तैः, चन्द्रबुधासुरेज्यैः=चन्द्रबुधशुक्रैः, बलान्वितैः=बलसहितैः, सूर्यपुत्रे=शनैश्चरे, सामान्यशक्तौ=साधारणबलसहिते सति तदा जाता=या स्त्रीजायते, तस्याः, हि=निश्चयेन बहवो धवाः=स्वामिनो भवन्ति अर्थात् सा स्त्री कुलटा भवतीत्यर्थः॥ ९॥

हिन्दी — विषमराशि का लग्न हो, पुरुषग्रह पूर्णबली हों, चन्द्र-बुध तथा शुक्र बलवान् हों और शनि सामान्यबली हो तो ऐसे योगोत्पन्न स्त्री अनेक पतियों से युक्त होती है॥ ९॥

युग्मे विलग्ने कुजसौम्यजीवशुक्रैर्बलिष्ठैः खलु जातकन्या।
विख्यातनाम्नी सकलार्थतत्वबुद्धिप्रसिद्धा भवतीह साध्वी॥ १०॥

संस्कृत — युग्म इति। युग्मे विलग्ने=समराशिके जन्मलग्ने, कुजसौम्यजीवशुक्रैः=भौम-बुध-गुरु-शुक्रैः, बलिष्ठैर्यत्र कुत्रस्थैः, तदा जातकन्या=जनिता कन्या, खलु=निश्चयेन, विख्यातनाम्नी=लोकेषु स्मर्यमाना, सकलार्थानां तु तत्वबुद्धौ=शास्त्रागमे प्रसिद्धा=निष्णाता साध्वी=सदाचारशीला च भवति॥ १०॥

हिन्दी — समराशि में लग्न हो, मङ्गल-बुध-गुरु और शुक्र पूर्णबली हों तो वह कन्या निश्चय ही विख्यातनामवाली-सकलशास्त्र-तत्त्वबुद्धि में प्रसिद्धा तथा साध्वी होती है॥ १०॥

सौरे मध्यबले बलेन रहितैः शीतांशुशुक्रेन्दुजैः
शेषैर्वीर्यसमन्वितैः पुरुषिणी यद्योजराश्युद्गमे।
जीवारास्फुजिदैन्दवेषु बलिषु प्राग्लग्नराशौ समे
विख्याताखिलशास्त्रयुक्तिकुशला स्त्री ब्रह्मवादिन्यपि॥ ११॥

संस्कृत — सौर इति। सौरे=शनौ, मध्यबले=साम्यबलसहिते,

शीतांशु शुक्रेन्दुजैः=चन्द्र-शुक्र-बुधै तत्र, बलेनरहितैः=निर्बलैः, शेषैः=सूर्य-भौमगुरुभिर्यत्र तत्र गतैर्वीर्यसमन्वितैः=बलसहितैः, यद्योजराश्युद्गमे=यद्दि विषमराशिरुद्गमे=लग्ने भवति (१-३-५-७-९-११) तदा जाता स्त्री पुरुषिणी=विविधपुरुषभोक्ता भवति। जीवारास्फुजिदैन्दवेषु=गुरु-भौम-शुक्र-बुधेषु, यत्र तत्र बलिषु=बलयुक्तेषु प्राग्लग्नराशौ समे=लग्ने सम (२-४-६-८-१०-१२) राशौ सति तदा जाता स्त्री विख्याताखिलशास्त्रयुक्ति-कुशला=प्रसिद्धा अखिलशास्त्राणि तेषां युक्तिषु विधिषु कुशला=निष्णाता ब्रह्मवादिन्यपि=मोक्षशास्त्रेऽपि कुशला=दक्षा भवतीति ज्ञेयम् ॥११॥

हिन्दी — शनि मध्यमबली हो, चन्द्र-शुक्र व बुध निर्बल हों, शेषग्रह बलवान हों और विषमराशि लग्न में हो तो वह स्त्री पुरुषिणी (परपुरुषरता) होती है। समराशि लग्न में हो और गुरु-भौम-शुक्र-बुध बलवान् हों तो वह स्त्री विख्यात, सम्पूर्ण शास्त्र में कुशल व ब्रह्मज्ञानी (दार्शनिक) होती है ॥ ११ ॥

त्रिंशांशफल—

लग्ने भौमगृहं गते शशिनि वा वीर्याधिके भूसुते
त्रिंशांशप्रभवाऽबला यदि दुराचारप्रयुक्ता भवेत्।
प्रेष्या भानुसुतांशके गुणवती साध्वी च जीवांशके
सौम्यांशे मलिना सितांशजवधूर्जारव्रताचारिणी ॥ १२ ॥
लग्ने भार्गवराशिगे कलहकृद् दुष्टा कुजस्यांशके
साध्वी पुत्रवती पुरन्दरगुरोरंशे पुनर्भूः शनेः।
सौम्यस्यांशसमुद्भवाऽखिलकलासङ्गीतवाद्यप्रिया
शुक्रांशे बुधवल्लभा च सुभगा लोकप्रिया जायते ॥ १३ ॥
त्रिंशांशेऽवनिजस्य बोधनगृहे लग्ने त्वपुत्रान्विता
मन्दांशे विधवाऽथवा मृतसुता क्लीबाकृतिस्थाऽसती।
जैवे भर्तृपरा बुधस्य तरुणी विख्याततेजस्विनी
शौक्रे चारुतराम्बराभरणगोवित्तप्रसिद्धा भवेत् ॥ १४ ॥

संस्कृत — अत्र ताराग्रहाणां त्रिंशांशे गतस्य लग्नस्य फलान्युच्यन्ते। वीर्याधिके=बलीयसि, लग्ने वा शशिनि=लग्नः चन्द्रोवा भौमगृहं=मेषवृश्चिकराशौ गते तस्मिन् भूसुतस्य=भौमस्य त्रिंशांशे, प्रभवा=जन्मिता, अबला=स्त्री, दुराचारप्रयुक्ता=व्यभिचाररता भवेत्। अग्रे सरलार्थमेव ॥ १२-१४ ॥

हिन्दी — लग्न या चन्द्र, मङ्गल की राशि (मेष-वृश्चिक) में होकर बली रहें तो मङ्गल के त्रिंशांश में उत्पन्न होने वाली स्त्री दुराचारिणी, शनि के त्रिंशांश में

दूती, गुरु के त्रिंशांश में साध्वी व गुणवती, बुध के त्रिंशांश में मलिना और शुक्र के त्रिंशांश में उत्पन्न हो तो जारव्रत का आचरण (व्यभिचार) करती है ॥ १२ ॥

लग्न या चन्द्र, शुक्र की राशि (वृष-तुला) में हो तो भौम के त्रिशांश में उत्पन्न होने वाली स्त्री कलहप्रकृति वाली व दुष्टा, बृहस्पति में साध्वी व पुत्रवती हो, शनि में पुनर्भू (दूसरी विवाहिता), बुध में सम्पूर्णकला-संगीत व वाद्यप्रेमी, शुक्र में विद्वान् की स्त्री-सुन्दरी और लोक में आदरणीया होती है ॥ १३ ॥

लग्न या चन्द्र, बुध की राशि (मिथुन-कन्या) में हो तो मङ्गल के त्रिंशांश में उत्पन्न स्त्री पुत्रयुक्ता, शनि में विधवा-मृतवत्सा-नपुंसकी के समान व पापिनी, गुरु में स्वामीभक्ति में तत्पर, बुध में विख्यात तेजवाली और शुक्र के त्रिशांश में सुन्दर वस्त्र-भूषण-गोधन आदि से सम्पन्न होती है ॥ १४ ॥

लग्ने चन्द्रगृहं गते बलवति क्षोणीसुतस्यांशके
जाता जारविनोदशीलरसिका पापेक्षिते शीतगौ।
विश्वस्ता रविजस्य निर्जरगुरोरल्पायुरल्पात्मजा
बौधे शिल्पकलावती भृगुसुतत्रिंशांशके कामुकी॥ १५॥
भानुक्षेत्रगते तनौ शशिनि वा भूनन्दनस्यांशके
नारी पुंम्प्रकृतिस्थिता च कुलटा मन्दांशके दुःखिता।
जीवांशे नृपवल्लभा गुणवती सौम्यस्य पुँश्चेष्टिता
दुष्टा चासुरवन्दितस्य कुपतिस्नेहान्विता रोगिणी॥ १६॥
वागीशस्य गृहोदये वसुमती पुत्रस्य भागोद्भवा
विख्याता परिवारिणी रविसुतस्यांशे दरिद्रा भवेत्।
जीवांशे धनवस्त्रभूषणवती सौम्यस्य सम्पूजिता
साध्वी दानवमन्त्रिणः सुतवती सद्वस्त्रभूषान्विता॥ १७॥
लग्ने मन्दगृहे बलिन्यवनिजत्रिंशांशके शोकिनी
मन्दांशे सति दुर्भगा निजकुलाचारानुरक्ता गुरोः।
सर्वज्ञा कुलटा बुधांशजनिता शुक्रस्य वन्ध्या सती
लग्नेन्दुस्फुटयोगतस्तु सकलत्रिंशांशजं वा वदेत्॥ १८॥

संस्कृत — श्लोकाः स्पष्टार्था सरलार्थाश्च॥ १५-१८॥

हिन्दी — चन्द्र की राशि (कर्क) लग्न में हो तो मङ्गल के त्रिंशांश में उत्पन्न स्त्री बलशाली होती है। यदि चन्द्र पापग्रह से दृष्ट हो तो वह जारपुरुष से विनोद करने वाली, शनि के त्रिंशांश में विधवा (विश्वस्ता विधवे समे, अमर. ६-११) बृहस्पति के त्रिंशांश में अल्पायु तथा अल्प पुत्रवाली, बुध के त्रिंशांश में शिल्पकला में दक्ष और शुक्र के त्रिंशांश में विशेष कामुक होती है॥ १५॥

सूर्य की राशि (सिंह) में लग्न या चन्द्र हो तो मङ्गल के त्रिंशांश में उत्पन्न स्त्री पुरुष के समान चेष्टावाली व कुलटा, शनि के त्रिंशांश में दुःखिनी, गुरु के त्रिंशांश में राजा की स्त्री और गुणवती, बुध के त्रिंशांश में पुरुष जैसा इच्छा स्वभाव वाली तथा शुक्र के त्रिंशांश में दुष्टा-जार के प्रेम में आसक्त व रोगिणी होती है ॥ १६ ॥

बृहस्पति की राशि (धनु या मीन) में चन्द्र या लग्न हो तो मङ्गल के त्रिशांश में उत्पन्न स्त्री भाग्यवती-विख्यात तथा परिवार युक्ता, शनि में दरिद्रा, बृहस्पति में धन-वस्त्र-भूषणवाली, बुध में सुपूजिता तथा शुक्र त्रिंशांश में साध्वी-पुत्रवती और सुवस्त्रभूषणयुक्ता होती है ॥ १७ ॥

लग्न या चन्द्र शनि की राशि (मकर या कुम्भ) में हो, उसमें बलवान् मङ्गल रहे और मंगल का ही त्रिंशांश हो तो वह स्त्री शोकयुक्ता, शनि का त्रिंशांश हो तो दुर्भगा, बृहस्पति का त्रिंशांश हो तो निजकुलाचार में अनुरक्ता, बुध का त्रिंशांश हो तो सर्वज्ञा एवं कुलटा तथा शुक्र का त्रिंशांश हो तो वन्ध्या और पतिव्रता होती है। स्पष्टलग्न और चन्द्रमा के योग में जो त्रिंशांश हो उससे भी यही फल होता है ॥ १८ ॥

आग्नेयैर्विधवाऽस्तराशिसहितैर्मिश्रैः पुनर्भूर्भवेत्
क्रूरे हीनबलेऽस्तगे स्वपतिना सौम्येक्षिते प्रोज्झिता।
अन्योन्यांशकयोः सितावनिजयोरन्यप्रसक्ताङ्गना
द्यूने वा यदि शीतरश्मिसहिते भर्तुस्तदाऽनुज्ञया॥ १९॥

संस्कृत — आग्नेयैरिति। आग्नेयैः=क्रूरग्रहैः अस्तराशिसहितैः=सप्तमस्थानस्थितैः तदा सा स्त्री विधवा भवति। मिश्रैः=शुभैः पापैश्च सप्तम-स्थानस्थितैः तदा पुनर्भूर्भवेत् (पूनर्भूलक्षणमग्रिमश्लोके)। हीनबले=बलरहिते, क्रूरे=पापग्रहे, अस्तगे=सप्तमभावगते, केनचित् सौम्येन=शुभग्रहेण ईक्षिते= निरीक्षिते तदा सा स्त्री स्वपतिना प्रोज्झिता=स्वभर्त्रा परित्यक्ता भवेत्। सिताव-निजयोः=शुक्रभौमयोः, यत्र अन्योन्यांशकयोः=शुक्रनवांशे भौमः, भौमनवांशे शुक्रो भवेत्तदा सा अङ्गना=स्त्री, अन्यप्रसक्ता=परपुरुषानुरक्ता भवति, अथवा यदि तौ शुक्रभौमो, शीतरश्मिना=चन्द्रेण सहितौ, द्यूने=सप्तमे भावे स्थितौ तदा सा स्त्री, भर्तृरनुज्ञया=पतिनिर्देशेन परपुरुषंभजति न तु स्वेच्छयेति बोध्यः। यथा जातकाभरणे (स्त्री जातक १६)।

अन्योन्यांशावस्थितौ भौमशुक्रौ स्यातां कान्तासङ्गताऽन्येन नूनम्।
चन्द्रोपेतौ शुक्रवक्रौ स्मरस्थावाज्ञैव स्यात् स्वामिनश्चामनन्ति॥ १९॥

हिन्दी — यदि सप्तमभाव पापग्रहों से युक्त हो तो वह स्त्री विधवा होती है, यदि सप्तमभाव में मिश्रितग्रह (पाप-शुभ) हों तो दो बार उसका विवाह होता है। बलहीन क्रूरग्रह सप्तमभाव में हो और उसे शुभग्रह देखता हो तो वह स्त्री अपने पति

से परित्यक्ता होती है। शुक्र और मङ्गल परस्पर एक-दूसरे के नवांश में स्थित रहें तो अन्य पुरुष में आसक्त रहती है। यदि दोनों शुक्र-भौम सप्तमभाव में चन्द्र से युक्त रहे तो पति की आज्ञा से वह स्त्री परपुरुषसंगिनी होती है॥ १९॥

पुनर्भू लक्षण—

स्वैरिणी या पतिं त्यक्त्वा सवर्णं कामतः श्रयेत्।
अक्षतं च प्रजाद्वारं पुनर्भूः संस्कृता पुनः॥ २०॥

संस्कृत — अत्र पुनर्भूलक्षणमुच्यते। या (स्त्री) पतिं त्यक्त्वा कामतः=निजेच्छया, सवर्णं=निजजातितुल्यं परपुरुषं श्रयेत् सा स्त्री ''स्वैरिणी'' (कुलटा) भवति। विवाहितायाः स्त्रियाः प्रजाद्वारं=यतः सन्तति निःसरन्ति, (योनिरिति) अक्षतं=पुरुषसङ्गमेन विरहितं स्यात् सा स्त्री यदि पुनरन्येन पुरुषेण संस्कृता=विवाहिता भवति तदा सा स्त्री 'पुनर्भूः' भवति॥ २०॥

हिन्दी — अपने पति का परित्याग कर स्वेच्छा से स्वजाति में ही अन्य पुरुष का वरण करनेवाली स्त्री ''स्वैरिणी'' कहलाती है। प्रथमपति से स्त्री यदि मैथुन रहित हो तो दूसरे पुरुष से विवाह होने पर उसे पुनर्भू कहते हैं॥ २०॥

सौरारर्क्षे लग्नगे सेन्दुशुक्रे मात्रा सार्द्धं पुंश्चली पापदृष्टे।
कौजेश्वेंऽशे सौरिणा व्याधियोनिश्चारुश्रोणी वल्लभा सद्ग्रहांशे॥ २१॥

संस्कृत — सौरारर्क्ष इति। सौरारर्क्षे=शनिभौमराशौ (म.कु.मे.वृ. राशौ) लग्नस्थिते तत्र सेन्दुशुक्रे=चन्द्रशुक्राभ्यां सहिते, एवंभूते पापदृष्टे= पापग्रहेण अवलोकिते तदा जाता स्त्री मात्रा सह पुंश्चली=जनन्या सहितैव परपुरुषरता भवेत्। अस्तांशे=सप्तमे भावे यन्नवांशो स, कौजे=कुजसम्बन्धिके भवेत्, अर्थात्सप्तमे भावे भौमनवांशे तत्र सौरिणा=शनिना दृष्टे सति तदा सा स्त्री व्याधियोनिः=व्याधियुक्त ''भगा'' भवति। सद्ग्रहांशे=सप्तमे भावे यदि शुभग्रहस्य नवांशे सति तदा चारुश्रोणी (सुन्दरकटि), वल्लभा=पतिप्रिया च भवति। यथा सारावल्याम् (४५। १९-२०)—

सौरारगृहे तद्वत् शशिनि सशुक्रे विलग्नगे जाता।
मात्रा साकं कुलटा कूरग्रहवीक्षिते भवति॥
द्यूने तु कुजनवांशे शनिना दृष्टे सरोगयोनिः स्त्री।
सद्गृहभागे चारुश्रोणी पतिवल्लभा भवति॥

अपि ढुण्डिराजः (जा.भर.स्त्री. १७)

लग्ने सितेन्दुकुजमन्दभस्थौ क्रूरेक्षितौ सान्यरता जनन्या।
स्मरे कुजे सार्कसुतेन दृष्टे विनष्टयोनिश्च शुभाशुभाख्ये॥ २१॥

हिन्दी — शनि या मङ्गल की राशि (म.कु.मे.वृ.) में लग्न हो वहाँ शुक्र व चन्द्र स्थित हों और उसे पापग्रह देखते हों तो वह स्त्री माता सहित व्यभिचाररता होती है। नवांशचक्र के सप्तमभाव में मङ्गल के नवांश (मे.वृ.) को शनि देखता हो तो उस स्त्री की योनि में व्याधि (रोग) होता है। नवांश चक्र के सप्तम भाव में यदि शुभग्रह की राशि हो तो उस स्त्री का कमरभाग रमणीय होता है और वह पतिप्रिया होती है॥ २१॥

बलहीनेऽस्तगे पापे सौम्यग्रहनिरीक्षिते।
पत्या विसृज्यते नारी नीचारिस्थे व वैरिणी॥ २२॥

संस्कृत — सरलार्थः॥ २२॥

हिन्दी — बलहीन पापग्रह सप्तमभाव में हो और उसे शुगभ्रह देखते हों तो वह स्त्री पति से परित्यक्ता होती है। वह पापग्रह यदि शत्रु की राशि या नीच राशि में हो तो वह पति से शत्रुभाव रखनेवाली होती है॥ २२॥

उत्सृष्टा मदनस्थिते दिनकरे शत्रुग्रहालोकिते-
ऽविश्वस्ताऽवनिजे वधूरमणयोरन्योन्यवैरं तु वा।
सौम्यासौम्ययुते कलत्रभवने जाता पुनर्भूः शनौ
कामस्थे रिपुवीक्षिते त्वविधवा जाता जरां गच्छति॥ २३॥

संस्कृत — उत्सृष्टेति। दिनकरे=सूर्ये, मदनस्थिते=कलत्रभावस्थिते, तत्र शत्रुग्रहेणालोकिते=शत्रुग्रहेणदृष्टे सति तदा सा स्त्री पतिना उत्सृष्टा= परित्यक्ता भवति। अवनिजे=भौमे, (कलत्रस्थिते शत्रुग्रहालोकिते) तदा सा स्त्री अविश्वस्ता, अथवा वधूरमणयोः=स्त्रीपुंसोरन्योन्यवैरं-परस्परं अविश्वासो भवति। कलत्रभवने=सप्तमे भावे सौम्यासौम्ययुते=शुभपापग्रहैः युते सति तदा जाता स्त्री पुनर्भूः=द्वितीयपतियुता भवति। शनौ कामस्थे=सप्तमस्थे, रिपुणा वीक्षिते च सति तदा तु जाता स्त्री अविधवा=बाल्यावस्थातः जरां=वृद्धत्वं (अविवाहिता) गच्छति। अर्थात् सप्तमे यदि शनि पापदृष्टो भवेत्तदा कुमारिकैव स्त्री वृद्धात्वमुपयाति। अर्थात् तस्या विवाहो न भवेदित्यर्थः। यथा बृहज्जातके (२४/८)—

उत्सृष्टा रविणा, कुजेन विधवा बाल्येऽस्तराशिस्थिते।
कन्यैवाशुभवीक्षितेऽर्कतनये द्यूने जरां गच्छति॥ इति॥ २३॥

तथा जातकाभरणे ढुण्ढिराजः (स्त्री.जा.१४)

'सप्तमे दिनपतौ पतिमुक्ता क्षोणिजे च विधवा खलु बाल्ये।
पापखेचरविलोकनयाते मन्दगे च युवतिर्जरती स्यात्'॥

हिन्दी — यदि सूर्य सप्तमभाव में हो और शत्रुग्रह से दृष्ट हो तो वह स्त्री

उत्सृष्टा (परित्यक्ता), उपरोक्त स्थिति में यदि मङ्गल हो तो अविश्वासी अथवा स्त्री पुरुष में परस्पर वैर होता है। सप्तमभाव में यदि शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह हों तो उस स्त्री का पुनर्विवाह होता है। शनि सप्तमस्थान में हो और शत्रु से दृष्ट हो तो वह स्त्री बुढ़ापा तक कुमारी रहती है॥ २३॥

पापर्क्षे मदनस्थिते शनियुते वैधव्यमेत्यङ्गना
जारासक्तविलासिनी सितकुजावन्योन्यराश्यंशगौ।
चन्द्रे कामगृहं गते तु पतिना सार्द्धं दुराचारिणी
मन्दारर्क्षविलग्नगौ शशिसितौ वन्ध्या सुतस्थे खले॥ २४॥

संस्कृत — पापर्क्ष इति। मदनस्थिते=सप्तमगते, पापर्क्षे=पापग्रहराशौ, शनियुते=शनिना सहितेऽर्थात्सप्तमस्थाने: पापराशिस्तत्र शनि: स्थितो भवेत्तदा अङ्गना=जायमाना कन्या, वैधव्यमेति=वैधव्यं प्राप्नोति। सितकुजौ=शुक्रभौमौ, अन्योन्यराश्यंशगौ=शुक्र: कुजराशिनवांशगत:, कुज: शुक्रराशिनवांश गतस्तदा जाता कन्या जारासक्तविलासिनी=परपुरुषरता भवति। चन्द्रे कामगृहं=चन्द्र: सप्तमभावस्थिते गते तदा सा स्त्री पतिना सह दुराचारिणी भवति। अर्थात् स्त्री कुण्डल्यां चन्द्रो यदि सप्तमे भवेत्तदा सा स्त्री, तत्पतिश्चापि व्यभिचारी भवति। शशिसितौ=चन्द्रशुक्रौ, मन्दारर्क्षविलग्नगौ=शनिभौमराशिके (म.कु.मे.वृ.राशौ) लग्ने स्थितौ भवेतां, खले=पापग्रहे सुतस्थे=पञ्चमगते सति तदा सा स्त्री वन्ध्या=सन्ततिहीना भवति। यथाबलभद्र: स्व होरारत्ने (अ. १०/९-१० गर्गोक्त)—

अन्योन्यांशे सितारौ चेज्जारसक्ता भवेद्वधू:।
तथैव सप्तमे चन्द्रे दुश्चरी पतिना सह॥
मन्दारार्के विलग्नस्थौ शशिशुक्रौ यदा तदा।
वन्ध्या भवंति सा नारी पञ्चमे पापदृग्युते॥२४॥

हिन्दी — सप्तमभाव में यदि पापग्रह की राशि हो और उसमें शनि हो तो वह स्त्री विधवा, शुक्र और मङ्गल अन्योन्य राशि-नवांश (शुक्र नवांश में मङ्गल, मङ्गल नवांश में शुक्र) में रहें तो वह स्त्री जारपति में आसक्त व विलासिनी, चन्द्र सप्तमभाव में हो तो पति के साथ व्यभिचारिणी (पत्नी पति दोनों), चन्द्र और शुक्र यदि शनि या मङ्गल की राशिवाले लग्न में रहें तथा पञ्चम में पापग्रह हो तो वह स्त्री वन्ध्या होती है॥ २४॥

कलत्रराश्यंशगते महीजे मन्देक्षिते दुर्भगमेति कन्या।
शुक्रांशके सौम्यदृशा समेति कलत्रराशौ पतिवल्लभा स्यात्॥ २५॥

संस्कृत — कलत्रेति। महीजे=भौमे यत्र कुत्रस्थिते कलत्रराशे:=

सप्तमस्थानस्य, अंशगते=नवमांशगते, मन्देन=शनिना, ईक्षिते=विलोकिते सति तदा जाता कन्या दुर्भगं=रुग्णयोनिम् (प्रदरादि रोगं), एति=प्राप्नोति। अस्मिन्योगे उत्पन्ना स्त्री भग सम्बन्धि रोगयुता भवतीत्यर्थः। (महीजे) कलत्रराशौ=सप्तमे शुक्रांशगे=शुक्र नवांशगते, तत्र सौम्यस्य=शुभग्रहस्य, दृशा=दृष्ट्या, समेते=सहिते सति तदा जाता स्त्री पतिवल्लभा=पतिप्रिया भवेदिति॥ २५॥

हिन्दी — सप्तमभावगत राशि के नवांश में भौम हो और उसको शनि देखता हो तो वह कन्या भगरोग से पीड़ित होती है। सप्तमभाव में मङ्गल यदि शुक्र के नवांश में हो और उसे शुभग्रह देखते हों तो वह स्त्री पतिप्रिया होती है॥ २५॥

भौमागारविलग्नगौ शशिसितौ नारी पतिद्वेषिणी
चन्द्रज्ञौ परतत्त्ववादचतुरा भौमेन्दुजौ भोगिनी।
चन्द्रज्ञासुरवन्दिता यदि सुखद्रव्यान्विता लग्नगा
वागीशो यदि लग्नगः सुतनया प्रज्ञाविभूषान्विता॥ २६॥

संस्कृत — भौमागारेति। शशिसितौ=चन्द्रशुक्रौ, भौमागारविलग्नगौ= भौमस्य राशि (मे. वृश्चि.) जन्मलग्ने गतौ स्यातां तदा जाता नारी पतिद्वेषिणी= भर्तृविरोधकारिणी, चन्द्रज्ञौ=चन्द्रबुधौ (भौमागारविलग्नगौ) तदा परतत्त्ववाद-चतुरा=ब्रह्मवाद (दर्शनशास्त्र) कुशला, भौमेन्दुजौ=भौमबुधौ (भौमागार-विलग्नगौ) तदा भोगिनी=सुखिनी, चन्द्रज्ञासुरवन्दिताः=चन्द्रबुधशुक्राः, लग्नगाः= जन्मलग्ने गता भवेयुस्तदा सा स्त्री सुखद्रव्यान्विता, वागीशो=गुरुः लग्नगो तदा स्त्री सुतनया=सुपुत्रवती, प्रज्ञाविभूषान्विता=बुद्धिभिः विभूषाभि (अलङ्करणैः) अन्विता=संयुता भवति॥ २६॥

हिन्दी — मङ्गल की राशि (मे.वृश्चि.) के लग्न में चन्द्र और शुक्र हों तो वह स्त्री पति से वैर रखनेवाली, चन्द्र और बुध हों तो परतत्त्ववाद (ब्रह्मज्ञान) में चतुर, मङ्गल और बुध हों तो भोग-सुख करनेवाली, चन्द्र-बुध तथा शुक्र लग्न में हों तो सुख-द्रव्य से युक्त तथा बृहस्पति लग्न में हो तो सुन्दरसन्तान-बुद्धि और आभूषणादि से युक्त होती है॥ २६॥

तुङ्गस्था गगनाटनाः शुभकरा रन्ध्रे सपापे वधू-
वैंधव्यं समुपैति पापभवने पापग्रहालोकिते।
रन्ध्रेशांशपतौ खले च विधवा निःसंशयो भामिनी
सौम्यै रन्ध्रगतैः समेति तरुणी प्रागेव मृत्युं पतेः॥ २७॥

संस्कृत — तुङ्गस्था इति। शुभकरागगनाटनाः=शुभग्रहाः, तुङ्गस्थाः= स्वस्वोच्चराशिगताः स्युः, रन्ध्रे=अष्टमे, सपापे=पापग्रहेण सहिते, पापभवने= पापग्रहराशौ, पापग्रहालोकिते च सति तदा जाता स्त्री वैधव्यं समुपैति=प्राप्नोति

रन्ध्रेशो (अष्टमेशः) यस्मिन्नवांशे स्थितो तन्नवांशपतौ खले=पापग्रहे सति तदा सा भामिनी=स्त्री, निःसंशयः=निश्चयेन, विधवा भवति। सौम्यैः=शुभग्रहैः, रन्ध्रगतैः =अष्टमस्थानस्थितैः, पतेः=भर्तुः प्रागेव=पूर्वमेव, तरुणी=स्त्री मृत्युं=मरणं समेति =प्राप्नोति। अर्थादस्मिन्योगे जाता स्त्री सधवा म्रियते॥ २७॥

हिन्दी — अपनी-अपनी उच्चराशि में शुभग्रह हों और अष्टमस्थान में पापग्रह की राशि यदि पापग्रह से युक्त-दृष्ट हो तो वह स्त्री विधवा होती है। अष्टमेश यदि पापग्रह के नवांश में हो तो निःसन्देह ही वह स्त्री विधवा होती है। शुभग्रह यदि अष्टमभाव में हो तो उस स्त्री की पति से पहले मृत्यु होती है॥ २७॥

भाग्यस्थाः शुभखेचराः स्मरगते पापेऽष्टमस्थेऽथवा
भर्तृश्रीबहुपुत्रसौख्यविभवैः सार्द्धं चिरं जीवति।
क्रूरैर्बन्धुगृहोपगैर्बहुसुतप्राप्ता भवत्यङ्गना
चापे वा कटकोदये पतिसुतप्राप्ता दरिद्रान्विता॥ २८॥

संस्कृत — **भाग्यस्था** इति। शुभखेचराः=बुध-गुरु-शुक्र-पूर्णचन्द्राः, भाग्यस्थाः=नवमस्थानगता भवेयुः, पापे=सूर्य-भौम-शनि, स्मरगते= सप्तमस्थे अथवा अष्टमस्थे सति तदा भर्त्रा-श्रिया-बहुपुत्रैः-सौख्यैः-विभवैश्च सार्द्धं=सहितं चिरं=दीर्घकालं जीवति। अर्थात् सा कन्या सर्वसुखसम्पन्ना दीर्घजीविनी भवति। क्रूरैः=पापैः, बन्धुगृहोपगैः=चतुर्थस्थानगतैः तदा सा अङ्गना=स्त्री, बहुसुतप्राप्ता=अनेकसन्ततियुक्ता भवति। यदि चापे=धनुषि, वा कटकोदये=कर्कलग्ने उत्पन्ने सति तदा सा स्त्री पतिसुतप्राप्ता=भर्तुःपुत्रवती, परं दरिद्रान्विता=निर्धना भवति। यथा (हो. रत्न. १०/२४)—

भाग्यस्थाने स्थिते सौम्ये सपापेऽस्तेऽष्टमेऽपि वा।
भर्तृपुत्रसुखैः सार्द्धं दीर्घकालं च जीवति॥
धनुःकर्कटके लग्ने भर्तृपुत्रादिदुःखदा" इति॥२८॥

हिन्दी — नवमभाव में शुभग्रह हों और सप्तम या अष्टम भाव में पापग्रह हों तो वह स्त्री पति-लक्ष्मी-बहुतपुत्र-सुख-विभव से युक्त चिरकाल तक जीवित रहती है। पापग्रह चतुर्थभाव में हों तो उस स्त्री के बहुत से पुत्र होते हैं। लग्न में धनु या कर्क राशि रहे तो वह पति-पुत्र से युत परन्तु दरिद्रा होती है॥ २८॥

गोसिंहालिवधूदये सुतगते चन्द्रेऽल्पपुत्रान्विता
पापैरस्तशुभोदयाष्टमगतैर्दारिद्र्यशोकाकुला।
सौम्यासौम्ययुतैश्च मिश्रफलिनी सौम्यैः शुभश्रीयुता
पुत्रेशेऽरिगते तनौ रिपुपतौ शस्त्रेण मृत्युर्भवेत्॥ २९॥

संस्कृत — गोसिंहेति। सुतगते=पञ्चमे भावे गोसिंहालिवधूदये=वृष-सिंहवृश्चिककन्या राशौ गते सति तत्र चन्द्रे स्थिते सति तदा जाता स्त्री अल्पपुत्रयुता भवति। यथा गर्गः (होरारत्न स्त्रीजात. २५-२६)—

''सिंहालिवृषकन्यासु चन्द्रे तिष्ठति पञ्चमे।
अल्पापत्यं विजानीयात् पुरुषेषु तथा वदेत्''।
लग्नाच्चाष्टमभागस्थैः पापैर्दुःखफलान्विता।
सौम्यग्रहैरसंमिश्रैः सर्वथा क्लेशमाप्नुयात्॥
क्रूरग्रहे सुखगते बहुप्रसवमादिशेत्'।

पापै=पापग्रहैः अस्तशुभोदयाष्टमगतैः=सप्तमनवमप्रथमाष्टमभावगतैः तदा सा स्त्री दारिद्र्यशोकेनाकुला भवति। उपरोक्तैर्भावैः सौम्यासौम्ययुतैः= शुभैः पापैश्च युतैस्तदा मिश्रफलिनी=शुभाशुभमिश्रितफलद्वययुता भवति। यदि केवलं सौम्यैः युतैस्तदा शुभश्रीयुता=सम्पन्ना भवति। पञ्चमेशे, अरिगते= षष्ठभावगते, रिपुपतौ=षष्ठभावपतौ, तनौ=लग्ने स्थिते सति तदा (स्त्रियाः) शस्त्रेण मृत्युर्भवेत् =अस्त्रशस्त्रादिना मरणं भवतीति॥ २९॥

हिन्दी — यदि कन्या का जन्म वृष-सिंह-वृश्चिक या कन्या लग्न में हो, पञ्चम में चन्द्र हो तो उस स्त्री के थोड़े पुत्र होते हैं। सप्तम-नवम-लग्न तथा अष्टम में पापग्रह हों तो वह स्त्री दरिद्र होकर शोकमग्न रहती है। इन भावों में शुभग्रह-पापग्रह यदि दोनों हों तो मिश्रफल होता है। यदि केवल शुभग्रह हों तो शुभलक्ष्मी से युक्ता होती है। पञ्चमेश यदि षष्ठभाव में हो और शत्रुभाव का स्वामी लग्न में हो तो उस स्त्री की शस्त्र से मृत्यु होती है॥ २९॥

क्रूरग्रहैरस्तगतैः समस्तैर्विलग्नराशेर्विधवा भवेत्सा।
मिश्रैः पुनर्भूरिह जातकन्या पत्युज्झिता हीनबलैरसद्भिः॥ ३०॥

संस्कृत — सरलार्थः स्पष्टार्थः॥ ३०॥

हिन्दी — जन्मलग्न से सप्तमस्थान में यदि सभी क्रूर (पाप) ग्रह स्थित हों तो वह स्त्री विधवा होती है। यदि मिश्रित ग्रह (शुभ-पाप) सप्तम स्थान में रहें तो वह स्त्री पुनर्विवाहिता होती है। यदि बलहीन पापग्रह सप्तमस्थान में रहें तो वह स्त्री पति द्वारा परित्यक्त होती है॥ ३०॥

स्त्रीजन्मलग्नान्मदगे शशाङ्के शुक्रारयुक्ते यदि जातकन्या।
सा पत्यनुज्ञापरगामिनी स्यात्सौरारभांशोपगते तथैव॥ ३१॥

संस्कृत — सरलार्थः स्पष्टार्थः॥ ३१॥

हिन्दी — यदि स्त्री के जन्मलग्न से सप्तमभाव में चन्द्र-शुक्र-मङ्गल व

चन्द्रमा हों तो वह स्त्री पति की आज्ञा से दूसरे पुरुष से विहार करती है। उक्त चन्द्रमा यदि शनि या मङ्गल के नवांश में रहे तो भी यही फल होता है ॥ ३१ ॥

सौरारभांशोपगतग्रहेषु शुक्रेन्दुयुक्तेष्वशुभेक्षितेषु।
जाता कुलाचारगुणैर्विहीना मात्रा च साकं व्यभिचारिणी स्यात्॥ ३२॥

संस्कृत — सौरारेति। सौरारभांशोपगतग्रहेषु=शनिभौमयोर्भानि (मकर-कुम्भ-मेष-वृश्चिक) नवांशेषूपगतेषु ग्रहेषु, शुक्रेन्दुभ्यां युतेषु, अशुभेन =पापग्रहेण, ईक्षितेषु=निरीक्षितेषु अर्थात् शुक्रचन्द्राभ्यां युक्ताः केचिदन्ये त्र्याधिका ग्रहा भौमशनिराशिनवांशे यत्र तत्र स्थिताः केनचित्पापेन निरीक्षिताश्च भवेयुस्तदा जाता स्त्री कुलाचारगुणैर्विहीना तथा मात्रा साकं व्यभिचारिणी च स्यात्॥ ३२॥

हिन्दी — शनि और मङ्गल की राशिनवांश में ग्रह हों और यदि वह शुक्र तथा चन्द्रमा से युक्त एवं पापग्रह से दृष्ट हो तो वह स्त्री कुल-आचार से हीन व मातासहित व्यभिचारिणी होती है॥ ३२॥

क्षितितनयनवांशे लग्नतः सप्तमस्थे
दिनकरबुधदृष्टे व्याधियोनिः प्रजाता।
शुभकरनवभागे सप्तमस्थानसंस्थे
सुभगसुतवती सा चान्यथा दुर्भगा स्यात्॥ ३३॥

संस्कृत — सरलार्थः॥ ३३॥

हिन्दी — जन्मलग्न से सप्तम में भौम का नवांश हो, सूर्य और बुध लग्न को देखते हों तो उस स्त्री की योनि व्याधिग्रस्त होती है। यदि शुभग्रह का नवांश सप्तम भाव में हो तो वह स्त्री सुभगा और पुत्रवाली होती है अन्यथा दुर्भगा होती है॥ ३३॥

कामासक्तमनस्विनी च विधवा पापद्वये सप्तमे
पश्चात्स्वामिवधं करोति कुलटा पापत्रये चास्तगे।
राजामात्यवराङ्गना यदि शुभे कामं गते कन्यका
मारस्थे तु शुभत्रये गुणवती राज्ञी भवेद् भूपतेः॥ ३४॥

संस्कृत — सरलार्थः॥३४॥

हिन्दी — यदि सप्तमभाव में दो पापग्रह रहें तो वह स्त्री काम में आसक्ता मनःस्विनी और विधवा होती है। तीन पापग्रह यदि सप्तम में रहें तो वह स्त्री कुछ समय के बाद पतिघातिनी और कुलटा होती है। यदि सप्तम में शुभग्रह हों तो राजा के मंत्री की स्त्री तथा सातवें स्थान में यदि तीन शुभग्रह हों तो वह स्त्री गुणवती और राजमहिषी होती है॥ ३४॥

अन्योन्यांशगतौ सितार्कतनयावन्योन्यदृष्टौ तु वा
कुम्भे चाष्टमभागजातवनिता कामाग्नितप्ता भवेत्।
वैधव्यं समुपैति चन्द्रभवनात् क्रूरे मदस्थानगे
चन्द्रादस्तगृहोपगः शुभकरो राज्यास्पदं यच्छति॥ ३५॥

संस्कृत — अन्योन्येति। सितार्कतनयौ=शुक्रशनौ, अन्योन्यांशगतौ=शुक्रः शनिनवांशे, शनिः शुक्रनवांशे भवेत्, अन्योन्यदृष्टौ=तौ परस्परदृष्टौ च भवेतां अथवा कुम्भे लग्ने अष्टमे भागे (अष्टमनवांशे) जात वनिता (स्त्री) कामाग्नितप्ता=अतीव कामातुरा भवति। क्रूरे=पापग्रहे, चन्द्रभवनात्=चन्द्राधिष्ठितराशितः, मदस्थानगे=सप्तमगते सति तदा जाता स्त्री वैधव्यं=पतिमृत्युं, समुपैति=प्राप्नोति। यदि शुभकरः=बुध-गुरु-शुक्रः चन्द्रादस्त (सप्तम) गृहगतो भवेत्तदा स्त्रियै तद्भर्त्रे वा राज्यं, आस्पदं=प्रतिष्ठादिकं यच्छति=ददाति। तात्पर्यं यत् स्त्रीजातके चन्द्रात्सप्तमे पापग्रहः अशुभदः, शुभग्रहः शुभदश्चेति॥ ३५॥

यथोक्तम्—

'शुक्रासितौ यदि परस्परभागसंस्थौ शौक्रेऽथ दृष्टिपथगावुदये घटांशे।
स्त्रीणामतीव मदनाग्निमदप्रवृद्धिः स्त्रीभिः समं च पुरुषाकृतिभिर्लभन्ते'॥

(सारावली ४५।१४)

'दृक्संस्थावसितसितौ परस्परांशे शौक्रे वा यदि घटराशिसम्भवोंऽशः।
स्त्रीभिः स्त्रीमदनविषानलं प्रदीप्तं संशान्तिं नयति नराकृतिस्थिताभिः'॥

(बृहज्जातक २४।७)

'अन्योन्यभागेक्षणगौ सितार्कौ यद्वा सितर्क्षे तनुगे घटांशे।
कन्दर्पशान्तिं कुरुते नितान्तं नारी नराकारकराङ्गनानि'॥

(जातकाभरण, स्त्रीजा. १४)

हिन्दी — शुक्र और शनि परस्पर एक-दूसरे के नवांश में हों या परस्पर एक दूसरे को देखते हों अथवा कुम्भ के आठवें नवांश में उत्पन्न हो तो वह स्त्री कामाग्नि से संतप्त होती है। चन्द्रमा से सप्तमस्थान में यदि क्रूरग्रह हों तो वह स्त्री विधवा होती है। यदि चन्द्रमा से सप्तमस्थान में शुभग्रह हों तो वह राज्य और समृद्धि को देता है॥ ३५॥

स्त्रीजन्मलग्ने शशिशुक्रयुक्ते
कोपान्विता सा सुखभागिनी स्यात्।
सर्वत्र चन्द्रे सति तत्र जाता
सुखान्विता वीतरति प्रिया स्यात्॥ ३६॥

संस्कृत — सर्वत्र=पितृगृहं-पतिगृह, वीतरति=अल्पकामी प्रिया=पतिप्रिया। शेषाः सरलार्थाः स्पष्टार्थाः ॥ ३६ ॥

हिन्दी — स्त्री के जन्मलग्न में यदि चन्द्रमा के साथ शुक्र हो तो वह स्त्री क्रोधी और सुखी होती है। यदि चन्द्रमा लग्न में हो तो वह स्त्री सर्वत्र (पितृगृह-पतिगृह में) सुख से युक्त अल्पकामी और पतिप्रिया होती है ॥ ३६ ॥

शुक्रेन्दुभे रूपगुणाभिरामा कलावती जीवबुधोदये तु।
लग्नस्थिता जीवबुधासुरेज्या जाताङ्गना सर्वगुणप्रसिद्धा ॥ ३७ ॥

संस्कृत — स्पष्टार्थः ॥ ३७ ॥

हिन्दी — जन्मलग्न यदि शुक्र या चन्द्र की राशि (वृ. तु. कर्क) हो तो वह रूपगुण से युक्त, गुरु या बुध की राशि लग्न में हो तो अनेक कलाओं को जानने वाली, लग्न में यदि बृहस्पति-बुध और शुक्र स्थित हों तो वह कन्या सर्वगुण प्रसिद्धा होती है ॥ ३७ ॥

वाचस्पतौ नवमपञ्चमकेन्द्रसंस्थे
तुङ्गादिके भवति शीलसमन्विता च।
साध्वी सुपुत्रजननी सुखिनी गुणाढ्या
नूनं कुलद्वययशस्करिणी भवेत्सा ॥ ३८ ॥

संस्कृत — स्पष्टार्थः ॥ ३८ ॥

हिन्दी — यदि नवम-पञ्चम या केन्द्र में स्थित होकर गुरु अपनी उच्चादि में रहे तो वह स्त्री शील से युक्त-साध्वी-सुपुत्र की माता-सुखिनी-गुणयुक्ता और निश्चय ही दोनों कुल (पितृकुल-पतिकुल) का यशवर्द्धन करनेवाली होती है ॥ ३८ ॥

यदि शुभकरदृष्टा शिल्पिनी शुद्धचित्ता
सततमिह सलज्जा चारुमूर्तिः सुपुत्रा।
बहुधनशुभयुक्ता वल्लभे वल्लभत्वं
व्रजति शुभशतानां भाजनत्वं च होरा ॥ ३९ ॥

संस्कृत — **यदिति**। होरा=जन्मलग्नं, शुभकरदृष्टा=एकेन द्वाभ्यां त्रिभिर्वा यदि शुभगहैर्दृष्टा स्यात्तदा जाता कन्या शिल्पिनी शुद्धचित्ता सततं सलज्जासुपुत्रादि युतं भवति ॥ ३९ ॥

हिन्दी — लग्न को यदि शुभग्रह देखते हों तो वह स्त्री शिल्पज्ञ-शुद्ध चित्तवाली-निरन्तरलज्जायुक्त-रमणीयमूर्ति-पुत्रवती-धनसुख से युक्ता-पतिप्रिया और सैकड़ों शुभफलों को भोगने वाली होती है ॥ ३९ ॥

चन्द्रे कर्कटकोदये च बलिभिः शुक्रज्ञजीवेन्दुभि-
र्नानाशास्त्रकलारसज्ञचतुरा विख्याततेजस्विनी।

कामस्थैरथवा विलग्नभवनाद्धर्मस्थितैः खेचरैः
प्रव्रज्यामुपयाति जन्मसमये पाणिग्रहे चिन्तयेत्॥ ४०॥

संस्कृत — चन्द्र इति। कर्कटकोदये=कर्कलग्ने चन्द्रे, शुक्रज्ञजीवेन्दुभिश्च बलिभिस्तदा जाता स्त्री नानाशास्त्रकला-रसज्ञा-चतुरा-विख्याता-तेजस्विनी=प्रखरबुद्धियुक्ता च भवति। विलग्नभवनात्=जन्मलग्नात्, कामस्थैः=सप्तमभावगतैः, अथवा धर्मस्थितैः=नवमभावगतैः, खेचरैः=त्र्यादि वा त्र्याधिकग्रहैः स्थितैः तदा सा स्त्री प्रव्रज्यां=सन्यासमुपयाति। इमां प्रव्रज्यां जन्मसमये, पाणिग्रहे=विवाहे च चिन्तयेत्। यथा सारावल्याम् (४५। ३०-३२)—

क्रूरे जामित्रगते नवमे यदि खेचरो भवति नूनम्।
आप्नोति प्रव्रज्यां पापग्रहसम्भवामबला:॥
बलिभिर्बुधगुरुशुक्रैः शशाङ्कसहितैर्विलग्नगे शशिभे।
स्त्री ब्रह्मवादिनी स्यादनेकशास्त्रेषु कुशला च॥
जन्मकाले विवाहे च चिन्तायां वरणे तथा।
चिन्त्यं स्त्रीणां तु यत्प्रोक्तं घटते तत्पतिष्वपि॥ ४०॥

हिन्दी — कर्कराशि का चन्द्रमा लग्न में हो, शुक्र-बुध-गुरु तथा चन्द्रमा बलवान् हों तो वह स्त्री अनेक प्रकार के शास्त्र-कला और रसों की ज्ञाता-चतुरा-विख्यात और तेजस्विनी होती है। लग्न से सप्तम या नवमभाव में स्थित ग्रहों से जन्मसमय और विवाह के समय प्रव्रज्या योग का विचार करना चाहिए॥ ४०॥

पापेऽस्ते नवमगतग्रहस्य तुल्यां
प्रव्रज्यां युवतिरुपैत्यसंशयेन।
उद्वाहे वरणविधौ प्रदानकाले
चिन्तायामपि सकलं विधेयमेतत्॥ ४१॥

संस्कृत — पापे इति। जन्मलग्नात्, अस्ते=सप्तमे स्थाने, पापे=पापग्रहे सति तदा सा स्त्री नवमगतस्य ग्रहस्य तुल्यां=तत्कथितां प्रव्रज्यां, युवतिः=स्त्री, असंशयेनोपैति=प्राप्नोति। एतत् (प्रव्रज्यादि) उद्वाहे=विवाहे, वरणविधौ=कन्याया वैवाहिकवरणे, प्रदानकाले=कन्यादान काले, चिन्तायामपि सकलं विधेयं=विचारणीयमिति। यथा गुणाकरेण—

अस्ते पापे धर्मयातग्रहोक्तां प्रव्रज्यां स्त्री याति निःसंशयेन।
दानोद्वाहे प्रश्नकालेषु चैवं चिन्त्यं सर्वं हौरिकैस्तत्र युक्त्या॥

अत्र ग्रहोक्ता: (बृ.जा.भट्टो. १५-१) प्रव्रज्या वक्ष्यन्ते-योगकर्तृषु ग्रहेषु यदि सूर्यो बलीयान् चेत्तदा तापसः, चन्द्रश्चेत्तदा कापालिकः, भौम स्तदा रक्तपटः

बुधस्तदा एकदण्डी, गुरुः तदा त्रिदण्डी (भिक्षुः), शुक्रस्तदा चरकः, शनिश्चेत्तदा नग्रः, इति प्रव्रज्याः। यथा स्वल्प जातके—

'तापस-वृद्धश्रावक- रक्तपटा- जीवि- भिक्षु- चरकाणाम्- निर्ग्रन्थानामिति'॥ ४१॥

हिन्दी — यदि स्त्री की कुण्डली में पापग्रह सप्तमभाव में रहे तो नवम भावस्थ ग्रह के समान प्रव्रज्या को वह प्राप्त होती है इसमें सन्देह नहीं। स्त्री के विवाह में, कन्या वरण में, कन्यादान में और चिन्ताकाल में यह सब विचारना चाहिए॥ ४१॥

जन्मन्युद्वाहकाले च चिन्तायां वरणे तथा।
स्त्रीणां चिन्ता बुधेनोक्ता घटते तत्पतिष्वपि॥ ४२॥

संस्कृत — स्पष्टार्थः॥ ४२॥

हिन्दी — स्त्रियों के जन्म-विवाह और वरण में प्रव्रज्या का विचार करना चाहिए। यह प्रव्रज्या योग स्त्री के पति में भी घट सकता है॥ ४२॥

क्रूरेऽष्टमे विधवता निधनेश्वरांशे
यस्य स्थिते वयसि तस्य समे प्रदिष्टा।
सत्स्वर्थगेषु मरणं स्वयमेव तस्याः
कन्यालिगोहरिषु चाल्पसुतत्वमिन्दौ॥ ४३॥

संस्कृत — क्रूर इति। क्रूरे=पापग्रहे, अष्टमे स्थिते, निधनेश्वरः= अष्टमेशः यत्र तत्र यस्य ग्रहस्यांशे=नवमांशे स्थितो भवेत्, तस्य समे वयसि=तस्यायुर्दाये (अ. ५ श्लो. २) विधवता (विधवा) प्रदिष्टा=पतिमरणं वक्तव्यमिति। (तदानीं) सत्सु=शुभग्रहेषु, अर्थगेषु=द्वितीयभावगतेषु तस्याः स्त्रियाः स्वयमेव मरणं भवेदर्थात् स्त्री स्वयमेव म्रियते इति। इन्दौ=चन्द्रे, कन्यालिगोहरिषु=कन्या-वृश्चिक-वृष-सिंहराशि गते चेत्तदा स्त्री अल्पसुतत्वम्=अल्पपुत्रमाप्नुयादिति। यथोक्तं सारावल्याम् (४५। २७-२८)—

पापेऽष्टमे तु विधवा निधनाधिपतिर्नवांशके यस्यं।
तस्य दशायां मरणं वाच्यं तस्याः शुभैर्द्वितीयस्थैः॥
कन्यालिवृषभसिंहे शिशिरमयूखेऽल्पपुत्रा स्यात्।
पुत्रभवने शुभयुते निरीक्षिते वा तथैव स्यात्॥ ४३॥

'वैधव्यं स्यात्पापखेटेऽष्टमस्थे रन्ध्रस्वामी संस्थितो यस्य चांशे।
मृत्युः पाके तस्य वाच्योऽङ्गनायाः सौम्यैरर्थस्थानगैः स्यात्स्वयं हि'॥
(जातकाभरणस्त्री. २०)

'कन्यालिगे सिंहगते शशाङ्के पङ्केरुहाक्षी खलु स्वल्पपुत्रा।
पुत्रालयं चेच्छुभखेचरेन्द्रैर्दृष्टं युतं वा बहुता च तेषाम्'॥
(जातकाभरणस्त्री २४)

'क्रूरेष्वायुषि भर्तृहन्त्र्यापि धने सन्तः स्वयं स्त्रीमृतिः।
सुतस्थेऽलिस्त्रीगोहरिषु हिमगौ चाल्पतनया'॥
(फलदीपिका)

'कन्यासिंहालिगोषु स्थितवति शशिनि स्वल्पपुत्रा प्रदिष्टा॥
क्रूरे मृत्युगते भवेद्विधवता यस्यांशके मृत्युपः।
पाके तस्य शुभेषु चार्थभवने तस्याः स्वयं पञ्चता'॥
(गुणाकर)

हिन्दी — अष्टमभाव में पापग्रह हो और अष्टमेश जिसग्रह के नवांश में हो उसग्रह के नैसर्गिकायु (अ. ५ श्लो. २) तुल्य अवस्था में वह स्त्री विधवा होती है। इसयोग में शुभग्रह यदि द्वितीयभाव में हो तो स्वयं उसकी ही मृत्यु होती है। चन्द्रमा यदि कन्या-वृश्चिक-वृष या सिंहराशि में हो तो वह अल्पपुत्रवती होती है॥ ४३॥

रन्ध्रे मिश्रबले शुभाशुभखगैरालोकिते वा युते
दम्पत्योः समकालमृत्युमखिलज्योतिर्विदः संविदुः।
एकस्थौ मदलग्नपौ च यदि वा लग्नस्थिते कामपे
कामस्थे तनुपे शुभग्रहयुते मृत्युस्तयोस्तुल्यतः॥ ४४॥

संस्कृत — रन्ध्र इति। रन्ध्रे=अष्टमे, मिश्रबले=शुभाशुभग्रहाः सामान्य बलयुते तथा शुभैरशुभैश्च ग्रहैरालोकिते वा युते सति तदा दम्पत्योः=वधू-वरयोः, समकालम्=एकस्मिन्नेव समये मृत्युं=मरणं, अखिलज्योतिर्विदो विद्वांसः संविदुरूचुः। मदलग्नपौ=सप्तमेश लग्नेशौ यत्र तत्रैकस्थौ भवेतां, यदि वा कामपे=सप्तमेशे लग्नस्थिते, तनुपे=लग्नेशे, कामस्थे=सप्तमगते शुभंग्रहयुते च भवेत्तदा तयोः=स्त्रीपुंसोः तुल्यतः=एककाले, मृत्युः=मरणं भवेदिति।।४४॥

हिन्दी — अष्टमभाव समान्य बल से युक्त हो और उसे शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह देखते हों अथवा उससे युक्त हों तो पति-पत्नी की मृत्यु समकाल में होती है यह सभी ज्यौतिषशास्त्र के विद्वानों ने कहा है। यदि सप्तमेश और लग्नेश एक ही राशि में हों, या सप्तमेश लग्न में हो, या सप्तम में लग्नेश रहे और वह शुभग्रह से युक्त रहे तो दोनों पति-पत्नी की मृत्यु समकाल में होती है॥ ४४॥

सत्स्वर्थगेषु स्वयमेव सा स्त्री विपद्यते तत्परिपाककाले।
रन्ध्रस्थतन्नाथतदंशपानां दशापहारे मृतिमाहुरार्याः॥ ४५॥

संस्कृत — सात्स्विति। सत्सु=शुभग्रहेषु, अर्थगेषु=द्वितीयभावगतेषु,

तत्परिपाककाले=तेषां (शुभग्रहाणां) मध्ये बलीयसो ग्रहस्य दशाऽन्तर्दशाकाले सा स्त्री स्वयमेव विपद्यतें=म्रियते। रन्ध्रस्थतन्नाथतदंशपानां=रन्ध्रे (अष्टमेभावे) यो ग्रहस्तिष्ठति, तन्नाथः अष्टमेशः तदंशपः=अष्टमगतनवांशपतिः (जन्मलग्नतो ६४ नवांशेशः) इत्येषां त्रयाणां मध्ये यो बलीयान् तस्य ग्रहस्य दशापहारे=दशाऽन्तर्दशावसाने स्त्रिया मृतिमार्या आहुरिति भावार्थः ।।४५ ॥

हिन्दी — यदि धनभाव में शुभग्रह हों तो वह स्त्री उसग्रह की दशा के परिपाक काल में स्वयं मरती है। अष्टमस्थान में स्थितग्रह और अष्टमेश तथा अष्टमेश-नवांशपति ग्रह की दशाभुक्ति में स्त्री की मृत्यु होती है ऐसा श्रेष्ठ विद्वान् लोगों ने कहा है ॥ ४५ ॥

सहजभवननाथे पुङ्ग्रहे पुङ्ग्रहर्क्षे
पुरुषखचरयुक्ते पुङ्ग्रहालोकिते वा।
नयनभवनकेन्द्रे कोणगे वा बलिष्ठे
बहुधनसुखवन्तं सोदरं याति जाता ॥ ४६ ॥

संस्कृत — सहजेति श्लोकद्वयेन। सहजभवननाथे=तृतीयेशे, पुङ्ग्रहे=पुरुषग्रहे (रविभौमगुरु), पुङ्ग्रहर्क्षे=पुरुषग्रहराशौ=सिंह-मेष-वृश्चिक-धनुः-मीन राशि स्थिते, पुरुषखचरेण=रविभौमगुरुणा युक्ते वा केनचित् पुङ्ग्रहेणालोकिते, वा सहजेशे नयनभवने=द्वितीयभावे केन्द्रे कोणगे वा सति बलिष्ठे=सबले च भवेत्तदा जाता स्त्री बहुधनसुखवन्तं सोदरम्=एकजनन्या जातं भ्रातरं, याति=प्राप्नोति ॥ ४६ ॥

हिन्दी — तृतीयेश पुरुषसंज्ञक ग्रह हो या पुरुषग्रह की राशि में स्थित हो या पुरुषग्रह से युक्त हो अथवा पुरुषग्रह से दृष्ट हो, या द्वितीय-केन्द्र या त्रिकोण में स्थित होकर बलिष्ठ हो तो उस स्त्री को बहुत धन-सुखवाला भाई होता है ॥ ४६ ॥

सहोदरस्थानपलाभनाथौ विलग्नतः पञ्चमराशियातौ।
नृपालतेजोगुणरूपवन्तं सहोदरं जातवधूः समेति ॥ ४७ ॥

संस्कृत — सहोदरेति। सहोदरस्थानपलाभनाथौ=तृतीयैकादश-भावेशौ, विलग्नतः=जन्मलग्नात् पञ्चमभावगतौ भवेतां तदा जातवधूः=जाता स्त्री, नृपालस्य=राज्ञः तेजोगुणरूपाणि युक्तं (राजसदृशं) सहोदरं भ्रातरं समेति= प्राप्नोति ।।४७ ॥

हिन्दी — तृतीयेश और लाभेश यदि लग्न से पञ्चमभाव में हों तो उस स्त्री को राजा के समान तेज-गुण-रूपयुक्त सहोदर भाई होता है ॥ ४७ ॥

पति विचार—

यस्या मन्मथमन्दिरे गतबले शून्ये खलालोकिते
सौम्यव्योमनिवासदृष्टिरहिते भर्ता नर को भवेत्।
क्लीबः स्यात् पतिरस्तगे शशिसुते सार्कात्मजे दुर्भगा
वन्ध्या वा तरुणी चरे मदगृहे नित्यं प्रवासान्वितः॥ ४८॥

संस्कृत — यस्या इति। यस्या (स्त्रिया) मन्मथमन्दिरे=सप्तमस्थाने, गतबले=बलहीने, शून्ये=ग्रहविहीने, खलालोकिते=पापग्रहनिरीक्षते, तस्मिन् सौम्यव्योमनिवासानां=शुभग्रहाणां, दृष्टिरहिते=दृष्टिविहीने सति तदा भर्ता= तस्याः स्त्रियाः पति, को नरः=कुत्सितोनरः (मद्यपी) भवेत्। शशिसुते=बुधे, अस्तगे=सप्तमस्थानगते सति तदा तस्याः पतिः क्लीबः=नपुंसकः, सार्कात्मजे= सप्तमे शनियुते बुधस्तदा तरुणी=स्त्री, दुर्भगा=व्याधितयोनिः, वा वन्ध्या= प्रसवविहीना भवति। चरे मदगृहे=लग्नात्सप्तमे स्थाने चरराशौ तदा तस्याः भर्त्ता नित्यं=सर्वदा प्रवासान्वितः=विदेशवासिनो भवति न कदाचिद् गृहे स्थास्यति। सप्तमे यदि स्थिरराशौ तदा नित्यं गृहस्थो, द्विस्वभावे च गृहान्वितः प्रवासान्वितश्च भवतीति। यथा वराहः (बृ.जा. २४-८)—

शून्ये कापुरुषोऽबलेस्तभवने सौम्यग्रहावीक्षिते।
क्लीबोऽस्ते बुधमन्दयोश्चरगृहे नित्यं प्रवासान्वितः॥

तथा च ढुण्ढिराजः (जा.भ.स्त्री १३)

शून्ये मन्मथमन्दिरे शुभखगैर्नालोकिते निर्बले
बालायाः किल नायको मुनिवरैः कापूरुषः कीर्तितः।
जामित्रं बुधमन्दयोर्यदि गृहं षण्ढो भवेन्निश्चितं
राशौ तत्र चरे विदेशनिरतो द्व्यङ्गे च मिश्रस्थितिः॥ ४८॥

हिन्दी — जिस स्त्री का सप्तमभाव निर्बल हो, ग्रहविहीन हो, शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो उसका पति कापुरुष (कायर) होता है। बुध यदि सप्तमभाव में हो तो उसका पति नपुंसक होता है। यदि सप्तमस्थ बुध शनि से युत हो तो वह स्त्री बन्ध्या तथा दुर्भगा होती है। सप्तमभाव में चरराशि हो तो उसका पति सदा प्रवासी होता है॥ ४८॥

स्वांशे भास्वति कामगे मृदुरतिक्रीडाविनोदी पति-
श्चन्द्रे सौख्यमुपैति भूमितनये जारो वधूतत्परः।
विद्वान् चन्द्रसुते जितेन्द्रियवरो जीवे मदस्थानगे
शुक्रे कान्तवपुः सुखी च रविजे वृद्धोऽतिमूर्खो भवेत्॥ ४९॥

संस्कृति — स्वांश इति। स्वांशे=स्वनवांशगते, भास्वति=सूर्ये, कामगे=सप्तमस्थानगते तदा पतिः=स्वामी मृदु रतिक्रीडाविनोदी च भवति। चन्द्रे स्वांशे गते सप्तमे स्थिते तदा सा स्त्री पतिसौख्यमुपैति। भूमितनये=भौमे स्वांशे सप्तमे च गते सति तदा पतिः जारः=परस्त्रीलोलुपः, वधूतत्परः= स्त्रीलोलुपश्च भवति। चन्द्रसुते=बुधे, तथाभूते सति तदा पतिः विद्वान् भवति। जीवे=गुरौ, मदस्थानगे=सप्तमस्थानगते स्वांशे सति तदा जितेन्द्रियाणां वरः=तस्या भर्त्ता श्रेष्ठो भवति। शुक्रे तथाभूते सति तदा पतिः, कान्तवपुः=मनोरम सुखी च भवति। रविजे=शनौ सप्तमेभावे स्वांशे गते सति तदा पतिः वृद्धः अतिमूर्खश्च भवति।

यथा उक्तम् बलभद्रेण होरारत्ने (अ. १० गर्गोक्त १३-१६)—

अस्तेऽर्के स्वांशगे स्वर्क्षे भर्त्ता रतिपरो मृदुः।
चन्द्रेऽस्ते स्वर्क्षगे स्वांशे मृदुस्मरवशः पतिः॥
भौमेऽस्ते स्वांशगे क्षेत्रे स्त्रीलोलो निर्धनः पतिः।
सौम्येऽस्ते स्वांशके क्षेत्रे भर्त्ता विद्वान् भवेत् सुखी॥
जीवेऽस्ते स्वांशके स्वर्क्षे गुणवान् विजितेन्द्रियः।
शुक्रेऽस्ते स्वांशके क्षेत्रे कन्यासौभाग्यवान् सुखी॥
मन्देऽस्ते स्वांशके क्षेत्रे वृद्धो मूर्खो भवेत्पतिः।
एवं सप्तमराशिस्थैर्ग्रहैर्नृणां वदेत् फलम्॥ इति॥ ४९॥

हिन्दी — स्वनवांश में होकर सूर्य यदि सातवें भाव में स्थित हो तो उस स्त्री का पति कोमलमति तथा रतिक्रीडा का विनोदी होता है। स्वनवांशस्थ चन्द्र यदि सप्तम में हो तो सुखी, स्वनवांशस्थ मङ्गल यदि सप्तम में हो तो जार पुरुष उस स्त्री में रत रहे, स्वनवांशस्थ बुध यदि सप्तम में हो तो उसका पति पण्डित हो, स्वनवांश का गुरु सप्तम में हो तो उसका पति जितेन्द्रिय हो, अपने नवांश का शुक्र सप्तम में हो तो उसका पति सुन्दर शरीरवाला-सुखी हो तथा शनि स्वनवांश में हो तो उसका पति वृद्ध और विशेषकर मूर्ख होता है॥ ४९॥

स्यान्मार्दवाङ्गो गुणवान्प्रगल्भो जामित्रराश्यंशकजातु याऽस्याः।
सौरेऽस्तगे स्वांशगृहोपयाते वृद्धोऽतिमूर्खः पतिरेव तस्याः॥ ५०॥

संस्कृत — स्यादिति। जामित्रराश्यंशकजातु=लग्नात्सप्तमभावस्य नवांशे या स्त्री समुत्पन्ना भवति, अस्याः पतिः मार्दवाङ्ग=कोमलगात्रयुक्तः गुणवान्-प्रगल्भः (चतुरः) च भवति। यदि मिथुनराशिर्लग्नं (२/१५°) स्यात्तदाऽत्र कुंभराशेर्नवांशेन भवतिव्यमेवं सर्वत्रबोध्यम्। सौरे=शनेः, अस्तगे=सप्तमगते, स्वांशगृहोपयाते=स्वनवांशराशिगते तदा तस्याः पतिः वृद्ध अतिमूर्खश्च भवति॥ ५०॥

हिन्दी — लग्ननवांश में यदि सप्तमभावगत राशि में (मेषलग्न तुला के नवांश में) उत्पन्न स्त्री का पति कोमलाङ्ग-गुणवान् और साहसी होता है। यदि शनि अपनीराशि या नवांश में होकर सप्तमभावगत हो तो उस स्त्री का पति वृद्ध तथा अतिमूर्ख होता है॥५०॥

दुःस्थौ धर्मगृहेशदेवसचिवौ भर्ता गतायुर्भवेद्
दीर्घायुर्धनवां स्त्रिकोणगृहगौ केन्द्रस्थितौ वा यदि।
विद्वान् बोधनवाहनेशसहितौ सारार्कजौ कर्षकः
स्वर्भानुध्वजसंयुतौ यदि खलः सारीश्वरश्चोरराट्॥५१॥

संस्कृत — दुःस्थाविति। धर्मगृहेश देवसचिवौ=नवमेशः बृहस्पती च यदि दुःस्थौ=षड्ष्टव्ययभावगतौ भवेतां तदा तस्याः भर्त्ता गतायुर्भवेत्=म्रियत इति भावार्थः। तौ (नवमेश-गुरु) यदि त्रिकोण (५-९) गृहगौ वा केन्द्र (१-४-७-१०) स्थितौ तदा तस्याः भर्त्ता दीर्घायु=चिरजीवी धनवाँश्च भवेत्। तौ (नवमेश गुरु) यदि बोधनवाहनेशसहितौ=बुधचतुर्थेशाभ्यां युतौ स्यातां तदा तस्याः भर्त्ता विद्वान् भवति। तौ (नवमेशगुरु) सारार्कजौ=भौमशनिभ्यां युतौ स्यातां तदा भर्त्ताकर्षकः=कृषिकर्मा भवेत्। तौ (नवमेशगुरु) स्वर्भानुध्वजसंयुतौ =राहुकेतुयुतौ स्यातां तदा भर्त्ता खलः=कुटिलः स्यात्। सारीश्वरश्चोरराट् =(गुरुधर्मेशौ) अरीश्वरेण षष्ठेशेन सहितो भवेत्तदा तस्याः भर्त्ता चोरराट् प्रसिद्धचौरो भवेदितिभावः॥५१॥

हिन्दी — नवमेश और बृहस्पति यदि दुष्ट (६-८-१२) स्थान में हों तो उस स्त्री का पति अल्पायु होता है। यदि वे दोनों केन्द्र-कोण (१-४-७-१०-५-९) में स्थित हों तो उस स्त्री का पति दीर्घायु और धनी होता है। यदि वे दोनों केन्द्र-कोण में बुध या चतुर्थेश से युक्त हों तो उसका पति विद्वान्, भौम या शनि से युक्त हो तो कर्षक (खेतिहर), राहु या केतु से युक्त हो तो कुटिल तथा यदि षष्ठेश से युक्त हो तो चोरों का सरदार होता है॥५१॥

गौराङ्गः पतिरस्तगे दिनकरे कामी सरोषेक्षण-
श्चन्द्रे रूपगुणान्वितः कृशतनुर्भोगी रुगार्तो भवेत्।
नम्रः क्रूररसोऽलसः पटुवचाः संरक्तकान्तिः कुजे
विद्यावित्तगुणप्रपञ्चरसिकः सौम्ये मदस्थानगे॥५२॥
दीर्घायुर्नृपतुल्यवित्तविभवः कामी च बाल्ये गुरौ
कान्तो नित्यविनोदकेलिचतुरः काव्ये कविः क्ष्मापतिः।
मन्दे वृद्धकलेवरोऽस्थिरतनुः पापी पतिः कामगे
राहौ वा शिखिनि स्थिते मलिनधीर्नीचोऽथवा तत्समः॥५३॥

संस्कृत — अत्र भर्तुर्लक्षणमाह। सरलार्थेनोक्तं भर्त्तुर्लक्षणम्॥५२-५३॥

हिन्दी — यदि सूर्य सप्तमस्थ हो तो उसका पति गौरवर्ण का कामुक और रोषदृष्टिवाला होता है। यदि चन्द्र सप्तमस्थ हो तो उसका पति रूप-गुण से युक्त, दुर्बल शरीरवाला, भोगी और रोगी होता है। यदि मङ्गल सप्तमभाव में हो तो उसका पति नम्र, क्रूरप्रवृत्ति वाला-आलसी-चतुरवाणी बोलनेवाला और रक्तगौर कान्तिवाला होता है। यदि बुध सप्तमभाव में हो तो उसका पति विद्या-वित्त-गुण का रसिक और प्रपञ्ची होता है।

बृहस्पति यदि सप्तमस्थान में हो तो उस स्त्री का पति दीर्घायु-राजा के समान धनी तथा बाल्यावस्था से ही कामी होता है। यदि शुक्र सप्तमस्थान में रहे तो उस स्त्री का पति तेजवान्-नित्यविनोद और क्रीड़ा करने में प्रखर-कवि और राजा जैसा धनी होता है। यदि शनि सप्तमभाव में हो तो उसका पति वृद्धशरीरवाला, कभी स्वस्थ कभी रुग्ण और पापी होता है। राहु या केतु यदि सप्तमभाव में रहें तो उसका पति मलिन बुद्धिवाला नीच वा नीच के समान होता है॥५२-५३॥

दिग्देशस्थितिधर्मकर्मजगुणाः पुंजातके योषितां
ये नारीजनजातके निजपतौ संयोजितास्तत्त्वतः।
द्यूनांशोपगतग्रहेषु बलवत्खेटांशतुल्याः सुताः
केन्द्रे कामपतिः करोति विपुलं कल्याणकालोत्सवम्॥५४॥

इति श्रीनवग्रहकृपया वैद्यनाथविरचिते जातकपरिजाते
स्त्रीजातकाध्यायः षोडशः॥ १६॥

संस्कृत — दिग्देशेति। पुंजातके=पुरुषजातके दिग्देशस्थितिधर्मकर्मजगुणाः ये उक्तास्त एव योषितामपि जातके आदेश्याः। एवं नारीजनजातके=स्त्रीजातके ये निगदिता ते स्त्रीणां निजपतौ=स्वस्वभर्त्तृविषये तत्त्वतो=विशेषेण संयोजिता जाता। द्यूनांशे=सप्तमभावस्य नवमांशे स्थितानां ग्रहाणां मध्ये बलवत्=बलीयसो ग्रहस्य नवांशसङ्ख्यातुल्याः सुता=पुत्राः भवन्ति। अर्थात् लग्नात्सप्तमभावराशेः सम्बन्धिके नवांशे यावन्तो ग्रहा भवेयुस्तेषां मध्ये यो ग्रहः सर्वबली भवेत् असौ ग्रहः यावत्सङ्ख्ये नवांशे अवस्थितो भवेत्तन्नवांशसंख्या तुल्याः पुत्राः। कामपतिः=सप्तमेशः, केन्द्रे (१-४-७-१०) गतश्चेत्तदा विपुलं कल्याणकालोत्सवं करोतीति भावः॥५४॥

"प्रज्ञावर्द्धिनी" संस्कृतटीकायां जातकपारिजातस्य
स्त्रीजातकाध्यायः षोडशः॥

हिन्दी — पुरुषजातक में दिशा-देश-स्थिति-धर्म-कर्म-आदि जो शुभाशुभ फल कहे गये हैं, वे सब स्त्रीजातक में भी कहने चाहिये। इसीतरह स्त्रीजातक में पुरुषोचित फल स्त्री के पति के लिए कहना चाहिये। सप्तमभाव के नवांश में जितने ग्रह हों उनमें सबसे बली ग्रह के नवांशसंख्यातुल्य पुत्रोत्पत्ति कहना चाहिए। यदि सप्तमेश केन्द्रस्थान में रहे तो अत्यन्त ही कल्याणकारक होता है ॥ ५४ ॥

सत्येन्द्रमिश्रकृत "प्रज्ञावार्द्धिनी" हिन्दीटीका में
जातकपारिजात का स्त्रीजातकाध्याय षोडश समाप्त ॥

◆

कालचक्रदशाध्यायः—१७

कालचक्र—

प्रणम्य परमात्मानं शिवं परमकारणम्।
खेचरं चक्रमध्यस्थं चतुःषष्टिकलात्मकम्॥ १॥
प्रपच्छ देवदेवेशमीश्वरं सर्वमङ्गला।
कालचक्रगतिं सर्वां विस्तराद्वद मे प्रभो॥ २॥

संस्कृत — अत्र कालचक्रगतिविषये जिज्ञासा प्रशमनार्थं भगवत्याः (गौर्याः) शङ्करं (शिवं) प्रति प्रश्नः—'प्रणम्येति श्लोकद्वयेन' सरलार्थेन॥ १-२॥

हिन्दी — आकाश में चलते हुए ग्रहों के बीच में चौसठकला वाले देव परमकारण-परमात्मा देवेश श्री शिवजी को प्रणाम कर सर्वमङ्गला गौरी (पार्वती) ने पूछा—हे देव मुझे कालचक्र की गति को विस्तारपूर्वक बताइये॥ १-२॥

ईश्वर उवाच—

अहमादित्यरूपोऽस्मि चन्द्रमास्त्वं प्रचक्षसे।
संयोगेन वियोगेन जगत्स्थावरजङ्गमम्॥ ३॥

संस्कृत — कालचक्रविषयकं प्रश्नं तदुत्तरमाह—**अहमिति**। अहं सर्वेषामात्मा (पुरुषरुपः), आदित्यरूपः=सूर्य इवास्मि यथा 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' इति वेदवचनात्। त्वं (गौरी) च चन्द्रमाः (प्रकृति) प्रचक्षसे सर्वेषां मनस्त्वात् यथा 'चन्द्रमा मनसो जातः' यथोक्तं ''आत्मा रविः शीतकरस्तु चेतः'' इति ज्योतिषशास्त्र वचनत्वात्। अत एवात्म-मनसोः परस्परं संयोगेन वियोगेन च स्थावरजङ्गमं=चराचरं, जगत् प्रादुर्भवति, तिरोभवति च। अनेनेदमुक्तं भवति। सूर्याचन्द्रमसावेव दशायां कारणत्वेन गृह्येते। ताभ्यामेव राशेः-नक्षत्रस्य-कालस्य चावगमनात्॥३॥

हिन्दी — शिव जी ने कहा— मैं सूर्यरूप हूँ तुम चन्द्ररूप हो इनके संयोग और वियोग से ही सारा स्थावर जङ्गम संसार है॥ ३॥

पञ्च प्राचीरालिखेद्बाणसङ्ख्यास्तिर्यग्रेखा वर्जितान्तश्चतुष्काः।
प्रागादीशा द्वादश व्योमवासा ज्योतिश्चक्रस्वामिनस्तूवराद्याः॥ ४॥
धराजशुक्रज्ञशशीनसौम्यसितारजीवार्कजमन्दजीवाः।
क्रमेण मेषादिकराशिनाथास्तदंशपाश्चेति वदन्ति सन्तः॥ ५॥
भूतैकविंशद्विरयो नवदिक्षोडशाब्धयः।
सूर्यादीनां क्रमादब्दा राशीनां स्वामिनो वशात्॥ ६॥

संस्कृत — पञ्च प्राचीति। तत्र चक्रलेखनविधि हि चक्रदर्शनेन स्फुटमवगम्यते। कालचक्रे सूर्यादीनां दशावर्षाणि क्रमेण भूतादिवर्षादयः भवन्ति। यथा सूर्यस्य=५ चन्द्रस्य=२१ भौमस्य=७ बुधस्य=९ गुरोः=१० शुक्रस्य=१६ शनेः=४ वर्षाणि। एतानि वर्षाणि प्रतिराशिं खण्डनवके 'पौरङ्गावो मातासहोधी' वाक्याक्षरवशात् आगत राशीनां स्वामिनां वर्षं ज्ञेयानि।

सव्यचक्रवाक्यानि—

१. पौ-र-ङ्गा-वो-मा-ता-स-हो-धी।
२. न-क्ष-त्र-दा-सी-च-व-र्ण-गः।
३. रू-पो-त्र-क्षु-नि-धा-य-र-ङ्ग-म्।
४. वाणी-च-स्थ-न्द-धि-न-क्ष-त्र-म्॥
५. हं-स-श्च-व-शां-ब-र-प-त्र-म्।
६. क्ष-न्ना-धी-क-र-गो-भौ-मा-च।
७. सु-द-धि-न-क्ष-त्र-जः-सि-तः।
८. वा-मा-ङ्गा-र-को-त्र-क्षु-र्नि-धिः॥

अपसव्यचक्र वाक्यानि—

१. ध-न-क्षे-न्न-प-रा-ङ्ग-मि-व।
२. ता-सा-द-त्र-क्षु-र्नि-धि-र्द्दा-सा।
३. च-र्मी-भो-गी-रा-य-ध-न-र्क्ष।
४. त्र-यो-रा-गी-मा-भे-त्ता-म-ह।
५. त्र-क्षु-र्नि-धी-दा-स-स्त-मे-व।
६. गि-रा-यु-ध-न-क्ष-त्र-प-रः।
७. गो-मां-वा-ची-स-दा-त्रि-र्क्षु-न्ने।
८. धि-ज-सि-त-मि-वा-ङ्गा-रि-का।

सव्यापसव्य चक्रयोः वर्ण (अक्षर) संख्या ज्ञानार्थं कटपयादि सूत्रमपेक्ष्यते तद्यथा—

क १	च ६	ट १	त ६	प १	य १	ष ६
ख २	छ ७	ठ २	थ ७	फ २	र २	स ७
ग ३	ज ८	ड ३	द ८	ब ३	ल ३	ह ८
घ ४	झ ९	ढ ४	ध ९	भ ४	व ४	क्ष ११
ङ ५	ञ १०	ण ५	न १०	म ५	श ५	त्र १२

फलदीपिकायां (२२।५-९)

१. पौ-रं-गा-वो-मि-त-सं-दि-ग्धं।
२. न-क्ष-त्रे-न्दु-स-तु-भू-शू-लं।
३. रु-पे-त्र-क्ष-त्रि-ध-यो-र-ङ्गें।
४. वा-णी-च-स्थं-द-धि-न-क्ष-त्रं।
५. दा-स-त-वे-शो-गौ-री-पु-त्रं।
६. क्ष-त्रि-धि-का-रो-गो-भू-शे-षं।
७. सौ-द-धि-न-क्ष-त्रे-हा-स-न्तो।
८. भौ-म-गु-रु-पु-त्रा-क्षो-ना-धि।

अपसव्य वाक्य सूत्रम्—

१. धे-नु-क्षे-त्रे-पु-र-गो-शं-भुः।
२. ता-सां-ज-त्रु-क्ष-त्रि-धि-दा-सी।
३. च-र्मा-भो-गी-रा-य-धि-ना-क्ष।
४. स्त्री-पौ-रा-ङ्गी-शि-व-ती-र्था-ब्जे।
५. त्र-क्ष-नि-धि-र्दा-सू-ची-शं-भो।
६. गौ-र-य-धी-न-क्ष-त्रं-पा-रं।
७. गो-शि-व-ती-र्थे-दा-त्री-क्ष-त्रो।
८. धी-ह-सि-तां-शु-भो-गी-र-म्या।

हिन्दी — (पाँच रेखायें पूर्व से पश्चिम (खड़ी) और पाँच रेखायें उत्तर से दक्षिण (पड़ी) खींचने पर १६ कोष्ठक होते हैं। बीच के ४ कोष्ठकों को छोड़ देने पर १२ कोष्ठकों का चक्र हो जाता है। इसमें पूर्वदिशा से ईशानकोण पर्यन्त मेषादि द्वादश राशियाँ होती हैं। दक्षिण भारत में ऐसा चक्र बनाया जाता है। उत्तर भारत में लग्न को बीच में रखते हैं, परन्तु दक्षिण में लग्न को बीच में नहीं रखते बल्कि जहाँ लग्न होता है वहाँ लग्न लिख देते हैं। मेष का स्वामी मङ्गल, वृष का शुक्र, मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, कन्या का बुध, तुला का शुक्र, वृश्चिक का मङ्गल, धनु का बृहस्पति, मकर का शनि, कुम्भ का शनि और मीन का बृहस्पति होता है। मेषनवांश का स्वामी मङ्गल, वृषनवांश का शुक्र, मिथुननवांश का बुध, कर्कनवांश

मीन	मेष	वृष	मिथुन
कुंभ			कर्क
मकर			सिंह
धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या

का चन्द्रमा, सिंहनवांश का सूर्य, कन्यानवांश का बुध, तुलानवांश का शुक्र, वृश्चिकनवांश का मङ्गल, धनुनवांश का बृहस्पति, मकरनवांश का शनि, कुम्भनवांश का शनि और मीननवांश का स्वामी बृहस्पति होता है।

सूर्य-सिंह की दशा ५ वर्ष, चन्द्रमा-कर्क की २१ वर्ष, मेष-मङ्गल या वृश्चिक-मङ्गल की ७ वर्ष, मिथुन-बुध की या कन्या-बुध की ९ वर्ष, धनु-बृहस्पति या मीन-बृहस्पति की १० वर्ष, शुक्र या वृष-तुला-शुक्र की १६ वर्ष और मकर-शनि या शनि-कुंभ की ४ वर्ष की दशा होती है। कालचक्रदशा में राशियों की दशा होती है ग्रहों की नहीं ॥ ४-५ ॥

अश्वीपुनर्वसूहस्तमूलप्रोष्ठपदादिषु ।
अंशकान् गणयेन्मेषात्प्रादक्षिण्यक्रमं वदेत् ॥ ७ ॥
रोहिणीमघवैशाखवैष्णवादिषु भेषु च।
अंशकान् वृश्चिकादीनां गणयेदपसव्यतः ॥ ८ ॥
दक्षिणा त्रिकनक्षत्रद्वादशांशकराशिषु।
चक्रं प्रदक्षिणीकृत्य मीनान्ते विन्यसेत्पुनः ॥ ९ ॥
उत्तरात्रयनक्षत्रं वृश्चिकाद्यप्रदक्षिणम्।
कृत्वा चापान्तकेऽन्यस्मिन् ज्ञातव्ये दक्षिणोत्तरे ॥ १० ॥
सव्यापसव्यमार्गेण चाश्विन्यादि त्रिकं त्रिकम्।
देहादि गणयेत्सव्ये वामे जीवादि गण्यते ॥ ११ ॥
मेषगोयमकुलीरमन्दिरेष्वंशकेषु परमायुरुच्यते।
ज्ञानकं मदगजास्तदा क्रमात्तत्र कोणभवनेषु तद्वदेत् ॥ १२ ॥

देह-जीवज्ञान—

एवमायुःपरिज्ञानं देहजीवौ प्रकल्प्य च।
सव्ये तु प्रथमांशस्तु देह इत्यभिधीयते ॥ १३ ॥
जीवः सर्वेष्वन्त्यपादौ विलोममपसव्यके।

संस्कृत — उपरोक्त चक्रे—अश्विनी-पुनर्वसु-हस्त-मूल-पूर्वभाद्रपदादिषु त्रिषु त्रिषु नक्षत्रेषु मेषादारभ्यांशकान् क्रमेण गणयेत्। एतत्किल प्रादक्षिण्यक्रम-वशात्=सव्यमार्गं वदेत्। रोहिणी-मघा-विशाखा-श्रवणादिषु त्रिषु त्रिषु भेषु= नक्षत्रेषु वृश्चिकादीनामंशकानुत्क्रमेण (अपसव्येन) गणयेत्। अर्थात् अश्विनी-पुनर्वसु-हस्त-मूल-पूर्वभाद्रेति नक्षत्रपञ्चकस्य प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थपादाः क्रमेण मेष-वृष-मिथुन-कर्कांशगताः स्थाप्याः। भरणी-पुष्य-चित्रा-पूर्वाषाढोत्तर-भाद्रेति नक्षत्रपञ्चकस्य प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थपादाः क्रमेण सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिकांशगताः स्थाप्याः। कृत्तिका-

श्लेषा-स्वाती-उत्तराषाढ-रेवतीति नक्षत्रपंचकानां प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ-पादाः धनुर्मकर-कुम्भमीनांशगताः स्थाप्याः। इति सव्यक्रमम् भवति।

रोहिणी-मघा-विशाखा-श्रवणेति नक्षत्रचतुष्टयस्य प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ-पादाः क्रमेण वृश्चिक-तुला-कन्या-सिंहाशगतास्थाप्याः। मृग-शिराः-पूर्वफाल्गुनी-अनुराधा-धनिष्ठेतिनक्षत्रचतुष्टयस्य चत्वारः पादाः क्रमेण कर्क-मिथुन-वृष-मेषांशगतास्थाप्याः। आर्द्रा-उत्तरफाल्गुनी-ज्येष्ठा-शतभिषेति नक्षत्रचतुष्टयस्य चत्वारः पादाः क्रमेण मीन-कुम्भ-मकर-धनुरंशगताः स्थायाः। इत्यपसव्यक्रमम्। अन्यत्सर्वं हिन्दीटीकायां चक्रदर्शनेन स्पष्टं भवेदिति।

अथ राशीनामंशके परमायुः कथ्यते। मेषगोयमकुलीरमन्दिरेषु=मेष-वृष-मिथुन-कर्क-राशिषु अंशकेषु (कादिर्नवाङ्का नवटादिरंका-द्यक्षराङ्कगणना) क्रमेण ज्ञानकं=१००, मदः=८५, गजाः-८३, तदा=८६, कोणभवनेषु=उपरोक्ता ये मेषाद्यश्चत्वारो राशयस्तेभ्यः कोण (५/९) राशिषु (सिंहादिचतुर्षु धनुरादिचतुर्षु च राशिषु) तद्वदेव वदेत्। अर्थात् मेष-सिंह-धनुषां शतं (१००) परमायुः, वृष-कन्या-मकराणां पञ्चाशीतिः (८५), मिथुन-तुला-कुम्भानां त्र्यशीतिः (८३), कर्क-वृश्चिक-मीनानां षडशीतिः (८६) परमायुर्भवतीति।

अथ देहंजीवपरिज्ञानमुच्यते। मेषादिषु प्रतिराशिंषु नवखण्डानि (नवांशाः) भवन्ति। तेषु सव्यमार्गे प्रथमोंऽशो देहसंज्ञकोऽन्तिमोंऽशो जीव-संज्ञकोभवति। एतद्विलोममपसव्यमार्गेऽर्थात्प्रथमो जीवसंज्ञकोऽन्त्यो देहसंज्ञको भवति। कालचक्रलेखनप्रकारः वृहत्पाराशरहोराशास्त्रे (४९। १८-४२ बम्बई)—

द्वादशारं लिखेचक्रं तिर्यगूर्ध्वसमानकम्।
गृहा द्वादश जायन्ते सव्यचक्रे यथाक्रमम्॥
द्वितीयादिषु कोष्ठेषु राशीन्मेषादिकाँल्लिखेत्।
एवं द्वादशराश्याख्यकालचक्रमुदीरितम्॥
विश्वर्क्षपूर्वाभाद्रं च रेवती सव्यतारकः।
एतद्दशोडुपादीनामश्विन्यादौ च वीक्षयेत्॥
विशदस्तत्प्रकारस्तु कथ्यते शृणु पार्वति।
देहजीवौ मेष चापौ दस्राद्यचरणस्य च॥
मेषादिचापपर्यन्तं राशिपाश्च दशाधिपाः।
देहजीवौ नक्रयुग्मौ दिगीशार्काष्टभूधराः॥
षड्वेदशरलोकाश्च राशिपाश्च दशाधिपाः।
दस्रादिदशताराणां तृतीयचरणेषु च॥
गौर्देहो मिथुनं जीवो द्विकार्केशदशांशकाः।

अक्षिरामाख्यनाथास्ते दशाधिपतयः क्रमात् ॥
अश्विन्यादिदशोडूनां चतुर्थचरणेषु च ।
कर्कमीनौ देहजीवौ कर्कादिनवमेश्वराः ॥
दशाधिपा नव ज्ञेयाः शृणु पार्वति ! निश्चितम् ।
याम्येज्यचित्रातोयर्क्षा उत्तराभाद्रतारकाः ॥
एतत्पञ्चोडुपादीनां भरण्यादौ च वीक्षयेत् ।
याम्यप्रथमपादस्य देहजीवावलीझषौ ॥
नागागर्तुपयोधीषुरामाक्षीन्द्वर्कभेश्वराः ।
याम्यद्वितीयपादस्य देहजीवौ घटाङ्गने ॥
रूद्रदिङ्नन्दचन्द्राक्षिरामाब्धीषु रसेश्वराः ।
याम्य तृतीयपादस्य देहजीवौ तुलाङ्गने ॥
सप्ताष्टाङ्कदिगीशार्कगजादिरस राशिपाः ।
देहजीवौ कर्कचापौ चतुर्थचरणे स्मृतौ ॥
वेदबाणाग्निनेत्रेन्दुसूर्येशदशनन्दपाः ।
सव्यमेव विजानीयात्, अपसव्यं तु कथ्यते ॥

द्वादशारं लिखेच्चक्रं तिर्यगूर्ध्वसमानकम् ।
द्वितीयादिषु कोष्ठेषु वृश्चिकाद् व्यस्तमालिखेत् ॥
प्राजापत्यमघेन्द्राग्निश्रवणं च चतुष्टयम् ।
धातृवद्वीक्षयेद् देहजीवौ कर्किधनुर्धरौ ॥
नवदिग्रुद्रसूर्येन्दुनेत्राग्निष्वब्धिराशिपाः ।
धातृद्वितीयचरणे तुलास्त्री देहजीवकौ ॥
षष्ठसप्ताष्टार्करूद्रा दिङ्नवा गिरिराशिपाः ।
धातृ तृतीयचरणे (देह) जीवौ कुम्भाङ्गनाधिपौ ।
षड्बाणाब्धिगुणाक्षीन्दुनन्ददिग्रुद्रराशिपाः ।
रोहिण्यन्तपदे देहजीवावलिझषौ स्मृतौ ।
सूर्येन्दुद्विगुणेष्वब्धितर्कशैलाष्टराशिपाः ।
चान्द्ररौद्रभगार्यम्णमित्रेन्द्रवसुबारूणम ।
एतत्ताराष्टकं चैव विज्ञेयं चान्द्रवत् क्रमात् ।
देहजीवौ कर्किमीनौ मृगाद्यचरणस्य च ।
व्यस्तमीनादिकर्कान्तं राशिपाश्च दधाधिपाः ।

गौर्देहो मिथुनं जीव इन्दुभस्य द्वितीयके।
त्रिद्व्यङ्कदिगीशार्कचन्द्रर्क्षभवनाधिपाः।
देहजीवौ नक्रयुग्मौ मृगपादे तृतीयके।
त्रिबाणाब्धिरसागाष्टसूर्येशदशराशिपाः।
मेषचापौ देहजीवाविन्द्रभस्य चतुर्थके।
व्यस्तं चापादिमेषान्तं राशिपाश्च दशाधिपाः।
एवं व्यस्ततरे ज्ञेयं देवजीवदशादिकम्।
स्पष्टं तवाग्रे कथितं पार्वति ! प्राणवल्लभे !॥

जन्मसमये अश्विन्यादि गतनक्षत्रसङ्ख्या त्रिर्भिक्ता, शेषं चतुर्गुणं कृत्वा, जन्मनक्षत्रस्य वर्त्तमानचरणेन सहितं कुर्यादेवागतं फलं राशिसंख्या भवेत्। तस्यराशेः यत्पूर्णायुर्मानं तदेव तस्य पूर्णायुर्भवति। अथ जन्मनक्षत्रस्य वर्त्तमान-चरणे यद् घट्यादिकं भुक्तमानं तद्राशिपूर्णायुर्मानेन सङ्गुण्यं नवशतेन भक्तं जातं तदागत फलं भुक्तदशामानं (वर्षादिकं) भवेत्। तदूनं पूर्णायुर्मानं भोग्यदशामानं स्यादिति। अत्रोदाहरणम्—यथा कस्यचिज्जन्म आर्द्रानक्षत्रस्य चतुर्थचरणे वर्त्तते, तत्र चतुर्थचरणे भुक्तमानं दण्डादि १०/८ तदा—

'गततारा त्रिभिर्भक्ता शेषं चत्वारिसङ्गुणम्।
वर्तमानपदेनाढ्यं राशिनामंशको भवेत्'॥

(वृ.पारा. ४९-१० बम्बई)

इत्युक्तविधिना गतनक्षत्रसङ्ख्या=५। त्रिभक्ता तदाशेषं-२। एतच्चतुर्गुणं जातं=(२×४)=८। आर्द्रानक्षत्रस्य वर्त्तमानेन पदेन=४ सहित जातं=(८+४) राशिसंख्या १२। अतएव मीनांशदशायां तस्य जन्म जातमतस्तत्पूर्णायुर्मानं=८६ षडशीतिः वर्षाणि। आर्द्रा चतुर्थचरणभुक्तमानं—(१०/८) पलात्मकं कृत्वा मीनांशपूर्णायुर्मानेनानेन (८६) सङ्गुणितं जातं=(१०/८)×८६-६०८×८६= ५२२८८। एतत् नवशतेन (९००) भक्तं। जातं भुक्तदशामानं वर्षादि=५८/१/५। पूर्णायुर्मानात्—(८६) अस्माच्छोधितं जातं=८६-(५८/१/५)=वर्षादि भोग्य-दशामानम् २७/१०/२५॥ ७-१३॥

हिन्दी — अश्विनी-भरणी-कृत्तिका **सव्य**, रोहिणी-मृगशिरा-आर्द्रा **अपसव्य**, पुनर्वसु-पुष्य-आश्लेषा-**सव्य**, मघा-पूर्वाफाल्गुनी-उत्तराफाल्गुनी **अपसव्य**, हस्त-चित्रा-स्वाति **सव्य**, विशाखा-अनुराधा-ज्येष्ठा **अपसव्य**, मूल-पूर्वाषाढ़-उत्तराषाढ़ **सव्य** श्रवण- धनिष्ठा-शतभिषा, **अपसव्य**, पूर्वाभाद्र-उत्तराभाद्र-रेवती **सव्य** इस प्रकार १५ **सव्य** और १२ **अपसव्य** होते हैं। (स्पष्टार्थ परिशिष्ट में देखें)

२७ नक्षत्रों में से १५ **सव्य** नक्षत्रों का दशा क्रम इस प्रकार है।

(१) अश्विनी-पुनर्वसु-हस्त-मूल-पूर्वाभाद्रपद के प्रथम चरण वालों का मेप-वृष-मिथुन-कर्क-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक-धनुराशि की दशा होती है। यह मेपनवांश कहलाता है। इसकी पूर्ण आयु १०० वर्ष, देहाधिप मङ्गल और जीवाधिप गुरु होता है।

(२) आश्विनी-पुनर्वसु-हस्त-मूल-पूर्वाभाद्रपद—के द्वितीयचरण वालों का मकर-कुम्भ-मीन-वृश्चिक-तुला-कन्या-कर्क-सिंह-मिथुन की दशा होती है। यह वृषनवांश कहलाता है। इसमें देहाधिप शनि और जीवाधिप बुध होता है इसकी दशा ८५ वर्ष की होती है।

(३) अश्विनी-पुनर्वसु-हस्त-मूल और पूर्वाभाद्रपद के तृतीयचरण वालों का देहाधिप शुक्र और जीवाधिप बुध होता है। वृष-मेष-मीन-कुम्भ-मकर-धनु-मेष-वृष-मिथुन की दशा ८३ वर्ष की होती है। यह मिथुननवांश कहलाता है।

(४) अश्विनी-पुनर्वसु-हस्त-मूल-पूर्वाभाद्र के चतुर्थचरण वालों का कर्कनवांश होता है। इनका देहाधिप चन्द्र और जीवाधिप बृहस्पति होता है। कर्क-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक-धनु-मकर-कुंभ-मीन राशियों की दशा होती हैं। इनकी दशा ८६ वर्ष की होती हैं।

(५) भरणी-पुष्य-चित्रा-पूर्वाषाढ़-उत्तराभाद्र इन नक्षत्रों के प्रथमचरण का सिंह नवांश होता है। इनका देहाधिप मङ्गल और जीवाधिप बृहस्पति होता है। वृश्चिक-तुला-कन्या-कर्क-सिंह-मिथुन-वृष-मेप-मीन राशियों की दशा होती है। यह दशा १०० वर्ष की होती है।

(६) भरणी-पुष्य-चित्रा-पूर्वाषाढ़-उत्तराभाद्र के द्वितीयचरण का कन्या नवांश होता है। इनका देहाधिप शनि और जीवाधिप बुध होता है। कुम्भ-मकर-धनु-मेप-वृष-मिथुन-कर्क-सिंह-कन्या राशियों की दशा होती है। यह दशा ८५ वर्ष की होती है।

(७) भरणी-पुष्य-चित्रा-पूर्वाषाढ़-उत्तराभाद्र की तृतीयचरण हो तो उसका तुला नवांश होता हैं। इनका देहाधिप शुक्र और जीवाधिप बुध होता है। तुला-वृश्चिक-धनु-मकर-कुम्भ-मीन-वृश्चिक-तुला-कन्या राशि की दशा होती है। इनकी ८३ वर्ष की दशा होती है।

(८) भरणी-पुष्य-चित्रा-पूर्वाषाढ़ और उत्तराभाद्र के चतुर्थचरण का वृश्चिकनवांश होता हैं इनका देहाधिप चन्द्रमा और जीवाधिप बृहस्पति होता है। कर्क-सिंह-मिथुन-वृष-मेष-मीन-कुम्भ-मकर और धनुराशि की दशा वर्ष ८६ वर्ष की होती है।

(९) कृत्तिका-आश्लेषा-स्वाती-उत्तराषाढ़ और रेवती के प्रथमचरण का धनु नवांश होता है। इनका देहाधिप मङ्गल और जीवाधिप बृहस्पति होता है। मेष-वृष-मिथुन-कर्क-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक और धनुराशि की दशा होती है। यह दशा १०० वर्ष की होती है।

(१०) कृत्तिका-आश्लेषा-स्वाती-उत्तराषाढ़ और रेवती के द्वितीय चरण का मकर नवांश होता है। इनका देहाधिप शनि और जीवाधिप बुध होता है। मकर-कुम्भ-मीन-वृश्चिक-तुला-कन्या-कर्क-सिंह-मिथुन की दशा होती है। यह दशा ८५ वर्ष की होती है।

(११) कृत्तिका-आश्लेषा-स्वाती-उत्तराषाढ़ और रेवती के तृतीयचरण का कुम्भ नवांश होता है। इनका देहाधिप शुक्र और जीवाधिप बुध होता है। वृष-मेष-मीन-कुम्भ-मकर-धनु-मेष-वृष-मिथुन की दशा होती है। यह दशा ८३ वर्ष की होती है।

(१२) कृत्तिका-आश्लेषा-स्वाती-उत्तराषाढ़ और रेवती के चतुर्थचरण का मीन नवांश होता है। कर्क-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक-धनु-मकर-कुम्भ और मीनराशि की दशा होती है। यह दशा ८६ वर्ष की होती है। इनका देहाधिप चन्द्र है और जीवाधिप बृहस्पति होता है।

१२ **अपसव्य** नक्षत्रों का दशाक्रम निम्नलिखित है— (परिशिष्ट देखें)

(१३) रोहिणी-मघा-विशाखा-श्रवण—के प्रथमचरण का वृश्चिकनवांश होता है। इसमें धनु-मकर-कुम्भ-मीन-मेष-वृष-मिथुन-सिंह-कर्क की दशा होती है। यह दशा ८६ वर्ष की होती है। इसमें जीवाधिप गुरु और देहाधिप चन्द्र होता है।

(१४) रोहिणी-मघा-विशाखा के द्वितीयचरण का तुलानवांश होता है। इसमें कन्या-तुला-वृश्चिक-मीन-कुम्भ-मकर-धनु-वृश्चिक-तुला की दशा होती है। यह दशा ८३ वर्ष की होती है। इसमें बुध जीवाधिप और शुक्र देहाधिप होता है।

(१५) रोहिणी-मघा-विशाखा-श्रवण के तृतीयचरण का कन्यानवांश होता है। इसमें कन्या-सिंह-कर्क-मिथुन-वृष-मेष-धनु-मकर और कुम्भ की दशा ८५ वर्ष की होती है। इनमें देहाधिप शनि और जीवाधिप बुध होता है।

(१६) रोहिणी-मघा-विशाखा-श्रवण के चतुर्थचरण का सिंहनवांश होता है। इसमें जीवाधिप गुरु और देहाधिप भौम हांता है। मीन-मेष-वृष-मिथुन-सिंह-कर्क-कन्या-तुला-वृश्चिक की दशा होती है। यह दशा १०० वर्ष की होती है।

(१७) मृगशिरा-पूर्वाफाल्गुनी-अनुराधा-धनिष्ठा के प्रथमचरण का कर्कनवांश होता है। इनका जीवाधिप गुरु और देहाधिप चन्द्र होता है। मीन-कुम्भ-मकर-धनु-वृश्चिक-तुला-कन्या-सिंह-कर्क की दशा ८६ वर्ष की होती है।

(१८) मृगशिरा-पूर्वाफाल्गुनी-अनुराधा और धनिष्ठा के द्वितीयचरण का मिथुन नवांश होता है। इसमें जीवाधिप बुध और देहाधिप शुक्र होता है। मिथुन-वृष-मेष-धनु-मकर-कुम्भ-मीन-मेष-वृष की दशा होती है। यह दशा ८३ वर्ष की होती है।

(१९) मृगशिरा-पूर्वाफाल्गुनी-अनुराधा और धनिष्ठा के तृतीयचरण का वृषनवांश होता है। इसमें मिथुन-सिंह-कर्क-कन्या-तुला-वृश्चिक-मीन-कुम्भ और मकर की दशां होती है। यह दशा ८५ वर्ष की होती है। इसमें बुध जीवाधिप और शनि देहाधिप होता है।

(२०) मृगशिरा-पूर्वाफाल्गुनी-अनुराधा और धनिष्ठा के चतुर्थचरण का मेषनवांश होता है। इनका जीवाधिप गुरु और देहाधिप भौम होता है। इसमें धनु-वृश्चिक-तुला-कन्या-सिंह-कर्क-मिथुन-वृष और मेष की दशा होती है। यह दशा १०० वर्ष की होती है।

(२१) आर्द्रा-उत्तराफाल्गुनी-ज्येष्ठा और शतभिषा के प्रथम चरण का मीन नवांश होता है। इनका जीवाधिप बृहस्पति और देहाधिप चन्द्र होता है। इसमें पूर्ण दशामान ८६ वर्ष होता है और इनमें मीन-कुम्भ-मकर-धनु-वृश्चिक-तुला-कन्या-सिंह-कर्क राशियों की दशा होती है।

(२२) आर्द्रा-उत्तराफाल्गुनी-ज्येष्ठा और शतभिषा के द्वितीयचरण का कुम्भनवांश

होता है। इनका जीवाधिप बुध और देहाधिप शुक्र होता है। इसमें पूर्ण दशामान ८३ वर्ष होता है तथा मिथुन-वृष-मेष-धनु-मकर-कुम्भ-मीन-मेष-वृष की दशा होती है।

(२३) आर्द्रा-उत्तराफाल्गुनी-ज्येष्ठा और शतभिषा के तृतीयचरण का मकरनवांश होता है, इनका जीवधिप बुध और देहाधिप शनि होता है। इसमें पूर्णदशा ८५ वर्ष और मिथुन-सिंह-कर्क-कन्या-तुला-वृश्चिक-मीन-कुम्भ-मकरराशि की दशा होती है।

(२४) आर्द्रा-उत्तराफाल्गुनी- ज्येष्ठा और शतभिषा के चतुर्थचरण का धनुनवांश होता है। इसमें धनु-वृश्चिक-तुला-कन्या-सिंह-कर्क-मिथुन-वृष-मेष की दशा होती है। पूर्णदशा १०० वर्ष की होती है। इसका जीवाधिप वृहस्पति और देहाधिप मङ्गल होता है॥७-१३॥

देहजीवे यदा राहुः केतुर्भौमो रविः स्थितः॥ १४॥
तदा तस्मिन्भवेन्मृत्युर्देहे रोगः प्रवर्तते।
देहजीवगृहं यातः सौम्यो जीवश्च भार्गवः॥ १५॥
सुखसम्पत्करं सर्वं शोकरोगविनाशनम्।
मिश्रखेचरसंयुक्ते मिश्रं फलमवाप्नुयात्॥ १६॥

संस्कृत — देहजीवे। पूर्वप्रदर्शितचक्रे देहे जीवे च निर्द्दिष्टग्रहे सम्प्राप्ते तदा निर्द्दिष्टं फलं ज्ञेयम्। यथा पाराशरे (४९।४६-५२ बम्बई)—

देहजीवसमायोगे भौमार्करविजादिभिः।
एकैकयोगे मरणं बहुयोगे तु का कथा॥
यत्र स्थाने तु सञ्जीवोदेहयोगसमन्वितः।
तत्र पापग्रहैर्योगे तद्दशा मरणं वदेत्॥
देहयोगे महाबाधा जीवयोगे तु मृत्युदः।
द्वाभ्यां संयोगमात्रेण हन्यते नाऽत्र संशयः॥
जीवे जीवो यदा राहुः सौरिर्वक्री रविः स्थितः।
मृत्युकालगतिं ज्ञात्वा शान्तिं कुर्याद्यथाविधि॥
जीवे जीवो यदा सोमे सौम्यो जीवसितः स्थितः।
तदा सौख्यं प्रकुर्वन्ति रोगमृत्युविनाशनम्॥
पापक्षेत्रदशायोगे देहजीवौ तु दुःखदौ।
शुभक्षेत्रदशायोगे शुभयोगे शुभं भवेत्॥
देहे शुभग्रहैर्युक्ते भूषणादि ध्रुवं भवेत्।
जीवे शुभग्रहैर्युक्ते पुत्रदारादिकाँल्लभेत्॥ इति १४-१६॥

हिन्दी — नक्षत्र सव्य हो अथवा अपसव्य यदि देहराशि या जीवराशि में राहु-केतु-मङ्गल अथवा सूर्य स्थित हों तो उस दशा में मृत्यु होती है। देह या

जीवराशि में बुध-बृहस्पति-शुक्र रहें तो वे अपनी दशा में शोक-रोग को दूर करते हैं और सभीप्रकार के सुख सम्पत्ति को देते हैं। यदि देह व जीव राशि में मिश्रित ग्रह हों अर्थात् शुभ-अशुभ हों तो मिश्रितफल देते हैं ॥ १४-१६ ॥

सिंहावलोकसमये मण्डूकगतिसम्भवे।
अपमृत्युभयं तस्मिन् प्रायश्चित्ताद्विमुच्यते ॥ १७ ॥

संस्कृत — सिंहावलोकसमये इति। काल चक्र गति विषये वृहत्पराशर होराशास्त्रे (४७।४५-४९ सी.राम.झा) उक्तम् तद्यथा—

''कालचक्रगतिप्रोक्ता त्रिधा पूर्वमहर्षिभिः।
मण्डूका गतिश्चैका मर्कटी संज्ञकाऽपरा ॥
सिंहावलोकनाख्या च तृतीया परिकीर्तिता।
उत्प्लुत्य गमनं विज्ञा मण्डूकाख्यं प्रचक्षते।
पृष्ठतो गमनं नाम मर्कटी संज्ञकं तथा ॥
बाणाच्च नवपर्यन्तं गतिः सिंहावलोकनम्।
कन्या कर्कटयो सिंह युग्मयोर्मण्डुकी गतिः।
कर्किकेशरिणोरेवं कथ्यते मर्कटी गतिः ॥
मीने तु वृश्चिके वाऽपि चापे मेषे तथैव च।
सिंहावलोकनं चैव तादृशं च फलं लभेत्'' इति ॥

अर्थात् कालचक्रदशायामुक्तलक्षणकेऽन्तरे प्राप्ते सति तदा तत्फलं ज्ञेयम् ॥ १७ ॥

हिन्दी — सिंहावलोकन गति व मण्डूकगति (आगे श्लो. ८९ से ९१ में) मीन से वृश्चिक में या धनु से मेष में जाना **सिंहावलोकन** तथा कन्या से कर्क या सिंह से मिथुन में जाना **मण्डूक** गति कहलाता है।

सिंहावलोकन गति के समय अर्थात् मीन से वृश्चिक या मेष से धनु की दशा क्रम हो तब मृत्युभय होता है। इसीप्रकार मण्डूकगति में अर्थात् कन्या से कर्क में या सिंह से मिथुन की दशाक्रम हो तो अपमृत्यु भय होता है। अतः इसकी शान्ति हेतु प्रायश्चित (शान्ति) करना चाहिए॥ १७॥

मीनात्तु वृश्चिके याते ज्वरं भवति देहिनाम्।
पाथोनात्कर्कटे याते मातृबन्धुवधूमृतिः ॥ १८ ॥
कर्कटात्तु हरौ याते व्रणरोगं वदेद्बुधः।
सिंहात्तु मिथुनं याते स्वस्त्रीव्याधिर्मृतिर्भवेत् ॥ १९ ॥
पुत्रबन्धुमृतिं विद्याच्चापान्मेषं गते पुनः।
शुभग्रहेऽस्मिन्नभयं पापग्रहयुते भयम् ॥ २० ॥

कन्यायाः कर्कटे याते पूर्वभागे महान्भवेत्।
उत्तरां दिशामाश्रित्य शुभयात्रां गमिष्यति॥ २१॥
सिंहात्तु मिथुने याते पूर्वभागं विवर्जयेत्।
कार्यारम्भे तु नैर्ऋत्यां सुखयात्रां गमिष्यति॥ २२॥
कर्कटाद्दक्षिणे सिंहे कार्यहानिश्च रोगकृत्।
दक्षिणां दिशमाश्रित्य पश्चादागमनं भवेत्॥ २३॥
मीनात्तु वृश्चिकेक्रान्ते उदग्गच्छति सङ्कटम्।
चापान्मेषेभयं यात्रा व्याधिर्बन्धुमृतिर्भवेत्॥२४॥
तत्र सम्पद्विवाहादि शुभं भवति पश्चिमे।
शुभारूढे नृपप्रीतिं सर्वसम्पत्करं नृणाम्॥२५॥

संस्कृत — स्पष्टार्थाः सरलार्थाश्च॥ १८-२५॥

हिन्दी — मीन से वृश्चिक में जब दशा का क्रम रहे तो मनुष्य को ज्वर आदि रोग होते हैं। इसी तरह कन्या से कर्क की जब दशा हो तो माता-बन्धु और स्त्री की मृत्यु होती है॥ १८॥

कर्क से सिंह में जाने वाली दशा अर्थात् कर्क के बाद जब सिंह की दशा हो तो बुद्धिमान् लोग व्रण रोग का होना कहते हैं। सिंह से मिथुन का जब दशाक्रम हो तो व्याधि से स्त्री की मृत्यु होती है॥ १९॥

धनु से मेष पर जब कालचक्र दशा जाती है तो पुत्र और मित्र की मृत्यु होती हैं। इसमें यदि शुभग्रह स्थित हों तो शुभफल और पापग्रह हो तो अशुभफल होता है॥ २०॥

कन्या से कर्क की जब कालचक्र दशा हो तो पूर्वदिशा में यश बढ़े हो और उत्तरदिशा में लाभप्रद यात्रा हो॥ २१॥

सिंह से मिथुन में जब दशा जाये तो पूर्वदिशा का त्याग करें अर्थात् पूर्व दिशा में यात्रा न करें। इस दशा में कार्यसिद्धि हेतु नैर्ऋत्यदिशा में यात्रा करनी चाहिए उसमें सफलता मिलती है और यात्रा सुखकर होती है॥ २२॥

कर्क से सिंह में जब दशा जाये तो कार्य में हानि और रोग होता है। दक्षिण दिशा की यात्रा करने के बाद आगमन प्रसन्नता पूर्वक होता है॥ २३॥

मीन से वृश्चिक की दशाक्रम में उत्तरदिशा की यात्रा में संकट उत्पन्न होता है। धनु से मेष वाली दशा में भय-यात्रा-रोग व बन्धुमरण होता है॥ २४॥

धनु से मेष की जब दशा हो तो राशि में शुभग्रह के रहने पर सम्पत्तिप्राप्ति और विवाह आदि शुभकार्य पश्चिमदिशा में होते हैं। राजा की कृपा और सर्व सम्पत्ति की प्राप्ति होती है॥ २५॥

देह-जीव विचार—

देहो मेषश्चापसिंहाजभानां जीवश्चापो गोवधूनक्रभानाम्।
आकोकेरो देहसंज्ञो नृयुग्मं जीवः सव्ये चापसव्ये विलोमात्॥ २६॥
उक्षा देहो युग्मकोणं गतानां
जीवं युग्मागारमाहुर्मुनीन्द्राः।
मीनो जीवः कर्कटो देहराशिः
सव्ये चक्रे कर्किकीटान्त्यभानाम्॥ २७॥

संस्कृत — देहो इति। चापसिंहाजभानां=धनुःसिंहमेषराशीनां, मेषो=भौमः देहसंज्ञको चापी=धनुः=गुरुः जीवसंज्ञको। गोवधूनक्रभानाम्=वृषकन्या-मकरराशीनाम्, आकोकेरः=मकरः "शनिः", देहसंज्ञो। नृयुग्मं=मिथुनं "बुधः", जीवसंज्ञको एवं सव्यचक्रे भवति। अपसव्ये तु विलोमात्। अर्थात् चापसिंहाजभानाम्, धनुर्देह, मेषो जीवाख्यश्चैवं गोवधूनक्रभानां मकरो जीव, मिथुनं देहश्च भवतीति। युग्मस्य=मिथुनस्य, कोणाङ्गतानां=मिथुनतुला-कुम्भानामुक्षा=वृषाधिपः "शुक्रः", देहसंज्ञो भवति। युग्मागारं=मिथुनं-बुधं, जीवं मुनीन्द्रा आहुः। एतत्किल सव्येऽपसव्ये च समानमेव भवति। अथ कर्किकीटान्त्यभानां=कर्क वृश्चिक मीनानां मीनो गुरुः जीवः, कर्कटश्चन्द्र-मादेहो भवति। अपसव्ये तु विलोममर्थात् कर्कवृश्चिकमीनानां मीनो (अर्थात् गुरुः) देहः कर्कटः (चन्द्रः) जीवश्च इति बोध्यम्॥ २६-२७॥

हिन्दी — नक्षत्र चरणों को २४ भाग में विभाजित करके सव्य-अपसव्य क्रमानुसार देहाधिप व जीवाधिप को रखा किया गया है। जैसे सव्य नक्षत्रों में—

(१) मेष नवांश, देहाधिप मङ्गल—जीवाधिप गुरु।
(२) वृषभ नवांश, देहाधिप शनि—जीवाधिप बुध।
(३) मिथुन नवांश, देहाधिप शुक्र—जीवाधिप बुध।
(४) कर्क नवांश, देहाधिप चन्द्र—जीवाधिप गुरु।
(५) सिंह नवांश, देहाधिप मङ्गल—जीवाधिप गुरु।
(६) कन्या नवांश, देहाधिप शनि—जीवाधिप बुध।
(७) तुला नवांश, देहाधिप शुक्र—जीवाधिप बुध।
(८) वृश्चिक नवांश, देहाधिप चन्द्र—जीवाधिप गुरु।
(९) धनु नवांश, देहाधिप मङ्गल—जीवाधिप गुरु।
(१०) मकर नवांश, देहाधिप शनि—जीवाधिप बुध।
(११) कुंभ नवांश, देहाधिप शुक्र—जीवाधिप बुध।
(१२) मीन नवांश, देहाधिप चन्द्र—जीवाधिप गुरु।

अपसव्य नक्षत्रों में— (परिशिष्ट में देखें)

(१३) वृश्चिक नवांश, देहाधिप चन्द्र–जीवाधिप गुरु।
(१४) तुला नवांश, देहाधिप शुक्र–जीवाधिप बुध।
(१५) कन्या नवांश, देहाधिप शनि–जीवाधिप बुध।
(१६) सिंह नवांश, देहाधिप मङ्गल–जीवाधिप गुरु।
(१७) कर्क नवांश, देहाधिप चन्द्र–जीवाधिप गुरु।
(१८) मिथुन नवांश, देहाधिप शुक्र–जीवाधिप बुध।
(१९) वृष नवांश, देहाधिप शनि–जीवाधिप बुध।
(२०) मेष नवांश, देहाधिप भौम–जीवाधिप गुरु।
(२१) मीन नवांश, देहाधिप चन्द्र–जीवाधिप गुरु।
(२२) कुंभ नवांश, देहाधिप शुक्र–जीवाधिप बुध।
(२३) मकर नवांश, देहाधिप शनि–जीवाधिप बुध।
(२४) धनु नवांश, देहाधिप मङ्गल–जीवाधिप गुरु।

कालचक्र के सव्यनक्षत्रों में जिसराशि की दशा सर्वप्रथम होती है उसराशि का स्वामी देहाधिप और दशा में जो अंतिमराशि होती है, उसका स्वामी जीवाधिप होता है। अपसव्य नत्रक्षों में इसके विपरीत अर्थात् जिसराशि की दशा सर्वप्रथम हो उसका स्वामी जीवाधिप और जिसराशि की दशा अन्तिम में हो उसका स्वामी देहाधिप होता है॥ २६-२७॥

देह जीव फल विचार—

देहजीवसमायुक्तैर्भौमार्किरविभोगिभिः ।
एकैकयोगे मरणं बहुयोगे न संशयः॥ २८॥
देहयुक्ते महारोगं जीवयुक्ते महद्भयम्।
द्वाभ्यां संयोगमात्रेण हन्यते नात्र संशयः॥ २९॥
अध्रिरोगो भवेद् द्वाभ्यामपमृत्युस्त्रिभिर्भवेत्।
चतुर्भिर्मृतिरापन्ना देहजीवे भवेद्यदि॥ ३०॥
युगपद्देहजीवौ तु पापग्रहयुतौ तथा।
राजचोरादिभीतिश्च द्वाभ्यां मृत्युर्न संशयः॥ ३१॥
अग्निबाधां रवौ विद्याच्चन्द्रे ज्वलनबाधनम्।
भौमे शस्त्रकृता पीडा वायुबाधाकरं बुधे॥ ३२॥
गुरौ चोदरबाधा स्यात् शुक्रेऽग्निभयमाप्नुयात्।
शनौ गुल्मेन बाधा स्याद् राहौ विषकृतां रुजम्॥ ३३॥

संस्कृत — कालचक्रदशा चक्रे प्रतिराशिं या देहजीवसंज्ञा उक्तास्तासु

यथासम्भवं देहजीवसमायुक्ते भौम-शनि-सूर्य-राहुभिः निर्दिष्टं फलं वदेत्। तत्रैकैकयोग एव मरणं बहुयोगे तु अवश्यमेव मरणम्। पूर्वोक्तोदाहरणे मीनांश-दशायां देहः कर्कटः (चन्द्रः) जीवो मीनः (गुरुः) वरीवर्त्ति। अत्र यदि देह वा जीवे राशौ, अथवोभयत्रापि भौमार्किरविभोगिनामन्यतमः सर्वे वा यदि सम्प्राप्तास्तदा मीनांशदशायां निर्दिष्टग्रहस्यान्तरे तस्य मरणं भवेदित्यर्थः। देहे गतवति भौमादिक्रूरग्रहे तदा महारोगं, जीवे गतवति तदा महद्भयं, द्वाभ्यां देहे जीवे च संयोगेन निःसंशयेन हन्यते। अग्रेसरलार्थम्॥ २८-३३॥

हिन्दी — देह से तात्पर्य देहराशि, जीव से तात्पर्य जीवराशि। सव्य-अपसव्य नक्षत्र चरणों को २४ भागों में रखा गया है। इनकी देहराशियाँ और जीव राशियाँ निम्नलिखित हैं—

सव्यनक्षत्र—

१. देह मेष, जीव धनु।
२. देह मकर, जीव मिथुन।
३. देह वृष, जीव मिथुन।
४. देह कर्क, जीव मीन।
५. देह वृश्चिक, जीव मीन।
६. देह कुम्भ, जीव कन्या।
७. देह तुला, जीव कन्या।
८. देह कर्क, जीव धनु।
९. देह मेष, जीव मिथुन।
१०. देह मकर, जीवन मिथुन।
११. देह वृष, जीवन मिथुन।
१२. देह कर्क, जीव मीन।

अपसव्य नक्षत्र—

१३. देह कर्क, जीव धनु।
१४. देह तुला, जीव कन्या।
१५. देह कुम्भ, जीव कन्या।
१६. देह वृश्चिक, जीव मीन।
१७. देह कर्क, जीव मीन।
१८. देह वृष, जीव मिथुन।
१९. देह मकर, ज़ीव मिथुन।
२०. देह मेष, जीव धनु।
२१. देह कर्क, जीव मीन।

२२. देह वृष, जीव मिथुन।
२३. देह मकर, जीव मिथुन।
२४. देह मिथुन, जीव धनु।

इस तरह प्रत्येक नवांश में उत्पन्न व्यक्ति की देह और जीवराशि उक्त है।

सूर्य-मङ्गल-शनि और राहु यदि जीव या देहराशि में स्थित हों तो इनके योग में मरण होता है। अनेक ग्रहों के योग में तो निश्चय ही मृत्यु होती है। तात्पर्य यह कि ये ग्रह कष्टकारक होते हैं॥ २८॥

दो क्रूरग्रह यदि देह में हों तो महारोग और जीव में हों तो महाभय होता है। यदि दो क्रूरग्रह जीव में और दो क्रूरग्रह देह में बैठे हों तो निश्चय ही मृत्यु होती हैं॥ २९॥

यदि देह और जीव दोनों ही पापग्रह युत हों अर्थात् दोनों में पापग्रह हों तो अधिरोग, तीन पापग्रहों का संयोग यदि जीव और देह में हों तो अपमृत्यु और चार का संयोग हो तो निश्चय ही मृत्यु होती है॥ ३०॥

देहराशि और जीवराशि दोनों में ही पापग्रह हों तो राजा से और चोर से भय, यदि जीव और देहराशि में दो-दो पापग्रह स्थित हों तो निश्चय ही मृत्यु होती है इसमें संशय नहीं॥ ३१॥

देह या जीव राशि में यदि सूर्य हो तो अग्निबाधा, चन्द्रमा हो तो ज्वलन बाधा, मङ्गल हो तो शस्त्र से आघात और बुध हो तो वायुबाधा होती है॥ ३२॥

बृहस्पति हो तो उदरबाधा, शुक्र हो तो अग्निपीड़ा और शनि हो तो फोड़ा या गुल्म (गिल्टी) और राहु हो तो निश्चय ही विषजनित रोग होता है॥ ३३॥

मरणस्थान—

भ्रातृस्थानगतो जीवो दारस्थानगतः कुजः।
तथा जन्मगतो मन्दो राहुर्नवमराशिगः॥ ३४॥
चंन्द्रोऽष्टमगृहं यातः सूर्यो रिःफगृहं गतः॥
बुधः सप्तमभावस्थो भार्गवः शत्रुराशिगः॥ ३५॥
इत्येवं मरणस्थानं तस्मिन्पापयुतेऽथवा॥
पापदृष्टेऽरिनीचस्थे दुर्बले दुःखमाप्नुयात्॥ ३६॥

संस्कृत — भातृस्थानेति। १. जीवो (गुरुः) यदि भातृस्थानगतः= तृतीयभावगतो भवेत्तदा तृतीयं स्थानं मरणस्थानं भवति। २. कुजो दारस्थान=सप्तमस्थानगतः स्यात्तदा दारस्थानं मरणं स्थानंभवति तथा ३. जन्मगतः= लग्नस्थितः मन्दः, ५. नवमगतो राहुः, ५. अष्टमगतः चन्द्रः, ६. द्वादशगतो सूर्यः, ७. सप्तमगतो बुधः, ८. षष्ठस्थः शुक्रश्च यदि भवेत्तदा किलैतत् मरणस्थानं भवति। तस्मिन्=मरणस्थाने, पापयुते=पापग्रहेण सहिते पापदृष्टे अरिनीचस्थे

अर्थात् तत्तद्भावे यो ग्रहो भवेत्तस्य ग्रहस्यासौ राशिर्नीचो वा शत्रुगृहं स्यात् तदा दुर्बले वा ग्रहे सति तद्योगकारकग्रहदशायां नरो दुःखमाप्नुयात्=प्राप्नुयात। अत्र बहूनां योगकर्त्तृकाणां ग्रहाणां मध्ये बलवतो ग्रहस्य दशायां दुःखं प्राप्नुयात् इति ॥३४-३६॥

हिन्दी — भ्रातृस्थान में (तीसरे में) बृहस्पति, दारास्थान में (सातवें) मङ्गल, जन्मस्थान में (लग्न में) शनि, भाग्यस्थान (नवम) में राहु, मृत्युस्थान में (अष्टम) चन्द्रमा, रिष्फ स्थान में (बारहवें) सूर्य, सप्तमस्थान में बुध और शत्रुस्थान (छठे स्थान) में शुक्र ये मरणकारक होते हैं। ये स्थान ऐसे पापग्रह से ''जो नीचराशि या अपने शत्रुराशि में स्थित हो उससे'' यदि दृष्ट या युत हो तो कष्ट होता है। यहाँ पापग्रह संयुक्त होने मात्र से ही कष्टकारक होता है यदि वह नीच या शत्रुराशि का हो तो विशेष कष्टकारक होता है ॥ ३४-३६ ॥

देहजीवफल—

(सूर्यकृत)

भानुः करोति विविधापदमर्थनाश-
मार्तिज्वरारिजनभीतिपदच्युतिं च।
पित्तार्तिगुल्मग्रहणीक्षयकर्णरोगं
पश्वादिबन्धुमरणं सहजादिनाशम्॥ ३७॥

(चन्द्रकृत)

चन्द्रः स्वबन्धुजनसङ्गमकन्यकाप्ति-
मारोग्यभूषणसुखाम्बरराजपूज्यम् ।
दानक्रियादिसुरभूसुरपुण्यतीर्थ-
स्नानार्चनं मृदुसुखान्नसुखं करोति॥ ३८॥

(भौमकृत)

भौमः करोति तनुतापरुगग्निचोर-
भीतिं स्वबन्धुकलहं सहजादिनाशम्।
क्षेत्रार्थनाशपदविच्युतियुद्धनीतिं
गुल्मार्शकुष्ठविषशत्रुजयं कुवृत्तिम्॥ ३९॥
ज्वरमासुरिकापैत्त्यं ग्रन्थिस्फोटं कुजस्य च।
विषाग्निशस्त्रचोरारिनृपभीतिं वदेद्बुधः॥ ४०॥

(बुधकृत)

सौम्यः करोति सुहृदाप्तमहत्प्रसाद-
विज्ञानशीलनिगमागमशास्त्रबोधम् ।

स्त्रीपुत्रदारनृपभूषणगोगजाश्व-
लाभं विवेकधनबुद्धियशोऽभिवृद्धिम्॥ ४१॥

(गुरूकृत)

जीवः करोति विविधार्थसुखं महत्वं
राज्याभिषेकमवनिप्रभुपूजनाद्यम्।
स्त्रीपुत्रलाभसुखभूषणभोजनार्थ-
मारोग्यकीर्तिविजयं च परोपकारम्॥ ४२॥

(शुक्रकृत)

शुक्रः करोति रतिलाभसुखाङ्गनादि-
चित्राम्बरार्थपशुवाहनरत्नजालम्।
गानक्रियानटनगोष्ठिमहत्प्रतापं
सत्कीर्तिदानविभवं सुजनैः समाजम्॥ ४३॥

(शनिकृत)

मन्दः करोति कलहं तनुकृच्छ्रमृत्यु-
बन्ध्वार्तिमग्निरिपुभूतभयं विषार्तिम्।
मानार्थहानिमभिमानकलत्रपुत्र-
नाशं गृहार्थकृषिवाणिजगोविनाशम्॥ ४४॥

(राहुकृत)

राहौ देहेऽरिपीडाऽऽत्मबन्धुकष्टपरिभ्रमम्।
पक्षघातादिपीडां च राजभीतिं वदेन्नृणाम्॥ ४५॥

(केतुकृत)

केतौ चोराग्निपीडादि रक्तस्रावादिपीडनम्।
दारिद्र्यं बन्धुनाशं च स्थाननाशं धनक्षयम्॥ ४६॥

संस्कृत — देहजीवयोः क्रूर-सौम्यग्रहवशात् शुभाशुभं फलं भवतीति भावार्थः। श्लोकास्तु स्पष्टार्था सरलार्थाः इति॥ ३७-४६॥

हिन्दी — सूर्य यदि देहराशि या जीवराशि में हो तो नानाप्रकार की विपत्तियाँ-अर्थनाश-कष्ट-शत्रुओं से भय-पदच्युति-ज्वर-पित्तरोग की अधिकता-गुल्मरोग-संग्रहणी-क्षय-कान के रोग-पशुधन का नाथ-बन्धु-बान्धवों का मरण और भ्रातृनाश होता है॥ ३७॥

चन्द्र यदि देह या जीवराशि में रहे तो स्वबन्धुओं से मिलन-पुत्री की प्राप्ति-आरोग्यता-भूषणों की प्राप्ति-वस्त्रप्राप्ति-राजा से सम्मान प्राप्ति-दानकार्य-देव ब्राह्मण की सेवा-तीर्थाटन और मृदु अन्न (विविध व्यंजन) का सुख प्राप्त होता है॥ ३८॥

यदि मङ्गल देह या जीवराशि में रहे तो शरीर में ज्वरताप-अग्नि से भय-चोर से भय-बन्धुकलह-भ्रातृनाश-धन-भूमि का नाश-पदच्युति-युद्ध में रुचि-गुल्म (फोड़ा)-बवासीर-कोढ़-भय-शत्रुभय और कुवृत्ति अर्थात् निकृष्ट नौकरी या व्यापार होता है ॥ ३९ ॥

विद्वानों का कहना है कि ज्वर-मसूरिका (शीतलामाता)-पित्त के रोग-गठिया-धाव-विष से भय-अग्नि से भय-शत्रु से भय तथा राजा से भय आदि फल कराता है ॥ ४० ॥

यदि बुध देह या जीवराशि में हो तो मित्रों से हर्ष एवं सहयोगप्राप्ति-विज्ञान-शील-निगमागमशास्त्र का अध्ययन-स्त्रीसुख-पुत्रसुख-राजाकृपा-राजा से भूषण-प्राप्ति -गाय-हाथी-घोड़े का लाभ-विवेक-धन और यश की वृद्धि कराता है ॥ ४१ ॥

यदि बृहस्पति देह या जीव राशि में रहे तो विविध प्रकार के धन और सुख की प्राप्ति तथा महत्त्व बढ़ता है, जातक यदि राजकुल का हो तो राज्याभिषेक हो, साधारण व्यक्ति हो तो राजा की कृपा प्राप्त हो। स्त्रीसुख-पुत्रसुख-धनसुख एवं आरोग्यसुख होता है, भूषण की प्राप्ति सुभोजनप्राप्ति-परोपकारी बुद्धि-यश विस्तार तथा कीर्तिविस्तार होता है ॥ ४२ ॥

यदि शुक्र देह या जीवराशि में रहे तो रतिसुख, स्त्रियों से हर्षप्राप्ति, अनेक प्रकार के वस्त्र-धन-पशु-वाहन व रत्नसमूह का लाभ होता है। नृत्य-गान में रुचि होती है प्रताप बढ़ता है, दान करने से यश और कीर्ति बढ़ती है, वैभव का विस्तार होता है और सज्जनों से समागम होता है ॥ ४३ ॥

यदि देह या जीवराशि में शनि रहे तो कलह बुद्धि हो, शरीर क्षीण रहे, परिवार में मृत्यु, भ्रातृवर्ग को पीड़ा, अग्निभय-शत्रुभय-भूतभय-विषभय, धन व मान की हानि-गौरवनाश-स्त्री पुत्र का नाश, गृह-धन-कृषि-व्यापार एवं पशुधन का नाश होता है ॥ ४४ ॥

जीव या देहराशि में यदि राहु हो तो देहकष्ट-शत्रु से कष्ट-स्वजनों एवं बन्धुओं को कष्ट-व्यर्थ का भ्रमण, लकवा इत्यादि बीमारी और राजभय होता है ॥ ४५ ॥

केतु यदि देह या जीवराशि में रहे तो अग्निपीड़ा-शरीर से रक्तस्राव, दरिद्रता, स्थाननाश-धननाश और बन्धु-बान्धवों का नाश होता है ॥ ४६ ॥

लग्नस्थराशिदशाफल—

लग्नचक्रदशाकाले देहारोग्यं महत्सुखम्।
कीर्तिभूषणराज्यार्थसुतदाराम्बरायतिम् ॥ ४७ ॥
शुभर्क्षेत्रे शुभं सर्वं पापर्क्षे फलमन्यथा।
तद्वत्पापसमायुक्ते शुभयुक्ते शुभादिकम् ॥ ४८ ॥

स्वक्षेत्रतुङ्गमित्रस्थखेचरेण समन्विते।
विलग्नचक्रपाके तु राज्यार्थनृपपूजनम्॥ ४९॥
नीचमूढारिराशिस्थखेचरेण समन्विते।
पुत्रदारादिनाशं च मिश्रे मिश्रफलं वदेत्॥ ५०॥

द्वितीयभावस्थराशिदशाफल—

द्वितीयराशिचक्रे तु धनधान्यविवर्द्धनम्।
भोजनं सुतदाराप्तिं क्षेत्रगोनृपपूजनम्॥ ५१॥
विद्याप्तिं वाक्पटुत्वं च सद्गोष्ठ्या कालयापनम्।
शुभर्क्षे फलमेवं स्यात्पापर्क्षे फलमन्यथा॥ ५२॥

तृतीयभावस्थराशिदशाफल—

तृतीयराशिचक्रस्य परिपाके महत्सुखम्।
भक्ष्यभोज्यफलाप्तिं च शौर्यं धैर्यं मनोजयम्॥ ५३॥
कर्णाभरणवस्त्राप्तिं कण्ठभूषणमायतिम्।
अन्नपानादिसंपत्तिं शुभराशौ शुभं वदेत्॥ ५४॥

चतुर्थभावस्थराशिदशाफल—

चतुर्थराशिचक्रस्य पाके वाहनभूषणम्।
सीमाप्तिं तीर्थयात्रादिमहज्जननिषेवणम्॥ ५५॥
चित्तशुद्धिं महोत्साहं स्त्रीसुताप्तिं कृषिक्रियाम्।
बन्धुक्षेत्राभिवृद्धिं च गृहलाभं महत्सुखम्॥ ५६॥
आरोग्यमर्थलाभं च सुगन्धाम्बरभूषणम्।
शुभर्क्षे शोभनं विद्यात्पापर्क्षे सर्वनाशनम्॥ ५७॥

पंचमभावस्थराशिदशाफल—

सुतराश्यात्मके चक्रे राज्याप्तिं राजपूजनम्।
स्त्रीसुताप्तिं महाधैर्यमारोग्यं बन्धुपोषणम्॥ ५८॥
अन्नदानं यशोलाभमानन्दाब्धिमहोदयम्।
उपकर्तृत्वमर्थाप्तिं वाहनाम्बरभूषणम्॥ ५९॥
शुभपापर्क्षजं सर्वं ग्रहयोगादिसम्भवम्।
पूर्ववद्योजयेत्तत्र चरराशौ पदच्युतिम्॥ ६०॥

षष्ठभावस्थराशिदशाफल—

चक्रस्य षष्ठराशेस्तु परिपाकेऽग्निजं भयम्।
चोरारिविषभूपार्तिस्थाननाशं महद्भयम्॥ ६१॥

प्रमेहगुल्मपाण्ड्वादिग्रहणीक्षयसम्भवम् ।
अपकीर्तिः कलत्रार्थे सुतबन्धुविनाशनम् ॥ ६२ ॥
बन्धनं निगलप्राप्तिमृणदारिद्र्यपीडनम् ।
पापर्क्षे फलमेवं स्यान् मिश्रं शुभगृहे सति ॥ ६३ ॥

सप्तमभावस्थराशिदशाफल—

कलत्रराशिचक्रस्य परिपाके करग्रहः ।
स्त्रीसुखं पुत्रलाभं च घृतसूपगुडादिकम् ॥ ६४ ॥
कृषिगोगजभूषाप्तिं राजपूजां महद्यशः ।
शुभराशौ फलं सत्यं शुभखेचरसंयुते ॥ ६५ ॥

अष्टमभावस्थराशिदशाफल—

मृत्युचक्रदशाकाले महद्दुःखं धनक्षयम् ।
स्थाननाशं बन्धुनाशं गुह्योदरनिपीडनम् ॥ ६६ ॥
दारिद्र्यमन्नविद्वेषमन्नाभावमरेर्भयम् ।
पापर्क्षे पापसंयोगे फलमेवं विनिर्दिशेत् ॥ ६७ ॥

नवमभावस्थराशिदशाफल—

शुभचक्रदशाकाले शोभनं भवति ध्रुवम् ।
पुत्रमित्रकलात्रार्थकृषिगोग्रहभूषणम् ॥ ६८ ॥
सत्कर्मधर्मसंसिद्धिं महज्जनपरिग्रहम् ।
शुभराशौ शुभं सर्वं पापराशौ विपर्य्ययः ॥ ६९ ॥

दशमभावस्थराशिदशाफल—

कर्मचक्रदशाकाले राज्याप्तिं नृपपूजनम् ।
सत्कीर्तिदारपुत्रात्मबन्धुसङ्गं महोत्सवम् ॥ ७० ॥
आज्ञाधरत्वमारोग्यं सद्गोष्ठ्या कालयापनम् ।
सत्कर्मफलमैश्वर्य्यं शुभराशौ वदेद्बुधः ॥ ७१ ॥

एकादशभावस्थराशिदशाफल—

लाभचक्रदशाकाले धनाप्त्यारोग्यभूषणम् ॥
विचित्रवस्त्वागमनं गृहोपकरणं लभेत् ॥ ७२ ॥
स्त्रीपुत्रबन्धुसौख्याप्तिमृणद्रव्यायतिं शुभम् ।
राजप्रीतिं महत्सङ्गं प्रवदन्ति शुभोदये ॥ ७३ ॥

द्वादशयभावस्थराशिदशाफल—

व्ययचक्रदशाकाले देहार्तिं स्वपदच्युतिम् ।
चोराग्निनृपकोपादिबन्धुस्त्रीनृपपीडनम् ॥ ७४ ॥

उद्योगभङ्गमालस्यं कृषिगोभूमिनाशनम्।
दारिद्र्यं कर्मवैकल्यं पापर्क्षे तु न संशयः॥ ७५॥

संस्कृत — अत्र भाववशात् कालचक्रदशाफलान्याह। नक्षत्रचरणवशात् सव्यापसव्यचक्रे यत्राश्यंशसम्बन्धिनी दशा समायाति स राशिर्जन्मसमये यो भावस्तदुक्तं फलमत्र विनिर्दिशेत्। शुभराशिके शुभग्रहसंयुते च भावे कथितफलं शुभतरमन्यथा पापराशिके पापयुते च अशुभं वाच्यमिति। अन्यत् स्पष्टार्थाः सरलार्थाश्च॥ ४७-७५॥

हिन्दी — १ भाव से लेकर १२ भाव तक कालचक्र दशा का फंल— लग्रराशि की कालचक्र दशा में शरीर नीरोग रहता है और महासुख प्राप्त होता है। जातक यदि राजा हो तो राज्य प्राप्त होता है और यदि साधारण व्यक्ति हो तो राजा की कृपा प्राप्त होती है। यश का विस्तार-धन व वस्त्र की प्राप्ति और स्त्री-पुत्र का सुख प्राप्त होता है॥ ४७॥

लग्र यदि शुभग्रह की राशि हो तो शुभफल और पापग्रह की राशि हो तो पापफल होता है। उसीतरह शुभग्रह यदि लग्र में हो तो शुभफल और पापग्रह हो तो पापफल होता है॥ ४८॥

स्वगृह में, अपनी उच्चराशि में या अपने मित्र की राशि में होकर कोई ग्रह यदि लग्र में स्थित हो तो लग की दशा में राज्य, धन की प्राप्ति और राजा से सम्मानित होता है॥ ४९॥

नीचराशि-शत्रु-राशि अथवा अस्तग्रह यदि लग्र में रहे तो पुत्र स्त्री आदि का नाश होता है। यदि शुभ और पाप दोनों ग्रह रहें तो मिश्रित फल होता है॥ ५०॥

द्वितीयभाव की दशा में धनवृद्धि, प्रचुर अन्न प्राप्ति, विशेष भोजन प्राप्ति, पुत्र-स्त्री-भूमि की प्राप्ति, राजा से सम्मानप्रांप्ति-विद्या की वृद्धि-सज्जनों का साहचर्य तथा वाक्शक्ति का विकास होता है। द्वितीयस्थान में शुभराशि-शुभग्रह हों तो शुभफल एवं पापराशि-पापग्रह होने से अशुभफल होता है॥ ५१-५२॥

तृतीयभाव की दशा में उत्तमसुख प्राप्ति, उत्कृष्ट भोजनादि का लाभ, साहस-धैर्य-संतोष के साथ कार्यसंपादन, कर्णभूषण-कंठभूषण-वस्त्र-सुन्दर अन्न का लाभ तथा अच्छे पेयपदार्थ का लाभ होता है। शुभग्रह यदि तीसरे स्थान में रहें तो उपर्युक्तफल अधिकाधिक मात्रा में प्राप्त होता है अन्यथा साधारणफल प्राप्त होता है॥ ५३-५४॥

चतुर्थभाव की जब कालचक्रदशा हो तो वाहन-भूषण एवं भूमि की प्राप्ति, तीर्थयात्रा, सज्जनों से समागम, चित्त की शुद्धि, मन में उत्साह, स्त्री-पुत्र का सुख, कृषि में उन्नति, मित्रों से प्रेम, गृहलाभ, धनलाभ, सुगन्धित द्रव्य व वस्त्रों की प्राप्ति, स्त्री

सुख और महानसुख होता है। यहाँ भी शुभराशि होने पर शुभ और पापराशि होने पर अशुभफल कहना चाहिए॥ ५५-५७॥

कालचक्रदशा में जब पञ्चमभाव की दशा आवे तो राज्यप्राप्ति अथवा राजा से सम्मान, पदवृद्धि, धैर्यवृद्धि, स्त्री-पुत्र का सुख, बन्धुवर्ग का भरण-पोषण, अन्नदान, कीर्ति का विस्तार, मंगलकार्य, दूसरों का उपकार, धनलाभ, वाहनलाभ एवं वस्त्र-आभूषण आदि की वृद्धि होती है। शुभग्रह होने से शुभ तथा पाप ग्रह होने से अशुभफल होता है॥ ५८-६०॥

षष्ठभाव की कालचक्र दशा में राजा से-अग्नि से-चोर से-शत्रु व विष से भय, पीड़ा, स्थानहानि, प्रमेह-गुल्म (फोड़ा), पीलिया-संग्रहणी, तपेदिकरोग, पुत्र व बन्धुओं का नाश, स्त्री के कारण अपयश, जेल आदि बन्धनभय तथा ऋण और दारिद्र्य से कष्ट होता है। यदि छठे भाव में शुभराशि हो तो अल्पकष्ट होता है, यदि पापराशि या पापग्रह हो तो विशेषकष्ट होता है॥ ६१-६३॥

कालचक्रदशा में सप्तमभाव की दशा रहे तो स्त्रीसुख-पुत्र प्राप्ति-सुन्दर पक्वान्नादि का भोजन, कृषि में विस्तार, वाहनसुख, घर में शुभकार्य तथा यश का विस्तार होता है। यदि शुभग्रह-शुभराशि हो तो शुभफल अन्यथा अशुभफल समझना चाहिए॥ ६४-६५॥

कालचक्रदशा में अष्टमभाव की जब दशा हो तो बहुतदुःख-स्थाननाश, धननाश, मित्र की मृत्यु या मित्र शत्रु हो जाये-गुदारोग (बवासीर, भगन्दर आदि), उदररोग, अन्न में अरुचि, दरिद्रता और शत्रुभय आदि होता है। यदि आठवें में पापराशि और पापग्रह हों तो अनिष्टफल होता है और यह फल पूर्णरूप से प्राप्त होता है॥ ६६-६७॥

नवमभाव की कालचक्रदशा में निश्चय ही पुत्रजन्म, मित्र और स्त्रियों का सुख-पशुधनप्राप्ति-कृषि का विस्तार-धनागम-भवन व भूषण की प्राप्ति- शुभकार्य की सिद्धि और सज्जनों से प्रीति होती है। यदि नवम में शुभराशि और शुभग्रह हों तो विशेष कर शुभफल होता है॥ ६८-६९॥

कालचक्रदशा में दशमभाव की जब दशा आवे तो राज्यप्राप्ति या पदोन्नति, स्त्री-पुत्र का सुख, मित्रों का अभ्युदय, यशविस्तार, गृह में मंगलकार्य, नीरोगी सज्जनों से सत्संग, विशिष्ट कार्य सम्पादन तथा आज्ञा का विस्तार होता है। यदि शुभराशि हो तो बहुत शुभफल होते हैं॥ ७०-७१॥

एकादशभाव में जो राशि हो उसकी जब कालचक्रदशा हो तो धनलाभ-भूषण व सुन्दरवस्त्रों का लाभ, घरेलू सामग्रियों का लाभ, स्त्री-पुत्र मित्रों का सुख, भूषणप्राप्ति. राजा की प्रीति, सज्जनों से समागम और बन्धुओं का अभ्युदय होता है। इस तरह सबप्रकार के शुभफल की प्राप्ति होती है॥ ७२-७३॥

व्ययभावराशि की जब दशा हो तो पदनाश-शरीरपीड़ा-राजभय-चोरभय-अग्निभय. राजकोप, उद्योगनाश, कृषिनाश, पशुसंख्या में कमी, दरिद्रता में वृद्धि और कर्म से विफलता होती है। यदि पापराशि और पापग्रहों का योग हो तो अधिक कष्ट होता है।

उक्त फलों में यह विशेष समझें कि प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ-पञ्चम-सप्तम-नवम-दशम और एकादशभाव में यदि शुभग्रह की राशि हो और वह शुभग्रह से युक्त हो तो सुन्दरफल होता है। यदि छठे-आठवें-बारहवें भाव में पापग्रह की राशि हो और वह पापग्रह से युक्त हो तो पापफल अधिक होता है ॥ ७४-७५ ॥

चक्रदशाफल में वैशिष्ट्य—

लग्नादिद्वादशान्तानां भावानां फलमीदृशम्।
प्रोक्तमत्रविशेषोऽस्ति विशेषात्कथ्यतेऽधुना ॥ ७६ ॥
तत्तद्राशीशवीर्येण यथायोग्यं प्रयोजयेत्।
राशीश्वरे बलयुते स्वोच्चमित्रस्ववर्गके ॥ ७७ ॥
मित्रान्विते शुभैर्दृष्टे यत्प्रोक्तं तच्छुभं वदेत्।
बलहीनेऽरिनीचस्थे दिनेशकरपीडिते ॥ ७८ ॥
षष्ठाष्टमव्ययस्थाने पापशत्रुनिरीक्षिते।
तद्राशिपे तु जनने कष्टं राश्युद्भवं फलम् ॥ ७९ ॥
फलं तद्द्विगुणं कष्टं शुभं राश्युद्भवं फलम्।
अधिपस्य बलं हीनं यदि चानर्थमाप्नुयात् ॥ ८० ॥
अधिपस्य बलाधिक्यं राश्युद्भवफलं यदि।
यदि चेद्द्विगुणं सौम्यं फलत्येव न संशयः ॥ ८१ ॥
अधिपे चरराशिस्थे चरराश्यंशकेऽपि वा।
चरराश्युद्भवं चक्रं विदेशगमनप्रदम् ॥ ८२ ॥
यावच्चक्रं तदा ज्ञेयं यद्येकस्मिन् चरे सति।
विदेशगमनं वापि स्वस्थानाप्तिं विनिर्दिशेत् ॥ ८३ ॥

संस्कृत — लग्नादीति। लग्नादिद्वादशभावानामीदृशं पूर्वोक्तं फलं यत्प्रोक्तं=यत्कथितं तत्र यो विशेषोऽस्ति असौ अधुना विशेषात् कथ्यते। तत्तद्भावानां राशीशवीर्येण=बलेन यथायोग्यं फलं प्रयोजयेत् (भावाधिपस्य बलाबलवशादेवोक्त फलेषु न्यूनाधिक्यं) राशीश्वरे=तत्तद्भावेशे बलयुते, स्वोच्चे-स्वमित्रे वा स्ववर्गगते, वा मित्रान्विते शुभैर्दृष्टे सति यत्प्रोक्तं तच्छुभं फलं वदेत्। राशीश्वरे बलहीने-रिपुराशौ-नीचे-दिनेशकरपीडिते(अस्तङ्गते)- षष्ठाष्टमव्ययभावगते वा पापेन शत्रुणा च दृष्टे युते वा राशीश्वरे सति तदा तद्राश्युद्भवं=

चक्रदशायां तद्भावजं फलं कष्टं=अशुभं भवति। यदि अधिपस्य=तत्तद्भावाधिपस्य बलं हीनं स्यात्तदा तद्राश्युद्भवं शुभफलं कष्टमशुभत्वं च द्विगुणतं प्राप्नुयादिति। यदि अधिपस्य=भावेशस्य बलाधिक्यं भवेत्तदा तद्राश्युद्भवं शुभं फलं द्विगुणं सौम्यं=शुभं फलति एव न संशयः=संदेहो न। भावफलस्य शुभहेतवे तत्तद्भावाधिपस्य बलाधिक्यमावश्यकमिति। भावपति चरराशिस्थे, वा चरराश्यंशकेऽपि स्थिते, वा चरराश्युद्भवं चक्रं=कालचक्रदशा राशि यदि चरराशि भवेत्तदा विदेशगमनप्रदं भवति। चक्रदशायां यद्येकस्मिन् चरे अर्थात् तद्भावे चरराशौ, वा भावेशे चरराशिस्थे वा चरनवांशस्थे सति यावच्चक्रं=चक्रदशाकालं यावत् (चरराश्यन्तरे विशेषेण) विदेशगमनं वा स्वस्थानाप्तिं=तद्राशिनिर्द्दिष्ट स्थानपदादिलाभं विनिर्द्दिशेत्=कथयेत् ॥ ७६-८३ ॥

हिन्दी — लग्नादि द्वादशभावों के फल इसी प्रकार कहे गये हैं। यहाँ पर जिन बातों का विशेष विचार करना चाहिए वह कहा जा रहा है ॥ ७६ ॥

प्रत्येकभाव का उसके राशीश द्वारा विचारकरना चाहिए। यदि राशिपति बलवान् हो अपने उच्च में-स्वस्थान में-मित्र के गृह में-स्ववर्ग में-मित्र से दृष्ट या मित्रग्रह के साथ स्थित हो तो शुभफलकारक होता है। राशिपति यदि बलहीन हो, शत्रुराशि में या नीच राशि में या अस्तङ्गत हो या छठे-आठवें-बारहवें हो, शत्रुग्रह या पापग्रह से देखा जाता हो तो उसराशि की दशा कष्टकारक होती है। तात्पर्य यह कि राशि शुभ हो राशिपति भी बलवान हो तो दशाशुभ होती है। अन्यथा राशि अशुभ (छठे-आठवें-बारहवें भाव में पड़ी) हो, राशिपति भी निर्बल हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो दशा खराब होती है ॥ ७७-७९ ॥

यदि भावराशि का फल अशुभ हो और भाव के राशिपति का फल भी अशुभ हो तो द्विगुणित अशुभफल होता है। राशिपति के बलहीन होने से अशुभफल होता है ॥ ८० ॥

यदि भावराशि का फल उत्तम हो और राशिपति का फल भी उत्तम हो तो उसकी दशा द्विगुणित अच्छी होती है। अर्थात् भाव का फल उत्तम और भाव राशिपति का फल भी उत्तम रहने से फल द्विगुणित उत्तम हो जाता है ॥ ८१ ॥

भावेश यदि चरराशि में हो अथवा चरराशि के नवांश में हो और राशि भी चरराशि हो तो उस राशि की जो दशा आती है उसमें यात्रा होती है अथवा विदेशगमन होता है ॥ ८२ ॥

यदि राशि चरसंज्ञक हो अथवा राशिपति चरराशि में या चरनवांश में रहे अर्थात् कोई भी एक चर रहे तो विदेशगमन (यात्रा) करके जातक घर को आ जाता है ॥ ८३ ॥

संज्ञाध्याये च यत्प्रोक्तं कर्माजीवे च यत्फलम्।
फलमाश्रयजं यद्यत्स्थानजन्यं च यत्फलम्॥ ८४॥
यत्प्रोक्तं राजयोगादौ चान्द्रयोगे च यत्फलम्।
नाभसादिषु यत्प्रोक्तं शुभपापेक्षणादपि॥ ८५॥
द्विग्रहादिषु यत्प्रोक्तं ग्रहाणां पूर्वसूरिभिः।
तद्राशिचक्रकाले तु स्वधिया योजयेद् बुधः॥ ८६॥

संस्कृत — संज्ञाध्याये इति। संज्ञाध्यायमारभ्यात्रावधि भाव-राशि-ग्रहादिजनिता यावन्तो शुभाशुभ योगाः कथितास्तेषां फलप्राप्तिकालं तद्राशि-चक्रकाले=सव्यापसव्योपगतदशाचक्रे तत्तद्राशिसम्बन्धिदशाकाले बुधः=विद्वान् स्वधिया विचार्य्य योजयेत्। सर्वे एव ग्रहा राशयश्च स्वस्वदशायां स्वस्वशुभाशुभं फलं ददाति। यथोक्तं बृहज्जातके (८। २०)—

संज्ञाध्याये यस्य यद् द्रव्यमुक्तं कर्माजीवो यश्च यस्योपदिष्टः।
भावस्थानालोकयोगोद्भवं च तत्तत्सर्वं तस्य योज्यं दशायाम्॥

इति॥ ८४-८६॥

हिन्दी — संज्ञाध्याय में जो कारक कहा गया है, कर्माजीव में जो उपार्जन कहा गया है, ग्रहों के विभिन्न राशियों में, भाव में बैठने का जो फल कहा गया है, जो राजयोग वर्णन में कहा गया है, चन्द्रमा से उत्पन्न योग जो कहे गये हैं, जो नाभस इत्यादि योग कहें गये हैं, शुभग्रह की दृष्टि अथवा पापग्रह की दृष्टि से जो योग कहे गये हैं, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात ग्रह बैठने के जो फल पूर्वाचार्यों के अनुसार हैं वे सब विचार कर कालचक्रदशा में समझना चाहिए और तदनुरूप स्वबुध्यानुसार फल कहना चाहिए॥ ८४-८६॥

मेषादिराशिचक्रं तु भूभागेन्यस्य दक्षिणम्।
अल्यादि ह्यौत्तरंयच्च तच्चक्रं तत्र निर्द्दिशेत्॥ ८७॥
फलं वा विफलं वाऽपि प्रागादिद्युचरादधः।
राशिदिग्भागतो वाऽपि तद्दिग्भागे विनिर्दिशेत्॥ ८८॥
यथोपदेशमार्गेण सर्वेषां फलमीदृशम्।

संस्कृत — मेषादिति। मेषादि राशिचक्रं, दक्षिणं=सव्यं भूभागे न्यस्य=विलिख्य तथा अल्यादि=वृश्चिकादि, हि औत्तरम्=अपसव्यं वृश्चिकतो वैपरीत्येन यच्चक्रं तदपि तत्र भूभागे न्यस्य तस्मात्फलाफलं निर्द्दिशेत्=कथयेत्। तत्र यस्य राशेः यत्फलादि तत्तद्राशिदिग्भागतो प्राप्तं भवेदिति तद्यथोपदेशमार्गेण सर्वेषां ग्रहराश्यादीनां इदृशं फलं विनिर्द्दिशेत्। अर्थात् सव्य वा अपसव्यचक्रे

यस्य दशायां शुभाशुभ फलं वक्तव्यं स्यात् स राशिश्चक्रे यद्दिग्भावे स्थितस्तस्मिन् दिग्भागे तत्तत्फलस्यप्राप्तिं भवेदिति ॥ ८७-८८.५ ॥

हिन्दी — भूमि पर पहले सव्यचक्र मेष से मीन तक बनावें जिसमें ऊपर नीचे २ और उत्तर दक्षिण ९ कोष्टक रहे। इसीप्रकार अपसव्यचक्र भी बनावें। सफलता या असफलता किस दिशा में होगी इसका निर्णय जिसराशि के स्वामी पूर्व-दक्षिण-पश्चिम और उत्तर जिस दिशा में पड़ें उसी के अनुसार समझें। जिसदिशा में शुभराशि पड़े उसदिशा में शुभफल और जिसदिशा में अशुभराशि पड़े उसदिशा में अशुभफल। इस तरह प्रत्येक व्यक्ति के लिए कौन दिशा शुभ है, कौन नहीं, यह ज्ञात हो सकता है ॥ ८७-८८ ॥

कालचक्रगति—

कालचक्रगतिस्त्रेधा निश्चिता पूर्वसूरिभिः ॥ ८९ ॥
मण्डूकगमनं चैव पृष्ठतो गमनं तथा।
सिंहावलोकनं नाम पुनरागमनं भवेत् ॥ ९० ॥
पृष्ठतो गमनं चैव कर्किकेसरिणोरपि।
मीनवृश्चिकयोश्चापमेषयोः केसरीगतिः ॥ ९१ ॥
कन्याकर्कटयोः सिंहयुग्मयोर्मण्डुकीगतिः।

संस्कृत — कालचक्रगतिरिति। पूर्वसूरिभिः=पराशराद्यैः महर्षिभिः कालचक्रस्य त्रेधा गतिः निश्चिता=निर्णीता। यथा—१. मण्डूकगमनम्, २. पृष्ठतो (मर्कटी) गमनम्, ३. सिंहावलोकनं (पुनरागमनं)। गतीनां लक्षणञ्च-कर्किकेसरिणोः=कर्कसिंहयोः पृष्ठतो गमनं, मीनवृश्चिकयोः चापमेषयोश्च गतिः केसरी=सिंहावलोकनम्, कन्याकर्कटयोः सिंहयुग्मयोः मण्डूकी गतिः। अर्थात् सव्ये-अपसव्ये च चक्रे कर्किकेसरिणोः (कर्कस्य मिथुने सिंहस्य कर्के) पृष्ठतो (मर्कटी) गमनं एवं मीनवृश्चिकयोः, धनुर्मेषयोः पारस्परिकं गमनं केसरी गतिः कथ्यते। एवमेव सिंहमिथुनयोः कन्याकर्कटयोः गमनं मण्डूकी गर्तिभवति। यथा पाराशरीये (४९।५३-५६ बम्बई)—

प्रथमे गतिर्मण्डूकी द्वितीये मर्कटो तथा।
बाणायनवपर्यन्तं गतिः सिंहावलोकनम् ॥
कन्यायां कर्कटे वापि सिंहभे मिथुनेऽपि च।
मण्डूकीगतिसंज्ञौ वै तादृशं रोगकारकम् ॥
मीने तु वृश्चिके वापि चापो मेषः तथैव च।
सिंहावलोकनं चैव तादृशं च फलं लभेत् ॥ इति ॥ ८९-९१ ॥

हिन्दी — इस कालचक्र की ३ गति होती है :—

(१) मण्डूक (२) पृष्ठ से (पीछे) गमन (३) सिंहावलोकन इसका नाम पुनरागमन भी है ॥ ८९-९० ॥

कर्क-सिंह का पृष्ठगमन है। अर्थात् सिंह के बाद जब कर्क की दशा आवे तब **पृष्ठगमन** होता है। इसीतरह कर्कराशि की दशा के बाद जब मिथुनराशि की दशा हो तब भी पृष्ठगमन होता है। मीनराशि से जब वृश्चिकराशि की दशा हो तब भी **सिंहावलोकन गमन** होता है। इसतरह धनुराशि के बाद जब मेषराशि की दशा हो तब भी सिंहावलोकनगमन होता है।

कन्याराशि से कर्कराशि की दशा हो तो **मण्डूकगमन** होता है। इसीतरह जब सिंह राशि से मिथुन राशि की भी दशा हो तब मण्डूकगमन होता है ॥ ८९-९१ ॥

स्पष्टार्थ चक्र—

गति	मण्डूकी		मर्कटी (पृष्ठागम्)		केशरी (सिंहावलोक)	
चक्र	सव्य		अपसव्य		सव्य	
	चरण	दशा सं.	चरण	दशा सं.	चरण	दशा सं.
	द्वितीय प्रथम चतुर्थ	६-७-८-९ ३-४-५-६ २-३	प्रथम चतुर्थ	८-९ ६-७	द्वितीय तृतीय	३-४ ६-७
	अपसव्य		सव्य		अपसव्य	
	तृतीय	१-२	द्वितीय	७-८	द्वितीय तृतीय	३-४ ६-७

सिंहावलोकनदशा फल—

सिंहावलोकसमये ज्वरार्तिस्थाननाशनम् ॥ ९२ ॥
बन्धुस्नेहादिनाशं च समानजनपीडनम्।
जले वा पतनं कूपे विषशस्त्राग्निजं भयम् ॥ ९३ ॥
वाहनात्पतनं वाऽपि दशाच्छिद्रान्विते सति।

छिद्रदशा—

क्रूरास्तनीचापचयखेचरस्य दशा यदि ॥ ९४ ॥
दशाच्छिद्रमिति ज्ञेयं प्रवदन्ति विपश्चितः।

संस्कृत — सिंहावलोकेति। क्रूरस्य, अस्तङ्गतस्य नीचङ्गतस्य, अपचयस्य (क्षीणः) ग्रहस्य दशा दशाच्छिद्रमिति विपश्चितः (विद्वांसः) प्रवदन्ति=कथयन्ति। बन्धुस्नेहादि नाशं अन्यत्स्पष्टम् ॥ ९२-९४ ॥

हिन्दी — सिंहावलोकनगमन के समय ज्वर से पीड़ा और स्थाननाश,

बन्धुओं के प्रेम का नाश और समान जन अर्थात् किसी सहकर्मी को पीड़ा, कूप या जल में गिरने का भय या अकस्मात् घोड़े आदि वाहन से गिरने का भय होता है।

यह सब अशुभफल तब कहना चाहिए जब दशाछिद्र हो। दशाछिद्र तब होता है जब निर्बल-नीच-क्रूर एवं अस्तग्रह की दशा होती है॥ ९२-९४॥

मण्डूकगति फल—

मण्डूकगतिसम्भूतसमये मरणं गुरोः॥ ९५॥
पित्रोर्वा विषशस्त्राग्निज्वरचौराग्निभिर्भयम्।
मण्डूकसमये सव्ये समानजनपीडनम्॥ ९६॥
केसरीयुग्ममण्डूके मातुर्मरणमादिशेत्।
मरणं राजभीतिं च सन्निपातमरेर्भयम्॥ ९७॥

संस्कृत — मण्डूकगतीति। पूर्वोक्तमण्डूकगतिसम्भूतसमये (अन्तर्दशायाम्) गुरोः= स्वकीयश्रेष्ठस्य, पित्रोर्वा=स्वपित्रोः (मातुः पितुश्च) मरणं तथा विषशस्त्राग्निज्वरचोराग्निभिर्भयं भवति। सव्ये=सव्यचक्रोद्भूते, मण्डूकसमये= मण्डूकगतिदशायां समानजनस्य (बन्धुमित्रादेः) पीडनं भवति। केसरीयुग्म मण्डूकेऽर्थात् सिंहराशितः मिथुने कन्यातः कर्कटगे सति, मातुः=जातस्य मातुः, मरणं तथा स्वस्य मरणं राजभीतिं, सन्निपातरोगम्, अरेः (शत्रुतः) भयं च भवति॥ ९४-९७॥

हिन्दी — अपसव्य दशाचक्र में मण्डूकगतिदशा जब आती है तब किसी श्रेष्ठव्यक्ति का मरण होता है अर्थात् माता-पिता, चाचा-दादा इत्यादि का। विष-शस्त्र-ज्वर-चोर तथा अग्नि से भय होता है।

सव्यदशाचक्र में जब मण्डूक गति की दशा आती है तब समानजन पीड़न अर्थात् किसी सहकर्मी को पीड़ा होती है। सिंहराशि से मिथुनराशि में जब दशा आये तो वह मण्डूकगतिदशा होती है। इस मण्डूकदशा में माता की मृत्यु या अपना मरण-राजदण्ड-सन्निपात तथा शत्रु का भय होता है। तात्पर्य यह कि सव्य हो या अपसव्य मण्डूकगतिदशा क्लेशप्रद ही होती है॥ ९४-९७॥

सव्ये सिंहावलोके तु चतुष्पाद्भयमग्निजम्।
पृष्ठतो गमने सव्ये धनधान्यपशुक्षयः॥ ९८॥
पितुर्मरणमालस्यं तत्समानेषु वा मृतिः।
मण्डूकगमने वामे स्त्रीसुतार्ति परिश्रमम्॥ ९९॥
तापज्वरं मृगाद् भीतिं पदच्युतिमरेर्भयम्।
सिंहावलोकने वामे स्थानभ्रंशः पितुर्मृतिः॥ १००॥

पृष्ठतो गमने वापि जलभीतिं पदच्युतिम्।
पितुर्नाशं नृपक्रोधं दुर्गारण्याटनं वदेत्॥ १०१॥

संस्कृत — स्पष्टार्थाः सरलार्थाः श्लोकाः॥ ९८-१०१॥

हिन्दी — सव्यचक्र के सिंहावलोकनगतिदशा में चतुष्पद (वाहन) से चोट का भय तथा अग्नि से भय होता है। सव्यचक्र की दशा में जब पृष्ठगमनगतिदशा हो तो धनधान्य का नाश या पशुक्षय, पिता का मरण, आलस्यवृद्धि और पिता के तुल्य किसीव्यक्ति की मृत्यु होती है।

जब अपसव्यचक्र में मण्डूकगति (दशा) हो तो स्त्री-पुत्र को बहुत परिश्रम, शत्रु से भय, जंगली जानवरों से भय, पदच्युति और ज्वर-बुखार आदि का भय होता है। अपसव्यचक्र में जब सिंहावलोकन गति होती है तब स्थाननाश और पिता की मृत्यु होती है।

अपसव्यचक्र में जब पृष्ठगमन हो तो डूबने का भय, दुर्ग व जंगल में भ्रमण, पिता का नाश, राजा का कोप और पदच्युति होती है। अर्थात् अपसव्य या सव्य चक्र वाली (१) मण्डूक, (२) पृष्ठगमन और (३) सिंहावलोकन ये तीनों दशायें अशुभ ही होती हैं॥ ९८-१०१॥

कालचक्रदशास्वरूप—

दस्रानलादितिभुजङ्गदिनेशभानां
पूषासुराजपदविश्वसमीरणानाम्।
वाक्यानि सव्यगतिचक्रभवादिकानि
चत्वारि सर्वमुनयः प्रवदन्ति तज्ज्ञाः॥ १०२॥
चित्राहिर्बुध्न्यभरणी पूर्वाषाढेन्द्रमन्त्रिणाम्।
सव्यचक्रान्त्यवाक्यानि चत्वारि क्रमशो विदुः॥ १०३॥
द्विदैवकमलागारपितृदानववैरिणाम्।
अपसव्यस्य चक्रस्य वाक्यं चादिचतुष्टयम्॥ १०४॥

संस्कृत — **दस्रेति।** दस्रानलादितिभुजङ्गदिनेशभानौ अश्विनी-कृत्तिका-पुनर्वसु-श्लेषा-हस्त-पूषासुराजपदविश्वसमीरणानां = रेवती-मूल-पूर्वभाद्रपद-उत्तराषाढ-स्वातीति दशनक्षत्राणां सव्यगतिचक्रभवादिकानि (१) "पौरङ्गावोमातासहोधी (२) नक्षत्रदासीचर्वणगः (३) रूपोत्रक्षुर्निधायरङ्गम् (४) वाणीचस्यन्दधिनक्षत्रम्" इति चत्वारि वाक्यानि तज्ज्ञाः ज्योतिष शास्त्रज्ञाः सर्वमुनयः प्रवदन्ति=कथयन्ति। चित्रा-उत्तरभाद्र-भरणी-पूर्वाषाढ़-पुष्येति पञ्चनक्षत्राणां। (५) "हंसश्चवशांवरपत्रम् (६) क्षन्राधीकरगोभीमाच (७) सुदधिनक्षत्रजः सितः (८) वामाङ्गारकोत्रक्षुर्निधिः" इति सव्य-

चक्रान्त्यचत्वारिवाक्यानि क्रमशोविदुः। तात्पर्यं यत् अश्विनी-पुनर्वसु-हस्त-मूल-पूर्वभाद्रपदानक्षत्राणां प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ-चरणेषु या दशामानानि ता एव कृत्तिका-श्लेषा-स्वाती-रेवती-उत्तराषाढानक्षत्राणां च चरणपरत्वेन दशामानानि भवन्ति। अश्विनी-पुनर्वसु-हस्त-मूल-पूर्वभाद्रपदानां प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थचरणाः क्रमेण मेष-वृष-मिथुन-कर्कराशि-सम्बन्धिनो एवं कृत्तिका-श्लेषा-रेवती-स्वाती-उत्तराषाढानक्षत्राणां प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थचरणाः क्रमेण धनुः-मकर-कुम्भ-मीन-राशिसम्बन्धिनो भवन्तीति। उभयत्र दशामानं तदीशाश्च समाना एव। एवं चित्रा-उत्तरभाद्र-भरणी-पूर्वाषाढ-पुष्यनक्षत्राणां प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थचरणाः सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक-राशिंसम्बन्धिनः तथा दशावर्षाणि च सव्यचक्रान्त्यचत्वारि वाक्यानि ज्ञेयानि।

अपसव्यचक्रे द्विदैवकमलागारपितृदानववैरिणाम् अर्थात् विशाखा-रोहिणी-मघा-श्रवण चतुः नक्षत्राणां अपसव्यचक्रस्य वाक्यचतुष्टयं (१) 'धनक्षेत्र पराङ्गमिव (२) तासादत्रक्षुनिधिर्द्दासा (३) चमीभोगीरायधनर्क्षम् (४) तत्रयोरागीमाभेतासह इति भवति। तथा च शतभिषा-अनुराधा-ज्येष्ठा-मृगशिरः-धनिष्ठा-पूर्वफल्गुनी-उत्तरफल्गुनी-आर्द्रेति नक्षत्राणाम्, अपसव्य-चक्रान्त्य वाक्यानि (५) त्रक्षुर्निधिर्द्दासतस्तमेव (६) गिरायुधनक्षत्र-परः (७) गोमा-वाचीसदात्रिक्षुन्ने (८) धीजः सितोमिवाङ्गारिका इति चत्वारि चक्रोपग-तानि आहुः। एतदुक्तं बोध्यं ज्ञेयम् यत् अपसव्यचक्रे विशाखा-रोहिणी-मघा-श्रवणानां प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थचरणाः क्रमेण वृश्चिक-तुला-कन्या-सिंहराशि-सम्बन्धिनो तथा तेषां दशावर्षाणि चापसव्यचक्रादिवाक्यचतुष्टयेन ज्ञेयानि। मृग-शिरः-पूर्वफल्गुनी-अनुराधा-धनिष्ठानां यावन्ति दशामानानि तावन्त्येव आर्द्रा-उत्तरफल्गुनी-ज्येष्ठा-शतभिषानक्षत्राणां दशामानानि भवन्ति। तेषु इदमित्थं भेदः यत् मृगशिरः-पूर्वफल्गुनी-अनुराधा-धनिष्ठानां प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थचरणाः क्रमेण कर्क-मिथुन-वृष-मेषसम्बन्धिनः तथा आर्द्रा-उत्तरफल्गुनी-ज्येष्ठा-शतभिषजां प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चतुर्थचरणाः क्रमेण मीन-कुम्भ-मकर-धनुः-सम्बन्धिनो भवन्तीति॥ १०२-१०४॥

हिन्दी — अश्विनी-कृत्तिका, पुनर्वसु-श्लेषा, हस्त-रेवती, मूल-पूर्वाभाद्र, उत्तराभाद्र-स्वाती नक्षत्रों के प्रथमादि चरणों में आचार्यों द्वारा कथित सव्यवाक्य के अनुसार चक्रदशा का क्रम होता है॥ १०२॥

पूर्वाचार्यों ने नक्षत्र के प्रत्येक चरण में राशियों के चक्रदशाक्रम को निर्धारित करने वाले आठसूत्र सव्यनक्षत्र और आठसूत्र अपसव्यनक्षत्रों के लिए दिये हैं। इनके

अर्थ कटपयादि व्यवस्था के अनुसार समझना चाहिए। इनमें दो वर्ण क्ष और त्र का विशेष समावेश है जिनकी चर्चा कटपयादि व्यवस्था में नही है। क्ष = ११ और त्र = १२ होते हैं। सव्य चक्र के आठ सूत्र—

अश्वि.-कृ.-पुन.-श्ले.-हस्त-स्वा-मू-उ.षा.-पू.भा.-रेव.—इन १० नक्षत्रों और चारों चरणों प्रथम सूत्र—'पौरङ्गावोमातासहोधी' के अनुसार पौ=१, रं=२, गा=३, वो=४, मा=५, ता=६, स=७, हो=८, धी=९ होते हैं। इनमें अङ्क राशियों की संख्याएँ हैं; जैसे १=मेष, २=वृष आदि।

दूसरा सूत्र—'नक्षत्रदासीचर्वणगः' अर्थात् न=१०, क्ष=११, त्र=१२, दा=८, सी=७, च=६, र्व-४, ण=५, ग=३।

तृतीय सूत्र—'रूपोत्रक्षुर्निधायरङ्गम्' अर्थात् रू=२, पो=१, त्र=१२, क्षु=११, नि=१०, धा=९, य=१, रं=२, ग=३।

चतुर्थ सूत्र—'वाणी चस्थन्दधिनक्षत्रम्' अर्थात् वा=४, णी=५, च=६, स्थं=७, द=८, धि=९, न=१०, क्ष=११, त्रं=१२।

भर.-पुष्य-चित्रा, पूर्वाषाढ़ उत्तराभाद्रपद, भरणी—इन पाँच नक्षत्रों के चारों चरणों के लिए आचार्यों ने सव्य-चक्र के ५ से ८ तक के चार सूत्र—

पाँचवाँ सूत्र—हंसश्चवशाम्बरपत्रं अर्थात् हं=८, स=७, श्र=६, ब=४, शां=५, व=३, र=२, प=१, त्रं=१२।

छठा सूत्र—क्षुन्नाधीकरगोभीमाच अर्थात् क्षु=११, न्ना=१०, धी=९, क=१, र=२, गो=३, भी=४ मा=५, च=६।

सातवाँ सूत्र—सुदधिनक्षत्रजसितः अर्थात् सु=७, द=८, धि=९, न=१०, क्ष-११, त्र-१२, ज=८, सि-=८, त=६।

आठवाँ सूत्र—वामाङ्गारकोत्रक्षुर्निधिः अर्थात् वा=४, मां=५, गा=३, र=२, को=१, त्र=१२, क्षु=११, र्नि=१०, धि=९।

इन चार सूत्रों के अनुसार सव्य चक्र के कथित चित्रादि ५ नक्षत्रों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ चरणों में राशियों का दशाक्रम होता है॥ १०३-१०४॥

जलेशमित्रेन्द्रमृगश्रविष्ठा भगार्यमाशङ्करतारकाणाम्।
अन्त्यानि वाक्यान्यपसव्यजानि चत्वारि चक्रोपगतानि चाहुः॥ १०५॥

संस्कृत — उपरोक्ताष्टभिर्वाक्यैः सव्यचक्रे प्रतिराशिं नव नवान्तर्दशा कथिताः। मेषादि द्वादशराशीनां मध्ये प्रथमे चत्वारो अन्त्ये च चत्वारो राशयः समानमानसूचका सन्ति, अष्टानां राशीनां प्रथमचत्वारि वाक्यानि दशा-सूचकानि, तथा मध्यवर्तिनो ये चत्वारो राशयस्तेषामपरचत्वारि वाक्यानि दशा-सूचकानि सन्ति। राशीनां दशाः पूर्वोक्तसव्यापसव्य चक्रगतनक्षत्राणां चरणवशेन जायन्ते। अत्र अष्टस्वपि वाक्येषु वर्णपरत्वेन राशीनामङ्का अवगन्तव्याः

''कादिर्नवाङ्काः नवटादिरङ्काः'' इत्यादि—वाक्येन। तेन पौ=१, रं=२, गा=३, वो=४, मा=५, ता=६, स=७, हो=८, धी=९, इति प्रथमे (मेषे) राशौ सव्यचक्रे नवराशीनामन्तर्दशा भवति। एतेषामधिपादशान्तर्दशाधिपाः, मं., शु., बु., चं., सू., बु., शु., मं, वृ., भवन्ति। एषां दशावर्षाणि अग्रे वक्ष्यन्ते। स्पष्टार्थ दशाचक्रं-विलोकनीयम्॥ १०५॥

हिन्दी — जलेश=शतभिष, मित्र=अनुराधा, इन्द्र=ज्येष्ठा, मृग=मृगशिर, श्रविष्ठा=धनिष्ठा, भग=पूर्वाफाल्गुनी, अर्यमा=उत्तराफाल्गुनी तथा शङ्कर=आर्द्रा नक्षत्रों के लिए पूर्वाचार्यों ने अपसव्य चक्र के शेष चार सूत्र कहे हैं।

हिन्दी — अपसव्य च्रक के आठ सूत्र—

अपसव्यचक्र में विशाखा, रोहिणी, मघा और श्रवण नक्षत्रों के चारों चरणों के लिए क्रमशः चार सूत्र हैं।

प्रथम सूत्र—धनक्षेत्रपराङ्गमिव = ध-९, न-१०, क्ष-११, त्र-१२, प-१, रां-२, ग-३, मि-५, व-४ वृश्चिक,

द्वितीय सूत्र—तासादत्रक्षुनिधिर्दासा = ता-६, सा-७, द-८, त्र-१२, क्षु-११, र्नि-१०, धि-९, र्दा-८, सा-७ तुला,

तृतीय सूत्र—चर्मीभोगीरायधनर्क्षम् = च=६, र्मी-५, भो-४, गी-३, रा-२, य-१, ध-९, न-१०, र्क्ष-११ कन्या,

चतुर्थ सूत्र— त्रयोरागीमाभेतासह = त्र-१२, यो-१, रा-२, गी-३, मा-५, भे-४, ता-६, स-७, ह-८ सिंह,

अपसव्य वर्ग के मृग.-आर्द्रा-पू.फा.-उ.फा.-अनु.-ज्ये.-धनि.-शत.—इन ८ नक्षत्रों के चरणों के लिए ५ से ८ तक के ४ सूत्र।

पञ्चम सूत्र—त्रक्षुर्निधिर्दासस्तमेव = त्र-१२, क्षु-११, र्नि-१०, धि-९, र्दा-८, स-७, स्त-६, मे-५, व-४ कर्क,

षष्ठ सूत्र—गिरायुधनक्षत्रपरः = गि-३, रा-२, यु-१, ध-९, न-१०, क्ष-११, त्र-१२, प-१, रः-२ मिथुनम्,

सप्तम सूत्र—गोमावाचीसदात्रिक्षुन्ने = गो-३, मा-५, वा-४, ची-६, स-७, दा-८, त्रि-१२, क्षु-११, न्ने-१० वृषः,

अष्टम सूत्र—धीजः सितोमिवाङ्गारिका = धि-९, ज-८, सि-७, तो-६, मि-५, वां-४, गा-३, रि-२ का-१ मेषः॥ १०५॥

चक्रदशा वर्षमान—

भूतैकविंशद्गिरयो नवदिक्शोडशाब्धयः।
सूर्यादीनां क्रमादब्दा राशीनां स्वामिनो वशात्॥ १०६॥

संस्कृत — भूतैकेति। राशीनां स्वामिनो वशात् सूर्यादिग्रहाणां

क्रमशः भूतैकविंशद्गिरयो नवदिक्षोडशाब्धयः=५, २१, ७, ९, १०, १६, ४ अब्दाः=वर्षाणि भवन्ति। अत्र राशीनां स्वामिनो वशादित्यनेन वचनेन यो ग्रहो यस्य राशेः स्वामी तस्य राशेरपि ग्रहोक्तवर्षाणि दशावर्षमानानि भवन्ति। यथा सिंहे सूर्यस्य=५ वर्षाणि, मिथुनकन्ययोः बुधस्य=९ वर्षाणि, धनुर्मीनयोः गुरोः= १० वर्षाणि, वृषतुलयोः शुक्रस्यः=१६ वर्षाणि, मकरकुम्भयोः शनैश्चरस्य=४ वर्षाणि कालचक्रदशा-मानानि सन्ति॥ १०६॥

हिन्दी — सूर्यादि ग्रहों के क्रमशः ५, २१, ७, ९, १०, १६ और ४ दशावर्ष होते हैं। अर्थात् सूर्य=५, चन्द्र=२१, भौम=७, बुध=९, गुरु=१०, शुक्र=१६, शनि=४। अपने-अपने स्वामियों के अनुसार राशियों की दशाएँ होती हैं॥ १०६॥

अन्तर्दशा विचार—

दशां दशाब्दैः सङ्गुण्य सर्वायुःसंख्यया हरेत्।
लब्धमन्तर्द्दशा ज्ञेया वर्षमासदिनादिकाः॥ १०७॥

संस्कृत — दशामिति। एकैकस्य दशायां प्रत्येकस्य राशेरन्तर्द्दशा भवति। तस्यानयनविधिः एकस्य दशावर्षमानं अन्यस्य दशाब्दैः सङ्गुण्येत्। तद्गुणनफलं सर्वायुःसङ्ख्ययाहरेत्=यद्राशिसम्बन्धिदशायामन्तर्दशा साध्यते तद्राशौ यत्पूर्णायुर्मानं तेन भजेदिति। लब्धं वर्षमासदिनादिका अर्न्तदशाभवति। यथा कस्यचिज्जन्म पूर्वाभाद्र नक्षत्रस्य चतुर्थचरणे वर्त्तते, तदा तस्य सव्यचक्रे कर्कसम्बन्धिदशायां जन्मेति तत्र पूर्णायुर्मानं=८६। तत्र यदि मीनराशेः दशायां कुंभराशेरन्तर्द्दशाऽपेक्ष्यते तदा मीनगुरुदशामानेना (१०) नेन कुंभशनिदशा (४) गुणिता जाता-४०, एतत्सर्वायुःसङ्ख्या ८६ भक्तेतिजातं गुरुदशायां शन्यन्तर्द्दशामासादि ०।५।१७।२६। एवं सर्वत्र बोध्यम्॥ १०७॥

हिन्दी — कालचक्रदशा में ग्रहों की नहीं अपितु राशियों की दशाएँ होती हैं। ग्रहों की जो दशाएँ ऊपर में कही गयी हैं वही दशा उनकी राशियों की भी समझनी चाहिए। जैसे सूर्य=सिंह की दशा ५ वर्ष, चन्द्रमा=कर्क की दशा २१ वर्ष, मङ्गल=मेष व वृश्चिक की दशा ७ वर्ष आदि। (परिशिष्ट में देखें)

कालचक्रदशासाधन—कालचक्रदशा नक्षत्रप्रधान होती है और नक्षत्र ही चन्द्रमा का आधार होता है अतः कालचक्रदशा का आधार जन्मकालिक चन्द्रमा ही होता है। जन्मकालिक चन्द्रमा को कलादि बनाकर मध्यम नक्षत्रमान ८०० से भाग देने पर लब्धिगत नक्षत्र और शेष वर्तमान नक्षत्र की गत कलादि होती है।

नक्षत्र का एक चरण २०० कला का होता है (८००-४=२००)। इसलिए वर्तमाननक्षत्र की गतकला में २०० का भाग देने पर लब्धि नक्षत्र के गत चरण की संख्या और शेष वर्तमान नक्षत्रचरण का गत भाग होता है। अब इस गत नक्षत्रचरण के

गतभाग को २०० कला में घटाने पर शेष चरण का भोग्यकलादि होता है। यह भोग्यकलादि कितने समय में व्यतीत होगी इसके लिए अनुपात—

यदि नक्षत्र के एक चरण की दशा निर्धारित वर्षों (मेषगो यम कुलीरादि श्लो. १२) में गत तो भोग्यचरण की भोग्यादि कला कितने समय में, इस त्रैराशिक द्वारा वर्तमान चरण का भोग्यकाल आ जाता है।

नक्षत्रचरण के भोग्यकला=भोग्यकलादि×चरण दशावर्ष ÷ २००=वर्षादि काल।

दशानयन की विधि सूत्ररूप में इसप्रकार होगी—

१. जन्मकालिक कलादि चन्द्रभोग ÷ ८००=लब्धिगत नक्षत्र संख्या, शेष वर्तमाननक्षत्र के कलादि।

२. वर्तमाननक्षत्र के भुक्तकलदि ÷ २००=लब्धि भुक्त चरणसंख्या, शेष वर्तमानचरण के भुक्त कलादि।

३. २००—वर्तमाननक्षत्र चरण की भुक्तकलादि=वर्तमान नक्षत्रचरण की भोग्यकलादि।

कालचक्र दशासाधन—

कालचक्र दशा वस्तुतः नक्षत्रदशा है। चन्द्र से ही नक्षत्र होता है। अतः जन्मकालिक स्पष्टचन्द्र ही इसदशा का आधार होता है। इस दशा के आनयन में चार मुख्य विषय होते हैं—

(क) चन्द्र के राश्यादि भोग द्वारा जन्मकालिक नक्षत्र का ज्ञान।

(ख) जन्मकालिक नक्षत्र के चरण और वर्तमानचरण के भुक्तकलादि का ज्ञान।

(ग) वर्तमान नक्षत्रचरण के भुक्तकलादि से भुक्तदशा का ज्ञान।

(घ) दशा के भुक्तवर्षादि से भोग्य वर्षादि का ज्ञान।

५ मई २००३ को मृग भयात् ३३।८ का जन्मकालिक चन्द्र २।०°।९'।२१'' है।

राश्यादि २।०।९।२१=अंशादि ६०°।९'।२१'' = कलादि ३६०९।२१

(१) एक नक्षत्र का मान ८०० कला होता है तथा २०० कला का एकचरण होता है। नक्षत्रमान ८०० कला से चन्द्रमा के कलादि भोग में भाग दिया। ३६०९।२१ ÷ ८००=लब्धि चौथानक्षत्र रोहिणी गत हो चुकने पर वर्तमान मृगशिरा नक्षत्र के शेष ४०९।२१ तुल्य भाग जन्मसमय तक भुक्त हो चुका है।

(२) मृगशिरा के गत कलादि ४०९।२१ में चरणमान २०० कला से भाग देने पर लब्धि २ मृगशिरा के गतचरण और ९'।२१'' तृतीय चरण का भुक्त हुआ।

(३) इस मृगशिरानक्षत्र के तृतीयचरण के भुक्त को उसके सम्पूर्ण दशावर्ष

८५ से गुणाकर चरणमान २०० के भाग देने पर मृगशिरा के तृतीयचरण का भुक्त ९'।२१'' मृगशिरा के तृतीयचरण की सम्पूर्ण दशा ८५ वर्ष (अपसव्य चक्र में देखें)।

अतः ९'।२१''×८५ ÷ २००

= ३ वर्ष ११ माह २१ दिन।

मृगशिरा के तीसरेचरण में अपसव्य सूत्रों में ७वाँ सूत्र गो-मा-वा-ची के अनुसार इसकी दशा मिथुन से प्रारम्भ होगी। चन्द्र भी मिथुन के १ नवांश में है जिसकी दशा ९ वर्ष होती है। अतः मिथुन की दशा में ३ वर्ष ११ माह २१ दिन भुक्त होने पर जातक का जन्म हुआ है। इसलिए मिथुन के सम्पूर्ण वर्षादि ९।०।०-३।११।२१=५।००।९=भोग्यवर्षादि। जन्मकाल में मिथुन की ९ वर्षीय महादशा थी जिसका ३ वर्ष ११ माह २१ दिन जन्म से पूर्व गत हो चुका था तथा ५ वर्ष और ९ दिन मिथुन की दशा का शेष था। अब महादशा चक्र इस तरह होगा—

नक्षत्र चरण विकला × परमायु × ३६० ÷ १२००० = भुक्तदशा दिन

(५६१×८५×३६० ÷ १२००० = १४३१ दिन अर्थात् ३-११-२१)

मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	राशि
५	५	२१	९	१६	७	१०	४	४	वर्ष
०	–	–	–	–	–	–	–	–	मास
९	–	–	–	–	–	–	–	–	दिन
२००३	२००८	२०१३	२०३४	२०४३	२०५९	२०६६	२०७६	२०८०	२०८४
५-५	१४-५	१४-५	१४-५	१४-५	१४-५	१४-५	१४-५	१४-५	१४-५

चक्रेशाब्दाभुक्तिराशीश्वराब्दै-
र्हत्वा तत्तद्राशिमानायुरात्ताः।
अब्दा मासा वासरा नाडिकाद्या
दुःस्थानेशा दुःखरोगाकराः स्युः॥ १०८॥

इत्थं महादायदिनं महाब्दैः सङ्गुण्य तत्रान्तरदास्तु दाये।
पुनस्तदा तत् परमायुरब्दहृतं दशास्वन्तरगादशा स्यात्॥ १०९॥
विनाडीकृत्य नक्षत्रं स्वैः स्वैः संवत्सरैः पृथक्।
दायैः सङ्गुण्य सर्वायुरात्तं सूक्ष्मदशाफलम्॥ ११०॥

ग्रहवत्सरवासराहताः परमायुष्यसमा मित ध्रुवैः।
निजवर्षगुणाः स्वपाकदा इति पाकेष्वखिलेषु चिन्तयेत्॥ १११॥

इति श्रीनवग्रहकृपया वैद्यनाथविरचिते जातकपारिजाते सप्तदशो
कालचक्रदशाध्यायः॥ १७॥

संस्कृत — स्पष्टार्था एते श्लोकाः॥ १०८-१११॥

**''प्रज्ञावर्द्धिनी'' संस्कृतटीकायां जातकपरिजातस्य
कालचक्रदशाध्यायः सप्तदशः॥**

हिन्दी — दशापति (चक्रेश) के वर्ष को अर्न्दशापति के वर्ष से गुणाकर गुणनफल में दशेश से सम्बन्धित नवांश से भाग देने पर वर्ष-मास-दिनादि भुक्त होता है। दुष्टस्थान के स्वामी की अन्तर्दशा में दुख और रोग होते हैं॥ १०८॥

दशापति एवं अन्तर्दशापति के दशावर्षों को परस्पर गुणाकर नक्षत्रचरण की परमायु से भाग देने पर लब्धि अन्तर्दशा के भोग वर्ष होते हैं॥ १०९॥

पलात्मक नक्षत्र के चरणमान को स्व-स्व दशावर्ष से गुणाकर उसनक्षत्र चरण की परमायु से भाग देने पर सूक्ष्मदशा मध्यममान से स्थूल होती है॥ ११०॥

ग्रह की महादशा में अभीष्टग्रह की अन्तर्दशाज्ञान हेतु उसग्रह की दशा वर्ष में नक्षत्रचरण की परमायु वर्ष से भाग देकर लब्धि में अभीष्टग्रह की दशावर्ष से गुणा करने पर उसग्रह की वर्षादि अन्तर्दशा होती है, इस विधि द्वारा सभी ग्रहों की अन्तर्दशा का साधन करना चाहिए॥ १११॥

**सत्येन्द्रमिश्र कृत ''प्रज्ञावर्द्धिनी'' हिन्दीटीका में जातकपारिजात का
कालचक्रदशाध्याय सप्तदश समाप्त॥**

* * *

दशाफलाध्याय:—१८

दशाफल—

दशानुसारेण फलं वदन्ति मुनीश्वरा जातशुभाशुभं यत्।
सारं समुद्धृत्य तथैव वक्ष्ये भेदं यथाविस्तरतो दशायाम्॥ १॥
बलानुसारेण यथा हि योगो योगानुसारेण दशामुपैति।
दशाफलैः सर्वफलं नराणां वर्णानुसारेण यथा विभागः॥ २॥

संस्कृत — श्लोकौ सरलार्थौ। तत्र जातस्य नरस्य सर्वं शुभाशुभं ग्रहाणां दशान्तर्दशाकाले परिणमन्तीति दशाफलविचार एवाभिहितः। शुभाशुभ ग्रहाणां दशाफलैरेव नराणां सर्वफलं सम्पत्स्यत इति दशाफलान्यत्र-विविच्यन्ते॥ १-२॥

हिन्दी — महर्षि लोग जातक का शुभाशुभफल दशा के अनुसार कहते हैं अर्थात् किससमय प्राणी को शुभफल प्राप्त होगा कब अशुभफल यह दशा पर निर्भर है, इसलिए समस्त सार को एकत्र करके इस अध्याय में कहता हूँ॥ १॥

ग्रहबल के अनुसार जिसतरह योग होते हैं, उसीतरह योग के अनुसार शुभाशुभ दशाफल होता है। वर्ण (जाति) विभाग के अनुसार मनुष्यों के जीवन में दशाजन्य सबफल प्राप्त होते हैं॥ २॥

विंशोत्तरी महादशा—

आदित्यचन्द्रकुजराहुसुरेशमन्त्रि-
मन्दज्ञकेतुभृगुजा नव कृत्तिकाद्याः।
तेनो-नयः सित-दया-तट-धन्य-सेव्य
सेना-नरा दिनकरादिदशाब्दसंख्याः॥ ३॥

संस्कृत — आदित्येति। कृत्तिकाद्याः=कृत्तिकानक्षत्रमादिर्येषां ते, आदित्य-चन्द्र-कुज-राहु-सुरेशमन्त्रि-मन्द-ज्ञ-केतु-भृगुजाः अर्थात् सूर्य-चन्द्र-मङ्गल-राहु-गुरु-शनि-बुध-केतु-शुक्रः क्रमशः दशापतयः भवन्ति। एवं सप्तविंशति नक्षत्रचक्रे (विंशोत्तरीदशाया) वारत्रयं दशापतयोऽर्थात् कृत्तिकोत्तर-फल्गुन्युत्तराषाढेषु सूर्यः, रोहिणीहस्तश्रवणासु चन्द्रः, मृगशिरश्चित्रा-धनिष्ठासु भौमः, आर्द्रास्वातीशततारासु राहुः, पुनर्वसु-विशाखा-पूर्वभाद्रपदेषु गुरुः, पुष्यानुराधोत्तरभाद्रपदेषु शनिः, श्लेषा-ज्येष्ठा-रेवतीषु बुधः, मघा-मूलाश्विनीषु केतुः, पूर्व फल्गुनीपूर्वाषाढ-भरणीषु शुक्रो दशापतिर्भवति। एतेषां दशा-वर्षाण्याह—तेनोनय इत्यादयः। अत्र कटपयवर्गभवैवर्णवशेनाङ्का कथनीयाः

यथा। सूर्यस्य तेनः=६ वर्षाणि, चन्द्रस्य नयः=१०, भौमस्य सिन=०७, राहोः दया=१८, गुरोः तट=१६, शनेः धन्य=१९, बुधस्य सेव्य=१७, केतो सेना=०७, शुक्रस्य नरा=२० दशावर्षमानं भवति। सर्वेषां ग्रहाणां दशायोगः ६+१०+७+१८+१६+१९+१७+७+२०=१२० विंशोत्तरशतवर्षमिति विंशोत्तरीति दशा संज्ञा भवति ॥ ३ ॥

हिन्दी — विंशोतरी में नौ ग्रहों की दशायें होती हैं। कृत्तिका-उ. फाल्गुनी और उ. षाढ़ में जो जन्म लेता है उसे **सूर्य** की दशा ६ वर्ष की, रोहिणी-हस्त-श्रवण में **चन्द्रमा** की दशा १० वर्ष की, मृगशिर-चित्रा-धनिष्ठा में **भौम** की दशा ७ वर्ष की, आर्द्रा-स्वाती-शतभिषा में **राहु** की दशा १८ वर्ष की, पुन-विशा-पू.भा. में **गुरु** की दशा १६ वर्ष की, पुष्य-अनुराधा-उ. भाद्र में **शनि** की दशा १९ वर्ष की, आश्लेषा-ज्येष्ठा-रेवती में **बुध** की दशा १७ वर्ष की, अश्विनी-मघा-मूल में **केतु** की दशा ७ वर्ष की और भरणी-पूर्वाफाल्गुनी-पू. षाढ़ में **शुक्र** की दशा २० वर्षों की होती है ॥ ३ ॥

दशापति के शुभाशुभत्व—

आरोहवीर्याधिकभावतुल्यबिन्द्वाधिकाः कर्मभवोदयस्थाः।
तुङ्गादिवर्गोपगता नभोगाः षड्वीर्यवन्तश्च शुभप्रदाः स्युः ॥ ४ ॥
मान्दिराशिपतिमान्दिभावगाः स्वल्पबिन्दुरिपुनीचमूढगाः।
पापखेटयुतभावसंधिगा राशिसन्धिलवगास्त्वनिष्टदाः ॥ ५ ॥
दशापतिर्लग्नगतो यदि स्यात् त्रिषड्दशैकादशगश्च लग्नात्।
तत्सप्तवर्गोऽप्यथ तत्सुहृद्वा लग्ने शुभो वा शुभदा दशा स्यात् ॥ ६ ॥
दशाधिनाथस्य सुहृद्गृहस्थस्तदुच्चगो वाऽथ दशाधिनाथात्।
स्मरत्रिकोणोपचयोपगश्च ददाति चन्द्रः खलु तत्फलानि ॥ ७ ॥
उक्तेषु राशिषु गतस्य विधोः स भावः
स्याज्जन्मकालभवमूर्तिधनादिभावः।
तत्तत्प्रवृद्धिकृदसौ कथितो नराणां
तद्भावहानिकृदथेतरराशिसंस्थः ॥ ८ ॥
दशाप्रवेशे स्वगृहादिसंस्थे हिमद्युतौ यत्फलमुक्तमार्यैः।
तद्वाच्यमिन्दुर्हि शुभाशुभाख्यं फलं मनोरूपतया ददाति ॥ ९ ॥
उत्पादितं हि द्युचरस्य पूर्वं शुभादिकं कष्टफलं हि यत्तत्।
तेनानुसारेण दशासु कल्प्यं शरीरभाजामशुभं शुभं वा ॥ १० ॥
इष्टोत्कटत्वे हि शुभानि पुंसां फलान्यनिष्टान्यशुभोत्कटत्वे।
साम्ये तु मिश्राणि फलानि नूनं सर्वत्र चैवं परिकल्पनीयम् ॥ ११ ॥

संस्कृत — आरोहेत्यादिभिः। ये नभोगाः=ग्रहाः आरोहवीर्याधिकाः,

भावतुल्याः, विन्द्वधिकाः (अष्टकवर्गेऽधिकशुभचिन्हयुक्ता) कर्मभवोदयस्थाः= दशमैकादशप्रथमस्थानगताः, तुङ्गादि वर्गोपगताः, षड्वीर्यवन्तश्च (स्वकीय षड्बलयुक्ताश्च) भवन्ति ते स्व स्वदशाकाले शुभप्रदाः स्युः। ये ग्रहाः मान्दि-राशि-पतयः=गुलिकाधिष्ठितराशीशाः, मान्दिर्यत्र भवेत् तद्भावगताः, अष्टकवर्गे स्वल्पबिन्दुयुक्ता, शत्रुराशिगताः, नीचराशिगताः, अस्तङ्गताः, पापग्रहयुताः, भावसन्धिगताः, ऋक्षसन्धिगता वा भवन्ति ते ग्रहा अनिष्ट-फलदायका भवन्ति। दशापतिः=यस्य ग्रहस्य दशाफलं विचार्यते स ग्रहः यदि लग्नगतः=लग्नवर्त्ती स्यात्, अथवा लग्नात् त्रिषड्दशैकादशगः स्यात्, अथ तत्सप्तवर्गः=तस्य दशापतेः सप्तवर्गः वा तत्सुहृत्=तस्य दशापतेः: मित्रग्रहः वा शुभः=शुभग्रहो लग्नगतो भवेत् तदा सा दशा शुभदा स्यादिति भावः।

अथ चन्द्रः, दशाधिनाथस्य=वर्तमानदशापतेः सुहृद्गृहस्थः=मित्रराशि-गतः, वा तदुच्चगः दशापतेरूच्चराशिगतः, वा दशाधिनाथात्, स्मरत्रिकोणोपच-योपगश्च=सप्तम-नवम-पञ्चम-त्रिषडेकादश-दशमभावगतो भवेत् तदा खलु सत्फलानि=शुभफलानि ददाति।

उपरोक्तेषु, 'दशाधिनाथस्यादि' राशिषु गतस्य विधोः=चन्द्रस्य जन्म-कालभवमूर्त्तिधनादिभावः=जन्मकालजायमानलग्नधनादिद्वादशान्यतमो भावः, अर्थात् सभावः=भावेन (स्वस्वभाव फलेन) सहितः सफलो भवति। उक्त-राशिगतश्चन्द्रः, तत्तत्प्रवृद्धिकृत्=तत्तद्भावस्य वृद्धिकरो भवति। असौ चन्द्रो यदीतरराशिसंस्थः=उक्तेभ्यो राशिभ्यो यदाऽन्यराशिगतो भवेत्तदा नराणां तद्भाव-हानिकृद्भवति, अर्थात् तथाभूतश्चन्द्रो यद्भावगतो भवति तद्भावस्य हानिरेव कथितः।

जन्मसमये स्वगृहादिसंस्थे=स्वगृहे-उच्चे-मूलत्रिकोणस्ववर्गोपगते, हिमद्युतौ=चन्द्रमसि यत्फलमार्यैः पूर्वाचार्यैरूक्तं, तच्छुभाशुभाख्यं फलं दशाप्रवेशे=स्वकीयमहादशारम्भे इन्दु=चन्द्रो हि=निश्चयेन मनोरूपतया= पूर्णभावेन फलं ददाति। अत्र चन्द्रवत् सर्वेषां ग्रहाणामेवैष नियमोज्ञेयः। शेषाः स्पष्टार्थासरलार्थाश्च॥ ४-११॥

हिन्दी — जो ग्रह अपने परमनीच से उच्च की ओर जाता है वह आरोही कहलाता है तथा जो ग्रह परमउच्च से नीच की ओर जाता है वह अवरोही कहलाता है।

भाव के मध्य में ग्रह विशेष फल देते हैं तथा जो ग्रह मध्य से दूर हों वे न्यून फल देते हैं। जो ग्रह अपने अष्टकवर्ग में जहाँ वह बैठा हो वहाँ अधिक बिन्दु मिले तो

अच्छा, यदि कम बिन्दु मिले तो वह अशुभ होता है। जो ग्रह लग्न से दशम-एकादश में स्थित हों वे शुभफल देते हैं। जो ग्रह अपने उच्च-स्व या मित्र के वर्ग में रहें वे अच्छा फल देते हैं। अपने षड्बल से युक्त बली ग्रह शुभ फल देता है ॥ ४॥

निम्नलिखित ग्रह अशुभ फल देते हैं—

१. मान्दिराशिस्वामी अर्थात् जिसभाव में मान्दि या गुलिक पड़े उसराशि का स्वामी। २. मान्दि के साथ जो ग्रह पड़ा हो वह ३. अष्टकवर्ग में जिसे कम बिन्दु हों अर्थात् जिसराशि में ग्रह हो उसके अष्टक वर्ग में कम बिन्दु पड़े हों, ४. जो शत्रुगृह में हो, ५. जो अपनी नीचराशि में हो, ६. सूर्य सान्निध्य से अस्त हो, ७. पापग्रह के साथ हो, ८. भाव सन्धि में हो, ९. राशिसन्धि में हो अर्थात् एक राशि के अन्त और दूसरे के प्रारम्भ में ॥ ५ ॥

जब किसीग्रह की दशा प्रारम्भ हो उससमय का लग्न निकालना चाहिए। परन्तु यह प्रायः उपयोग में निरर्थक होता है क्योंकि दशाप्रवेश के समय लग्न व चन्द्रमा प्रायः अशुद्ध होता है; जैसे जन्मकाल में दो मिनट का अन्तर होने से यदि गुरु की दशा में जन्म हुआ हो ८ दिन का अन्तर पड़ जायेगा। यदि चन्द्र की दशा में जन्म हुआ हो तो चन्द्रदशा में ५ दिन का अन्तर पड़ेगा। ऐसे में दशाप्रवेशकाल का लग्न, चन्द्रमा आदि निकलना व्यर्थ कार्य है।

दशानाथ यदि जन्मलग्न में हो अथवा लग्नेश यदि तृतीय-छठे-दशवें या ग्यारहवें में हो और लग्न दशानाथ के सप्तवर्ग में हो तो दशा अच्छी होती है। यदि लग्न दशानाथ के मित्रगृह में हो और लग्न का सप्तवर्ग दशानाथ के मित्रगृह में या शुभग्रह के वर्ग में हो तो दशा शुभ होती है ॥ ६ ॥

दशापति के उच्चस्थान में या मित्रगृह में या दशेश से सप्तम, त्रिकोण में (५,९) या उपचय में (३,६,१०,११) चन्द्रमा हो तो वह दशा शुभफलदायक होती है ॥ ७ ॥

उपरोक्त राशियों में यदि चन्द्रमा हो और वह भावलग्न से धन-चतुर्थ-पञ्चम आदि भावों में हो तो उसभाव की वृद्धि होती है तथा यदि चन्द्रमा अनिष्टभाव में हो तो उसभाव की हानि होती है ॥ ८ ॥

दशाप्रारम्भ के समय चन्द्र के स्वगृह आदि में होने पर प्राचीन ऋषियों ने जो कहा है वह शुभ या अशुभ फल अवश्य होता है; क्योंकि चन्द्रमा मन है और उसके अच्छा होने से मन को बल मिलता है ॥ ९ ॥

ग्रहों के जो शुभ और अशुभ फल हैं उसी के अनुसार उनकी दशा में भी शुभ या अशुभ फल होता है। यहाँ शुभफल को इष्ट और अशुभफल को कष्ट कहा गया है। इष्ट और कष्ट साधनविधि केशवीय जातकपद्धति (श्लो. १३) में है ॥ १० ॥

इष्टफल अधिक होने से मनुष्यों को शुभफल अधिक अर्थात् अच्छा अधिक

होता है, यदि कष्टफल अधिक हो तो अनिष्ट अधिक होता है। यदि दोनों (इष्ट-कष्ट) में साम्य हो तो मिश्रफल होता है। सब यह विचारकर फलादेश करना चाहिए॥ ११॥

संज्ञाध्याये यस्य यद्द्रव्यमुक्तं
कर्माजीवे यस्य यच्चोपदिष्टम्।
भावस्थानां लोकयोगोद्भवं च
तत्तत्सर्वं तस्य योज्यं दशायाम्॥ १२॥

संस्कृत — संज्ञाध्याये यस्य ग्रहस्य यद् द्रव्यं (ताम्र-मणीत्यादि) उक्तं, ग्रहस्य कर्माजीवश्च यो उपदिष्टः। भावस्थानालोक योगोद्भवं च=ग्रहस्य यद्भावफलं, स्थानफलं, आलोक (दृष्टि) फलं, योगफलञ्चोक्तं तत्तत्सर्वं फलं तस्य ग्रहस्य दशायां योज्यम्=ज्ञेयम्। शुभदशायां तस्य-तस्य द्रव्यादेः प्राप्तिः अशुभदशायां तत्तद्द्रव्यादे नाशं च भवतीति बोध्यम्॥

यथाफलदीपिकायाम् (२०। २१)—

संज्ञायां यदगाद्दिवाकर विधिश्लोकेषु यज्जल्पितं
कर्माजीव निरूपितं फलमिदं यद्रोगचिन्ताविधौ।
यद्यस्येहक्षणयोगसम्भवफलं भावेशयोगोद्भवं
भावेशैरपि भावगैरपि फलं वाच्यं दशायामिह॥ १२॥

हिन्दी — संज्ञाध्याय में जिसग्रह का जो द्रव्य उक्त है, कर्माजीव अध्याय में जो आजीविका का उल्लेख किया है, ग्रह के किसीभाव में बैठने से जो फल कहा गया है, जो दृष्टिफल कहा गया है और जो योगजन्यफल कहा गया है वह सभीफल उस ग्रह की दशा में समझना चाहिए अर्थात् वे सब फल उसकी दशा में होते हैं॥ १२॥

शुभफलददशायां तादृगेवान्तरात्मा
बहु जनयति पुंसां सौख्यमर्थागमं च।
कथितफलविपाकैस्तर्कयेद्वर्तमानं
परिणमति फलोक्तिः स्वप्नचिन्तां स्ववीर्यैः॥ १३॥

संस्कृत — शुभफलददशायामिति। शुभफलददशायां=शुभानि फलानि ददातीति तस्य दशा=शुभफलददशा तस्यां नराणामन्तरात्मा मुदितः= प्रसन्न एव भवति। दर्शित ग्रहदशाकाले पुंसां=जातानां बहुविधं सौख्यमर्थागमञ्च जनयति। शुभदशायां जातानामन्तःकरणं सुप्रसन्नमाभासते तथा बहुप्रकारं सौख्यं धनागमश्च भवति। अर्थादशुभदशायां जातानामन्तरात्मा वैरूप्यमुपगतः, विविधं दुखं कष्टं धननाशं च भवति। मिश्रदशायां मिश्रफलञ्चेति बोध्यम्। कथितफलानां विपाकदर्शनादेव वर्त्तमानां शुभामशुभां वा दशां तर्कयेत्=विचारयेत्। यस्य ग्रहस्य

शुभाशुभदशायां यादृक् शुभमशुभं वा फलमुक्तं, वर्त्तमाने तादृक् फलमवलोक्य तद्ग्रहसम्बन्धिनी तथा दशाऽवगन्तव्येति। बलरहितानां ग्रहाणां दशासु न यावदुक्तं फलं भवति। परिणमति फलोक्तिः स्वप्नचिन्तास्ववीर्यैः। अवीर्यैः= बलहीनैः ग्रहैर्यानि शुभा-शुभानि फलानिप्रदीयन्ते तेषां फलोक्तिः=फलप्राप्ति, स्वप्ने=स्वप्नावसरे, चिन्तायां=मनोभिलाषे वा परिणमति=अनुभूयते। यथा राज्य-प्राप्तिफलदो ग्रहो निर्बलो भवेत्तदा स्वप्ने तत्फलप्राप्तिर्वाच्या, अर्थाद् स्वप्नावस्थायां 'अहं राज्यपदारूढोऽस्मि' इत्येवमनुभूयात्। तात्पर्यं यत् तस्य मनोरथस्य इत्थं प्रकारेण पूर्त्तिर्भवतीति॥ १३॥

हिन्दी — शुभ फलदायक दशा में जातक की अन्तरात्मा प्रसन्न होती है तथा अनेक प्रकार के शुभफल होते हैं, बहुत सुख होता है और धन का आगम होता है। यदि अशुभदशा प्रारम्भ हो तो मनुष्य की चित्तवृत्ति खराब होती है उसके मन में शान्ति नहीं रहती है। इसतरह विचार कर वर्तमानदशा समझनी चाहिए। यदि ग्रह बलहीन हो तो फलप्राप्ति स्वप्नावस्था में होती है जाग्रत अवस्था में नहीं॥ १३॥

पाकस्वामिनि लग्नगे सुहृदि वा वर्गेऽस्य सौम्येऽपि वा
प्रारब्धा शुभदा दशा त्रिदशषड्लाभेषु वा पाकपे।
मित्रोच्चोपचयत्रिकोणमदने पाकेश्वरस्य स्थित-
श्चन्द्रः सत्फलबोधनानि कुरुते पापानि चातोऽन्यथा॥ १४॥

संस्कृत — पाकस्वामिनीति। पाकस्य=दशायाः, स्वामी=पाकस्वामी अर्थात् दशापतौ लग्नगे=दशारम्भकालिकलग्नगते सति, वा सुहृदि=पाकेश्वरस्य यन्मित्रं स एव दशारम्भकालिकलग्ने यदि सति तदा प्रारब्धा दशा शुभदा भवति। अथवा पाकेश्वरस्य यो वर्गः (षड्-सप्त-दशवर्गो वा) तस्मिँल्लग्नगते वा कस्मिं-श्चिच्छुभग्रहे लग्नगते सति तदा प्रारब्धा दशा शुभदा भवेदिति। अपि वा पाकपे= दशा स्वामी, लग्नात् त्रिदशषड्लाभे स्थिते तदा शुभदा दशा भवेत्। पाकेश्वरस्य=दशापतेः मित्रराशौ उच्चराशौ उपचयराशिषु (३।६।१०।११) त्रिकोणे (५।९) मदने (७) स्थितश्चन्द्रो भवेत्तदा तत् दशायां सत्फलबोधनानि कुरुते=शुभफलान्युत्पादयतीति। उक्तेभ्योऽन्यथा स्थितश्चन्द्रः पापानि=अशुभ-फलानि कुरूते॥

यथा फलदीपिकायां मन्त्रेश्वरः (२०।३६)—
दशेशस्य तुङ्गे सुहृद्भे दशेशात् त्रिषट्कर्मलाभत्रिकोणास्तभेषु।
यदा चारगत्या समायाति चन्द्रः शुभं संविधत्तेन्यथा चेदरिष्टम्॥ १४॥

हिन्दी — जिसकी महादशा हो वह ग्रह महादशा प्रारम्भ के समय लग्न

(दशारम्भकालिक) में हो या मित्रगृह में हो या सौम्यवर्ग में हो तो महादशा शुभ होती है। यदि महादशेश लग्न से तृतीय-षष्ठ-दशम या एकादश में हो और चन्द्रमा मित्रराशि में, उच्च या त्रिकोण या सप्तम में हो तो दशा शुभ होती है। चन्द्रमा यदि अन्य स्थिति में हो तो दशा अच्छी नहीं होती है॥ १४॥

लग्नादिष्टगृहोपगःस्वभवने तुङ्गे सहृद्भेऽथवा
पाकेशः शुभमित्रवीक्षणयुतस्तत्पाकभुक्तौ शुभम्।
केन्द्रे वा यदि कोणगेऽतिशुभदः पापास्त्रिषष्ठायगा-
स्तुङ्गाद्योपचयेषु ये बलयुतास्तेषां दशायां शुभम्॥ १५॥

संस्कृत — लग्नादिति। पाकेशः=दशेश्वरः दशारम्भे लग्नादिष्टं (अभीष्टं) यद्गृहं तद्गतश्चेत्स्वभवने=स्वराशौ, तुङ्गे=स्वोच्चेऽथवा सुहृद्भे=स्वमित्रगृहे स्थितः सन् शुभग्रहेण, मित्रग्रहेण वा वीक्षितो युतो वा भवेत्तदा तत्पाकभुक्तौ=तद्दशाभोग समये नराणां तद्भावसम्बन्धि शुभं फलं वाच्यम्। दशापतौ यदि केन्द्रे वा कोणगे सति तदा तत् दशाअतिशुभफलदो भवति। पापाः=पापग्रहाः त्रिषष्ठायगाः (३।६।११) स्युस्तथा ये ग्रहा बलयुताः तुङ्गाद्योपचयेषु विद्यमाना भवेयुस्तेषां दशायां नराणां शुभं फलं भवति। अर्थात् पापग्रहास्त्रिषडायेतरस्थानगाः, ये निर्बला ग्रहास्वतुङ्गादिस्थानरहिताश्च भवेयुस्तेषां दशायां अशुभं फलं ज्ञेयम्। यथा फलदीपिकायाम् (२०।३४)—

यद्भावगो गोचरतो विलग्नाद्दशेश्वरः स्वोच्चसुहृद्गृहस्थः।
तद्भावपुष्टिं कुरुते तदानीं बलान्वितश्चेज्जननेऽपि तस्य॥ १५॥

हिन्दी — लग्न से शुभस्थान का दशापति शुभफल देता है। शुभस्थान से तात्पर्य स्वगृह में, उच्च में, मित्रगृह में, शुभग्रह से युत-दृष्ट में, मित्रग्रह से युक्त-दृष्ट में होता है। दशापति से अन्तर्दशापति केन्द्र या त्रिकोण में हो तो अत्यन्त शुभ होता है। पापग्रह तृतीय-षष्ठ-एकादश में हो, उच्चस्थ या उपचय में बलीग्रह हो तो उसकी दशा शुभ होती है॥ १५॥

अन्योन्यमिष्टग्रहयोर्दशायां भुक्तौ शुभं षड्बलशालिनोस्तु।
शत्रुग्रहौ दुर्बलशालिनौ चेत् पाकापहारे तु तयोरनर्थः॥ १६॥

संस्कृत — अन्योन्यमिति। अन्योन्यं=परस्परम्, इष्टग्रहयोः=सुहृद्ग्रहयोः, षड्बलशालिनोः=स्वस्वषड्बलयुतो दशायां=महादशायां भुक्तौ=अन्तर्दशायां च शुभं फलं भवति। अर्थात् यस्य ग्रहस्य दशायां यदीयान्तर्दशा भवति तौ दशान्तर्दशाधिपती अन्योन्यं सुहृतत्वमुपगतौ स्वस्वषड्बलयुतौ च भवेतां तदा तद्दशान्तर्दशाकाले शुभं फलं भवति। यदि तौ परस्परं रिपुग्रहौ दुर्बलशालिनौ च

भवेतां तदा तयोः पाकापहारे=दशान्तर्द्दशाकाले अनर्थः=अशुभं फलं भवतीति बोध्यम्॥

यथा मन्त्रेश्वरः (फलदीपिका २०।३५)—

बलोनितो जन्मनि भावनाथो मौढ्यं स्वनीचं रिपु मन्दिरं वा।
प्राप्तश्च यद्भावमुपैति चारात् तद्भावनाशं कुरुते तदानीम्॥ १६॥

हिन्दी — यदि दशापति और अन्तर्दशापति मित्र हों तथा षड्बल से युक्त हों तो अर्न्तदशा शुभ होती है। यदि दोनों दुर्बल हों और परस्पर शत्रुग्रह हों तो अर्न्दशा कष्टप्रद होती है॥ १६॥

करोति यद्भावगतः स्वपाके तद्भावजन्यं त्वशुभं शुभं वा।
शुभं शुभव्योमचरस्य पाके पापस्य दाये त्वशुभं वदन्ति॥ १७॥

सौम्यान्वितग्रहदशाऽतिशुभप्रदा स्यात्
पापान्वितस्य विफलं परिपाककाले।
मिश्रग्रहेण सहितस्य दशापहारे
मिश्रं फलं भवति मिश्रबलान्वितस्य॥ १८॥

संस्कृत — **करोतीति**। पाकेशः (अन्तर्द्देशः) दशापतेः सकाशात् यद्भावगतो भवेत् तद्भावजन्यम् अशुभं शुभं वा फलं स्वपाके=स्वान्तर्द्दशाकाले करोति। शुभव्योमचरस्य पाके शुभं फलं तथा पापस्य दाये तु अशुभं फलं भवतीति मुनयः वदन्ति=कथयन्ति। शुभदशायाम् शुभान्तरे तद्भावजं फलं शुभतरमेवमशुभस्य दशायां अशुभान्तरेऽशुभतरम् तथा मिश्रे मिश्रं फलमिति बोध्यम्।

यथा फलदीपिकायाम् (२०।२९)—

यद्भावगः पाकपतिर्द्दशेशात् तद्भावजातानि फलानि कुर्यात्।
विपक्षरिष्फाष्टमभावगश्चेत् दुःख विदध्यादितरत्र सौख्यम्॥ १७-१८॥

हिन्दी — दशापति से अन्तर्दशापति जिसभाव में रहता है उसभाव के अनुरूप शुभ या अशुभफल करता है अर्थात् षष्ठ में दशापति हो और अन्तर्दशापति दुर्बल हों तो शत्रुपीड़ा-रोग इत्यादि होता है। दशापति और अन्तर्दशापति छठे, आठवें हों तो शुभग्रह की दशा में शुभफल और अशुभग्रह की दशा में अशुभफल होता है॥ १७॥

शुभग्रह से युक्त ग्रह की दशा में शुभफल तथा पापग्रह से युक्त ग्रह की दशा में अशुभ फल होता है। यदि पाप और शुभ दोनों युक्त हों तो मिश्र फल होता है। मिश्र बलयुक्त ग्रह की दशा में मिश्रफल होता है॥ १८॥

यद्धातुखेटस्य दशापहारे तद्धातुवित्तायतिमाहुरार्याः।
धातुक्षयं पापवियच्चरस्य पाकेऽभिवृद्धिं शुभदस्य धातोः॥ १९॥

संस्कृत — यदिति। यस्य धातोः (मज्जा-स्नायु) यः खेटः=ग्रहस्तस्य दशापहारे तद्धातुवित्तायतिम्=तत्तद्ग्रहसम्बन्धिधातुस्वर्णादि प्राप्ति, आर्याः= मनीषिण आहुः=ऊचु। तत्र तद्धातुग्रहदशायां पापवियच्चरस्य, पाके=अन्तर्द्दशायां धातुक्षयम्, शुभस्य=शुभग्रहस्य पाके तु धातोरभिवृद्धि आर्या आहु इति॥ १९॥

हिन्दी — जिस धातुकारक ग्रह की दशा हो उसमें उसी की प्राप्ति होती है। इसीतरह उसकी अन्तर्दशा में भी उसी धातु की प्राप्ति होती है, यह विद्वानों ने कहा है। पापग्रह यदि लग्न से पापस्थान का स्वामी हो तो उसकी दशा-अन्तर्दशा में उस धातु का क्षय तथा शुभग्रह की दशा में उस धातु की वृद्धि होती है। यहाँ ग्रन्थकार ने धातु शब्द का ही प्रयोग किया है परन्तु ग्रह जिन जिन वस्तुओं का कारक होता है वे सब वस्तुएँ उसके अन्तर्गत लेनी चाहिए। जैसे शुक्र सुगंधित पदार्थ का और शनि रोग विशेष का कारक होता है इसलिए इन इन वस्तुओं की प्राप्ति कहनी चाहिए॥ १९॥

सपत्नखेटोपगतस्य पाके सपत्नवृद्धिं सकलार्थनाशम्।
यत्कर्मकर्तृग्रहपाककाले तत्कर्मसिद्धिं प्रवदन्ति सन्तः॥ २०॥

संस्कृत — सपत्नेति। सपत्नखेटोपगतस्य=वैरिग्रहदशायामुपगतस्य पाके=अन्तर्द्दशाकाले, सपत्नवृद्धिं=शत्रुवृद्धिं सकलार्थनाशं च भवेत्। यत्कर्म-कर्त्तृग्रहपाककाले=यो ग्रहो यस्य कर्मणः कारको भवति तद्ग्रहस्य दशान्तर्दशा भुक्तिकाले तस्य शुभाशुभस्य कर्मणः सिद्धिं सन्तः=विद्वांसः प्रवदन्ति॥ २०॥

हिन्दी — लग्नेश के शत्रुग्रह की दशा हो या अन्तर्दशा हो तो शत्रुवृद्धि और सर्वधन का नाश होता है। जो ग्रह जिसका कारक होता है उसके समय में उससे सम्बन्धित शुभकर्म होते हैं। ग्रह शुभ रहे तब शुभ अन्यथा बलहीन हो तो इससे विपरीत फल समझना चाहिए॥ २०॥

यत्कार्यकारिद्युचरस्य दाये तत्कार्यसिद्धिं प्रवदेन्नराणाम्।
शुभग्रहोऽसौ यदि कार्यसिद्धिं पापस्तु तत्कार्यविनाशमेव॥ २१॥

संस्कृत — यत्कार्यकारीद्युचरस्येत्यस्य श्लोकस्यार्थः स्पष्टमेवेत्यलम्॥ २१॥

हिन्दी — जिसकार्य का जो कारकग्रह होता है वह यदि बलवान् हो तो उसकी दशा में सब कार्य सम्पन्न होते हैं अर्थात् उसग्रह की दशा में उसके कारक सम्बन्धी कार्य पूर्ण होते हैं। जैसे बृहस्पति धर्मकारक है तो बृहस्पति की दशा में धर्म कार्य पूरे होते हैं परन्तु तभी जबकि वह शुभ हो। पापग्रह निर्बल हो और लग्नेश का शत्रु हो तो उसकारक ग्रह से सम्बन्धित कार्य का नाश होता है॥ २१॥

राज्यस्थानपराज्यकारकदशा राजप्रसादप्रदा
देवव्योमचरस्य पाकसमये तद्देवताराधनम्।
धर्माधीशदशागमे सति तपोधर्मादिसिद्धिं वदेत्
कर्मेशस्य दशापहारसमये यज्ञादिकर्मोत्सवम्॥ २२॥

संस्कृत — राज्येति। राज्यस्थानपस्य=दशमेशस्य राज्यकारकस्य ग्रहस्य च दशा राजप्रसादप्रदायको भवति। राजपुत्रश्चेत्तदा तद्दशायां राज्यं लभते, साधारणो राजप्रसादं (राज्ञः प्रसन्नता) प्राप्नोति। देवव्योमचरस्य=तत्तद्देवात्मकस्य (भावेशस्य) ग्रहस्य (२।२०) पाकसमये=दशान्तर्दशाकाले तत्तद्देवताया आराधनं शुभकारकम्। धर्माधीशस्य=नवमेशस्य दशागमे सति तदा तपोधर्मादि-कर्मणां सिद्धिं वदेत्। कर्मेशस्य=दशमेशस्य दशापहारसमये यज्ञादीनां कर्मोत्सवं साफल्यतामुपयातीति॥ २२॥

हिन्दी — दशमेश तथा राज्यकारक ग्रहों की दशा में राज्यप्राप्ति होती है। यदि राजा का पुत्र हो तब राज्यप्राप्ति, नहीं तो पदोन्नति होती है। राज्यप्रद योग ये होते हैं। १. दशमेश नवमेश दशम में हो, २. लग्नेश दशम में हो, ३. नवमेश का दशमेश से सम्बन्ध हो। दशमस्थान के कारक सूर्य-बुध-बृहस्पति और शनि होते हैं। देवव्योमचर अर्थात् पञ्चमेश या नवमेश की दशा हो तो ग्रह (२।२०) सम्बन्धी देवता का आराधन होता है। नवमेश की दशा में तप और धन की वृद्धि होती है तथा दशमेश की दशा में यज्ञ आदि कर्मोत्सव होता है॥ २२॥

सत्त्वादिग्रहपाकभुक्तिसमये तत्तद्गुणो जायते
जन्मर्क्षादिनवर्क्षगग्रहदशा कुर्वीत भूतं फलम्।
कर्मर्क्षादिनवर्क्षगस्य बलिनः पाके भविष्यत्फलं
चाधानादिगतस्य सर्वमफलं पाके फलं वा वदेत्॥ २३॥

संस्कृत — सत्वादीति। सत्वादि ग्रहाणां (२/२६ श्लोको द्रष्टव्यः) पाकभुक्ति समये तत्तद्गुणो जायते (सत्त्वगुणीग्रहदशायां सत्त्वगुणः, रजसि रजो तमसि तमो भवति)। जन्मर्क्षादिनवर्क्षगग्रहदशा=यस्मिन्नक्षत्रे जातस्य जन्मो भवति तज्जन्मर्क्षं तस्मान्नवनक्षत्रगतानां ग्रहाणां दशा भूतं फलमतीतं फलं कुर्वीत्। अर्थात् यो ग्रहो जन्मसमये जन्मनक्षत्रादिनक्षत्रनवकस्थितो भवति तस्य दशा-यामतीतकालिक फलं ज्ञेयमर्थात्तद्दशायां वर्तमानं फलं नो लभेत्। कर्मर्क्षादिन-वर्क्षगग्रहदशा=यस्मिन्नक्षत्रे जन्म तस्माद्दशमं नक्षत्रं कर्मसंज्ञकं (९/७८-८० द्र.) तदादिनवर्क्षे स्थितस्य बलिनो ग्रहस्य पाके भविष्यत्=आगामीनि फलं वदेत्। आधानादिगस्य=जन्मर्क्षादेकोनविशं नक्षत्रमाधानसंज्ञकं तदादिनवर्क्षे स्थितस्य

ग्रहस्य पाके सर्वं फलम्=विफलमेव वा वदेत्। अत्र कर्माधानादिनवनक्षत्र-गतग्रहदशाफलमेव दृष्टिगोचरं भवतीत्यर्थः॥ २३॥

हिन्दी — सत्त्व-रज-तम वाले ग्रह की दशा में वैसा ही फल होता है। जब तमोगुणी ग्रह की दशा होती है तब तमोगुण की वृद्धि, सतोगुणी ग्रह की दशा में सतोगुण की वृद्धि और रजोगुणी ग्रह की दशा में राजसी गुण आते हैं। जन्मनक्षत्र से ९ नक्षत्रों तक प्राप्तग्रह की दशा में भूतकाल का फल, दसवें से अठारवें नक्षत्र तक की दशा में भविष्य का फल तथा उन्नीसवें नक्षत्र से अट्ठाइसवें नक्षत्र की दशा विफल होती है (अ. ९ श्लोक. ७८-८०)। अतः यह देखना चाहिए कि जिसग्रह की दशा चल रही है वह जन्मनक्षत्र से किस संख्या में है॥ २३॥

शीर्षोदयगतः खेटः पाकादौ फलदो भवेत्।
पृष्ठोदयस्थः पाकान्ते चोभयोदयगः सदा॥ २४॥

संस्कृत — स्पष्टार्थः॥ २४॥

हिन्दी — शीर्षोदय राशि में जो ग्रह होते हैं वह दशा के आरम्भ में फल देते हैं। पृष्ठोदयराशि में जो ग्रह होते हैं वह दशा के अन्त में फल देते हैं और उभयोदय राशिवाले हमेशा फल देते हैं। मिथुन-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक-कुंभ शीर्षोदय, मेष-वृष-कर्क-धनु-मकर पृष्ठोदय तथा मीन उभयोदय है॥ २४॥

षष्ठेशस्य दशा विलापकरणी मृत्यु विनाशप्रभो-
रस्तव्योम चरस्य बन्धुमरणं पाकेऽपहारेऽथवा।
संपत्साधकमैत्रपाः परममैत्रक्षेमताराधिपा-
वेतेषामपहारभुक्तिसमये संपत्समृद्धिं वदेत्॥ २५॥

संस्कृत — षष्ठेशस्येति। षष्ठेशस्य=षष्ठभावेशस्य दशा विलापकरणी =दुःखकारिणी भवति। विनाशप्रभोः=विनाशमष्टमो भावस्तत्पतेर्दशायां मृत्यु-र्भवति। अस्तव्योमचरस्य=अस्तं गतस्य वाऽस्तभवनं (सप्तमभाव) गतस्य वा सप्तेमशस्य ग्रहस्य पाकेऽपाहारेऽथवा=दशायामन्तर्दशायां वा बन्धु-मरणं भवति। उपरोक्तभावाधिपस्य शुभाशुभत्वे बलाबले सति फले न्यूनाधिक्यम्। सम्पत्-साधक-मैत्रः-परममैत्र-क्षेमताराधिपौ=सम्पत् (जन्मनक्षत्रात २-११-२० नक्षत्राणि) साधकं=(जंन्मर्क्षात् ६-१५-२४) मैत्रं=(८-१७-२६) परममैत्रं=(९-१८-२७) तथा क्षेमतारा=(४-१३-२२) एतेषु, नक्षत्रेषु स्थितानां ग्रहाणाम् अपहारभुक्ति समये (अन्तर्दशाकाले) जातस्य सम्पत्प्रवृद्धि=धनादिवृद्धिं वदेत्। यथा फलदीपिकायाम् (२०। १७-१८)—

चोराद् भीतिमनर्थतां च दमनं रोगान बहून दुष्कृतिं
मृत्युत्वं लभतेऽपमानमयशः षष्ठेशदाये व्रणम्।

जामार्तुतर्व्यसनं कलत्रविरहं स्त्रीहेत्वनर्थागमम्
द्यूनेशे विबलिन्यसत्वभिरतिं गुह्यामयं चाटनम।
रन्ध्रेशायुषि शोकमोहमदमात्सर्यादिमूर्च्छोच्छ्रितिं
दारिद्र्यं भ्रमणं वदेदपयशो व्याधीनवज्ञां मृतिम्॥ इति ॥ २५ ॥

हिन्दी — षष्ठेश की दशा विलापकारक होती है अर्थात् रोग और कष्ट देती है। अष्टमेश की दशा मृत्यु देने वाली होती है, अस्तग्रह की दशा या अन्तर्दशा बन्धु का मरण करती हैं। सम्पत्-साधक-परममित्र-मित्र और क्षेमतारा इन नक्षत्रों में जो ग्रह स्थित हों उनकी अन्तर्दशा में संपत्ति की वृद्धि होती है। जन्मनक्षत्र से द्वितीय नक्षत्र सम्पत तारा, छठा साधक तारा, आठवाँ मित्र तारा, नौवाँ नक्षत्र परममित्र और चौथा क्षेमतारा संज्ञक होता है ॥ २५ ॥

त्रिमण्डलेष्वथैकस्मिन् पापस्तिष्ठति दुर्बलः।
तद्दशायां मृतिं विद्यात् ससौम्यो यदि शोभनम्॥ २६॥
राशिसन्धिगदाये तु शोकरोगादिपीडनम्।
त्रिंशद्भागमनुक्रान्तदशा मृत्युफलप्रदा॥ २७॥

संस्कृत — उक्तौ श्लोकौ पञ्चमाध्याये, ४५/४६ द्रष्टव्यम्॥ २६-२७॥

हिन्दी — नौ-नौ नक्षत्र करके समस्त भचक्र (२७ नक्षत्र) को तीन भागों में विभाजित कर लेना चाहिए। किसी भाग में यदि एक भी पापग्रह दुर्बल हो तो उसकी दशा में मृत्यु होती है यदि वह शुभग्रह के साथ हो तो शुभफल होता है॥ २६॥

राशिसन्धि में जो ग्रह होते हैं वह शोक-रोग आदि पीड़ा करते हैं। यदि किसी राशि के ३०वें अंश में कोई ग्रह हो तो उसकी दशा में मृत्यु होती है॥ २७॥

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात् स चापि तद्युक्तखगो न शक्तः।
दातुं शुभं राहुयुतस्त्वनिष्टं तत्क्षेत्रगस्तद्युतराशिपश्च॥ २८॥

संस्कृत — नीचस्थित। जन्मनि=जन्मसमये, यो ग्रहः, नीचस्थितः=स्वनीचं गतः स्यात्, स नीचवर्ती ग्रहस्तद्युक्तखगश्चापि=तेन नीचराशिगतग्रहेण युक्तो ग्रहश्चापि शुभं फलं दातुं न शक्तः=न समर्थः भवति। असावशुभफलमेव ददाति। राहुयुतो ग्रहः, तत्क्षेत्रगः=राहुः स्थितराशिपः तद्युतराशिपश्च=राहुयुतस्य ग्रहस्य राशिस्थित ग्रहश्च दशायां अनिष्टम्=अशुभं फलं भवति॥ २८॥

हिन्दी — जो ग्रह नीचराशि का होता है वह अपनी दशा में शुभफल नहीं देता है। जो ग्रह नीचराशिगत ग्रह के साथ होता है वह शुभफल देने में समर्थ नहीं होता। जो ग्रह राहु के साथ बैठा हो वह भी शुभफल नहीं देता। राहु जिसराशि में बैठा हो उसका स्वामी भी अच्छा फल नहीं देता है। राहुस्थित राशि के अधिपति के गृह में जो ग्रह बैठा हो वह भी अच्छा फल नहीं देता है॥ २८॥

तत्तद्भावाधीश्वरस्याधिशत्रुर्यो वा खेटो बन्धुशून्यर्क्षयुक्तः।
तत्तत्पाके मूर्तिभावादिकानां नाशं ब्रूयादेवमाहुर्मुनीन्द्राः॥ २९॥

संस्कृत — तत्तद्भावेति। तत्तद्भावाधीश्वरस्य=तत्तद्विचारणीय भावस्याधिपतेर्ग्रहस्य यो ग्रहोऽधिशत्रुस्तथा अष्टकवर्गे बिन्दुशून्यर्क्षयुक्तो ग्रहः तत्तत्पाके मूर्तिभावादिकानां=लग्नादिभावानां नाशं ब्रूयादेवं मुनीन्द्रा आहुः। अर्थात् लग्नेशाधिशत्रुदशायां शरीरनाशं तथा धनेशाधिशत्रुदशायां धननाशमेवमग्रे सर्वत्र ज्ञेयम्॥ २९॥

हिन्दी — जो ग्रह जिस भावस्वामी का अधिशत्रु हो वह उसभाव का अच्छाफल नहीं देता। जैसे किसी का पंचमभाव सिंह में है और शनि एकादश में और सूर्य षष्ठ में हो तो शनि की दशा-अन्तर्दशा तृतीयभाव के लिए अच्छी नहीं होगी; क्योंकि सूर्य षष्ठ में होने पर वह शनि का अधिशत्रु हो जायेगा। इस तरह बारह भावों को देखना चाहिए कि जिसकी दशा है उसके अधिशत्रु किस-किस भाव के अधिपति हैं। जिसके अष्टकवर्ग में कोई बिन्दु नहीं हो वह ग्रह जिसभाव का स्वामी रहे उसकी दशा में उसभाव सम्बन्धी फल नेष्ट होगा। जैसे भौम के अष्टक वर्ग में मेषराशि में कोई शुभबिन्दु नहीं है और मेष पंचम में है तो भौम ग्रह की दशा में पंचमभाव का अच्छा फल नहीं होगा॥ २९॥

बाधास्थानपतद्युतग्रहदशा शोकादिरोगप्रदा
तत्केन्द्रस्थदशापहारसमये दुःखं विदेशाटनम्।
अन्योन्याष्टमषष्ठगद्युचरयोः पाकापहारे भयं
देशत्यागमनर्थमिष्टशुभयोः सर्वं विमिश्रं वदेत्॥ ३०॥

संस्कृत — बाधास्थानपतेति। बाधास्थानानि पूर्वोक्तानि (२/४८ श्लोक) तदन्यतमपतिस्तथा तेन युतस्य ग्रहस्य दशा शोकादिरोगप्रदा। अर्थात् यस्य भावस्य विचारः क्रियतेतस्य यद्बाधास्थानं तत्पतेरथवा तद्युक्तग्रहस्य दशा तद्भावस्य (तनु-धन-बन्धु-सुखादि) कृते शोकादिरोगप्रदा भवति। तत्केन्द्रस्थदशापहारसमये=तस्मात् बाधास्थानात् केन्द्रे (१-४-७-१०) स्थितस्य ग्रहस्य दशापहारसमये (दशान्तर्दशाकाले) दुःखं विदेशाटनञ्च भवति। अन्योऽन्यं=परस्परम्, अष्टम-षष्ठगद्युचरयोः पाकापहारे=दशान्तर्दशायां (कस्यचिद्दशायां तस्मात्षष्ठेऽष्टमे वा स्थितस्यान्तर्दशायां च भयं देशत्यागमनर्थं च वदेत्। यदि तयोरन्योन्यमष्टमषष्ठ-गद्युचरयोः मित्रयोः शुभग्रहयोश्च भवेत्तदा सर्वं फलं विमिश्रं=शुभं अशुभं च वदेत्। अत्र प्रसङ्गात बाधास्थानानि (अज्ञात)—

आरूढराशौ चर आयराशौ, स्थिरे तु बाधा नवमे विचिन्त्या।
तथोभये कामगृहे त्रयाणां केन्द्रेषु चैषामिति केचिदाहुः॥

चरस्थिरोभये लग्ने लाभधर्मास्तपैः क्रमात्।
त्रयाणां केन्द्रसंस्थैश्च ग्रहैर्बाधकमुच्यते ॥ इति ॥ ३० ॥

हिन्दी — चर राशिलग्न अर्थात् मेष-कर्क-तुला-मकर का बाधास्थान उनसे ११वाँ स्थान होता है। स्थिरलग्न अर्थात् वृष-सिंह-वृश्चिक और कुम्भ का ९वाँ स्थान बाधा स्थान होता है। द्विस्वभाव लग्न अर्थात् मिथुन-कन्या-धनु और मीन का सप्तमस्थान बाधास्थान होता है।

बाधास्थान का अधिपति और जो ग्रह बाधास्थान में हो तथा जो इनके केन्द्र में हों वे बाधकग्रह होते हैं किन्तु कुछ मत के अनुसार चरलग्न के लिए ग्यारहवें में स्थित हो, स्थिरलग्न के लिए नवम का अधिपति और जो ग्रह नवमस्थान में स्थित हो, द्विस्वभावलग्न के लिए सप्तमेश और जो ग्रह सप्तम में स्थित हो वह बाधाकारक होता है।

बाधकस्थान का अधिपति और उससे युक्त जो ग्रह हो उसकी दशा शोक-रोग देने वाली होती है। जो उससे केन्द्र में हो अर्थात् बाधास्थान से केन्द्र में स्थित ग्रह की दशा दुःख देने वाली होती है, परदेश में जाना पड़ता है। जो ग्रह परस्पर छठें, आठवें हो उनकी दशा में भय-अनर्थ और देश-त्याग होता है। यदि दोनों ग्रह शुभ हों या मित्र हों तो मिश्रित फल होता है ॥ ३० ॥

पाके दीप्तस्य राजा भवति धनयशोदानविद्याविनोदी
स्वस्थस्याचारधर्मश्रवणबहुसुखारोग्यवित्तान्वितः स्यात्।
राजप्रीतिं विभूतिं सुखमिह मुदितव्योमवासस्य दाये
शान्तस्यारोग्यसौख्यश्रियमवनिपतिप्रीतिमुत्साहमेति ॥ ३१ ॥
पाके शक्तस्य विद्याविनयधनतपःसिद्धिधर्मप्रवृत्ति-
श्चोराराातिक्षितीशैर्भयमनुजमृतिः पीडितस्य ग्रहस्य॥
दाये दीनस्य दैन्यं विकलखगदशा शोकरोगप्रदा स्यात्
चित्तक्लेशः खलस्य प्रतिदिनमरिभिर्भीतखेटस्य भीतिः॥ ३२॥

संस्कृत — पाक इति। अत्र दीप्तादिलक्षणं पूर्वमुक्तम् द्रष्टव्यम् (२/१६-१८ श्लो.) अन्यत्स्पष्टमेवेत्यलम्॥ ३१-३२॥

हिन्दी — दीप्तग्रह की दशा में जातक राजा होता है, धन, कीर्ति और विद्या की प्राप्ति होती है। **स्वस्थग्रह** की दशा में बहुत सुख होता है, जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है, धन से युक्त तथा सदाचार में प्रवृत्त रहता है, शुभ बातें सुनने को मिलती है, धर्म परायण मन होता है। **मुदितग्रह** की दशा में राजा से सम्मान प्राप्ति-वैभव और सुख प्राप्ति होती है। **शान्तग्रह** की दशा में नीरोगता, सुख व लक्ष्मी की प्राप्ति, राजा की प्रीति प्राप्ति और नित्य उत्साह रहता है ॥ ३१ ॥

शक्तग्रह की दशा में धर्म में प्रवृत्ति, विद्या व धन का विस्तार, तप की सिद्धि

और धनागम होता है। **पीड़ितग्रह** की दशा में छोटे भाई की मृत्यु, शत्रुओं और चोरों से भय तथा राजा से भय, **दीनग्रह** की दशा में चित्त में दीनता, **विकलग्रह** की दशा में शोक और रोग, **दुर्बलग्रह** की दशा में निरन्तर भय रहे और क्लेश तथा **भीतग्रह** की दशा में भय होता है ॥ ३२ ॥

विलग्नतारेन्दुभनामताराप्रश्नेन्दुनक्षत्रगणेषु मध्ये।
बलाधिकर्क्षेशदशाक्रमेण फलं शुभं वाऽशुभमाहुरार्याः ॥ ३३ ॥

संस्कृत — विलग्नेति। विलग्नतारा=जन्मकालिकलग्नाद्यन्नक्षत्रम्, इन्दुभं=जन्मकालिकचान्द्र नक्षत्रम्, नामतारा=पुकार नाम्नो यन्नक्षत्रम्, प्रश्नेन्दु-नक्षत्रम्=प्रश्नकालिकचान्द्रनक्षत्रम्, एषु नक्षत्रेषु मध्ये, बलाधिकर्क्षे-शदशाक्रमेण =यन्नक्षत्रस्थितोग्रहो सर्वाधिको बली भवेत् तद्दशाक्रमेण। अर्थात् पूर्वोक्त-प्रत्येकनक्षत्रवशाद्दशास्वामीं विज्ञाय तेषां दशापतीनां मध्ये यो बलीयान् स्यात् तद्दशाक्रमेण प्रष्टुः शुभं वाऽशुभं फलं ब्रूयादित्यार्या आहुः ॥ ३३ ॥

हिन्दी — जन्म काल का नक्षत्र, जन्मकालिक लग्न का नक्षत्र, पुकारा जाने वाला नाम का नक्षत्र, प्रश्न के समय का नक्षत्र—इन चारों में जो बलो हो उसनक्षत्र की दशा का साधन कर उससे शुभ-अशुभ फल विचारना चाहिए यह विद्वानों ने कहा है ॥ ३३ ॥

उत्पन्ननक्षत्रविलग्नतो वा भूयात् क्रमेणैव दशाफलानि।
दशावसानेष्वशुभं च सर्वे कुर्वन्ति सामान्यफलं नराणाम् ॥ ३४ ॥

संस्कृत — उत्पन्नेति। उत्पन्नक्षत्रं=जन्मनक्षत्रं, विलग्नं=जन्मलग्न-सम्बन्धिनक्षत्रम्, अर्थात् उत्पन्ननक्षत्राद्विलग्ननक्षत्राद्वा (तयोर्बलाधिकात्) क्रमेणैव दशाफलानि भूयात्। सर्वे=सकला एव ग्रहाः (शुभाः अशुभाश्च) दशावसानेषु=दशापूर्तिकालेषु नराणां सामान्यफलं=साधारणं फलम्, अशुभं कुर्वन्तिः। प्रायः सर्वे ग्रहा दशान्ते अशुभमेव फलं प्रयच्छन्तीति तात्पर्यम् ॥ ३४ ॥

हिन्दी — पूर्वोक्त चार नक्षत्रों से यदि उत्पत्र (जन्मनक्षत्र से पाँचवा) नक्षत्र बलवान् हों तो उसी की दशा का फल होता है। सब दशायें अपने अन्त में अशुभफल देती हैं ॥ ३४ ॥

जन्मर्क्षात्परतस्तु पञ्चमभवाऽथोत्पन्नसंज्ञा दशा
स्यादानधानदशाऽप्यथाष्टमगृहात् क्षेमान्महाख्या दशा।
आसां चैव दशावसानसमये मृत्युं वदेत्प्राणिनां
दीर्घस्वल्पसमायुषां वधविपत्प्रत्यग् दशासु क्रमात् ॥ ३५ ॥

संस्कृत — जन्मर्क्षादिति। जन्मनक्षत्रात् परतः पञ्चमनक्षत्रस्य दशा उत्पन्नसंज्ञा दशा, जन्मर्क्षात् अष्टमभवात्=अष्टमनक्षत्रसम्बन्धिनी दशा आधान-

दशानाम्ना व्यवह्रियते। क्षेमात्=जन्मनक्षत्राच्चतुर्थनक्षत्रसम्बन्धिनीदशा महाख्या=महासंज्ञिकादशेति कथ्यते। यथा—कस्यचिज्जन्मर्क्षं कृत्तिका स्यात् तदा तस्य पुनर्वसुनक्षत्रसम्बन्धिनी दशा 'उत्पन्ना'। मघानक्षत्र सम्बन्धिनी दशा 'आधान'। आर्द्रानक्षत्र सम्बन्धिनी दशा 'महादशा' इति ज्ञेयम्। तत्प्रयोजनम् आसाम्=उत्पन्नाधानमहादशानाञ्च एव दशा, अवसानसमये=आयुःशेषकाले, नृणां=मनुष्याणां, मृत्युप्रदा=मरणकर्त्री स्यात्=भवति। यदि आयुःशेषकाले उत्पन्नाधानमहाख्यदशानामन्यतमायाः सम्भवः स्यात्तदा तद्दशायामेव प्राणिनां मरणं स्यादिति भावः। स्वल्पदीर्घसमायुषां=स्वल्पायुः (द्वात्रिंशद्वर्षोनायु), दीर्घायुः (षष्टिवर्षाधिकायु), समायुः=मध्यमायुः (द्वात्रिंशत्षष्टिवर्षान्तरालायु) चैतेषां क्रमेण वध विपत्प्रत्यग्=त्रिसप्तपञ्चेशदायान्तिमे मरणं वाच्यम्। अर्थात् अल्पायुषां तृतीय नक्षत्रेशशदशावसाने, दीर्घायुषां सप्तमनक्षत्रेशदशावसाने, मध्यायुषां पञ्चमनक्षत्रेशदशावसाने, मरणं स्यादिति। यथा पराशरोऽपि (बृ.पा. ४५।१५-१६)—

"अल्पायुर्योगजातस्य विपद्दाये मृतिं वदेत्।
जातस्य मध्यमे योगे प्रत्यरौ तु मृतिर्भवेत्॥
दीर्घायुयोगजातानां वधभे तु मृतिर्भवेत्"॥ इति॥ ३५॥

हिन्दी — जन्मनक्षत्र से पाँचवाँनक्षत्र **उत्पन्न** संज्ञक, आठवाँनक्षत्र **आधान** संज्ञक और चतुर्थनक्षत्र **महानक्षत्र** संज्ञक होता है। इन तीनों से महादशा निकालनी चाहिए। पाँचवें नक्षत्र से **उत्पन्न** महादशा, आठवें नक्षत्र से **आधान** महादशा और चौथे नक्षत्र से **महा** 'महादशा' होती है। अगर एक ही वर्ष में इन दशाओं का अन्त हो तो उस दशान्तकाल में मृत्यु होती है। स्वल्पायु वाले की तीसरे (विपत्) नक्षत्र की दशा में, मध्यायु वाले की पाँचवें (प्रत्यरि) नक्षत्र की दशा में और दीर्घायु वाले की सातवें (वध) नक्षत्र की दशा में मृत्यु होती है॥ ३५॥

निर्याणदशा—

जातोऽह्नि चेदर्कशनिस्फुटैक्यताराादिनिर्याणदशा प्रकल्प्या।
तारेशराहुस्फुटयोगतारापूर्वा दशारिष्टकरा रजन्याम्॥ ३६॥

संस्कृत — श्लोकोऽयमायुर्दायाध्याये व्याख्यात एवेति (५ अ. ७२ श्लो.)॥ ३६॥

हिन्दी — दिन में जन्म हो तो स्पष्टसूर्य और स्पष्टचन्द्र को जोड़कर जो योग आये उसको चन्द्रमा मानकर दशासाधन करने पर निर्याणदशा होती है। यदि रात्रि का जन्म हो तो चन्द्रस्पष्ट और स्पष्टराहु को जोड़कर जो आये उसको चन्द्रमा मानकर दशासाधन करने पर निर्याणदशा होती है॥ ३६॥

गुलिकदशा—

गुलिकस्थितनक्षत्राद्दशा तस्य प्रकल्पिता।
तद्युक्तभवनांशेशौ सहकारी च मृत्युदाः॥ ३७॥

संस्कृत — अत्र गुलिकदशोच्यते। गुलिकः (मान्दि) यस्मिन्नक्षत्रे स्थितो (२।६) तस्मान्नक्षत्रादगुलिकदशा प्रकल्पिता। गुलिकस्थितनक्षत्रे यस्य ग्रहस्य दशा प्रारभ्यते, तदादिग्रहदशागुलिकदशेति कथ्यते। तस्यां दशायां तद्युक्तभवनांशेशौ=गुलिकयुक्तराशिस्वामी नवांशस्वामी तत्सहकारी च (सम्बन्धी च) मृत्युदाः=मृत्युदायका भवन्ति। अर्थात् गुलिको यस्मिन् राशौ तिष्ठति तद्राशीशः, यस्मिन्नवांशे तिष्ठति तत्स्वामी, गुलिकेन सह सम्बन्धकर्त्ताग्रहश्चैतेषां दशायां मरणं वाच्यम्॥ ३७॥

हिन्दी — गुलिक (मान्दि) जिसनक्षत्र (२।६) में हो उससे दशा निकालें। गुलिक से युक्त ग्रह का स्वामी और गुलिक जिसराशि और नवांश में हो उसका स्वामी या उसके साथ जो ग्रह स्थित हों वे मारक होते हैं॥ ३७॥

शूलदशा—

दिनेशाविनशुक्रौ च राजारौ कारकाः स्मृताः।
कारकस्य त्रिशूलर्क्षे यदा चरति या दशा॥ ३८॥

तत्कारकस्थितगृहादिषु सर्वभेषु
चक्रप्रमाण।दलवत्सरसंयुतेषु ।
वीर्यान्वितेषु शुभदृष्टि युतेषु सौख्यम्
नीचारिपापयुतभेषु वदन्त्यनिष्टम्॥ ३९॥

संस्कृत — दिनेशाविति। दिनेशौ=अत्र 'कटपयवर्गभवैविधिना दिनं=८ तदीशौ अष्टमेशोऽष्टमादप्यष्टमेशः=तृतीयेश अर्थात् तृतीयाष्टमभावयोरधिपति। इनशुक्रौ=सूर्यः शुक्रश्च राजारौ=राजा चन्द्रः आरो भौमः कारकाः स्मृता। अर्थात् तृतीयाष्टमेशावायुष्कारकौ। रविशुक्रयोः प्राणी जनकः। चन्द्रारयोर्जननी'' इति जैमिनिमतेन (जै.सू. २-२/१-२)। एतत्प्रयोजनं कारकस्य त्रिशूलर्क्षे इति। तत्तकारकस्य त्रिशूलर्क्षे=अष्टमराशीशस्य दशा यदा चरति तदा तस्य तस्य मृत्युदायका भवति। यद्यत्कारकादष्टमराशिसम्बन्धिनी या दशा (शुभवा पाप) यदा काले चरति तदा तस्य तस्य मृत्युं ज्ञेयमिति भावार्थः॥ ३८॥

तत्कारकेति। तत्कारकस्थितगृहादिषु=तत्तद्भावकारको ग्रहो यत्र कुत्र स्थितो भवेतद्भावराश्यादिषु, सर्वभेषु=सर्वत्रैष नियम ज्ञेयमिति भावः। चक्र

प्रमाणदलवत्सरेण=चक्रार्द्धप्रमाण(६)वर्षेण संयुतेषु=युक्तेषु वर्षेषु यदि कारको बली शुभदृष्टो वा युतो भवेत्तदा तस्य तस्य सौख्यं वदेत्। यदि कारको ग्रहो नीचस्थितो, शत्रुगृहे, पापयुतो वा भवेत्तदा तस्य तस्यानिष्टं वदेदर्थात् यस्य कस्य भावस्य कारकः शुभो वाऽशुभो यद्राशौ भवेत्तदङ्के चक्रप्रमाणार्द्धं (६ वर्ष) संयोज्य तावन्मिते वर्षे इष्टमनिष्टं वा जानीयादिति भावार्थः॥ ३९॥

हिन्दी — तृतीयेश व अष्टमेश **आयुकारक**, सूर्य व शुक्र **पितृकारक** तथा चन्द्र और भौम **मातृकारक** होते हैं। यहाँ ग्रन्थकार ने जैमिनि का मत भी लिया है। कारक के त्रिशूल (उपरोक्त तीनों) की दशा जब आती है तब उसमें उसका मरण कहना चाहिए।

जो-जो कारक जिस-जिस भाव में हो उस राशि में ६ राशि जोड़कर उतने वर्ष में यदि कारक शुभग्रह से दृष्ट हो तो शुभफल यदि नीच या पापग्रह से युक्त-दृष्ट, या शत्रुग्रह से दृष्ट-युक्त हो तो उतने संख्यक वर्षों में अनिष्ट फल कहना चाहिए॥ ३८-३९॥

महादशा के विशिष्टफल—

यत्तारांशगतः शशी तदधिपेनालोकितो वा युत-
स्तेषां चक्रदशा विशेषफलदा वक्ष्यामि तच्चक्रजम्।
देहे पापयुते तु रोगमधिकं जीवे तु जीवभ्रमं
दद्याद्यनयोः सहाबलयुतिर्मृत्युं दशायां नृणाम्॥ ४०॥

संस्कृत — यदिति। शशी=चन्द्रः, यत्तारांशगतः=कालचक्रदशायां यन्नक्षत्रनवांशगतो भवेत्तद्राशीशेनार्थाच्चन्द्राधिष्ठितनक्षत्रे यद्राशिसम्बन्धिनी चक्रदशाभवेत्तद्राशीशेन आलोकितः=दृष्टः वा युतः=सहितो भवेत् तदा तेषां चन्द्रर्क्षांशानां चक्रदशा विशेषफलदा वक्ष्यामि। जीवराशि यदि पापयुते तदा जातस्य जीवभ्रमं स्वदशान्तरे दद्यात्। यद्यनयोः=देहजीवयोः सह अबलयुतिः= बलहीनग्रहस्य युतिभवेत्तदा तद्दशायां नराणां मृत्युं=मरणं भवेदिति॥ ४०॥

हिन्दी — जिसनक्षत्र के नवांश (कालचक्रदशा) में चन्द्रमा हो उसका स्वामी यदि चन्द्रमा के साथ हो या चन्द्रमा को देखता हो तो उसकी कालचक्रदशा विशेषफल देती है। जैसे देहराशि यदि पापग्रह युक्त हो तो देह में विशेष रोग, जीवराशि यदि पापयुक्त हो तो जीवभ्रम अर्थात् जीव को विशेष कष्ट, यदि देहराशि और जीवराशि दोनों में निर्बल ग्रह हों तो उस दशा में जातक को मृत्युतुल्य कष्ट होता है॥ ४०॥

अन्तर्दशा के विशेषफल—

पापो विलग्नगृहगो यदि तद्दशायां
मापापहारसमये बहुशोकरोगम्।

वित्तक्षयं नृपसपत्नभयं नराणां
सौम्यस्य मिश्रमखिलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ ४१ ॥

संस्कृत — यदि पापः=सूर्यभौमशनी, विलग्नगृहगो भवेत्तदा तद्दशायां (लग्नगत पापग्रहस्य दशायां) पापापहारसमये=पापग्रहान्तर्दशासमये नराणां बहु-शोकरोगं, वित्तक्षयं, नृपसपत्नभयं (राजभयं, रिपुभयञ्च) प्रवदन्ति। रिपु तदानीं सौम्यस्य=शुभग्रहस्यापहारेऽखिलं फलं मिश्रं (शुभाशुभं) सन्तः प्रवदन्ति ॥ ४१ ॥

हिन्दी — पापग्रह यदि लग्न में हो तो उस ग्रह की महादशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा आवे तो बहुत शोक-रोग वित्तक्षय तथा राजा और शत्रुओं से भय होता हैं। शुभग्रह की अन्तर्दशा आवे तो मिश्रफल अर्थात् शुभ अशुभ फल होता है। पापग्रह से पापफल और शुभग्रह से शुभफल (दशा और अन्तर्दशापति दोनों ही) दिखाते हैं ऐसा विद्वान् लोग कहते हैं ॥ ४१ ॥

लग्नाधिपदशाकाले मन्दभुक्तौ धनक्षयम्।
इष्टबन्धुविरोधश्च भविष्यति न संशयः ॥ ४२ ॥

संस्कृत — लग्नाधिपदशाकाले=लग्नेशस्य दशायां मन्दभुक्तौ= शनैश्चरस्यान्तर्दशायां च धनक्षयं, इष्टबन्धुविरोधश्च भवति। अत्र न संशयः नेति। यदि शनिर्लग्नपतिः भवेत्तदा योगोऽयं बलीयान् भवतीति ज्ञेयम् ॥ ४२ ॥

हिन्दी — लग्नेश की दशा में शनि की जब अन्तर्दशा आवे तब उसमें निश्चय ही धननाश तथा मित्रों और बन्धुओं का विरोध होता है इसमें संशय नहीं ॥ ४२ ॥

धनाधिपः पापखगो यदि स्याच्छन्यारभोगीशदिनेश्वराणाम्।
अन्तर्द्दशायां धननाशमाहुः पापान्विते तद्भवने तथैव ॥ ४३ ॥

संस्कृत — धनाधिपः=द्वितीयेशः, यदि पापखगः=सूर्यभौमशनि स्यात्तदा तद्दशायां, शन्यारभोगीशदिनेश्वराणाम्=शनि-मङ्गल-राहु-सूर्याणाम्, अन्तर्दशायां धननाशं भवतीत्याहु। तद्भवने=द्वितीयभवने पापान्विते=पापग्रहेण सहिते च तथैव फलमर्थाद्धननाशं तत्पापग्रहस्य दशान्तर्दशायां भवति ॥ ४३ ॥

हिन्दी — यदि धनेश पापग्रह हो तो सूर्य-मङ्गल-शनि और राहु की अन्तर्दशा में धननाश होता है। यदि धनेश पापग्रह युक्त या पापग्रह की राशि में हो तब भी सूर्य-मङ्गल-शनि-राहु की अन्तर्दशा में धननाश होता है ॥ ४३ ॥

धनान्वितः पापखगस्तदीशः स्यात्तद्दशायां क्षितिपालकोपात् ॥
मानार्थनाशं निगलं नराणां स्थानच्युतिं मित्रविरोधमेति ॥ ४४ ॥

संस्कृत — पापखगः=पापग्रहः, धनान्वितः=द्वितीयभवनगतो

भवेत्तथा स एव तदीशः=धनेशः स्यात्तदा तद्दशायां नराणां क्षितिपालकोपात्= राजकोपात् मानार्थनाशं निगलं (प्राणदण्डः), स्थानच्युतिं=पदभ्रष्टताम्, मित्रविरोधं=बन्धुवैरञ्च भवेदिति बोध्यम् ॥ ४४ ॥

हिन्दी — यदि धनेश पापग्रह हो और वह धनुराशि में स्थित हो तो भी उसकी दशा में राजा के कोप से धन व मान का नाश, स्थानच्युति, मित्रविरोध और जेलगमन होता है। "निगल" का अर्थ फांसी भी होता है किन्तु यह अर्थ यहाँ उचित नहीं है ॥ ४४ ॥

पापग्रहे विक्रमभावनाथे पापान्विते पापवियच्चसराणाम्।
अन्तर्दशायामरिशत्रुचौरैर्दुःखं समायाति शुभान्विते वा ॥ ४५ ॥
दुश्चिक्यभावाधिपदायकाले मन्दारभोगिध्वजभानुभुक्तौ।
नाशं वदेत्तत्र सहोदराणां भवेद्विशेषात्सहजौर्विरोधः ॥ ४६ ॥

संस्कृत — अत्र तृतीयेशस्य दशायामन्तर्दशाफलमाह—श्लोकद्वयेन, सरलार्थौ स्फुटार्थौ च ॥ ४५–४६ ॥

हिन्दी — तृतीयेश यदि पापग्रह हो या पापग्रह से युक्त हो तो पापग्रहों की अन्तर्दशा में शत्रु और चोर से दुःख होता है, यदि शुभयुक्त हो तो भी यहीं फल होता है ॥ ४५ ॥

तृतीयेश की दशा में सूर्य-मङ्गल-केतु और शनि की अन्तर्दशा में छोटे भाइयों से विरोध तथा छोटे भाइयों का नाश होता है ॥ ४६ ॥

क्षेत्राधिनाथस्य शुभेतरस्य पापे तु पापग्रहभुक्तिकाले।
स्थानच्युतिं बन्धुजनैर्विरोधं कृष्यादिगोवित्तविनाशमाहुः ॥ ४७ ॥

संस्कृत — अत्र चतुर्थेशस्य दशाफलमाह—श्लोकः सरलार्थयुक्तः ॥ ४७ ॥

हिन्दी — यदि चतुर्थभाव का स्वामी पापग्रह हो तो पापग्रह की अन्तर्दशा में स्थानच्युति, बन्धु विरोध और कृषि-गो-धन आदि का विनाश होता है ॥ ४७ ॥

पापापहारसमये सुतराशिपस्यप
पाके नृपालभयमिष्टसुतार्तिमाहुः।
सौम्यापहारसमये सुतवित्तलाभ-
मुर्वीशबन्धुजनलालनमिष्टसिद्धिम् ॥ ४८ ॥

संस्कृत — सुतराशिपस्य=पञ्चमभावेशस्य, पाके=दशायाम्, पापापहारसमये=पापग्रहान्तर्दशाकाले, नृपालभयं=राज भयम्, इष्ट=मित्रस्य, पुत्रस्य च आर्ति=पीडनमाहुः। परं सुतराशिपस्य पाके, सौम्यापहारसमये=शुभग्रहस्यान्तर्दशाकाले, सुतवित्तलाभम्=पुत्रस्य धनस्य च लाभम्, उर्वीशबन्धुजनला-

लनम्=राजतो बन्धुजनाञ्च स्नेह भाजनं इष्टसिद्धिम्=मनोकामना सिद्धिं मनोरथसिद्धिं च आहु: इति ॥ ४८ ॥

हिन्दी — पञ्चमेश की महादशा हो तो पापग्रह की अन्तर्दशा में राजा से भय एवं इष्टजनों तथा पुत्रों को कष्ट होता है। सौम्यग्रह की अन्तर्दशा में पुत्रलाभ, धन का लाभ, राजा की कृपा, बन्धुजन से प्रेम और इष्ट की सिद्धि होती है ॥ ४८ ॥

षष्ठेशपाकसमये तु शुभेतराणां
भुक्तौ नृपानलभयं व्यसनं च रोगम्।
पाके कलत्रगृहपस्य खलापहारे
पत्नीविनाशमटनं च विदो वदन्ति ॥ ४९ ॥

संस्कृत — अत्र षष्ठेशस्य दशायां पापानामन्तरेऽशुभं फलं कथितमर्थादेव शुभग्रहान्तरे शुभफलेन भवितव्यमिति ज्ञेयम्। अन्यत्सुगमम् ॥ ४९ ॥

हिन्दी — षष्ठेश की दशा में शुभग्रह के अतिरिक्त अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा में राजभय-अग्निभय-व्यसन और रोग होते हैं। व्यसन अर्थात् हानि-पतन-दु:ख और आपत्ति। सप्तमेश की दशा में पापग्रह की जब अन्तर्दशा हो तो पत्नी का विनाश (रोग) व्यर्थ में इधर-उधर भ्रमण तथा विदेशगमन होता है ॥ ४९ ॥

रन्ध्रस्वामिदशागमे रिपुभयं पापापहारे नृणा-
मायुर्वित्तयशोविनाशमटनं स्थानच्युतिं वा वदेत्।
पाके धर्मगृहाधिपस्य मरणं पित्रोरधर्मायतिं
भुक्तौ पापवियच्चरस्य निगलप्राप्तिं च वित्तक्षयम् ॥ ५० ॥

संस्कृत — अत्र अष्टमेशस्य दशायां पापग्रहाणामन्तर्दशायामशुभानि फलानि कथितानि। अर्थादेवाष्टमेशस्य च दशायां शुभान्तरे शुभफलं ब्रूयादिति। अग्रे सरलार्था: ॥ ५० ॥

हिन्दी — जब अष्टमेश की दशा और पापग्रह की अन्तर्दशा होती है तो शत्रु भय, आयु का नाश अर्थात् रोग या मृत्युतुल्य कष्ट, स्थानच्युति (अर्थात् जिस पद पर काम कर रहा हो उससे भ्रष्ट होवे) धननाश तथा विदेशगमन होता है। जब नवमेश की दशा और पापग्रह की अन्तर्दशा होती है तब माता-पिता के मृत्यु की सम्भावना रहती है या अन्य श्रेष्ठजन बीमार होते हैं। मनुष्य पापकर्मी होता है, धनक्षय होता है और जेल या बन्धन में होता है ॥ ५० ॥

कर्मेशस्य खलस्य पाकसमये भुक्तौ यदा पापिना-
मिष्टार्तिं पदविच्युतिं सुखयशोहानिं च वित्तक्षयम्।
मन्दारार्कफणीशभुक्तिसमये लाभेशदायेऽसुखं
कृष्यादिप्रविनाशनं नृपभयं वित्तस्य नाशं विदु: ॥ ५१ ॥

संस्कृत — अत्र कर्मेशदशान्तर्द्दशायां लाभेशदशान्तर्द्दशायाश्च सरलार्थकेन श्लोकेन फलमाह ॥ ५१ ॥

हिन्दी — दशमेश पापग्रह हो और उसी की दशा हो तो अन्य पापग्रह की अन्तर्दशा में इष्टजनों को पीड़ा, पदच्युति, सुख की हानि एवं धन का नाश होता है। जब लाभेश की दशा हो और सूर्य-मङ्गल-शनि-राहु की अन्तर्दशा हो तो दु:ख, कृषि का नाश, राजभय तथा धननाश होता है ॥ ५१ ॥

व्ययेशदाये रविमन्दभौमभुक्तौ कलत्रात्मजबन्धुवैरम्।
बलक्षयं मानधनक्षयं च फणीशभुक्तौ विषभीतिमाहुः ॥ ५२ ॥

संस्कृत — व्ययेशदायेत्यादिना श्लोकस्य स्पष्टार्थ एव। पूर्वोक्तानां प्रत्येकभावेशदशान्तर्द्दशाफलान्नामेतावत्तावद्विचिन्तनीयं यत् प्रत्येकभावेशदशायां पापान्तरे अनिष्टं, शुभान्तरे च शुभं बोध्यम्। यदि भावेशः पापस्तदा तद्दशायां पापान्तरे तद्शुभं फलं पूर्णरूपेण ज्ञेयम्। एवं शुभस्य भावेशस्य दशायां शुभान्तरे तच्छुभं फलमपि सर्वतोभावेन ज्ञेयम् शुभे पापान्तरेपापे शुभान्तरे च मिश्रं फलमिति तारतम्येन ज्ञेयम् ॥ ५२ ॥

हिन्दी — व्ययेश की दशा हो और सूर्य-शनि-मङ्गल की अन्तर्दशा हो तो स्त्री और पुत्र से वैर, बल का नाश, यश-मान में कमी तथा धन का नाश होता है। व्ययेश की महादशा में जब राहु की अन्तर्दशा हो तो विषभय होता है ॥ ५२ ॥

अन्योन्यषष्ठाष्टमपाकभुक्तौ पदच्युतिं वा मरणं नराणाम्।
एकस्थयोरन्तरदायकाले मृत्युं वदेद्दुर्बलशालिनोस्तु ॥ ५३ ॥

संस्कृत — अन्योन्येति। परस्परं षष्ठाष्टमस्थानगतयोः ग्रहयोः, पाकभुक्तौ=एकस्य दशायामपरस्यान्तर्दशायां नराणां पदच्युतिं=स्थानहानिं, वा मरणं ब्रूयात्। एकस्थयोः=एकस्मिन्नेव स्थाने स्थितयोः दुर्बलशालिनोः=बलहीनयोर्द्वयोग्रहयोरन्तरदायकाले=एकस्य दशायामपरस्यान्तरदशायां नराणां मृत्युं=मरणं वदेदिति ॥ ५३ ॥

हिन्दी — जब महादशेश और अन्तर्दशेश एक-दूसरे से छठे-आठवें हों तो उस अर्न्तदशा में पदच्युति या मरण होता है। यदि महादशेश और अन्तर्दशेश दोनों एक साथ हों और दुर्बल हों तो उसमें मृत्यु या मृत्युसमान कष्ट कहना चाहिए ॥ ५३ ॥

क्रूरग्रहदशाकाले क्रूरस्यान्तर्द्दशागमे।
मरणं तस्य जातस्य भविष्यति न संशयः ॥ ५४ ॥

संस्कृत — श्लोकः स्पष्टार्थयुक्तः। क्रूरग्रहस्य दशायां मरणं न भवेदपितु क्रूरो यदि दुःस्थानेश (द्वितीय-सप्तम-षष्ठ-अष्टम-द्वादशेशोवा) भवेत्तदा निःसंशयेन मरणं वाच्यमिति भावः ॥ ५४ ॥

हिन्दी — क्रूरग्रह की दशा में जब क्रूरग्रह की अन्तर्दशा होती है तो जातक का मरण होता है इसमें संशय नहीं॥५४॥

क्रूरराशिगताः पापाः शत्रुखेटनिरीक्षिताः।
शत्रुखेचरसंयुक्तास्तद्दशायां मृतिर्भवेत्॥५५॥
दशाधिपस्य यः शत्रुस्तस्य भुक्त्यन्तरान्तरे।
मृत्युकालो भवेन्नूनं पापखेटस्य निश्चयः॥५६॥

संस्कृत — मरणदशामाह। पापाः=अशुभग्रहाः, यदि क्रूरराशिगताः=अशुभराशिस्थिताः शत्रुखेटनिरीक्षिता वा शत्रुखेचरसंयुक्ता स्यात्तदा तद्दशायां=तत्पाप-ग्रहदशायां पापान्तर्दशायां च जातस्य मृतिः=मरणं भवेत्। दशाधिपस्य=पूर्वोक्त मृत्युदशापतेः (क्रूरराशिस्थो शत्रुग्रहेण वीक्षितयुतो पापग्रहो) यः शत्रुग्रहः तस्य भुक्त्यन्तरान्तरे (अन्तरे प्रत्यन्तरे च) नूनं=निश्चयेन मृत्युकालो भवेत्। पापखेटस्य=स दशाधिपस्य शत्रुग्रहो यदि पापग्रहः भवेत्तदा तस्य पापग्रहस्य भुक्त्यन्तरान्तरे मृत्युकालो भवेदर्थात् नरो म्रियतेति भावः॥५५-५६॥

हिन्दी — क्रूरराशि में पापग्रह यदि स्थित हों और शत्रुग्रह से दृष्ट-युत हों तो उनकी दशा में मृत्यु होती है॥५५॥

दशापति के शत्रुग्रह की अन्तर्दशा हो तो पापग्रह के प्रत्यन्तर में मृत्यु होती है। मूल में 'भुक्त्यन्तरान्तरे' है इसका अर्थ प्रत्यन्तर होता है। तात्पर्य यह कि पहले दशापति को मारकग्रह होना चाहिए यदि वह मारक होगा तभी उसके शत्रुग्रह की अन्तर्दशा में मृत्यु होगी अतः शत्रुग्रह को भी पापग्रह होना चाहिए॥५६॥

स्वोच्चादिजन्यमशुभस्य दशाप्रवेशे
भावादिजं फलमशोभनपाकमध्ये।
दृष्ट्युद्भवं सकलपापवियच्चराणां
पाकावसानसमये फलमाहुरार्याः॥५७॥

संस्कृत — अशुभस्य ग्रहस्य स्वोच्चादिजन्यं=स्वकीयोच्च-मूल-त्रिकोणस्वक्षेत्रादिकं फलं दशाप्रवेशे=दशारम्भसमये, भावादिजं फलम-शोभनस्य, पाकमध्ये=दशामध्यसमये एवं सकलपापवियच्चराणां=समस्त-पापग्रहाणां दृष्ट-युद्भवं फलं पाकावसानसमये=दशान्ते फलतीति आर्या आहुः॥५७॥

हिन्दी — पापग्रह उच्चराशि में या स्वगृही हो तो उसका शुभ या अशुभ फल दशा के प्रारम्भ में, कैसे भाव में बैठा है इसका शुभ या अशुभफल दशा के मध्य में और पापग्रह पर दृष्टि का शुभ या अशुभफल दशा के अन्त में होता है॥५७॥

पाकस्यादौ भावजन्यं शुभानां तत्तद्राशिस्थानजं पाकमध्ये।।
दायस्यान्ते दृष्टिसंजातमेवं सर्वे तारापाकभेदं वदन्ति।। ५८ ।।

संस्कृत — शुभानां=शुभग्रहाणां भावजन्यं फलं पाकस्यादौ=दशा आरम्भकाले तत्तद्राशिस्थानजं फलं पाकमध्ये=दशामध्यसमये, दृष्टिसञ्जातं फलं दायस्यान्ते=दशाकालस्यान्ते फलतीति सर्वे आचार्या एवमेव तारापाकभेदं= नक्षत्रदशाभेदं वदन्तीति ॥ ५८ ॥

हिन्दी — महादशा के आरम्भ में ग्रह अपने भाव का फल देता है अर्थात् यदि केन्द्र त्रिकोण या एकादशस्थान में हो तो शुभफल और छठे-आठवें व बारहवें या तो अशुभफल देता है। जो भाव शुभ कहे गये हैं उनमें बैठा हुआ ग्रह शुभ फलकारक और जो भाव अशुभ कहे गये हैं उनमें बैठा हुआ अशुभ फल अर्थात् भावजन्य फल कारक दशा के प्रारम्भ में होता है। दशा के मध्य में ग्रहराशिजन्य फल अर्थात् स्वराशि उच्चराशि या मित्रराशियों में बैठा हुआ शुभफलकारक और अशुभ राशि में बैठा हुआ अशुभफलकारक। यदि ग्रह अपनी नीचराशि या शत्रुराशि में बैठा हुआ हो तो शुभफल नहीं देता बल्कि अशुभफल देता है।

दशा का प्रारम्भकाल भावजन्य, दशा का मध्यकाल राशिजन्य तथा दृष्टिवीक्षितजन्य फल दशा के अन्त में होता है। शुभग्रह से वीक्षित हो तो शुभफल और पापग्रह से वीक्षित हो तो अशुभफल। इसप्रकार दशा को तीन भागों में बाँटकर फल का निर्णय करना चाहिए॥ ५८ ॥

अन्तर्दशाफल—

अथ तरणिदशायां चौर्यमुच्चाटनाद्यै-
र्धनमनलचतुष्पात् पीडनं नेत्रतापम्।
उदरदशनरोगः पुत्रदारैर्वियोगो
गुरुजनपितृनाशो भृत्यगोवित्तहानिः ॥ ५९ ॥

संस्कृत — रविदशाफलं—अथेति श्लोकस्य स्पष्टार्थः। अत्र सामान्यतो रविदशायामशुभमेव फलं कथितम्। परं यदि रविश्चेच्छुभभावेशः स्वोच्चमूलत्रिकोणादिस्थितश्च भवेत्तदा तद्दशायां शुभफलं भवितव्यमिति चिन्तनीयम्।

यथा ढुण्ढिराजः जातकभरणे (रविदशाफल १-३)—

'भानोर्दशायां हि विदेशवासो भवेत्कदाचिन्ननु मानवानाम्।
भूवह्निभूपद्विजवर्यशस्त्रभैषज्यतोऽतीव धनागमः स्यात्॥
मन्त्राभिचारेऽभिरुचिर्विचित्रा धात्रीपतेः सख्यविधिर्विशेषात्।
विख्यातकर्माभिरतिर्मतिः स्यादनल्पजल्पे चरणेन चिन्ता'॥

व्ययश्च दन्तोदरनेत्रबाधाकान्तासुतेभ्यो वियुतिश्च चिन्ता।
नृपाग्निचौराहितबन्धुवर्गैः स्वगोत्रजैर्वा प्रबलः कलिः स्यात्' ॥ ५९ ॥

हिन्दी — सूर्यदशा में फल—सूर्य की दशा में चोरी-उच्चाटन आदि से धनलाभ, अग्नि से पीड़ा, चौपायों से कष्ट, नेत्रों तथा दाँतों की बीमारी, पेट का रोग, स्त्री पुत्र का वियोग, गुरुजन तथा पिता का नाश, भृत्य-पशुधन तथा सम्पत्ति की हानि होती है ॥ ५९ ॥

अन्तर्दशा साधन—

दशा दशाहता मासाश्चैकस्थानं विना परे।
एकस्थानं त्रिगुणितं दिनान्यन्तर्द्दशाक्रमः ॥ ६० ॥

संस्कृत — अत्रान्तर्द्दशासाधनप्रकारं (अ. १७/१०७) दशा दशाहतेति। यस्य ग्रहस्य दशायामन्येषाग्रहाणामन्तर्दशा साध्या तस्य ग्रहस्य दशावर्षमानेनान्यस्य ग्रहस्य दशावर्षमानं संगुण्यं, गुणनफले एकस्थानं=प्रथमाङ्क विना परे अङ्का मासा ज्ञेया, एकस्थानं=प्रथमस्थानाङ्कं त्रिगुणिकृतं तदा तावन्ति दिनानि चेति अन्य ग्रहाणां अन्तर्द्दशाक्रमो ज्ञेयः।

यथा सूर्यदशायां केतु ग्रहस्यान्तर्द्दशा साधने सूर्यस्य दशा=६ वर्षः। केतोः दशा=७ वर्षः। द्वयोराहतिः=६×७=४२ अत्रगुणनफले एकस्थानं २ एतद्विना परे ४ मासा जाताः। एकस्थानं २, एतत् त्रिगुणं २×३=६ दिनानि। तेन सूर्यदशायां केतोरन्तर्दशामानं षड्दिनाधिकं मासचतुष्टयमितं जातमिति ॥ ६० ॥

हिन्दी — महादशा वर्ष को अन्तर्दशा के वर्षों से गुणा कीजिए जो अन्त की संख्या आये उसके त्रिगुणित दिन और जो गुणनफल में बाकी संख्या बचे (अंत की संख्या छोड़कर) उतने माह होते हैं। (परिशिष्ट में देखें)

जैसे—चन्द्र दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा लानी है तो १० और १६ को गुणा किया तो गुणनफल १६० आया अब ० को त्रिगुणित करने पर ० यह दिन हुआ, बाकी १६ महीना हुआ ॥ ६० ॥

सूर्य में सूर्य—

द्विजभूपतिशस्त्राद्यैर्धनप्राप्तिं मनोरुजम्।
विदेशवनसंचारं भानोरन्तर्गते रवौ ॥ ६१ ॥

सूर्य में चन्द्र—

बन्धुमित्रजनैरर्थं प्रमादं मित्रसज्जनैः।
पाण्डुरोगादिसन्तापं चन्द्रे भानुदशान्तरे ॥ ६२ ॥

सूर्य में भौम—

रत्नकाञ्चनवित्ताप्तिं राजस्नेहं शुभावहम्।
पैत्त्यरोगादिसञ्चारं कुजे भानुदशान्तरे ॥ ६३ ॥

सूर्य में राहु—

अकाले मृत्युसन्तापं बन्धुवर्गारिपीडनम्।
पदच्युतिं मनोदुःखं रवेरन्तर्गतेऽप्यहौ॥ ६४॥

सूर्य में गुरु—

सर्वपूज्यं सुताद्वित्तं देवब्राह्मणपूजनम्।
सत्कर्माचारसद्गोष्ठी रवेरन्तर्गते गुरौ॥ ६५॥

सूर्य में शनि—

सर्वशत्रुत्वमालस्यं हीनवृत्तिं मनोरुजम्।
राजचोरभयप्राप्तिं रवेरन्तर्गते शनौ॥ ६६॥

सूर्य में बुध—

बन्धुपीडां मनोदुःखं सत्रोत्साहं धनक्षयम्।
किञ्चित्सुखमवाप्नोति रवैरन्तर्गते बुधे॥ ६७॥

सूर्य में केतु—

कण्ठरोगं मनस्तापं नेत्ररोगमथापि वा।
अकालमृत्युमाप्नोति रवेरन्तर्गते ध्वजे॥ ६८॥

सूर्य में शुक्र—

जले द्रव्याप्तिमायासं कुस्त्रीजननिषेवणम्।
शुष्कसंवादमाप्नोति रवेरन्तर्गते भृगौ॥ ६९॥

सूर्य दशा में विशेषफल—

दशांदौ दिननाथस्य पितृरोगं धनक्षयम्।
सर्वबाधाकरं मध्ये दशान्ते सुखमाप्नुयात्॥ ७०॥
स्वोच्चे नीचनवांशगस्य तरणेर्द्दायेऽपवादं भयं
पुत्रस्त्रीपितृवर्गबन्धुमरणं कृष्यादिवित्तक्षयम्।
नीचे तुङ्गनवांशगस्य च रवेः पाके नृपालश्रियम्
सौख्यं याति दशावसानसमये वित्तक्षयं वा मृतिम्॥ ७१॥

संस्कृत — इदानीं तु सामान्येन फलान्युक्तानि। तेषु ग्रहाणां भावस्थानादिस्थितिवशात् फलकथने तारतम्यं कुर्यात्। अन्यत्स्पष्टम्॥ ६१-७१॥

हिन्दी — सूर्य में सूर्य—सूर्यदशा में सूर्य की ही अन्तर्दशा हो तो ब्राह्मण तथा राजा से धनलाभ, शस्त्रादि से धनप्राप्ति, मन में रोग, विदेशयात्रा तथा वनगमन होता है॥ ६१॥

सूर्य में चन्द्र—सूर्यदशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो बन्धु व मित्रों से धन

प्राप्ति, मित्रों से सज्जनों से मनमुटाव और जातक को पीलिया (पाण्डु) आदि रोग से सन्ताप होता है ॥ ६२ ॥

सूर्य में **मङ्गल**—सूर्यदशा में मङ्गल की अन्तर्दशा हो तो रत्न, स्वर्ण व धन की प्राप्ति, राजा की कृपा प्राप्ति तथा शुभफल हो किन्तु पित्त रोग से कष्ट होता रहे ॥ ६३ ॥

सूर्य में **राहु**—सूर्यदशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो मृत्यु, भय, बन्धुवर्ग को शत्रुओं से पीड़ा, मन को सन्ताप तथा पदच्युति होता है ॥ ६४ ॥

सूर्य में **बृहस्पति**—सूर्यदशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तो जातक सर्वपूज्य हो अर्थात् सब जगह उसका आदर हो। अपने पुत्र से धन की प्राप्ति, देवताओं और ब्राह्मणों में भक्ति, सत्कर्म आचरण तथा सज्जनों से समागम होता है ॥ ६५ ॥

सूर्य में **शनि**—सूर्य में जब शनि की अन्तर्दशा हो तो मन में आलस्य, सब लोगो से शत्रुता, मन में दुःख, संकीर्ण प्रवृत्ति तथा राजा और चोर से भय होता है ॥ ६६ ॥

सूर्य में **बुध**—सूर्यदशा में बुध का अन्तर हो तो बन्धुओं को पीड़ा, मन में दुःख की अनुभूति, उद्यमहीनता और थोड़ी मात्रा में सुख प्राप्त होता है ॥ ६७ ॥

सूर्य में **केतु**—सूर्य की दशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो असमय में मृत्यु की सम्भावना और मन में दुःख कण्ठरोग तथा नेत्ररोग होता है ॥ ६८ ॥

सूर्य में **शुक्र**—सूर्यदशा में शुक्र अन्तर्दशा हो तो जल में या जलमार्ग से धन की प्राप्ति, दुष्ट स्त्री का सहवास और कटु सम्वाद प्राप्त होता है ॥ ६९ ॥

सूर्य की दशा के प्रारम्भ में पिता को रोग और धनक्षय, दशामध्य में सब प्रकार की बाधायें और दशा के अन्त में सुख होता है ॥ ७० ॥

सूर्य उच्चराशिगत हो किन्तु नीचनवांश में हो तो सब प्रकार का अपवाद व भय, पुत्र-स्त्री-पितृवर्ग और बन्धुओं का मरण तथा कृषि आदि में धनक्षय होता है। यदि सूर्य नीचराशि में हो किन्तु उच्चनवांश में हो तो उसकी दशा में राजा से धन प्राप्ति और सुख होता है। सूर्यमहादशा के अन्त में धननाश और मृत्यु का भय होता है ॥ ७१ ॥

चन्द्रदशा फल—

हिमकिरणदशायां मन्त्रदेवद्विजाप्ति-
र्युवतिजनविभूतिः स्त्रीधनक्षेत्रसिद्धिः।
कुसुमवसनभूषागन्धनानाधनाढ्यो
भवति बलविरोधे चार्थहा वातरोगी॥ ७२॥

संस्कृत — स्पष्टार्थः सरलार्थः।

इत्थं मन्त्रेश्वरस्यापिवचनम् (फलदीपिका १९।१९)

'शिशिरकरदशायां मन्त्रदेवद्विजोर्वीपतिजनितविभूतिस्त्रीधनक्षेत्रसिद्धिः ।
कुसुमवसनभूषागन्धनानारसाप्तिर्भवति खलु विरोधस्त्वक्षयो वातरोगः '॥ ३२ ॥

हिन्दी — चन्द्रमा की महादशा में मन्त्र की उपासना, देवताओं में भक्ति, ब्राह्मणों का सत्कार, स्त्रियों से वैभवप्राप्ति, वस्त्र-पुष्प-भूषण-चन्दन आदि सुन्दर वस्तुओं की प्राप्ति और अनेक प्रकार के धन की प्राप्ति होती है। यदि चन्द्रमा बलहीन हो तो चन्द्रमा की दशा में धनक्षय और वातरोग से भय होता है अर्थात् वायुरोग से कष्ट होता है (परिशिष्ट में देखें) ॥ ७२ ॥

चन्द्र में चन्द्र—

विद्यास्त्रीगीतवाद्येष्वभिरतिगमनं पट्टवस्त्रादिसिद्धिं
सत्सङ्गं देहसौख्यं नृपसचिवचमूनायकैः पूज्यमानम्।
सत्कीर्तिं तीर्थयात्रां वितरति हिमगुः पुत्रमित्रैः प्रियं च
क्षोणीगोवाजिलाभं बहुजनविभवं स्वे दशान्तर्विपाके ॥ ७३ ॥

चन्द्र में भौम—

रोगं विरोधबुद्धिं च स्थाननाशं धनक्षयम्।
मित्रभ्रातृवशात् क्लेशं चन्द्रस्यान्तर्गते कुजे ॥ ७४ ॥

चन्द्र में राहु—

रिपुरोगभयात् क्लेशं बन्धुनाशं धनक्षयम्।
न किञ्चित्सुखमाप्नोति राहौ चन्द्रदशान्तरे ॥ ७५ ॥

चन्द्र में गुरु—

यानादिविविधार्थाप्तिं वस्त्राभरणसंपदः।
यत्नात् कार्यमवाप्नोति जीवे चन्द्रदशान्तरे ॥ ७६ ॥

चन्द्र में शनि—

मातृपीडा मनोदुःखं वातपैत्त्यादिपीडनम्।
स्तब्धवागरिसंवादं शनौ चन्द्रदशान्तरे ॥ ७७ ॥

चन्द्र में बुध—

मातृवर्गाद्धनप्राप्तिं विद्वज्जनसमाश्रयम्।
वस्त्रभूषणसंप्राप्तिं बुधे चन्द्रदशान्तरे ॥ ७८ ॥

चन्द्र में केतु—

स्त्रीरोगं बन्धुनाशं च कुक्षिरोगादिपीडनम्।
द्रव्यनाशमवाप्नोति केतौ चन्द्रदशान्तरे ॥ ७९ ॥

चन्द्र में शुक्र—

स्त्रीधनं कृषिपश्वादिजलवस्त्रागमं सुखम्।
मातृरोगमवाप्नोति भृगौ चन्द्रदशान्तरे॥ ८०॥

चन्द्र में सूर्य

नृपप्रायकमैश्वर्यं व्याधिनाशं रिपुक्षयम्।
सौख्यं शुभमवाप्नोति रवौ चन्द्रदशान्तरे॥ ८१॥

चन्द्रदशा में विशेषफल—

आदौ भावफलं मध्ये राशिस्थानफलं विदुः।
पाकावसानसमये चाङ्गजं दृष्टिजं फलम्॥ ८२॥

संस्कृत — अत्र सामान्येन फलान्युक्तानि। श्लोकाश्च स्पष्टार्था सरलार्थाश्च॥ ७३-८२॥

चन्द्र में **चन्द्र**—चन्द्र की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा हो तो विद्या-स्त्री-गीत-वाद्य में प्रीति, पट्ट वस्त्र की प्राप्ति, सत्संग, देहसुख, राजा से-मन्त्री से-सेनापति से सम्मानप्राप्ति, तीर्थयात्रा, पुत्र-मित्र से सुख, पृथ्वी-घोड़े और गायों का लाभ तथा बहुत धन-वैभव से सुख होता है॥ ७३॥

चन्द्र में **मङ्गल**—चन्द्र की दशा में मङ्गल की अन्तर्दशा होतो विरोधबुद्धि अर्थात् लोगो से अप्रिय व्यवहार, स्थाननाश, धनक्षय, रोगवृद्धि तथा मित्र और भ्रातृवर्ग से क्लेश प्राप्त होता है॥ ७४॥

चन्द्र में **राहु**—चन्द्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो शत्रुओं और रोग से भय, बन्धुनाश, धनक्षय तथा क्लेश होता है अर्थात् कुछ भी शुभफल नहीं मिलता है॥ ७५॥

चन्द्र में **बृहस्पति**—चन्द्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा होती है तो वाहन आदि नानाप्रकार के वैभव की प्राप्ति, वस्त्र-आभूषण एवं सम्पत्ति की प्राप्ति और यत्न से कार्यसिद्धि होती है अर्थात् परिश्रम सफल होता है॥ ७६॥

चन्द्र में **शनि**—चन्द्रदशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो माता को पीड़ा, मन को दुःख, वात-पित्त आदि से कष्ट, बोलने में शक्ति का ह्रास और शत्रुपक्ष से कटु संवाद मिलते रहते हैं। अर्थात् चन्द्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा अशुभकर होती है॥ ७७॥

चन्द्र में **बुध**—चन्द्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो मातृवर्ग से धन प्राप्ति, विद्वानों का आश्रय तथा वस्त्र और आभूषण की प्राप्ति होती है॥ ७८॥

चन्द्र नें **केतु**—चन्द्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो स्त्री को रोग, बन्धुओं का नाश, काँख में रोग या कष्ट तथा द्रव्य का नाश होता है॥ ७९॥

चन्द्र में **शुक्र**—चन्द्रदशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो स्त्रियों से धनलाभ, खेती

और पशु से लाभ तथा जल में उत्पन्न वस्तुओं से धनप्राप्ति होती है। इसतरह धनप्राप्ति के लिए यह अन्तर्दशा उत्तम रहती है किन्तु माता को रोग होता रहता है॥ ८०॥

चन्द्र में **सूर्य**—चन्द्रदशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो राजा से ऐश्वर्य अथवा राजसम्मान की प्राप्ति, किसी श्रेष्ठ वस्तु या धन का लाभ, व्याधि और शत्रुओं का नाश होता है अर्थात् इस अन्तर्दशा में सुख मिलता है॥ ८१॥

महादशा के प्रारम्भ में चन्द्र जिसभाव में बैठा हो उसभाव का फल मिलता है। दशा के मध्य में राशि जनित शुभाशुभ फल और दशा के अन्त में लग्न पर दृष्टि का फल होता है लग्न चन्द्र यदि शुभग्रह से वीक्षित हो तो शुभफल पापग्रह से वीक्षित हो तो पापफल होता है॥ ८२॥

भौमदशा फल—

पाके भूमिसुतस्य शस्त्रहुतभुग्भूवाहनाद्यैर्धनं
भैषज्यान्नृपवञ्चनैश्च विविधैः क्रौर्यैर्धनस्यागमम्।
पित्तासृग्ज्वरपीडनं तु सततं नीचाङ्गनासेवनं
विद्वेषं सुतदारबन्धुगुरुभिर्दुष्टान्नभोगं विदुः॥ ८३॥

संस्कृत — पाकेति स्पष्टार्थः। अत्र भौमस्य स्थितिवशेन कथितफले न्यूनाधिक्यं ज्ञेयम्॥ ८३॥

हिन्दी — भौम की दशा में अग्नि से, भूमि और वाहन से धन प्राप्ति, शस्त्र से लड़ाई हो या व्यापार हो। अग्नि (फैक्टरी-मिल) आदि का काम करने से या उसका मालिक होने से लाभ तथा भूमि या मकान के कारोबार से लाभ होता है। मङ्गल की दशा में औषधि का काम और विविधप्रकार के क्रूरकार्य तथा दूसरों को ठगने से भी लाभ होता है। यह सब फल तब होते हैं जब मङ्गल बली हो। जब मङ्गल अशुभ हो तो पित्त-खून की खराबी, शरीर में पीड़ा, नीच स्त्री का सेवन, अपनी स्त्री से वैर, पुत्र, बन्धु, गुरु से भी वैर अर्थात् इनसे सद्भाव न रहे और कुत्सित अन्न का भोजन करें (सारणी को परिशिष्ट में देखें)॥ ८३॥

भौम में भौम—

उष्णाधिक्यं सुहृद्द्वेषं भ्रातृपीडां नृपाद्भयम्।
सर्वकार्यार्थनाशं च कुजे कुजदशान्तरे॥ ८४॥

भौम में राहु—

नृपचोरादिभीतिञ्च धनधान्यादिनाशनम्।
दुष्टकर्मादिसंसिद्धिं राहौ कुजदशान्तरे॥ ८५॥

भौम में गुरु—

द्विजमूलाद्धनप्राप्तिं भूलाभं च निरामयम्।
संपूजनं जयं सौख्यं गुरौ कुजदशान्तरे॥ ८६॥

भौम में शनि—

बहुदुःखाकरव्याधिमरिचोरनृपैर्भयम् ।
धनक्षयमवाप्नोति शनौ भौमदशान्तरे॥ ८७॥

भौम में बुध—

वैश्यवर्गाद्धनप्राप्तिं गृहगोधान्यसंपदः।
शत्रुबाधां मनःक्लेशं बुधे कुजदशान्तरे॥ ८८॥

भौम में केतु—

कुक्षिरोगेण संतापं बन्धुसोदरपीडनम्।
दुष्टमानवशत्रुत्वं केतौ कुजदशान्तरे॥ ८९॥

भौम में शुक्र—

कलत्रभूषणं वस्त्रं बन्धुवर्गाद्धनागमम्।
स्त्रीजनद्वेष्यतद्गोष्ठीं शुक्रे भौमदशान्तरे॥ ९०॥

भौम में सूर्य—

अपवादं गुरुद्वेषं कलहं व्याधिपीडनम्।
आत्मवर्गान्मनोदुःखं रवौ भौमदशान्तरे॥ ९१॥

भौम में चन्द्र—

नानावित्तसुखं वस्त्रमुक्तामणिविभूषणम्।
निद्रालस्यमथोद्वेगं चन्द्रे भौमदशान्तरे॥ ९२॥

भौमदशा में विशेषफल—

भूनन्दनस्य पाकादौ मानहानिर्धनक्षयः।
मध्ये नृपाग्निचोराद्यैर्भीतिश्चान्ते तथा भवेत्॥ ९३॥
उच्चस्थितस्य धरणीतनयस्य पाके
नीचांशगस्य मरणं सुतसोदराणाम्।
नीचे तु तुङ्गभवनांशगतस्य दाये
कृष्यादिभूमिधनधान्यसुखं वदन्ति॥ ९४॥

संस्कृत — अत्र विशेषतः भौमो यदि स्वकीयोच्चराशिं (मकर) गतः परं यदि स्वनीच राशिनवांश (कर्क) गतो भवेत्तदा तत्पाके सुतसोदराणां (पुत्राणां भ्रातृणां च) मरणं ज्ञेयम् तथानीच (कर्क) राशौ परं तुङ्गनवांश (मकरनवांश) गतस्य कुजस्य दाये कृष्यादि भूमिधनधान्यसुखं वदन्ति। एवं प्रकारेण सर्वेषां ग्रहाणामपि स्थितिवशेनान्तर्दशाफलान्यपि ज्ञेयानि॥ ८४-९४॥

हिन्दी — भौम में भौम—भौम की दशा में भौम की अन्तर्दशा हो तो शरीर

में विशेष उष्णता, मित्र से वैर, भाइयों को पीड़ा, राजा से भय और समस्त कार्य का नाश तथा धनव्यय होता है ॥ ८४ ॥

भौम में **राहु**—भौम की दशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो राजा और चोर से भय, धन धान्य का नाश, दुष्ट कार्यों की सिद्धि अर्थात् जघन्य और कुत्सित कार्य जैसे चोरी, दूसरे को मारना इत्यादि कार्य सिद्ध होते हैं ॥ ८५ ॥

भौम में **बृहस्पति**—भौम की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तो ब्राह्मण से धनप्राप्ति, भूमि का लाभ, शरीर आनन्द से परिपूर्ण, सबों से आदर प्राप्ति और सर्वत्र जय होता है अर्थात् इस अन्तर्दशा में सुख होता है ॥ ८६ ॥

भौम में **शनि**—भौम में शनि की अन्तर्दशा में बहुतदुःख, नानाप्रकार के कष्ट, दुःखपूर्ण व्याधि, राजा से भय, शत्रुओं और चौरों से भय तथा धन का नाश होता है ॥ ८७ ॥

भौम में **बुध**—भौम की दशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो वैश्यवर्ग या व्यापारीवर्ग से धनलाभ, घर-मकान की वृद्धि, गौओं का सुख, धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती है, किन्तु शत्रु के उपद्रव से मन में क्लेश रहता है अर्थात् शत्रुबाधा होती है और मन क्लेशित रहता है ॥ ८८ ॥

भौम में **केतु**—भौम की दशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो काँख के रोग से संताप, बन्धुओं और भाइयों को पीड़ा तथा दुष्ट से शत्रुसे दुःख होता है ॥ ८९ ॥

भौम में **शुक्र**—भौम की दशामें शुक्र की अन्तर्दशा हो तो सुखप्राप्ति, स्त्रीजन से वैर, नवीन स्त्री और आभूषणों की प्राप्ति, उत्तम वस्त्रों का लाभ तथा बन्धु वर्ग से लाभ व धनागम होता है ॥ ९० ॥

भौम में **सूर्य**—भौम की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो आत्मीयवर्ग से मन में दुःख, अपवाद, गुरुजनों से वैर, पित्तव्याधि से पीड़ा और लोगों से कलह होता है ॥ ९१ ॥

भौम में **चन्द्र**—भौम की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा हो तो विविधप्रकार से वित्त का सुख, वस्त्र-मोती-मणि की प्राप्ति, निद्रावृद्धि, आलस्यवृद्धि और मन में उद्वेग होता है ॥ ९२ ॥

भौम की प्रारम्भिक दशा में मानहानि, दशामध्य में धन का नाश तथा दशा के अन्त में राजा से भय, शत्रुओं से बाधा और अग्नि से भय होता है ॥ ९३ ॥

भौम उच्चराशि में किन्तु नीचनवांश में हो तो इसका निकृष्टफल होता है अर्थात् पुत्र और सहोदरादि मर जाते हैं। यदि भौम नीचराशि में और उच्चनवांश में हो तो उसकी दशा में कृषि कार्य फले-फूले, भूमि का विस्तार, धन धान्य की वृद्धि और सुख की प्राप्ति होती है ॥ ९४ ॥

राहु दशाफल—

सौख्यादिवित्तस्थितिनाशनं च कलत्रपुत्रादिवियोगदुःखम्।
अतीव रोगं परदेशवासं विवादबुद्धिं कुरुते फणीशः ॥ ९५ ॥

संस्कृत — अत्र स्थितिपरत्वेन राहोर्दशाफलं वक्ष्यते।
मन्त्रेश्वरोपि फलदीपिकायां १९/१४-१५-२१

'कुर्यादहिः क्षितिपचोराविषाग्निशस्त्रभीतिं सुतार्तिमतिविभ्रमबन्धुनाशम्।
नीचावमानमतिक्रमतोऽपवादं स्थानच्युतिं पदहतिं कृतकार्यहानिम्॥
विधुन्तुदे शुभान्विते प्रशस्तभावसंयुते दशाशुभप्रदा तदा महीपतुल्यभूतिदा।
अभीष्टकार्यसिद्धयो गृहे सुखस्थितिर्भवेदचञ्चलार्थसञ्चयाः क्षितौ प्रसिद्धकीर्तयः॥
असुरवरदशायां दुःखभावोऽथवा स्यादतिगहनगदार्तिः सूनुनार्योर्विनाशः।
विपभयमरिपीडावीक्षणोद्ध्र्वाङ्गरोगः सुहृदि कृषिविरोधो भूपतेर्द्वेषलाभः'॥ ९५॥

हिन्दी — राहु अपनीदशा में सुख तथा धननाश, पद से पतन, स्त्री-पुत्र का वियोग दुःख, विशेप रोग, परदेश गमन तथा लोगों से विवाद कराता है॥ ९५॥

राहु में राहु—

जायारोगं विवादं च बुद्धिनाशं धनक्षयम्।
दूरदेशाटनं दुःखं राहौ राहुदशान्तरे॥ ९६॥

राहु में गुरु—

व्याधिशत्रुविनाशं च राजप्रीतिं धनागमम्।
पुत्रलाभं तथोत्साहं गुरौ राहुदशान्तरे॥ ९७॥

राहु में शनि—

वातपित्तकृतं रोगं बन्धुमित्रादिपीडनम्।
दूरदेशनिवासं च शनौ राहुदशान्तरे॥ ९८॥

राहु में बुध—

मित्रबन्धुकलत्रादिसंयोगं च धनागमम्।
राजप्रीतिमवाप्नोति बुधे राहुदशान्तरे॥ ९९॥

राहु में केतु—

चौर्यञ्च मानहानिं च पुत्रनाशं पशुक्षयम्।
सर्वोपद्रवमाप्नोति केतो राहुदशान्तरे॥ १००॥

राहु में शुक्र—

विदेशाद्वाहनप्राप्तिश्छत्रचामरसंपदः।
रोगारिबन्धुभीतिः स्यात् शुक्रे राहुदशान्तरे॥ १०१॥

राहु में सूर्य—

दानधर्मरतिः प्रीतिः सर्वोपद्रवनाशनम्।
संसाररोगसञ्चारो रवौ राहुदशान्तरे॥ १०२॥

राहु में चन्द्र—

भोगसम्पद्भवेन्नित्यं सस्यवृद्धिर्धनागमः।
स्वबन्धु जन संवादो राहौ चन्द्रदशान्तरे॥ १०३॥

राहु में भौम—

सर्वोपद्रवसंयोगः सर्वकार्येषु मूढता।
चित्तविस्मृतिदोषः स्यात् कुजे राहुदशान्तरे॥ १०४॥

संस्कृत — श्लोकाश्च सरलार्था एव। ग्रहाणां स्थितिवैशिष्ट्ये फलेष्वपि वैशिष्ट्यं स्वबुद्ध्या चिन्तनीयम्॥ ९६-१०४॥

राहु में राहु—राहु की दशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो स्त्री को रोग, लोगों से विवाद, बुद्धि का नाश, धन का अपव्यय, दूर देश की यात्रा और बहुत दुःख होता है॥ ९६॥

राहु में बृहस्पति—राहु की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तो रोग और शत्रुओं का नाश, राजा की प्रीति, धन का आगमन, पुत्रलाभ और मन में सदैव उत्साह रहता है॥ ९७॥

राहु में शनि—राहुदशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो वात और पित्त के कारण शरीर में नानाप्रकार के रोग, बन्धुओं और मित्रों को पीड़ा तथा दूरदेश में निवास होता है॥ ९८॥

राहु में बुध—राहु की दशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो मित्रों का समागम, मित्रों से संयोग, अपनी पत्नी से मिलन, धन का आगमन एवं राजा से प्रीति प्राप्त होती है॥ ९९॥

राहु में केतु—राहु की दशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो घर में चोरी, मान-हानि, पुत्रनाश, धन तथा पशुओं का क्षय एवं नानाप्रकार के उपद्रव होते हैं जिससे मन व्याकुल रहता है॥ १००॥

राहु में शुक्र—राहु की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो विदेश से वाहन की प्राप्ति, छत्र, चामर आदि सम्पत्ति की प्राप्ति होती है किन्तु रोग व शत्रु तथा बन्धुओं से भय होता है॥ १०१॥

राहु में सूर्य—राहुदशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो दान और धर्म में रति, सबसे प्रेम, सब उपद्रवों का नाश और संक्रामक रोग का भय होता है॥ १०२॥

राहु में चन्द्र—राहुदशा में चन्द्र की अन्तर्दशा हो तो भोगवस्तु और सम्पत्ति की प्राप्ति, खेती की वृद्धि तथा मित्रों से अच्छे संवाद प्राप्त होते हैं॥ १०३॥

राहु में भौम—राहु की दशा में मङ्गल की अन्तर्दशा हो तो सबप्रकार के उपद्रव, सब क़ार्यों में मूर्खता और चित्तविभ्रम हो जाता है। अर्थात् स्मृति दुर्बल रहती है॥ १०४॥

राहु की दशा में विशेष फल—

कुलीरगोमेषयुतस्य राहोर्द्दशाविपाके धनधान्यलाभम्।
विद्याविनोदं नृपमाननं च कलत्रभृत्यादिसुखं वदन्ति॥ १०५॥
पाथोनमीनाश्वयुतस्य राहोर्द्दशाविपाके सुतदारलाभम्।
देशाधिपत्यं नरवाहनं च दशावसाने सकलं विनाशम्॥ १०६॥
मृगपतिवृषकन्याकर्कटस्थस्य राहो-
र्भवति च परिपाके राजतुल्यो नृपो वा।
गजतुरगचमूपः सर्वजीवोपकारी
बहुधनसुखशीलः पुत्रदारानुरक्तः॥ १०७॥
दशादौ दुःखमाप्नोति दशामध्ये महत्सुखम्।
दशान्ते फणिनाथस्य पितृनाशं पदच्युतिम्॥ १०८॥

संस्कृत — कर्क-वृप-मेप राशिगतस्य राहोर्दशायां धनधान्यदि लाभं नृपसम्मानादिसुखं लभते तथा कन्या-मीन-धनुराशिगतस्य राहोर्दशायां सुतदारलाभं, देशाधिपत्यं नरवाहनादि लाभं च सर्वसुखं प्राप्नोति. परं एतस्य-राशित्रयगतस्य राहोर्द्दशावसाने=दशाया अन्ते उक्तं सकलं फलं विनाशमायाति। अर्थादेव दशारम्भे दशामध्ये च शुभं फलं ज्ञेयम्। तत्रापि 'दशादौ दु;खमाप्नोती' त्युक्तेः दशामध्ये एव तत्फलेन भवितव्यमिति चिन्त्यम्। अर्थात् १।२।४।५। ६।९।१२ एतत्सङ्ख्क राशिपु गतस्य राहोर्दशा समये शुभफला ज्ञेयेति भावः।

यथाफलदीपिकायाम् (१९/१६)—

'पाथोनमीनालिगतस्य राहोर्दशाविपाके महतिं च सौख्यम्।
देशाधिपत्यं नरवाहनासिर्दशावसाने सकलस्य नाशः'॥ १०५-१०८॥

हिन्दी — कर्क-वृप और मेप राशि में राहु हो तो उसकी महादशा में धन-धान्य का लाभ, विद्या-विनोद, राजा से सम्मान प्राप्ति तथा स्त्री-पुत्र का सुख प्राप्त होता है॥ १०५॥

कन्या-मीन तथा धनुराशि में राहु हो तो पुत्र व स्त्री का लाभ, देशाधिपत्य की प्राप्ति और वाहनसुख होता है तथा दशा के अन्त में सबका नाश हो जाता है॥ १०६॥

वृप-कर्क-सिंह और कन्या का राहु हो तो राजा या राजा के सदृश वैभव की प्राप्ति, हाथी-घोड़े से सम्पन्नता, सबजीवों के प्रति उपकारभाव व बहुत धनप्राप्ति हो, सुखी और सुशील हो तथा अपनी स्त्री व पुत्रों में रमा रहे॥ १०७॥

राहु की दशा के प्रारम्भ में दुःख, दशा के मध्य में बहुतसुख तथा दशा के अन्त में पिता या गुरुजन का नाश होता है और पदच्युति होती है॥ १०८॥

गुरु महादशाफल—

स्थानप्राप्तिं वित्तयानाम्बराप्तिं राजस्नेहं वित्तशुद्धिं विभूतिम्।
ज्ञानाचारं पुत्रदारादिलाभं देवाचार्यः स्वे विपाके करोति॥ १०९॥

संस्कृत — स्थानप्राप्तिश्लोकः सरलार्थयुक्तः। यदि गुरुरुच्चस्थो स्वमूलत्रिकोणादौ च भवेत्तदा तद्दशायां शुभतरं फलं स्यात्। परञ्चोच्चगतोऽपि यदि नीचादिनवांशगतो भवेत्तदा दशायां अशुभं फलं भवति। नीचादिदुःस्थानस्थे गुरौ पापं फलं ब्रूयात् परञ्च नीचाराशावपि यद्युच्चनवांशगतो भवेत्तदा फलमुत्तमोत्तमं वाच्यम् (११९ श्लो. द्र.)॥ १०९॥

हिन्दी — गुरु की महादशा में उच्चपद की प्राप्ति, धनप्राप्ति, वाहन की प्राप्ति और वस्त्रप्राप्ति हो। राजसम्मान मिले, चित्त शुद्धि रहे, पुत्र और स्त्री का सुख मिले सदाचारी मन रहे तथा ऐश्वर्य व ज्ञान की वृद्धि हो॥ १०९॥

गुरु में गुरु—

नृपप्रीतिं तथोत्साहं सर्वकार्यार्थसाधनम्।
विद्याविज्ञानमाप्नोति गुरौ गुरुदशान्तरे॥ ११०॥

गुरु में शनि—

द्वेषबुद्धिं मनस्तापं पुत्रमूलाद्धनव्ययम्।
कर्मनाशमवाप्नोति शनौ जीवदशान्तरे॥ १११॥

गुरु में बुध—

वैश्यवर्गेण वित्ताप्तिं राजस्नेहं सुखावहम्।
सत्कर्माचारसिद्धिं च बुधे जीवदशान्तरे॥ ११२॥

गुरु में केतु—

मुक्ताप्रवालभूषाप्तिस्तीर्थयात्राधनायतिः।
गुरुभूपवशादाप्तिः केतौ जीवदशान्तरे॥ ११३॥

गुरु में शुक्र—

वाहनादिधनप्राप्तिं छत्रचामरवैभवम्।
स्त्रीपीडा जनविद्वेषो भृगौ जीवदशान्तरे॥ ११४॥

गुरु में सूर्य—

शत्रुनाशं जयं सौख्यं चित्तोत्साहं धनागमम्।
राजप्रसादमारोग्यं रवौ जीवदशान्तरे॥ ११५॥

गुरु में चन्द्र—

स्त्रीकृतोत्साहमैश्वर्यं राजप्रीतिः सुखावहम्।
दिव्यवस्त्रविभूषाप्तिं चन्द्रे जीवदशान्तरे॥ ११६॥

गुरु में भौम—

कर्मनाशं च संचारं ज्वरतापं महद्भयम्।
धननाशं निरुत्साहं कुजे जीवदशान्तरे॥ ११७॥

गुरु में राहु—

सर्वक्लेशभयं रोगं सर्वोपद्रवकारणम्।
धनच्छेदमवाप्नोति राहौ जीवदशान्तरे॥ ११८॥

गुरु दशा के विशेषफल—

नीचांशोपगतः स्वतुङ्गभवने जीवस्य पाके भयं
चोरारातिनृपैः कलत्रतनयद्वेषं करोत्यश्रियम्।
नीचे तुङ्गनवांशको यदि महाराजप्रसादं सुखं
विद्याबुद्धियशोधनादिविभवं देशाधिपत्यं तु वा॥ ११९॥

संस्कृत — श्लोकास्तु सरलार्था एवेति॥ ११०-११९॥

हिन्दी — गुरु में गुरु—गुरु की दशा में गुरु का अन्तर हो तो नृपप्रीति, उत्साहवृद्धि, सब कार्यों में सफलता, विद्या की वृद्धि एवं विशिष्टज्ञान प्राप्त होता है॥ ११०॥

गुरु में शनि—गुरु दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो मन में ताप, द्वेषबुद्धि, पुत्र के कारण धन-व्यय तथा सबकार्यों का नाश होता है अर्थात् असफलता मिलती है.॥ १११॥

गुरु में बुध—गुरु दशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो वैश्यवर्ग या व्यापारीवर्ग से धनलाभ, राजा की कृपाप्राप्ति, सुखपूर्वक समय व्यतीत हो, सत्कर्म करे और सदाचारी प्रवृत्ति रहती है॥ ११२॥

गुरु में केतु—गुरु दशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो मुक्ता-प्रवाल-भूषण की प्राप्ति, तीर्थयात्रा, गुरु और राजा से धन की प्राप्ति तथा अर्थागम होता है॥ ११३॥

गुरु में शुक्र—गुरु की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो वाहन आदि धन की प्राप्ति, छत्र, चामरादि वैभव की प्राप्ति, पत्नी को पीड़ा और जनविद्वेष होता है॥ ११४॥

गुरु में सूर्य—गुरु की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो शत्रुनाश, जय, सौख्य प्राप्ति, चित्त में सदैव उत्साह, धनागम, राजा की कृपाप्राप्ति और शरीर निरोग रहता है॥ ११५॥

गुरु में चन्द्र—गुरु की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा हो तो स्त्रियों द्वारा चित्त में

उत्साह, ऐश्वर्यलाभ, राजा की कृपा, सुख की प्राप्ति तथा वस्त्र और आभूषण की प्राप्ति होती है॥ ११६॥

गुरु में **मङ्गल**—जब गुरु में मङ्गल का अन्तर रहे तो कर्मनाश, भ्रमण (यात्रा), ज्वर ताप व महाभय तथा धन का नाश होता है और मन में किसी कार्य के लिए उत्साह नहीं रहता॥ ११७॥

गुरु में **राहु**—गुरु में राहु का अन्तर हो तो सब प्रकार के क्लेशों का भय, रोग तथा उपद्रवों के कारण कष्ट एवं धन का नाश होता है॥ ११८॥

यदि गुरु उच्चराशि में हो किन्तु नवांश में नीचराशि का हो तो उसकी दशा में शत्रुओं, चोरों और राजा का भय तथा अशुभ होता है। यदि बृहस्पति नीचराशि का हो किन्तु अपने उच्च नवांश में हो तो महाराजाओं की प्रसन्नता, विद्या, सुख, धन, यश, वैभव, वुद्धि का विस्तार और देशाधिपत्य प्राप्त होता है॥ ११९॥

शनि दशाफल—

शनेर्दशायामजगर्दभोष्ट्रवृद्धाङ्गनापक्षिकुधान्यलाभम् ।
श्रेणीपुरग्रामजनाधिकाराद्धनं वदेन्नीचकुलाधिपत्यम्॥ १२०॥

संस्कृत — शने स्थितिवशात् फलेऽपि न्यूनाधिक्यं ब्रूयात् (श्लो. १३१ द्र.)। स्पष्टार्थः सरलार्थ एवेति॥ १२०॥

हिन्दी — शनि की महादशा में बकरा, गधा, ऊँट, वृद्ध स्त्री, पक्षी और मोटे अन्न का लाभ होता है। श्रेणी, पुर, ग्राम जनाधिकारियों से धनलाभ तथा नीचकुल का अधिपत्य प्राप्त होता है॥ १२०॥

शनि में शनि—

क्लेशादिभिर्व्याधिनिपीडनं च मात्सर्यमानैर्बहुशोकतापम्।
भूपालचौरैर्धनधान्यनाशं करोति मन्दः स्वदशापहारे॥ १२१॥

रवितनयदशायां स्वापहारे विरोधं
नरपतिजनकोपं प्रेष्यवृद्धाङ्गनाप्तिम्।
पशुगणविषभीतिं पुत्रदारादिपीडां
ज्वरपवनकफार्तिं शूलरोगं वदन्ति॥ १२२॥

शनि में बुध—

सुखवित्तयशोवृद्धिं सत्कर्माचारसंपदः।
कृषिवाणिज्यमाप्नोति बुधे मन्ददशान्तरे॥ १२३॥

शनि में केतु—

वातपित्तकृतं रोगं कलहं नीचदुर्जनैः।
दुःस्वप्नभयमाप्नोति केतौ मन्ददशान्तरे॥ १२४॥

शनि में शुक्र—

बन्धुस्नेहं जनप्रीतिं जायावित्तधनायतिम्।
कृष्यादिसुखमाप्नोति भृगौ मन्ददशान्तरे॥ १२५॥

शनि में सूर्य—

पुत्रदारविनाशं च नृपचोरादिपीडनम्।
मनोभयमवाप्नोति भानौ मन्ददशान्तरे॥ १२६॥

शनि में चन्द्र

गुरुस्त्रीमरणं दुःखं बन्धुद्वेषं धनागमम्।
वातरोगमवाप्नोति चन्द्रे मन्ददशान्तरे॥ १२७॥

शनि में भौम—

स्थानच्युतिं महारोगं नानाविधमनोभयम्।
सहोदरसुहृत्पीडां भौमे मन्दशान्तरे॥ १२८॥

शनि में राहु—

सर्वाङ्गरोगसंतापं चोरारिनृपपीडनम्।
धनच्छेदमवाप्नोति राहौ मन्दशान्तरे॥ १२९॥

शनि में गुरु—

देवभूदेवभक्तिं च राजप्रीतिं महत्सुखम्।
स्थानलाभमवाप्नोति गुरौ मन्ददशान्तरे॥ १३०॥

शनिदशा का विशेषफल—

स्वोच्चे नीचनवांशगो रविसुतः कुर्वीत सौख्यं फलं
पाकादौ तु दशावसानसमये कष्टं फलं प्राणिनाम्।
तुङ्गांशोपगते स्वनीचभवने पाकावसाने सुखं
दायादौ रिपुचोरभीतिमधिकं दुःखं विदेशाटनम्॥ १३१॥

संस्कृत — ग्रहाणां स्थितिवैशिष्ट्ये तेषां दशाफलेष्वपि वैशिष्ट्यं स्वबुद्ध्या तर्केण वाच्यमिति। शनिर्यद्युच्चराशौ (तुला) नीच (मेष) राशि नवांशगतो भवेत्तदा दशादौ सौख्यं फलं तथा दशावसाने कष्टं फलं कुर्वीत। तथा च नीच (मेष) राशिस्थितौ स्वकीयोच्च (तुला) राशेर्नवांशगतः शनिः दशावसाने सुखं, दायादौ=दशारम्भे च-रिपु-चोरभीतिमधिकं दुःखं कुरूते॥ १२१-१३१॥

हिन्दी — शनि में शनि—शनि की दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो बहुत दुःख व नाना व्याधियों से क्लेश, चित्त में मात्सर्य व अपमान से बहुत शोक और मनस्ताप हो तथा राजा व चोर से धन एवं धान्य का नाश हो॥ १२१॥

सबसे विरोध, राजकोप प्राप्त हो, मनुष्य को दूत कार्य करना पड़े, वृद्धा स्त्री की प्राप्ति, पशु धन का ह्रास, पुत्र-स्त्री आदि को पीड़ा, स्वयं को ज्वर से पीड़ा तथा वात-कफ जनित पीड़ा और शूलादि रोग होते हैं ॥ १२२ ॥

शनि में **बुध**—शनिदशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो सुख, वित्त, यश की वृद्धि, सत्कर्म व आचारवान् हो, सम्पत्ति मिले, कृषि में उन्नति हो और व्यापार करे ॥ १२३ ॥

शनि में **केतु**—शनिदशा में केतु का अन्तर हो तो वात और पित्तजन्य रोग, नीच और दुर्जनों के साथ कलह तथा दुःस्वप्न से भय हो ॥ १२४ ॥

शनि में **शुक्र**—शनिदशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो बन्धुस्नेह-जनप्रीति, स्त्री से सुख, धन का आगम, मन प्रसन्न रहे तथा नानाप्रकार के सुख प्रारा हों ॥ १२५ ॥

शनि में **सूर्य**—शनि की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो स्त्री और पुत्र का नाश, राजा और चोर से पीड़ा तथा सदैव भय बना रहे ॥ १२६ ॥

शनि में **चन्द्र**—शनिदशा में चन्द्र का अन्तर हो तो गुरु या स्त्री की मृत्यु से दुःख, बन्धुद्वेष, वायुजनित रोग तथा धन का आगम हो ॥ १२७ ॥

शनि में **मङ्गल**—शनिदशा में मङ्गल का अन्तर हो तो स्थानच्युति, महारोग की सम्भावना, नानाप्रकार से मन में भय तथा सहोदरों और मित्रों को पीड़ा होती है ॥ १२८ ॥

शनि में **राहु**—शनि की दशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो सभी अङ्गों में रोग, मनस्ताप, राजा-चोर और शत्रु से पीड़ा तथा धन का नाश होता है ॥ १२९ ॥

शनि में **गुरु**—शनिदशा में गुरु का अन्तर हो तो देव और ब्राह्मणों में भक्ति, राजा की प्रीति, महान सुख प्राप्ति, स्थान का लाभ तथा उत्तमपद की प्राप्ति होती है ॥ १३० ॥

शनि उच्चराशि में किन्तु नीचनवांश में हो तो दशा के आदि में सुख और दशा के अन्त में कष्ट होता है। शनि नीचराशि में किन्तु उच्चनवांश में हो तो दशा के अन्त में शुभफल तथा दशा के प्रारम्भ में शत्रु व चोर से भय, दुःख और परदेश वास कराता है ॥ १३१ ॥

बुध महादशाफल—

स्वकीयदाये गुरुबन्धुमित्रैरर्थार्जनं कीर्तिसुखं करोति।
दौत्यं च सत्कर्महिरण्यपण्यैर्धनायतिं वातरुजं कुमारः ॥ १३२ ॥

संस्कृत — सामान्येन कुमारस्य=बुधस्य शुभफलमेवोक्तं, परञ्च यदि बुधो अशुभस्थानस्थितो भवेत्तदा तद्दशायामशुभफलं भवति।

यथा फलदीपिकायाम् (१९/१०, २४)

'सौम्यः करोति सुहृदागममात्मसौख्यं विद्वत्प्रशंसितयशश्च गुरुप्रसादम्।
प्रागल्भ्यमुक्तिविषयेऽपि परोपकारं जायात्मजादि सुहृदां कुशलं गहत्त्वम् ॥

शशितनयदशायां शश्वदाचार्यबन्धुर्द्विजजनितधनाप्तिः क्षेत्रगोवाजिलाभः।
मनुवरसुरपूजावितसङ्गातसिद्धिः प्रभवति मरुदुष्णश्लेष्मरोगप्रपीडा'॥ १३२॥

हिन्दी — बुधदशा में गुरु-मित्र-बन्धु इन सबसे धनप्राप्ति, कीर्तिवृद्धि और सुखपूर्वक समय व्यतीत होता है। इस महादशा में जातक दूत का कार्य करता है (अच्छी कुण्डली हुई तो विदेश मंत्रालय में राजदूत आदि तथा साधारण हुई तो एजेन्ट आदि का कार्य करता है) इस दशा में सत्कर्म होते हैं। सोने के व्यापार से लाभ होता है परन्तु वात रोग से पीड़ा होती है॥ १३२॥

बुध में बुध—

विचित्रगृहवित्ताप्तिं राजप्रीतिं महत्सुखम्।
सर्वकार्यार्थसंसिद्धिं बुधे सौम्यदशान्तरे॥ १३३॥

बुध में केतु—

बन्धुपीडां मनस्तापं सौख्यहानिमरेर्भयम्।
कार्यनाशमवाप्नोति केतौ सौम्यदशान्तरे॥ १३४॥

बुध में शुक्र—

गुरुदेवाग्निविप्रेषु दानं धर्मप्रियं तपः।
धनवस्त्रविभूषाप्तिं शुक्रे सौम्यदशान्तरे॥ १३५॥

बुध में सूर्य—

वस्त्रभूषणवित्ताप्तिं राजप्रीतिं महत्सुखम्।
धर्मश्रवणमाप्नोति रवौ बुधदशान्तरे॥ १३६॥

बुध में चन्द्र—

रोगारातिजनद्वेषं सर्वकार्यार्थनाशनम्।
चतुष्पाद्भयमाप्नोति चन्द्रे सौम्यदशान्तरे॥ १३७॥

बुध में भौम—

रोगारिभयनाशं च पुण्यकर्मफलं यशः।
राजप्रीतिमवाप्नोति कुजे सौम्यदशान्तरे॥ १३८॥

बुध में राहु—

मित्रबन्धुधनप्राप्तिं सुखविद्याविभूषणम्।
राजप्रीतिमवाप्नोति राहौ सौम्यदशान्तरे॥ १३९॥

बुध में गुरु—

इष्टबन्धुगुरुद्वेषं धनलाभं सुतायतिम्।
रोगादिभयमाप्नोति गुरौ सौम्यदशान्तरे॥ १४०॥

बुध में शनि—

धर्मसत्कर्मवित्तार्तिं सुखमल्पजनाधिपैः।
कृष्यादिनाशमाप्नोति शनौ सौम्यदशान्तरे॥ १४१॥

बुध महादशा के विशेष फल—

उच्चराशिगतः सौम्यो नीचांशकसमन्वितः।
करोति कर्मवैकल्यं निजदाये च वर्धनम्॥ १४२॥
नीचस्थानगतश्चान्द्रिस्तुङ्गांशकसमन्वितः ।
पाकादौ विफलं सर्वं शुभमन्ते प्रयच्छति॥ १४३॥

संस्कृत — श्लोकाः सरलार्था स्पष्टार्थाश्च॥ १३३-१४३॥

हिन्दी — बुध में **बुध**—बुधदशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो सुन्दरघर की प्राप्ति, धन की प्राप्ति, सब कार्य सफलीभूत अर्थात् जो उद्योग हों वे पूर्ण होते हैं॥ १३३॥

बुध में **केतु**—बुध की दशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो बन्धुपीड़ा, मनस्ताप और सुख की हानि, सब कार्य का नाश अर्थात् कार्यों में असफलता मिलती है॥ १३४॥

बुध में **शुक्र**—बुध की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो जातक ब्राह्मणों को द्रव्य तथा अन्न पदार्थ देता है, गुरुओं से भेंट करे, देवताओं को, अग्नि को भेंट चढ़ावे अर्थात् हवन करे, दान करे, धार्मिक कार्य करे, तपस्या करे तथा जातक को वस्त्र और आभूषण की प्राप्ति होवे॥ १३५॥

बुध में **सूर्य**—बुध की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो वस्त्र, आभूषण और धन की प्राप्ति, राजा की कृपा, महानसुख तथा धार्मिक कथा पुराण इत्यादि का श्रवण करे॥ १३६॥

बुध में **चन्द्र**—बुध की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा हो तो सभी लोग द्वेष करे, रोग हो, शत्रुओं से पीड़ा हो, धननाश हो, सब कार्यों में असफलता मिले तथा चतुष्पद से भय अर्थात् चोट लगने का भय हो॥ १३७॥

बुध में **मङ्गल**—बुध की दशा में मङ्गल की अन्तर्दशा हो तो रोग व शत्रु का नाश हो अर्थात् रोग दूर हों और शत्रुओं से भय नहीं रहे, पुण्य कार्य का फल मिले, यश प्राप्त हो तथा राजा की प्रीति प्राप्त हो॥ १३८॥

बुध में **राहु**—बुध की दशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो मित्रों का सहयोग, बन्धुओं से सुख, मित्र और बन्धुओं से धन की प्राप्ति, सुख, विद्या और भूषण प्राप्ति तथा राजा की प्रीति हो॥ १३९॥

बुध में **बृहस्पति**—बुध की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तो मित्र लोगों से द्वेष तथा गुरुजनों व बन्धुओं से वैमनस्य रहे किन्तु धनलाभ हो और पुत्र पैदा हो या पुत्रों से हर्ष हो तथा रोगादि से भय हो॥ १४०॥

बुध में शनि—बुध की दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो धर्म और सत्कर्म हो, धन की प्राप्ति हो, छोटे जनो से सुख मिले तथा कृषि की हानि हो॥ १४१॥

बुध अपनी उच्चराशि में किन्तु नीचनवांश में हो तो कर्म में विफलता हो, कार्य सफल नहीं हो अर्थात् उसके कार्य अधूरे रह जायें॥ १४२॥

बुध नीचराशि का किन्तु उच्चनवांश में हो तो दशा के आरम्भ में सब काम विफल और दशा के अन्त में सब कार्य सफल होते हैं॥ १४३॥

केतु दशाफल—

दीनो नरो भवति बुद्धिविवेकनष्टो
नानाऽऽमयाकुविवर्द्धितदेहतापः ।
पापादिवृद्धिरतिकष्टचरित्रयुक्तः
किञ्चित्सुखी च शिखिनः परिपाककाले॥ १४४॥

संस्कृत — सामान्यतः केतुदशाफलमशुभमेवोक्तम्। यदि केतुः शुभग्रहयुतः शुभग्रहदृष्टश्च भवेत्तदा तद्दशा शुभफलदो भवति। परं यदि पापयुतः पापदृष्टस्तदा अशुभमेव फलं करोति। केतोर्दशाफलं त्रिधा, यथा दशादौ गुरुबन्ध्वार्ति, दशामध्ये धनायतिम्, दशान्ते सुखमाप्नोतीति वाच्यम्। अग्रे विशेषफलं (श्लोक. १५४-१५६) द्रष्टव्यम्॥ १४४॥

हिन्दी — केतु की महादशा में बुद्धि और विवेक नष्ट हो जाते हैं तथा वह जातक दीनहीन हो जाता है। नाना प्रकार के रोगों से पीड़ित होने के कारण शरीर में ताप बढ़ता है। पाप की वृद्धि होती है, अति कष्ट होता है। उसका चरित्र क्रूर हो जाता है तंथा सुख अल्प मात्रा में प्राप्त होता है॥ १४४॥

केतु में केतु—

कलत्रपुत्रमरणं सुखवित्तविनाशनम्।
रिपुभीतिमवाप्नोति केतौ केतुदशान्तरे॥ १४५॥

केतु में शुक्र—

स्त्रीपुत्ररोगकलहं बन्धुमित्रादिनाशनम्।
ज्वरातिसारमाप्नोति शुक्रे केतुदशान्तरे॥ १४६॥

केतु में सूर्य—

मनोभङ्गं शरीरार्तिं विदेशगमनं भयम्।
सर्वकार्यविरोधं च रवौ केतुदशान्तरे॥ १४७॥

केतु में चन्द्र—

दारपुत्रजनालस्यं धनधान्यविनाशनम्।
मनस्तापमवाप्नोति चन्द्रे केतुदशान्तरे॥ १४८॥

केतु में भौम—

पुत्रदारानुजद्वेषं रोगारिनृपपीडनम्।
बन्धुनाशमवाप्नोति कुजे केतुदशान्तरे॥ १४९॥

केतु में राहु—

राजचोरभयं दुःखं सर्वकार्यविनाशनम्।
दुष्टमानवसंवादं राहौ केतुदशान्तरे॥ १५०॥

केतु में गुरु—

देवद्विजगुरुप्रीतिं राजस्नेहं निरामयम्।
भूपुत्रलाभमाप्नोति गुरौ केतुदशान्तरे॥ १५१॥

केतु में शनि—

मनोभयं मनस्तापं स्वबन्धुजनविग्रहम्।
देशत्यागमवाप्नोति शनौ केतुदशान्तरे॥ १५२॥

केतु में बुध—

बन्धुमित्रादिसंयोगं पुत्रदारधनागमम्।
विद्यासुखमवाप्नोति बुधे केतुदशान्तरे॥ १५३॥

केतु दशा के विशेषफल—

शुभग्रहयुतः केतुः स्वदशायां सुखप्रदः।
यदि शोभनसंदृष्टः करोति विपुलं धनम्॥ १५४॥
सपापः कुरुते केतुः स्वपाके दुष्टमानवैः।
भीतिं कृत्रिमरोगाद्यैर्व्यसनं धननाशनम्॥ १५५॥
दशादौ गुरुबन्ध्वार्तिं दशामध्ये धनायतिम्।
दशान्ते सुखमाप्नोति केतोर्द्दायफलं त्रिधा॥ १५६॥

संस्कृत — ग्रहाणां स्थितिविशेषे फलेष्वपि तारतम्येन वैशिष्ट्यं विचिन्त्यमिति। श्लोका सरलार्थाः स्पष्टार्थाश्च॥ १४५-१५६॥

हिन्दी — केतु में **केतु**—केतु की दशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो स्त्री व पुत्र का मरण, सुख और धन का नाश तथा शत्रु का भय सर्वदा बना रहता है॥ १४५॥

केतु में **शुक्र**—केतु की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो तो स्त्री व पुत्र को रोग, कलहबुद्धि बन्धुओं और मित्रों का नाश तथा ज्वर व अतिसार रोग होते हैं॥ १४६॥

केतु में **सूर्य**—केतु की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो चित्तवृत्ति अधीर हो और मन उदास रहे, शरीर में कष्ट हो अर्थात् रोग हो, विदेशगमन हो चित्त में भय हो तथा जातक जो भी कार्य करे उसमें अवरोध हो॥ १४७॥

केतु में **चन्द्र**—केतु की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा हो तो स्त्री और पुत्रजनों में आलस्य, धन धान्य का नाश तथा मन में संताप बढ़े ॥ १४८ ॥

केतु में **भौम**—केतु की दशा में भौम की अन्तर्दशा हो तो पुत्र-स्त्री व छोटे भाई से वैर, रोग-शत्रु और राजा से पीड़ा तथा बन्धुनाश होता है ॥ १४९ ॥

केतु में **राहु**—केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो राजा और चोर से भय व दुःख हो, सब कार्यों का नाश हो तथा दुष्ट मनुष्यों से कलह हो ॥ १५० ॥

केतु में **बृहस्पति**—केतुदशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तो देवताओं, ब्राह्मणों और गुरुजनों में प्रीति रहे, राजा की कृपा हो, शरीर निरोग रहे, भूमि की प्राप्ति हो तथा पुत्रलाभ हो ॥ १५१ ॥

केतु में **शनि**—केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो मन दुःखी रहे और सदैव भय बना रहे तथा अपना देश छोड़ना पड़े ॥ १५२ ॥

केतु में **बुध**—केतु की दशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो बन्धुओं और मित्रों से मिलन, स्त्री से सुख, पुत्र लाभ या पुत्र से सुख तथा विद्या की प्राप्ति होवे ॥ १५३ ॥

केतु शुभ हो तो अपनी दशा में बहुत सुख करता है तथा यदि शुभग्रह से दृष्ट हो तो बहुत धन का आगम कराता है ॥ १५४ ॥

यदि पापग्रह के सहित हो तो अपनी दशा में दुष्ट मनुष्यों से भय, धननाश, कृत्रिम रोगों से शरीर कष्ट तथा दुष्ट व्यसन कराता है ॥ १५५ ॥

केतु की दशा के प्रारम्भ के तृतीयांश में गुरुजनों और बन्धुओं को पीड़ा, मध्य में धन की प्राप्ति तथा अन्त के तृतीयांश में सुख होता है ॥ १५६ ॥

शुक्र महादशाफल—

स्त्रीपुत्रवित्ताप्तिमतीव सौख्यं सुगन्धमाल्यांबरभूषणाप्तिम्।
यानादिभाग्यं नरपालतुल्यं यशः स्वपाके भृगुजः करोति॥ १५७॥

संस्कृत — स्पष्टार्थः सरलार्थः ॥ १५७ ॥

हिन्दी — शुक्र की महादशा होती है तो स्त्री पुत्र की प्राप्ति अथवा उनसे सुख मिलता है। अतिसुख प्राप्ति होती है, सुगन्धित पदार्थ, माल्य, आभूषण, सुन्दर वस्त्र आदि प्राप्त होते हैं, वाहनसुख होता है, भाग्य बढ़ता है, उसके यश का विस्तार बढ़ता है और राजा के सदृश वैभव होता है ॥ १५७ ॥

शुक्र में शुक्र—

शय्यास्त्रीधनवस्त्राप्तिं धर्मादिसुखसंपदः।
रिपुनाशं यशोलाभं शुक्रे शुक्रदशान्तरे॥ १५८॥

शुक्र में सूर्य—

मूर्धोदराक्षिरोगं च कृषिगोवित्तनाशनम्।
नृपक्रोधमवाप्नोति रवौ शुक्रदशान्तरे॥ १५९॥

शुक्र में चन्द्र—

शीर्षोष्णरोगसन्तापं कामादि रिपुपीडनम्।
किञ्चित् सुखमवाप्नोति चन्द्रे शुक्रदशान्तरे॥ १६०॥

शुक्र में भौम—

पित्रासृगक्षिरोगं च चित्तोत्साहं धनागमम्।
दारभूलाभमाप्नोति कुजे शुक्रदशान्तरे॥ १६१॥

शुक्र में राहु—

नीलवस्तुधनप्राप्तिं बन्धुद्वेषं सुहृद्भयम्।
अग्निबाधामवाप्नोति राहौ शुक्रदशान्तरे॥ १६२॥

शुक्र में गुरु—

धनवस्त्रविभूषाप्तिं धर्माचारं सुखावहम्।
स्त्रीसुतार्तिं च वैषम्यं गुरौ शुक्रदशान्तरे॥ १६३॥

शुक्र में शनि—

वृद्धस्त्रीजनसंभोगं गृहक्षेत्रधनागमम्।
शत्रुनाशमवाप्नोति मन्दे शुक्रदशान्तरे॥ १६४॥

शुक्र में बुध—

सुतमित्रसुखार्थाप्तिं नृपप्रीतिं महत्सुखम्।
शुभमारोग्यमाप्नोति बुधे शुक्रदशान्तरे॥ १६५॥

शुक्र में केतु—

कलहं बन्धुनाशं च शत्रुपीडां मनोभयम्।
धनच्छेदमवाप्नोति केतौ शुक्रदशान्तरे॥ १६६॥

शुक्रदशा के विशेषफल—

उच्चराशिं गतः शुक्रो नीचांशकसमन्वितः।
स्वपाके धननाशं च कुर्वीत पदविच्युतिम्॥ १६७॥
भार्गवो नीचराशिस्थः स्वोच्चांशकसमन्वितः।
स्वदाये कृषिवाणिज्यं धनलाभं प्रयच्छति॥ १६८॥

संस्कृत — ग्रहाणां स्थितिबलादपि फले न्यूनाधिक्यं विचार्यमिति। श्लोकास्तुसरलार्थयुक्ता एव।

यथा भगवान गार्गिः (वृ.जा.भट्टो. ८/५)

'सर्वैर्बलैरुपेतस्य परमोच्चगतस्य च।
सम्पूर्णाख्या दशा ज्ञेया धनारोग्यविवर्धिनी॥

सर्वैर्बलैर्विहीनस्य नीचराशिगतस्य च।
रिक्ता नाम दशा ज्ञेया धनारोग्यविनाशिनी॥
स्वोच्चराशिगतस्याथ किञ्चिद्बलयुतस्य च।
पूर्णा नाम दशा ज्ञेया धनवृद्धिकरी शुभा॥
यः स्यात्परमनीचस्थस्तथा चारिनवांशके।
तस्यानिष्टफला नाम व्याध्यनर्थविवर्धिनी'॥

तथा च सारावली (४०/१६)—

'स्वोच्चस्वराशिनिजभागसुहृद्गृहस्थाः सम्पूर्णवीर्यरुचिरा बलिनः स्वकाले।
मित्रोच्चभागसहिताः शुभदृष्टियुक्ताः श्रेष्ठां दशां विदधति स्ववयः सुखेटाः॥
नीचशत्रुगृहं प्राप्ताः शत्रुनिम्नांशसूर्यगाः।
विवर्णाः पापसम्बन्धा दशां कुर्युरशोभनाम्'॥ १५८-१६८॥

हिन्दी — शुक्र में **शुक्र**—शुक्र की दशा में शुक्र की ही अन्तर्दशा में मनुष्य को शय्या-स्त्री-धन-वस्त्र की प्राप्ति, धनागम, धर्म व सुख सम्पत्ति की प्राप्ति, शत्रुओं का नाश तथा यश और लाभ अधिकाधिक होता है॥ १५८॥

शुक्र में **सूर्य**—शुक्र की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो सिर में पेट में और आँखों में रोग, कृषि का नाश तथा जातक पर राजा का कोप होता है॥ १५९॥

शुक्र में **चन्द्रमा**—शुक्र की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा हो तो सिर में गर्मी का रोग, मनस्ताप, कामवृद्धि और शत्रुओं से पीड़ा होती है तथा थोड़ा सुख प्राप्त होता है॥ १६०॥

शुक्र में **भौम**—शुक्र की दशा में भौम की अन्तर्दशा हो तो पित्त के कारण रक्त दूषित होकर आँखों में रोग करता है, चित्त में उत्साह, धनागम तथा स्त्री-भूमि का लाभ होता है॥ १६१॥

शुक्र में **राहु**—शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तो नीली वस्तु की प्राप्ति, धनागम, बन्धुओं से द्वेषवृद्धि, मित्रों से भय तथा अग्निबाधा होती है॥ १६२॥

शुक्र में **बृहस्पति**—शुक्र की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा हो तो धन, वस्त्र और भूषण की प्राप्ति होवे धार्मिक प्रवृत्ति रहे, सुख प्राप्त हो, किन्तु स्त्री और पुत्र को कष्ट हो तथा लोगों से मनोमालिन्य बढ़े॥ १६३॥

शुक्र में **शनि**—शुक्र की दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो जातक अपनी उम्र से बड़ी स्त्री से प्रेम करे, गृह और भूमि में वृद्धि हो तथा शत्रुनाश हो॥ १६४॥

शुक्र में **बुध**—शुक्र की दशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो पुत्र-मित्र और सुख की प्राप्ति, धनागम, राजा की कृपा, बहुत सुखप्राप्ति, शरीर निरोग रहे तथा सभी शुभकार्य होते हैं॥ १६५॥

शुक्र में केतु—शुक्र की दशा में केतु की अन्तर्दशा हो तो कलह और बन्धुनाश, शत्रुसे पीड़ा, मन में भय तथा धननाश होता है॥ १६६॥

यदि शुक्र उच्चराशि में हो किन्तु नीचनवांश में हो तो उसकी दशा में धन नाश और पदच्युति होती है॥ १६७॥

शुक्र यदि नीच राशि में किन्तु उच्चनवांश में हो तो उसकी दशा में कृषि बढ़ती है। वाणिज्य का विस्तार होता है और धनलाभ होता है॥ १६८॥

दशाफल में विशेषता—

सम्यग्बलिनःस्वतुङ्गभागे सम्पूर्णा बलवर्जितस्य रिक्ता।
नीचांशगतस्य शत्रुभागे ज्ञेयाऽनिष्टफला दशाप्रसूतौ॥ १६९॥
तत्तद्भावार्थकामेशदशास्वन्तर्दशासु च।
तत्तद्भावविनाशः स्यात् तद्युतेक्षककारकैः॥ १७०॥
त्रिकोणधनलाभस्था बलिनो यदि शोभनाः।
स्वदशान्तर्दशाकाले कुर्वन्ति विपुलं सुखम्॥ १७१॥

संस्कृत — अत्र पूर्वोक्तानां दशान्तर्दशानां ग्रहस्थितिवशेन शुभाशुभत्व-माह। प्रसूतौ=जातकानां जन्मकाले सम्यग्बलिनः=पूर्वोक्तैर्बलैर्युक्तस्य स्वतुङ्गभागे (परमोच्चांशे) स्थितस्य ग्रहस्य सम्पूर्णानाम्नी दशा भवति। सा दशा धनारोग्यविवर्धिनी भवति। यथा भगवान् गार्गिः (बृ.जा.भट्टो ८/५)—

सर्वैर्बलैरूपेतस्य परमोच्चगतस्य च।
सम्पूर्णाख्या दशा ज्ञेया धनारोग्यविवर्धिनी॥

यश्चोच्चराशिगतो न परमोच्चांशगतस्तथा यो ग्रहो न पूर्णबलैर्युतः किन्तु किञ्चिदूनबलयुतो भवति तस्य पूर्णा नाम दशा शुभा धनवृद्धिकरी च भवति। यथा (बृ.जा.भट्टो. ८/५)—

"स्वोच्चराशिगतस्याथ किञ्चिद्बलयुतस्य च।
पूर्णा नाम दशा ज्ञेया धनवृद्धिकरी शुभा"॥

यो ग्रहो बलवर्जितस्तस्य=उक्तैर्बलैर्हीनस्य, नीचराशिगतस्यापि ग्रहस्या रिक्ता नाम्नी दशा भवति। तस्यां दशायां नराणां धनहानिः, रोगभयं च भवति। यथा गार्गिः (बृ.जा.भट्टो. ८/५)—

सर्वैर्बलैर्विहीनस्य नीचराशिगतस्य च।
रिक्ता नाम दशा ज्ञेया धनारोग्यविनाशिनी॥

यो ग्रहो नीचांशगतः (परमनीचभागे स्थितः स्यात्तस्य, तथा शत्रुभागे= यत्र तत्र राशौ रिपुराशिनवांशगतो भवेत्तस्य ग्रहस्यानिष्टफला दशा ज्ञेया। तस्यां दशायां सर्वथा अनिष्टमेव फलं भवति। तथा च (बृ.जा.भट्टो. ८/५)—

यः स्यात्परमनीचस्थस्तथा चारिनवांशके।
तस्यानिष्टफला नाम व्याध्यनर्थविवर्धिनी॥

अतः फलादेका विदुषा प्रथमं जन्मकालिकीं ग्रहस्थितिं विचार्य फलमादेश्यम्। यथा पूर्वं सामान्येनोक्ते दशाफले शुभग्रहस्य दशायां शुभफलान्ये-वोक्तानि। परञ्च यदि जन्मकाले नीचगतोविबलो वा शुभग्रहो भवेत्तदा तद्दशायां न तदुक्तं शुभफलं स्यादिति ज्ञेयम्। एवमेव सर्वत्र फलादेशे तारतम्यं कर्त्तव्यम्।

तत्तद्भावस्यार्थेशः=द्वितीयेशः तथा कामेशः=सप्तमेशो यो ग्रहः स्यात् तस्य दशासु-अन्तर्दशासु च तत्तद्भावस्य हानिर्ज्ञेया। द्वितीयेशेन सप्तमेशेन च युक्ता वा दृष्टा यदि तत्तद्भावस्य कारकग्रहास्तदा तैरपि तत्तद्भावस्य हानिर्ज्ञेया। अर्थात्तद्दशास्वन्तर्दशासु च तत्तद्भावस्य हानिं ब्रूयादिति (कारकग्रहाः २/५१ श्लोके द्रष्टव्याः)। बलिनः=बलैर्युक्ताः, शोभनाः=शुभग्रहाः, यदि जन्मलग्नात् त्रिकोण-धन-लाभ (५/९/२/११) गता भवेयुस्तदा ते ग्रहा स्वस्वदशान्त-र्दशाकाले विपुलं सुखं कुर्वन्ति॥ १६९-१७१॥

हिन्दी — जो ग्रह सम्यक् प्रकार से बलवान होते हैं, अपने उच्च अंश में होते हैं उनकी दशा **सम्पूर्ण** संज्ञक होती है, ऐसी दशायें पूर्णशुभ होती हैं और सुख समृद्धि करती हैं। जो ग्रह बलहीन हो उसकी दशा **रिक्ता** संज्ञक होती हैं, उसमें धनहानि और रोगभय होता है। जो ग्रह नीचराशि या नीच अंश में हो और शत्रु घर में हो उसकी दशा अतीव कष्टकारक **अनिष्टफलासंज्ञक** होती है॥ १६९॥

किसी भी भाव से गिनने पर उससे दूसरे और सातवें भाव के स्वामी की दशा हो तो उसभाव का विनाश होता है। किसी भी भाव से द्वितीय और सप्तम के अधिपति यदि किसी ग्रह के साथ हों या उसभाव को देखे तो उसकी दशा में भाव की हानि होती है। यदि उसभाव के कारक को उसभाव से द्वितीय और सप्तम के अधिपति देखें या उसभाव कारक के साथ हों तो विशेष हानि होती है। अर्थात् विचारणीय भाव से जिन बातों का विचार किया जाता है, उनके लिए उसभाव से द्वितीय और सप्तम मारक स्थान होता है। जैसे द्वितीयभाव या धनभाव का विचार करना हो तो धनभाव से द्वितीय अर्थात् तृतीयभाव की दशा अच्छी नहीं होगी। इसी प्रकार धनभाव से सप्तम अर्थात् अष्टमभाव के स्वामी की दशा भी अच्छी नहीं होगी। अगर छठे भाव का विचार करना हो तो छठे से द्वितीय, सप्तम भाव के स्वामी की दशा और छठे से सप्तम अर्थात् बारहवें भाव के स्वामी की दशा अच्छी नहीं होगी ऐसा समझें।

एक अर्थ यह भी होता है कि उस उस भाव से धनेश और सप्तमेश की दशा और अन्तर्दशा में उससे युक्त दृष्ट तत्तद भावों का नाश होता है॥ १७०॥

त्रिकोण-धन व लाभ में स्थित शुभग्रह यदि बली हों तो अपनी दशा अन्तर्दशा में बहुत धन देंते हैं और सुख प्रदान करते हैं॥ १७१ ॥

अष्टादशाध्यायिनि सर्वहोरासमुद्धृते जातकपरिजाते।
राशिस्वरूपादि दशाफलान्तं प्रोक्तं मया भानुमुखप्रसादात्॥ १७२ ॥

इति श्रीनवग्रहकृपया वैद्यनाथविरचिते जातकपरिजाते
दशाफलाध्याय अष्टादशः॥ १८ ॥

संस्कृत — उपसंहारमाह— अष्टादशाध्यायिनि = अष्टादशाध्याया विद्यन्ते यस्मिन्न ग्रन्थेअष्टादशाध्याये तस्मिन् (अत्र ग्रन्थे अष्टादशाध्याया आचार्येणकृताः) सर्वहोरासमुद्धते=सर्वेभ्यो होराशास्त्रेभ्य, समुद्धतः सङ्कलितो यस्तस्मिन् (सर्वेषां होराग्रन्थानां सारं सङ्कल्यायं ग्रन्थो विरचितः यथा ग्रन्थारम्भे—गर्गपराशरादिरचितं सङ्गृह्य होराफलमिति) 'जातकं पारिजाते' राशिस्वरूपादि दशाफलान्तं=यस्यादौ राशीनां स्वरूपाणि, अन्ते च दशाफलानि विद्यन्ते तत् सकलं भानुमुखप्रसादात्=भानुः सूर्यो मुखं प्रधानो येषु ते भानुमुखाः=सूर्यादयो नव ग्रहास्तेषां प्रसादात्=कृपावशात्, मया=श्रीवैद्यनाथेन (ग्रन्थकर्त्ता) प्रोक्तं=उक्तमिति॥ १७२ ॥

''प्रज्ञावर्द्धिनी'' संस्कृतटीकायां जातकपारिजातस्य
दशाफलाध्याय अष्टादशः॥

हिन्दी — होराशास्त्र से सार लेकर इस जातकपरिजात ग्रन्थ में मैंने अठारह अध्यायों में राशिस्वरूप से दशाफल तक सब विषयों का वर्णन किया है जो यह सब सूर्यादि नवग्रहों की कृपा से हुआ है॥ १७२ ॥

सत्येन्द्रमिश्रकृत प्रज्ञावर्द्धिनी हिन्दीटीका में जातक पारिजात का
दशाफलाध्याय अष्टादशसमाप्त।

* * *

उपसंहारः

शाखाभिरष्टादशसंख्यकाभिरध्यायरूपाभिरतिप्रकाशः ।
ज्योतिर्मयः सर्वफलप्रधानः संकीर्तितो जातकपरिजातः॥ १ ॥

उक्तं राशिगुणालयं ग्रहगतिस्थानस्वभावाकृति-
राधानादिसमस्तजीवजननं बालाद्यनिष्टाकरम्।
आयुर्ज्जातकभङ्गयोगजविधिः श्रीराजयोगादिजो
द्वित्र्यादिग्रहयोगजः शुभकरो मान्द्यब्दजं च क्रमात्॥ २ ॥

पश्चादष्टकवर्गबिन्दुगणितं होराधनस्थानजं
दुश्चिक्यावनिभावजं सुतरिपुस्थानप्रयुक्तं फलम्।
कन्दर्पाष्टमधर्मराशिजनितं व्यापारलाभान्त्यजं
नारीजातकलक्षणं निगदितं चक्रं दशान्तर्द्दशा॥ ३ ॥

श्रीविद्याधिकवेङ्कटाद्रितनयः श्रीवैद्यनाथःसुधी-
रादित्यादिसमस्तखेटकृपया विद्वज्जनप्रीतये।
होरासिन्धुसमुद्धृतामृतमयीमष्टादशाध्यायिनीं
चक्रे जातकपारिजातसरणिं गीतोत्सुकश्लोकिनीम्॥ ४ ॥

संस्कृत — अयं ग्रन्थः जातकपारिजातः=जातकेषु पारिजातः (कल्पवृक्षः) अध्यायरूपा-भिरष्टादशशाखाभिर्युतोऽतिप्रकाशको दोषादिरहितो ज्योतिर्मयो ज्योतींषि ग्रहनक्षत्रादयस्तन्मयः ग्रहनक्षत्रविषयैस्संयुतः, सर्व-फलप्रधानः मानवजीवने जन्मादिनिधनान्तं यावत् यत्फलमस्ति तत्कथने विशेषतः अयं सङ्कीर्त्तितः।

अस्मिन् ग्रन्थे १. राशिगुणस्वरूपम् २. ग्रहनामस्वरूपगुणभेदकम्, ३. आधानादिजन्माध्याय. ४. बालाद्यरिष्टाध्यायः, ५. आयुर्दायाध्यायः, ६. जातकभङ्गः, ७. राजयोगाध्यायः ८. द्वयाद्रिग्रहयोगाध्यायः, ९. मान्द्याब्दि फलाध्यायः, १०. अष्टकवर्गः, ११. प्रथमद्वितीयभाव फलाध्यायः, १२. तृतीय चतुर्थ भावफलाध्यायः, १३. पंचमषष्ठ भावफलाध्यायः, १४. सप्तम-अष्टम-नवम भावफलाध्यायः, १५. दशमैकादशद्वादशभावफलाध्यायः, १६. स्त्रीजातकम्, १७. कालचक्रदशा, १८. तथा च दशाऽन्तर्दशाफलाध्यायः एते किल अष्टादशाध्याया अस्मिन्ग्रन्थें संकीर्तिता सन्ति।

सर्वार्थचिन्तामणि नाम्नो ज्योतिष ग्रन्थस्य कर्तुः विविधविद्या पारङ्गतस्य श्री वेकटाद्रिनाम्नों विदुषस्तनूजन्मा दैवज्ञ श्री वैद्यनाथः सूर्यादि नवग्रहाणां प्रसादात्

विद्वज्जनानां प्रीतये हेरा स्कन्ध समुद्रमन्थनवशात् निस्सरित अमृतकलशरूपा अष्टादशाध्याययुक्तां गीतोत्सुकश्लोकिनीम् (श्रावणात्कर्णेन्द्रियह्लादिकारूपा) जातकपरिजात सरणिं चक्रे=रचितवानिति। कटपयादि संख्या विधिना "गीतोत्सुकशब्दस्य संख्या ज्ञानाय गी=३, त=६, स=७, क=१=१७६३ संख्या भवति, परञ्चसाम्प्रतिके अस्मिन्ग्रन्थे १९१५ श्लोका: उपलभ्यन्ते। अत: अनुमीयते यत् १५२ श्लोका: कालान्तरेण कैश्चित् प्रक्षिप्ता एव॥ १-४॥

"प्रज्ञावर्द्धिनी" संस्कृतटीकायां जातकपारिजात ग्रन्थः समाप्तः ॥

हिन्दी — जातक **"परिजात"** वृक्ष के तुल्य है, अध्यायरूपी इसकी अठारह शाखाएँ हैं जिनके नाम निम्नलिखित हैं। १. **राशिशील**—जिसमें राशियों के समस्त प्रकृति और स्वभाव दिये गये हैं। २. **ग्रहस्वरूपगुण**—इसमें ग्रहों के स्वरूप और गुण विस्तार से समझा दिये गये हैं। ३. **वियोनिजन्म**—इसमें पशु-पक्षी आदि की उत्पत्ति दी गई है। ४. **बालारिष्ट**—इसमें बालकों के अरिष्ट का वर्णन है। ५. **आयुर्दाय**—इसमें आयु का अनेक प्रकार से विचार है। ६. **जातकभंग**—इसमें रेका, सोम आदि राजयोग के भंगयोग दिये गये हैं। (७) **राजयोगाध्याय**—इसमें नाना प्रकार के राजयोग हैं। ८. **ग्रहाश्रयफलाध्याय**—इसमें ग्रहों के राशि व भाव में बैठने का फल है। ९. **मान्द्यब्दादिफल**—इसमें मान्दि का फल और अब्द फल अर्थात् किस वर्ष में जातक पैदा हुआ है उसका फल विस्तारपूर्वक दिया गया है। १०. **अष्टकवर्ग**—इसमें अष्टकवर्ग के विषय में विस्तृत व्याख्या है। ११. **प्रथम-द्वितीय भावफल**—इसमें लग्न और द्वितीयभाव की विस्तृत विवेचना है। १२. **तृतीय-चतुर्थ भावफल**— इसमें तृतीय और चतुर्थभाव के फल हैं। १३. **पञ्चम-षष्ठ भावफल**—इसमें पाँचवें और छठे भाव से फलों का विचार किया गया है। १४. **सप्तमाष्टमनवम भावफल**—इसमें कलत्र-आयु और भाग्य के विषय में फलादेश है। १५. **कर्मलाभव्ययभाव**—इसमें दशमभाव ग्यारहवें भाव एवं व्ययभाव का विस्तारपूर्वक फल समझाया गया है। १६. **स्त्री जातक**—इसमें स्त्रियों की जन्मकुण्डली का विशेष विचार है। १७. **कालचक्रदशा**—इसमें कालचक्रदशा का साधन और उसका फल है। १८. **दशाफलाध्याय**—इसमें ग्रहों की महादशा और अन्तर्दशा का फल का विवेचन है।

विद्वान श्री वेङ्कटाद्रि के पुत्र **वैद्यनाथ** ने यह जातकपरिजात नवग्रह की कृपा से पूर्ण किया। विद्वानों को इस ग्रन्थ से प्रेम-स्नेह होगा यह मैं (वैद्यनाथ) आशा करता हूँ। होरासिन्धु को मथकर मैंने यह अमृत निकाला है जिसमें अठारह अध्याय हैं। यह ज्योतिष का फलकथन हेतु अनुपम ग्रन्थ है॥ १-४॥

सत्येन्द्रमिश्रकृत प्रज्ञावर्द्धिनी हिन्दीटीका में
जातकपारिजात ग्रन्थ समाप्त हुआ।

		सव्यवाक्य (राशिबोधक)								
अश्विनी-पुनर्वसु-हस्त मूल-पूर्वाभाद्र	चरण १	पौ=१=मे	रं=२=वृ	गा=३=मि	वो=४=क	मा=५=सिं	ता=६=क	स=७=तु	हो=८=वृ	धि=९=ध
	चरण २	न=१०=म	क्ष=११=कुं	त्र=१२=मी	दा=८=वृ	सी=७=तु	च=६=क	र्व=४=क	ण=५=सिं	ग:=३=मि
	चरण ३	रु=२=वृ	पो=१=मे	त्र=१२=मी	क्षु:=११=कुं	नि=१०=म	धा=९=ध	य=१=मे	रं=२=वृ	गं=३=मि
	चरण ४	वा=४=क	णी=५=सिं	च=६=क	स्थं=७=तु	द=८=वृ	धि=९=ध	न=१०=म	क्ष=११=कुं	त्र=१२=मी
भरणी-पुष्य-चित्रा पूर्वाषाढा-उत्तराभाद्र	चरण १	हं=८=वृ	स=७=तु	श्च=६=क	व=४=क	शां=५=सिं	ब=३=मि	र=२=वृ	पो=१=मे	त्र=१२=मी
	चरण २	क्ष=११=कु	त्रा=१०=म	धी=९=ध	क=१=मे	र=२=वृ	गो=३=मि	मी=४=क	मा=५=सिं	च=६=क
	चरण ३	सु=७=तु	द=८=वृ	धि=९=ध	न=१०=म	क्ष=११=कुं	त्र=१२=मी	ज=८=वृ	सि=७=तु	त:=६=क
	चरण ४	वा=४=क	मां=५=सिं	गा=३=मि	र=२=वृ	को=१=मे	त्र=१२=मी	क्षु:=११=कुं	नि=१०=म	धि=९=ध
कृतिका-श्लेषा-स्वाती उत्तराषाढा-रेवती	चरण १	पौ=१=मे	रं=२=वृ	गा=३=मि	वो=४=क	मा=५=सिं	ता=६=क	स=७=तु	हो=८=वृ	धि=९=ध
	चरण २	न=१०=म	क्ष=११=कुं	त्र=१२=मी	दा=८=वृ	सि=७=तु	च=६=क	र्व=४=क	ण=५=सिं	ग:=३=मि
	चरण ३	रु=२=वृ	पो=१=मे	त्र=१२=मी	क्षु:=११=कुं	नी=१०=म	धा=९=ध	य=१=मे	रं=२=वृ	गं=३=मि
	चरण ४	वा=४=क	णी=५=वृ	च=६=क	स्थं=७=तु	द=८=वृ	धि=९=ध	न=१०=म	क्ष=११=कुं	त्रं=१२=मी

अपसव्यवाक्य (राशिबोधक)										
रोहिणी-मघा विशाखा-श्रवण	चरण १	ध=९=ध	न=१०=म	क्षे=११=कुं	त्र=१२=मी	प=१=मे	रां=२=वृ	ग=३=मि	मी=५=सिं	व=४=क
	चरण २	ता=६=क	सा=७=तु	द=८=वृ	त्र=१२=मी	क्षु=११=कुं	नि=१०=म	धि:=९=ध	दा=८=वृ	सा=७=तु
	चरण ३	च=६=क	र्मी=५=सिं	भो=४=क	गि=३=मि	रा=२=वृ	य=१=मे	ध=९=ध	न=१०=म	र्क्षे=११=कुं
	चरण ४	त्र=१२=मी	यो=१=मे	रा=२=वृ	गि=३=मि	मा=५=सिं	भे=४=क	त्ता=६=क	स=७=तु	ह=८=वृ
मृगशिरा-पूर्वफाल्गुनी अनुराधा-धनिष्ठा	चरण १	त्र=१२=मी	क्षु=११=कुं	नि=१०=म	धि=९=ध	दा=८=वृ	स=७=तु	स्त=६=क	मे=५=सिं	व=४=क
	चरण २	गि=३=मि	रा=२=वृ	यु=१=मे	ध=९=ध	न=१०=म	क्ष=११=कुं	त्र=१२=मी	प=१=मे	र:=२=वृ
	चरण ३	गो=३=मि	मां=५=सिं	वा=४=क	ची=६=क	स=७=तु	दा=८=वृ	त्रि:=१२=मी	क्षु=११=कुं	ने=१०=म
	चरण ४	धि=९=ध	ज=८=वृ	सि=७=तु	त=६=क	मी=५=सिं	वा=४=क	गां=३=मि	रि=२=वृ	का=१=मे
आर्द्रा-उत्तराफाल्गुनी ज्येष्ठा-शतभिषा	चरण १	त्र=१२=मी	क्षु=११=कुं	नि=१०=म	धि=९=ध	दा=८=वृ	स=७=तु	स्त=६=क	मे=५=सिं	व=४=क
	चरण २	गि=३=मि	रा=२=वृ	यु=१=मे	ध=९=ध	न=१०=म	क्ष=११=कुं	त्र=१२=मी	प=१=मे	र:=२=वृ
	चरण ३	गो=३=मि	मां=५=सिं	वा=४=क	ची=६=क	स=७=तु	दा=८=वृ	त्रि:=१२=मी	क्षु=११=कुं	ने=१०=म
	चरण ४	धि=९=ध	ज=८=वृ	सि=७=तु	त=६=क	मी=५=सिं	वा=४=क	गां=३=मि	रि=२=वृ	का=१=मे

सव्य

	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृत्तिका			
चन्द्रमा	०/३/२०	०/६/४०	०/१०/०	०/१३/२०	०/१६/४०	०/२०/०	०/२३/२०	०/२६/४०	१/०/०	१/३/२०	१/६/४०	१/१०/०
नक्षत्र	पुनर्वसु				पुष्य				श्लेषा			
चन्द्रमा	२/२३/२०	२/२६/४०	३/०/०	३/३/२०	३/६/४०	३/१०/०	३/१३/२०	३/१६/४०	३/२०/०	३/२३/२०	३/२६/४०	४/०/०
नक्षत्र	हस्त				चित्रा				स्वाती			
चन्द्रमा	५/१३/२०	५/१६/४०	५/२०/०	५/२३/२०	५/२६/४०	६/०/०	६/३/२०	६/६/४०	६/१०/०	६/१३/२०	६/१६/४०	६/२०/०
नक्षत्र	मूल				पूर्वाषाढ़ा				उत्तराषाढ़ा			
चन्द्रमा	८/३/२०	८/६/४०	८/१०/०	८/१३/२०	८/१६/४०	८/२०/०	८/२३/२०	८/२६/४०	९/०/०	९/३/२०	९/६/४०	९/१०/०
नक्षत्र	पूर्वाभाद्र				उत्तराभाद्र				रेवती			
चन्द्रमा	१०/२३/२०	१०/२६/४०	११/०/०	११/३/२०	११/६/४०	११/१०/०	११/१३/२०	११/१६/४०	११/२०/०	११/२३/२०	११/२६/४०	१२/०/०
देहाधीश	भौम	शनि	शुक्र	चन्द्र	भौम	शनि	शुक्र	चन्द्र	भौम	शनि	शुक्र	चन्द्र
जीवाधीश	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु
अंश	मेषांश	वृषांश	मिथुनांश	कर्कांश	सिंहांश	कन्यांश	तुलांश	वृश्चिक	धनुरंश	मकरांश	कुंभांश	मीनांश
दशावर्ष	१००	८५	८३	८६	१००	८५	८३	८६	१००	८५	८३	८६

अपसव्य

	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
नक्षत्र	रोहिणी				मृगशिरा				आर्द्रा			
चन्द्रमा	१/१३/२०	१/१६/४०	१/२०/०	१/२३/२०	१/२६/४०	२/०/०	२/३/२०	२/६/४०	२/१०/०	२/१३/२०	२/१६/४०	२/२०/०
नक्षत्र	मघा				पूर्वाफाल्गुनी				उत्तराफाल्गुनी			
चन्द्रमा	४/३/२०	४/६/४०	४/१०/०	४/१३/२०	४/१६/४०	४/२०/०	४/२३/२०	४/२६/४०	५/०/०	५/३/२०	५/६/४०	५/१०/०
नक्षत्र	विशाखा				अनुराधा				ज्येष्ठा			
चन्द्रमा	६/२३/२०	६/२६/४०	७/०/०	७/३/२०	७/६/४०	७/१०/०	७/१३/२०	७/१६/२०	७/२०/०	७/२३/२०	७/२६/४०	८/०/०
नक्षत्र	श्रवण				धनिष्ठा				शतभिषा			
चन्द्रमा	९/१३/२०	९/१६/४०	९/२०/०.	९/२३/२०	९/२६/४०	१०/०/०	१०/३/२०	१०/६/४०	१०/१०/०	१०/१३/२०	१०/१६/४०	१०/२०/०
नक्षत्र												
चन्द्रमा												
देहाधीश	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु	गुरु	बुध	बुध	गुरु
जीवाधीश	चन्द्र	शुक्र	शनि	भौम	चन्द्र	शुक्र	शनि	भौम	चन्द्र	शुक्र	शनि	भौम
अंश	वृश्चिकांश	तुलांश	कन्यांश	सिंहांश	कर्कांश	मिथुनांश	वृषांश	मेषांश	मीनांश	कुंभांश	मकरांश	धनुरंश
दशावर्ष	८६	८३	८५	१००	८६	८३	८५	१००	८६	८३	८५	१००

कालचक्रदशा **सव्यचक्र** (स्पष्टचन्द्र के अनुसार दशाज्ञान)

मेषांश	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	१०० वर्ष	०।३।२८ घ	२।२३।२० घ	५।१३।२० घ	८।३।२० घ	१०।२३।२० घ
वृषांश	मकर ४	कुंभ ४	मीन १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	कर्क २१	सिंह ५	मिथुन ९	८५ वर्ष	०।६।४० घ	२।२६।४० घ	५।१६।४० घ	८।६।४० घ	१०।२६।४० घ
मिथुनांश	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुंभ ४	मकर ४	धनु १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	८३ वर्ष	१।२०।० घ	३।०।० घ	५।२०।० घ	८।२०।० घ	११।०।० घ
कर्कांश	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुंभ ४	मीन १०	८६ वर्ष	०।१३।२० घ	३।३।२० घ	५।२३।२० घ	८।१३।२० घ	११।३।२० घ
सिंहांश	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	कर्क २१	सिंह ५	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	मीन १०	१०० वर्ष	०।१६।४० घ	३।६।४० घ	५।२६।४० घ	८।१६।४० घ	११।६।४० घ
कन्यांश	कुंभ ४	मकर ४	धनु १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	८५ वर्ष	०।२०।० घ	३।२०।० घ	६।०।० घ	८।२०।० घ	११।२०।० घ
तुलांश	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुंभ ४	मीन १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	८३ वर्ष	०।२३।२० घ	३।१३।२० घ	६।३।२० घ	८।२३।२० घ	११।१३।२० घ
वृश्चिकांश	कर्क २१	सिंह ५	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुंभ ४	मकर ४	धनु १०	८६ वर्ष	०।२६।४० घ	३।१६।४० घ	६।६।४० घ	८।२६।४० घ	११।१६।४० घ
धनुरंश	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	१०० वर्ष	१।०।० घ	३।२०।० घ	६।१०।० घ	९।०।० घ	११।२०।० घ
मकरांश	मकर ४	कुंभ ४	मीन १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	कर्क २१	सिंह ५	मिथुन ९	८५ वर्ष	१।३।२० घ	३।२३।२० घ	६।१३।२० घ	९।३।२० घ	११।२३।२० घ
कुंभांश	वृष १६	मेष ७	मीन १०	कुंभ ४	मकर ४	धनु १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	८३ वर्ष	१।६।४० घ	३।२६।४० घ	६।१६।४० घ	९।६।४० घ	११।२६।४० घ
मीनांश	कर्क २१	सिंह ५	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	धनु १०	मकर ४	कुंभ ४	मीन १०	८६ वर्ष	१।२०।० घ	४।०।० घ	६।२०।० घ	९।२०।० घ	१२।०।० घ

अपसव्यचक्र (स्पष्टचन्द्र के अनुसार दशाज्ञान)

वृश्चिकांश	धनु १०	मकर ४	कुंभ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	मिथन ९	सिंह ५	कर्क २१	८६ वर्ष	१।१३।२० घ	४।३।२० घ	६।२३।२० घ	९।१३।२०
तुलांश	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	मीन १०	कुंभ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	८३ वर्ष	१।१६।४० घ	४।६।४० घ	६।२६।४० घ	९।१६।४०
कन्यांश	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	धनु १०	मकर ४	कुंभ ४	८५ वर्ष	१।२०।० घ	४।१०।० घ	७।०।० घ	९।२०।०
सिंहांश	मीन १०	मेष ७	वृष १६	मिथुन ९	सिंह ५	कर्क २१	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	१०० वर्ष	१।२३।२० घ	४।२३।२० घ	७।३।२० घ	९।२३।२०
कर्कांश	मीन १०	कुंभ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	८६ वर्ष	१।२६।४० घ	४।२६।४० घ	७।६।४० घ	९।२६।४०
मिथुनांश	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	धनु १०	मकर ४	कुंभ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	८३ वर्ष	२।०।० घ	४।२०।० घ	७।१०।० घ	१०।०।०
वृषांश	मिथुन ९	सिंह ५	कर्क २१	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	मीन १०	कुंभ ४	मकर ४	८५ वर्ष	२।३।२० घ	४।२३।२० घ	७।१३।२० घ	१०।३।२०
मेषांश	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	१०० वर्ष	२।६।४० घ	४।२६।४० घ	७।१६।४० घ	१०।६।४०
मीनांश	मीन १०	कुंभ ४	मकर ४	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	८६ वर्ष	२।१०।० घ	५।०।० घ	७।२०।० घ	१०।१०।०
कुंभांश	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	धनु १०	मकर ४	कुंभ ४	मीन १०	मेष ७	वृष १६	८३ वर्ष	२।१३।२० घ	५।३।२० घ	७।२३।२० घ	१०।१३।२०
मकरांश	मिथुन ९	सिंह ५	कर्क २१	कन्या ९	तुला १६	वृश्चिक ७	मीन १०	कुंभ ४	मकर ४	८५ वर्ष	२।१६।४० घ	५।६।४० घ	६।२६।४० घ	१०।१६।४०
धनुरंश	धनु १०	वृश्चिक ७	तुला १६	कन्या ९	सिंह ५	कर्क २१	मिथुन ९	वृष १६	मेष ७	१०० वर्ष	२।२०।० घ	५।१०।० घ	८।०।० घ	१०।२०।०

मेषांश के मेषराशि में **अन्तर्दशा** साधन के लिए मेष दशावर्ष ७ को मेष ही के दशावर्ष ७ से गुणाकर परमायु (वर्षयोग १००) से भाग देने पर लब्ध वर्षादि $\frac{७\times७}{१००}$ = ०।५।२६ यह मेष में मङ्गल की अन्तर्दशा हुई। उसी तरह मेष दशामान ७ को वृष दशावर्ष १६ से गुणाकर १०० से भाग देने पर $\frac{७\times१६}{१००} = \frac{११२}{१००}$ = १।१।१३ यह लब्ध वर्षादि मेष में शुक्र की अन्तर्दशा हुई। इसीतरह तत्तद्राशियों के दशावर्ष से गुणा करने तथा दशावर्षयोग से भाग देने पर लब्धवर्षादि तत्तद्राशिस्वामियों की अन्तर्दशा होगी। इसी तरह वृषादि के वर्ष से वृषादि में अन्तर्दशा का साधन होता है।

''सव्य'' कालचक्र *मेषांश* वर्ष १०० में मेषवृषादि राशियों की दशा

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	राशि
७	१६	९	२१	५	९	१६	७	१०	वर्ष १००
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

''सव्य'' मेषांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	राशि
०	१	०	१	०	०	१	०	०	वर्ष ७
५	१	७	५	४	७	१	५	८	मास ०
२६	१३	१७	१९	६	१७	१३	२७	१२	दिन ०

''सव्य'' मेषांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	राशि
२	१	३	०	१	२	१	१	१	वर्ष १६
६	५	४	९	५	६	१	६	१	मास ०
२१	९	९	१८	९	२१	१३	३६	१४	दिन ०

''सव्य'' मेषांशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	राशि
०	१	०	०	१	०	०	०	१	वर्ष ९
९	१०	५	९	५	७	१०	७	५	मास ०
२१	२१	१२	२१	९	१६	२४	१७	९	दिन ०

''सव्य'' मेषांशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	मिथुन	राशि
४	१	१	३	१	२	१	३	१	वर्ष २१
४	०	१०	४	५	१	५	४	१०	मास ०
२७	१८	२१	९	१९	६	२०	९	२१	दिन ०

"सव्य" मेषांशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष ५
३	५	९	४	६	४	९	५	०	मास ०
०	१२	१८	६	०	६	१८	१२	१८	दिन ०

"सव्य" मेषांशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	राशि
०	१	०	०	०	१	०	१	०	वर्ष ९
९	५	७	१०	७	५	९	१०	५	मास ०
२१	९	१६	२४	१७	९	२१	२१	१२	दिन ०

"सव्य" मेषांशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	राशि
२	१	१	१	२	१	३	०	१	वर्ष १६
६	१	७	१	६	५	४	९	५	मास ०
२१	१३	६	१४	२१	९	९	१८	९	दिन ०

"सव्य" मेषांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	राशि
०	०	०	१	०	१	५	१	१	वर्ष ७
५	८	५	१	७	५	४	७	१	मास ०
२६	१२	२६	१४	१६	२०	६	४८	१४	दिन ०

"सव्य" मेषांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	मिथुन	राशि
१	०	१	०	२	०	०	१	०	वर्ष १०
०	८	७	१०	१	६	१०	७	८	मास ०
०	१२	६	२४	६	०	२४	६	१२	दिन ०

* * *

''सव्य'' कालचक्र *वृषांश* वर्ष ८५ में मकरकुम्भादि राशियों की दशा

मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	राशि
४	४	१०	७	१६	९	२१	५	९	वर्ष ८५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

''सव्य'' वृषांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	४	९	५	११	२	५	मास ०
५	८	१९	०	१	२	२७	२५	३	दिन ०

''सव्य'' वृषांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	३	९	५	११	२	५	२	मास ०
७	२०	२९	१	२	२६	२५	२	७	दिन ०

''सव्य'' वृषांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुंभ	राशि
१	०	१	१	२	०	१	०	०	वर्ष १०
२	९	१०	०	५	७	०	५	५	मास ०
३	२७	१७	२१	२०	१	२२	१९	२०	दिन ०

''सव्य'' वृषांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुंभ	मीन	राशि
०	१	०	१	०	०	०	०	०	वर्ष ७
६	३	८	८	४	८	३	३	९	मास ०
२७	२५	२६	२३	२८	२७	२९	२८	२७	दिन ०

"सव्य" वृषांशीय **तुला** दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	राशि
३	१	३	०	१	०	०	१	१	वर्ष १६
०	८	११	११	८	९	९	१०	३	मास ०
४	१०	१३	९	९	१	२	१७	२५	दिन ०

"सव्य" वृषांशीय **कन्या** दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	राशि
०	२	०	०	०	०	१	०	१	वर्ष ९
११	२	६	११	५	५	०	८	८	मास ०
१३	२०	११	१३	२	३	२१	२७	१०	दिन ०

"सव्य" वृषांशीय **कर्क** दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	राशि
५	१	२	०	०	२	१	३	२	वर्ष २१
२	२	२	११	११	५	८	११	२	मास ०
७	२५	२०	२६	२६	१९	२३	१३	२१	दिन ०

"सव्य" वृषांशीय **सिंह** दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	मिथुन	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष ५
३	६	२	२	७	४	११	६	२	मास ०
१५	११	२५	२४	२	२८	९	११	२५	दिन ०

"सव्य" वृषांशीय **मिथुन** दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	राशि
०	०	०	१	०	१	०	२	०	वर्ष ९
११	५	५	०	८	८	११	२	६	मास ०
१३	२	२	२२	२७	१०	१३	२१	११	दिन ०

* * *

"सव्य" कालचक्र *मिथुनांश* वर्ष ८३ में वृषमेषादि राशियों की दशा

वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	राशि
१६	७	१०	४	४	१०	७	१६	९	वर्ष ८३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"सव्य" मिथुनांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	राशि
३	१	१	०	०	१	१	३	१	वर्ष १६
१	४	११	९	९	११	४	१	८	मास ०
०	६	४	७	८	४	६	०	२५	दिन ०

"सव्य" मिथुनांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	राशि
०	०	०	०	०	०	१	०	१	वर्ष ७
७	१०	४	४	१०	७	४	९	४	मास ०
२	४	१	२	३	३	५	४	६	दिन ०

"सव्य" मिथुनांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	राशि
१	०	०	१	०	१	१	१	०	वर्ष १०
२	५	५	२	१०	११	१	११	१०	मास ०
१३	२४	२३	१४	४	४	०	४	४	दिन ०

"सव्य" मिथुनांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	४	९	५	९	४	५	मास ०
९	९	२४	१	८	६	८	१	२४	दिन ०

"सव्य" मिथुनांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	४	९	५	९	४	५	२	मास ०
९	२३	२	७	७	७	२	२३	१०	दिन ०

"सव्य" मिथुनांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	राशि
१	०	१	१	१	०	१	०	०	वर्ष १०
२	१०	११	१	११	१०	२	५	५	मास ०
१३	४	४	०	४	४	१३	२४	२४	दिन ०

"सव्य" मिथुनांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	राशि
०	१	०	१	०	०	०	०	०	वर्ष ७
७	४	९	४	७	१०	४	४	१०	मास ०
२	६	३	६	२	४	१	२	४	दिन ०

"सव्य" मिथुनांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	मेष	राशि
३	१	३	१	१	०	०	१	१	वर्ष १६
१	८	१	४	११	९	९	११	४	मास ०
०	२४	१	५	४	८	८	४	६	दिन ०

"सव्य" मिथुनांशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	राशि
०	१	०	१	०	०	१	०	१	वर्ष ९
११	८	९	१	५	५	१	९	८	मास ०
२१	२४	४	०	६	६	१	३	२५	दिन ०

* * *

"सव्य" कालचक्र *कर्कांश* वर्ष ८६ में कर्कसिंहादि राशियों की दशा

कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि
२१	५	९	१६	७	१०	४	४	१०	वर्ष ८६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"सव्य" कर्कांशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि
५	१	२	३	१	२	०	०	२	वर्ष २१
१	२	२	१०	८	५	११	११	५	मास ०
१६	१९	११	२६	१६	९	२१	२१	१०	दिन ०

"सव्य" कर्कांशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	कर्क	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष ५
३	६	११	४	६	२	२	६	२	मास ०
१४	९	४	२७	२९	२४	२४	२९	२०	दिन ०

"सव्य" कर्कांशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकरं	कुंभ	मीन	कर्क	सिंह	राशि
०	१	०	१	०	०	१	२	०	वर्ष १०
११	८	८	०	५	५	०	२	६	मास ०
९	२	२४	१७	१	०	१७	११	९	दिन ०

"सव्य" कर्कांशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	राशि
२	१	१	०	१	१	३	०	१	वर्ष ४
११	३	१०	८	८	१०	१०	११	८	मास ०
२१	१९	१०	२८	२८	९	२७	५	३	दिन ०

''सव्य'' कर्कांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष ८६
६	९	३	३	९	८	४	८	३	मास ०
२	२३	२७	२७	२३	१५	२७	२४	१९	दिन ०

''सव्य'' कर्कांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	मकर	कुंभ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	राशि
१	०	०	१	२	०	१	१	०	वर्ष १०
१	५	५	१	५	७	०	१०	९	मास ०
२८	१८	१७	२९	९	०	१७	९	२४	दिन ०

''सव्य'' कर्कांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	कुंभ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	११	२	५	८	३	५	मास ०
६	७	१८	२२	२३	१	२८	२७	१८	दिन ०

''सव्य'' कर्कांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	राशि
१	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	११	२	५	८	३	५	२	मास ०
६	१८	२२	२३	१	२८	२७	१८	७	दिन ०

''सव्य'' कर्कांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	राशि
१	२	०	१	१	०	१	०	०	वर्ष १०
१	५	६	०	१०	९	१	५	५	मास ०
२८	९	२६	१७	१०	२३	२९	१७	१८	दिन ०

* * *

"सव्य" कालचक्र *सिंहांश* वर्ष १०० में वृश्चिकतुलादि राशियों की दशा

वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	राशि
७	१६	९	२१	५	९	१६	७	१०	वर्ष १००
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"सव्य" सिंहांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	राशि
०	१	०	१	०	०	१	०	०	वर्ष ७
५	१	७	५	४	७	१	७	८	मास ०
२६	१३	१७	१९	६	१७	१३	३	१२	दिन ०

"सव्य" सिंहांशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	वृश्चिक	राशि
२	१	३	०	१	२	१	१	१	वर्ष १६
६	५	६	९	५	६	१	७	१	मास ०
२१	९	९	१८	९	२१	१३	६	१४	दिन ०

"सव्य" सिंहांशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	वृश्चिक	तुला	राशि
०	१	०	०	१	०	०	०	१	वर्ष ९
९	१०	५	९	५	७	१०	७	५	मास ०
२१	२१	१२	२१	९	१६	२४	१७	९	दिन ०

"सव्य" सिंहांशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	राशि
४	१	१	३	१	२	१	३	१	वर्ष २१
४	०	१०	४	५	१	५	४	१०	मास ०
२७	१८	२१	९	१९	६	२०	९	२२	दिन ०

''सव्य'' सिंहांशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष ५
३	५	९	४	६	४	९	५	०	मास ०
०	१२	१८	६	०	६	१८	१२	१८	दिन ०

''सव्य'' सिंहांशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	वृष	मेष	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	राशि
०	१	०	०	०	१	०	१	०	वर्ष ९
९	५	७	१०	७	५	९	१०	५	मास ०
२१	९	१६	२४	१८	९	२१	२१	१२	दिन ०

''सव्य'' सिंहांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मेष	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	राशि
२	१	१	१	२	१	३	०	१	वर्ष १६
६	१	७	१	६	५	४	९	५	मास ०
२१	१३	६	१४	२१	९	९	१८	९	दिन ०

''सव्यं'' सिंहांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	राशि
०	०	०	१	०	१	०	०	१	वर्ष ७
५	८	५	१	७	५	४	७	१	मास ०
२६	१२	२६	१४	१६	२०	६	१६	१४	दिन ०

''सव्य'' सिंहांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	राशि
१	०	१	०	२	०	०	१	०	वर्ष १०
०	८	७	१०	१	६	१०	७	८	मास ०
०	१२	६	२४	६	०	२४	६	१२	दिन ०

* * *

"सव्य" कालचक्र *कन्यांश* वर्ष ८५ में कुंभमकरादि राशियों की दशा

कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	राशि
४	४	१०	७	१६	९	२१	५	९	वर्ष ८५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"सव्य" कन्यांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	३	९	५	११	२	५	मास ०
७	८	१९	२९	१	२	२६	२५	३	दिन ०

"सव्य" कन्यांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	कुंभ	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	३	९	५	११	२	५	२	मास ०
७	२०	२९	१	२	२६	४५	३	८	दिन ०

"सव्य" कन्यांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	कुंभ	मकर	राशि
०	०	१	१	२	०	१	०	०	वर्ष १०
२	९	१०	०	५	७	०	५	५	मास ०
३	२६	१७	२१	१९	१	२१	१९	१९	दिन ०

"सव्य" कन्यांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	कुंभ	मकर	धनु	राशि
०	१	०	१	०	०	०	०	०	वर्ष ७
६	६	८	८	४	८	३	३	९	मास ०
२७	२४	२६	२२	२८	२६	२८	२८	२६	दिन ०

"सव्य" कन्यांशीय **वृष** दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	कुंभ	मकर	धनु	मेष	राशि
३	१	३	०	१	०	०	१	१	वर्ष १६
०	८	११	११	८	९	९	१०	३	मास ०
४	९	१३	८	९	१	१	१७	२४	दिन ०

"सव्य" कन्यांशीय **मिथुन** दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	राशि
०	२	०	०	०	०	१	०	१	वर्ष ९
११	२	६	११	५	५	०	८	८	मास ०
१३	२०	१०	१३	२	२	२१	२६	९	दिन ०

"सव्य" कन्यांशीय **कर्क** दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	सिंह	कन्या	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	राशि
५	१	२	०	०	२	१	३	२	वर्ष २१
२	२	२	११	११	५	८	११	२	मास ०
७	२४	२०	२५	२५	११	२२	१३	२०	दिन ०

"सव्य" कन्यांशीय **सिंह** दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कन्या	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष ५
३	६	२	२	७	४	११	६	२	मास ०
१५	१०	२४	२४	१	२८	८	१०	२४	दिन ०

"सव्य" कन्यांशीय **कन्या** दशावर्ष ६ में अन्तर्दशा ($\frac{९×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	राशि
०	०	०	१	०	१	०	२	०	वर्ष ९
११	५	५	०	८	८	११	२	६	मास ०
१३	२	२	२१	२६	९	१३	२०	१०	दिन ०

* * *

"सव्य" कालचक्र *तुलांश* वर्ष ८३ में तुलावृश्चिकादि राशियों की दशा

तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	राशि
१६	७	१०	४	४	१०	७	१६	९	वर्ष ८३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"सव्य" तुलांशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	राशि
३	१	१	०	०	१	१	३	१	वर्ष १६
१	४	११	९	९	११	४	१	८	मास ०
०	५	३	७	७	३	५	०	२४	दिन ०

"सव्य" तुलांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	तुला	राशि
०	०	०	०	०	०	१	०	१	वर्ष ७
७	१०	४	४	१०	७	४	९	४	मास ०
२	३	१	१	३	२	५	३	५	दिन ०

"सव्य" तुलांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	तुला	वृश्चिक	राशि
१	०	०	१	०	१	१	१	०	वर्ष १०
२	५	५	२	१०	११	१	११	१०	मास ०
१३	२३	२३	१३	३	३	०	३	३	दिन ०

"सव्य" तुलांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	४	९	५	९	४	५	मास ०
९	९	२३	१	७	६	७	१	२३	दिन ०

''सव्य'' तुलांशीय कुम्भ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	४	९	५	८	४	५	२	मास ०
९	२३	१	७	६	७	१	२३	९	दिन ०

''सव्य'' तुलांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	राशि
१	०	१	१	१	०	१	०	०	वर्ष १०
२	१०	११	१	११	१०	२	५	५	मास ०
१३	३	३	०	३	३	१३	२३	२३	दिन ०

''सव्य'' तुलांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	तुला	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि
०	१	०	१	०	०	०	०	०	वर्ष ७
७	४	९	४	७	१०	४	४	१०	मास ०
२	५	३	५	२	३	१	१	३	दिन ०

''सव्य'' तुलांशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	राशि
३	१	३	१	१	०	०	१	१	वर्ष १६
१	८	१	४	११	९	९	११	४	मास ०
०	२४	०	५	३	७	७	३	५	दिन ०

''सव्य'' तुलांशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	राशि
०	१	०	१	०	०	१	०	०	वर्ष ९
११	८	९	१	५	५	१	९	८	मास ०
२१	२४	३	०	६	६	०	३	२४	दिन ०

* * *

"सव्य" कालचक्र *वृश्चिकांश* वर्ष ८६ में कर्कसिंहादि राशियों की दशा

कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	राशि
२१	५	९	१६	७	१०	४	४	१०	वर्ष ८६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"सव्य" वृश्चिकांशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	राशि
५	१	२	३	१	२	०	०	२	वर्ष २१
१	२	२	१०	८	५	११	११	५	मास ०
१६	१९	११	२६	१५	९	२१	२१	९	दिन ०

"सव्य" वृश्चिकांशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	कर्क	राशि
०	०	०	०	०	०	०	२	१	वर्ष ५
३	६	११	४	६	२	२	६	२	मास ०
१४	८	४	२६	२९	२३	२३	२९	१९	दिन ०

"सव्य" वृश्चिकांशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	कर्क	सिंह	राशि
०	१	०	१	०	०	१	२	०	वर्ष ९
११	८	८	०	५	५	०	२	६	मास ०
९	२	२३	१६	०	०	१६	११	८	दिन ०

"सव्य" वृश्चिकांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	कर्क	सिंह	मिथुन	राशि
२	१	१	०	०	१	३	०	१	वर्ष १६
११	३	१०	८	८	१०	१०	११	८	मास ०
२१	१८	९	२७	२७	८	२६	४	२	दिन ०

''सव्य'' वृश्चिकांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८६}$= दिनादि ध्रुवक)

मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	राशि
०	०	०	०	०	१	०	०	१	वर्ष ७
६	९	३	३	९	८	४	८	३	मास ०
२५	२३	२७	२७	२३	१५	२६	२३	१८	दिन ०

''सव्य'' वृश्चिकांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८६}$= दिनादि ध्रुवक)

मीन	कुंभ	मकर	धनु	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	राशि
१	०	०	१	२	०	१	१	०	वर्ष १०
१	५	५	१	५	६	०	१०	९	मास ०
२८	१७	१७	२८	९	२९	१६	९	२३	दिन ०

''सव्य'' वृश्चिकांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८६}$= दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मकर	धनु	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	११	२	५	८	३	५	मास ०
६	६	१७	२१	२३	०	२७	२७	१७	दिन ०

''सव्य'' वृश्चिकांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८६}$= दिनादि ध्रुवक)

मकर	धनु	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	११	२	५	८	३	५	२	मास ०
६	१७	२१	२३	०	२७	२७	१७	६	दिन ०

''सव्य'' वृश्चिकांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८६}$= दिनादि ध्रुवक)

धनु	कर्क	सिंह	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	राशि
१	२	०	१	१	०	१	०	०	वर्ष १०
१	५	६	०	१०	९	१	५	५	मास ०
२८	९	२९	१६	९	२३	२८	१७	१७	दिन ०

* * *

"सव्य" कालचक्र *धनुरंश* वर्ष १०० में मेषवृषादि राशियों की दशा

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	राशि
७	१६	९	२१	५	९	१६	७	१०	वर्ष १००
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"सव्य" धनुरंशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७×३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	राशि
०	१	०	१	०	०	१	०	०	वर्ष ७
५	१	७	५	४	७	१	५	८	मास ०
२६	१३	१६	१९	६	१६	१३	२६	१२	दिन ०

"सव्य" धनुरंशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६×३६०}{१००}$= दिनादि ध्रुवक)

वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	राशि
२	१	३	०	१	२	१	१	१	वर्ष १६
६	५	६	९	५	६	१	६	१	मास ०
२१	८	९	१८	८	२१	१३	३६	१३	दिन ०

"सव्य" धनुरंशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९×३६०}{१००}$= दिनादि ध्रुवक)

मिथुंन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	राशि
०	१	०	०	१	०	०	०	१	वर्ष ९
९	१०	५	९	५	७	१०	७	५	मास ०
२१	२०	१२	२१	८	१६	२४	१६	८	दिन ०

"सव्य" धनुरंशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१×३६०}{१००}$= दिनादि ध्रुवक)

कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	मिथुन	राशि
४	१	१	३	१	२	१	३	१	वर्ष २१
४	०	१०	४	५	१	५	४	१०	मास ०
२७	१८	२०	९	१८	६	१९	९	२०	दिन ०

''सव्य'' धनुरंशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष ५
३	५	८	४	३	४	९	५	०	मास ०
०	१२	१८	६	०	६	१८	१२	१८	दिन ०

''सव्य'' धनुरंशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	राशि
०	१	०	०	०	१	०	१	०	वर्ष ९
९	५	७	१०	७	५	८	१०	५	मास ०
२१	८	१६	२४	१६	८	२१	२०	१२	दिन ०

''सव्य'' धनुरंशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	राशि
२	१	१	१	२	१	३	०	०	वर्ष १६
६	१	७	१	३	५	४	९	५	मास ०
२१	१३	६	१३	२१	८	९	१८	८	दिन ०

''सव्य'' धनुरंशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	राशि
०	०	०	१	०	१	०	०	१	वर्ष ७
५	८	५	१	७	५	४	७	१	मास ०
२६	१२	२६	१३	१६	१९	६	१६	१३	दिन ०

''सव्य'' धनुरंशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	राशि
१	०	१	०	२	०	०	१	०	वर्ष १०
०	८	७	१०	१	६	१०	७	८	मास ०
०	१२	६	२४	६	०	२४	६	१२	दिन ०

* * *

''सव्य'' कालचक्र *मकरांश* वर्ष ८५ में मकरकुंभादि राशियों की दशा

मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	राशि
४	४	१०	७	१६	९	२१	५	९	वर्ष ८५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

''सव्य'' मकरांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	३	९	५	११	२	५	मास ०
७	७	१९	२८	१	२	२५	२४	२	दिन ०

''सव्य'' मकरांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	३	९	५	११	२	५	२	मास ०
७	१९	२८	१	२	२५	२४	२	७	दिन ०

''सव्य'' मकरांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुंभ	राशि
१	०	१	१	२	०	१	०	०	वर्ष १०
२	९	१०	०	५	७	०	५	५	मास ०
३	२६	१७	२१	१९	१	२१	१९	१९	दिन ०

'सव्य' मकरांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुंभ	मीन	राशि
०	१	०	१	०	०	०	०	०	वर्ष ७
६	३	८	८	४	८	३	३	९	मास ०
२७	२४	२६	२२	२८	२६	२८	२८	२६	दिन ०

''सव्य'' मकरांशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	राशि
६	१	३	०	१	०	०	१	१	वर्ष १६
०	८	११	११	८	९	९	१०	३	मास ०
४	९	१३	८	९	१	१	१७	२४	दिन ०

‘सव्य’ मकरांशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	राशि
०	२	०	०	०	०	१	०	१	वर्ष ९
११	२	६	११	५	५	०	८	८	मास ०
१३	२०	१०	१३	२	२	२१	२६	९	दिन ०

''सव्य'' मकरांशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	सिंह	मिथुन	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	राशि
५	१	२	०	०	२	१	३	२	वर्ष २१
२	२	२	११	११	५	८	११	२	मास ०
७	२४	२०	२५	२५	१९	२२	१३	२०	दिन ०

''सव्य'' मकरांशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	मिथुन	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष ५
३	६	२	२	७	४	११	६	२	मास ०
१५	१०	२४	२४	१	२८	८	१०	२४	दिन ०

''सव्य'' मकरांशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	मकर	कुंभ	मीन	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	राशि
०	०	०	१	०	१	०	२	०	वर्ष ९
११	५	५	०	८	८	११	२	६	मास ०
१३	२	२	२१	२६	९	१३	२०	१०	दिन ०

* * *

"सव्य" कालचक्र *कुंभांश* वर्ष ८३ में वृषमेषादि राशियों की दशा

वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	राशि
१६	७	१०	४	४	१०	७	१६	९	वर्ष ८३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"सव्य" कुंभांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	राशि
३	१	१	०	०	१	१	३	१	वर्ष १६
१	४	११	९	९	११	४	१	८	मास ०
०	५	३	७	७	३	५	०	२४	दिन ०

"सव्य" कुंभांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	राशि
०	०	०	०	०	०	१	०	१	वर्ष ७
७	१०	४	४	१०	७	४	९	४	मास ०
२	३	१	१	३	२	५	३	५	दिन ०

"सव्य" कुंभांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	राशि
१	०	०	१	०	१	१	१	०	वर्ष १०
२	५	५	२	१०	११	१	११	१०	मास ०
१३	२३	२३	१३	३	३	०	३	३	दिन ०

"सव्य" कुंभांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	४	९	५	९	४	५	मास ०
९	९	२३	१	७	६	७	१	२३	दिन ०

''सव्य'' कुंभांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	४	९	५	९	४	५	२	मास ०
९	२३	१	७	६	७	१	२३	९	दिन ०

''सव्य'' कुंभांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	राशि
१	०	१	१	१	०	१	०	०	वर्ष १०
२	१०	११	१	११	१०	२	५	५	मास ०
१३	३	३	०	३	३	१३	२३	२३	दिन ०

''सव्य'' कुंभांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	राशि
०	१	०	१	०	०	०	०	०	वर्ष ७
७	४	९	४	७	१०	४	४	१०	मास ०
२	५	३	५	२	३	१	१	३	दिन ०

''सव्य'' कुंभांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	मेष	राशि
३	१	३	१	१	०	०	१	१	वर्ष १६
१	८	१	४	११	९	९	११	४	मास ०
०	२४	०	५	३	७	७	३	५	दिन ०

''सव्य'' कुंभांशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	वृष	मेष	मीन	कुंभ	मकर	धनु	मेष	वृष	राशि
०	१	०	१	०	०	१	०	१	वर्ष ९
११	८	९	१	५	५	१	९	८	मास ०
२१	२४	३	०	६	६	०	३	२४	दिन ०

* * *

''सव्य'' कालचक्र *मीनांश* वर्ष ८६ में कर्कसिंहादि राशियों की दशा

कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि
२१	५	९	१६	७	१०	४	४	१०	वर्ष ८६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

''सव्य'' मीनांशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१×३६०}{८६}$= दिनादि ध्रुवक)

कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि
५	१	२	३	१	२	०	०	२	वर्ष २१
१	२	२	१०	८	५	११	११	५	मास ०
१६	१९	११	२६	१५	९	२१	२१	९	दिन ०

''सव्य'' मीनांशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५×३६०}{८६}$= दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	कर्क	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष ५
३	६	११	४	६	२	२	६	२	मास ०
१४	८	४	२६	२९	२३	२३	२९	१९	दिन ०

''सव्य'' मीनांशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९×३६०}{८६}$= दिनादि ध्रुवक)

कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	कर्क	सिंह	राशि
०	१	०	१	०	०	१	२	०	वर्ष ९
११	८	८	०	५	५	०	२	६	मास ०
९	२	२३	१६	०	०	१६	११	८	दिन ०

''सव्य'' मीनांशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६×३६०}{८६}$= दिनादि ध्रुवक)

तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	राशि
२	१	१	०	०	१	३	०	१	वर्ष १६
११	३	१०	८	८	१०	१०	१०	८	मास ०
२१	१८	९	२७	२७	८	२६	४	२	दिन ०

"सव्य" मीनांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७×३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	राशि
०	०	०	०	०	१	०	०	१	वर्ष ७
६	९	३	३	९	८	४	८	३	मास ०
२५	२३	२७	२७	२३	१५	२६	२३	१८	दिन ०

"सव्य" मीनांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०×३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	मकर	कुंभ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	राशि
१	०	०	१	२	०	१	१	०	वर्ष १०
१	५	५	१	५	६	०	१०	९	मास ०
२८	१७	१७	२८	९	२९	१६	९	२३	दिन ०

"सव्य" मीनांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४×३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	कुंभ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	१	२	५	८	३	५	मास ०
६	६	१७	२१	२३	०	२७	२७	१७	दिन ०

"सव्य" मीनांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४×३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	११	२	५	८	३	५	२	मास ०
६	१७	२१	२३	०	२७	२७	१७	६	दिन ०

"सव्य" मीनांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०×३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	राशि
१	२	०	१	१	०	१	०	०	वर्ष १०
१	५	६	०	१०	९	१	५	५	मास ०
२८	९	२९	१६	९	२३	२८	१७	१७	दिन ०

* * *

"अपसव्य" कालचक्र *वृश्चिकांश* वर्ष ८६ में धनुमकरादि राशियों की दशा

धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	राशि
१०	४	४	१०	७	१६	९	५	२१	वर्ष ८६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"अपसव्य" वृश्चिकांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	राशि
१	०	०	१	०	१	१	०	२	वर्ष १०
१	५	५	१	९	१०	१	६	५	मास ०
२८	७	१७	२८	२३	९	१६	२९	९	दिन ०

"अपसव्य" वृश्चिकांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	धनु	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	३	८	५	२	११	५	मास ०
६	६	१७	२७	२७	०	२३	२१	१७	दिन ०

"अपसव्य" वृश्चिकांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	धनु	मकर	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	३	८	५	२	११	५	२	मास ०
६	१७	२७	२७	०	२३	२१	१७	६	दिन ०

"अपसव्य" वृश्चिकांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	मेष	वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	धनु	मकर	कुंभ	राशि
१	०	१	१	०	२	१	०	०	वर्ष १०
१	९	१०	१	६	५	१	५	५	मास ०
२८	२३	९	१६	२९	९	१६	१७	१७	दिन ०

"अपसव्य" वृश्चिकांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि
०	१	०	०	१	०	०	०	०	वर्ष ७
६	३	८	४	८	९	३	३	९	मास ०
२५	१८	२३	२६	१५	२३	२७	२७	२३	दिन ०

"अपसव्य" वृश्चिकांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	राशि
२	१	०	३	१	२	२	१	१	वर्ष १६
११	८	११	१०	१०	८	८	१०	३	मास ०
२१	२	४	२६	९	२७	२७	९	१८	दिन ०

"अपसव्य" वृश्चिकांशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	सिंह	कर्क	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	राशि
०	०	२	१	०	०	१	०	१	वर्ष ९
११	६	२	०	५	५	०	८	८	मास ०
९	८	११	१६	०	०	१६	२३	२	दिन ०

"अपसव्य" वृश्चिकांशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कर्क	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	राशि
०	१	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ५
३	२	६	२	२	६	४	११	६	मास ०
१४	१९	२९	२३	२३	२९	२६	४	८	दिन ०

"अपसव्य" वृश्चिकांशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	सिंह	राशि
५	२	०	०	२	१	३	२	१	वर्ष २१
१	५	११	११	५	८	१०	२	२	मास ०
१६	९	२१	२१	९	१५	२६	११	१९	दिन ०

* * *

"अपसव्य" कालचक्र *तुलांश* वर्ष ८३ में कन्यातुलादि राशियों की दशा

कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	राशि
९	१६	७	१०	४	४	१०	७	१६	वर्ष ८३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"अपसव्य" तुलांशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	राशि
०	१	०	१	०	०	१	०	१	वर्ष ९
११	८	९	१	५	५	१	९	८	मास ०
२१	२४	३	०	६	६	०	३	२४	दिन ०

"अपसव्य" तुलांशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	राशि
३	१	१	०	०	१	०	३	१	वर्ष १६
१	४	११	९	९	११	४	१	८	मास ०
०	५	३	७	७	३	५	०	२४	दिन ०

"अपसव्य" तुलांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	तुला	राशि
०	०	०	०	०	०	१	०	१	वर्ष ७
७	१०	४	४	१०	७	४	९	४	मास ०
२	३	१	१	३	२	५	३	५	दिन ०

"अपसव्य" तुलांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	तुला	वृश्चिक	राशि
१	०	०	१	०	१	१	१	०	वर्ष १०
२	५	५	२	१०	११	१	११	१०	मास ०
१३	२३	२३	१३	३	३	०	३	३	दिन ०

"अपसव्य" तुलांशीय कुम्भ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	४	९	५	९	४	५	मास ०
९	९	२३	१	७	६	४	१	२३	दिन ०

"अपसव्य" तुलांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	४	९	५	९	४	५	२	मास ०
९	२३	१	७	६	७	१	२३	९	दिन ०

"अपसव्य" तुलांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	राशि
१	०	१	१	१	०	१	०	०	वर्ष १०
२	१०	११	१	११	१०	२	५	५	मास ०
१३	३	३	०	३	३	१३	२३	२३	दिन ०

"अपसव्य" तुलांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	तुला	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	धनु	राशि
०	१	०	१	०	०	०	०	०	वर्ष ७
७	४	९	४	७	१०	४	४	१०	मास ०
२	५	३	५	२	३	१	१	३	दिन ०

"अपसव्य" तुलांशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	राशि
३	१	३	१	१	०	०	१	१	वर्ष १६
१	८	१	४	११	९	९	११	४	मास ०
०	२४	०	५	३	७	७	३	५	दिन ०

* * *

"अपसव्य" कालचक्र *कन्यांश* वर्ष ८५ में कन्यासिंहादि राशियों की दशा

कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	राशि
९	५	२१	९	१६	७	१०	४	४	वर्ष ८५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"अपसव्य" कन्यांशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	राशि
०	०	२	०	१	०	१	०	०	वर्ष ९
११	६	२	११	८	८	०	५	५	मास ०
१३	१०	२०	१३	९	२६	२१	२	२	दिन ०

"सव्य" कन्यांशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	कन्या	राशि
०	१	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ५
३	२	६	११	४	७	२	२	६	मास ०
१५	२४	१०	८	२८	१	२४	२४	१०	दिन ०

"अपसव्य" कन्यांशीय कर्क दशावर्ष २१-में अन्तर्दशा ($\frac{२१\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	कन्या	सिंह	राशि
५	२	३	१	२	०	०	२	१	वर्ष २१
२	२	११	८	५	११	११	२	२	मास ०
७	२०	१३	२२	१९	२५	२५	२०	२४	दिन ०

"अपसव्य" कन्यांशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	कन्या	सिंह	कर्क	राशि
०	१	०	१	०	०	०	०	२	वर्ष ९
११	८	८	०	५	५	११	६	२	मास ०
१३	९	२६	२१	२	२	१३	१०	२०	दिन ०

"अपसव्य" कन्यांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	राशि
३	१	१	०	०	१	१	३	१	वर्ष १६
०	३	१०	९	९	८	११	११	८	मास ०
४	२४	१७	१	१	९	१८	१३	९	दिन ०

"अपसव्य" कन्यांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	धनु	मकर	कुंभ	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	राशि
०	०	०	०	०	०	१	०	१	वर्ष ७
६	९	३	३	८	४	८	८	३	मास ०
२४	२६	२८	२८	२६	२८	२२	२६	२४	दिन ०

"अपसव्य" कन्यांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	मकर	कुंभ	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	राशि
१	०	०	१	०	२	१	१	०	वर्ष १०
२	५	५	०	७	५	०	१०	९	मास ०
३	१९	१९	२१	१	१९	२१	१७	२६	दिन ०

"अपसव्य" कन्यांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	कुंभ	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	२	११	५	९	३	५	मास ०
७	७	२	२४	२५	२	१	२८	१९	दिन ०

"अपसव्य" कन्यांशीय कुंभ दशावर्ष ६ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	२	११	५	९	३	५	२	मास ०
७	२	२४	२५	२	१	२८	१९	७	दिन ०

* * *

''अपसव्य'' कालचक्र *सिंहांश* वर्ष १०० में मीनमेषादि राशियों की दशा

मीन	मेष	वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	राशि
१०	७	१६	९	५	२१	९	१६	७	वर्ष १००
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

''अपसव्य'' सिंहाशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	मेष	वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	राशि
१	०	१	०	०	२	०	१	०	वर्ष १०
०	८	७	१०	६	१	१०	७	८	मास ०
०	१२	६	२४	०	६	२४	६	१२	दिन ०

''अपसव्य'' सिंहाशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	राशि
०	१	०	०	१	०	१	०	०	वर्ष ७
५	१	७	४	५	७	१	५	८	मास ०
२६	१६	१६	६	१९	१६	१३	२६	१२	दिन ०

''सव्य'' सिंहाशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	मेष	राशि
२	१	०	३	१	२	१	१	१	वर्ष १६
६	५	९	४	५	६	१	६	१	मास ०
११	८	१८	९	८	२१	१३	३६	१३	दिन ०

''सव्य'' सिंहाशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	मेष	वृष	राशि
०	०	१	०	१	०	०	०	०	वर्ष ९
९	५	१०	९	५	७	१०	७	५	मास ०
२१	१२	२०	२१	८	१६	२४	१६	८	दिन ०

''अपसव्य'' सिंहाशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५×३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	मेष	वृष	मिथुन	राशि
०	१	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ५
२	०	५	८	४	६	४	८	५	मास ०
०	१८	१२	१८	६	०	६	१८	१२	दिन ०

''अपसव्य'' सिंहाशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१×३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	मेष	वृष	मिथुन	सिंह	राशि
४	१	३	१	२	१	३	१	१	वर्ष २१
४	१०	४	५	१	५	४	१०	०	मास ०
२७	२०	९	१९	६	१९	९	२०	१८	दिन ०

''अपसव्य'' सिंहाशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९×३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	मेष	वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	राशि
०	१	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष ९
९	५	७	१०	७	५	९	५	१०	मास ०
२१	८	१६	२४	१६	८	२१	१२	२०	दिन ०

''अपसव्य'' सिंहाशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६×३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	वृश्चिक	मीन	मेष	वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	राशि
२	१	१	१	०	१	०	३	१	वर्ष १६
६	१	७	१	६	५	९	४	५	मास ०
२१	१३	६	१३	२१	८	१८	८	८	दिन ०

''अपसव्य'' सिंहाशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७×३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	मीन	मेष	वृष	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	राशि
०	०	०	१	०	०	१	०	१	वर्ष ७
५	८	५	१	७	४	५	७	१	मास ०
२६	१२	२६	१३	१६	६	१९	१६	१३	दिन ०

* * *

"अपसव्य" कालचक्र *कर्कांश* वर्ष ८६ में मीनकुंभादि राशियों की दशा

मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	राशि
१०	४	४	१०	७	१६	९	५	२१	वर्ष ८६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"अपसव्य" कर्कांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	राशि
१	०	०	१	०	१	१	०	२	वर्ष १०
१	५	५	१	९	१०	१	६	५	मास ०
२८	१७	१७	२८	२३	९	१६	२९	९	दिन ०

"अपसव्य" कर्कांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मीन	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	३	८	५	२	११	५	मास ०
६	६	१७	२७	२७	०	२३	२१	१७	दिन ०

"अपसव्य" कर्कांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	३	८	५	२	११	५	२	मास ०
६	१७	२७	२७	०	२३	२१	१७	६	दिन ०

"अपसव्य" कर्कांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	मकर	राशि
१	०	१	१	०	२	१	०	०	वर्ष १०
१	९	१०	०	६	५	१	५	५	मास ०
२८	२३	९	१६	२९	९	२८	१७	१७	दिन ०

''अपसव्य'' कर्कांशीय **वृश्चिक** दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७×३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	मकर	धनु	राशि
०	१	०	०	१	०	०	०	०	वर्ष ७
६	३	८	४	८	९	३	३	९	मास ०
२५	१८	२३	२६	१५	२३	२७	२७	२३	दिन ०

''अपसव्य'' कर्कांशीय **तुला** दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६×३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	राशि
२	१	०	३	१	०	०	१	१	वर्ष १६
११	८	११	१०	१०	८	८	१०	३	मास ०
२१	२	४	२६	९	२७	२७	९	१८	दिन ०

''अपसव्य'' कर्कांशीय **कन्या** दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९×३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	राशि
०	०	२	१	०	०	१	०	१	वर्ष ९
११	६	२	०	५	५	०	८	८	मास ०
९	८	११	१६	०	०	१६	२३	२	दिन ०

''अपसव्य'' कर्कांशीय **सिंह** दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५×३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	राशि
०	१	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ५
३	२	६	२	२	६	४	११	६	मास ०
१४	१९	२९	२३	२३	२९	२६	४	८	दिन ०

''अपसव्य'' कर्कांशीय **कर्क** दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१×३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	राशि
५	२	०	०	२	१	३	२	१	वर्ष २१
१	५	११	११	५	८	१०	२	२	मास ०
१६	९	२१	२१	९	१५	२६	११	१९	दिन ०

* * *

''अपसव्य'' कालचक्र *मिथुनांश* वर्ष ८३ में मिथुनवृषादि राशियों की दशा

मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	राशि
९	१६	७	१०	४	४	१०	७	१६	वर्ष ८३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

''अपसव्य'' मिथुनांशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	राशि
०	१	०	१	०	०	१	०	१	वर्ष ९
११	८	९	१	५	५	१	९	८	मास ०
२१	२४	३	०	६	६	०	३	२४	दिन ०

''अपसव्य'' मिथुनांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	राशि
३	१	१	०	०	१	०	३	१	वर्ष १६
१	४	११	९	९	११	४	१	८	मास ०
०	५	३	७	७	३	५	०	२४	दिन ०

''अपसव्य'' मिथुनांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	वृष	राशि
०	०	०	०	०	०	१	०	१	वर्ष ७
७	१०	४	४	१०	७	४	९	४	मास ०
२	३	१	१	३	२	५	३	५	दिन ०

''अपसव्य'' मिथुनांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	राशि
१	०	०	१	०	१	१	१	०	वर्ष १०
२	५	५	२	१०	११	१	११	१०	मास ०
१३	२३	२३	१३	३	३	०	३	३	दिन ०

"अपसव्य" मिथुनांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	धनु	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	४	९	५	९	४	५	मास ०
९	९	२३	१	७	६	४	१	२३	दिन ०

"अपसव्य" मिथुनांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	४	९	५	९	४	५	२	मास ०
९	२३	१	७	६	७	१	२३	९	दिन ०

"अपसव्य" मिथुनांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	राशि
१	०	१	१	१	०	१	०	०	वर्ष १०
२	१०	११	१	११	१०	२	५	५	मास ०
१३	३	३	०	३	३	१३	२३	२३	दिन ०

"अपसव्य" मिथुनांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि
०	१	०	१	०	०	०	०	०	वर्ष ७
७	४	९	४	७	१०	४	४	१०	मास ०
२	५	३	५	२	३	१	१	३	दिन ०

"अपसव्य" मिथुनांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	राशि
३	१	३	१	१	०	०	१	१	वर्ष १६
१	८	१	४	११	९	९	११	४	मास ०
०	२४	०	५	३	७	७	३	५	दिन ०

* * *

"अपसव्य" कालचक्र *वृषांश* वर्ष ८५ में मिथुनसिंहादि राशियों की दशा

मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	राशि
९	५	२१	९	१६	७	१०	४	४	वर्ष ८५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"अपसव्य" वृषांशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	राशि
०	०	२	०	१	०	१	०	०	वर्ष ९
११	६	२	११	८	८	०	५	५	मास ०
१३	१०	२०	१३	९	२६	२१	२	२	दिन ०

"सव्य" वृषांशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	मिथुन	राशि
०	१	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ५
३	२	६	११	४	७	२	२	६	मास ०
१५	२४	१०	८	२८	१	२४	२४	१०	दिन ०

"अपसव्य" वृषांशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	मिथुन	सिंह	राशि
५	२	३	१	२	०	०	२	१	वर्ष २१
२	२	११	८	५	११	११	२	२	मास ०
७	२०	१३	२२	१९	२५	२५	२०	२४	दिन ०

"अपसव्य" वृषांशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	मिथुन	सिंह	कर्क	राशि
०	१	०	१	०	०	०	०	२	वर्ष ९
११	८	८	०	५	५	११	६	२	मास ०
१३	९	२६	२१	२	२	१३	१०	२०	दिन ०

"अपसव्य" वृषांशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	राशि
३	१	१	०	०	१	१	३	१	वर्ष १६
०	३	१०	९	९	८	११	११	८	मास ०
४	२४	१७	१	१	९	१८	१३	९	दिन ०

"अपसव्य" वृषांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	राशि
०	०	०	०	०	०	१	०	१	वर्ष ७
६	९	३	३	८	४	८	८	३	मास ०
२७	२६	२८	२८	२६	२८	२२	२६	२४	दिन ०

"अपसव्य" वृषांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	कुंभ	मकर	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	राशि
१	०	०	१	०	२	१	१	०	वर्ष १०
२	५	५	०	७	५	०	१०	९	मास ०
३	१९	१९	२१	१	१९	२१	१७	२६	दिन ०

"अपसव्य" वृषांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मकर	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	गशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	२	११	५	९	३	५	मास ०
७	७	२	२४	२५	२	१	२८	१९	दिन ०

"अपसव्य" वृषांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४×३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	२	११	५	९	३	५	२	मास ०
७	२	२४	२५	२	१	२८	१९	७	दिन ०

* * *

"अपसव्य" कालचक्र *मेषांश* वर्ष १०० में धनुरवृश्चिकादि राशियों की दशा

धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	राशि
१०	७	१६	९	५	२१	९	१६	७	वर्ष १००
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"अपसव्य" मेषांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	राशि
१	०	१	०	०	२	०	१	०	वर्ष १०
०	८	७	१०	६	१	१०	७	८	मास ०
०	१२	६	२४	०	६	२४	६	१२	दिन ०

"अपसव्य" मेषांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	राशि
०	१	०	०	१	०	१	०	०	वर्ष ७
५	१	७	४	५	७	१	५	१२	मास ०
२६	१३	१६	६	१९	१६	१३	२६	०	दिन ०

"सव्य" मेषांशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	वृश्चिक	राशि
२	१	०	३	१	२	१	१	१	वर्ष १६
६	५	९	४	५	६	१	७	१	मास ०
२१	८	१९	९	८	२१	१३	६	१३	दिन ०

"सव्य" मेषांशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	वृश्चिक	तुला	राशि
०	०	१	०	१	०	०	०	०	वर्ष ९
९	५	१०	९	५	७	१०	७	५	मास ०
२१	१२	२०	२१	८	१६	२४	१६	८	दिन ०

''अपसव्य'' मेषांशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५ \times ३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	राशि
०	१	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष ५
३	०	५	९	४	६	४	९	५	मास ०
०	१८	१२	२१	६	०	६	१९	१२	दिन ०

''अपसव्य'' मेषांशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१ \times ३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	राशि
४	१	३	१	२	१	३	१	१	वर्ष २१
४	१०	४	५	१	५	४	१०	०	मास ०
२७	२०	९	१९	६	१९	९	२०	१८	दिन ०

''अपसव्य'' मेषांशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९ \times ३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	वृष	मेष	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	राशि
०	१	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष ९
९	५	७	१०	७	५	९	५	१०	मास ०
२१	८	१६	२४	१६	८	२१	१२	२०	दिन ०

''अपसव्य'' मेषांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६ \times ३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मेष	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	राशि
२	१	१	१	०	१	०	३	१	वर्ष १६
६	१	७	१	६	५	९	४	५	मास ०
२१	१३	६	१३	२१	८	१८	८	८	दिन ०

''अपसव्य'' मेषांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७ \times ३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	राशि
०	०	०	१	०	०	१	०	१	वर्ष ७
५	८	५	१	७	४	५	७	१	मास ०
२६	१२	२६	१३	१६	६	१९	१६	१३	दिन ०

* * *

"अपसव्य" कालचक्र *मीनांश* वर्ष ८६ में मीनकुंभादि राशियों की दशा

मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	राशि
१०	४	४	१०	७	१६	९	५	२१	वर्ष ८६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"अपसव्य" मीनांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	राशि
१	०	०	१	०	१	१	०	२	वर्ष १०
१	५	५	१	९	१०	०	६	५	मास ०
२८	७	१७	२८	२३	९	१६	२९	९	दिन ०

"अपसव्य" मीनांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मीन	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	३	८	५	२	११	५	मास ०
६	६	१७	२७	२७	०	२३	२१	१७	दिन ०

"अपसव्य" मीनांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	३	८	५	२	११	५	२	मास ०
६	१७	२७	२७	०	२३	२१	१७	६	दिन ०

"अपसव्य" मीनांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	मकर	राशि
१	०	१	१	०	२	१	०	०	वर्ष १०
१	९	१०	०	६	५	१	५	५	मास ०
२८	२३	९	१६	२९	९	१६	१७	१७	दिन ०

"अपसव्य" मीनांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	मकर	धनु	राशि
०	१	०	०	१	०	०	०	०	वर्ष ७
६	३	८	४	८	९	३	३	९	मास ०
२५	१८	२३	२६	१५	२३	२७	२७	२३	दिन ०

"अपसव्य" मीनांशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	राशि
२	१	०	३	१	२	२	१	१	वर्ष १६
११	८	११	१०	१०	८	८	१०	३	मास ०
२१	२	४	२६	९	२७	२७	९	१८	दिन ०

"अपसव्य" मीनांशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	राशि
०	०	२	१	१	१	१	०	१	वर्ष ९
११	६	२	०	५	५	०	८	८	मास ०
९	८	११	१६	०	०	१६	२३	२	दिन ०

"अपसव्य" मीनांशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कर्क	मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	राशि
०	१	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ५
३	२	६	२	२	६	४	११	६	मास ०
१४	१९	२९	२३	२३	२९	२६	४	८	दिन ०

"अपसव्य" मीनांशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१\times३६०}{८६}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	मीन	कुंभ	मकर	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	राशि
५	२	०	०	२	१	३	२	१	वर्ष २१
१	५	११	११	५	८	१०	२	२	मास ०
१६	९	२१	२१	९	१५	२६	११	१९	दिन ०

* * *

"अपसव्य" कालचक्र *कुंभांश* वर्ष ८३ में मिथुनवृषादि राशियों की दशा

मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	राशि
९	१६	७	१०	४	४	१०	७	१६	वर्ष ८३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"अपसव्य" कुंभांशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	राशि
०	१	०	१	०	०	१	०	१	वर्ष ९
११	८	९	१	५	५	१	९	८	मास ०
२१	२४	३	०	६	६	०	३	२४	दिन ०

"अपसव्य" कुंभांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	राशि
३	१	१	०	०	१	१	३	१	वर्ष १६
१	४	११	९	९	११	४	१	८	मास ०
०	५	३	७	७	३	५	०	२४	दिन ०

"अपसव्य" कुंभांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	वृष	राशि
०	०	०	०	०	०	१	०	१	वर्ष ७
७	१०	४	४	१०	७	४	९	४	मास ०
२	३	१	१	३	२	५	३	५	दिन ०

"अपसव्य" कुंभांशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	राशि
१	०	०	१	०	१	१	१	०	वर्ष १०
२	५	५	२	१०	११	१	११	१०	मास ०
१३	२३	२३	१३	३	३	०	३	३	दिन ०

"अपसव्य" कुंभांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	धनु	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	४	९	५	९	४	५	मास ०
९	९	२३	१	७	६	७	१	२३	दिन ०

"अपसव्य" कुंभांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	४	९	५	९	४	५	२	मास ०
९	२३	१	७	६	७	१	२३	९	दिन ०

"अपसव्य" कुंभांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	राशि
१	०	१	१	१	०	१	०	०	वर्ष १०
२	१०	११	१	११	१०	२	५	५	मास ०
१३	३	३	०	३	३	१३	२३	२३	दिन ०

"अपसव्य" कुंभांशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	वृष	मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि
०	१	०	१	०	०	०	०	०	वर्ष ७
७	४	९	४	७	१०	४	४	१०	मास ०
२	५	३	५	२	३	१	१	३	दिन ०

"अपसव्य" कुंभांशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८३}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मिथुन	वृष	मेष	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	राशि
३	१	३	१	१	०	०	१	१	वर्ष १६
१	८	१	४	११	९	९	११	४	मास ०
०	२४	०	५	३	७	७	३	५	दिन ०

* * *

''अपसव्य'' कालचक्र *मकरांश* वर्ष ८५ में मिथुनसिंहादि राशियों की दशा

मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	राशि
९	५	२१	९	१६	७	१०	४	४	वर्ष ८५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

''अपसव्य'' मकरांशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	राशि
०	०	२	०	१	०	१	०	०	वर्ष ९
११	६	२	११	८	८	०	५	५	मास ०
१३	१०	२०	१३	९	२६	२१	२	२	दिन ०

''सव्य'' मकरांशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	मिथुन	राशि
०	१	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ५
३	२	६	११	४	७	२	२	६	मास ०
१५	२४	१०	८	२८	१	२४	२४	१०	दिन ०

''अपसव्य'' मकरांशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	मिथुन	सिंह	राशि
५	२	३	१	२	०	०	२	१	वर्ष २१
२	२	११	८	५	११	११	२	२	मास ०
७	२०	१३	२२	१९	२५	२५	२०	२४	दिन ०

''अपसव्य'' मकरांशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	मिथुन	सिंह	कर्क	राशि
०	१	०	१	०	०	०	०	२	वर्ष ९
११	८	८	०	५	५	११	६	२	मास ०
१३	९	२६	२१	२	२	१३	१०	२०	दिन ०

"अपसव्य" मकरांशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	राशि
३	१	१	०	०	१	१	३	१	वर्ष १६
०	३	१०	९	९	८	११	११	८	मास ०
४	२४	१७	१	१	९	१८	१३	९	दिन ०

"अपसव्य" मकरांशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	मीन	कुंभ	मकर	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	राशि
०	०	०	०	०	०	१	०	१	वर्ष ७
६	९	३	३	८	४	८	८	३	मास ०
२७	२६	२८	२८	२६	२८	२२	२६	२४	दिन ०

"अपसव्य" मकरांशीय मीन दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मीन	कुंभ	मकर	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	राशि
१	०	०	१	०	२	१	१	०	वर्ष १०
२	५	५	०	७	५	०	१०	९	मास ०
३	१९	१९	२१	१	१९	२१	१७	२६	दिन ०

"अपसव्य" मकरांशीय कुंभ दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

कुंभ	मकर	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	२	५	२	११	५	९	३	५	मास ०
७	७	२	२४	२५	२	१	२८	१९	दिन ०

"अपसव्य" मकरांशीय मकर दशावर्ष ४ में अन्तर्दशा ($\frac{४\times३६०}{८५}$ = दिनादि ध्रुवक)

मकर	मिथुन	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	वृश्चिक	मीन	कुंभ	राशि
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ४
२	५	२	११	५	९	३	५	२	मास ०
७	२	२४	२५	२	१	२८	१९	७	दिन ०

* * *

"अपसव्य" कालचक्र *धनुरंश* वर्ष १०० में धनुरवृश्चिकादि राशियों की दशा

धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	राशि
१०	७	१६	९	५	२१	९	१६	७	वर्ष १००
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास ०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन ०

"अपसव्य" धनुरंशीय धनु दशावर्ष १० में अन्तर्दशा ($\frac{१०\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	राशि
१	०	१	०	०	२	०	१	०	वर्ष १०
०	८	७	१०	६	१	१०	७	८	मास ०
०	१२	६	२४	०	६	२४	६	१२	दिन ०

"अपसव्य" धनुरंशीय वृश्चिक दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	राशि
०	१	०	०	१	०	१	०	०	वर्ष ७
५	१	७	४	५	७	१	५	८	मास ०
२६	१३	१६	६	१९	१६	१३	२६	१२	दिन ०

"सव्य" धनुरंशीय तुला दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	वृश्चिक	राशि
२	१	०	३	१	२	१	१	१	वर्ष १६
६	५	९	४	५	६	१	७	१	मास ०
२१	८	१९	९	८	२१	१३	६	१३	दिन ०

"सव्य" धनुरंशीय कन्या दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९\times३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	वृश्चिक	तुला	राशि
०	०	१	०	१	०	०	०	१	वर्ष ९
९	५	१०	९	५	७	१०	७	५	मास ०
२१	१२	२०	२१	८	१६	२४	१६	८	दिन ०

"अपसव्य" धनुरंशीय सिंह दशावर्ष ५ में अन्तर्दशा ($\frac{५×३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	राशि
०	१	०	०	०	०	०	०	०	वर्ष ५
३	०	५	८	४	६	४	९	५	मास ०
०	१८	१२	१८	६	०	६	१८	१२	दिन ०

"अपसव्य" धनुरंशीय कर्क दशावर्ष २१ में अन्तर्दशा ($\frac{२१×३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

कर्क	मिथुन	वृष	मेष	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	राशि
४	१	३	१	२	१	३	१	१	वर्ष २१
४	१०	४	५	१	५	४	१०	१	मास ०
२७	२०	९	१९	६	१९	९	२०	१८	दिन ०

"अपसव्य" धनुरंशीय मिथुन दशावर्ष ९ में अन्तर्दशा ($\frac{९×३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

मिथुन	वृष	मेष	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	राशि
०	१	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष ९
९	५	७	१०	७	५	९	५	१०	मास ०
२१	९	१६	२४	१६	८	२१	१२	२०	दिन ०

"अपसव्य" धनुरंशीय वृष दशावर्ष १६ में अन्तर्दशा ($\frac{१६×३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

वृष	मेष	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	राशि
२	१	१	१	२	१	०	३	१	वर्ष १६
६	१	७	१	६	५	९	४	५	मास ०
२१	१३	६	१३	२१	८	१८	९	८	दिन ०

"अपसव्य" धनुरंशीय मेष दशावर्ष ७ में अन्तर्दशा ($\frac{७×३६०}{१००}$ = दिनादि ध्रुवक)

मेष	धनु	वृश्चिक	तुला	कन्या	सिंह	कर्क	मिथुन	वृष	राशि
०	०	०	१	०	०	१	०	१	वर्ष ७
५	८	५	१	७	४	५	७	१	मास ०
२६	१२	२६	१३	१६	६	१९	१६	१३	दिन ०

* * *

१ सूर्य की दशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा ''ध्रुवाङ्क १८ दिन''—

सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योग
०	०	०	०	०	०	०	०	१	६ वर्ष
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	० मास
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	० दिन

ध्रुवाङ्क × दशावर्ष ÷ ३० = लब्धि मास शेष दिन

१ सूर्यमहादशा में *सूर्य* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ५४ घटी''—

सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योग
०	०	०	०	०	०	०	०	१	३ मास
५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	१८ दिन
२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०	० घटी

ध्रुवाङ्क × दशावर्ष ÷ ६० = लब्धि दिन शेषघटी

१ सूर्यमहादशा में *चन्द्रमा* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ९० घटी''—

चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	योग
०	०	०	०	०	०	०	१	०	६ मास
१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९	० दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	० घटी

१ सूर्यमहादशा में मङ्गल के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुबाङ्क ६३ घटी''—

भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	योग
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मास
७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०	६ दिन
२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०	० घटी

१ सूर्य महादशा में *राहु* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क १६२ घटी''—

राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	योग
१	१	१	१	०	१	०	०	०	१० मास
१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	२४ दिन
३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४	० घटी

१ सूर्यमहादशा में *बृहस्पति* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क १४४ घटी''—

गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	योग
१	१	१	०	१	०	०	०	१	९ मास
८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३	१८ दिन
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	० घटी

१ सूर्यमहादशा में *शनि* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क १७१ घटी''—

शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	योग
१	१	०	१	०	०	०	१	१	११ मास
२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५	१२ दिन
९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६	० घटी

१ सूर्यमहादशा में *बुध* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क १५३ घटी''—

बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	योग
१	०	१	०	०	०	१	१	१	१० मास
१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८	६ दिन
२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७	० घटी

१ सूर्य महादशा में *केतु* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ६३ घटी''—

केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	योग
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मास
७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	६ दिन
२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	० घटी

१ सूर्यमहादशा में *शुक्र* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १८० घटी"—

शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	योग
२	०	१	०	१	१	१	१	०	१२ मास
०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	० दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० घटी

* * *

२ चन्द्रमा की दशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा "ध्रुवाङ्क ३० दिन"—

चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	योग
०	०	१	१	१	१	०	१	०	१० वर्ष
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	० मास
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० दिन

ध्रुवाङ्क × दशावर्ष ÷३० = लब्धि मास शेष दिन

२ चन्द्रमा महादशा में *चन्द्रमा* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १५० घटी"—

चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	योग
०	०	१	१	१	१	०	१	०	१० मास
२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५	० दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	० घटी

ध्रुवाङ्क × दशावर्ष ÷६० = लब्धि दिन शेष घटी

२ चन्द्रमा महादशा में *भौम* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १०५ घटी"—

भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	योग
०	१	०	१	०	०	१	०	०	७ मास
१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७	० दिन
१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	० घटी

२ चन्द्रमा महादशा में *राहु* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क २७० घटी"—

राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	योग
२	२	२	२	१	३	०	१	१	१८ मास
२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१	० दिन
०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	० घटी

२ चन्द्रमा महादशा में *बृहस्पति* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क २४० घटी"—

गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	योग
२	२	२	०	२	०	१	०	२	१६ मास
४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	० दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० घटी

२ चन्द्रमा महादशा में *शनि* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क २८५ घटी"—

शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	योग
३	२	१	३	०	१	१	२	२	१९ मास
०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	० दिन
१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	० घटी

२ चन्द्रमा महादशा में *बुध* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क २५५ घटी"—

बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	योग
२	०	२	०	१	०	२	२	२	१७ मास
१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०	० दिन
१५	४५	०	३०	३०	४५	३०	०	४५	० घटी

२ चन्द्रमा महादशा में केतु के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १०५ घटी"—

केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	योग
०	१	०	०	०	१	०	१	०	७ मास
१२	५	१०	१७	१२	१	२८	२०	२९	० दिन
१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५	० घटी

२ चन्द्रमा महादशा में *शुक्र* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ३०० घटी"—

शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	योग
३	१	१	१	३	२	३	२	१	२० मास
१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	० दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० घटी

२ चन्द्रमा महादशा में *सूर्य* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ९० घटी"—

सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योग
०	०	०	०	०	०	०	०	१	६ मास
९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	० दिन
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	० घटी

* * *

३ मङ्गल की दशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा "ध्रुवाङ्क २१ दिन"—

भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	योग
०	१	०	१	०	०	१	०	०	७ वर्ष
४	०	११	१	११	४	२	४	७	० मास
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०	० दिन

३ मङ्गल महादशा में *मङ्गल* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ७३½ घटी"—

भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	योग
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मास
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	२७ दिन
३५	३	३६	१६	५०	३४	३०	२१	१५	० घटी

३ मङ्गल महादशा में *राहु* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १८९ घटी"—

राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	योग
१	१	१	१	०	२	०	१	०	१२ मास
२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	१८ दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	० घटी

३ मङ्गल महादशा में *बृहस्पति* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १६८ घटी"—

गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	योग
१	१	१	०	१	०	०	०	१	११ मास
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	६ दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	० घटी

३ मङ्गल महादशा में *शनि* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क १९९½ दिन''—

शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	योग
२	१	०	२	०	१	०	१	१	१३ मास
३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	९ दिन
१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	० घटी

३ मङ्गल महादशा में *बुध* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क १७८½ घटी''—

बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	योग
१	०	१	०	०	०	१	१	१	११ मास
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२७ दिन
३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	० घटी

३ मङ्गल महादशा में *केतु* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ७३½ घटी''—

केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	योग
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मास
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	२७ दिन
३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	० घटी

३ मङ्गल महादशा में *शुक्र* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क २१० घटी''—

शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	योग
२	०	१	०	२	१	२	१	०	१४ मास
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	० दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	० घटी

३ मङ्गल महादशा में *सूर्य* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ६३ घटी''—

सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योग
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६ दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	० घटी

मङ्गल महादशा में *चन्द्रमा* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क १०५ घटी''—

चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	योग
०	०	१	०	१	०	०	१	०	७ मास
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	० दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	० घटी

* * *

४ राहु की दशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा ''ध्रुवाङ्क ५४ दिन''—

राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	योग
२	२	२	२	१	३	०	१	१	१८ वर्ष
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	० मास
१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८	० दिन

४ राहु महादशा में *राहु* के ही अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ४८६ घटी''—

राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	योग
४	४	५	४	१	५	१	२	१	३२ मास
२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	१२ दिन
४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२	० घटी

४ राहु महादशा में *बृहस्पति* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ४३२ घटी''—

गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	योग
३	४	४	१	४	१	२	१	४	२८ मास
२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९	२४ दिन
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	० घटी

४ राहु महादशा में *शनि* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ५१३ घटी''—

शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	योग
५	४	१	५	१	२	१	५	४	३४ मास
१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६	६ दिन
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	० घटी

४ राहु महादशा में *बुध* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ४५९ दिन"—

बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	योग
४	१	५	१	२	१	४	४	४	३० मास
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५	१८ दिन
३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१	० घटी

४ राहु महादशा में *केतु* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १८९ घटी"—

केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	योग
०	२	०	१	०	१	१	१	१	१२ मास
२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३	१८ दिन
०	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	० घटी

४ राहु महादशा में *शुक्र* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ५४० घटी"—

शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	योग
६	१	३	२	५	४	५	५	२	३६ मास
०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३	० दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० घटी

४ राहु महादशा में *सूर्य* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १६२ घटी"—

सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योग
०	०	०	१	१	१	१	०	१	१० मास
१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४	२४ दिन
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०	० घटी

४ राहु महादशा में *चन्द्रमा* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क २७० घटी"—

चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	योग
१	१	२	२	२	२	१	३	०	१८ मास
१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	० दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	० घटी

४ राहु महादशा में *मङ्गल* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १८९ दिन"—

भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	योग
०	१	१	१	१	०	२	०	१	१२ मास
२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	१८ दिन
३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	० घटी

* * *

५ बृहस्पति की दशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा "ध्रुवाङ्क ४८ दिन"—

गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	योग
२	२	२	०	२	०	१	०	२	१६ वर्ष
१	६	३	११	८	९	४	११	४	० मास
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४	० दिन

५ बृहस्पति महादशा में *बृहस्पति* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ३८४ घटी"—

गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	योग
३	४	३	१	४	१	२	१	३	२५ मास
१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५	१८ दिन
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	० घटी

५ बृहस्पति महादशा में *शनि* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ४५६ घटी"—

शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	योग
४	४	१	५	१	२	१	४	४	३० मास
२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१	१२ दिन
२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६	० घटी

५ बृहस्पति महादशा में *बुध* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ४०८ घटी"—

बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	योग
३	१	४	१	२	१	४	३	४	२७ मास
२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९	६ दिन
३६	३६	०	४६	०	३६	२४	४८	१२	० घटी

५ बृहस्पति महादशा में *केतु* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १६८ घटी"—

केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	योग
०	१	०	०	०	१	१	१	१	११ मास
१९	२६	१६	२८	१९	२०	१४	२३	१७	६ दिन
१६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६	० घटी

५ बृहस्पति महादशा में शुक्र के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ४८० घटी"—

शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	योग
५	१	२	१	४	४	५	४	१	३२ मास
१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६	० दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० घटी

५ बृहस्पति महादशा में *सूर्य* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १४४ घटी"—

सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योग
०	०	०	१	१	१	१	०	१	९ मास
१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८	१८ दिन
२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०	० घटी

५ बृहस्पति महादशा में *चन्द्रमा* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क २४० घटी"—

चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	योग
१	०	२	२	२	२	०	२	०	१६ मास
१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	० दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० घटी

५ बृहस्पति महादशा में *मङ्गल* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १६८ घटी"—

भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	योग
०	१	१	१	१	०	१	०	०	११ मास
१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	६ दिन
३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	घटी

५ बृहस्पति महादशा में *राहु* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ४३२ घटी"—

राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	योग
४	३	४	४	१	४	१	२	१	२८ मास
९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	२४ दिन
३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	० घटी

* * *

६ शनि की दशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा "ध्रुवाङ्क ५७ दिन"—

शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	योग
३	२	१	३	०	१	१	२	२	१९ वर्ष
०	८	१	२	११	७	१	१०	६	० मास
३	९	९	०	१२	०	९	६	१२	० दिन

६ शनि महादशा में *शनि* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ५४१½ घटी"—

शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	योग
५	५	२	६	१	३	२	५	४	३६ मास
२१	३	२	०	२४	०	३	१२	२४	३ दिन
२८	२५	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४	० घटी

६ शनि महादशा में *बुध* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ४८४½ घटी"—

बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	योग
४	१	५	१	२	१	४	४	५	३२ मास
१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३	९ दिन
१६	३१	३०	२७	४५	३१	३१	१२	२५	० घटी

६ शनि महादशा में *केतु* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १९९½ घटी"—

केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	योग
०	२	०	१	०	१	१	२	१	१३ मास
२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६	९ दिन
१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१	० घटी

६ शनि महादशा में *शुक्र* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ५७० घटी''—

शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	योग
६	१	३	२	५	५	६	५	२	३८ मास
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	० दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	० घटी

६ शनि महादशा में *सूर्य* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क १७१ घटी''—

सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योग
०	०	०	१	१	१	१	०	१	११ मास
१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७	१२ दिन
६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०	० घटी

६ शनि महादशा में *चन्द्रमा* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क २८५ घटी''—

चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	योग
१	१	२	२	३	२	१	३	०	१९ मास
१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८	० दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	० घटी

६ शनि महादशा में *मङ्गल* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क १९९ घटी''—

भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	योग
०	१	१	२	१	०	२	०	१	१३ मास
२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३	९ दिन
१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५	० घटी

६ शनि महादशा में *राहु* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ५१३ घटी''—

राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	योग
५	४	५	४	१	५	१	२	१	३४ मास
३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	६ दिन
५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	० घटी

६ शनि महादशा में *बृहस्पति* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ४५६ घटी"—

गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	योग
४	४	४	१	५	१	२	१	४	३० मास
१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१२ दिन
३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	० घटी

* * *

७ बुध की दशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा "ध्रुवाङ्क ५१ दिन"—

बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	योग
२	०	२	०	१	१	२	२	२	१७ वर्ष
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	० मास
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	० दिन

७ बुध महादशा में *बुध* के ही अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क २८५ घटी"—

बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	योग
४	१	४	१	२	१	४	३	४	२८ मास
२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७	२७ दिन
४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	० घटी

७ बुध महादशा में *केतु* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १७८ घटी"—

केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	योग
०	१	०	०	०	१	१	१	१	११ मास
२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०	२७ दिन
४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४	० घटी

७ बुध महादशा में *शुक्र* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ५१० घटी"—

शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	योग
५	१	२	१	५	४	५	४	१	३४ मास
२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९	० दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	० घटी

७ बुध महादशा में *सूर्य* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क १५३ घटी''—

सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योग
०	०	०	१	१	१	१	०	१	१० मास
१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१	६ दिन
१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०	० घटी

७ बुध महादशा में *चन्द्रमा* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क २५५ घटी''—

चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	योग
१	०	२	२	२	२	०	२	०	१७ मास
१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५	० दिन
३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०	० घटी

७ बुध महादशा में *मङ्गल* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क १७८½ घटी''—

भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	योग
०	१	१	१	१	१	१	०	०	११ मास
२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९	२७ दिन
४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५	० घटी

७ बुध महादशा में *राहु* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ४५९ घटी''—

राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	योग
४	४	४	४	१	५	१	२	१	३० मास
१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३	१८ दिन
४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३	० घटी

७ बुध महादशा में *बृहस्पति* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ४०८ घटी''—

गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	योग
३	४	३	१	४	१	२	१	४	२७ मास
१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	६ दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	० घटी

७ बुध महादशा में *शनि* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ४८४ घटी''—

शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	योग
५	४	१	५	१	२	१	४	४	३२ मास
३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	९ दिन
२५	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	० घटी

* * *

८ केतु की दशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा ''ध्रुवाङ्क २१ दिन''—

केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	योग
०	१	०	०	०	१	०	१	०	७ वर्ष
४	२	४	७	४	०	११	१	११	० दिन
२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	० घटी

८ केतु महादशा में *केतु* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ७३ घटी''—

केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	योग
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मास
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	२७ दिन
३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	० घटी

८ केतु महादशा में *शुक्र* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क २१० घटी''—

शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	योग
२	०	१	०	२	१	२	१	०	१४ मास
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	० दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	० घटी

८ केतु महादशा में *सूर्य* के अन्तर में प्रत्यन्तर ''ध्रुवाङ्क ६३ घटी''—

सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योग
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६ दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	० घटी

८ केतु महादशा में *चन्द्रमा* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १०५ घटी"—

चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	योग
०	०	१	०	१	०	०	१	०	७ मास
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	० दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	० घटी

८ केतु महादशा में *भौम* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ७३ घटी"—

भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	योग
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४ मास
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	२७ दिन
३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	० घटी

८ केतु महादशा में *राहु* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १८९ घटी"—

राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	योग
१	१	१	१	०	२	०	१	०	१२ मास
२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	१८ दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	० घटी

८ केतु महादशा में *बृहस्पति* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १६८ घटी"—

गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	योग
१	१	१	०	१	०	०	०	१	११ मास
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	६ दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	० घटी

८ केतु महादशा में *शनि* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १९९ घटी"—

शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	योग
२	१	०	२	०	१	०	१	१	१३ मास
३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	९ दिन
१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	० घटी

८ केतु महादशा में *बुध* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १७८ घटी"—

बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	योग
१	०	१	०	०	०	१	१	१	११ मास
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२७ दिन
३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	० घटी

* * *

९ शुक्र की दशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा "ध्रुवाङ्क ६० दिन"—

शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	योग
३	१	१	१	३	२	३	२	१	२० वर्ष
४	०	८	२	०	८	२	१०	२	० मास
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० दिन

९ शुक्र महादशा में *शुक्र* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ६०० घटी"—

शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	योग
६	२	३	२	६	५	६	५	२	४० मास
२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०	० दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० घटी

९ शुक्र महादशा में *सूर्य* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क १८० घटी"—

सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योग
०	१	०	१	१	१	१	०	२	१२ मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	० दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० घटी

९ शुक्र महादशा में *चन्द्रमा* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ३०० घटी"—

चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	योग
१	१	३	२	३	२	१	३	१	२० मास
२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०	० दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० घटी

शुक्र महादशा में *मङ्गल* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क २१० घटी"—

भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	योग
०	२	१	२	१	०	२	०	१	१४ मास
२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५	० दिन
३०	०	०	०	३०	३०	०	०	०	० घटी

शुक्र महादशा में *राहु* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ५४० घटी"—

राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	योग
५	४	५	५	२	६	१	३	२	३६ मास
१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३	० दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० घटी

शुक्र महादशा में *बृहस्पति* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ४८० घटी"—

गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	योग
४	५	४	१	५	१	२	१	४	३२ मास
८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	० दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	० घटी

शुक्र महादशा में *शनि* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ५७० घटी"—

शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	योग
६	५	२	६	१	३	२	५	५	३८ मास
०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२	० दिन
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	० घटी

शुक्र महादशा में *बुध* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क ५१० घटी"—

बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	योग
४	१	५	१	२	१	५	४	५	३४ मास
२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	० दिन
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	० घटी

शुक्र महादशा में *केतु* के अन्तर में प्रत्यन्तर "ध्रुवाङ्क २१० घटी"—

केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	योग
०	२	०	१	०	२	१	२	१	१४ मास
२४	१०	२१	५	२४	३	२५	६	२९	० दिन
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	० घटी

* * *

श्लोकानुक्रमणिका

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
अ वर्ग			
अर्कज्ञौ सुखराशिस्थौ	७	४२	३७४
अकाले मृत्युसन्तापं	१८	६४	८४४
अर्कांशे कुलटा निजोच्चगृहगे	१४	९	६७९
अर्केण मन्दः शनिना	२	६०	९६
अग्निबाधां रवौ	१७	३२	७९५
अजवृषकार्कि विलग्ने रक्षति	४	८०	२११
अज हरितुरङ्गैरुक्ष	१०	३७	५४८
अजीर्णगुल्मामयशूलमेति	६	९०	३३७
अत्यन्त सत्वे यदि लग्ननाथे	४	७१	२०७
अतिक्रूर समायुक्ते भावे	१२	८	६०३
अतिसुख तेजो रुपवान्	९	६	४८२
अन्नदानपरो नित्यं	१३	७०	६६७
अथ तरणिदशायां	१८	५९	८४२
अर्थव्ययगृहाधीशा नाशगाः	१२	१३८	६४०
अर्थाप्तिं कथयेद्विलग्न	१५	४४	७३८
अथोर्ध्वदृष्टि दिननाथ भौमो	२	३२	७८
अधिपस्य बलाधिक्य	१७	८१	८०५
अधिपे चर राशिस्थे	१७	८२	८०५
अधिरोगो भवेद	१७	३०	७९५
अर्धाधिकं षट्कमिनस्य सूरेः	२	४०	८५
अधोमुखा दिनेशस्य	२	७०	१००
अन्नदानपरोनित्य	१३	७०	६६७
अन्नदानं यशोलाभं	१७	५९	८०१
अन्तः सारान् जनयति	३	९	११९
अन्योन्यं यदि पश्यतः	३	२३	१३४
अन्योन्यतः सोदरलाभमान	२	४१	८६
अन्योन्यांशंगतौ	१६	३५	७७१
अन्योन्यषष्ठाष्टमपाकभुक्तौ	१८	५३	८४०

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
अन्योन्यमिष्ट ग्रहयोर्दशायां	१८	१६	८२५
अर्थव्यय गृहाधीशा नाशगाः	१२	१३८	६४०
अर्थार्जने सहायः	१६	२	७५६
अर्थाधीशो यत्र संस्थयो	११	५८	५८९
अदृश्ययातौ पितृमातृ नाथौ	१३	६६	६६६
अदृश्यराशौ यदि वा	१२	१४	६०५
अधम सम वरिष्ठा	७	११२	४०८
अनङ्गभावोपगते तु केतौ	८	८१	४७०
अनुराधा मैत्रं त्वथ	९	४३	४९५
अन्योन्यदृश्यौ शनिदानवेज्यौ	७	७८	३९७
अन्योन्यमिष्ट विपुलं	१२	२६	६११
अन्योन्य केन्द्र गृहगौ	७	१३०	४१६
अन्योन्य केन्द्र गृहगौ	७	१३८	४२०
अपवादं गुरु द्वेषं	१८	९१	८४९
अपांपतिर्देव गणेशभाग	१	४०	४०
अपि राजकुले जातो निःस्व	७	१०९	४०७
अभुक्तमूल जनितो यदि	९	६८	५०२
अमायां तु प्रजातानां	९	७१	५०३
अयत्नतो मन्दिरलाभदः	१२	१४२	६४०
अर्थाप्ति पितृ जननी सपत्न	१५	४३	७३७
अल्यंशकस्थिते मन्दे	४	५२	२०२
अल्यष्टमं वृश्चिक कौर्पी कीटाः	१	६	४
अश्वयुक् चैत्र कार्तिक्या भाद्रे	९	८३	५०७
अश्विन्यामतिबुद्धि वित्त विनय	९	८५	५०७
अशुभ सहिते ग्रस्ते चन्द्रे	४	३६	१९४
अश्विन्यामुदयस्थिते	७	६	३४८
अश्विपुनर्वसुहस्त मूलप्रोष्ठ	१७	७	७८५
अष्टमस्य त्रिभागांश	५	५१	२५०
अष्टमस्थानगे शुक्रे	५	८९	२६८
अष्टमाधिपतौ केन्द्रे	४	६६	२०६

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
अष्टमांशे पितृव्यस्त्री निखिलं	९	५४	४९९
अष्टमाष्टमगे सूर्ये	३	१९	१३०
अष्टादशाध्यायिनी सर्व होरा	१८	१७२	८६८
अष्टौ बालारिष्टमादौ नराणां	४	३	१७८
असत्यवादी चपलोऽटनोऽधनः	८	६४	४६७
असत्यवादी गुणवान	७	९६	४०५
अस्तङ्गतेषु द्युचरेषु	५	२५	२४२
अस्मिन्नाधान लग्ने तु	३	२०	१३०
असित कुटिल केशः	२	५८	९३
असित रविशशाङ्क भूमि	४	३७	१९५
अहमादित्य रुपोऽस्मि	१७	३	७८२
आचारहीनः कपटी च	८	७०	४८
आचार्यदेवगुरु भूसुर शाप दोषै	२	७९	१०४
आज्ञाक्रियाक्षेत्र विनाशमाहु	१२	१४७	६४०
आज्ञाधरत्वमारोग्यं	१७	७१	८०२
आज्ञामान विभूषणानि	१५	१	७१९
आज्ञास्थानाधिपे सौम्ये	१५	५९	७४४
आज्ञाधिपे मन्दयुते	१५	६०	७४५
आग्नेयैर्विधवा	१६	१९	७६३
आद्वादशाब्दान्तरयोनि जन्मना	४	१	१७७
आद्यन्तमध्यभवनोपता	२	८२	१०६
आदित्यचंद्रकुजराहु सुरेश मन्त्रि	१८	३	८१९
आदित्यमुख्य नव खेचर	५	२७	२४४
आदित्ये नवमस्थिते	८	८६	४७२
आद्ये चतुष्के जननी कृताघै	४	२	१७७
आदौ भावफलं मध्ये	१८	८२	८४७
आन्दोलिकातुरगलाभमुपैति	१२	१०२	६३०
आन्दोलिका भरणदौ	१२	१०१	६३०
आपञ्चविंशति	१०	५३	५५९
आपोक्लिमस्थानगता न	४	२७	१८९

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
आप्योदयमाप्यगः शशी	३	६२	१५६
आयस्य शुभखेचरः शुभधनं	१५	६८	७४८
आयस्थेऽमरमन्त्रिणि	८	९५	४७३
आयुर्दायमनिष्ट हेतु	१४	४८	६९४
आयुरब्दादिकं सर्वं	५	३४	२४७
आयुर्विलग्नाधिपती बलेन	५	८३	२६७
आयुस्तथैतेषु	५	१४	२३५
आरस्यमित्राणि रवीन्दुजीवा	२	४३	८३
आरः स्ववार नवभाग	२	६३	९६
आरार्क चन्द्र भृगुजैः	८	१६	४५५
आरार्कजयास्त्रिकोणगे	३	६७	१५८
आरार्कि जीव शशिनन्दन शुक्र	१	३७	३५
आरेक्षिते यदि विलग्नगृहे	६	९३	३३८
आरोग्यमर्थलाभं च	१७	५७	८०१
आरोहवीर्याधिक भावतुल्य	१८	४	८२०
आलिख्य चक्रं नवपूर्वरेखा	१०	३३	५४५
आश्लेषाद्ये न गण्डं	९	५६	५००
आसन्नकेन्द्र भवनद्वय	७	१६८	४३४
इत्थं महादाय दिनं महाब्दैः	१७	१०९	८१७
इत्येवं मरणस्थानं	१७	३६	७९७
इष्टव्ययो भवति शोभन	१५	७४	७५१
इष्टबन्धु गुरुद्वेष धनलाभं	१८	१४०	८५९
इष्टोत्कटत्वे हि शुभानि	१८	११	८२०
ईर्ष्युर्विदेशनिरतोऽध्वरतश्च	७	१७४	४४१
उक्तेषु राशिषु गतस्य	१८	८	८२०
उक्तस्थान त्रयेष्वेको बली	१२	११०	६३३
उक्षा देहो युग्मकोणं	१७	२७	७९४
उच्चं गतस्य द्विगुणं	१०	४६	५५६
उच्चं गते रवौ चान्ये	५	२९	२४५
उच्चग्रहांशक पतौ यदि	७	१४२	४२२

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
उच्चांशे स्वनवांशे च	२	८५	१०८
उच्चराशिगतः सौम्यो	१८	१४२	८६०
उच्चराशिं गतः शुक्रो	१८	१६७	८६४
उच्चस्थेषु चतुर्ग्रहेषु	८	१०३	४७५
उच्चस्थे शशिजेऽहि केतु वियुते	१५	९	७२३
उच्चस्थे दिननायके यदि	८	१००	४७५
उच्चस्थे शुभखेचरे	५	१२१	२८४
उच्चस्थितस्यधरणीतनयस्य	१८	९४	८४९
उच्चान्वितैस्त्रिभिः	४	८७	११६
उच्चाभिलाषी सविता	७	३३	३७०
उत्तमं तु त्रिवर्गैक्यं चातुर्वर्गन्तु	१	४५	४१
उत्पन्न नक्षत्र विलग्नतो वा	१८	३४	८३३
उत्पन्न भोगसुखभाग्धनवाहनाढ्य	७	८५	४०१
उत्पादितं हि द्युचरस्य	१८	१०	८२०
उत्तरात्रय नक्षत्रं वृश्चिकाद्यप्रदि	१७	१०	७८५
उत्तराफाल्गुनीतारा प्रथमे चरणे	९	६२	५०१
उत्तरायण समुद्भवः पुमान्	९	२६	४८९
उत्सृष्टा मदनस्थिते	१६	२३	७६५
उद्क पाञ्चाल यवन कोशल	१	६०	५२
उदयतिमृदुभांशे सप्तमस्थे	३	४४	१४६
उदयस्थेऽथवामन्दे कुजै	३	४७	१४८
उदयाद्द्वाविंशतिकं द्रेक्काणं	५	७२	२६१
उदयोडुपयोर्व्ययस्थिते	३	६३	१५६
उद्योगमङ्गमालस्यं कृषिगोभू	१७	७५	८०३
उपचय गृहसंस्थो जन्मपो	७	३२	३६०
उपजीव्य नरं सर्वे	११	८७	५९८
उपान्त्य याते शिखिनि	८	९६	४७४
उष्णाधिक्यं सुहृद्द्वेषं	१८	८४	८४८
एकः स्वतुङ्गगः खेटो -	८	१०२	४७५
एकत्र मन्दावनिनन्दनार्का	४	२२	१८८

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
एक द्विकत्रिक खलद्युचरा	६	२५	३०२
एकर्क्षगैरिन शशि क्षितिजज्ञ	८	२६	४५८
एकर्क्षगैरिन सुधाकर	८	१५	४५५
एकर्क्षोपगतानां योभवति	५	१०	२३२
एकस्मिन्परमोच्चगे	७	१०	३५१
एकान्तरगतैरर्थात्समुद्रः	७	१७२	४३९
एकाब्द शुक्र तारायां	९	६५	५०२
एकांश भागौ गुरु सूर्य पुत्रौ	४	९८	२२१
एकस्थौ तनु कर्मपौ यदि	१५	५	७२१
एतत् क्रूरे लग्नके	५	१३	२३३
एवं चिरायुषां	५	३०	२४५
एवमायुः परिज्ञानं देहजीवौ	१७	१३	७८५
ऐरावतं तु नवकं फलं तेषां	१	४७	४१
ऐरावतांशेन्द्रगुरौ ससन्धौ	६	४२	३११
ओजर्क्षे पुरुषांशकेषु	३	२१	१३१
ओजस्वी साहसी	७	१३१	४१६
ओजे कलांश प्रमुखास्तदीशा	१	३६	३५
ओजेविलग्ने	१६	९	७६०
ओजे राशौ भानुहोरा प्रजातः	९	१११	५१५
अन्तः शठः परवधूरतिकेलिलोलः	९	११०	५१४

क वर्ग

कर्कटस्थे निशानाथे	१५	६१	७४५
कर्कटात्तु हरौ याते	१७	१९	७९२
कर्कटाद्दक्षिणे सिंहे	१७	२३	७९३
कर्कांशकस्थिते मन्दे	४	५६	२०२
कण्ठीरवस्य घन शैल गुहावनानि	१	११	१०
कण्ठीरवाजघटकीट मृगाननाद्या	९	११३	५१५
कण्टीरवं कटकभं च	१०	३९	५५०
कन्याकर्कटयोः	१७	९२	८०९
कन्यार्द्धमुच्चं शशिजस्यकोणं	१	२८	२५

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
कर्णाभरणवस्त्राप्ति	१७	५४	८०१
कण्टकादि प्रवृत्तैश्च	७	१७०	४३६
कण्ठरोगं मनस्तापं	१८	६८	८४४
कन्दृक श्रोत्रनसाकपोल हनवो	३	७७	१७३
कन्यानृयुग्मभवने निजवार वर्गे	२	६४	९७
कन्यामीन नृयुग्मगोहरिधनु	७	१	३४५
कन्याभे लाभमृगेन्द्र	७	२	३४६
कन्यायाः कर्कटे याते	१७	२१	७९३
कन्यायुग्मांशकोपेतांस्तथा	३	२८	१३८
कन्यावसानयुगचापमृगाननस्यै	७	२७	३६६
कन्यांशकस्थिते मन्दे	४	५४	२०२
कर्मचक्रदशाकाले राज्याप्ति	१७	७०	८०२
कर्मनाशं च संचारं	१८	११७	८५५
कर्मलग्न सुखाधीशाः	१२	१२७	६३६
कर्मस्थे शशिनन्दने	१५	१०	७२३
कर्मेश रन्ध्रतनुपा	१४	५०	६९५
कर्म राश्यंशपो यत्त तदीशः	१५	५३	७४२
कर्मकर्मांशगा सौम्या जातः	१५	५२	७४१
कर्मेशज्ञ सुरार्चिता बलयुता	१५	८	७२२
कर्मेशतन्नवांशेशौ	१५	६४	७४६
कर्मेशस्य खलस्य	१८	५१	८३९
कर्मेशे बलवर्जिते	१५	२	७१९
कर्मस्था बलिनस्त्रयो गगनगा	१५	१७	७२७
करोत्यपस्मार मसूरि रज्जु	२	८१	१०५
करोति यद्भावगतः स्वपाकै	१८	१७	८२६
करोति नानाविधरोगदुख	१०	५	५३६
करोति पारावत भागयुक्तो	७	१११	४०८
कलत्राधिपतौ केन्द्रे	१४	२२	६८२
कलत्र नाथस्थित भांशकेशयो	१४	२८	६८५
कलत्रराशि त्रितयेऽथवा	१४	३७	६८९

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
कलत्रराश्यंशगते महीजे	१६	२५	७६६
कलत्र राशिचक्रस्य परिपाके	१७	६४	८०२
कलत्र भूषणं वस्त्रं	१८	९०	८४९
कलत्रपुत्रमरणं	१८	१४५	८६१
कलत्र पुत्रारि गृहेषु सौम्या	७	१४८	४२४
कललघनाकुंरास्थि चर्माङ्ग	४	१७	१८५
कल्पोदयाद्य तनुजन्म विलग्न	१	४९	४६
क्रमशः कालपरिधि	२	६	५६
क्रमाच्चरागद्विशरीर भाना	२	४८	८९
क्रमात्पाटलकर्नाटचर चोल	१	५९	५२
क्रमेण दृक्स्थान निसर्गचेष्टा	२	३८	८४
क्लेशादिभिर्व्याधिनिपीडनं	१८	१२१	८५६
कलहं बन्धुनाशं च	१८	१६६	८६४
क्लेशायासः संपदः शोकरोगं	९	१२८	५२०
काठिन्यरोमावयव कृशात्मा	२	५९	९३
काठिन्योरुकुचामदे	१४	३८	६९०
कामस्थे तनुपे शुभग्रहयुते	१४	१०	६७९
कामस्थाने सखेटे	१४	२५	६८३
कामावनी नन्दन राशियाताः	२	५२	९२
कामारियानसहज तपो लग्न	१२	१२१	६३५
कामान्वितेक्षक वियच्चर राशियाता	१४	३३	६८७
कामासक्त मनस्विनी च	१६	३४	७७०
कामी पूज्य गुणान्वितो	८	४	४५०
कामी कलानिधिभव सगुणा	७	१५९	४२८
कामी जितारिरबलोऽरिगतेऽमरेज्ये	८	७७	४७०
कामी दुर्वरिते जडमतिः	९	२४	४८६
कामी शूरो राजपूज्योऽभिमानी	८	७५	४६९
कामेश्वरे कर्मगते स्वतुंगे	७	१४३	४२२
कामेश्वरो देवगुरुः	१४	४३	६९२
कामेश्वरः शुक्रयुतो रिपुस्थः	६	७६	३३०

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
कारकादि चतुः	१२	२४	६१०
कारकः सहजाधीशस्तद्दर्शी	१२	२३	६०९
कालज्ञः करुणासिन्धु	७	१४७	४२४
कालज्ञः शकुनिभवः	९	१०४	५१२
कालस्यात्मा भास्करश्चित्तमिन्दु	२	१	५४
कालात्मकस्य च शिरोमुखदेश	१	८	६
काले विदारः पापे तु	१४	१४	६८०
कालोचिताशनो भुक्तिनाथे	११	९३	६००
कासश्वासक्षयजनिरुजं	६	९६	३४०
किंत्वत्र भांश प्रतिमं ददाति	५	२०	२४०
क्रियः शिरो वक्त्रगलो	३	३	११४
क्रियादिराशित्रितयोपजाता	१०	६७	५६५
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां	९	६९	५०३
कृषि गो गजभूषासिं राजपूजां	१७	६५	८०२
कीटांशके वधरुचि	९	१२२	५१८
क्रीडागारमिने वनं सुखगते	१४	४०	६९१
कीर्तिस्थानपतो विलग्नभवने	११	१८	५७५
कुक्षिरोगेण सन्तापं	१८	८९	८४९
कुजज्ञ वागीश सितासितारुणैः	१५	३१	७३५
कुजबुधगुरु शुक्रै	८	२५	४५५
कुजार्क सोमार्कजदेववन्दितै	१५	२६	७३१
कुजार्कि देवेज्यसितेन्दुपुत्रैः	१५	३८	७३५
कुजे तु म्रियते मन्दे	१४	१२	६८०
कुजे धनेशे निधने	६	५७	३२१
कुजेन युक्ते खचरे	१२	३९	६१५
कुजेन्दु हेतु प्रतिमासमार्तवं	३	११	१२१
कुटुम्बभावे बहुखेट युक्ते	११	५४	५८८
कुत्सितस्त्रीरतः क्रोधी	७	९९	४०५
कुम्भस्थिते निशानाथे	८	५३	४६४
कुम्भोदयस्थे राविजे	७	२३	३६४

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
क्रूर द्रेष्काणजातः खलमतिरटनः	९	११७	५१६
कुर्वन्ति स्त्रीयुगं तत्र	३	३०	१३९
कुलीरकर्काटक कर्कटाख्या	१	५	४
कुलीर कुंभालिनवांशयुक्ते	६	८२	३३२
कुलीर गोमेषयुतस्य	१८	१०५	८५३
कुंलीर मीनादि गतौ	९	११४	५१५
कुलीर मीनालिगता	५	५५	२५२
क्रूरग्रहदशाकाले	१८	५४	८४०
क्रूरग्रहाणां च दृगाणलग्ने	३	३७	१४१
क्रूरग्रहे बलवति	१५	७५	७५१
क्रूरग्रहैरस्तगतैः	१६	३०	७६९
क्रूरग्रहैः सुबलिभिर्विबलैश्च	३	१	११२
क्रूरनीचांशकस्थे	१३	५४	६६०
क्रूरर्क्षगतावशोभनौ	३	६०	१५४
क्रूरराशिगता पापाः	१८	५५	८४१
क्रूर व्योमचरः	१४	३५	६८९
क्रूरषष्ट्यंशके वाऽपि रन्ध्रेशे	४	६९	२०६
क्रूरसाहसिकोऽटनोऽतिचपलो	८	५८	४६६
क्रूरान्तरे लग्नगते सराहौ	३	४२	१४४
क्रूरेक्षणस्तरुणमूर्तिरुदारशीलः	२	५५	९३
क्रूरेक्षितौ चन्द्रविलग्नराशी	४	८	१८०
क्रूरेऽष्टमे विधवता	१६	४३	७७४
क्रूरेण संयुतः शशी	४	३४	१९२
क्रूरोऽटनश्चपलसाहसिको	८	७२	४६९
क्रूरोदयाधर्मविहीनशीलो	८	६०	४६६
क्रूरोदयास्तरिपुनीचखगोपगानां	५	१६	२३६
केचित् योगा राजयोगस्य भंगा	६	१	२८७
केतौ चोराग्निपीडादिरक्त	१७	४६	७९९
केतुगुरुस्थानगते तु कोपी	८	८८	४७२
केतौ यदा रन्ध्रगृहोपयाते	८	८५	४७१

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
केन्द्रगौ सितदेवेज्यौ स्वोच्चे	७	१६०	४२९
केन्द्रत्रिकोणगाः सर्वे शुभदा	८	११७	४८०
केन्द्रत्रिकोण गृहगः सुतपः	१३	१४	६४८
केन्द्र त्रिकोणे दारेशे	१४	२१	६८२
केन्द्र त्रिकोणे वसु बिन्दुके ज्ञे	१०	२१	५४२
केन्द्रत्रिकोणगे जीवे	११	८१	५९६
केन्द्रत्रिकोणोपगते दिनेशे	१०	१४	५३९
केन्द्रत्रिकोणायगते शशाङ्के	१०	१७	५४०
केन्द्र मूल त्रिकोणस्थे	७	१५२	४२६
केन्द्रे वा यदि कोणगे	७	७७	३९६
केन्द्रस्थिते देवगुरौ	७	११६	४११
केन्द्र वा विलग्ने	६	४	२८९
केन्द्रस्थिता मन्दनिशाकरार्का	६	१९	२९९
केन्द्रस्थितौ सौम्यनिशाकरौ	६	८१	३३२
केन्द्रं गतोह्नि द्विपदो बलाढ्यः	१	१८	१८
केन्द्रादन्यगते चन्द्रे सखेटे	१०	४९	५५८
केन्द्रान्विते विलग्नेशे	४	८६	२१६
केन्द्रे चरेऽर्के चन्द्रे	१३	६५	६६५
केन्द्रेषु पापेषु निशाकरेण	४	६०	२०४
केन्द्रोपगोऽतिबलवान्	४	७६	२१०
केशरीयुग्म मण्डूके च	१७	९७	८१०
कोणस्य शून्यतरराशिगते	१०	३०	५४४
कौजे चन्द्रसुतेऽधनः	८	४१	४६१
खगेदृकाणे बलसंयुतेन	३	७	११७
खण्डत्रयं शफरकर्कट कीट	१०	५७	५६१
खेटोपयाते लघु बिन्दू राशौ	१०	४२	५५०
ख्यातः सुखी सुहृत्प्रीतः	८	१०८	४७८
ख्यातो दिव्य तनुः कुदार तनयः	९	३६	४९३
ख्यातो विद्वान धर्मवा	१४	८६	७१३
गजकेशरी सञ्जातस्तेजस्वी	७	११७	४११

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
गणितज्ञो भवेज्जातो	११	८२	५९६
गण्डान्त तारासहिते मृगाङ्के	४	५	१७९
गरजकरण जातो वीतशत्रुः	९	१०३	५१२
ग्रहत्रयं स्थान बलाधिकं	१२	१०९	६३२
ग्रहवत्सर वासरा हताः	१७	१११	८१८
ग्रहपीडितनक्षत्रे जातो	९	७६	५०४
ग्रहाभिभूतस्त्वतिपीडित	२	१८	६६
ग्रहैश्चतुर्भि सहिते तदीशे	१५	२५	७३०
गान्धर्वलेख्यपटुवाक्	७	९२	४०४
गृध्रोलूकशुकध्वांक्ष सर्पाणां	५	४०	२४८
गृहेशे व्ययगे लग्नादन्यगेहे	१२	१४१	६४०
गुरुक्षेत्रगते चन्द्रे तद्युक्ते	३	५९	१५४
गुरु चन्द्रदिवानाथाः	७	४९	३७६
गुणाभिरामो बहुदेशनाथो	७	१५३	४२६
गुरुदेवाग्निविप्रेषु दानं	१८	१३५	८५९
गुरुदृष्टेऽनुजे शुक्रे	१२	२८	६११
गुरु पुत्रेश द्वारेश भूमिजा	१३	३७	६५४
गुरु लग्नाहिमांशुनां	१३	२६	६५१
गुरु लग्नेशदारेशपुत्र	१३	२४	६५१
गुलिकस्थितनक्षत्रदशा तस्य	१८	३७	८३५
गुरु शशिसहिते कुलीरलग्ने	४	९९	२२१
गुरु शुक्रयुते भुवौ नाथे	१२	५७	६१९
गुरु शुक्र शुभाधीशाः	१२	१२८	६३७
गुरु शुक्र बुधांशस्थे	१४	९५	७१५
गुरुसितयुतचन्द्रे चापगे	७	२६	३६६
गुरु स्त्रीमरणं दुःखं	१८	१२७	८५७
गुरौ चोदरबाधा स्यात्	१७	३३	७९५
गुरौ तद्भावसंयुक्ते	१४	९३	७१५
गुलिकं रविसूनुं च	५	६५	२५८
गुह्योदरादृश्य समीरकुष्ठ	२	७८	१०४

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
गोपुरांशे गुरौ केन्द्रे	४	१०४	२२३
गोपुराद्यंशके जीवे	१२	८१	६२६
गोसिंहालिवधूदये सुतगते	१६	२९	७६८
गौराङ्गः पतिरस्तगे दिनकरे	१६	५२	७७९
घोरांशकौ राक्षसदेवभागौ	१	३९	४०
क्षमासुतः स्वोच्चमुपाश्रितो	७	३६	३७२
क्षितितनयनवांशे लग्नतः	१६	३३	७७०
क्षीणेन्दुमन्दरविराहु शिखिक्ष्माजाः	२	९	६१
क्षीणेशशिन्युदयगे यदि	४	२१	१८७
क्षीणे हिमगौ व्ययगे	४	३३	१९२
क्षीणे शशाङ्के यदि पापयुक्ते	४	६७	२०६
क्षीणे मन्द गृहोदये	६	८९	३३६
क्षीणे शशिन्युदयगे	८	५७	४६६
क्षीणे चन्द्रेऽष्टमे	१२	६४	६२१
क्षेत्रस्थान शुभक्षेत्रे	१२	१३४	६३८
क्षेत्राधिनाथस्य शुभेतरस्य	१८	४७	८३८
क्षेत्रेश्वरे नीच सपत्नभागे	१२	१३५	६३८
क्षोणीपुत्रं वर्जयित्वा	५	८	२३०

च वर्ग

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
चक्रं विलिख्य सह लग्न	१०	१	५२३
चक्रस्य षष्ठराशेस्तु	१७	६१	८०१
चक्रेशाब्दा भुक्तिराशीश्वराब्दै	१७	१०८	८१७
चन्द्रः कर्किणि गोपतौ	२	६२	९६
चन्द्रः कुटुम्बभवने	११	५७	५८८
चन्द्रलग्नाधिपः सूर्य	४	५१	२०१
चन्द्रदृष्टियुतो मान्दि	३	५२	१५०
चन्द्रः सम्पूर्ण गात्रस्तु	४	७२	२०८
चन्द्रस्फुटे नवकसंगुणिते	५	७०	२६०
चन्द्रः स्वबन्धु जनसङ्गम	१७	३८	७९८
चत्वारिंशद्बिन्दुयुक्ते	१०	६६	५६५

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
चतुष्टये शुभैर्युक्ते	४	८५	२१६
चतुष्पादगतेभानौ	३	३९	१४३
चतुर्थे मातुलं हन्ति पञ्चमे	९	७०	५०३
चतुः स्फुटाक्रान्त दृकाणराशि	१२	३१	६१२
चतुर्थधर्मायधनाधिनाथा	१२	१११	६३३
चतुर्थगो नीच सपत्न	१२	८४	६२६
चतुर्थ भावस्थितदर्शिकारका	१२	८५	६२६
चतुर्थगे भाग्यपतौ	१२	८६	६२६
चतुर्थभावाधिपतौ	१२	१४५	६४०
चतुर्थराशि चक्रस्य	१७	५५	८०१
चन्द्राच्चतुर्थोपगतैरसद्भि	४	१३	१८३
चन्द्राधिष्ठितराशीशे	४	८२	२१२
चन्द्रामरेज्यौ ससितौ	१४	८४	७१२
चन्द्रार्क भार्गवशशाङ्क सुता	१५	३५	७३३
चन्द्रार्क ससितौ	१४	७९	७०९
चन्द्रात्कर्मणि शोभने	१५	७	७२२
चन्द्रात्कर्मणिभुसूते	१५	५६	७४३
चन्द्रात्कर्मगते रवौ सरुधिरे	१५	५५	७४२
चन्द्रात्सुते लग्नपतौ	६	१६	२९७
चन्द्रादित्यसुतेक्षिते तु	१४	७२	७०६
चन्द्रारज्ञसितैः	८	२३	४५५
चन्द्राद्विक्रमगः कुजोऽवनि	४	६८	३८७
चन्द्रांशे सप्तमे भौमे	४	२३	१८८
चन्द्रःसराहुर्यदिवा	७	१०७	४०५
चन्द्रेऽतिमित्र निजतुङ्ग गृहांशकस्थे	७	८१	३९८
चन्द्रे कर्कटकोदये च	१६	४०	७७२
चन्द्रे कर्मणि जाह्नवी सलिलतः	१५	४	७२०
चन्द्रे तनौ दिनकरे	५	८१	२६६
चन्द्रे तृतीये जलराशियुक्ते	१५	१४	७२५
चन्द्रे धनुःस्थे	२	५१	४६४

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
चन्द्रे मेषगते	८	४८	४६३
चन्द्रेन्दुपुत्रारसुरेज्य भास्करैः	१५	२८	७३१
चन्द्रे पराजित शुभग्रहदृष्टियुक्ते	७	७६	३८५
चन्द्रे पापनिरीक्षिते	६	९८	३४०
चन्द्रे भृगौ वा केन्द्रस्थे	१२	७०	६२३
चन्द्रे भानुसुतेक्षिते	१५	४१	७३६
चन्द्रे वित्तगतेऽथवा निधनगे	१४	६३	७०२
चन्द्रे सभानौ यदि	७	७४	३९१
चन्द्रे पापयुते तु पाप भवने	७	७९	३९७
चन्द्रे वृषोदयगते यदि	७	२४	३६५
चन्द्रे व्यये वा यदि	६	८४	३३३
चन्द्रे सपापे फणिनाथयुक्ते	६	८३	३३३
चन्द्रो मन्द सहायस्तु	४	६४	२०५
चन्द्रो विलग्न सम्बन्धि	१२	९८	६३०
चन्द्रोऽनिष्टस्थानगः	१२	७४	६२४
चन्द्रोऽष्टमगृहं यातः	१७	३५	७९७
चरावसाने शशिनि	६	१०	२९४
चरांशकस्था रविमन्द भौमाः	४	९६	२१९
चरे चाद्यशंको ज्ञेयः स्थिरे	१	३४	३२
चरे विलग्ने निशि	६	३४	३०६
चरे विलग्ने रिपुनाथ	६	७७	३३०
चरोपगे चन्द्रमसि क्षपायां	४	२०	१८७
चान्द्रे सौम्यमनोऽटनः	९	८६	५०७
चापस्य वाजिरथ वारण वास भूमि	१	१२	१०
चापाज सिंह भवनोदयगे	७	१२	३५३
चापाज सिंह राशीनां नवांशा	१	३२	३२
चापार्द्ध गतवान्	७	३१	३६९
चापा परार्द्ध हरिगो मकरादि मेषा	१	१६	१७
चापांशे कर्कटे लग्ने	४	१०५	२२४
चापांशे कृशदीर्घ बाहुतनु	९	९७	५१०

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
चापोदयस्थे बलिनि प्रभाकरे	७	५०	३७७
चित्तशुद्धि महोत्साहं	१७	५६	८०१
चित्राहिर्बुध्न्यभरणी पूर्वाषाढेन्द्र	१७	१०३	८११
चैत्रे सर्वकलागम श्रुतिपरो	९	२९	४९१
चौर्यं च मानहानिं च	१८	१००	८५१
छत्रे चाद्यन्तसौख्य	७	१७८	४४४
छागसिंहवृषे लग्ने तत्स्थे	३	४०	१४३
जडोभवेद्दासरनाथ	१२	३७	६१४
जनयति नृपमेकोऽत्युच्चगो	७	५६	३८०
जनयन्ति भाग्यसंस्था	१४	८८	७१४
जन्मकाले गुणी प्राणी	१२	५	६०३
जन्मतारादयो यस्य विद्धाः	९	८१	५०६
जन्मन्युद्वाहकाले	१६	४२	७७४
जन्मर्क्षमाद्यं दशमन्तु कर्म	९	७९	५०६
जन्मर्क्षात्परतस्तु	१८	३५	८३३
जन्मर्क्षांशक तल्लग्नजातः	९	७४	५०४
जन्मरन्ध्रपयोर्मध्ये	४	६५	२०५
जन्माधिपः स्वोच्चगृहे	७	४६	३७६
जलचर गृहगेन्दौ तत्पतौ	६	८८	३३५
जलराशिगते चन्द्रे	५	८८	२६८
जलाशयौ चन्द्रसुरारिवन्द्यौ	२	१३	६४
जले द्रव्यासिमायासं	१८	६९	८४४
जलेशमित्रेन्द्रमृगश्रविष्ठा	१७	१०५	८१३
जलोद्भवानां क्रयविक्रयेण	१५	४५	७३९
ज्वर मासुरिकापैत्त्यं	१७	४०	७९८
ज्ञानव्योमाधिवासास्तनुगुरु	१५	१३	७२४
ज्ञानी धर्मगते तु धर्मधनिकः	८	८७	४७२
ज्ञानी सदेव गुरु सन्मति धर्मशीलः	८	३४	४५८
ज्ञेया जन्मनि यन्नवांशक गतो	५	७३	२६२
जातः पञ्चचतुर्वियच्चरवरैः	१५	१५	७२५

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
जातः पुरोहितो वाऽपि	१४	९२	७१५
जातः साहसविक्रमार्जित धनः	१४	८७	७१३
जातः समेति भग चुम्बन	१४	४२	६९२
जातः पार्थिव वत्सरे नरपतिः	९	१५	४८५
जातः प्रत्यूषसि स्वधर्मनिरतः	९	३३	४९२
जातमात्रे कुमारस्य	९	८४	५०७
जातः श्रावणमासि	९	३०	४९१
जातः स्वल्पधनस्तु	८	३९	४६१
जातः श्रीमुखवत्सरे	९	१२	४८५
जातः सौख्यरतस्तु	९	९	४८३
जातः स्त्रीवशगः क्रियासु	८	१	४५०
जातः साधुजनाश्रयो	८	३	४५०
जातश्चोपचयस्थिते तनुपतौ	७	५४	३७८
जातः श्रीरुचके बलान्वित वपुः	७	६०	३८२
जातः सिंह विलग्नके	९	१०७	५१४
जातः सुशीलः शुभवेशियोगे	७	१२२	४१३
जातश्च भूपतिश्चण्डो हिंस्रो	७	८६	४०३
जातस्य जन्म समये	१४	५८	६९९
जातोऽसौ सुमुखः	११	७०	५९२
जातो जारः क्रोधनाब्दे	९	२५	४८७
जातो बन्धुविरागकृत्	९	२२	४८६
जातो मेष द्वादशांशे	९	१२०	५१८
जातो यदा विक्रममालिकायां	७	१३३	४१७
जातो भुक्ति विरोधरोग निहतो	६	९२	३३७
जातो निर्जर दर्शनेन जनितं	६	९४	३३९
जातोऽह्नि चेदर्कशनिस्फुटै	१८	३६	८३४
जातोऽह्नि चेदर्क शनिस्फुटै	५	७१	२६१
जातः स्थिरे लग्नगते तु पापाः	६	३३	३०६
जामित्रकाम गमनानि कलत्र	१	५१	४६
जायाकुटुम्ब गृहपौ	११	८८	५९८

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
जायारोगं विवादं च	१८	९६	८५१
जारः कर्मधनास्तपा	१४	४	६७६
जार श्रीमती मित्रबन्धुविभवो	८	४३	४६१
जीवः करोति विविधार्थसुखं	१७	४२	७९९
जीवज्ञारुण भूमिजासितसितैः	८	३७	४६०
जीवज्ञ शुक्र रविनन्दन भूमिपुत्रा	६	३०	३०५
जीवभार्गव सौम्यानामेकः	४	७३	२०८
जीवमृत्यु तनुयोगराशिगे	५	५८	२५५
जीवः सर्वेष्वन्त्यपादौ	१७	१४	७९१
जीवस्य व्ययगे शनौ	७	१६	३५६
जीवस्य राशि नवभाग	१२	५५	६१९
जीर्णः संस्कृतमर्कजे क्षितिसुते	३	७२	१६४
जीवार्किज्ञ दिवाकरैः	८	२२	४५५
जीवाच्चन्द्रमसो	१३	४९	६५८
जीवादित्यसितैः	८	९	४५२
जीवान्विते धीरगुणाभिरामा	१२	३६	६१४
जीवारमन्दलग्नेषु मन्ददृष्टि	१५	२१	७२९
जीवार्कौ सितसंयुतौ	१४	८१	७१०
जीवांशके भूसुरदेवतानाम्	१५	४८	७४०
जीवांशकस्थिते मन्दे	४	५९	२०३
जीवांशे यदि हेमकेशतनुगा	९	११९	५१७
जीवाष्टवर्गलघुबिन्दु गृहोपयाते	१०	२४	५४३
जीवाष्ट वर्गाधिक बिन्दु	१०	२३	५४२
जीवे नन्दहते विरञ्चि गुणितं	५	६७	२५९
जीवेन सहितः सूर्ये	४	६१	२०४
जीवेन्दु क्षितिजैः	८	१०	४५२
जीवेन्दु भौमसित भानुभिराततायी	८	२८	४५८
जीवे राहुयुतेऽथवा शिखियुते	६	६	२९१
जीवे वा सुखपे शुभग्रहयुते	१२	११५	६३४
जीवे समन्दे दशमेऽर्धचन्द्रे	६	७८	३३१

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
जीवो न भौमसंदृष्टः	३	४९	१४९
जीवो यच्छति	१५	६७	७४७
जूकेशोक चतुष्पद ज्वर भवैः	५	११५	२८०
ज्येष्ठाद्यपादेऽग्रजमाशुहन्याद	९	५०	४९७
ज्येष्ठानुजस्थितिपराक्रम	१२	१	६०२
जैत्रा वक्र समागमोपगसितज्ञा	२	३७	८२

त वर्ग

ततः समालिख्य भगोलचक्रं	१०	५२	५५९
तत्काल इन्दुसहितो द्विरसांशको	३	४३	१४४
तत्तद्भावत्रिकोणे सुखमदन गृहे	११	६	५७१
तत्तद्भावाद्व्ययस्थस्य	५	५४	२५१
तत्तद्भावाधीश्वरस्याधिशत्रुर्यो	१८	२९	८३१
तद्योगप्रदखेचरैरिनशनि	१५	१८	७२७
तद्दशान्तर्दशाकाले	१२	१३०	६३७
तदा तस्मिन्भवेन्मृत्युर्द्देहे	१७	१५	७९१
तद्वत्पारावतानां च	५	४४	२४८
तत्तदभावार्यकामेशदशा स्वन्त	१८	१७०	८६६
तत्तद्भावार्य कामेश दशा	५	५०	२५०
तत्तत्कारक भावबिन्दुगुणितं	१०	५१	५५८
तत्तद्राशीशवीर्येण यथायोग्यं	१७	७७	८०५
तत्र खाभ्ररसचन्द्रलोचनैरुद्धृते	५	५	२२९
तत्र सम्पद्विवाहादि शुभं	१७	२५	७९३
तन्वादि भावेषु शुभोदयेषु	११	२	५६९
तद्राशिखेटगुणकैक्यफलानि	१०	४५	५५६
तनुशरारिखराः किरीटिनो	१	५७	५०
तनुसुखमदनाज्ञा राशयः केन्द्र संज्ञा	१	५४	४७
तमः सत्वरजोवेलास्तमः	९	१२६	५१९
तस्मिन्पापयुते व्रणं शुभयुते	३	७८	१७४
तस्मिन्मन्दबुधेक्षिते	१३	७	६४४
त्रयोदश्यां लुब्धप्रकृतिरतिकामी	९	३७	४९३

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
त्रयोविंशति नक्षत्रं वैनाशिकमिति	९	८०	५०६
त्वष्टा च चित्रा सुरवर्द्धकी	९	४२	४९४
ताताम्बिकासोदर मातुलाश्च	४	६	१७९
तातेश तत्कारकखेचरेन्दौ	१४	९९	७१७
तापज्वरं मृगाद् भीतिं	१७	१००	८१०
तारासुतेन्दुरविमन्त्रि	८	१७	४५५
तारेशभानुगुरु बोधनदान	८	२९	४५८
तारेशहोरा सहिता नभोगा	७	३	३४६
त्यागात्मवान् क्रतुवरैर्यजते	७	१७७	४४३
त्यागी धातु द्रव्यवानिष्ट शत्रुर्वाग्मी	८	६२	४६७
त्यागी शुभग्रहयुते कृषकश्च	१५	७७	७५२
तृतीयराशिचक्रस्य	१७	५३	८०१
तृतीयात्सप्तमर्क्षेण	१२	२५	६१०
तृतीये जननीभ्राता: षष्ठे	९	४७	४९७
तृतीये सौम्यसंयुक्ते	१२	४७	६१६
तृतीये सौम्य संयुक्ते गेहेशे	१२	१४८	६४०
तृतीये सौम्यसंयुक्ते	१२	१४६	६४०
त्रिकस्त्वसञ्चार कृशावलम्बके	१०	६	५३६
त्रिकालज्ञोभवेज्जीवे	१३	६८	६६४
त्रिकोणधनलाभस्था	१८	१७१	८६६
त्रिकोणकेन्द्रे यदि	१२	११	६०४
त्रिकोणकेन्द्रे यदि	११	१६	५७५
त्रिकोणे केन्द्रे वा यदि	१४	६२	७०१
त्रिकोणभावेषु	१०	३८	५४८
त्रिकोणगे ज्ञे विबलैस्ततो	६	४८	३१४
त्रिकोणेपापनिर्मुक्ते केन्द्रे	४	१००	२२२
त्रिभिरुच्चगतैर्भूपस्त्रिभिर्मन्त्री	८	१११	४७८
त्रिमण्डलेष्वथैकस्मिन्	५	४५	२४८
त्रिमण्डलेष्वथैकस्मिन्	१८	२६	८३०
त्रिशांशे धरणीसुतस्य चपल:	९	१२३	५१८

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
त्रिशांशेऽवनिजस्य	१६	१४	७६१
त्रिषडायगताः पापाः	४	९०	२१७
तुङ्गस्था गगनाटना	१६	२७	७६७
तुरङ्ग दस्त्राश्वि युगाश्विनी हया	९	४०	४९४
तुलायां रुधिरे प्रासे	५	७७	२६४
तुलांशकस्थिते मन्दे	४	५३	२०२
तुहिन किरणलग्ना	५	१०२	२७३
ते चत्वारोऽधिकबलयुता	१२	११२	६३३
तेषां त्रयाणामपहारकाले	१२	४०	६१५
तेषामम्बर चारिणामतिशुभौ	१३	७६	६७०
तोयाटविक्षितिचरो	८	१८	४५५
तौलिस्थे हिमगौ	८	५०	४६४
दक्षिणात्रिक नक्षत्र	१७	९	७८५
दरिद्रयोगे कलहप्रियः स्यात्	६	३८	३०९
दशादौ दिननाथस्य	१८	७०	८४४
दशाच्छिद्रमिति ज्ञेयं	१७	९५	७१०
दशादशाब्दै संगुण्य सर्वायुः	१७	१०७	८१५
दस्त्रानलादिति भुजङ्ग दिनेशभानां	१७	१०२	८११
दशा दशाहता मासश्चैकस्थानं	१८	६०	८४३
दशापतिर्लग्नगतो यदि स्यात्	१८	६	८२०
दशमे शीतगुर्घूने भृगुजः	१३	२०	६५०
दशादौ गुरु बन्वार्ति	१८	१५६	८६२
दशादौ दुःखमाप्नोति	१८	१०८	८५३
दशाधिपस्य यः शत्रुस्तस्य	२८	५६	८४१
दशानुसारेण फलं वदन्ति	१८	१	८१९
दशापतिर्लग्नगतो यदि	१८	७	८२०
दशाप्रवेशे स्वगृहादि संस्थे	१८	९	८२०
द्रष्टाकरालेन्दु मुखाः प्रवीणः	१	४३	४०
दशभ सुखसमेतैः	५	१००	२७२
दश गोशरबाणाद्रि वसुसायक	५	२२	२४१

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
द्रव्याणि ताम्रमणि काञ्चन शुक्ति	२	२०	६८
द्वयो सुहृत्वं त्वतिमित्रता	२	४६	८७
दाता मही मण्डलनाथबन्द्यो	७	१५५	४२६
दानधर्मरतिः प्रीतिः	१८	१०२	८५१
दारपुत्रजनालस्यं	१८	१४८	८६१
दाराधिपे सोमसुते सपापे	१४	२३	६८३
दारिद्र्यदोष निजकर्म पिशाच चौरे	२	८०	१०५
दारिद्र्यमन्त्र विद्वेषमन्नाभाव	१७	६७	८०२
दारेशेन कुटुम्बपेन	१४	२६	६८४
द्वात्रिंशदायुरश्वार्नां	५	४२	२४८
द्वादशे तु स्वयं	९	५५	४९९
दिग्देशस्थिति धर्म कर्मजगुणा	१६	५४	७८०
दिनेशमुख्यग्रहवर्गकेषु	१०	१२	५३८
दिनेशाविन शुक्रौ च	१८	३८	८३५
दिनेशचन्द्रौ यदि	६	५६	३२०
दिनेशस्थित राश्यंशप्राणितः	१३	६१	६६४
दिनेश्वरकरच्छन्ने	११	६४	५९०
दिवार्क शुक्रौ पितृमातृ संज्ञितौ	३	१५	१२७
दिवाकरे मीनगृहोपयाते	७	५५	३७९
दिवाकरोदये सिंहे	७	४३	३७५
दिवाकरेन्दु भूपुत्राः	४	४७	२००
दिवाकरज्ञौ विहगस्त्ररुपौ	२	१२	६३
दिवाकरेन्द्वो स्मरगौ कुजार्कजौ	३	१४	१२५
दिवा जातस्तु पितरं	९	५८	५००
द्विग्रहादिषु यत्प्रोक्तं	१७	८६	८०७
द्विजमूलाद्धनप्राप्ति	१८	८६	८४८
द्विजभूपति शस्त्रा	१८	६१	८४३
द्वितीये दुर्बले सौम्ये	११	७८	५९५
द्वितीयेद्वादशेपार्श्वे	७	७२	३८९
द्वितीये पंचमे जीवे बुध शुक्र	७	१५८	४२८

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
द्वितीये वा चतुर्थे वा	१२	९९	६३०
द्वितीयराशिचक्रे तु	१७	५१	८०१
द्विदैवकमलागार पितृदान	१७	१०४	८११
द्विस्वभावगतावर्कगुरु	३	२९	१३९
द्विस्वभावं गते लग्ने	४	९५	२१९
द्विस्वभावं गते लग्ने	४	९४	२१८
दिनेशचन्द्रौ राजानौ सचिवौ	२	२	५५
द्विशरीरांशसंयुक्तान् ग्रहान्	३	२६	१३८
दीर्घं समेति भगमस्तपतौ	१४	४४	६९२
दीर्घायुर्धनिको वसन्त समये	९	२७	४९०
दीर्घायुर्नृपतुल्यवित्त विभवः	१६	५३	७७९
दीर्घायुषो विगतरोगभया	७	१४१	४२१
दीनो नरो भवति	१८	१४४	८६१
दीप्तः प्रमुदितः स्वस्थः	२	१६	६६
दुर्नासिको वृद्ध कलत्र रोगी	८	५९	४६६
दूर्वादलद्युतितनु स्फुटवाक्	२	५६	९३
दुश्चिक्यभावाधिपदायकाले	१८	४६	८३८
दुश्चिक्यारिमानान्युपचय	१	५५	४८
दुष्कामी च वरीयजस्तु	९	१००	५११
दुष्टात्मा कुनखी	६	२७	३०३
दुष्टात्मा यदि हेमलम्बिजन्मि	९	१८	४८६
दुष्टस्थानगते भानौ	१३	६३	६६४
दुष्टस्थानस्थिता ये च	१०	११	५३८
दुष्टस्थितो वापि यदा	११	९	५७२
दुष्टाचारः कर्कटांशे तपस्वी	९	१२१	५१८
दुस्थेकामपतौ तु	१४	२	६७४
दुस्थे चन्द्रे	१२	१२	६०५
दुस्थे दुष्ट गृहाधिपे	१५	८३	७५५
दुस्थे बुद्धिस्थानपेऽदृश्यगे	१३	६७	६६६
दुःस्थाने वाऽरिगे	११	८	५७२

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
दुस्थौ विलग्नसुतपौ	१३	१३	६४८
दुःस्थौ धर्मगृहेशदेव सचिवौ	१६	५१	७७९
द्युमणिरमरमन्त्री भूसुतः	२	५१	९२
द्यूनकुटुम्बगतौ यदि पापौ	१४	३६	६८९
देवतोयतटवह्निविहाराः	२	२४	७१
देव द्विज गुरु प्रीतिं	१८	१५१	८६२
देवमन्त्री कुटुम्बस्थो	७	३९	३७३
देवभूदेवभक्तिं च	१८	१३०	८५७
देवमर्त्यापितृनारकालयप्राणिनो	५	११८	२८३
देवलोकादिभागस्थे	१४	१०२	७१८
देव लोकांशके मन्दे	४	१०३	२२३
देवलोकांशके शुक्रे	११	३९	५८३
देवाचार्ये वाहनस्थे	१०	६५	५६४
देवार्द्र भागः कलिनाशसंज्ञः	१	४१	४०
देवाराधन तत्परो	१४	८२	७११
देवेज्येन्दुजभानुजैरतिसुख	८	१४	४५३
देवोधवो धीगवशस्तमो	१०	२	५२३
देशाद्देशं गतः पूज्यो	७	१०२	४०५
द्वेषबुद्धिं मनस्तापं	१८	१११	८५४
देहयुक्ते महारोगं जीवयुक्ते	१७	२९	७९५
देवजीवसमायुक्तेभौमार्किरवि	१७	२८	७९५
देहाम्बुगौ सुखाङ्गेशौ	३	५	११६
देहेस्थित राशीशे	११	३५	५८२
देहेशे च विनाशपे	१४	५९	६९९
देहो मेषश्चापसिंहाजभानां	१७	२६	७९४
द्वौमासौ चोत्तरादोषः	९	६६	५०२
धनवस्त्रविभूषाप्तिं	१८	१६३	८६४
धनस्थे यदि लग्नेशे	११	५२	५८७
धनस्थितः पापदृशा समेतः	११	५३	५८७
धनाधिपः पापखगो यदि	१८	४३	८३७

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
धनान्वितः पापखगस्तदीशः	१८	४४	८३७
धनावसानस्मरयानरन्ध्रगो	१४	३४	६८८
धनुर्धरस्यान्त्यगते विलग्ने	३	२५	१३८
धनुर्मीन तुलामेष मृगकुम्भोदये	७	५७	३८०
धनुर्विलग्ने यदि तुम्बुरांशके	५	१२३	२८५
धनेशे लाभसंयुक्ते	११	५९	५८९
धनेशे व्यय षष्ठस्थे	११	६०	५८९
धनेश्वरे नाशगते	१२	९	६०४
धनोपयातः प्रथमोऽथ	११	५१	५८७
धर्मकर्मविलग्नस्यास्तुङ्गो	१२	११४	६३४
धर्मवाहन राशीशौ	१२	११८	६३५
धर्म सत्कर्म वित्तासिं	१८	१४१	८६०
धर्मादिग्रहमालिका	७	१३५	४१७
धर्मात्मा शास्त्रविद्वाग्मी	७	१००	४०५
धर्मेपाके पाप भाक् स्यात्	१४	९६	७१६
धर्मे मृगौ कामगते	६	४०	३१०
धर्मेविकल्प बुद्धिनां	५	३७	२४७
धर्मे शनौ चाथ गुरौ	५	९३	२६९
धर्मेशलाभेश धनेश्वराणा	७	६१	३८३
धर्मोदयेशौ नवमोदयस्थौ	११	२१	५७७
धराजशुक्रज्ञशशीनसौम्य	१७	५	७८२
धरासुते चन्द्र नवांशकस्थे	४	२५	१८९
धराज शुक्रज्ञ शशीनसौम्य	१	२५	२४
ध्वजः शिखिकेतुरिति	२	५	५६
धातुर्मूलं जीवमित्याहुरार्या	१	१९	१८
धातोर्वाद कृषिक्रियाटनपरः	८	६३	४६७
धातोर्विवादेन रणप्रकारात्	१५	४६	७३९
धार्मिकः स्थूलशिश्नः	११	४४	५८४
धीरश्चारु कलत्रवान	८	८०	४७०
धूमे विवाहहीनः स्यान्म्रियते	१४	१३	६८०

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
धैर्याधिपे पापयुतेक्षिते	१२	५२	६१८
धैर्यान्वितो विक्रमेशे	१२	५१	६१८
नखाजिना विंशतिरष्ट युक्ता	१	५६	४९
नखाः शशी द्वौ नवकं	५	२	२२७
नराश्चिरायुर्नृपपूजितः	११	१४	५७४
नराकारा भानु क्षितिज गुरुवः	२	२७	७३
नलग्नमिन्दु च गुरुर्निरीक्षते	३	५८	१५२
नवमायतृतीयधीयुता न च	६	१००	३४३
नवमस्थानगे चन्द्रे	१५	२२	७२९
नवमादष्टमाधीशो	१३	६०	६६२
नवमे पाप संयुक्ते	१३	३४	६५३
नवीक्षितश्चेदितर ग्रहेन्द्रैर्लग्ना	१५	४०	७३५
नवेन्दवो बाणयमाः	५	३	२२८
नानावित्तसुखं	१८	९२	८४९
नाशस्थानगतो	११	७	५७१
नाशस्थे तनुपेऽथवा	१४	५२	६९६
नाशे नाशपतौ तु	१४	५७	६९८
निखिल निगमविद्यापारगः	६	१६३	४२९
निर्भाग्यो विकलेन्द्रियो	६	३७	३०९
निर्विद्यो विधनो	६	२६	३०३
निशाकरः शोभन वर्गयुक्तः	४	८१	२१२
निशाकरे केन्द्रगते भृगौ	७	८०	३९८
निशिबलयुत राशौ	५	११६	२८१
निशीन्दुमन्दावनिजाः	२	३६	८१
निषेककाले चन्द्रार्कावन्योन्यं	३	३१	१३९
निषेक लग्नेश तृतीय नाथौ	३	३४	१४०
निषेक भ्रातृ लग्नेश योगे	३	३२	१३९
निसर्ग पैड्यांशक रश्मिचक्र	५	१	२२७
निसर्गदाय प्रमुखा	५	१२४	२८५
नृत्यगानरतः कान्तः	७	१०१	४०५

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
नृपचोरादि भीतिश्च धनधान्या	१८	८५	८४८
नृपतुल्यकरः श्रीमान्	७	१०३	४०५
नृपप्रीतिं तथोत्साहं	१८	११०	८५४
नृपप्रायकमैश्वर्यं व्याधिनाशं	१८	८१	८४७
नृयुक्तुलाघटानां च तुलाद्या	१	३३	३२
नृलग्नकं प्रेक्ष्य कुजः श्मशाने	३	६५	१५७
नीचस्था यदि वा	६	२४	३०१
नीचस्थो रिपुराशिस्थः	११	३	५७०
नीचंगता द्वित्रि चतुर्ग्रहेन्द्रा	७	२०	३६०
नीचमूढारिराशिस्थ खेचरेण	१७	५०	८०१
नीचं गते लग्नपतौ	४	२६	१८९
नीचस्थान गतश्चान्द्रिस्तुङ्गा	१८	१४३	८६०
नीचस्थितग्रहनवांशपतौ	७	१४	३५५
नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः	१८	२८	८३०
नीचस्थे दिननायके	८	११४	४८०
नीचङ्गतो जन्मनि यो ग्रहः	७	१३	३५४
नीचारातिविमूढस्य	५	४९	२४९
नीचारिपापखगयोगनिरीक्ष्य	२	३४	७९
नीचारिभांशौ भृगुदेवपूज्यौ	६	१७	२९८
नीचांशगस्तुङ्ग गृहोपयाता	६	३६	३०७
नीचांशोपगतः स्वतुङ्गभवने	१८	११९	८५५
नीचेऽस्तगे वा गेहस्थे	१२	१४०	६४०
नीचास्तगौ सोदरनाथ	१२	६	६०३
नीचास्तरिष्फ निधनोपगते	१०	२९	५४४
नीचे गुरौ मदनगे	१४	१७	६८१
नीचे गुरौ वासरनायके वा	६	१४	२९६
नीचे तृतीयेऽरिगृहे विमूढे	६	६५	३२४
नीचेऽतोऽर्द्धं ह्रसति हि	५	७	२२९
नीचे भृगौ धर्मगते सपापे	६	२०	२९९
नीचे भृगौ मन्दनवांशके	६	१३	२९६

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
नीचोऽन्यकर्मनिरतः	८	३८	४६०
नीलवस्तु धनप्राप्ति	१८	१६२	८६४
नेत्रेश्वरे शुभयुते	११	६९	५९१
नो चेदष्टम खेचरो यदि	१४	६०	७००
नौकूटच्छत्रचापानि	७	१७१	४३७

प वर्ग

पञ्चप्राचीरालिखेद्बाणसंख्या	१०	३६	५४८
पत्नी षण्ढत्वमेति	१३	६२	६६४
पञ्चम्यामखिलागमश्रुतिरतः	९	३५	४९२
प्रभवशरदि जातः साहसी	९	१०	४८५
परद्रव्योपभोक्ता स्यादेको	८	१०९	४७८
पञ्चग्रहैरेक गृहोपयातै	८	३५	४५८
प्रधानबल संयुक्तः सम्पूर्ण	७	३८	३७३
पराभवगते राहौ	५	९२	२६८
पञ्चम्यारदशा मृत्युं	५	४८	२४९
पञ्चाशदुत्तरशतं राक्षसानां	५	४१	२४८
पक्षे सिते भवति जन्म यदि	४	७५	२१०
परस्पर क्षेत्र समन्वितौ वा	४	५८	२०३
परस्पर क्षेत्र गतौ तु	३	५४	१५१
पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां	२	७४	१०२
प्रतापशाली चतुरस्त्रदेहः	२	५३	९३
प्रज्ञा नित्यशरीर पुष्टि तनय	२	५०	९०
प्रकाशकौ शीतकर प्रभाकरौ	२	८	६१
प्रणम्य वन्दारुजनाभिवन्द्य	१	३	३
परान्नभुक् तदीशेऽपि नीचशत्रु	११	९२	६००
प्रफुल्लवदनः श्रीमान	११	७३	५९३
प्रमहेगुल्मपाण्ड्वादिग्रहणी	१७	६२	८०२
पञ्चप्राचीरालिखेद्बाणसंख्या	१७	४	७८२
प्रपच्छ देवदेवेशमीश्वरं	१७	२	७८२
प्रणम्य परमात्मानं शिवं	१७	१	७८२

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
पाकस्यादौ भावजन्यं	१८	५८	८४२
पाकस्वामिनि लग्नगे सुहृदि	१८	१४	८२४
पाके दीप्तस्य राजा	१८	३१	८३२
पाके भूमिसुतस्य	१८	८३	८४८
पाके शक्तस्य विद्याविनय	१८	३२	८३२
पातालवृद्धिहिबुक क्षितिमातृ	१	५०	४६
पाथोनमीनाश्वयुतस्य	१८	१०६	८५३
पादेक्षणं भवति सोदरमान	२	३०	७७
पादे तृतीये चित्रायाः	९	६३	५०१
पाण्डुदोष जलदोषकामला	२	७६	१०३
पापग्रहे विक्रम भावनाथे	१८	४५	८३८
पापग्रहेणसंदृष्टे बलहीनेऽरि	१३	८०	६७२
पाग्रहेण संदृष्टे	१३	३२	६५३
पापक्षेत्रगते चन्द्र	१३	३९	६५४
पापर्क्षे मदनस्थिते शनियुते	१६	२४	७६६
पापमध्यगते जीवे पुत्रेशे	१३	२८	६५१
पाप़व्योमचरास्त्रयोऽरि	१३	७५	६७०
पापापहार समये सुतराशिपस्य	१८	४८	८३८
पापात्मा कलहप्रियः	६	४५	३१३
पापान्विते शशिनि	६	८४	३३५
पापा नीचस्थानगाः	६	४५	३०७
पापाप्रकाशसंयुक्ते कलत्रे	१४	११	६८०
पापाबलिनः स्वभागगा	३	२	११४
पापारिनीच रविलुप्तकरा	१४	६६	७०३
पापावुदयास्तगतौ क्रूरेण	४	३२	१९२
पापेऽरौ वा पापदृष्टे सुखे	१२	१३९	६४०
पापेक्षिते कर्मणि पापयुक्ते	१५	६३	७४५
पापेक्षिते गगनगामिनि	८	४६	४६३
पापेक्षितो तुहिनगावुदये	३	६८	१५९
पापेक्षिते पापयुते	१२	६९	६२२

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
पापेक्षिते सोदरभे सपापे	६	६७	३२५
पापेक्षिते रविसुते धनराशियुक्ते	६	६३	३२३
पापे तृतीये गलरोगमत्र	१२	४३	६१६
पापे तृतीये गलरोगमत्र	६	६६	३२५
पापे लग्नगते सपत्नपयुते	१३	७७	६६९
पापेष्वाज्ञाबन्धुराशिस्थितेषु	५	१०८	२७६
पापेऽस्ते नवमगतग्रहस्य	१६	४१	७७३
पापैर्युते मुखस्थाने	११	७२	५९३
पापो विलग्नाधिपतिः शशाङ्का	४	४८	२००
पापो विलग्नगृहगो यदि	१८	४१	८३६
पारावतादि भागस्थे धर्मेशे	१४	१०३	७१८
पारावतांशके गेहनाथे	१२	१४९	६४०
पारावतादौ तन्नाथे	१३	५३	६६०
प्रागादिगा भानुसितार राहु	२	२३	६९
प्राज्ञो गीतरतिप्रियः सभृगुजे	१४	७७	७०८
प्राच्यादि गृहे क्रियादयो द्वौ	३	७४	१६६
पितृकर्माधिपे दुःस्थे	१२	७५	६२२
पितृकर्मेश्वरौ दुःस्थौ देहेशे	३	४५	१४७
पितृंकर्मगृहे जातः	१३	५६	६६१
पितृ जन्मर्क्ष कर्मर्क्ष जातः	९	७३	५०४
पितृमातृ गृहेषु तद्बलात्तरु शाला	३	६९	१६०
पितृ षष्ठाष्टमे जातः	१३	५७	६५९
पितृस्थानेश्वरे सौम्ये	१३	५२	६५८
पृष्ठतो गमने वाऽपि	१७	१०१	८११
पृष्ठतो गमनं चैव	१७	९१	८०८
पित्तात्प्रमादं यदि सौम्ययुक्तौ	६	७३	३२९
पितामहश्चतुर्थे तु माता	९	५३	४९९
पित्तासृगक्षिरोगं च	१८	१६१	८६४
पितुर्जातः परोक्षस्य	३	४६	१४८
पितुर्मरणमालस्य तत्समानेषु	१७	९९	८१०

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
पितुर्निशायांमरणंसुखेश	१४	१००	७१७
पित्रोर्वा विषशस्त्राग्निज्वर	१७	९६	८१०
पिशाचपीडाऽग्नि जले	५	८६	२६८
पीनबीजकफशस्त्रपावक	२	७७	१०३
पीनाङ्गोन्नत नासिको	९	९६	५१०
पुत्रदारविनाशं च	१८	१२६	८५७
पुत्रदारानुजद्वेषं	१८	१४९	८६२
पुत्रं सोदर भं कलत्रमुदयं	१३	४७	६५५
पुत्रबन्धुमृति	१७	२०	७९२
पुत्रस्थानगतः	१३	३८	६५४
पुत्रस्थानपलग्नपस्फुटयुते	१३	४८	६५८
पुत्रस्थानपकारकेक्षकयुता	१३	५०	६५९
पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे	१३	९	६४६
पुत्रस्थानपवित्तपौ गतबलौ	१३	१५	६४९
पुत्रस्थानगते जीवे	१३	१८	६५०
पुत्रस्थानं गते पापे	१३	२५	६५१
पुत्रस्थानगते पापे तदीशे	१३	२७	६५१
पुत्रस्थाने कुलीर	१३	३१	६५२
पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे	१३	२९	६५२
पुत्रस्थाने तदीशेवा	१३	१६	६५०
पुत्रस्थे मदनाधिपे	१३	१२	६४७
पुत्राद्देव महीपपुत्र पितृ	१३	१	६४२
पुत्रद्या यदि मालिका	७	१३४	४१७
पुत्रान् पंचम भातृतीय भवनाद्	१३	४६	६५६
पुत्रेशकारकयुतेक्षकखेचराणां	१३	५१	६५९
पुत्रोऽल्पायुर्दारिका वंशकर्त्ता	३	१८	१३०
पुत्रो बटुर्दिव्यजनाधिको धनी	१	५८	५०
पुण्यश्लोकस्तीर्थ चारी कलाज्ञः	७	१६१	४२९
पुरग्रामस्थिताशेषैः पूजितो	७	९०	४०३
पूज्यः कलासु निपुणो	८	३२	४५८

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
पूर्णेशशिनि स्वराशिगे	३	६१	१५५
पूर्व प्रोष्ठपदि प्रगल्भवचनो	९	९१	५०८
पूर्वाषाढे तु पुष्ये च	९	६१	५०१
पूर्वाषाढे धनुर्लग्ने जातः	९	६०	५०१
प्रेष्यश्चरोदयगतौ निशि	६	४१	३११
प्रेष्योऽधनौ मलिन वेषयुतो	८	३३	४५८
प्रेक्ष्यो भवेदरि सुखास्पद सन्धि	६	४३	३१२
पैत्तोल्बणंयाति रवौ रिपुस्थे	६	६८	३२६
पैण्यं भानौ निसर्ग प्रभव	५	३३	२४६
पौत्रप्राप्तिरनङ्गभे	१३	११	६४७
फलं तद्द्विगुणं कष्टं शुभं	१७	८०	८०५
फलं वा विफलं वाऽपि	१७	८८	८०७
बन्धनंनिगलप्राप्तिमृणदारिद्र्य	१७	६३	८०२
बन्धुकर्म गृहाधीशौ	१२	११६	६३४
बन्धुद्वेषी भवेन्नित्यं	१२	९३	६२९
बन्धुद्वेषकरो धनी	८	९८	४७४
बन्धुद्वेषकरोऽटनः कृशतनुः	९	१०५	५१३
बन्धुपीडां मनोदुःखं	१८	६७	८४४
बन्धुमित्रजनैरर्थं प्रमादं	१८	६२	८४३
बन्धुस्नेहादि नाशं च	१७	९३	८०९
बन्धुपीडा मनस्तापं	१८	१३४	८५९
बन्धुमित्रादि संयोगं	१८	१५३	८६२
बन्धुस्थानेश्वरे सौम्ये	१२	९१	६२६
बन्धुस्नेहं जनप्रीतिं	१८	१२५	८५७
बन्ध्यापति सितरवी	१४	६	६७७
बन्ध्या वृद्ध कृशा	१३	२३	६५१
बन्ध्यासङ्गमिनेऽस्तगे	१४	३९	६९०
बन्धूपकर्ता तन्नाथे	१२	९२	६२६
बलवति शुभनाथे	१४	९७	७१६
बलहीने विलग्नेशे	४	८४	२१३

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
बलहीनेऽस्तगे पापे	१६	२२	७६५
बलानुसारेण यथा हि योगो	१८	२	८१९
बलिना शनिना दृष्टे	५	७८	२६५
बलि विलग्नाधिपतिश्च केन्द्रे	७	४५	३७५
बलैर्विहीनेयदि	११	३२	५८१
ववकरणभवः स्याद्बालकृत्य	९	१०२	५१२
बहुदुःखाकरव्याधिमरिचोर	१८	८७	८४९
बहुरिपुगणहन्ता	९	४	४८२
बहुशुभयुजिमाने वाजपेयादि	१५	६	७२१
बाधास्थानपतद्युतग्रहदशा	१८	३०	८३१
बालः कुमारोऽथ युवा च वृद्धो	२	८४	१०७
बालारिष्टं योग सञ्जातमल्पं	४	१०७	२२५
बालोधराजः शशिजः	२	१४	६४
बिन्द्वाधिक्यं यत्तदागारमासे	१०	२२	५४२
बिन्दुंत्यक्त्वा	१०	५८	५६२
बिन्द्वष्टके धरणिजेऽतिलघु	१०	२०	५४१
बृहदुदरशरीरः पीत वर्णः	३	५७	९३
बृहस्पति भौमगृहेऽष्टमस्थः	४	४१	१९७
बृहस्पतौ चाप नवांशकस्थे	५	१२२	२८५
बुधदृष्टियुते सौख्ये	१२	८२	६२६
बुधेन जीवेन युतेक्षिते	१२	४६	६१६
बुधे सुपुत्रा वागीशे	१४	१५	६८०
बुधोदये सप्तमगे बृहस्पतौ	७	३७	३७३
भद्राख्याति तिथियुक्तेषु	३	५७	१५२
भयङ्कराणां सर्वेषां मूर्खाणां	५	३८	२४७
भाग्यप्रभावगुरु धर्मतपः	१४	६५	७०३
भाग्यस्थे दशवर्गजोच्च भवनं स्वा	१४	६८	७०४
भार्गवोनीच राशिस्थ	१८	१६८	८६४
भाग्यस्थे निजतुङ्ग मित्र भवने	७	९	३५०
भाग्यस्थे शशिनि	१४	७३	७०६

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
भाग्यान्वितः पर्वतयोगयातो	७	१२९	४१५
भाग्येशे धनभावस्थे धने	७	१५०	४२५
भाग्येशेन निरीक्षते	७	१७	३५८
भाग्येश्वरादतिबलो निधनेश्वरो	६	२८	३०४
भाग्येशेऽन्त्यगते सहोदरगतैः	६	७	२९२
भाग्ये शुभेक्षिते केन्द्रे	१२	१२५	६३६
भाग्यस्थिते वाहन राशिनाथे	१२	१२०	६३५
भाग्यस्था शुभखेचरा	१६	२८	७६८
भाग्याधिपे शुभयुते	१४	९०	७१४
भाग्याधिपे विनाशस्थे	१४	८९	७१४
भाग्ये तत्पतिशोभनेक्षितयुते	१४	६९	७०५
भ्रातृस्थानगतो जीवो	१७	३४	७९७
भानामवस्थानगताः क्रमेण	२	७१	१००
भान्विन्दुजेन्दु कुजजीव सुरारि	१५	३९	७३५
भानुक्षेत्रेगते तनौ शशिनि	१६	१६	७६२
भानुर्वा कृशशीतगुर्व्ययगतो	१५	७८	७५२
भानुः करोति विविधापदमर्थ	१७	३७	७९८
भानुः श्यामललोहितद्युतितनु	२	७	६०
भानुस्फुटे नवहते रविजं	५	६८	२५९
भानु मूर्न्धि शशी	१३	७८	६७२
भानुस्थितांशपारुढ नवांश	१३	६२	६६४
भानोरर्थ गते बुधे	७	६७	३८६
भानौ सेन्दु सुते	१४	७४	७०७
भानौ लाभगते तु	८	९४	४७३
भारद्वाज कुलोद्भवस्य विदुष	१	२	३
भावत्रिकोणगे मन्दे	५	५९	२५५
भावांश तुल्यः खलु	११	१२	५७३
भावेशाक्रान्त राशीशे	११	१०	५७३
भ्रातृपुत्रगते पापे	१२	६६	६२१
भ्रातृस्थ तत्रायक कारकाणां	१२	२९	६१२

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
भ्रातृस्थानप मुख्यखेचरगणे	१२	१९	६०८
भ्रातृस्थानपकारकेक्षित युता	१२	१८	६०७
भ्रातृस्थानपतौ तु	१२	१५	६०६
भ्रातृस्थाने यदि शुभयुते	१२	१०	६०४
भ्रातृस्थानेशतद्राशितद्धा	१२	३	६०२
भ्रातृस्थं तृतीयं च	१२	२	६०२
भ्रातृस्थानगते पापे	१३	३५	६५४
भ्रातृस्थानगते गुरौ गतधनः	८	६६	४६८
भ्रात्रीन्दौ स्त्रीग्रहर्क्षस्थौ	१२	२१	६०९
भुक्त्यंशपो भानुसुतेन	५	८५	२६७
भूतैकविंशद्‌गरयो	१७	१०६	८१४
भूतैकविंशद्‌गरयो	१७	६	७८२
भूनन्दनस्य पाकादौ	१८	९३	८४९
भूनन्दनेन्दुरविमन्दपुरन्दरे	८	२७	४५८
भूपः पण्डितवाग् धनी	८	४९	४६४
भूपालयोगरुचपञ्चकभास्कराद्या	७	१८१	४४९
भूपो वा सचिवो वनाचल रतः	७	६५	३८५
भूम्रिजे सहजस्थाने	१२	२०	६०८
भूश्चक्रं स्यात् तुम्बुराद्यं	५	११९	२८३
भूसूनुस्फुटतो विशोध्य	१२	३२	६१३
भूसूनुलग्ने यदि वा तदंशे	५	९६	२७१
भूसूनुक्षितिराशिपौ च बलिनौ	१५	६५	७४६
भैषज्योर्ण तृणाम्बुधान्य कनक	१५	४४	७३९
भोगसम्पद् भवेन्नित्यं	१८	१०३	८५२
भोगी बन्धुरतो दयालुरधिकः	९	१०६	५१३
भौमक्षेत्र गते जीवे	४	३०	१९१
भौमः करोति तनुतापरुगाग्नि चोर	१७	३९	७९८
भौम वासर योगेन ज्येष्ठाजा	९	४९	४९७
भौमागार विलग्नगौ शशिसितौ	१६	२६	७६७
भौमान्वितौ सोदरदौ	१२	१३	६०५

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
भौमांशे वा भौमराशौ	१४	७	६७८
भौमार्कजक्षेत्रगते शशाङ्के	५	१११	२७७
भौमारुणौ यदि परस्परराशियुक्तौ	५	८०	२६५
भौमो बलविहीनश्चे	१२	४	६०२
मज्जास्नायुवसास्थिशुक्र	२	२८	७५
मत्तश्चिरायुरसुखी चपलश्च	८	७४	४६९
मध्यस्थे रिपुखेटयोस्तनु	११	३१	५८१
मध्यान्त सौख्यः क्षितिपालवन्द्यो	७	१५७	४२७
मण्डूकगमनं चैव पृष्ठतो	१७	९०	८०८
मन्त्रिमङ्गलमार्त्तण्ड शुक्रज्ञेन्दु	९	१२७	५२०
मन्त्रीगुणी विभवसार	८	७३	४६९
मन्त्री वाचस्पति गुरु	२	४	५५
मन्दः करोति कलहं	१७	४४	७९९
मदनभवननाथे पारिजातादिवर्गे	१४	४७	६९४
मन्ददृष्टे विलग्ने	११	४५	५८४
मन्दवर्गगते चन्द्रे मन्दयुक्ते	३	५०	१४९
मन्दस्तुलामकर कुम्भगृहे	२	६७	९७
मन्दस्य सूर्येन्दुकुजाश्च शत्रवः	२	४५	८७
मन्दर्क्षांशे शशिनि	३	७०	१६०
मन्दादित्यनिरीक्षिते	१४	७१	७०५
मन्दाराहि समन्वितेऽमरगुरौ	६	३	२८९
मन्दार्कावनिजैः	८	८	४५२
मन्दालिलग्नान्तफलं च तद्वत्	१०	६९	५६५
मन्दावनिजमार्त्तण्डैः	४	२४	१८८
मन्दांशकस्थिता	१३	४३	६५५
मन्दांशकस्था रविजीवभौमा	४	९७	२२०
मन्दांशे पुत्रराशीश स्वराशौ	१३	४२	६५५
मन्दाहिध्वजसंयुते तु	१५	८२	७५४
मन्देऽब्जगतेविलग्नगे	३	६४	१५७
मन्दे कुलीर भवनोपगते	६	९७	३४१

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
मन्दे केन्द्रगते विलग्न गृहगे	६	५	२९१
मन्देचोत्तमवर्गके बलयुते	७	१९	३६०
मन्देद्वर्क समागमे	८	७	४५२
मन्देन्दु भानुभृगु	८	१९	४५५
मन्देधने सुखगते शशिनि	५	१०४	२७७
मन्दे यदा दशमगे यदि	८	९२	४७३
मन्दे विलग्ने मदने	५	९५	२७०
मन्दोदये शत्रुराशौ	४	६२	२०५
मन्दोदये सौम्यदृशा विहीने	५	९७	२७१
मनो भिरामः कलह प्रवीण	८	८२	४७१
मनोभङ्गं शरीरार्तिं	१८	१४७	८६१
मनोभयं मनस्तापं	१८	१५२	८६२
महापुरुष योगेषु वीर्योत्कट	५	३१	२४५
महोद्योगी जातः प्रतिपदि	९	३४	४९२
माणिक्यं दिननायकस्य	२	२१	६८
मातु सपत्नी जनको	१४	८३	७१२
मार्त्तण्डस्फुटतो विशोध्य	१२	८०	६२५
मार्त्तण्ड सुनू तनयाश्रयभावजानि	९	१२९	५२०
मार्त्तण्ड होरा जनितः	९	११२	५१२
मार्त्तण्डांशे खलात्मा	९	११८	५१७
मार्त्तण्डे गुलिकस्फुटादपहते	१३	६४	६६५
मार्त्तण्डे यदि मूलकोणगृहंगे	८	१०४	४७६
मार्तण्डो यदि लग्नगो	८	५६	४६५
मातृपीडा मनोदुःखं	१८	७७	८४६
मातृलग्नेश पितृपाः	१२	७७	६२५
मातृ वर्गाद्धन प्राप्तिं	१८	७८	८४६
मातृस्थानाधिपे षष्ठे	१२	६३	६२१
मातृस्थानगते मन्दे	१२	६५	६२१
मातृस्थानेश लग्नेशौ	१२	७६	६२४
मानपुत्रोदयस्थौ वा	७	४४	३७५

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
मानस्थानपतौ पराभवगते	७	१५	३५५
मानस्थिताल्लाभगृहे बहुत्वे	१०	५६	५६०
मानस्थे तुरगेऽथवा	१२	५०	६१७
मानस्थिते दिनकरे	८	८९	४७३
मान्द्यब्दादिफलानि वच्मि	९	१	४८२
मान्दित्रिकोणोपगते विलग्ने	९	७	४८३
मान्दिस्फुटोदित नवांश गतेऽमरेज्ये	५	६३	२५७
मान्दिस्फुटे भानुसुतं	५	६२	२५६
मान्दिराशिपतिमान्दिभावगाः	१८	५	८२०
मानी पिङ्गलकेश लोचन तनुं	९	३८	४९४
मानीरणोत्सुकः क्रोधी	७	९१	४०४
मानी हास्यरसप्रियो	९	२०	४८६
माने चन्द्रमसो बुधे	१५	५७	७४४
माने रवौ मन्मथगे निशीशे	६	३९	३१०
मानेश्वरे शुक्रयुते च	१५	३	७२०
मानेशे शुभसंयुक्ते	१५	६२	७४५
मान्यः शान्तगुणः सुखी च	९	९०	५०८
मित्रबन्धु कलत्रादि संयोगं	१८	९९	८५१
मित्रबन्धु धनप्राप्तिं	१८	१३९	८५९
मित्रक्षेत्रगते रवौ	८	१०७	४७८
मित्राणि भानोः कुजचन्द्रजीवा	२	४२	८६
मित्रान्विते शुभैर्दृष्टे	१७	७८	८०५
मिश्रदा रिपुगाः पञ्चषड्	८	११३	४७९
मिश्रं फलं भवति सागर	१०	४	५३६
मृगपति वृषकन्याकर्कटस्थस्य	१८	१०७	८५३
मृगाजकर्क्यान्त्यगता दृकाणा	९	११६	५१६
मृगाननश्चापधरश्च पंगु	१	२२	२०
मृगानानस्थे पुरुहूतवन्द्ये	६	४४	३१२
मृगापरार्द्धान्त्य कुलीर संज्ञा	१	१७	१७
मृगांशकस्थिते मन्दे	४	४९	२०१

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
मृगोदयस्थे बलिनि क्षमासुते	७	५२	३७८
मृगोदयस्थे यदि भूकुमारे	७	२८	३६७
मृत्युस्थानगते राहौ	५	९१	२६८
मृत्युचक्रदशाकाले महद्	१७	६६	८०२
मीनस्थे शुभवीक्षिते	८	५४	४६४
मीनस्थोऽत्यल्पसन्तान	१३	३०	६५२
मीनातु वृश्चिके याते	१७	१८	७९२
मीनात्तु वृश्चिके क्रान्ते	१७	२४	७९३
मीनान्त्यमत्स्य पृथुरोमझषा	१	७	४
मीनालि वृषभा विप्राश्चापाज	१	२०	१९
मीनालि कर्कट मृगाः सलिला	१	१५	१६
मीनालिचापकटके	२	६५	९७
मीने मीननवांशके	७	८	३४८
मीनोदये शशि रवि	५	१०३	२७४
मूर्खः क्रूरविलोचनोऽति चपले	९	१०९	५१४
मूर्खोनातिधनो	८	४४	४६२
मूढारिनीचगृहगे शरवेद बिन्दौ	१०	३२	५४४
मूर्तिस्थाने शुभयुते	११	९१	५९९
मुक्ता प्रवाल भूषास्तिस्तीर्थयात्रा	१८	११३	८५४
मुक्तिस्थानपतौ	११	८९	५९८
मुक्तिस्थानाधिपे मन्दे	११	९५	६००
मूर्धोदराक्षिरोगं च	१८	१५९	८६३
मूलमघाश्विचरणे प्रथमे	९	५७	५००
मूलार्क्षनिखिला नाड्य	९	५२	४९९
मूलत्रिकोण निज़तुङ्गगृहोपयाता	७	५९	३८१
मूलत्रिकोण स्वगृहोच्चभाग	१	४४	४१
मूलत्रिकोण निजमित्रगृहोपगानां	१०	४७	५५६
मूलत्रिकोणा हरिताबुरु क्रिया	१	२६	२४
मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद्	९	५१	४९९
मूलावासवयोर्मघा भुजगयोः	९	४५	४९६

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
मेधावी नीचकर्मा	८	८४	४७१
मेषकुलीर तुलालिघटैः	३	७३	१६५
मेष गोयमकुलीरमान्दिरेष्वंश	१७	१२	७८५
मेषस्थे यदि शीतगौ च	९	९२	५०९
मेषस्य धातुकररत्न धरातलं स्यात्	१	१०	१०
मेषाजविश्वक्रिय तुम्बुराद्या	१	४	४
मेषादि राशिचक्रं तु भूभागे	१७	८७	८०७
मेषादि राशियद् गृहगता	१०	३	५३६
मेषान्त्यलग्ने सगुरौ	४	१०२	२२३
मेषालि कुम्भतरुणी वृषकर्क	२	६८	९७
मेषाश्वि गोकुम्भमृग द्वितीय	९	११५	५१५
मेषे जूकनवांशके दिनकरे	६	२	२८७
मेषे वृषे चापधरे विलग्ने	६	४६	३१३
मेषूरणस्थे यदि	५	९९	२७२
मेषूरणस्थेऽवनिजे तु जाताः	८	९०	४७३
मेषोदय कलत्ररसातलानि स्युः	१	५३	४७
मेषो वृषो मकर षष्ठ कुलीर मीनाः	१	२९	२८
मैत्रे सुप्रियवाग् धनी	९	८९	५०८
य वर्ग			
यज्वा भूपति वल्लभश्च	९	३९	४९४
यज्वार्यभाक् सततमर्थरुचिर्गदायां	७	१७५	४४२
यत्कार्यकारि द्युचरस्य दाये	१८	२१	८२७
यत्तारांशगतः शशी	१८	४०	८३६
यत्पंचविंशति मुखा	१०	६४	५६४
यत्प्रोक्तं राजयोगादौ	१७	८५	८०७
यत्संख्याकमजादि	१४	३२	६८७
यथास्तराशिर्मिथुनं समेति	३	१२	१२३
यथोपदेश मार्गेण सर्वेषां	१७	८९	८०८
यद्भावनाथो रिपुरिष्फरन्ध्रे	११	४	५७०
यद्भावलाभधन विक्रम राशि	११	११	५७३

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
यद्भावपे केन्द्रगते	११	५	५७०
यदा सुधारश्मि नवांशकस्थे	४	४४	१९८
यदा महीदेव कुल प्रजाता	१०	२६	५४३
यदि विषघटिकायामष्टमे	५	११२	२१८
यदि शुभकर दृष्टा शिल्पिनी	१६	३९	७७२
यदि शुभकर दृष्टे खेचरे	८	४७	४६३
यदुक्तमुडुनाथस्य फलं	८	४५	४६२
यद्धातुकोप जनिताखिलरोग	२	८३	१०७
यद्धातु खेटस्यदशापहारे	१८	१९	८२७
यमांशकस्थिते मन्दे	४	५७	२०२
यस्य जन्मनि तुङ्गस्था	४	७८	२११
यस्य जन्मसमये शशिलग्नात्	७	११८	४१२
यस्य योगस्य यः कर्त्ता	७	६६	३८६
यस्या मन्मथ मन्दिरे गतबले	१६	४८	७७७
यानादि विविधार्थार्प्तिं	१८	७६	८४६
यानाधीशे लग्नगे वाहनस्थे	१०	६५	५६३
यानेश कर्मोपगतौ बलिष्ठौ	१२	१२९	६३७
यानेशे लाभराशिस्थे	१२	१०५	६३१
यावच्चक्रं तदा ज्ञेयं	१७	८३	८०५
यावद्धिन्दुर्लग्नगस्ताव	१०	६०	५६३
युपदेह जीवौ तु	१७	३१	७९५
युग्मांशकस्तु	३	२७	१३८
युग्मे चन्द्रसितौ तथौज भवने	३	२४	१३६
युग्मे लग्ननिशाकरौ यदि	१६	७	७५९
युग्मे विलग्ने कुजसौम्य	१६	१०	७६०
युग्मांशे भानुजांशे	१३	४१	६५३
युग्मोदये पुत्रनाथश्चतुर्थ	१३	४०	६५५
यूपेषु शक्तियवदण्डगदा	७	१६४	४३०
युवति जन कन्दर्पः	७	९४	४०४
ये चावसान रिपु रन्ध्र तुरङ्गभानां	१०	५५	५६०

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
ये जातभङ्गा नृपयोगभङ्गा	६	१०२	३४४
ये तुङ्ग राशिस्वसुहृद्गृहस्था	१०	५४	५६०
ये धर्म कर्म निरता	५	३५	२४७
ये मातृ भावपतिकारकतत्समेता	१२	७९	६२५
योगः शारदसंज्ञकः सुतगते	७	१४४	४२३
योगी कृशाङ्गः कृषकश्चभोगी	९	२८	४९०
योगी पिङ्गलवत्सरे जितमना	९	२३	४८६
योगे केमद्रुमे प्राप्ते यस्मिन्	७	८२	३९९
योगे जातकश्चामरे राजपूज्यो	७	१३७	४१९
योगो धुरन्धुराख्यः स्याद्विना	७	७३	३८९
योगे स्थानं गतवति	४	३९	१९६
रक्तगौर शुककान्ति पाटला	१	२३	२२
रक्ताम्बरामरणदः सुरपूजितर्क्षे	१२	१०१	६३०
रक्तास्योन्नत नासिकः सुचरणो	७	६३	३८४
रज्जुर्नलश्च मुसलस्त्रितया	७	१६५	४३०
रज्जुर्मुसलं नलं चराद्यै	७	१६६	४३१
रजोवेलाजातः	९	१२५	५१९
रत्नकाञ्चन वित्तासिं	१८	६३	८४३
रन्ध्रं येन निरीक्षितं बलवता	५	७४	२६३
रन्ध्रस्वामि दशागमे रिपुभयं	१८	५०	८३९
रन्ध्रस्थानगते सूर्ये	५	८७	२६८
रन्ध्राधिपे पाप गृहोपयाते	१४	५१	६९६
रन्ध्रे मिश्रबले	१६	४४	७७५
रन्ध्रेश्वरो रन्ध्रयुक्तो	५	५२	२५१
रन्ध्रे धरासूनु दिनेशसौरा	४	३१	१९१
रन्ध्रेश्वरातिशत्रुश्च सप्तछिद्र	५	५३	२५१
रन्ध्रेश जीवसंदृष्टेपापे	४	६३	२०५
रन्ध्रे शनौ वियति	५	१०५	२७५
रन्ध्रेशस्थ गृहाधीशो	४	९३	२१८
रन्ध्रेस्थितैस्त्रिभिः	४	८८	२१६

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
रन्ध्रेश्वरे पापयुते विलग्ने	३	३६	१४१
रन्ध्रेशे रिपु रन्ध्ररिष्फगृहगे	१४	५४	६९७
रव्यादिखेट निजधातु	५	७६	२६४
रव्यादिखेटस्थित राशियाता:	१०	५०	५५८
रव्याराहु मन्दाश्च	२	११	६३
रव्यादि सप्तग्रहतारकांश	५	२६	२४३
रविबुधशुक्रैरन्यदारानुरक्तो	८	२०	४५५
रविचन्द्र भौम गुरुभि:	५	४३	१९८
रविक्षेत्रोदये राहू राजभोगाय	८	६१	४६६
रविणायुक्त: शशिज:	४	५०	२०१
रवितनयदशायांस्वापहारे	१८	१२२	८५६
रविमुख्य नभोग दत्तसंख्या:	१०	४८	५५७
रवियुक्ते क्षत्रियेण	१२	७३	६२३
रविलुप्तकर: सौम्य:	७	४१	३७४
रविलुप्तप्रकरैरदीक्षिता	१५	४२	७३६
रविशशिबुध शुक्रैर्व्योम्नि	७	३५	३७१
रविशशिकुजशुक्रैश्चन्द्र	१५	३६	७३४
रविशशियुते सिंहे लग्ने	६	५२	३१८
रवि: स्थिर: शीतकरश्चर:	२	४७	८८
रवीन्दू पितृमातृस्थौ	१२	७८	६२५
रवीन्दुभौमा नवमोपयाता	१४	७८	७०९
रवीन्दु भौमेन्दुजजीव भार्गवै	१५	२९	७३२
रवीन्दु वागीश दिनेश पुत्रै:	१५	३२	७३३
रवीन्दु शुक्रावनिजै: स्वभागगै	३	१३	१२४
रसातलस्थौ यदि भानुचन्द्रौ	४	७	१८०
राजप्रियश्चञ्चलबुद्धि युक्त:	८	७१	४६९
राजपूज्योऽतिमेधावी	७	९३	४०४
राजपूज्यो महाभोगी	७	१२०	४१२
राजप्रियो माण्डलिक:	१४	८५	७१२
राजस्थाने गुरु बुध	१३	४	६४३

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
राजचोर भयं दुःखं	१८	१५०	८६२
राज्यस्थानप राज्यकारकदशा	१८	२२	८२८
राजामहीपतिर्विद्वान्	८	५२	४६४
राश्यंशसमान गोचरे	३	६६	१५८
राहुस्त्रिषष्ठ लाभे	४	७९	२११
राशिद्वयं सद्युचरं च	१०	४०	५५०
राशिदृष्टिफलं यत्तदंशकेषु	८	५५	४६४
राशिसन्धि गदाये तु	१८	२७	८३०
राशिसन्धिस्थखेटानां	५	४६	२४९
राहुकेतु युते दृष्टे	१३	३६	६५४
राहु द्वितीयगृहपौ	११	७५	५९४
राहुदये लग्ननाथे कर्मस्थे	३	३५	१४१
राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु	२	७३	१०१
राहौ देहेऽरि पीडाऽऽत्म	१७	४५	७९९
राहौ रिपुस्थानगते	८	७८	४७०
राहौ विलग्ने सकुजेऽर्क पुत्रे	६	६०	३२२
रिःफशत्रुगताः पापाः	४	९२	२१७
रिःफाधीशेमन्दगेहोदयस्थे	१०	६१	५६३
रिःफाधीशे पापषष्ट्यंशयाते	५	१२०	२८४
रिष्फस्थानगते शुभे शुभयुते	१५	७३	७५०
रिपोरोगभयात्क्लेशं	१८	७५	८४६
ऋक्षस्थाने भवेद्रात्रावादौ	९	५९	५०१
रोगाराति जनद्वेषं	१८	१३७	८५९
रोगारिव्यसनक्षतानि	१३	७१	६६८
रोगारिभयनाशं च	१८	१३८	८५९
रोगं विरोधबुद्धिं च	१८	७४	८४६
रोहिणी मघवैशाख वैष्णवादिषु	१७	८	७८५
लंकादिकृष्णासरिदन्तमार	२	२५	७१
लग्नकेन्द्रस्थिते सौम्ये	१२	१२४	६३६
लग्नंगते दिनकरे	५	१०१	२७३

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
लग्नं गते दिनकरे रिपुनीच	१०	१३	५३९
लग्नचक्र दशाकाले	१७	४७	८००
लग्नचन्द्रान्तर गतैर्ग्रहै	३	७५	१६७
लग्नत्रिकोण केन्द्रस्था	१२	१४४	६३७
लग्नत्रिकोणे दिननाथ चन्द्रौ	६	८०	३३२
लग्नद्रेक्काणगो भौमः	६	५१	३१७
लग्नधर्मगते पापे	७	१४६	४२४
लग्ननवांशपतुल्यतनुः	३	७६	१७२
लग्नं पञ्चहतं च	५	५७	२५४
लग्नयानपतौ सुखे	१३	५	६४४
लग्नराशि नवभावनायका	६	११	२९५
लग्नराशि समाश्चाब्दा	५	१५	२३५
लग्नवाहनभाग्येशाः	१२	१२६	६३५
लग्नं विहाय केन्द्रस्थे	७	४७	३७६
लग्नं शशाङ्कं सुरराजमन्त्री	३	५५	१५१
लग्न सप्तमधर्मान्त्यराशिगा	१३	२२	६५०
लग्नं स्वामिनि रिःफगे तु	६	८	२९३
लग्नस्थिते हिमकरे	७	७१	३८९
लग्नं होरादृकाणं स्वर नव	१	३०	२९
लग्नार्कमान्दि स्फुट	५	६०	२५६
लग्नाच्छिद्रत्रिकोण	५	७९	२६५
लग्नात्कर्म शुभाधिपौ	७	२१	३६१
लग्नात्कामपकारकौ शुभकरौ	१४	४६	६९३
लग्नाद्दशमगश्चन्द्रः	६	४७	३१३
लग्नादन्त्यगृहाधिपे	१४	५३	६९६
लग्नादन्त्यतदीश भानु तनयै	१५	७२	७५०
लग्नाद्व्ययारिगतयो	६	९९	३४२
लग्नाद्वा चन्द्रलग्नाद्वा	७	११९	४१२
लग्नादात्मनि	१३	२	६४२
लग्नादाय तपस्थिताः	१३	५८	६६१

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
लग्नादि दशमांशेशास्त्वोजे	१	३५	३४
लग्नादिने वाऽष्टमगे धराजे	४	१५	१८४
लग्नादरिद्यून गृहाष्टमस्थैः	७	११४	४१०
लग्नादि यद्राशिगते फणीशे	१३	७९	६७२
लग्नाद्वाहनराशिगस्त	१२	१०६	६६२
लग्नादि द्वादशान्तानां भावानां	१७	७६	८०५
लग्नादिष्ट गृहोपगः	१८	१५	८२५
लग्नादिशन्यन्तगतं	१०	६८	५६५
लग्नादि सप्तगृहगा यदि	७	१३२	४१७
लग्नादि सप्तमांशेशास्त्वोजे	१	३१	३१
लग्नाधिपदशाकाले	१८	४२	८३७
लग्नाधिपस्य गृहपो	१२	१३६	६३९
लग्नाधिपस्य व्ययगे	११	२२	५७७
लग्नाधिपस्यात्मपतौ	१३	३	६४३
लग्नाधिपेतरयुते यदि	७	२९	३६८
लग्नाधिपे नाशगते तु	११	३०	५८०
लग्नाधिपे शोभनराशियुक्ते	११	२७	५७९
लग्नाधिपोऽतिबलवान	११	४८	५८६
लग्नाधिपोऽतिबलवानशुभैरदृष्टः	४	८३	२१२
लग्नाधियोगे बहुशास्त्रकर्ता	७	११५	४१०
लग्नानङ्गपतिस्फुटैक्यगृहगे	१४	२७	६८४
लग्नात्पञ्चमराशिपेन	१४	६१	७००
लग्नात्पुत्रकलत्रभे	१३	८	६४५
लग्नान्त्यगौ भानुधराकुमारौ	५	१०९	२७६
लग्नायधनभाग्येशा	११	६३	५८९
लग्नारिरन्ध्रव्ययगे शशाङ्के	४	२८	१९०
लग्नांशपाद्वीर्ययुतग्रहाद्वा	११	१५	५७४
लग्नांशकाद् ग्रहयोगेक्षणाद्वा	३	४	११४
लग्नाष्टमे पापयुतेष्टमेशे	५	११०	२७७
लग्नास्पदानङ्ग गृहोपयाता	७	४	३४७

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
लग्नास्तयातौ यदि	४	१२	१८२
लग्नास्तार्थाष्टमस्थेऽर्के	११	७१	५९३
लग्नेगुरौ कर्मगते च	५	३२	२४६
लग्ने गुरौ विक्रमनाथयुक्ते	१२	३८	६१४
लग्ने चन्द्रगृहं गते	१६	१५	७६२
लग्ने चरे चरनवांशगते	६	३२	३०६
लग्ने जलर्क्षे	११	२९	५८०
लग्नेड्यो गुरुकेन्द्रगो	७	७०	३८८
लग्ने यद्द्रेक्काणगो निगडा	४	४५	१९९
लग्ने दिनेश तनये	१३	४५	६५६
लग्नेन्दु विषमर्क्षगौ	१६	८	७५९
लग्नेभार्गव राशिगे	१६	१३	७६१
लग्ने भौमगृहं गते शशिनि	१६	१२	७६१
लग्ने मन्दगृहे	१६	१८	७६२
लग्ने रविशनिभौमाः	४	४६	१९९
लग्ने रवौ सुते मन्दे	५	१०७	२७६
लग्ने रवौ भूमिसुतेन	६	६२	३२३
लग्ने रवौ भूमिसुते कलत्रे	६	७९	३३१
लग्ने रव्यादि संदृष्टे	११	४३	५८४
लग्ने वा यदि शीतांशौ	३	४८	१४९
लग्नेश भूपुत्र शशाङ्क पुत्राः	६	७१	३२७
लग्नेश षष्ठाधिपति दिनेश युक्तौ	६	७२	३२८
लग्नेशस्फुटतो विशोध्य	१२	३०	६१२
लग्नेशस्यांशनाथे तु	११	४२	५८४
लग्नेशस्थ नवांशस्य	५	११३	२७९
लग्नेशस्थनवांश नाथगृहगे	१४	४५	६९३
लग्नेश्वरस्थितनवांश पति	१४	३१	६८६
लग्नेश्वरे केन्द्रगते	७	१३६	४१९
लग्नेश्वरे सराहौ गुलिके	६	६१	३२२
लग्नेश्वरेण सहिते यदि	६	५९	३२२

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
लग्नेश्वरे वाहननाथ युक्ते	५	८४	२६७
लग्नेशात्सुखनाथतद्भवनगौ	१२	१०८	६३२
लग्नेशाद्व्यपे विलग्नप	११	२३	५७७
लग्नेशानुजनायकौ	१२	२७	६१०
लग्ने शीतकरे गुरौ	७	१८	३५८
लग्ने शुभे धने पापे	११	४०	५८४
लग्ने शुभे शोभन दृष्टि	११	३८	५८३
लग्नेशेकेन्द्रराशिस्थे	७	४०	३७४
लग्नेशे केन्द्र भावस्थे	७	४८	३७६
लग्नेशे निधनारिरिष्फगृहगे	१४	५५	६९८
लग्नेशे धनराशिस्थे	११	६२	५८९
लग्नेशे निधनांशस्थे	५	८२	२६६
लग्नेशे बलवर्जिते	६	२१	३००
लग्नेशेशुभराशिस्थे	११	४१	५८४
लग्नेशे यदि रिष्फगे	११	३७	५८३
लग्नेशेपुत्रभावस्थे	१३	१७	६५०
लग्नेशो बलयुक्तश्चेत्	४	७७	२१०
लग्ने सपापे बहुपापदृष्टे	३	४१	१४४
लग्ने सपापे लग्नेशे	११	३४	५८२
लग्ने स्वामीक्षिते राजा	११	४६	५८५
लग्ने सेज्ये भृगौ कामे	४	१०६	२२४
ललितवदननेत्रो राजपूज्यश्च	९	१०८	५१४
लवणकटुकषायस्वादु तिक्ताम्ल	२	२९	७६
लाभचक्र दशाकाले	१७	७२	८०२
लाभस्थानेन लग्नादखिल	१५	६६	७४७
लाभस्थानपतौ विलग्नभवनात्	१५	७१	७४९
लाभस्थौ सुखभाग्येशौ	१२	११७	६३५
लग्नारिव्ययरन्ध्रपुत्र गृहगा	६	२९	३०४
लाभावसान भवनोपगत	१२	१७	६०६
लाभेशे दिनपेऽथवा	१५	७०	७४९

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
लाभे सुखे वा दशमे	७	५३	३७८
लिप्तिभूतै	५	१२	२३३
वक्रार्कसोमात्मजदानवेज्या	१५	३३	७३३
वक्रीशनि भौमगृहोपयातः	४	४०	१९६
वर्गद्वयं पारिजातं षण्णां पारावता	१	४६	४१
वर्गोत्तमे वा यदि पुष्करांशे	७	२५	३६५
वर्गोत्तमांशोपगते विलग्ने	७	५	३४७
वर्गोत्तमादि शुभवर्गयुते	६	१०१	३४३
वज्रेन्त्यपूर्वसुखिनः	७	१७६	४४२
वर्णास्ताम्र सितारक्तहरिता	२	१९	६७
वदन्ति विद्या जननी सुखानि	१२	५९	६२०
वलक्षपक्षे यदि पुत्र पौत्र	९	३२	४९२
वस्त्रभूषण वित्तासिं	१८	१३६	८५९
वस्त्राद्यं शालिमुख्यं वनफल	१	२४	२२
वह्वाशनो भुक्तिपतौ	११	९०	५९९
व्यत्यस्तोभय पुच्छमस्तक युतौ	१	९	७
व्यतीपातेऽङ्गहीनः स्यात्	९	७७	५०४
व्ययचक्र दशाकाले देहार्ति	१७	७४	८०२
व्ययधनयुतखेटैर्वा	७	१२१	४१३
व्ययभावगते जीवे	११	६१	५८९
व्ययस्थिते पूषणि पुत्रशाली	८	९७	४७४
व्ययस्थितेऽर्के ससुते	४	१९	१८७
व्ययार्थौ पाप संयुक्तौ	४	७०	२०६
व्यये भास्कर संदृष्टे	३	५१	१५०
व्यये रवीन्दु युगपत्	६	५४	३१९
व्ययेशदाये रविमन्दभौमे	१८	५२	८४०
व्ययेशे स्वोच्चराशिस्थे	१५	७९	७५३
व्याधिशत्रु विनाशं च	१८	९७	८५१
व्यापार धर्मभवने शुभखेट युक्ते	१५	११	७२४
व्यापार मेषूरणमध्यमानं	१	५२	४६

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
व्यापार रन्ध्र तनुनाथ	१४	५६	६९८
व्यायामी सुभगः क्रूरो	७	९८	४०५
वाक्स्थानपे देवपुरोहितेन	११	७९	५९५
वागीश बुधजीवेषु	११	७७	५९५
वाग्भावेशे गुरुयुते	११	७६	५९४
वाग्भावेशे राहुयुक्ते	११	७४	५९३
वाग्भावपे रवौ भौमे	११	८३	५९६
वाग्मी धनी सुखयशोबल	८	६९	४६८
वाग्मी शिष्टाचारधर्मस्तपस्वी	९	१२४	५१९
वाग्मी शास्त्र कलापवान्	१४	७५	७०७
वागीशस्य गृहोदये	१६	१७	७६२
वागीशस्यांशपे सौम्ये	११	८०	५९५
वाचस्पतौ नवमपञ्चमकेन्द्र	१६	३८	७७२
वातपित्तकृतं रोगं	१८	९८	८५१
वातपित्तकृतं रोगं कलहं	१८	१२४	८५६
वानप्रस्थस्तपस्वी वनगिरि	१५	१६	७२५
वासौ शुभग्रहयुते निपुणः	७	१२३	४१३
वाहनात्पतनं वाऽपि	१७	९४	८०९
वाहनादि धन प्राप्तिः	१८	११४	८५४
वाहनेशे गुरूयुक्ते	१२	१०३	६३०
वाहनेशेऽरि नीचस्थे	१२	११३	६३३
वाहनेशेबलयुते	१२	९६	६३०
वाहनेशेवाहनस्थे	१२	९७	६३०
विकर्तनो लग्नगतोऽस्तगोवा	६	५५	३२०
विकलनयनवक्रः	९	५	४८२
विक्रमायारिगाः पापा जन्मपः	७	५१	३७७
विक्रमस्त्री धन क्षेत्र कर्मवान्	७	८९	४०३
विक्रमाधिपतौ स्वोच्चे	१२	३३	६१४
विक्रमेशगुरु लग्नं	१२	४४	६१७
विख्यातकीर्तिर्भुवि राजभोगी	७	१४९	४२४

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
विचित्रगृह वित्तासिं	१८	१३३	८५९
विचित्रमञ्चे शयनं	१५	८०	७५३
विजयशरदि धर्मो	९	१७	४८६
वित्तं नेत्र मुखंविद्या	११	४९	५८६
वित्ताधीशे लग्नगे	११	५६	५८८
वित्तायोदयराशयः	११	५०	५८६
वित्तास्तगौ पंचमयान नाथौ	१३	६	६४४
वित्तास्तारिपभार्गवास्तनुगता	१४	३	६७५
वित्ताधीशे सोदरेशेन	११	५५	५८८
वित्ते पाप बहुत्वे च	१४	२०	६८२
वित्तेशाद्धनरिःफरन्ध्रभवन	७	१६२	४२९
वित्तेशायगृहाधिपौ तनुपते	१५	६९	७४८
वित्तेशः ससुखाधिपो नवमगः	१२	१३७	६३९
वित्ताधिपे वा यदि	११	२०	५७६
विद्यासिं वाक्पटुत्वं च	१७	५२	८०१
विद्यावानपि नीचकर्म निरतः	८	११	४५२
विद्याराशौ निजपतियुते	१२	६०	६२०
विंद्यास्थानपजीवचन्द्रतनया	१२	६१	६२०
विद्यास्त्री गीतवाद्येष्वभिरति	१८	७३	८४६
विद्वान वारणगो तुरङ्ग	१४	७०	७०५
विदेशभाग्यं चरभे	११	२५	५७९
विदेशाद्वाहनप्राप्ति	१८	१०१	८५१
विधुन्तुदे रिष्फगते विशीलः	८	९९	४७४
विधुन्तुदादिग्रहपीडितेन्दौ	७	७५	३९५
विनाडीकृत्य नक्षत्रं स्वैः स्वैः	१७	११०	८१७
विनीत वेशो धनवान्	८	८३	४७१
विप्रादिखेचरयुते सति	१५	७६	७५१
विप्रौ जीवसितौ दिनेशरुधिरौ	२	२६	७२
विभक्ता दशभिर्ज्येष्ठानक्षत्रा	९	४६	४९७
विभावरी षोडश भामिनीना	३	१७	१२९

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
विलग्न चन्द्रौ शुभदृक्विहीना	४	१०	१८१
विलग्नजन्मद्रेक्काणा	५	५६	२५२
विलग्नजातस्त्वपि देवमन्त्री	४	४	१७८
विलग्नतारेन्दुभनामतारा	१८	३३	८३३
विलग्नदर्शी तनुपो	११	२८	५८०
विलग्ननाथस्थितराशिनाथ	७	१५६	४२७
विलग्नपे बलोपेते	५	२८	२४४
विलग्न पाताल वधूनभोगा	२	३५	८०
विलग्नमान्दि स्फुटयोगभांशं	५	६४	२५८
विलग्नवित्तास्ततप:	११	६६	५९१
विलग्नस्थे धरासूनौ	१३	४४	६५६
विलग्नहोरा द्रेष्काण नवांश	१	४७	४५
वियोनि जन्मविज्ञानं निषेकोदयजं	३	८०	१७६
विरहगर्वमदादि गुणैर्युतः	९	२	४८२
विंशत्यायुर्मयूराणां	५	४३	२४८
विष्कम्भे जितशत्रूरर्थपशुमान्	९	८	५११
विष्ट्यां दरिद्रमाचष्टे	९	७५	५०४
वृषशरदि दरिद्रो वीतलज्जो	९	१४	४८५
वृषादि भागत्रयमुच्चमिन्दो	१	२७	२४
विशुद्धहृदयः शान्तो	१२	९५	६३०
विस्तीर्ण बाहुर्गुणवान् नेता	७	९५	४०४
विहायलग्नं विषमर्क्ष संस्थ:	३	२२	१३४
वृद्धस्त्रीजनसम्भोगं	१८	१६४	८६४
वृद्धाचारः कुलाढ्यश्च	७	१०५	४०५
वीणायां सकल क्रियासु	७	१७९	४४५
वीर्याधिपे भूमिसुतेन	१२	५३	६१८
वीर्यान्विते राहु समेतराशि	६	६४	३२४
वीर्यान्विते शीतकरे	१२	८९	६२५
वीर्योपेता निशि वृषनृयुक्	१	१४	१५
वेद शास्त्रकला गेय कुशलः	७	८७	४०३

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
वेदान्तपरिशीली	११	८५	५९७
वेदादिबिन्दुयुत कोण चतुष्ट्ये	१०	१८	५४०
वेदार्य शास्त्रनिखिला	७	१५१	४२५
वेदी राज पुरोहितो	८	१२	४५२
वैधव्यं निधनेन	१६	६	७५८
वैश्य वर्गेण वित्ताप्तिं	१८	११२	८५४
वैशाखे श्रवणे माघे	९	८२	५०६
वैश्यवर्गाद्धनप्राप्तिं	१८	८८	८४९
वैशेषिकांशके जीवे	१३	१९	६४८

श वर्ग

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
शंकटाण्डजवच्छुभाशु	७	१६९	४३५
शंखे जातो भोगशीलो	७	१३९	४२०
शत्रुक्षेत्रगते रवौ	८	११२	४७९
शत्रुनाशं जयं सौख्यं	१८	११५	८५४
शत्रुस्थान गतोऽरिनीचगृहगो	१३	७४	६६९
शत्रुस्थनाधिपेदु:स्थे नीच	१३	८१	६७३
शन्यंशके कुत्सित मार्गवृत्त्या	१५	५०	७४१
शन्यादिभौम पर्यन्तं	४	१०१	२२२
शन्यङ्गारक संयुक्ते सप्तमे	३	५३	१५०
शन्यारयोगे गुलिकेन	११	६८	५९१
शनिरतिबलशालीपाददृक्वीर्ययोगे	२	३१	७७
शनेर्दशायामजगर्द्दभो	१८	१२०	८५६
शय्यास्त्री धनवस्त्राप्तिं	१८	१५८	८६३
शरादिबिन्दुस्थितराशियात:	१०	९	५३८
शरीरवर्णाकृति लक्षणानि	११	१३	५७४
शशाङ्क सौम्यो दशमोपयातौ	६	१५	२९७
शशाङ्क लग्नोपगतै:	४	१८	१८६
शशाङ्के पापलग्ने वा	३	३८	१४२
शशिन्यरिविनाशगे निधनमाशु	४	३५	१९३
शशिनि गगनयाते कामगे	६	१२	२९५

३१ जा.द्वि.

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
शशिन्दुसूनु क्षितिजार्कपुत्रा	१५	३४	७३३
शाखाधिपा जीवसितार	२	१५	६५
शार्दूल प्रतिमाननो गजगति	४	६२	३८४
शान्तः सर्वजनप्रियोऽति	९	२१	२८६
शान्तोदार कृपाकर॰	९	१९	४८६
शास्त्रीगान विनोदहास्य रसिकः	८	५	४५०
शास्त्री भोगसुखी	१४	७६	७०८
शास्त्रेष्वनियतानां च	५	३९	२४७
शिल्पादिकाव्यागमशास्त्रमार्गा	१५	४७	७४०
शीतज्योतिषि योषितो	३	१६	१२८
शीतांशु राशीशमिनात्मजो वा	१५	२०	७२८
शीतांशौ राहुकेतुभ्यां	१२	७२	६२३
शीर्षोदयगतः खेटः पाकादौ	१८	२४	८२९
शीर्षोदयगतः खेटः पाकादौ	२	८६	१०८
शीर्षोदयेषु चरभादिषु	१४	६४	७०२
शीर्षोदयेषु निखिलद्युचरेषु	७	३०	३६८
शीर्षोष्णरोग सन्तापं	१८	१६०	८६४
श्रीकान्ताजशिवस्वरूपममर	१	१	१
श्रीबलारोग्य सन्तान	१६	१	७५६
श्रीमज्जातक पत्रिका परहितं	१६	३	७५६
श्रीमानीश्वर वत्सरे	९	१३	४८५
श्रीवैद्यनाथकृत जातक पारिजाते	१०	७२	५६८
श्रोणाविष्णुहरि श्रुति श्रवण	९	४४	४९५
शुक्रः करोति रतिलाभ	१७	४३	७९९
शुक्रज्ञेन्दु सुरार्च्चितैः	८	२४	४५५
शुक्रं निशाकरं त्यक्त्वा	१२	५४	६१९
शुक्रात् कुजेऽहनि तप	४	१६	१८४
शुक्रात् कोणगतो गुरुः	७	६९	३८८
शुक्राद्रवौ विक्रमगे	४	१४	१८६
शुक्रार्य द्विजराज भूमितनया	६	३१	३०५

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
शुक्रारभानुगुरु चन्द्रसुतैर्विशोकः	८	३१	४५८
शुक्रारेन्द्र पुरोहितैर्नरपते	८	१३	४५३
शुक्रारौ मदगौ कलत्ररहितो	१४	५	६७६
शुक्रांशे मदनस्थितेऽवनिसुते	१४	४१	६९१
शुक्रेऽरिनीचमपहाय	७	७	३४८
शुक्रेक्षिते गोजननं	३	६	११६
शुक्रेणदृष्टे यदि	५	९४	२७०
शुक्रे तृतीये यदि	१२	४८	६१६
शुक्रेन्दुनयनाधीशैरेक	११	६५	५९०
शुक्रेन्दु वर्गे सुतभे	१३	१०	६४७
शुक्रेन्दु प्रविलोकिते गतबले	१५	१९	७२८
शुक्रेन्दुभे रुपगुणाभिरामा	१६	३७	७७२
शुक्रे बलिष्ठे यदि वा	१२	६२	६२१
शुक्रेन्दु वर्गसहिते सुखराशिनाथे	१२	९०	६२८
शुक्रे वा रविनन्दने	१५	८१	७५३
शुक्रे स्वोच्चगते	८	१०१	४४५
शुक्रोपेत कलत्रराशि	१४	२९	६८५
शुक्लाब्दे परदारको	९	११	४८५
शुक्लादि रात्रिदशकेऽहनि	२	१०	६२
शुक्ले धर्मरतः पटुत्ववचनः	९	१०१	५११
शुभांशराशौ यदि	१४	८	६७८
शुभाशुभाद्ये यदि जन्मलग्ने	७	१२५	४१४
शुभांशे शुभ संदृष्टे	१४	२४	६८३
शुभकर्तरिसञ्जातस्ते	७	१२७	४१४
शुभक्षेत्रे शुभं सर्वं पापर्क्षे	१७	४८	८००
शुभग्रहयुतः केतु	१८	१५४	८६२
शुभचक्र दशाकाले शोभनं	१७	६८	८०२
शुभपापर्क्षजं सर्वं	१७	६०	८०१
शुभफलदशायां तादृगेवान्तरात्मा	१८	१३	८२३
शुभयोगभवो वाग्मी	७	१२६	४१४

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
शुभवाहन् राशीशौ	१२	११९	६३२
शुभोऽशुभर्क्षे रुचिरं कुभूमिजं	३	१०	१२०
शुभोदयेशौ सुखराशियातौ	१२	१३१	६३८
शून्यागारं तरणि शशिनो	१०	१६	५४०
शून्यागारे रन्ध्रराशौ	५	७५	२६४
शूरः स्तब्धो मध्यदृष्टि	६	५३	३१९
शूरो दुर्जनसेवितोऽतिधनवान	८	६५	४६७
शूले कोपरसान्वितो	७	१८०	४४५
शूले कोप वशानुगः	९	९९	५११
श्लेषामयं बुधयुतेऽवनिजे	६	६९	३२६
शैलाशा वसुसागराम्बरशरै	१०	४४	५५३
शोकी दुष्टपरोऽति पापनिरतः	९	१६	४८५
शोध्यं राशिद्युचरणगुणकैः	१०	७०	५६७
शोध्यावशिष्टानि गुणीकृतानि	१०	४३	५५३
शोध्यावशिष्ट द्वयबिन्दुयाते	१०	१५	५३९
शौर्याधिपे राहुसमेत	१२	४२	६१५
शौर्याधिपे भानुयुतेऽत्र	१२	३५	६१४
षट्त्रिव्ययाष्टमोपेता	१२	१४३	६४०
षटपञ्चकत्रिचतुरक्षिवियच्चरेन्द्र	८	११८	४८०
षट्पञ्चबिन्दु सहिते तनुगे	१०	३१	५४४
षट्शास्त्र वल्लभः केन्द्रे	११	८६	५९७
षट्सु ग्रहेषूच्च गृहस्थितेषु	७	२२	३६३
षट्सप्तरन्ध्र भावेषु शुभेषु	४	९१	२१७
षण्मातृपौ पितृस्थाने	१२	६८	६२२
षष्ठस्वामि निरीक्षिते सुखपतौ	६	२२	३००
षष्ठ्यंशकानामधिपास्त्व	१	३८	३८
षष्ठावसानाष्टमभावगेषु	४	११	१८२
षष्ठाष्टम व्ययस्थाने	१७	७९	८०५
षष्ठाष्टमस्थो लग्नेशः	१३	२१	६५०
षष्ठामस्थो रिपुदृष्ट मूर्त्तिः	५	४७	२४९

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
षष्ठाष्टमगतश्चन्द्रात्सुरराज	७	१०८	४०७
षष्ठाष्टम व्यये चन्द्रे	५	९८	२७१
षष्ठाष्टमे कर्कणि जन्मलग्ना	४	४२	१९७
षष्ठाष्टमे व्यये पापे लग्नेश	४	६८	२०६
षष्ठावसानरन्ध्रेशस्फुटैक्यभवनं	५	६६	२५८
षष्ठे चन्द्रेऽष्टमे भानौ	६	५८	३२१
षष्ठेभास्वति लग्ननायक	१३	७३	६६९
षष्ठेशपाकसमये तु	१८	४९	८३९
षष्ठेशस्य दशा विपाक करणी	१८	२५	८२९
षष्ठेश्वरश्चन्द्रसुतेन युक्तः	६	७५	३२९
षष्ठेश्वरे पापयुते विलग्ने	६	७०	३२७
षष्ठेश्वरेण सहितः	१२	६७	६२२
षष्ठेशे गोपुराशांदौ	१३	८२	६७३
षष्ठेशो देहसम्बन्धी	३	३३	१४०
षोडशाब्दास्तुरङ्गाद्ये	९	६४	५०२
सकलगगनवासाः स्वोच्चगा	१४	९८	७१७
सक्रूरो देहपो	११	३३	५८२
सखेचरा खेचरबिन्दुसाम्ये	१०	४१	५५०
संख्यायोगः सप्तसप्तर्क्ष	७	१७३	४३९
संज्ञाध्याये च यत्प्रोक्तं	१७	८४	८०५
संज्ञाध्याये यस्य यद्द्रव्यमुक्तं	१८	१२	८२३
संचारशीलो मृदुवाग्विवेकी	२	५४	९३
सत्कर्म धर्म संसिद्धि	१७	६९	८०२
सत्योक्ते ग्रहमिष्टं	५	१८	२३८
सत्योपदेशो वरमत्र किन्तु	५	२१	२४०
सत्त्वादि ग्रह पाक भुक्ति समये	१८	२३	८२८
सत्स्वर्थगेषु स्वयमेव	१६	४५	७७५
सदन्तजातः कुलनाशकारी	९	७८	५०५
सद्वस्त्रलाभ सुतलालन साधु	१०	७	५३६
सदाऽग्निरोग ज्वर वृद्धि	२	७५	१०२

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
सदानिशान्धा क्रियगो मृगेशा	१	२१	२०
सपत्नभावाधिपतौ तपस्थे	१२	१३२	६३८
सपत्नखेटोपगतस्य पाके	१८	२०	८२७
सप्तमे चोभयकुलं त्वष्टमे	९	४८	४९७
सप्तमेवाऽष्टमे पापे	१४	१८	६८१
सपाप कुरुते केतुः	१८	१५५	८६२
सपापे रन्ध्रपे सौख्ये	१२	९४	६२९
सपारिजातद्युचर सुखानि	७	११०	४०८
सर्पारयोर्वृहद्वीजो योगे	११	३६	५८२
सप्तांशयुक्तः षड्वर्गः सप्तवर्गो	१	४८	४५
सबले पितृभावेशे	१३	५९	६६०
सबिन्दुगः सर्वफलप्रदः	१०	३५	५४५
सबुधोविक्रमपतिर्गलरोग करो	१२	४५	६१७
सभानुजे शीतकरे विलग्नाद्	४	९	१८१
सभानुरिन्दुः शशिजश्चतुर्थे	२	७२	१०१
समनुपतिता यस्मिन् भागे	३	७९	१७५
समस्त होराफल सार सान्द्र	२	८७	१०९
सम्पूर्ण बल संयुक्ते गुरौ	११	८४	५९७
सम्यग्बलिनः स्वतुङ्ग भागे	१८	१६९	८६६
संयुक्ते यदि भास्करेण	९	८	४८३
सराहुकेतु यदि सर्पपीडां	६	७४	३२९
सर्वक्लेश भयं रोगं	१८	११८	८५५
सर्वपूज्यं सुताद्वित्तं	१८	६५	८४४
सर्वविद्याधिक श्रीमान्	७	८८	४०३
सर्वशत्रुत्वमालस्यं हीनवृत्तिं	१८	६६	८४४
सव्यापसव्यमार्गेण चाश्विन्यादि	१७	११	७८५
सर्वाङ्गरोग सन्तापं	१८	१२९	८५७
सर्वार्द्धत्रिचरण पञ्चषष्ठभागाः	५	९	२३२
सर्व चोप चयस्थिताः	७	११	३५२
सर्वेपापा केन्द्र नीचारि संस्थाः	६	१८	२९८

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
सव्ये सिंहावलोके	१७	९८	८१०
सर्वोपद्रव संयोगः सर्वकार्ये	१८	१०४	८५२
सशुक्रजीवो गेहेशो	१२	१२३	६३५
ससप्तबिन्दुस्तुरगादियान	१०	८	५३६
ससप्तबिन्दौ सह लक्ष्मणेन	१०	२७	५४३
सहजभवन नाथे	१६	४६	७७६
सहोदरस्थानपलाभ नाथौ	१६	४७	७७६
सहोदरस्थानपतौ	१२	१६	६०६
सात्विको भवति	१२	४१	६१५
सार्द्धोदितोदितनवांश	५	११	२३३
सार्पे मूढमति कलत्रवशगो	९	८७	५०८
साष्टबिन्दु फलकोणकेन्द्रगे	१०	२८	५४४
सितशशिकुजगुरुमन्दै	१५	३७	७३४
सितः सुतारीशयुतो	११	६७	५९१
सितार्क भौमार्क सुता महाबलाः	१५	२४	७३०
सितारसूर्यात्मजजीव भास्करैः	१५	२७	७३१
सितेन्दु जीवार्कज भानु	१५	३०	७३२
सिद्धारम्भः कर्मगे	१५	५४	७४२
सिद्धारम्भः साधुवृत्तः	८	९१	४७३
सिनीवाली प्रजातानां	९	७२	५०३
सिंहस्थे पृथुलोचनः	९	९३	५०९
सिंहात्तुमिथुने याते	१७	२२	७९३
सिंहावलोक समये	१७	१७	७९२
सिंहांशकस्थिते मन्दे	४	५५	२०२
सिंहासनांशे तन्नाथे	१४	९१	७१५
सिंहासनांशे यदि	११	९६	६०१
स्त्रीकृतोत्साहमैश्वर्यं	१८	११६	८५५
स्त्रीचेष्टो ललिताङ्गसन्धि नयन	७	६४	३८५
स्त्रीजन्म लग्नान्मदगे शशांके	१६	३१	७६९
स्त्रीजन्म लग्ने शशिशुक्र युक्ते	१६	३६	७७१

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
स्त्रीणां जन्मनि लग्न	१६	५	७५७
स्त्रीणां जन्मफलं	१६	४	७५७
स्त्रीद्वेषी मदनस्थिते	८	७९	४७०
स्त्रीधनं कृषिपश्वादिजल	१८	८०	८४७
स्त्रीपुत्रपे बलिनि	१४	१६	६८०
स्त्रीपुत्र बन्धुसौख्याप्तिमृणद्रव्य	१७	७३	८०२
स्त्रीपुत्र बन्धु सुख	७	१४५	४२३
स्त्रीपुत्र रोग कलहं	१८	१४६	८६१
स्त्रीपुत्र वित्ताप्तिमतीव सौख्यं	१८	१५७	८६३
स्त्रीमूलार्जित बन्धुमाननियुतः	८	२	४५०
स्त्रीरोगं बन्धुनाशं च	१८	७९	८४६
स्त्रीहोरया वा युवतिग्रहेण	१२	२२	६०९
स्थानच्युतिं महारोगं	१८	१२८	८५७
स्थानप्राप्तिं वित्तयानाम्बराप्तिं	१८	१०९	८५४
स्थानाम्बर नूतनचारुचेलं	२	२२	६९
स्थिर लग्ने भृगौ केन्द्रे	७	१५४	४२६
स्नेह शशाङ्कादुदायाच्च	३	७१	१६२
स्फुटे विलग्न नाथस्य	५	६१	२५६
स्यान्मार्दवाङ्गो गुणवान्	१६	५०	७७८
स्वकीयदाये गुरु बन्धुमित्रै	१८	१३२	८५८
स्वक्षेत्रतुङ्गमित्रस्थखेचरेण	१७	४९	८०१
स्वजाति कल्पाधिकपूज्य वित्तो	८	१०६	४७७
स्वतुङ्ग वक्रोपगतैस्त्रि संगुणो	५	१९	२३९
स्वमतेन किलाह जीवशर्मा	५	१७	२३७
स्वल्पमध्यबहुमानवत्सरा	१०	७१	५६८
स्वल्पाशी रुचिकामः	११	९४	६००
स्वकर्म विभवो दृष्टो	७	९७	४०५
स्वयमधिगत वित्तः	७	८४	४०१
स्वर्क्षे भास्वति	८	१०५	४७७
स्वर्क्षे भूपकृषिक्रियाटन	८	४०	४६१

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
स्वराशितुङ्गाति सुहृद्गृहस्थे	५	२४	२४२
स्वरूप षष्ट्यंश विषष्टिकांशा	२	३९	८४
स्वाती द्वितीया रविवार युक्ता	३	४६	१५२
स्वान्त्योदयस्त भवनेषु	७	१४०	४२१
स्वामी रिपुक्षयकरः	८	७६	४७०
स्वाम्याशाख्यं तत्तदापप्लवत्वं	१	६१	५२
स्वांशे भास्वति कामगे	१६	४९	७७७
स्वेषूच्च भावेषु फलं	८	११५	४८०
स्वैरिणी या पतिं त्यक्त्वा	१६	२०	७६४
स्वस्थे रन्ध्रपतौ	१४	४९	६९५
स्वस्यत्रिकोणेरविरुच्चगोऽपि	७	३४	३७१
स्वोच्च त्रिकोण स्वसुहृद्दृगाण	२	३३	७९
स्वोच्च त्रिकोण स्वसुहृच्छत्रु	८	११६	४८०
स्वोच्च त्रिकोण	७	५८	३८१
स्वोच्च मित्रादि वर्गस्थाः	१०	१०	५३८
स्वोच्च त्रिकोणगतः प्रदीप्तः	२	१७	६६
स्वोच्चराशिगतश्चान्द्रि	१२	१०७	६३२
स्वोच्चस्थ स्वगृहेऽथवापि	४	७४	२०९
स्वोच्च स्वमित्र भवनेषु	७	१०६	४०५
स्वोच्च स्वकीय भवन	२	६१	९६
स्वोच्च स्ववर्ग दिवसे	२	६६	९७
स्वोच्चस्थितेन केनापि	४	८९	२१७
स्वोच्च स्वके गुरु सुखोदय	१०	१९	५४१
स्वोच्चादि जन्यमशुभस्य	१८	५७	८४१
स्वोच्चेऽथवा निजगृहे	१०	२५	५४३
स्वोच्चे तुङ्ग नवांशगस्य	१८	७१	८४४
स्वोच्चे नीच नवांशगो	१८	१३१	८५७
स्वोच्चोनमिष्टखचरं यदि	५	२३	२४१
स्वोच्चोनस्फुट खेचरं यदि	५	६	२२९
सुखचिन्ता गृहेज्याभ्यां	१२	८७	६२७

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
सुखवित्तयशोवृद्धिं	१८	१२३	८५६
सुखसम्पत्करं सर्वं	१७	१६	७९१
सुखस्थितः शोभनराशिगो	१२	८३	६२६
सुखस्थे सार षष्ठेशे	१२	७१	६२३
सुखाधिपे शोभनखेटयुक्ते	१२	१३३	६३८
सुखाधिपो देवगुरु	१२	१२२	६३५
सुखास्पदस्थैरशुभैर्ग्रहेन्द्रै	५	१०६	२७५
सुखीलग्ने द्व्यादि दृष्टे	११	४७	५८५
सुखी विनय विज्ञान विद्या	७	१०४	४०५
सुखेश्वरे केन्द्र गते	१२	१०४	६३०
सुखेश्वरे शोभनराशियुक्ते	१२	८८	६२७
सुगन्धनील चूर्णादि चित्रकारो	१५	५८	७४४
सुतमदन नवान्त्य लग्न	४	३८	१९५
सुतमित्र सुखार्थाप्ति	१८	१६५	८६४
सुतराश्यात्मके चक्रे	१७	५८	८०१
सुताम्बुगौ पापखगौ	६	८५	३३४
सुतेश संयुक्त नभश्चराणां	५	६९	२६०
सुतेशे कुजसंयुक्ते	१३	३३	६५३
सुधामृतांशौ परिपूर्ण चन्द्रो	१	४२	४०
सुधीर्बली शिल्पविदात्मबोधी	८	९३	४७३
सुरगुरु पितृभक्तो मार्गशीर्षे	९	३१	४९१
सुरगुरु शशिहोरा स्वार्किदृष्टासु	१५	२३	७२९
सुवर्णमाणिक्य गजाश्वमूलाद्	१५	४९	७४०
सुवंशजातं प्रथमं	१४	१९	६८१
सुहृच्चतुष्टये दाता	८	११०	४७८
सूर्यस्थानगते सौम्ये	५	९०	२६८
सूर्यादात्मपितृप्रभाव	२	४९	९०
सूर्यारचन्द्रा सुहृदस्तु	२	४४	८६
सूर्यारार्यसितैर्मही	८	२१	४५५
सूर्यारौ ससितौ विवादनिरतः	१४	८०	७१०

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
सूर्येन्द्वारबुधामरेज्य भृगुजैः	८	३६	४६०
सूर्येन्दुक्षितिनन्दनैररिकुलध्वंसी	८	६	४५२
सेनानीर्धनवान्	९	९५	५१०
सेनावित्त सुताधिकः	८	४२	४६१
सेन्दौ चतुर्थाधिपतौ	१२	१००	६३०
सोदरारातिगः शुक्रः	८	६७	४६८
सोदरारातिगः शुक्रः	१२	५६	६१७
सोदरेश कुजौ नाशं	१२	६	६०३
सौख्यादि वित्तस्थिति नाशनं	१८	९५	८५०
सौम्यकरोति सुहृदासमहत्	१७	४१	७९८
सौम्यश्चान्द्राग्रहायण्युडुप	९	४१	४९४
सौम्यव्योमचरः स्थितः	१४	३०	६८६
सौम्यर्क्षांशे रविजरुधिरौ	६	४९	३१५
सौम्यस्वामियुतेक्षितं नवमभं	१४	६७	७०३
सौम्य स्वोच्चं गते	१२	५८	६१९
सौम्याक्रान्तं यदि	१०	५९	५६२
सौम्याङ्गो रुचिरेक्षण	९	९४	५०९
सौम्यान्वितग्रहदशाऽतिशुभप्रदा	१८	१८	८२६
सौम्यान्वितानि गुरुकर्म कलत्र	१५	१२	७२४
सौम्यान्वितोभयचरि प्रभवा	७	१२४	४१३
सौम्यासितेन्दुसितभानु	८	३०	४५८
सौम्यासौम्य युतेषु	६	९	२९३
सौम्ये चराद्यभागस्थे	१४	१०१	७१८
सौम्ये तदीश्वरे वापि	१३	५५	६६०
सौम्ये श्यामं कुजक्षेत्रे	१२	४९	६१६
सौम्यैश्चतुष्केन्द्र गृहोपयातैः	१५	५१	७४१
सौम्येषु केन्द्रगृहगेषु	७	१२८	४१५
सौम्यैः स्मरारि निधनेश्वधियोग	७	११३	४०९
सौर शशाङ्क दिवाकर दृष्टे	६	५०	३१७
सौरारर्क्षे लग्नगे सेन्दु शुक्रे	१६	२१	७६४

	अध्याय	श्लोक	पृष्ठ
सौरारभांशोपगत ग्रहेषु	१६	३२	७७०
सौर मध्यबले बलेन	१६	११	७६०
सौरे मदस्थे यदि वा	४	२९	१९०
हस्तर्क्षे यदि जातस्तु	९	६७	५०२
हस्तर्क्षे यदि काम धर्म	९	८८	५०८
ह्रस्व कुजे निजगृहे	६	९८	३४२
ह्रस्वा गोऽजघटाः समाः	१	१३	१२
हित्वा लग्नपतिं	६	८६	३३४
हित्वार्कं सुनफाऽनफा	७	८३	३९९
हिबुक भवन संस्थे मन्दजे	९	३	४८२
हिमकिरण दशायां	१८	७२	८४५
हृच्छूल रोगमुपयाति सुखे	६	९१	३३७
हृद्रोगी धनधान्य बुद्धि	८	६८	४६८
हृद्रोगी पञ्चमे पापे	१३	६९	६६७
हेलिः सूर्यस्तपनदिन	२	३	५५
होराधिनाथे रिपुरन्ध्ररिष्फे	११	१७	५७५
होराधीशे पापखेटे	११	२६	५७९
होराबन्धु प्राप्ति भावत्रयेषु	१०	६३	५६४
होरालङ्कार मुख्यप्रभव	११	१	५६९
होराशशी बोधनशुक्र	१०	३४	५४५
होराशेष नवांशमानघटिका	५	११७	२८१
होरास्वामिनि पञ्चमे	११	१९	५७६
होरेन्दुसूरि रविभिर्विबलै	३	८	११८
होरेश खल संयुतः सित	६	२३	३०१
होरेशाद्व्यपे	११	२४	५७८
होरेशेंऽशगते तु तुम्बुरगृहे	५	११४	२७९

२००९

प्रष्टव्य विषयाः

१. ग्रन्थकारस्य गोत्रपुरस्सरं पितुर्नाम् विलिख्यताम् (पृ. ३)।
२. मेषादि राशीनां पर्याय संज्ञा विलिख्यताम् (पृ. ४)।
३. मेषादि राशीनां वर्ण निरूपणं विधीयताम् (पृ. २२)।
४. ग्रहाणां मूलत्रिकोणराशि प्रस्तूयताम् (पृ. २४)।
५. दशवर्ग नामानि तेषां स्वामिविवरणं च लेख्यम् (पृ. २९)।
६. नवमांशानां स्वामि-वर्गोत्तमादि राशीं च विविच्यताम् (पृ. ३२)।
७. सप्तवर्गज वैशेषिकांश नामानि विवेच्यानि (पृ. ४१)।
८. मेषादि राशीनां उदयमानानि लेख्यानि (पृ. ४९)।
९. मेषादि राशीनां वासदेशाः प्लवत्वं च विविच्यताम् (पृ. ५२)।
१०. कालपुरुषस्य अंगविभागं प्रस्तूयताम् (पृ. ५४)।
११. सूर्यादि ग्रहाणां 'उपग्रह' नामानि विलिख्यताम् (पृ. ५६)।
१२. ग्रहाणां द्रव्याणि अधिदेवतानां नामानि च विवेच्यानि (पृ. ६८)।
१३. ग्रहाणां कक्षाक्रमः प्रस्तूयताम् (पृ. ७४)।
१४. षड्बल साधने बलानां पृथक् पृथक् संज्ञा लेख्या (पृ. ८०)।
१५. ग्रहाणां नैसर्गिक शत्रु-सम-मित्रादि विशदीयताम् (पृ. ८६)।
१६. ग्रहाणां स्वरूपानि प्रस्तूयताम् (पृ. ९३)।
१७. ग्रहाणां बाल्यादि अवस्थानां नामानि लेख्यानि (पृ. १०७)।
१८. जलचर-थलचर जन्म योगं विलिख्यताम् (पृ. ११७)।
१९. यमल जन्मयोगं-नाल वेष्टितजन्मयोगञ्च प्रस्तूयताम् (पृ. १३९)।
२०. दत्तक पुत्र योगं-पितुपरोक्षे जन्मयोगं च विलिख्यताम्। (पृ. १५०)
२१. प्रथम द्वितीयादि द्रेष्काणवश अंगविभागे राशिस्थापनं विधीयताम् (पृ. १७३)।
२२. गर्भस्य प्रथममादि मासेषु स्थितिः तेषां स्वामि नामानि च विलिख्यताम् (पृ. १८५)।
२३. अल्पायुर्योगाः विलिख्यताम् (पृ. २०६)।
२४. द्वादशेऽब्दे मरणयोगः प्रस्तूयताम् (पृ. २०१)।
२५. गुरुकृत अरिष्ट भंग योगः लिख्यताम् (पृ. २१०)।
२६. अमितायु योगं विलिख्यताम् (पृ. २२९)।
२७. आयुषः सप्तभेदाः के तेषां नामानि विशदीयताम् (पृ. २२५)।

२८. निसर्गायुषो वर्षसंख्या पिण्डायुषो वर्षसंख्या वा विलिख्यताम् (पृ. २२६)।
२९. ग्रहाणां उच्चादि स्थानवश आयुह्रासं वा व्ययादि भाववश आयुह्रासं प्रस्तूयताम् (पृ. २३२)।
३०. रश्मिजायु संख्या विलिख्यताम् (पृ. २४१)।
३१. आयुषो के अधिकारिणः इति प्रस्तूयताम् (पृ. २४७)।
३२. गृध्रोलूकादि नाना जातीयानां आयुः प्रमाणं विलिख्यताम् (पृ. २४८)।
३३. छिद्रग्रहाः के, तेषा नामानि लेख्यानि (पृ. २५१)।
३४. द्रेष्काणानां निगडादि संज्ञा निरूपणं विशदीयताम् (पृ. २५४)।
३५. दुर्मरण योगं विलिख्यताम् (पृ. २७१)।
३६. मरणानन्तरं स्वर्गादि लोक गति ज्ञानं विलिख्यताम् (पृ. २८१)।
३७. कश्चिदेको रेका योगस्य लक्षणं विलिख्यताम् (पृ. ३००)।
३८. कश्चिदेको प्रेष्ययोगस्य विवेचनं कुरू (पृ. ३१०)।
३९. अन्धयोगं विलिख्यताम् (पृ. ३१८)।
४०. हृदयशूल रोगयोगं विशदीयताम् (पृ. ३३७)।
४१. पंचमहापुरुष योगानां नामानि लेख्यानि (पृ. ३८१)।
४२. कश्चिदेको महापुरुष योगलक्षणं विलिख्य तस्य फलमपि विशदीयताम् (पृ. ३८४)।
४३. चन्द्रकृत अनफा सुनफादि योगानां नामानि विलिख्यताम् (पृ. ३८९)।
४४. केमद्रुम योगं विलिख्य तस्य फलमपि विलिख्यताम् (पृ. ३९१)।
४५. शकट योग लक्षणं विधीयताम् (पृ. ४०७)।
४६. द्वात्रिंशत् नाभस योगानां अथवा आकृति योगानां नामानि विशदीयताम् (पृ. ४३०)।
४७. चन्द्रस्य दृष्टिफलं विलिख्यताम् (पृ. ४६३)।
४८. स्वोच्चस्थ वा मूल त्रिकोणस्थ ग्रह फलं प्रस्तूयताम् (पृ. ४७५)।
४९. नीचस्थ वा शत्रुक्षेत्रस्थ ग्रह फलं विलिख्यताम् (पृ. ४७८)।
५०. अयन फलं वा ऋतुफलं प्रस्तूयताम् (पृ. ४८९)।
५१. ज्येष्ठा नक्षत्रजन्म (दश भाग) फलं विविच्यताम् (पृ. ४९७)।
५२. सदन्त जनन फलं विलिख्यताम् (पृ. ५०५)।
५३. जन्मर्क्षतः आद्य-दशम-षोडशादि संख्यक ताराणां संज्ञा विलिख्यताम् (पृ. ५०६)।

५४. कालहोरेश विवेचनं प्रस्तूयताम् (पृ. ५२०)।

५५. त्रिकोण शोधन विधिः विलिख्यताम् (पृ. ५४८)।

५६. अष्टकवर्गानुसार बिन्दु (अशुभस्थान) संख्यावशात् रोग-पीडा ज्ञानं प्रस्तूयताम् (पृ. ५६२)।

५७. सोदर संख्या ज्ञानं कथं भवतीति विलिख्यताम् (पृ. ६०७)।

५८. चतुर्थ भावे विचारणीय विषया समुल्लिख्यताम् (पृ. ६२०)।

५९. देवता (पूजनार्थ) विचारः कथं क्रियते (पृ. ६४२)।

६०. बुद्धि विचारः कथं क्रियते इति प्रस्तूयताम् (पृ. ६६६)।

६१. सप्तम भावे विचारणीय विषयाः विलिख्यताम् (पृ. ६७४)।

६२. विवाह कालो कथं ज्ञायते (पृ. ६८४)।

६३. ग्रहाणां वृत्तिः विलिख्यताम् (पृ. ७१९)।

६४. मरणानन्तरं गति विचारः प्रस्तूयताम् (पृ. ७५४)।

६५. पति लक्षणं विलिख्यताम् (पृ. ७७७)।

६६. काल चक्रदशा साधने सव्य-अपसव्य नक्षत्राणां नामानि विलिख्यताम् (पृ. ७८५)।

६७. त्रिविधाकालचक्रगतिः विलिख्यताम् (पृ. ८०८)।

६८. सव्यचक्र अथवा अपसव्यचक्र वाक्यानि विलिख्यताम् (पृ. ८११)।

६९. निर्याणदशा कथं साध्यते इति विलिख्यताम् (पृ. ८३४)।

७०. अन्तरदशाज्ञान प्रकारं विविच्यताम् (पृ. ८४३)।

७१. ग्रन्थस्य अध्याय संख्या तेषां नामानि च विलिख्यताम् (पृ. ८६९)।

* * *

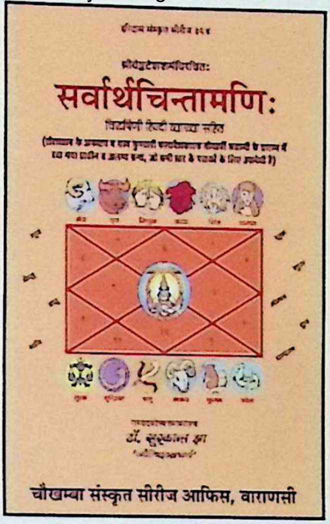

सर्वार्थचिन्तामणिः

विमर्शिनी हिन्दी व्याख्या सहित

डॉ. सुरकान्त झा

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

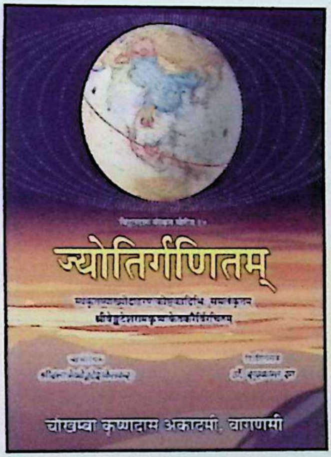

ज्योतिर्गणितम्

चौखम्बा कृष्णादास अकादमी, वाराणसी

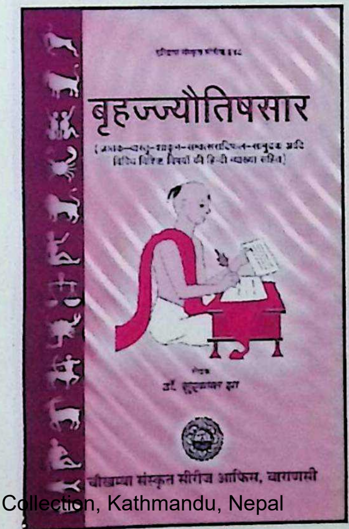

बृहज्ज्यौतिषसार

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

सर्वार्थचिन्तामणिः

वेङ्कटेशशर्मविरचितः। 'चिद्धर्षिणी' हिन्दी व्याख्या सहित।

सम्पादक एवं व्याख्याकार—**डॉ. सुरकान्त झा**

श्री वेङ्कटेशशर्म विरचित 'सर्वार्थचिन्तामणि' अपने नवजात कलेवर के साथ राष्ट्रभाषा (हिन्दी) में ज्यौतिषशास्त्रीय कुण्डली-फलादेशकारक सामग्री को लेकर आपकी सेवा में आपके सम्मुख उपस्थित है। इस ग्रन्थ को ज्यौतिष के व्यावहारिक व अनिवार्य विषयों के संक्षिप्त ज्ञानकोश के रूप में ही देखा जाना चाहिए। इसमें ज्यौतिष शास्त्र का आद्यन्त परिचयात्मक उपयोगी महत्त्वपूर्ण सामग्री के साथ परिशिष्ट रूप में कुण्डली बनाने सम्बन्धि सम्पूर्ण सामग्री और दशाओं के सहज प्रयोग विधि का समावेश तो हुआ ही है, साथ ही प्रस्तुत ग्रन्थ में जातक के जन्म-प्रश्न-गोचर सम्बन्धि कुण्डली द्वारा फलादेशकारक अनुभूत अकाट्य सिद्धान्तों का सरल व सहज विवेचन आदि-आदि तथा और भी अनेकशः उपयोगी सामग्री यथास्थान संग्रहित हैं। इस ग्रन्थ को मुख्यतः विषय-वार क्रम से अट्ठारह भागों में विभाजित किया गया है। जो इस प्रकार हैं— १. राशि-ग्रहसंज्ञा विचार, २. लग्नफल विचार, ३. धनभावफल विचार, ४. सहज-सुहृद्भाव फल विचार, ५. सुत-शत्रुभावफल विचार, ६. जायाभावफल विचार, ७. आयुर्धर्मभावफल विचार, ८. कर्मादिभावफल विचार, ९. राजयोगादि विचार, १०. अरिष्टादिविचार, ११. अरिष्टभङ्गविचार, १२. मध्यमाद्यायुर्योग विचार, १३. सूर्यचन्द्रयोर्दशाविचार, १४. भौम-बुधयोर्दशाफलविचार, १५. गुर्वादिदशाफल विचार, १६. ग्रहान्तर्दशाफल विचार, १७. प्रकीर्ण विषय विचार और १८. परिशिष्ट भाग।

उपरोक्त प्राचीनतम भारतीय ज्यौतिष से सम्बन्धित विषयों पर समसामयिक अपेक्षाओं के अनुकूल तो यह ग्रन्थ है ही, सभी वर्ग या सभी स्तर के जन के दैनन्दिनी में अभिन्न सहायक के रूप में भी अधिकतर उपादेयी सिद्ध हो, इसका ध्यान अनिवार्य रूप में रखा गया है। यह ग्रन्थ ज्यौतिषशास्त्र की आलोचनाओं को अपना धर्म मानने वाले महानुभावों के ज्ञान चक्षु को भी समुद्वेलित सतेज कर सके इसका भरसक प्रयत्न किया गया है। इस ग्रन्थ से पाठक निश्चय ही अपने प्राचीनतम ज्योतिर्विज्ञान और उसके प्रमुख लोक जीवन गत विशिष्ट व आवश्यक विषयों से आद्यन्त परिचित होने में सफल तो होंगे ही, उनकी भारतीय होने की गर्वोक्ति पूर्ण भावना और भी सम्पुष्ट होती हुई काल भेदत्रयी (भूत-वर्तमान-भविष्यत्) के अनुभूत व अकाट्य सिद्धान्त को भी वे अधिगत कर लाभान्वित हो सकेंगे। इस तरह सर्वतोभावेन आपकी सेवा में यह ग्रन्थरत्न आपको उपलब्ध हो रहा है।

Price : Rs. 400.00

designed by *Shreyashi* GRAPHICS, mo. 9839814784

Also can be had from : **Chowkhamba Krishnadas Academy,** Varanasi.

ISBN : 978-81-7080-305-8 (IInd Vol.),
978-81-7080-306-5 (Set)